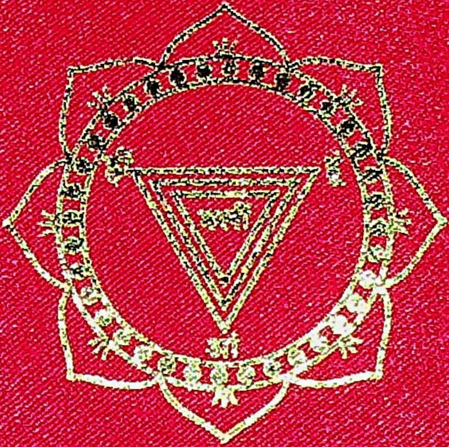

रुद्रयामलतन्त्रोक्तं

श्रीदेवीरहस्यम्

भाषाटीकासमन्वितम्

हिन्दी टीकाकार

श्रीकपिलदेव नारायण

II

हिन्दी टीकासह

कपिलदेव नारायण

श्रीदेवीरहस्यम्

रुद्रयामलतन्त्रोक्तं

श्रीदेवीरहस्यम्

भाषाटीकासमन्वितम्

(द्वितीय भागः परिशिष्टत उद्धारकोशात्मकः)

॥ श्रीः ॥

चौखम्बा सुरभारती ग्रन्थमाला
456

रुद्रयामलतन्त्रोक्तं

श्रीदेवीरहस्यम्

भाषाटीकासमन्वितम्

(द्वितीयो भागः * परिशिष्टत उद्धारकोशात्मकः)

व्याख्याकारः
श्रीकपिलदेव नारायण
स्वरूपावस्थित

चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन
वाराणसी

© सर्वाधिकार सुरक्षित । इस प्रकाशन के किसी भी अंश का किसी भी रूप में पुनर्मुद्रण या किसी भी विधि (जैसे-इलेक्ट्रोनिक, यांत्रिक, फोटो-प्रतिलिपि, रिकॉर्डिंग या कोई अन्य विधि) से प्रयोग या किसी ऐसे यंत्र में भंडारण, जिससे इसे पुनः प्राप्त किया जा सकता हो, प्रकाशक की पूर्वलिखित अनुमति के बिना नहीं किया जा सकता है।

श्रीदेवीरहस्यम्—श्रीकपिलदेवनारायण

ISBN : 978-93-81484-32-6 (Set)

प्रकाशक :
चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन
(भारतीय संस्कृति एवं साहित्य के प्रकाशक तथा वितरक)
के 37/117 गोपाल मन्दिर लेन, पोस्ट बॉक्स न. 1129
वाराणसी 221001
दूरभाष : (0542) 2335263, 2335264
e-mail : csp_naveen@yahoo.co.in
website : www.chaukhamba.co.in

© सर्वाधिकार प्रकाशकाधीन

संस्करण : 2018
₹ 1400 (1-2 भाग सम्पूर्ण)

वितरक :
चौखम्बा पब्लिशिंग हाउस
4697/2 ग्राउण्ड फ्लोर, गली न. 21-ए
अंसारी रोड़, दरियागंज
नई दिल्ली 110002
दूरभाष : (011) 23286537, (मो.) 09811104365
e-mail : chaukhambapublishinghouse@gmail.com

*

अन्य प्राप्तिस्थान :
चौखम्बा संस्कृत प्रतिष्ठान
38 यू. ए. बंगलो रोड़, जवाहर नगर
पोस्ट बॉक्स न. 2113
दिल्ली 110007

*

चौखम्बा विद्याभवन
चौक (बैंक ऑफ बड़ोदा भवन के पीछे)
पोस्ट बॉक्स न. 1069
वाराणसी 221001

मुद्रक :
डीलक्स ऑफसेट प्रिंटर्स, दिल्ली,

श्रीदेवीरहस्यम्

परिशिष्टम्

- ज्वालामुखीपञ्चाङ्गम्
- शारिकापञ्चाङ्गम्
- महाराज्ञीपञ्चाङ्गम्
- बालात्रिपुरापञ्चाङ्गम्
- उद्धारकोशः

अथ परिशिष्टम्

ज्वालामुखीपञ्चाङ्गम्

श्रीज्वालामुखीपटलम्

ज्वालामुखीपटलावतारः

श्रीभैरव उवाच

शृणु देवि प्रवक्ष्यामि भैरवि प्राणवल्लभे।
ज्वालामुख्यास्तु सर्वस्वं पटलं देवदुर्लभम्॥१॥

पटलावतार—श्रीभैरव ने कहा कि हे देवि! भैरवि! प्राणवल्लभे! सुनो; अब मैं देवदुर्लभ ज्वालामुखी के सर्वस्वभूत उनके पटल का वर्णन करता हूँ।।१।।

श्रीदेव्युवाच

भगवंस्त्वं हि सर्वस्य ज्ञाता शास्त्रस्य धूर्जटे।
श्रुतानि त्वन्मुखाम्भोजाद् ग्रन्थानि विविधानि च॥२॥
ज्वालामुख्या महामन्त्रं यन्त्रं पूजा विधानतः।
लयाङ्गं वद मे नाथ यद्यहं प्रेयसी तव॥३॥

श्रीदेवी ने कहा—हे धूर्जटे! भगवन्! आप समस्त शास्त्रों के ज्ञाता हैं। आपके मुखकमल से विविध ग्रन्थों को मैंने सुना है। हे नाथ! यदि आपको मुझसे स्नेह है तो आप मुझे ज्वालामुखी के महामन्त्र, यन्त्र, पूजाविधान एवं लयाङ्ग को बतलाइये।।२-३।।

श्रीभैरव उवाच

शृणु देवि मनुं यन्त्रं लयाङ्गं भैरवेश्वरि।
प्रयोगसाधनं वक्ष्ये गोप्याद् गोप्यतरं मम॥४॥
इदं विश्वमहो क्रूरं भक्तिहीनं महेश्वरि।
एकदा हंसरूपेण मनुनाहं जगत्परम्॥५॥
देवेशि स्रष्टुमनिशं ज्वालामुख्याः प्रसादतः।
ज्वालामुख्या तया मन्त्रो वर्णितो नाममात्रतः॥६॥
तदा प्रभृति तन्मन्त्राज्जगत्स्थावरजङ्गमम्।
सृजामि संहरिष्यामि रक्षामि च दिवानिशम्॥७॥

श्री भैरव ने कहा कि देवि! सुनो; ज्वालामुखी के मन्त्र, यन्त्र, लयाङ्ग और प्रयोग-

साधन बतलाता हूँ, जो गोप्य से भी गोप्य है। हे महेश्वरि! यह विश्व अत्यन्त क्रूर एवं भक्ति से रहित है। एक बार हंसरूप से मन्त्रनाथ ने परम जगत् की सृष्टि ज्वालामुखी की कृपा से किया। उन्होंने ज्वालामुखी मन्त्र के नादमात्र का वर्णन किया। तब उस मन्त्र से स्थावर-जङ्गम जगत् उत्पन्न हुआ। उसी मन्त्र के प्रभाव से मैं सृष्टि, पालन और संहार दिन-रात करता रहता हूँ॥४-७॥

यस्या मन्त्रप्रभावेण प्राप्तमैश्वर्यमुत्तमम्।
ज्वालामुखी जगन्माता सैव स्यात् त्रिगुणात्मिका ॥८॥
सत्त्वेन सृज्यते विश्वं रजसा चैव पाल्यते।
तमसा जीर्यते यस्या गुणत्रयप्रभावतः ॥९॥
त्रिलोकजननी माता सैव मेऽपीष्टदेवता।
तस्या यन्त्रं च मन्त्रं च ध्यानं लयाङ्गसंयुतम् ॥१०॥
प्रयोगान् परमेशानि शृणु त्वं सावधानतः।
तत्रादौ तु मनूद्धारं सर्वागमविनिश्चितम् ॥११॥
प्रवक्ष्यामि महादेवि न प्रकाश्यं मुमुक्षुभिः।

उसी ज्वालामुखी मन्त्र के प्रभाव से मुझे उत्तम ऐश्वर्य प्राप्त हुआ है। ज्वालामुखी जगत् की जननी है और त्रिगुणात्मिका है। यह सतोगुण से सर्जन करती है, रजोगुण से पालन करती है और तमोगुण से संहार करती है। तीनों गुणों के प्रभाव से ही यह सब होता है। यह त्रिलोक की जननी है और यही मेरी इष्टदेवता है। हे परमेशानि! उसके यन्त्र, मन्त्र, लयाङ्ग, ध्यान, प्रयोग को सावधानी से सुनो। पहले सर्वागम-विनिश्चित मन्त्र का उद्धार बतलाता हूँ। इस मन्त्र को मुमुक्षुओं को भी नहीं बतलाना चाहिये।।८-११।।

ज्वालामुखीमन्त्रोद्धारः

आदौ प्रणवमुद्धृत्य मायां च कमलां तथा ॥१२॥
ज्वालामुखि ममेत्यत्र सर्वशत्रून् समुच्चरेत्।
भक्षय-द्वयमुद्धृत्य कूर्चं तुरगसंयुतम् ॥१३॥
ठद्वयेन समायुक्तो ज्वालामुख्या ह्ययं मनुः।

ज्वालामुखी-मन्त्रोद्धार—पहले ॐ, तब माया = ह्रीं, तब श्रीं, तब ज्वालामुखी, तब मम शत्रून् भक्षय भक्षय तब हूँ फट्, तब स्वाहा लगाने से मन्त्र स्पष्ट होता है। मन्त्र है—ॐ ह्रीं श्रीं ज्वालामुखि मम सर्वशत्रून् भक्षय भक्षय हुं फट् स्वाहा।।१२-१३।।

ज्वालामुखीमन्त्रफलम्

मन्त्रोऽयं परमेशानि कलावीप्सितदायकः ॥१४॥
ब्रह्महत्या गुरोर्हत्या स्त्रीहत्याभक्ष्यभक्षणम्।
अगम्यगमनं पापं मातृ-स्वसृगमोद्भवम् ॥१५॥
तत् क्षालयति मन्त्रोऽयं देवि सत्यं न संशयः।

मन्त्र-माहात्म्य—हे परमेशानि! यह मन्त्र कलियुग में सभी अभीष्टों को देने वाला है। यह ब्रह्महत्या, गुरुहत्या, स्त्रीहत्या, अभक्ष्य-भक्षण, अगम्य-गमन, मातृहत्याजनित पापों को समाप्त कर देता है। यह सत्य है, इसमें कोई संशय नहीं है।।१४-१५।।

अधुना शृणु देवेशि यन्त्रोद्धारं परात्परम् ॥१६॥
भुक्तिदं मुक्तिदं गोप्यं गीतवादित्रतोषितम्।
आनन्दसुन्दरं स्तुत्यं यन्त्रोद्धारं ब्रवीम्यहम् ॥१७॥
मत्सर्वस्वं न देष्टव्यं सारात्सारोत्तमोत्तमम्।

हे देवेशि! अब इस परात्थर ज्वालामुखी देवी के यन्त्र को बतलाता हूँ। यह यन्त्र भोग-मोक्षदायक है एवं पूर्णतः गोप्य है। गाने-बजाने से सन्तुष्ट होने वाला है। यह आनन्दसुन्दर एवं स्तुत्य है। अब इसका उद्धार बतलाता हूँ। यह मेरा सर्वस्व है। सारों का उत्तम सार है एवं किसी को देने लायक नहीं है।।१६-१७।।

ज्वालामुखीयन्त्रोद्धारः

आदौ षट्कोणमुद्धृत्य चोर्ध्वरेखां निकर्षयेत् ॥१८॥
अधोरेखां समाकृष्य पार्श्वाभ्यां च निकर्षयेत्।
अधोरेखां क्षिपेदूर्ध्वमूर्ध्वरेखां क्षिपेदधः ॥१९॥
मध्ये कुर्यात् त्रिकोणैकं न्यसेद्बिन्दुं शिवालयम्।
मध्ये यत् तु त्रिकोणं स्यात् सुन्दरीभवनं स्मृतम् ॥२०॥
ऊर्ध्वत्रिकोणमन्यत् स्याद् दक्षिणाकालिकालयम्।
मध्ये त्रिकोणबिन्दौ श्रीज्वालामुख्या महालयम् ॥२१॥
ततो वृत्तैकमालिख्य लिखेदष्टारमुत्तमम्।
षोडशारं समुद्धृत्य वृत्तैकोपरि पार्वति ॥२२॥
वृत्तत्रयं पुनर्न्यस्य लिखेद् भूपुरकं पुनः।
ज्वालामुख्या इदं यन्त्रं त्रैलोक्योद्धरणक्षमम् ॥२३॥
न देष्टव्योऽन्यशिष्येभ्यो दिष्ट्वा तु ब्रह्महा भवेत्।

ज्वालामुखी यन्त्रोद्धार—इस यन्त्र में बिन्दु, त्रिकोण, षट्कोण, अष्टदल, दश दल, षोड़शदल, वृत्तत्रय और भूपुर का अङ्कन होता है।

ज्वालामुखी-यन्त्र

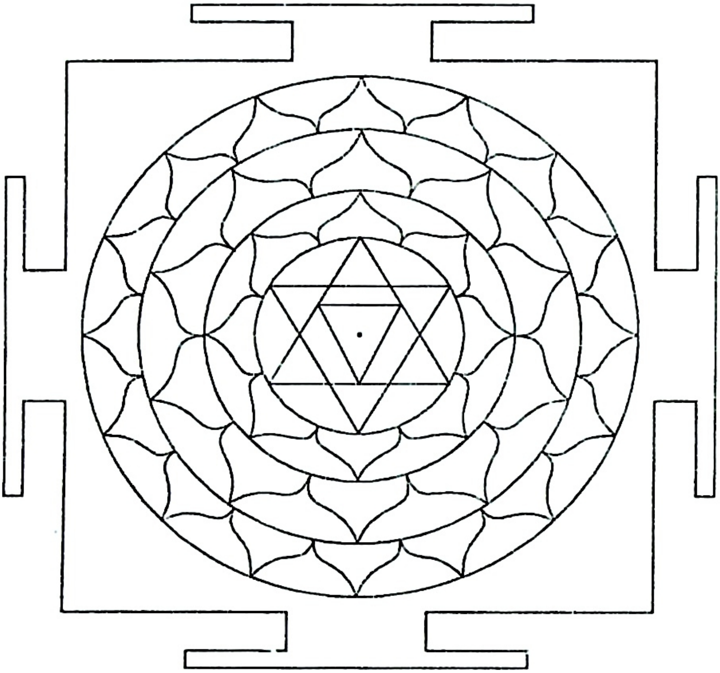

ज्वालामुखी का यह यन्त्र तीनों लोकों का उद्धार करने में समक्ष है। इसे दूसरे के शिष्यों को नहीं देना चाहिये। देने से दाता ब्रह्मघाती होता है।।१७-२३।।

ज्वालामुखीलयाङ्गम्

लयाङ्गं शृणु देवेशि ब्रह्मविष्णुसमर्चितम् ॥२४॥
यन्त्रराजस्य देवेशि समासेन यथार्थतः ।
गणेशो धर्मराजश्च वासुकिर्नरसिंहकः ॥२५॥
चतुर्द्वारिषु संपूज्याश्चत्वारो द्वारपालकाः ।
पूर्वे च गणनाथस्तु दक्षिणे धर्मराजकः ॥२६॥
पश्चिमे वासुकिः पूज्य उत्तरे नरसिंहकः ।
ततोऽष्टद्वयपत्रेषु पूज्या ज्वालाश्च षोडश ॥२७॥

वामावर्तक्रमाद् देवि नानापूजाफलं लभेत्।
वारुणी चैव वात्याली वाराही कुलसुन्दरी॥२८॥
कूवरी कुलिका कुण्ठी कुत्सिता कुटिला कुहूः।
कुन्ती कुम्भेश्वरी कुन्ता कूचरी कारुणी कृतिः॥२९॥
इति षोडश ज्वालाः स्युस्तस्यास्तु सकलाङ्गगाः।

ज्वालामुखी-लयाङ्ग—हे देवेशि! अब ज्वालामुखी का लयाङ्ग सुनो, जो ब्रह्मा-विष्णु से समर्चित हैं। हे देवेशि! समासेन यथार्थतः भूपुर के चारो द्वारों के द्वारपाल गणेश, धर्मराज, वासुकि और नृसिंह हैं। चारो द्वारों पर इनकी पूजा करे। पूर्व में गणेश, दक्षिण में धर्मराज, पश्चिम में वासुकी और उत्तर में नृसिंह का पूजन करे। षोड़श दल में सोलह ज्वालाओं का पूजन वामावर्त-क्रम से करे। इनके नाम हैं—वारुणी, वात्याली, वाराही, कुलसुन्दरी, कूवरी, कुलिका, कुण्ठी, कुत्सिता, कुटिला, कुहू, कुन्ती, कुम्भेश्वरी, कुन्ता, कूचरी, कारुणी, कृति। ये सभी ज्वाला के अङ्गदेवता हैं।।२४-२९।।

ततोऽष्टदलपत्रेषु पूज्या ह्यष्टौ तु कन्यकाः॥३०॥
माया च मोहिनी चैव बाला च भगरूपिणी।
भगावासा च भीरुण्डा मृडानी बैन्दवेश्वरी॥३१॥
अष्टौ कन्याः समाख्याताः संपूज्याश्चाष्टपत्रके।

तत्पश्चात् अष्टदल में आठ कन्याओं का पूजन करे। इनके नाम हैं—माया, मोहिनी, बाला, भगरूपिणी, भगावासा, भीरुण्डा, मृडानी एवं वैन्दवेश्वरी।।३०-३१।।

ततस्तु ज्वालामुख्यास्तु सुखदा दश पार्वति॥३२॥
वामावर्तक्रमेणैव पूजासिद्धिर्भवेद् ध्रुवम्।
ब्राह्मी च शाम्भवी दुर्गा वाराही कुलकामिनी॥३३॥
नारसिंही च कौमारी मातङ्गी भद्रकालिका।
उग्रतारा समाख्याता ज्वालादशकला इमाः॥३४॥
संपूज्या दशपत्रेषु साधकैश्च सुसिद्धये।

तत्पश्चात् हे पार्वति! दशदल में ज्वाला की दश कलाओं का पूजन करे; इनके नाम हैं—ब्राह्मी, शाम्भवी, दुर्गा, वाराही, कुलकामिनी, नारसिंही, कौमारी, मातङ्गी, भद्रकालिका एवं उग्रतारा। सिद्धि प्राप्ति हेतु साधक इनकी पूजा करे।।३२-३४।।

तत ऊर्ध्वे समभ्यर्च्य देवीं त्रिपुरसुन्दरीम्॥३५॥
तन्मध्येऽधःस्थिता पूज्या देवी दक्षिणकालिका।

तन्मध्ये पूजनीया च देवी ज्वालामुखी तथा ॥३६॥
ज्वलिनी जटिनी चैव जाती जालन्धरी तथा ।
बिन्दौ त्रिकोणमध्यस्थे यन्त्रस्य परमेश्वरी ॥३७॥

षट्कोण के ऊर्ध्व कोण में त्रिपुरसुन्दरी का, अधोकोण में काली का, पार्श्व कोणों में ज्वालिनी, जटिनी, जाती, जालन्धरी का एवं बीच वाले त्रिकोण बिन्दु में ज्वालामुखी का पूजन करे।।३५-३७।।

देव्याश्चायुधपूजां च कुर्याच्च चतुरश्रके ।
यन्त्रमध्यस्थिते देवि चतुरश्रे विदिग्गते ॥३८॥
अभयं वरदं पद्मं पाशं (शरं) संपूजयेत् सुधीः ।
ईशानानुक्रमेणैव पूजयेदायुधांस्तथा ॥३९॥

बिन्दुमण्डल के काल्पनिक चतुरस्र की विदिशाओं अर्थात् कोनों में देवी के आयुधों का पूजन करे। इनके नाम हैं—अभय, वर, पद्म और पाश। ईशानक्रम से इनका पूजन करे।।३८-३९।।

लयाङ्गमिति ते प्रोक्तं ध्यानं शृणु महेश्वरि ।
ध्यात्वा देवीं महादेवि मन्त्री स्याद् भैरवोपमः ॥४०॥

हे महेश्वरि! इस प्रकार लयाङ्ग को मैंने तुमसे कहा। अव ज्वालामुखी के ध्यान को सुनो। हे महादेवि! इस ज्वालामुखी देवी का ध्यान करके साधक साक्षात् भैरव के समान हो जाता है।।४०।।

ज्वालामुखीध्यानम्

ज्वालापर्वतसंस्थितां त्रिनयनां पीठत्रयाधिष्ठितां
ज्वालाडम्बरभूषितां सुवदनां नित्यामदृश्यां जनैः ।
षट्चक्राम्बुजमध्यगां वरशराम्भोजाभयान् बिभ्रतीं
चिद्रूपां सकलार्थदीपनकरीं ज्वालामुखीं नौम्यहम् ॥४१॥

ध्यान—देवी ज्वालामुखी ज्वालापर्वत पर संस्थित हैं। इनके तीन नेत्र हैं। ये पीठत्रय पर अधिष्ठित हैं। ज्वालाडम्बर से भूपित हैं। इनका सुन्दर मुखमण्डल है एवं ये नित्य हैं तथा लोगों से अदृश्य हैं। षट्चक्रकमल के मध्य स्थित हैं। वर, अभय, वाण और पाश इनके हाथों में है। ये चित् स्वरूपा हैं। सभी अभीष्ट पूरा करती हैं। ऐसी परमेश्वरी ज्वालामुखी को हम प्रणाम करते हैं।।४१।।

उद्यच्छीतकरांशुसंनिभमुखीमापीनतुङ्गस्तनीं-
सद्यः फुल्लसरोजपाशममलं वामे करे बिभ्रतीम्।
दक्षेऽभीतिवरौ त्रिवर्णविलसद्गात्राङ्गयष्टिं परां
रुद्राब्जस्थत्रिकोणमध्यविगतां ज्वालामुखीमाश्रये ।।४२।।

परमेश्वरी का मुख नवोदित शीतकरांशु पूर्ण चन्द्र के समान है। स्थूल उच्च उठे हुए स्तन हैं। बाँये एक हाथ में प्रफुल्लित कमल और दूसरे बाँयें में पाश शोभित है। दाहिने एक हाथ में अभय और दूसरे हाथ में वरमुद्रा है। परमेश्वरी की गात्राङ्गयष्टि तीनों वर्णो से विलसित है। एकादशदल कमल के त्रिकोण मध्य-स्थित ज्वालामुखी की शरण में हम जाते हैं।।४२।।

शीतांशुद्युतिसन्निभां शशिकलाचूडां त्रिनेत्रां शिवां
द्विःषट्कारसरोजपीठविगतां माध्वीरसाघूर्णिताम्।
त्र्यर्णोद्भासितसर्वगात्रलतिकां ज्वालादिकन्याकुलां
रज्यत्पादयुगां त्रिलोकजननीं ज्वालामुखीं नौम्यहम् ।।४३।।

देवी परमेश्वरी का वर्ण चन्द्र-चन्द्रिका के समान है। चूड़ा में द्वितीया का चाँद है। तीन नेत्र हैं। द्वादशदल कमलपीठ पर स्थित हैं। आँखें माध्वी रस के पान से घूमती हुई हैं। देवी का अंग-प्रत्यङ्ग त्रिकोण में उद्भासित है। ज्वालादि कालीकुल कन्या इनके दोनों पैरों को अलंकृत कर रही हैं। तीनों लोकों की जननी देवी ज्वालामुखी को हम प्रणाम करते हैं।।४३।।

इति ध्यानत्रयं प्रोक्तं तन्त्रमन्त्रविनिश्चितम्।
प्रयोगान् शृणु देवेशि श्रुत्वा गोप्यतमान् कुरु ।।४४।।

तन्त्र-मन्त्र के द्वारा निश्चित ये तीन प्रकार के ध्यान कहे गये हैं। हे देवेशि! अब इनके प्रयोगों को सुनो और सुनकर इन्हें गुप्त रखो।।४४।।

ज्वालामुखीमन्त्रस्याष्टौ प्रयोगाः

स्तम्भनं मोहनं चैव मारणाकर्षणे तथा।
विद्वेषणं वशीकारमुच्चाटनमतः परम् ।।४५।।
मौक्तिकं शान्तिकं चैव पौष्टिकं परमाद्भुतम्।
शृणुष्वावहिता भूत्वा येन ज्वाला प्रसीदति ।।४६।।

ज्वालामुखी मन्त्र के आठ प्रयोग—ज्वालामुखी मन्त्र के आठ प्रयोग—स्तम्भन, मोहन, मारण, आकर्षण, विद्वेषण, वशीकरण, उच्चाटन, शान्ति और पुष्टि

हैं। अब सावधान होकर इनकी विधि का श्रवण करो, जिससे ज्वालादेवी प्रसन्न होती हैं।।४५-४६।।

स्तम्भनम्

रवावुत्थाय मौहूर्ते ब्राह्मे वा चार्धरात्रके ।
गत्वा नदीतटं कुर्याद्यथा नैमित्तिकीं क्रियाम् ।।४७।।
स्नानसन्ध्याविधिं कुर्याज्जपमष्टोत्तरं चरेत् ।
ज्वालादेव्या मनुं जप्त्वा व्रजेत् प्रेतालयं ततः ।।४८।।
तत आनीय देवेशि भस्ममुष्टिं च साधकः ।
निखनेत् कुण्डमेकं तु त्रिकोणं साधकोत्तमः ।।४९।।
भस्ममुष्टिं च तत्कुण्डे क्षिप्त्वा होमं समाचरेत् ।
घृतेन तिलतैलेन पायसेन सुरेश्वरि ।।५०।।
मूलेन चाचरेद्धोमं यावन्माध्याह्निकं भवेत् ।
तस्योपरि पतेद् दण्डमैषिकं परमेश्वरि ।।५१।।
होमं संपाद्य देवेशि कुर्यात् कर्म परं सुधीः ।

स्तम्भन—रविवार को ब्राह्म मुहूर्त या आधी रात में उठकर नदी के किनारे जाकर नैमित्तिक क्रिया करे। स्नान के पश्चात् सन्ध्या करके एक सौ आठ मन्त्र-जप करे। ज्वालादेवी के मन्त्र का जप करके श्मशान में जाये। वहाँ से एक मुट्ठी चिताभस्म ले आये। एक त्रिकोण कुण्ड का निर्माण करे। मुट्ठी भर भस्म को कुण्ड में डालकर उसमें घी से, तिल-तेल से या खीर से हवन करे। यह हवन मूल मन्त्र से दोपहर तक करे। तब उस पर यज्ञीय दण्ड से प्रहार करे। हे देवेशि! हवन कर्म सम्पन्न करके इच्छित कर्म करे।।४७-५१।।

अर्धरात्रे समुत्थाय भस्मानीय च लेपयेत् ।।५२।।
अङ्गेषु साधको धीमांल्ललाटे तिलकं चरेत् ।
प्रभाते तु व्रजेन्मन्त्री सभामध्ये सुरेश्वरि ।।५३।।
तस्य दर्शनमात्रेण इन्द्रो जीवः पितामहः ।
स्तम्भवाग्भगवान् विष्णुर्भविष्यति न संशयः ।।५४।।

आधी रात में उठकर भस्म ले आये और अपने अङ्गों में उसका लेप लगाये। साधक अपने ललाट में उसी भस्म का तिलक लगाये एवं सबेरे साधक सभा में जाये। उसको देखते ही इन्द्र, बृहस्पति, ब्रह्मा, विष्णु की वाणी भी स्तम्भित हो जाती है। इसमें किसी प्रकार का कोई संशय नहीं है।।५२-५४।।

मोहनम्

मङ्गलेऽह्नि समुत्थाय मध्याह्ने वार्धरात्रके।
आनीय नूतनं कुम्भं पूरयेत् पयसा प्रिये ॥५५॥
तस्मिन्मध्ये चरेत् पूजां ज्वालामुख्या महेश्वरि।
मन्त्री दिनाष्टकं तावद् गन्धार्घ्यकुसुमैस्तथा ॥५६॥
प्राप्तेऽन्यमङ्गलदिने दद्यान्मन्त्री बलिं शुभम्।
कुक्कुटं च महेशानि तद्रक्तं च घटे क्षिपेत् ॥५७॥
ततो मूलेन नैवेद्यं दत्त्वा स्नानं समाचरेत्।
तेन कुम्भस्य नीरेण साधको मन्त्रसाधकः ॥५८॥
कर्मणा मनसा वाचा मोहयेद् भुवनत्रयम्।
सर्वज्ञस्य ममाप्येष करिष्यत्यन्यथा ध्रुवम् ॥५९॥

मोहन—मंगलवार को मध्याह्न या आधी रात में उठकर नया घड़ा लाकर उसमें दूध भरे। उसके मध्य में ज्वालामुखी का पूजन करे। यह पूजन लगातार आठ दिनों तक करे। गन्ध-पुष्प से अर्घ्य प्रदान करे। आठवें दिन के मंगलवार में शुभ बलि प्रदान करे। बलि मुर्गे की प्रदान करे। उसके रक्त को घड़े में डाले। तब मूल मन्त्र से नैवेद्य देकर उस घटजल से मन्त्रसाधक स्नान करे। ऐसा करने से वह कर्म से, मन से और वाणी से तीनों लोकों को वश में कर लेता है। वह मेरे समान ही सर्वज्ञ होता है। इसमें किसी प्रकार का अन्यथा विचार नहीं करना चाहिये।।५५-५९।।

मारणम्

अन्यदा शनिवारे तु गत्वा प्रेतालयं शिवे।
सशिवां देवतां ध्यात्वा कुर्यात् स्नानमनुत्तमम् ॥६०॥
ततोऽष्टोत्तरवारैकशतमावर्त्य मालया।
योषिन्मूर्तिं विधायैव त्यजेद्रेतः प्रयत्नतः ॥६१॥
रेतसश्चोपरि क्षौद्रं क्षिप्त्वा मद्यं क्षिपेत् सुधीः।
स्तन्यं संक्षिप्य विश्वेशि गोमूत्रमुपरि क्षिपेत्।
नरमूत्रं च संक्षिप्य खरमूत्रं च निःक्षिपेत्।
गजमूत्रं तथा मध्ये मीनमांसं महेश्वरि ॥६३॥
तिलतैलं च लवणमारणालसमन्वितम्।
घटं संपूर्य विधिवत् साधकः प्रेतमन्दिरे ॥६४॥
भूमौ क्षिप्त्वा चरेन्नित्यं जपेदष्टोत्तरं शतम्।

मासमेकं समुल्लङ्घ्य दत्त्वा माहिषिकं बलिम् ।।६५।।
ततो विरचयेद्धोमं पायसेन च सर्पिषा ।
तथा विरीफलं हुत्वा जुहुयाच्च हरीतकीम् ।।६६।।
ततो मासे गते देवि साधको मन्त्रसाधकः ।
घटं निष्कर्षयेद्भुमौ प्रणम्य शिरसा पुनः ।।६७।।
जपेदेकसहस्रं तु मूलमन्त्रं यथार्थतः ।
अर्धरात्रे रिपोर्नाम गृहीत्वा तु चतुष्पथे ।।६८।।
कुम्भं च साधको भिन्द्यात् सद्यः शत्रुर्मरिष्यति ।

मारण—शनिवार में प्रेतालय जाकर, शिवा-सहित देवता का ध्यान करके उत्तम स्नान करे। एक सौ आठ बार मन्त्र जप करके इच्छित स्त्री का ध्यान करके यत्न से वीर्यपात करे। वीर्य के ऊपर दाख-मुनक्का रखकर उस पर मद्य डाले। तब उस पर गोमूत्र डाले। पुनः उस पर नरमूत्र डाले और फिर खरमूत्र गिराये। अन्त में गजमूत्र गिराये। तब उसमें मांस एवं मछली डाले। तिल-तेल-नमक-आरणाल एकत्र करके उस घड़े में भरे। यह कार्य श्मशान में विधिवत् करे। तब उस घड़े को भूमि में गाड़कर एक मास तक उसपर एक सौ आठ मन्त्र का जप करे। एक महीने के बाद घड़े को भैंसे की बलि देवे। तब हवन करे। पहले पायस एवं गोघृत से, तब विरीफल से, तब हर्रे से हवन करे। एक महीने बाद घड़े को साधक जमीन से बाहर निकालकर शिर झुकाकर प्रणाम करे। इसके बाद आधी रात में चौराहे पर घड़े को रखकर मूल मन्त्र का एक हजार जप करे। तत्पश्चात् शत्रु का नाम लेकर साधक घड़े को फोड़ दे। इससे शत्रु तुरन्त मर जाता है।।६०-६८।।

आकर्षणम्

अथाकर्षणकं वक्ष्ये प्रभाते गुरुवासरे ।।६९।।
गत्वा रहःस्थलं देवि कुर्यान्नैमित्तिकीं क्रियाम् ।
ततः क्षीरं समानीय माहिष्यस्तन्यमेव च ।।७०।।
एकीकृत्य चरेद्धोमं सर्पिषा पायसेन च ।
कृत्वा चैव प्रियाभोगं रेतः क्षीरे विनिःक्षिपेत् ।।७१।।
होमयेत् पुष्पसङ्गातं पीतं रक्तं च पाण्डुरम् ।
अन्येद्युरथ देवेशि शीतलं भस्म चोद्धरेत् ।।७२।।
योजसेद्रेतसा साकं क्षिपेन्मन्त्री चतुष्पथे ।
उर्वशी स्वर्गसंस्थापि प्रातः प्रादुर्भविष्यति ।।७३।।

आकर्षण—अब आकर्षण की विधि कहता हूँ। गुरुवार के प्रभात में एकान्त स्थान में जाकर नैमित्तिकी क्रिया करे। तब भैंस के दूध में खीर और गाय का घी मिलाकर हवन करे। प्रिया के साथ सम्भोग करके अपने वीर्य को उस दूध में गिरावे। लाल पीले पाण्डुर पुष्पों को उसमें डुबो-डुबोकर हवन करे। दूसरे दिन कुण्ड के ठण्ढा होने पर उसमें से भस्म निकाले। उस भस्म में अपना वीर्य मिलाकर उसे चौराहे पर छिड़क दे। इससे स्वर्ग में स्थित अप्सरा उर्वशी भी प्रात:काल प्रकट हो जाती है।।५९-७३।।

विद्वेषणम्

चन्द्रवारे समुत्थाय गत्वा प्रेतालयं सुधीः।
मध्याह्ने नूतने कुम्भे क्षिपेद् भस्मास्थिसञ्चयम्।।७४।।
घटमाच्छाद्य वस्त्रेण क्षिपेद् भूमौ च मान्त्रिकः।
जपेद् दिनाष्टकं यावद् मूलमन्त्रमनुस्मरन्।।७५।।
अष्टमे दिवसे प्राप्ते कुम्भमाकृष्य मान्त्रिकः।
अर्धरात्रे रिपोर्द्वारि घटं तत् स्फोटयेच्छनैः।।७६।।
पादप्रहारदशभिः शत्रोर्विद्वेषणं भवेत्।

विद्वेषण—सोमवार के मध्याह्न में श्मशान में जाकर एक नये घड़े में चिताभस्म और हड्डी भरे। घड़े में वस्त्र लपेट कर भूमि में गाड़ दे। आठ दिनों तक वैरी का स्मरण करते हुए मूल मन्त्र का जप करे। आठवें दिन आधी रात में घड़े को निकाल कर साथ में लेकर शत्रुद्वार पर जाकर उसे फोड़ दे और उस पर दश बार पाद-प्रहार करे। इससे शत्रुओं में विद्वेषण होता है।।७४-७६।।

वशीकरणम्

बुधवारे सुनक्षत्रे पञ्चगव्यं समानयेत्।।७७।।
लिप्त्वा भूमिं त्रिकोणं तु कुण्डं लिख्य महामनुम्।
तन्मध्ये पूरयेद्यन्त्रं होमयेन्मूलजाक्षरैः।।७८।।
बलिं दत्त्वा बिडालं च साधको मूलमन्त्रतः।
जपेत् सप्तसहस्रं तु साङ्गं च विधिवन्नरः।।७९।।
यस्य नाम च सङ्गृह्य स्त्रियो वा पुरुषस्य च।
सप्तवारं सुरेन्द्रोऽपि वशीभवति नान्यथा।।८०।।
ब्रह्माद्या निर्जराः सर्वे रम्भाद्या ह्यप्सरोगणाः।
वशमायान्ति देवेशि मन्त्रस्यास्य प्रसादतः।।८१।।

वशीकरण—बुधवार में शुभ नक्षत्र में पञ्चगव्य ले आये। उससे भूमि को लीपकर

त्रिकोण कुण्ड बनाकर उसमें महामन्त्र को लिखे। उसके मध्य में यन्त्र का पूजन करे। मूल मन्त्र के अक्षरों से हवन करे। हवन के बाद मूल मन्त्र से विड़ाल की बलि प्रदान करे। अङ्गों-सहित मन्त्र का सात हजार विधिवत् जप करे। इससे मन्त्र सिद्ध होता है। सिद्ध मन्त्र को सात बार जिसका नाम लेकर जप किया जायगा, वह स्त्री या पुरुष या इन्द्र भी वशीभूत होता है। ब्रह्मादि सभी देवता और रम्भादि सभी अप्सराएँ मन्त्र के प्रभाव से वश में होती हैं।।७७-८१।।

शान्तिः

शनिवारे खरं कृष्णं वनं गत्वा निशीथके।
यन्त्रं संपूज्य तस्याग्रे बलिं दद्यात् स्वमूलतः ।।८२।।
जपं च दशसाहस्रं कृत्वा कुण्डं खनेत् पथि।
तद्रक्तं होमयेत् सर्पिः शत्रोर्नाम समुच्चरेत् ।।८३।।
तेनैव सर्वरिपवः संक्षयं यान्त्यसंशयः।

शान्ति—शनिवार के निशीथ काल में काले गदहे को लेकर जङ्गल में जाये। गदहे को बाँधकर उसके सामने यन्त्रपूजन करके बलि प्रदान करे। दश हजार जप करके कुण्ड बनाये। गदहे के रक्त और गोघृत से शत्रु के नामसहित मन्त्रोच्चारण करते हुए उस कुण्ड में हवन करे। इससे निस्सन्देह सभी शत्रुओं का नाश होता है और शान्ति होती है।।८२-८३।।

पुष्टिः

शुभेऽह्नि शुभनक्षत्रे गत्वा सिन्धुतटे शुभे ।।८४।।
मूलेनैवाचरेद्धोमं शमीपत्रैस्तु साधकः।
स्तन्यादिक्षीरखण्डाद्यैः सर्पिषा तद्दशांशतः ।।८५।।
होमं संपाद्य देवेशि दद्यात् पूर्णाहुतिं ततः।
तस्माच्च जायते पुष्टिर्देवानामपि दुर्लभा ।।८६।।

पुष्टि—शुभ दिन और शुभ नक्षत्र में समुद्र के किनारे जाकर साधक मूल मन्त्र से शमीपत्र, दूध, खण्ड और गोघृत से मन्त्रजप का दशांश हवन करे। हवन पूरा करके पूर्णाहुति देवे। इससे देवताओं को भी दुर्लभ पुष्टि प्राप्त होती है।।८४-८६।।

पटलोपसंहारः

इदं पटलमाख्यातं ज्वालाया ह्युत्तमं मया।
रहस्यं परमं देवि सर्वस्वं सारमुत्तमम् ।।८७।।

दुर्लभं त्रिदिवे देवि न दातव्यं हि कस्यचित्।
निन्दकाय च दुष्टाय द्वेषिणे भक्तिवर्जिते।
गोप्यं गुप्ततमं भूमौ कलाविष्टफलप्रदम् ॥८८॥

इति श्रीरुद्रयामले तन्त्रे दशविद्यारहस्ये
श्रीज्वालामुखीपटलम्॥१॥

ज्वाला के इस उत्तम पटल का वर्णन मेरे द्वारा किया गया। हे देवि! यह परम रहस्य है। सर्वस्व और उत्तम सार है। यह देवताओं को भी दुर्लभ है। इसे किसी को नहीं देना चाहिये। निन्दक, दुष्ट, द्वेषी और भक्ति से वर्जित लोगों को इसे नहीं बतलाना चाहिये। यह गोप्य और गुप्ततम है एवं कलियुग में अभीष्ट फल को देने वाला है।।८७-८८।।

इस प्रकार रुद्रयामल तन्त्रोक्त श्रीदेवीरहस्य की भाषा टीका में
श्रीज्वालामुखी पटल पूर्ण हुआ।

●

अथ श्रीज्वालामुखीपूजापद्धतिः

अधुना देवि वक्ष्यामि ज्वालापद्धतिमुत्तमाम्।
गद्यपद्यमयीं गुह्यां कोटियज्ञफलप्रदाम् ॥१॥
प्रातः कृत्यमकृत्वा तु श्रीज्वालां पूजयेत्तु यः।
तस्य पूजा च विफला शौचहीना यथा क्रिया ॥२॥

श्री भैरव ने कहा कि हे देवि! अब मैं ज्वाला की उत्तम पूजापद्धति का वर्णन गद्य-पद्यरूप में करता हूँ। यह करोड़ यज्ञ के फल को देने वाला है। प्रात:कृत्य किये बिना जो ज्वाला का पूजन करता है, उसका पूजन वैसे ही निष्फल होता है, जैसे कि शौच के बिना क्रिया।।१-२।।

तत्रादौ श्रीमान् साधको ब्राह्मे मुहूर्ते शयनतलादुत्थाय करचरणमुखानि प्रक्षाल्य निजासने समुपविश्य, निजशिरसि श्वेतवर्णाधोमुखसहस्त्रदलकमलकर्णिकान्तर्गतचन्द्रमण्डलसिंहासनोपरि निषण्णं स्वगुरुं शुक्लवर्णं शुक्लालङ्कारभूषितं ज्ञानानन्दमुदितमानसं सच्चिदानन्दविग्रहं चतुर्भुजं ज्ञानमुद्रापुस्तकवराभयकरं त्रिनयनं प्रसन्नवदनेक्षणं सर्वदेवदेवं परमशिवस्वरूपं, वामाङ्के वामहस्तधृतकमलया रक्तवसनाभरणया स्वप्रियया दक्षिणभुजेनालिङ्गितं शान्तं सुप्रसन्नं ध्यात्वा, तच्चरणकमलयुगलविगलदमृतधारया स्वात्मानं प्लुतं विभाव्य मानसोपचारैराराधयेत्। यथा— लं भूम्यात्मकं गन्धं समर्पयामि नमः। हं आकाशात्मकं पुष्पं०। यं वाय्वात्मकं धूपं०। रं वह्न्यात्मकं दीपं०। वं अमृतात्मकं नानानैवेद्यं०। सं सर्वात्मकानि फलमूलताम्बूलानि समर्प०। ॐऐंह्रींश्री हसखफ्रें हसरक्षमलवयऊं सहखफ्रें सहक्षमलवरयऊं हसौं स्हौं श्रीमच्छ्रीअमुकानन्दनाथश्रीपादुकां श्रीअमुकाम्बाश्रीपादुकां पूजयामि नमः इति दशधा विमृश्य मनसा दण्डवत्प्रणामं कुर्यात्।

**सहस्त्रदलपङ्कजे सकलशीतरश्मिप्रभं
वराभयकराम्बुजं विमलगन्धपुष्पाम्बरम्।
प्रसन्नवदनेक्षणं सकलदेवतारूपिणं
स्मरेच्छिरसि हंसगं तदभिधानपूर्वं गुरुम् ॥१॥**

इति ध्यात्वा प्रणाममन्त्रान् पठेत्।

सर्वप्रथम श्रीमान् साधक ब्राह्म मुहूर्त में शय्या से उठकर हाथ-पैर-मुख धोकर अपने आसन पर बैठे। अपने शिर में श्वेत वर्ण के अधोमुख सहस्रदल कमलकर्णिका में चन्द्र-मण्डल में सिंहासन पर विराजमान अपने गुरु का ध्यान करे। गुरु का वर्ण श्वेत है। उनके वस्त्र, अलङ्कार एवं आभूषण शुक्ल वर्ण के हैं। ज्ञान के आनन्द से वे मुदित मानस हैं। सच्चिदानन्दस्वरूप हैं। चतुर्भुज हैं। हाथों में ज्ञानमुद्रा, पुस्तक, वर और अभय है। तीन नेत्र हैं। प्रसन्नमुख से देख रहे हैं, सभी देवों के देव परमशिव-स्वरूप हैं। उनके बाँयें भाग में उनकी प्रिया, जिसके बाँयें हाथ में कमल है, वस्त्राभरण लाल हैं, गुरुदेव का आलिङ्गन अपने दाँयें हाथ से कर रही हैं। वे स्वयं शान्त और प्रसन्न हैं। ऐसे गुरुदेव के दोनों पदकमलों से निकलती हुई अमृत की धार से अपने को सराबोर होने की भावना करे। तव उनका पूजन मानसोपचारों से करे। जैसे—लं पृथिव्यात्मकं गन्धं समर्पयामि नमः। हं आकाशात्मकं पुष्पं समर्पयामि नमः। यं वाय्वात्मकं धूपं समर्पयामि नमः। रं वह्न्यात्मक दीपं दर्शयामि नमः। वं अमृतात्मकं नानानैवेद्यं निवेदयामि नमः। सं सर्वात्मकानि फलमूलताम्बूलानि समर्पयामि नमः।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं हस्ख्फ्रें हसरक्षमलवयऊं सह्खफ्रें सहक्षमलवरयऊं ह्सौः स्हौं श्रीमच्छ्रीअमुकानन्दनाथश्रीपादुकां श्रीअमुकाम्बाश्रीपादुकां पूजयामि नमः।

इसे मन ही मन दश बार जप करके प्रणाम करे। इसके बाद इस प्रकार उनका ध्यान करे—

सहस्रदलपङ्कजे सकलशीतरश्मिप्रभं
वराभयकराम्बुजं विमलगन्धपुष्पाम्बरम्।
प्रसन्नवदनेक्षणं सकलादेवतारूपिणं
स्मरेच्छिरसि हंसगं तदभिधानपूर्वं गुरुम्।।१।।

उपर्युक्त रीति से गुरु का ध्यान करके प्रणाममन्त्रों का पाठ करे।

नमामि सद्गुरुं शान्तं प्रत्यक्षं शिवरूपिणम्।
शिरसा योगपीठस्थं मुक्तिकामार्थसिद्धये ॥२॥
श्रीगुरुं परमानन्दं वन्दाम्यानन्दविग्रहम्।
यस्य सान्निध्यमात्रेण चिदानन्दायते परम् ॥३॥
अज्ञानतिमिरान्धस्य ज्ञानाञ्जनशलाकया।
चक्षुरुन्मीलितं येन तस्मै श्रीगुरवे नमः ॥४॥
अखण्डमण्डलाकारं व्याप्तं येन चराचरम्।
तत्पदं दर्शितं येन तस्मै श्रीगुरवे नमः ॥५॥

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुर्गुरुः साक्षान्महेश्वरः ।
गुरुरेव जगत्सर्वं तस्मै श्रीगुरवे नमः ॥६॥
नमस्ते नाथ भगवञ्छिवाय गुरुरूपिणे ।
विद्यावतारसंसिद्ध्यै स्वीकृतानेकविग्रहे ॥७॥
नवाय नवरूपाय परमार्थैकरूपिणे ।
सर्वाज्ञानतमोभेदभानवे चिद्घनाय ते ॥८॥
स्वतन्त्राय दयाक्लृप्तविग्रहाय परात्मने ।
परतन्त्राय भक्तानां भव्यानां भव्यरूपिणे ॥९॥
प्रकाशिनां प्रकाशाय विवेकाय विदेकिनाम् ।
ज्ञानिनां ज्ञानरूपाय विमर्शाय विमर्शिनाम् ॥१०॥
पुरस्तात् पार्श्वयोः पृष्ठे नमस्कुर्यामुपर्यधः ।
सदा सच्चित्तरूपेण विधेहि भवदासनम् ॥११॥

शान्त, प्रत्यक्ष, शिवस्वरूप सद्‌गुरु को प्रणाम करता हूँ। मोक्षकामना की सिद्धि के लिये योगपीठस्थ गुरु को शिर झुकाकर प्रणाम करता हूँ। परमानन्द आनन्दमूर्ति श्रीगुरु को मैं प्रणाम करता हूँ, जिसके निकट जाने मात्र से ही चित्त में परमानन्द प्राप्त हो जाता है। अज्ञानतम से अन्धे को शलाका से ज्ञान अञ्जन लगाकर जो आँखों को खोलते हैं, ऐसे गुरु को प्रणाम करता हूँ। अखण्ड मण्डलाकार व्रह्माण्ड के चराचरों में जो व्याप्त है, उसके पदों को दिखाने वाले श्री गुरुदेव को मैं प्रणाम करता हूँ। गुरु ही व्रह्मा हैं, वही विष्णु हैं और गुरु ही साक्षात् महेश्वर हैं। गुरु ही सारे संसार के रूप में हैं। ऐसे गुरुदेव को मैं प्रणाम करता हूँ। गुरुरूपधारी नाथ भगवान् शिव को प्रणाम है। विद्यावतार की सिद्धि के लिये उन्होंने ही अनेक रूप धारण किया है। नव कार्यों के लिये नवरूप होकर भी परमार्थसिद्धि के लिये जो एकरूप हैं, सभी अज्ञानरूपी अन्धकार को दूर करने वाले सूर्यरूपी चिद्‌घन हैं, उन्हें प्रणाम है। जो स्वतन्त्र हैं, दया की मूर्ति हैं, परमात्मा हैं, वे ही परतन्त्र भक्तों को भव्य बनाने के लिये भव्य रूप धारण करते हैं। प्रकाशों को प्रकाशित करने के लिये, विवेकियों को विवेक देने के लिये, ज्ञानियों को ज्ञान देने के लिये, विमर्शियों को विमर्श देने के लिये जो रूप धारण करते हैं, उन्हें प्रणाम है। उन्हें आगे से, अगल-बगल से, पीछे से, ऊपर से और नीचे से नमस्कार है। सदैव सत् चित रूप से आप इस आसन पर विराजमान रहें।।२-११।।

इति श्रीगुरुं प्रणम्य, सुप्रसन्नं विभाव्य मनसा तदाज्ञां गृहीत्वा, मूलाधारे स्वर्णवर्णचतुर्दलकमलकर्णिकान्तर्गतत्रिकोणचक्रान्तर्गतशृङ्गाटकोपरि परां

शक्तिं कुण्डलिनीमुद्यद्दिनकरसहस्रभास्वरां विद्युत्कोटिसन्निभां सकलमन्त्रमातरं पञ्चाशद्वर्णविग्रहामष्टात्रिंशत्कलारूपिणीं सर्वप्राणिजीवां त्रिधामधामानं सर्पाकारामूर्ध्वमुखीं सार्धत्रिवलयां बिसतन्तुतनीयसीं सुप्तां विभाव्य गुरूपदिष्टनिजसहजनादेन सचैतन्यां विधाय, तत्र चतुर्दलेषु वं नमः, शं नमः, षं नमः, सं नमः इति पत्रेषु प्रादक्षिण्येन मध्ये मूलेन च संपूज्य, हंसः इति मन्त्रेण सर्वत्रोत्थाप्य, ततो विद्रुमवर्णे स्वाधिष्ठाने लिङ्गमूले षड्दलकमले तां नीत्वा, तत्र बं नमः, भं नमः, मं नमः, यं नमः, रं नमः, लं नमः इति पत्रेषु मध्ये मूलेन च संपूज्य, ततो मणिपूरके नाभौ नीलवर्णे दशदलकमले तां नीत्वा तत्र डं नमः, ढं नमः, णं नमः, तं नमः, थं नमः, दं नमः, धं नमः, नं नमः, पं नमः, फं नमः इति पत्रेषु मध्ये मूलेन च संपूज्य, ततो वक्षस्यनाहते पिङ्गलवर्णे द्वादशदलकमले तां नीत्वा तत्र कं नमः, खं नमः, गं नमः, घं नमः, ङं नमः, चं नमः, छं नमः, जं नमः, झं नमः, ञं नमः, टं नमः, ठं नमः इति पत्रेषु मध्ये मूलेन च संपूज्य, ततो विशुद्धौ कण्ठे धूम्रवर्णे षोडशदलकमले तां नीत्वा तत्र अं नमः, आं नमः, इं नमः, ईं नमः, उं नमः, ऊं नमः, ऋं नमः, ॠं नमः, लृं नमः, लॄं नमः, एं नमः, ऐं नमः, ओं नमः, औं नमः, अं नमः, अः नमः इति पत्रेषु मध्ये मूलेन च संपूज्य, तत आज्ञाचक्रे भ्रूमध्ये विद्युद्वर्णे द्विदलकमले तां नीत्वा तत्र हं नमः, क्षं नमः इति पत्रयोर्मध्ये मूलेन च संपूज्य, ततो ब्रह्मरन्ध्रगतद्वादशान्तचक्रं प्रापय्य तत्र सहस्रदलकमलकर्णिकान्तवर्तिबिन्दुरूपतेजोमयपरमशिवेन सहैकतां नीत्वा, ततः स्रवता परमामृतेन तां सन्तर्प्य तत्र नादश्रवणतत्परो मुहूर्तं लयं विभाव्य, ततोऽवरोहे सर्वत्र सोऽहमिति मन्त्रेण कमलात्कमलेऽवरोह्यमाणामाज्ञाचक्रादिक्रमेण तेषु तेषु कमलेषु तैस्तैरक्षरैः संपूज्यमानां तत्तदाधारतत्तद्धातुतत्तद्वर्णतत्तदधिदेवताः सन्तर्पयन्तीं मूलाधारं प्रापय्य तत्रैव स्वस्थाने संस्थापयेत्। इत्यारोहावरोहक्रमेण परां शक्तिं कुण्डलिनीं ध्यात्वा—

प्रकाशमानां प्रथमे प्रयाणे प्रतिप्रयाणेऽप्यमृतायमानाम्।
अन्तःपदव्यामनुसञ्चरन्तीमानन्दरूपामबलां प्रपद्ये॥

इति स्तुत्वा,

नाहमस्मि न चान्योऽस्ति ध्येयं चात्र न विद्यते।
आनन्दपदसंलीनं मनः समरसीगतम्॥

अहं देवी न चान्योऽस्ति ब्रह्मैवाहं न शोकभाक्।
सच्चिदानन्दरूपोऽहं स्वात्मानमिति चिन्तयेत्॥

इस प्रकार गुरु को प्रणाम करके उन्हें प्रसन्न समझकर उनसे मानसिक आज्ञा ग्रहण करके अपने आसन पर बैठे। चिन्तन करे कि मूलाधार चक्र में स्वर्णवर्ण चतुर्दल कमल है। उसकी कर्णिका के त्रिकोण में स्थित चतुर्दल पर पराशक्ति है। वह उदित सहस्र सूर्य-सी प्रकाशवती है। करोड़ विद्युत की आभा के समान वह चमकीली है। सभी मन्त्रों की माँ है। पचास मातृकाओं से युक्त विग्रह वाली है। अट्ठाईस कलारूपिणी है। सभी प्राणियों का जीव है। त्रिधामों का धाम है। साढ़े तीन कुण्डल मारे, सर्पाकारा, ऊर्ध्वमुखी, विसतन्तु-सी सूक्ष्म सोयी हुई है। गुरूपदिष्ट सहज नाद से चैतन्य हो गयी है। ऐसी भावना करके निम्नवत् पूजा करे—

चतुर्दल में—वं नमः, शं नमः, षं नमः, सं नमः से प्रादक्षिण्य क्रम से पूजन करके मध्य में मूल मन्त्र से पूजन करे। इसके बाद हंस मन्त्र से कुण्डलिनी को जगा कर मूंगे के वर्ण के स्वाधिष्ठान चक्र में ले आये। यह लिङ्गमूल में है। इस चक्र में छः दल हैं। इसमें पूजन करे।

स्वाधिष्ठान के षड्दल में—बं नमः, भं नमः, मं नमः, यं नमः, रं नमः, लं नमः से पूजा करे। मध्य में मूल मन्त्र से पूजन करे।

नाभि में स्थित नीलवर्ण मणिपूर दशदल कमल में कुण्डलिनी को लाकर उसके पत्रों में पूजन करे—डं नमः, ढं नमः, णं नमः, तं नमः, थं नमः, दं नमः, धं नमः, नं नमः, पं नमः, फं नमः। मध्य में मूल मन्त्र से पूजन करे।

इसके बाद कुण्डलिनी को हृदय में स्थित पिङ्गल वर्ण द्वादशदल कमल अनाहत में ले आकर द्वादश दलों में पूजन करे—कं नमः, खं नमः, गं नमः, घं नमः, ङं नमः, चं नमः, छं नमः, जं नमः, झं नमः, ञं नमः, टं नमः, ठं नमः। चक्र के मध्य में मूल मन्त्र से पूजन करे।

इसके बाद कुण्डलिनी को धूम्रवर्ण, षोड़शदल कमल कण्ठ के समीप स्थित विशुद्धि चक्र में ले आये। उसके सोलह दलों में पूजन करे—अं नमः, आं नमः, इं नमः, ईं नमः, उं नमः, ऊं नमः, ऋं नमः, ॠं नमः, ऌं नमः, ॡं नमः, एं नमः, ऐं नमः, ओं नमः, औं नमः, अं नमः, अः नमः। मध्य में मूल मन्त्र से पूजन करे।

तब कुण्डलिनी को विद्युद् वर्ण द्विदल कमल भ्रूमध्य में आज्ञाचक्र में ले आये। उसके दोनों दलों में पूजन करे—हं नमः, क्षं नमः। मध्य में मूल मन्त्र से पूजन करे।

इसके बाद कुण्डलिनी को ब्रह्मरन्ध्र स्थित द्वादशान्त चक्र में ले आये। वहाँ सहस्रदल कमल की कर्णिका में बिन्दुरूप परम तेजोमय परमशिव के साथ संयुक्त करे। वहाँ पर झरते अमृत से कुण्डलिनी का तर्पण करे। उसका तर्पण करके नादश्रवण में तत्पर होकर उसमें लय होने की भावना करे। तब कुण्डलिनी को सोहं मन्त्र से एक कमल से दूसरे कमल पर चढ़ाते हुये आज्ञाचक्र में ले आये। तब विशुद्धि, तब अनाहत, तब मणिपुर, तब स्वाधिष्ठान, तब मूलाधार में ले आये। प्रत्येक चक्र के दलों में स्थित वर्णों का पूजन करते हुए ले आये। प्रत्येक चक्र के आधार, उसके धातु, उसके वर्ण, उसके अधिदेवता को तर्पण करते हुए अवरोहण करे। तब उसे मूलाधार में अपने स्थान में स्थापित करे। इस प्रकार आरोह क्रम से पराशक्ति कुण्डलिनी का ध्यान करे। इसके बाद निम्न स्तोत्रों का पाठ करे—

प्रकाशमाना प्रथमे प्रयाणे प्रतिप्रयाणेऽप्यमृतायमानाम्।
अन्तःपदव्यामनुसञ्चरन्तीमानन्दरूपामबलां प्रपद्ये।।

इस प्रकार स्तुति करके इसका पाठ करे—

नाहमस्मि न चान्योऽस्ति ध्येयं चात्र न विद्यते।
आनन्दपदसंलीनं मनः समरसीगतम्।।
अहं देवी न चान्योऽस्ति ब्रह्मैवाहं न शोकभाक्।
सच्चिदानन्दरूपोऽहं स्वात्मानमिति चिन्तयेत्।।

देवी कुण्डलिनी की स्तुति का अर्थ यह है कि कुण्डलिनी प्रथम आरोह-प्रयाण में ज्योतिर्मयी रहती है। प्रतिप्रयाण अवरोह क्रम में अमृतस्वरूपा होती है। अतः पदों में सञ्चरण करती है। उस आनन्दरूपा अबला को नमस्कार करता हूँ।

साधक अपने बारे में सोचता है कि मैं नहीं हूँ, न दूसरा कोई है। यहाँ अब ध्येय कोई नहीं है। आनन्द पद में संलीन मन समरस हो गया है। मैं देवी हूँ। देवी के सिवा दूसरा नहीं हूँ। मैं ब्रह्म हूँ, न कि शोकयुक्त। मैं सच्चिदानन्दरूप हूँ। इस प्रकार साधक अपने बारे में चिन्तन करे।

इति संस्मृत्य गुरूपदेशपूर्वं सूक्ष्मध्यानेनैवानेन स्वेष्टदेवतास्थूलध्यानं कुर्यात्।

तत्तेजसा व्याप्तं स्वदेहं विचिन्त्य तत्तेजसैव परिणतां स्वहृदयकमले स्वाभेदेन श्रीपरदेवतां ध्यात्वा प्राणायामत्रयं कुर्यात्। तद्विधिर्यथा—तत्र विहित-पद्माद्यासनो मूलाधारार्पितचित्तवृत्तिर्मूलं प्रणवं वा षोडशवारमुच्चरन् दक्षाङ्गुष्ठेन दक्षनासापुटं निरुध्य वामेन पुटेन पवनं पूरयेत्। ततस्तमेव चतुष्-

ष्टिवारमुच्चरन् दक्षानामाकनिष्ठाभ्यां वामं पुटं च दृढं निरुध्य द्वाभ्यां पवनं कुम्भयेत्। ततस्तमेव द्वात्रिंशद्वारमुच्चरन् वामं पुटं तथैव निरुध्य दक्षिणेन पुटेन पवनं शनैः शनै रेचयेदित्येकः प्राणायामः। एष एव विपर्ययेण क्रियमाणो द्वितीयः। प्रथमवत् तृतीयः।

इस प्रकार का स्मरण करके गुरु के उपदेश के अनुसार ऐसा सूक्ष्म ध्यान करके अपने इष्टदेवता का स्थूल ध्यान करे। अपने देह को देवता के तेज से व्याप्त समझकर उस तेज से परिणत अपने हृदयकमल में श्रीपरदेवता का ध्यान करके तीन प्राणायाम करे। प्राणायाम की विधि इस प्रकार है—

विहित पद्मासन में बैठकर मूलाधार में अर्पित चितवृत्ति से मूल मन्त्र या ॐ का मानसिक उच्चारण सोलह बार करते हुए दाहिने अँगूठे से दाहिने नासापुट को बन्द करके बाँयें नासापुट से श्वास ले। तव दक्ष अनामिका-कनिष्ठा से वाम नासापुट बन्द करके श्वास रोके और मन ही मन चौंसठ बार मन्त्र का जप करे। इस कुम्भक के बाद दाँयें नासापुट से श्वास को बाहर निकालते हुए बत्तीस बार मन्त्र का जप करे। इसे रेचक कहते हैं। इस प्रकार पूरक-कुम्भक-रेचक को एक प्राणायाम कहते हैं। फिर इसी प्रकार दाँयें नासापुट से पूरक करके कुम्भक और फिर रेचक करे। यह दूसरा प्राणायाम हुआ। फिर बाँयाँ से साँस लेकर पूरक, रोककर कुम्भक और दाँयाँ से रेचक करे। यह तीसरा प्राणायाम हुआ।

इत्थं प्राणायामत्रयेण निरस्तसकलकलुषं स्वदेहं देवताराधनयोग्यं विभाव्य स्वमूलविद्याया ऋष्यादिस्मरणं विदधीत। यथा—अस्य श्रीज्वालामुखी-मन्त्रराजस्य श्रीवैश्वानर ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः, श्रीज्वालामुखी देवता, ह्रीं बीजं, श्रीं शक्तिः, हूं कीलकं चतुर्वर्गसाधनार्थे जपे विनियोगः इति स्मृत्वा न्यसेत्। श्रीवैश्वानरऋषये नमः शिरसि, अनुष्टुप्छन्दसे नमो मुखे, श्रीज्वालामुखीदेवतायै नमो हृदि, ह्रीं बीजाय नमो गुह्ये, श्रीं शक्तये नमः पादयोः, हूं कीलकाय नमो नाभौ, जपे विनियोगाय नमः सर्वाङ्गेषु। इति ऋष्यादिन्यासः। ॐह्रांश्रां अङ्गुष्ठाभ्यां नमः, ॐह्रींश्रीं तर्जनीभ्यां स्वाहा, ॐह्रूंश्रूं मध्यमाभ्यां वषट्, ॐह्रैंश्रैं अनामिकाभ्यां हुं, ॐह्रौंश्रौं कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्, ॐह्रःश्रः करतलकरपृष्ठाभ्यां फट्। एवं हृदयादिन्यासः। इति करषडङ्गन्यासं विधाय स्वहृदयकमले स्वाभेदेन श्रीभैरवभैरव्यौ ध्यायेत्।

इस प्रकार तीन प्राणायाम करके भावना करे कि शरीर कलुषरहित हो गया। अब यह देवता के आराधन के योग्य हो गया। इसके बाद ऋष्यादि न्यास करे।

विनियोग—अस्य श्रीज्वालामुखीमन्त्रस्य श्रीवैश्वानर ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः, श्रीज्वालामुखी देवता, ह्रीं बीजं, श्रीं शक्तिः, हुं कीलकं, चतुर्वर्गसाधनार्थे जपे विनियोगः।

इसके बाद ऋष्यादि न्यास करे—वैश्वानरऋषये नमः शिरसि। अनुष्टुप्छन्दसे नमः मुखे। श्रीज्वालामुखीदेवतायै नमः हृदि। ह्रीं बीजाय नमः गुह्ये। श्रीं शक्तये नमः पादयोः हूं कीलकाय नमः नाभौ। जपे विनियोगाय नमः सर्वांगेषु।

करन्यास—ॐ ह्रां श्रां अङ्गुष्ठाभ्यां नमः। ॐ ह्रीं श्रीं तर्जनीभ्यां स्वाहा। ॐ ह्रूं श्रूं मध्यमाभ्यां वषट्। ॐ ह्रैं श्रैं अनामिकाभ्यां हुं। ॐ ह्रौं श्रौं कनिष्ठाभ्यां वौषट्। ॐ ह्रः श्रः करतलकरपृष्ठाभ्यां फट्।

षडङ्गन्यास—ॐ ह्रां श्रां हृदयाय नमः। ॐ ह्रीं श्रीं शिरसे स्वाहा। ॐ ह्रूं श्रूं शिखायै वषट्। ॐ ह्रैं श्रैं कवचाय हुं। ॐ ह्रौं श्रौं नेत्रत्रयाय वौषट्। ॐ ह्रः स्त्रः अस्त्राय फट्।

इस प्रकार ऋषि, कर, षडङ्ग न्यास करके अपने हृदय में अपने को इष्टदेवता से अभिन्न मानकर श्रीभैरव, भैरवी का ध्यान करे।

यथा—

त्रिनेत्रमिन्द्वर्धकिरीटरत्नं कल्पान्तसूर्यप्रभमिन्दुहासम्।
वृषासनं शूलकपालहस्तं वन्दे महादेवमहं चिदीशम्॥१॥
ज्वालापर्वतसंस्थितां त्रिनयनां पीठत्रयाधिष्ठितां
ज्वालाडम्बरभूपितां सुवदनां नित्यामदृश्यां जनैः।
षट्चक्राम्बुजमध्यगां वरशराम्भोजाभयान् बिभ्रतीं
चिद्रूपां सकलार्थदीपनकरीं ज्वालामुखीं नौम्यहम्॥२॥

चित् के ईश्वर महादेव की हम वन्दना करते हैं। इनके तीन नेत्र हैं। रत्नकिरीट में द्वितीया का चाँद है। प्रभा कल्पान्त सूर्य के समान है। चन्द्रमा के समान मृदुल हास है। नन्दी पर सवार हैं। एक हाथ में त्रिशूल और दूसरे हाथ में कपाल है।

चिद्रूपा सभी मनोरथों को देने वाली ज्वालामुखी को हम प्रणाम करते हैं। ये ज्वाला पर्वत पर संस्थित हैं। इनके तीन नेत्र हैं। पीठत्रय पर अधिष्ठित हैं। ज्वालाडम्बर से विभूषित हैं। सुन्दर मुखमण्डल है। ये नित्य और अदृश्य हैं। षट्चक्र कमल के मध्य में विराजित हैं। इनके चार हाथ हैं। हाथों में वर, बाण, कमल और अभयमुद्रा है।।१-२।।

इति ध्यात्वा मानसोपचारैराराध्य, ॐमिति सेतुं हृदि दशधा विन्यस्य, स्त्रीमिति महासेतुं विशुद्धौ सहस्रारे च दशधा विन्यस्य, ॐअंमूलं ऐंअंआमित्यादि क्षः इत्यन्तम्। ॐमिति मणिपूरके निर्वाणं दशधा जपेत्। मन्त्रसंस्कारं कुर्यात्। यथा 'श्रींॐ ज्वालामुखि मम सर्वशत्रून् भक्षय २ हूं फट् स्वाहा ह्रीं' इति त्रिर्जपेत्, इत्युत्कीलनम्। 'हूंॐह्रींश्रीं ज्वालामुखि मम सर्वशत्रून् भक्षय २ स्वाहा' इति त्रिःसञ्जीवनम्। चंछंजं मूलं झंजं इति त्रिर्जपेत्, इति तौटिल्यम्। ॐह्रींश्रीं ज्वालामुखि भैरवशापं मोचय २ हूं फट् स्वाहा, इत शापहरीं दशधा जपेत्। ॐह्रींश्रीं कुरुकुल्लायै स्वाहा, इति कुरुकुल्लां दशधा जपेत्। ॐह्रींश्रीं नमो ज्वालामुख्यस्त्राय दहदह दुरितं हूं फट् हन२ कीलान् स्वाहा ज्वालामुखीं ह्रीं स्वाहा, इत्यस्त्रमन्त्रं त्रिर्जपेत्। ॐ मूलं ॐ इत्यशौचद्वयनिवारणार्थं सप्तधा जपेत्। ॐज्वालामुख्यै विद्महे ह्रीं जगद्भक्षिण्यै धीमहि श्रीं तन्नो ज्वाले प्रचोदयात्, इति मूलगायत्रीं दशधा जप्त्वा, मालामादाय

ॐ मां माले महामाले सर्वशक्तिस्वरूपिणि।
चतुर्वर्गस्त्वयि न्यस्तस्तस्मान्मे सिद्धिदा भव॥

इस प्रकार ध्यान करके मानसोपचारों से पूजन करे। सेतु ॐ से हृदय में दश बार न्यास करे। स्त्रीं महासेतु से विशुद्धि और सहस्रार में दश-दश बार न्यास करे। सहस्रार में मातृका वर्णों के साथ मूल मन्त्र का न्यास करे, जैसे—ॐ अं ॐ ह्रीं श्रीं ज्वालामुखि मम सर्वशत्रून् भक्षय भक्षय हुं फट् स्वाहा। ॐ आं ॐ ह्रीं श्रीं ज्वालामुखि मम सर्वशत्रून् भक्षय भक्षय हुं फट् स्वाहा। ॐ क्षं ॐ ह्रीं श्रीं ज्वालामुखि मम सर्वशत्रून् भक्षय भक्षय हुं फट् स्वाहा।

इसके बाद मणिपूर में ॐ का जप दश बार करे। तब मन्त्रसंस्कार करे। जैसे—'श्रीं ॐ ज्वालामुखि मम सर्वशत्रून् भक्षय भक्षय हूं फट् स्वाहा ह्रीं' का तीन बार जप करके उत्कीलन करे। 'हूं ॐ ह्रीं श्रीं ज्वालामुखि मम सर्वशत्रून् भक्षय भक्षय स्वाहा' का तीन बार जप करके सञ्जीवन करे। 'चं छं जं ॐ ह्रीं श्रीं ज्वालामुखि मम सर्वशत्रून् भक्षय भक्षय हूं फट् स्वाहा झं जं' का तीन बार जप करके तौटिल्य करे। 'ॐ ह्रीं श्रीं ज्वालामुखि भैरवशापं मोचय मोचय हूं फट् स्वाहा' का जप दश बार करके शापविमोचन करे। 'ॐ ह्रीं श्रीं कुरुकुल्लायै स्वाहा' का जप दश बार करे। 'ॐ ह्रीं श्रीं नमो ज्वालामुखि अस्त्राय दह दह दुरितं हूं फट् हन हन कीलान् स्वाहा ज्वालामुखि ह्रीं स्वाहा' इस अस्त्रमन्त्र का जप तीन बार करे। 'ॐ ॐ ह्रीं श्रीं ज्वालामुखि मम सर्वशत्रून् भक्षय

भक्षय हूं फट् स्वाहा ॐ' का जप दो अशौचों के निवारण के लिये सात बार करे। इसके बाद मूल गायत्री का जप करे; जैसे—ॐ ज्वालामुख्यै विद्महे ह्रीं जगद्भक्षिण्यै धीमहि श्रीं तन्नो ज्वाले प्रचोदयात्। इसका जप दश बार करे। तदनन्तर माला लेकर इस श्लोक का पाठ करे—

ॐ मां माले महामाले सर्वशक्तिस्वरूपिणि।
चतुर्वर्गस्त्वयि न्यस्तस्तस्मान्मे सिद्धिदा भव।।

ॐह्रीं सिद्ध्यै नमः, इति मनसा गन्धादिना तां संपूज्य,

ॐगं अविघ्नं कुरु माले त्वं सर्वभावेषु सर्वदा।

इति मनसा पूजिता दक्षकरेण मालामादाय शिरसि श्रीगुरुं शुक्लवर्णं कण्ठे स्वर्णवर्णां मूलविद्यां हृदि श्रीपरदेवी यथोक्तरूपां ध्यायन् यथाशक्ति जपं कृत्वा, जपान्ते—

त्वं माले सर्वदेवानां प्रीतिदा शुभदा भव।
शुभं कुरुष्व मे भद्रे यशो वीर्यं च सर्वदा॥

इति पठित्वा मालां शिरसि संस्थाप्य, ॐह्रांह्रौं महादेवाय नमः इति भैरवमन्त्रं यथोक्तविधिना संजप्य, मूलं ससंपुटं त्रिर्जप्त्वा पुनरपि प्राणायामादिन्यासान् विधाय—

गुह्यातिगुह्यगोप्त्री त्वं गृहाणास्मत्कृतं जपम्।
सिद्धिर्भवतु मे देवि त्वत्प्रसादान्महेश्वरि॥

इत्यनेन तेजोमयं जपं श्रीदेवीवामहस्ते समर्प्य योनिमुद्रया प्रणमेत्।

प्रातः प्रभृति सायान्तं सायादि प्रातरन्ततः।
यत्करोमि जगद्योने तदस्तु तव पूजनम्॥

'ॐ ह्रीं सिद्ध्यै नमः' से मानसिक उपचारों से माला का पूजन करे। 'ॐ गं अविघ्नं कुरु माले त्वं सर्वभावेषु' सर्वदा कहकर दाहिने हाथ में माला लेकर शिर में शुक्ल वर्ण के गुरु, कण्ठ में स्वर्ण वर्ण की मूल विद्या, हृदय में श्री परा देवी का यथोक्त रूप में ध्यान करते हुए यथाशक्ति जप करे।

त्वं माले सर्वदेवानां प्रीतिदा शुभदा भव।
शुभं कुरुष्व मे भद्रे यशोवीर्यं च सर्वदा।।

इसका पाठ करके माला को शिर पर रखकर 'ॐ ह्रां ह्रौं महादेवाय नमः' भैरवमन्त्र का यथोक्त विधि से जप करे। सम्पुटसहित मूल मन्त्र का जप तीन बार करे। फिर

से प्राणायाम, न्यास आदि करे।

गुह्यातिगुह्यगोप्त्री त्वं गृहाणास्मत्कृतं जपम्।
सिद्धिर्भवतु मे देवि त्वत्प्रसादान्महेश्वरि।।

इस मन्त्र को बोलकर तेजोमय जप को श्रीदेवी के वाम हस्त में समर्पित करे। योनिमुद्रा से प्रणाम करे। इसके बाद निजकृत्य का समर्पण करे—

प्रात:प्रभृति सायान्तं सायादि प्रातरन्तत:।
यत्करोमि जगद्योने तदस्तु तव पूजनम्।।

इति निजकृत्यं समर्प्य, स्वकार्यानुष्ठानाय,

त्रैलोक्यचैतन्यमयि सुरेशि श्रीज्वालिके त्वच्चरणाज्ञयैव ।
प्रातः समुत्थाय तव प्रियार्थं संसारयात्रामनुवर्तयिष्ये ॥
संसारयात्रामनुवर्तमानं ज्वालामुखि त्वच्चरणाज्ञयालम् ।
स्पर्धातिरस्कारकलिप्रमादभयानि मां माभिभवन्तु मातः ॥
जानाम्यधर्मं न च मे निवृत्तिर्जानामि धर्मं न च मे प्रवृत्तिः ।
त्वया हृषीकेशि हृदिस्थयाहं यथा नियुक्तोऽस्मि तथा करोमि ॥

इति श्रीदेव्याज्ञां प्रार्थ्य, मूलाधारादिद्वादशान्तचक्रपर्यन्तस्थिताभ्यो महागणपतिप्रभृतिदेवताभ्यः श्रीगुरूपदेशज्ञातं सहजसिद्धमजपाजपं सङ्कल्प्य समर्पयेत्। यथा अद्य पूर्वेद्युरहोरात्राचरितमुच्छ्वासनि:श्वासात्मकं षट्शताधिकमेकविंशतिसहस्रसंख्याकमजपाजपं मूलाधारस्वाधिष्ठानमणिपूरानाहतविशुद्धाज्ञाब्रह्मरन्ध्रेषु चतुर्दल-षड्दल-दशदल-द्वादशदल-षोडशदल-द्विदल-सहस्रदलेषु स्वर्णविद्रुमनीलपिङ्गलधूम्रविद्युत्कर्बुरवर्णेषु स्थिताभ्यो गणपतिब्रह्मविष्णुरुद्रजीवात्मपरमात्मश्रीगुरुपादुकाभ्यो यथाभागशः समर्पयामि, इति स्मृत्वा कृताञ्जलिर्न्यसेत्। यथा—ॐऐंह्रींश्रीं मूलाधारचक्रस्थाय श्रीगणपतये अजपाजपानां षट्शतानि समर्पयामि नमः। ४ँ स्वाधिष्ठानचक्रस्थाय ब्रह्मणेऽजपाजपानां षट्सहस्राणि समर्प०। ४ँ मणिपूरचक्रस्थाय विष्णवेऽजपाजपानां षट्सहस्राणि समर्पया०। ४ँ अनाहतचक्रस्थाय रुद्रायाजपाजपानां षट्सहस्राणि समर्पया०। ४ँ विशुद्धचक्रस्थाय जीवात्मनेऽजपाजपानां सहस्रं समर्पया०। ४ँ आज्ञाचक्रस्थाय परमात्मनेऽजपाजपानां सहस्रं समर्प०। ४ँ सहस्रदलकमलकर्णिकामध्यवर्तिन्यै श्रीगुरुपादुकायै अजापाजपानां सहस्रं समर्पयामि नमः।

इत्यजपाजपं समर्प्य, अजपामन्त्रेण प्राणायामं कृत्वा संकल्पं कुर्यात्।

यथा—ॐअस्य श्रीअजपागायत्रीमन्त्रस्य, हंस ऋषिः, अव्यक्तगायत्रीछन्दः, श्रीपरमात्मा परमहंसो देवता, हं बीजं, सः शक्तिः, सोऽहं कीलकं, ॐकारस्तत्त्वं, उदात्तः स्वरः, नभः स्थानं, हैमो वर्णः, मम मुक्तिसाधनार्थे अजपाजपे विनियोगः। ॐ हंसऋषये नमः शिरसि। ॐ अव्यक्तगायत्रीच्छन्दसे नमो मुखे। ॐ श्रीपरमहंसदेवतायै नमो हृदि। ॐ हं बीजाय नमो गुह्ये। ॐ सः शक्तये नमः पादयोः। ॐ सोऽहं कीलकाय नमो नाभौ। ॐ ॐकारतत्त्वाय नमो हृदये। ॐ उदात्तस्वराय नमः कण्ठे। ॐ नभसे स्थानाय नमो मूर्ध्नि। ॐ हैमाय वर्णाय नमः सर्वाङ्गेषु, इति विन्यस्य मम मोक्षार्थेऽजपाजपे विनियोगः इति कृताञ्जलिः पठेत् । इति ऋष्यादिन्यासः।

अपने कार्य के अनुष्ठान के लिये देवी से आज्ञा प्राप्त करे—

त्रैलोक्यचैतन्यमयि सुरेशि श्रीज्वालिके त्वच्चरणाज्ञयैव।
प्रातः समुत्थाय तव प्रियार्थं संसारयात्रामनुवर्तयिष्ये।।
संसारयात्रामनुवर्तमानं ज्वालामुखि त्वच्चारणज्ञयालम्।
स्पर्धातिरस्कारकलिप्रमादभयानि मां माभिभवन्तु मातः।।
जानाम्यधर्मं न च मे निवृत्तिः जानामि धर्मं न च मे प्रवृत्तिः।
त्वया हृषिकेशि हृदिस्थयाहं यथा नियुक्तोऽस्मि तथा करोमि।।

इस प्रकार प्रार्थना करके मूलाधार से द्वादशान्त चक्र तक स्थित महागणपति आदि देवताओं का श्रीगुरु के उपदेश से ज्ञात सहज सिद्ध अजपाजप का संकल्प और समर्पण करे। जैसे—पहले अहोरात्र में श्वास-निःश्वासात्मक इक्कीस हजार छः सौ अजपाजप को मूलाधार, स्वाधिष्ठान, मणिपूर, अनाहत, विशुद्धि, आज्ञा, ब्रह्मरन्ध्र में, चतुर्दल, षड्दल, दशदल, द्वादश दल, षोड़शदल, द्विदल, सहस्रदल में स्वर्ण, विद्रुम, नील, पिङ्गल, धूम्र, विद्युत, कर्बुक वर्णो में स्थित गणपति, ब्रह्मा, विष्णु, रुद्र, जीवात्मा, परमात्मा, श्रीगुरुपादुका में यथाभाग समर्पण करता हूँ—इस प्रकार स्मरण करके अञ्जलि से न्यास करे। जैसे—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं मूलाधारचक्रास्थाय श्रीगणपतये अजपाजपानां षट्शतानि समर्पयामि। ॐ ऐं ह्रीं श्रीं स्वाधिष्ठानचक्रस्थाय ब्रह्मणे अजपाजपानां षट्सहस्राणि समर्पयामि। ॐ ऐं ह्रीं श्रीं मणिपूरचक्रस्थाय विष्णवे अजपाजपानां षट्सहस्राणि समर्पयामि। ॐ ऐं ह्रीं श्रीं अनाहतचक्रस्थाय रुद्राय अजपाजपानां षट्सहस्राणि समर्पयामि। ॐ ऐं ह्रीं श्रीं विशुद्धचक्रस्थाय जीवात्मने अजपाजपानां सहस्रं समर्पयामि। ॐ ऐं ह्रीं श्रीं आज्ञाचक्रस्थाय परमात्मने अजपाजपानां सहस्रं समर्पयामि।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं सहस्रदलकर्णिकामध्यवर्तिन्यै श्रीगुरुपादुकायै अजपाजपानां सहस्रं समर्पयामि नमः।

इस प्रकार अजपा-जप का समर्पण करके अजपा मन्त्र से प्राणायाम करके संकल्प करे—ॐ अस्य श्री अजपागायत्रीमन्त्रस्य हंस ऋषिः, अव्यक्तः छन्दः, श्रीपरमात्मा परमहंसो देवता, हं बीजं, सः शक्तिः, सोऽहं कीलकं, ॐकारः तत्त्वम्, उदात्तः स्वरः, नभः स्थानं, हैमो वर्णः मम मुक्तिसाधनार्थे अजपाजपे विनियोगः।

ऋष्यादि न्यास—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं हंसऋषये नमः शिरसि। ॐ ऐं ह्रीं श्रीं अव्यक्तगायत्रीछन्दसे नमः मुखे। ॐ ऐं ह्रीं श्रीं परमहंसदेवतायै नमः हृदि। ॐ ऐं ह्रीं श्रीं हं बीजाय नमो गुह्ये। ॐ ऐं ह्रीं श्रीं सः शक्तये नमः पादयोः। ॐ ऐं ह्रीं श्रीं सोऽहं कीलकाय नमः नाभौ। ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐकारतत्त्वाय नमः हृदये। ॐ उदात्तस्वराय नमः कण्ठे। ॐ ऐं ह्रीं श्रीं नभसे स्थानाय नमो मूर्ध्नि। ॐ ऐं ह्रीं श्रीं हैमाय वर्णाय नमः सर्वाङ्गेषु। मम मोक्षार्थे अजपाजपे विनियोगाय नमः।

४ँ ह्सां सूर्यात्मने स्वाहा अङ्गुष्ठाभ्यां नमः। ४ँ ह्सीं सोमात्मने स्वाहा तर्जनीभ्यां स्वाहा। ४ँ ह्सूं निरञ्जनात्मने स्वाहा मध्यमाभ्यां वषट्। ४ँ ह्सैं निराभासात्मने स्वाहा अनामिकाभ्यां हुं। ४ँ ह्सौं अनन्ततनुः सूक्ष्मादेवी प्रचोदयात् स्वाहा कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्। ४ँ ह्सः अव्यक्तबोधात्मने स्वाहा करतलकरपृष्ठाभ्यां फट्। एवं हृदयादिन्यासः। ततो ध्यानम्—

द्यां मूर्धानं यस्य विप्रा वदन्ति खं वै नाभिं चन्द्रसूर्यौ च नेत्रे ।
दिग्भिः श्रोत्रे यस्य पादौ क्षितिश्च ध्यातव्योऽसौ सर्वभूतान्तरात्मा ॥

इति विराट्स्वरूपं स्वात्मानं ध्यात्वा तदनुसन्धायिनं प्राणवायोर्निर्गमप्रवेशात्मकमजपामन्त्रं पञ्चविंशतिवारं जप्त्वा समर्प्य, श्रीगुरूपदिष्टमार्गेण नादानुसन्धानपूर्वकं निरस्तसमस्तोपाधिना केनापि चिद्विलासेन प्रवर्तमानोऽस्मीति विभाव्य, स्वकार्यानुष्ठानाय

समुद्रमेखले देवि पर्वतस्तनमण्डले ।
विष्णुपत्नि नमस्तुभ्यं पादस्पर्शं क्षमस्व मे ॥

इति भूमिं प्रार्थ्य, श्वासानुसारेण तस्यां पादं निधाय, 'नन्दन्तु साधकाः सर्वे' इत्यादि पठन् बहिर्निर्गत्य मलमूत्रोत्सर्गशौचाचमनं विधाय, क्लीं कामदेवाय सर्वजनमनोहराय नमः, इति दन्तधावनं कुर्यात्। ततो नद्यादौ गत्वा वैदिकस्नानं निर्वर्त्य तान्त्रिकस्नानमारभेत्।

करन्यास—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्सां सूर्यात्मने स्वाहा अङ्गुष्ठाभ्यां नमः। ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्सीं सोमात्मने स्वाहा तर्जनीभ्यां स्वाहा। ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्सूं निरञ्जनात्मने स्वाहा मध्यमाभ्यां वषट्। ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्सैं निराभासात्मने स्वाहा अनामिकाभ्यां हुं। ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्सौं अनन्ततनु सूक्ष्मा देवी प्रचोदयात् स्वाहा कनिष्ठाभ्यां वौषट्। ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्सः अव्यक्तबोधात्मने स्वाहा करतलकरपृष्ठाभ्यां फट्।

इसी प्रकार हृदयादि न्यास करने के पश्चात् निम्नवत् ध्यान करे—

द्यां मूर्धानं यस्य विप्रा वदन्ति खं वै नाभिं चन्द्रसूर्यौ च नेत्रे।
दिग्भिः श्रोत्रे यस्य पादौ क्षितिश्च ध्यातव्योऽसौ सर्वभूतान्तरात्मा।।

जिसकी मूर्धा पृथिवी है, जिसकी नाभि आकाश है, चन्द्र-सूर्य नेत्र हैं, दिशाएँ कान हैं, जिसके पैर पृथ्वी हैं, इस प्रकार के विप्रों द्वारा कथित ध्यान करने योग्य, जो सभी भूतों की अन्तरात्मा है, उसका ध्यान मैं करता हूँ।

अपने को इसी प्रकार के विराट् रूप का समझकर उसका अनुसंधान करे। प्राणवायु के निर्गम और प्रवेशात्मक अजपा मन्त्र का पच्चीस बार जप करे। तदनन्तर जप समर्पित करे।

गुरु द्वारा उपदिष्ट मार्ग से नादानुसन्धान करे। सभी उपाधियों से रहित होकर यह चिन्तन करे कि मैं किसके चिद्विलास से प्रवर्तमान हूँ। तब अपने कार्य के लिये भूमि की प्रार्थना करे—

समुद्रमेखले देवि पर्वतस्तनमण्डले।
विष्णुपत्नि नमस्तुभ्यं पादस्पर्शं क्षमस्व मे।।

जिधर साँस चल रही हो, उसी तरफ के पैर को पृथ्वी पर रखे। 'नन्दन्तु साधका सर्वे' इत्यादि का पाठ करके बाहर जाय। मल, मूत्र का उत्सर्ग करके शौच-आचमन करे। 'क्लीं कामदेवाय सर्वजनप्रियाय नमः' बोलकर दतुवन करे। तब नदी आदि जलाशय पर जाकर वैदिक स्नान करे। तदनन्तर तान्त्रिक स्नान आरम्भ करे।

यथा—तत्रादौ भूलेन करचरणमुखानि प्रक्षाल्य, ॐमणिधरि वज्रिणि महाप्रतिसरे रक्ष २ हूं फट् स्वाहा, इति शिखां बद्ध्वा, मूलविद्यया त्रिराचम्य, मूलं आंह्रीं इति गण्डूषषट्कं कृत्वा ह्रीं वैश्वानरऋषये नमः पुष्पार्घ्यधूपदीपादिना तुष्टो भव स्नानकाले विघ्नान्निवारय २ स्वाहा, इति दशधाभ्युक्ष्य मूलेन तटान्मृदं गृहीत्वा स्वाहेति शिलां प्रक्षाल्य, तत्र मृदं संस्थाप्य स्नानं कुर्यात्। तत्रादौ मूलं आत्मतत्त्वं शोधयामि स्वाहा, मू०

विद्यातत्त्वं शोधयामि स्वाहा, मू० शिवतत्त्वं शोधयामि स्वाहा, इत्याचम्य ऋष्यादिकरषडङ्गन्यासं च कृत्वा, ॐह्लींश्रीं ज्वालामुखि ह्लीं फट् स्वाहा, इति मृदो भागत्रयं कृत्वा ॐमित्येकां मृदं शोधयेत्। तत एकां मृदं गृहीत्वा अद्येत्यादि स्नानसङ्कल्पं कुर्यात्। ततो नद्यां नाभिमात्रे जले स्थित्वा स्वपुरतो जले हस्तमात्रं चतुरश्रं तीर्थं परिकल्प्य,

ॐ ब्रह्माण्डोदरतीर्थानि करैः स्पृष्टानि ते रवे।
तेन सत्येन देवेश तीर्थान् देहि दिवाकर॥

इति सूर्यात्तीर्थं प्रार्थ्य, क्रोमिति अङ्कुशमुद्रया सूर्यमण्डलं भित्त्वा,

ॐगां गङ्गे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति।
नर्मदे सिन्धुकावेरि जलेऽस्मिन् सन्निधिं कुरु॥

इति सूर्यमण्डलात्तीर्थान्यावाह्य पुरः कल्पिततीर्थे नियोज्य, पुनः सूर्यमण्डलादेव ह्लांह्लींह्लूंह्लैंह्लौंह्लः सर्वानन्दमयि तीर्थशक्ते एह्येहि स्वाहा, इति तीर्थशक्तिमावाह्य तस्मिंस्तीर्थमण्डले तां ध्यायेत्। यथा—

सर्वानन्दमयीमशेषदुरितध्वंसां मृगाङ्कप्रभां
त्र्यक्षां चोर्ध्वकरद्वयेन दधतीं पाशं सृणिं च क्रमात्।
दोर्भ्यां चामृतपूर्णहेमकलशं शुक्लाक्षमालाम्बरां
गङ्गासिन्धुसरिद्द्वयादिसहितां श्रीतीर्थशक्तिं भजे॥

सर्वप्रथम मूल मन्त्र का उच्चारण करके हाथ, पैर, मुख को स्वच्छ करे। शिखाबन्धन मन्त्र से शिखा बाँधे—ॐ मणिधरि वज्रिणि महाप्रतिसरे रक्ष रक्ष हूं फट् स्वाहा।

मूल मन्त्र बोलते हुए तीन आचमन करे। 'मूलं आं ह्लीं' से छः बार कुल्ला करे। 'ह्लीं वैश्वानरऋषये नमः पुष्प-अर्घ्य-धूप-दीपादिना तुष्टो भव स्नानकाले विघ्नान् निवारय निवारय स्वाहा' का जप दश बार करते हुए अभ्युक्षण करे। मूल मन्त्र से किनारे से मिट्टी लेकर शिला का प्रक्षालन करके उस पर उसे रखकर स्नान करे। पहले तीन आचमन करे—मूलमन्त्र आत्मतत्त्वं शोधयामि स्वाहा। मूलमन्त्र विद्यातत्त्वं शोधयामि स्वाहा। मूलमन्त्र शिवतत्त्वं शोधयामि स्वाहा।

इस प्रकार आचमन करके ऋष्यादि न्यास, करन्यास और षडङ्ग न्यास पूर्ववत् करे। 'ॐ ह्लीं श्रीं ज्वालामुखि ह्लीं फट् स्वाहा' से मिट्टी का तीन भाग करे। 'ॐ' कहकर मिट्टी का शोधन करे। मिट्टी का एक भाग लेकर अद्येत्यादि से सङ्कल्प करे। तब नदी में नाभि तक जल में खड़े होकर अपने आगे जल पर एक हाथ लम्बा-चौड़ा चतुरस्र तीर्थ की

कल्पना करे और यह पाठ करे—

ॐ ब्रह्माण्डोदरतीर्थानि करैः स्पृष्टानि ते रवे।
तेन सत्येन देवेश तीर्थान् देहि दिवाकर।।

इस प्रकार प्रार्थना करके 'क्रों' से अङ्कुशमुद्रा बनाकर सूर्यमण्डल का भेदन करके निम्न मन्त्र बोले—

ॐ गङ्गे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति।
नर्मदे सिन्धु कावेरि जलेऽस्मिन् सन्निधिं कुरु।।

इस प्रकार सूर्यमण्डल से तीर्थों का आवाहन करके अपने सामने के कल्पित तीर्थ में उसका नियोजन करे। तब सूर्यमण्डल से तीर्थशक्ति का आवाहन इस मन्त्र से करे— ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रैं ह्रौं ह्रः सर्वानन्दमयि तीर्थशक्ते ऐह्येहि स्वाहा। उस तीर्थमण्डल में तीर्थशक्ति का निम्नवत् ध्यान करे—

सर्वानन्दमयीमशेषदुरितध्वंसां मृगाङ्कप्रभां
त्र्यक्षां चोर्ध्वकरद्वयेन दधतीं पाशं सृणिञ्च क्रमात्।
दोर्भ्यां चामृतपूर्णहेमकलशं शुक्लाक्षमालाम्बरां
गङ्गासिन्धुसरिद्द्वयादिसहितां श्रीतीर्थशक्तिं भजे।।

इति ध्यात्वा योनिमुद्रया मूलेन तज्जलमष्टधाभिमन्त्र्य ह्रीमित्यालोड्य, वमिति धेनुमुद्रयामृतीकृत्य, ॐ आत्मतत्त्वाय नमः, ॐविद्यातत्त्वाय नमः ॐशिवतत्त्वाय नमः, इति तत्त्वत्रयं जले विन्यस्य तेन निजशिरस्त्रिः प्रोक्ष्य, एकां मृदं जले क्षिप्त्वा द्वितीयमृदाङ्गानि संशोध्य तृतीयां गृहीत्वा देवतावाहनं कुर्यात्। यथा—

ज्वालामुखि शिवारूढे ॐह्रींश्रींबीजत्रयान्विते।
परिवारयुते देवि जलेऽस्मिन् सन्निधिं कुरु॥

इति तृतीयया मृदा देवतामावाह्य तत्र जले यन्त्रं विभाव्य, ॐह्रींश्रीं ज्वालामुखि मम शत्रूनुत्सारय २, इति ज्वालामुखीं त्रिरभिषिच्य, मूलेन स्वात्मानं पूर्ववत् त्रिराचम्य मूलं स्मरन् श्रवणादिसप्तच्छिद्राणि निरुध्य त्रिर्निमज्ज्योन्मज्जेत्। ततः 'ह्रांह्रींसः सूर्याय एष ते जलाञ्जलिः' इति सूर्याय जलाञ्जलिं दत्त्वा त्रिराचम्य स्वशिरो मूलेन सप्तधाभ्युक्ष्य दशधा मूलं सञ्जप्य, जलात्तीरमारुह्य धौते वाससी परिधाप्य मूलेन त्रिपुण्ड्रमूर्ध्वपुण्ड्रं वा तिलकं कुर्यात्। इति स्नानविधिः।

इस प्रकार ध्यान करके योनिमुद्रा से मूल मन्त्र द्वारा उस जल को आठ बार अभिमन्त्रित करे। 'ह्रीं' से जल को आलोड़ित करे। 'वं' से धेनुमुद्रा के द्वारा उसका अमृतीकरण करे। ॐ आत्मतत्त्वाय नमः। ॐ विद्यातत्त्वाय नमः। ॐ शिवतत्त्वाय नमः से तीनों तत्त्वों का जल में न्यास करे। उस जल से तीन बार शिर का प्रोक्षण करे। मिट्टी का एक भाग जल में डाल दे। दूसरे भाग को अपने शरीर में मले। मिट्टी के तीसरे भाग को लेकर देवता का आवाहन करे—

ज्वालामुखि शिवारूढ़े ॐह्रींश्रीं बीजत्रयान्विते।
परिवारयुते देवि जलेऽस्मिन् सन्निधिं कुरु।।

इसके बाद जल में यन्त्र की कल्पना करके 'ॐ ह्रीं श्रीं ज्वालामुखि मम शत्रूनुत्सारय उत्सारय' से ज्वालामुखी का अभिसेचन तीन बार करे। मूल मन्त्र से अपने पर जल का छींटा मारकर पूर्ववत् तीन आचमन करे। मूल मन्त्र का स्मरण करते हुए श्रवणादि सात छिद्रों को बन्द करके तीन बार निमज्जन-उन्मज्जन करे। तब 'ह्रां ह्रीं सः सूर्याय एष ते जलाञ्जलिः' से जलाञ्जलि देवे। तीन आचमन करके मूल मन्त्र से अपने शिर पर सात बार जल का छींटा दे। दश बार मूल मन्त्र का जप करे। तब जल से बाहर आकर वस्त्र बदले। मूल मन्त्र से त्रिपुण्ड्र, ऊर्ध्वपुण्ड्र या तिलक लगावे। यही स्नानविधि है।

ततः प्रथमं वैदिकीं संध्यां कृत्वा तान्त्रिकीमारभेत। यथा—पूर्ववदाचम्य प्राणायामर्ष्यादिकरषडङ्गन्यासान् विधाय स्वपुरतस्तीर्थजलं धेनुमुद्रयामृतीकृत्य मूलेनाष्टधाभिमन्त्र्य तेन जलेन 'अं नमः' इत्यादि 'क्षं नमः' इत्यन्तं मातृकया स्वशिरः प्रोक्ष्य, मूलेन च त्रिः संप्रोक्ष्य वामहस्ते जलमादाय दक्षहस्तेनाच्छाद्य, लंवंरंयंहं इति पाञ्चभौतिकैर्मन्त्रैः सप्तधाभिमन्त्र्य, मूलेन च त्रिरभिमन्त्र्य तज्जलबिन्दुभिस्तत्त्वमुद्रया मूलेन च स्वशिरस्त्रिः प्रोक्ष्यावशिष्टजलं दक्षहस्ते निधाय, तेजोरूपं तज्जलमिडयाकृष्य स्वदेहान्तःस्थितं सकलकलुषं प्रक्षाल्य, तज्जलं कृष्णवर्णं पिङ्गलया बहिर्निर्गतं मत्वा, पुनर्वामहस्ते कृत्वा स्ववामभागे ज्वलद्वज्रशिलां ध्यात्वा 'ॐ क्लीं पशु हुं फट्' इति पाशुपतास्त्रमन्त्रेण तस्यां शिलायामास्फालयेत्। मूलेन जलमादाय प्रवहन्नाड्या सहस्रदल-परमामृतेनैकीभूतं विभाव्य निर्गमय्य तेन जलेन 'ॐअमृतमालिन्यै स्वाहा' इति कुशैः स्वशिरस्त्रिः प्रोक्ष्य, आत्मतत्त्वं शोधयामि स्वाहा, एवं विद्यातत्त्वं०, शिवतत्त्वं०, शिवतत्त्वं०, विद्यातत्त्वं०, आत्मतत्त्वं०, मूलं सर्वतत्त्वं शोधयामि० इति च त्रिराचम्य, एवं नवधाचम्य जलमञ्जलिनादायोत्थाय

'ॐह्रांह्रींहंसः श्रीमार्तण्डभैरवाय प्रकाशशक्तिसहिताय इदमर्घ्यं परिकल्पयामि स्वाहा' इति कुलसूर्याय त्रिरर्घ्यं दत्त्वा, ततो हृत्पद्मात् सूर्यमण्डले मूलदेवीं नीत्वा तत्र विधिवद् ध्यात्वा मानसोपचारैः संपूज्य, ॐ ज्वालारूपिण्यै विद्महे जगद्भक्षिण्यै धीमहि तन्नो ज्वाले प्रयोदयात्। अनया मूलगायत्र्या चतसृषु सन्ध्यासु श्रीदेव्यै अर्घ्यत्रयं दत्त्वा गायत्रीं मूलं यथाशक्ति जप्त्वा पुनरपि प्राणायामर्ष्यादिकरषडङ्गन्यासान् विधाय गुह्येति तर्पणं जपफलं च समर्प्य हृत्कमले श्रीदेवीं समानीय तीर्थं विसृजेत्। इति सन्ध्याविधिः।

इत्थं सन्ध्याचतुष्टयं कृत्वा श्रीदेवीरूपः साधकः स्यात्, तस्मात् सन्ध्याचतुष्टयमवश्यं कर्तव्यम्। अथवा केवलां प्रातः सन्ध्यामेव कुर्यात् तां न संत्यजेदिति शिवशासनम्।

सन्ध्या—पहले वैदिकी सन्ध्या करके तब तान्त्रिकी सन्ध्या करे। पूर्ववत् आचमन, प्राणायाम, ऋषि-कर-षडङ्गन्यास करके अपने सामने धेनुमुद्रा से जल का अमृतीकरण करके मूल मन्त्र से आठ बार उसे अभिमन्त्रित करे। उस जल से अं नमः से प्रारम्भ कर क्षं नमः तक की मातृकाओं से अपने शिर का प्रोक्षण करे। मूल मन्त्र से तीन बार प्रोक्षण करे। वाम हस्त में जल लेकर दक्ष हस्त से ढककर लं वं रं यं हं पाञ्चभौतिक बीजमन्त्रों से सात बार अभिमन्त्रित करे। मूल मन्त्र के तीन जप से अभिमन्त्रित करे। उस जलबिन्दु से तत्त्वमुद्रा के द्वारा मूल मन्त्र से अपने शिर का प्रोक्षण तीन बार करे। अवशिष्ट जल को दक्ष हस्त में लेकर तेजोरूप उस जल को इड़ा नाड़ी अर्थात् वाम नासाछिद्र से अन्दर खींचकर अपने देह के अन्दर स्थित सभी कलुषों का प्रक्षालन करे। उस जल को काले वर्ण का मानकर पिङ्गला नाड़ी अर्थात् दक्ष नासापुट से बाहर निकाले। अपने वाम हस्त में ग्रहण करे। अपने बाँयें भाग में प्रज्ज्वलित वज्रशिला होने की भावना करे। 'ॐ क्लीं पशु हुं फट्' इस पाशुपतास्त्र मन्त्र से उस जल को शिला पर पटक दे। मूल मन्त्रोच्चारणपूर्वक जल लेकर प्रवहमान नाड़ी से सहस्रदल के परमामृत से एकीभूत समझकर उस जल से 'ॐ अमृतमालिन्यै स्वाहा' से कुश के द्वारा अपने शिर का प्रोक्षण करे। तब आत्मतत्त्वं शोधयामि स्वाहा, विद्यातत्त्वं शोधयामि स्वाहा, शिवतत्त्वं शोधयामि स्वाहा तब शिवतत्त्वं शोधयामि स्वाहा, विद्यातत्त्वं शोधयामि स्वाहा, आत्मतत्त्वं शोधयामि स्वाहा, तब मूल मन्त्र सर्वतत्त्वं शोधयामि स्वाहा से तीन आचमन करे। इस प्रकार कुल नव बार आचमन करे। अञ्जलि में जल नाद से लेकर 'ॐ ह्रां ह्रीं हंसः श्रीमार्तण्डभैरवाय प्रकाशशक्तिसहिताय इदमर्घ्यं परिकल्पयामि स्वाहा' से सूर्य को तीन अर्घ्य प्रदान करे। तब हृदयकमल से मूल देवी को सूर्यमण्डल में लाकर विधिवत् ध्यान करे। मानसोपचारों से

पूजन करे। 'ज्वालारूपिण्यै विद्महे जगद्भक्षिण्यै धीमहि तन्नो ज्वाले प्रचोदयात्' से चारो सन्ध्याओं के लिये श्रीदेवी को तीन-तीन अर्घ्य प्रदान करे। यथाशक्ति गायत्री का जप करे।

इसके बाद प्राणायाम, ऋषि-कर-षडङ्गन्यास पूर्ववत् करे। गुह्यादि गुह्य से तर्पण एवं जपफल समर्पित करे। हृदयकमल में देवी को लाकर तीर्थ का विसर्जन करे। इस प्रकार चारो सन्ध्या करे। इससे साधक श्रीदेवी के रूप का हो जाता है। इसलिये चारो सन्ध्या अवश्य करनी चाहिये। अथवा केवल प्रातःसन्ध्या करे। शिव-शासन है कि सन्ध्या का त्याग कभी न करे।

ततस्तर्पणं विदध्यात्। तीर्थं पूर्ववदावाह्य मूलेनामृतमुद्रया चामृतीकृत्य, तत्र जले यन्त्रं ध्यात्वा तत्र देवीं हृदयात् सपरिवारामानीय षडङ्गेन सकलीकृत्य, कुण्डलिनीप्रयोगेणामृतेनाभिषिच्य विधिवत् प्रपूज्य, ऐशान्यां ४ँ श्रीमच्छ्रीगुरुरमुकानन्दनाथभैरवस्तृप्यतां इति त्रिःसन्तर्प्य, वह्नौ ४ँ परमगुरुस्तृप्यतां, नैर्ऋत्यां ४ँ परमाचार्यगुरु०, वायव्ये ४ँ परमेष्ठिगुरु०, इति त्रिः सकृद्वा सन्तर्प्य, दिव्यौघसिद्धौघमानवौघगुरवस्तृप्यन्ताम्।

ततो बिन्दौ मूलं श्रीमहादेवभैरवसहिता सपरिवारा सवाहना सायुधा समुद्रा श्रीज्वालामुखीदेवी तृप्यताम्। ह्रीं अखण्डभूतलभूर्भुवःस्वश्चारिण्यो योगिन्यो मातरस्तृप्यन्ताम् इति सर्न्तप्य, पुनर्बिन्दौ श्रीदेवीं सन्तर्प्य हृदि समानीय, तीर्थानि स्वस्थाने विसृज्य पुनरपि प्राणायामादि कृत्वा, मूलेन जलपूर्णं कमण्डलुं गृहीत्वा मूलं स्मरन् यागगेहं प्रविशेत्।

तर्पण—अब तर्पण का वर्णन किया जाता है। जल में तीर्थों का आवाहन करके मूल मन्त्र से अमृतमुद्रा के द्वारा अमृतीकरण करे। उस जल में यन्त्र का ध्यान करके उसमें अपने हृदय से सपरिवार देवी को लाकर षडङ्ग से सकलीकरण करे। कुण्डलिनी-प्रयोग से प्राप्त अमृत से विधिवत् अभिषेक करके पूजन करे। तब तर्पण करे।

ईशान में—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीमच्छ्रीगुरुरमुकानन्दनाथभैरवस्तृप्यताम्—तीन बार तर्पण करे। आग्नेय में—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं परमगुरुस्तृप्यताम्। तीन तर्पण करे। नैर्ऋत्य में—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं परमाचार्यगुरुस्तृप्यताम्। तीन तर्पण करे। वायव्य में—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं परमेष्ठिगुरुस्तृप्यताम्। तीन तर्पण करे। ॐ ऐं ह्रीं श्रीं दिव्यौघ-सिद्धौघ-मानवौघ-गुरुस्तृप्यताम्। बिन्दु में—ॐ ह्रीं श्रीं ज्वालामुखि मम सर्वशत्रून् भक्षय भक्षय हूं फट् स्वाहा श्रीमहादेवभैरवसहिता सपरिवारा सवाहना सायुधा समुद्रा श्रीज्वालामुखीदेवी तृप्यताम्। ह्रीं अखण्डभूतलभुर्भुवःस्वश्चारिण्यो योगिन्यो मातरस्तृप्यन्ताम्।

फिर विन्दु में श्रीदेवी का तर्पण करके हृदय में लाकर तीर्थों का अपने स्थान में विसर्जन करे। फिर प्राणायामादि करके मूल मन्त्र से जलपूर्ण कमण्डलु लेकर मूल मन्त्र का स्मरण करते हुए यागमण्डप के पास आये।

तत्र द्वारदेवता जलादिना पूजयेत्। यथा—गं गणपतये नमः वामशाखायां, धं धर्माय नमः दक्षिणस्यां, ब्लूं वासुकये नमः ऊर्ध्वे, नरसिंहाय नमः अधः, ॐसुमुख्यै नमः वामायां, ह्रीं सत्यै नमः दक्षिणस्यां, श्रीं उमायै नमः ऊर्ध्वे, ह्रीं देहल्यै नमः अधः, ह्रींअं अलिन्दायै नमः, ॐह्रीज्वां ज्वालिन्यै नमः, ॐह्रींद्वां द्वारश्रियै नमः इति संपूज्य, ॐ वास्तुपुरुषाय नमः इति मध्ये। ततो वामाङ्गसङ्कोचेनान्तः प्रविश्य मूलेन यागभूमिं संवीक्ष्य, तत्रासनमास्तीर्यासनशोधनं कुर्यात्। यथा—अस्य श्रीआसनशोधनमन्त्रस्य मेरुपृष्ठ ऋषिः, सुतलं छन्दः, कूर्मो देवता, आसनशोधने विनियोगः। मेरुपृष्ठऋषये नमः शिरसि, सुतलच्छन्दसे नमो मुखे, कूर्माय देवतायै नमो हृदि, आसनशोधने विनियोगाय नमः सर्वाङ्गेषु। ॐप्रीं पृथ्वि त्वया धृताः० इति भूमिं प्रार्थ्य, मण्डूकाय नमः, कालाग्निरुद्राय नमः, ह्रीं आधारशक्तिकमलासनाय नमः, ह्रीं पीठासनाय नमः, इत्यासनं संपूज्य, तदुपरि समुपविश्य, संविदं यथामन्त्रं स्वीकुर्यात्।

संविदे ब्रह्मसम्भूते ब्रह्मपुत्रि सदानघे।
ब्राह्मणानां च तृप्त्यर्थं पवित्रा भव सर्वदा॥

ॐब्राह्मण्यै नमः स्वाहा।

ॐ सिद्धिमूलकरे देवि हीनबोधप्रबोधिनि।
राजपूजावशङ्करि शत्रुपक्षनिसूदिनि॥

ऐं क्षत्रियायै नमः स्वाहा।

अज्ञानेन्धनदीप्ताग्ने ज्ञानाग्निब्रह्मरूपिणि।
आनन्दस्याहुतिं प्रीतिं सम्यग्ज्ञानं प्रयच्छ मे॥

ह्रीं वैश्यायै नमः स्वाहा।

नमस्यामि नमस्यामि योगमार्गप्रदर्शिनि।
त्रैलोक्यविजये मातः समाधिफलदा भव॥

क्लीं शूद्रायै नमः स्वाहा।

जल आदि से द्वारदेवता का पूजन करे; जैसे द्वार की वाम शाखा में—गं गणपतये

नमः। दक्षिण शाखा में—धर्माय नमः। ऊपरी शाखा में—ब्लूं वासुकये नमः। नीचली शाखा में—नरसिंहाय नमः। बाँयें में—ॐ सुमुख्यै नमः। दाँयें में—ह्रीं सत्यायै नमः। ऊपर में—श्रीं उमायै नमः। नीचे में—ह्रीं देहल्यै नमः। ह्रीं अं अलिन्दायै नमः। ॐ ह्रीं ज्वां ज्वलिन्यै नमः। ॐ ह्रीं द्वां द्वारश्रियै नमः से पूजन करे।

यागमण्डप के मध्य में—ॐ वास्तुपुरुषाय नमः से पूजन करे। तब बाँयें अंग को सिकोड़कर यागभूमि में प्रवेश करे। मूल मन्त्रोच्चारणपूर्वक यागभूमि का संवीक्षण करे। तब आसन बिछाकर आसन का शोधन करे।

विनियोग—अस्य श्री आसनशोधनमन्त्रस्य मेरुपृष्ठ ऋषिः, सुतलं छन्दः, कूर्मो देवता, आसनशोधने विनियोगः।

न्यास—मेरुपृष्ठऋषये नमः शिरसि। सुतलछन्दसे नमः मुखे। कूर्माय देवतायै नमः हृदि। आसनशोधने विनियोगाय नमः सर्वाङ्गेषु।

ॐ प्रीं पृथ्वि! त्वया धृता लोका त्वयि च विष्णुना धृता।
त्वं च धारय मां देवी पवित्रं कुरु चासनम्।।

इस प्रकार भूमि की प्रार्थना करके पूजा करे— मण्डूकाय नमः। कालाग्निरुद्राय नमः। ह्रीं आधारशक्तये कमलासनाय नमः। ह्रीं पीठासनाय नमः। तब आसन पर बैठकर यथामन्त्र संविदा ग्रहण करे—

संविदे ब्रह्मसम्भूते ब्रह्मपुत्रि सदानघे।
ब्राह्मणानां च तृप्त्यर्थं पवित्रा भव सर्वदा।।

ॐ ह्रीं ब्राह्मण्यै स्वाहा।

ॐ सिद्धिमूलकरे देवि हीनबोधप्रबोधिनि।
राजपुत्रवशंकरि शत्रुपक्षनिसूदिनि।।

ऐं क्षत्रियायै नमः स्वाहा।

अज्ञानेन्धनदीप्ताग्ने ज्ञानाग्निब्रह्मरूपिणि।
आनन्दस्याहुतिं मत्वा सम्यग्ज्ञानं प्रयच्छ मे।।

ह्रीं वैश्यायै नमः स्वाहा।

नमस्यामि नमस्यामि योगमार्गप्रदर्शिनि।
त्रैलोक्यविजये मातः समाधिफलदा भव।।

क्लीं शूद्रायै नमः स्वाहा।

ॐअमृते अमृतोद्भवे अमृतवर्षिणि अमृतमाकर्षय २ सिद्धिं देहि २ श्रीज्वालामुखीपदं मे वश्यमानय २ स्वाहा, इति तदुपरि मूलं च सप्तधा सञ्जप्य योनिमुद्रयामृतीकृत्य, आगच्छागच्छ संतिष्ठ २ संनिधत्स्व २ संनिरुद्धा भव २ संनिधेहि २ सर्वोपचारसहितां पूजां गृह्ण २ स्वाहा, इति मुद्राः प्रदर्श्य, च्छोटिकाभिर्दशदिग्बन्धनं विधाय, श्रीगुरुपादुकाविद्यया स्वशिरसि श्रीगुरुपरम्परां सप्तधा त्रिधा वा सन्तर्प्य मूलेन स्वहृदि श्रीदेवीं सायुधां सवाहनां सपरिवारां सशिवां सन्तर्प्य, ऐं वदवद वाग्वादिनि मम जिह्वाग्रे स्थिरीभव सर्वसत्त्ववशङ्करि स्वाहा, इत्यनेन मुखे जुहुयात्। तत आनन्दमयो भूत्वा,

अपसर्पन्तु ते भूता ये भूता भुवि संस्थिताः।
ये भूता विघ्नकर्तारस्ते नश्यन्तु शिवाज्ञया॥
पाषाण्डकारिणो भूता भूता भूम्यन्तरिक्षगाः।
दिवि लोके स्थिता ये च ते नश्यन्तु शिवाज्ञया॥

इति तर्जनीमध्यमाभ्यामूर्ध्वोर्ध्वं तालत्रयदानेन वामपार्ष्णिघातत्रयेण च दिव्यदृष्ट्या च त्रिविधविघ्नानुत्सार्य च्छोटिकाभिर्दशदिग्बन्धनं कृत्वा चतुर्दिक्षु वह्निप्राकारं सञ्चिन्त्य, प्राणायामं कुर्यात्। यथा—

इडया पिब षोडशभिः पवनं कुरु षष्टिचतुष्टयमन्तरगम्।
त्यज पिङ्गलया शनकैः शनकैर्दशभिर्दशभिर्दशभिर्द्व्यधिकैः॥

इति त्रिधा प्राणायामत्रयेण निरस्तसकलकलुषं स्वदेहं देवताराधनयोग्यं विभाव्य भूतशुद्धिं कुर्यात्।

ॐ अमृते अमृतोद्भवे अमृतवर्षिणि अमृतमाकर्षय आकर्षय सिद्धिं देहि देहि श्रीज्वालामुखीपदं मे वशमानय आनय स्वाहा। तब मूल मन्त्र का जप सात बार करके योनिमुद्रा से अमृतीकरण करे। आगच्छ आगच्छ, संतिष्ठ संतिष्ठ, संनिरुधत्स्व संनिरुधत्स्व, संनिरुद्धा भव संनिरुद्धा भव, संनिधेहि संनिधेहि, सर्वोपचारसहितां पूजां गृह्ण गृह्ण स्वाहा—इससे मुद्रा प्रदर्शन करे। छोटिका से दशो दिशाओं को बाँधे। श्रीगुरुपादुका विद्या से अपने शिर पर श्रीगुरुपरम्परा के अनुसार सात बार या तीन बार तर्पण करे। मूल मन्त्र से अपने हृदय में सायुधा, सवाहना, सपरिवारा, सशिवा श्रीदेवी का तर्पण करे। ऐं वद वद वाग्वादिनी मम जिह्वाग्रे स्थिरीभव सर्वसत्त्ववशङ्करि स्वाहा—से मुख से संविदा ग्रहण करे। तब आनन्दमय होकर निम्न मन्त्र से भूतोत्सारण करे—

अपसर्पन्तु ते भूता ये भूता भुवि संस्थिता।
ये भूता विघ्नकर्तारस्ते नश्यन्तु शिवाज्ञया।।
पाषाण्डकारिणो भूता भूता भूम्यन्तरिक्षगाः।
दिवि लोके स्थिता ये च ते नश्यन्तु शिवाज्ञया।।

तब तर्जनी-मध्यमा को सीधा करके तीन ताली बजाये। बाँईं एँड़ी से पृथ्वी पर तीन आघात करे। तब एकटक देखकर विविध विघ्नों का उत्सारण करे। छोटिका से दशो दिशाओं का बन्धन करे। चारों तरफ अग्निप्राकार का चिन्तन करे। प्रणाम करे। प्राणायाम करे। प्राणायाम में इड़ा नाड़ी से १६ मात्रा से पूरक करे। ६४ मात्रा से कुम्भक करे। ३२ मात्रा से पिङ्गला से रेचक करे। ऐसा तीन प्राणायाम करे।

इस प्रकार सभी कलुषों से रहित होकर अपने देह को देवता के आराधन के योग्य समझ कर भूतशुद्धि करे।

यथा—मूलाधारात् हंस इति मन्त्रेण पृथिव्या सह कुण्डलिनीं स्वाधिष्ठाने समानीय तत्र जले पृथिवीं लीनां विभाव्य, तस्माज्जलेन सह मणिपूरे समानीय तत्र वह्नौ जलं लीनं विभाव्य, तस्माद्वह्निना सहानाहते समानीय तत्र वायौ वह्निं लीनं विभाव्य, तस्माद्वायुना सह विशुद्धौ समानीय तत्राकाशे वायुं लीनं विभाव्य, तस्मादाकाशेन सहाज्ञाचक्रे समानीय तत्रस्थमनस्याकाशं लीनं सञ्चिन्त्य, मनो नादे लीनं सञ्चिन्त्य, ध्वनौ ध्वनिं लीनं सञ्चिन्त्य, सहस्रदलकमलकर्णिकास्थचन्द्रमण्डलमध्यगततेजोमयबिन्दुरूपपरमशिवे तां समर्प्य तत्र केवलशरीरे—

वामकुक्षिस्थितं पापपुरुषं कज्जलप्रभम्।
ब्रह्महत्याशिरस्कं च स्वर्णस्तेयभुजद्वयम्।।
सुरापानहृदा युक्तं गुरुतल्पकटिद्वयम्।
तत्संसर्गिपदद्वन्द्वमङ्गप्रत्यङ्गपातकम्।।
उपपातकरोमाणं रक्तश्मश्रुविलोचनम्।
खड्गचर्मधरं क्रुद्धं पापं कुक्षौ विचिन्तयेत्।।

इति पापपुरुषं ध्यात्वा, प्राणायामविधिना यमिति वायुबीजं धूम्रवर्णं षोडशवारं जपंस्तं पापपुरुषं संशोष्य, ततो रमिति बह्निबीजं रक्तवर्णं चतुष्षष्टिवारं जपंस्तमेव सन्दह्य, वमित्यमृतबीजं सहस्रारे विचिन्त्य द्वात्रिंशद्वारं जपंस्तदुद्भवामृतधारया निष्पापं शरीरमुत्पाद्य, ललाटस्थलमिति पृथ्वीबीजेन पीतवर्णेन सुदृढीकृत्य, ह्रीमिति मूलस्थबीजेन सैश्वर्यं सोहमिति मन्त्रेण

कुण्डलिनीममृतलोलीभूतां पञ्चभूतानि जीवात्मानं च ब्रह्मपथे स्वस्वस्थाने संयोजयेत्। इति भूतशुद्धिः।

भूतशुद्धि—मूलाधार से पृथ्वीसहित कुण्डलिनी को स्वाधिष्ठान में लाकर पृथ्वी को जल में घोल दे। उस जल के साथ कुण्डलिनी को मणिपूर में लाकर अग्नि में लीन कर दे। तब कुण्डलिनी को अग्निसहित अनाहत में लाकर अग्नि को वायुतत्त्व में लीन कर दे। तब वायुसहित कुण्डलिनी को विशुद्धि चक्र में लाकर वायु को आकाश में लीन कर दे। तब आकाशसहित कुण्डलिनी को आज्ञाचक्र में लाकर मन के आकाश में आकाश को विलीन कर दे। मन को नाद में लीन समझे। ध्वनि को ध्वनि में लीन समझे। इसे सहस्रदल कर्णिका में स्थित चन्द्रमण्डल-मध्यगत तेजोमय बिन्दुरूप परमशिव को समर्पित करे। तब शरीर में पापपुरुष का निम्नवत् ध्यान करे—

वामकुक्षिस्थितं पापपुरुषं कज्जलप्रभम्।
ब्रह्महत्याशिरस्कं च स्वर्णस्तेयभुजद्वयम्।।
सुरापानहृदा युक्तं गुरुतल्पकटिद्वयम्।
सत्संसर्गिपदद्वन्द्वमङ्गप्रत्यङ्गपातकम् ।
उपपातकरोमाणं रक्तश्मश्रुविलोचनम्।
खड्गचर्मधरं क्रुद्धं पापं कुक्षौ विचिन्तयेत्।।

इस प्रकार के पापपुरुष का ध्यान करके प्राणायामविधि से धूम्र वर्ण के वायुबीज 'यं' का जप १६ बार करके पापपुरुष को सुखा दे। रक्त वर्ण अग्निबीज 'रं' के ६४ जप से उसे जला दे। सहस्रार में अमृतबीज 'वं' के ३२ जप से उत्पन्न अमृत से निष्पाप शरीर को उत्पन्न करके ललाट-स्थित पीले रंग के पृथ्वीबीज 'लं' से शरीर को दृढ़ करे। मूलाधारस्थित सैश्वर्यं सोहं 'ह्रीं' बीज से अमृतलोलीभूता कुण्डलिनी के साथ पञ्चभूतों और जीवात्मा को ब्रह्म में अपने-अपने स्थानों में नियोजित करे। यही भूतशुद्धि की प्रक्रिया है।

ततो देवीरूपमात्मानं विचिन्त्य हृदि हस्तं निधाय प्राणप्रतिष्ठां कुर्यात्। यथा—ॐआंह्रींक्रों यंरंलंवंशंषंसंहंळंक्षं हंसः सोहं मम प्राणा इह प्राणाः, १८ँ मम जीव इह स्थितः, १८ँ मम सर्वेन्द्रियाणि इह स्थितानि, १८ँ मम वाङ्मनस्त्वक्चक्षुःश्रोत्रघ्राणप्राणा इहैवागत्य सुखं चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा। इति प्राणप्रतिष्ठां विधाय, स्वमूलऋष्यादिस्मरणं कुर्यात्। यथा—

ॐ अस्य श्रीज्वालामुखीमन्त्रराजस्य श्रीवैश्वानर ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः, श्रीमदद्वैतरूपिणी ज्वालामुखी देवता, ह्रीं बीजं, श्रीं शक्तिः, हूं कीलकं

मम धर्मार्थकाममोक्षार्थे जपे विनियोगः, इति कृताञ्जलिर्वदेत्। वैश्वानरऋषये नमः शिरसि, अनुष्टुप्छन्दसे नमो मुखे, ज्वालामुखीदेवतायै नमो हृदि, ह्रीं बीजाय नमो गुह्ये, श्रीं शक्तये नमः पादयोः, हूं कीलकाय नमो नाभौ, जपे विनियोगाय नमः सर्वाङ्गेषु। ॐह्रांश्रां अङ्गुष्ठाभ्यां नमः, ह्रींश्रीं तर्जनी०, ह्रूंश्रूं मध्यमा०, ह्रैंश्रैं अनामिका०, ह्रौंश्रौं कनिष्ठि०, ह्रःश्रः करतल०। एवं हृदयादिन्यासः।

ॐह्रींश्रीं नमः शिरसि, ज्वालामुखि हृदि, मम सर्वशत्रून् नाभौ, भक्षय २ लिङ्गे, हूं गुह्ये, फट् स्वाहा नमः सर्वाङ्गेषु। इति मन्त्रन्यासः।

प्राणप्रतिष्ठा—अपने को देवी-स्वरूप मानकर हृदय पर हाथ रखकर प्राणप्रतिष्ठा करे—ॐ आं ह्रीं क्रों यं रं लं वं शं षं सं हं ळं क्षं हंसः सोहं मम प्राणा इह प्राणाः। ॐ आं ह्रीं क्रों यं रं लं वं शं षं सं हं ळं क्षं हंसः सोहं मम जीव इह स्थितः। ॐ आं ह्रीं क्रों यं रं लं वं शं षं सं हं ळं क्षं हंसः सोहं मम सर्वेन्द्रियाणि इह स्थितानि। ॐ आं ह्रीं क्रों यं रं लं वं शं षं सं हं ळं क्षं हंसः सोहं मम वाङ्मनस्त्वक्चक्षुःश्रोत्रघ्राणप्राणा इहैवागत्य सुखं चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा। मूल मन्त्र से ऋष्यादि न्यास करे।

विनियोग—अस्य श्रीज्वालामुखीमन्त्रराजस्य श्रीवैश्वानरऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः, श्रीमदद्वैतरूपिणी ज्वालामुखी देवता, ह्रीं बीजं, श्रीं शक्तिः, हूं कीलकं, मम धर्मार्थकाममोक्षार्थे जपे विनियोगः।

ऋष्यादि न्यास—वैश्वानरऋषये नमः शिरसि। अनुष्टुप् छन्दसे नमः मुखे। ज्वालामुखिदेवतायै नमः हृदि। ह्रीं बीजाय नमः गुह्ये। श्रीं शक्तये नमः पादयोः। हूं कीलकाय नमः नाभौ। जपे विनियोगाय नमः सर्वाङ्गेषु।

करन्यास—ॐ ह्रां श्रां अङ्गुष्ठाभ्यां नमः। ॐ ह्रीं श्रीं तर्जनीभ्यां स्वाहा। ॐ ह्रूं श्रूं मध्यमाभ्यां वषट्। ॐ ह्रैं श्रैं अनामिकाभ्यां हुं। ॐ ह्रौं श्रौं कनिष्ठाभ्यां वौषट्। ॐ हः श्रः करतलकरपृष्ठाभ्यां फट्।

षडङ्गन्यास—ॐ ह्रां श्रां हृदयाय नमः। ॐ ह्रीं श्रीं शिरसे स्वाहा। ॐ ह्रूं श्रूं शिखायै वषट्। ॐ ह्रैं श्रैं कवचाय हुं। ॐ ह्रौं श्रौं नेत्रत्रयाय वौषट्। ॐ हः श्रः अस्त्राय फट्।

मन्त्रवर्णन्यास—ॐ ह्रीं श्री नमः शिरसि। ज्वालामुखीं नमः हृदि। मम सर्वशत्रून् नाभौ। भक्षय भक्षय लिङ्गे। हूं गुह्ये फट् स्वाहा नमः सर्वाङ्गेषु।

अथ समन्त्रमातृकान्यासः। ॐअंकंखंगंघंङंॐ नमः शिरसि, एवं आं चं

५ ह्रीं ललाटे, इं टं ५ श्रीं नेत्रयोः, ईं तं ५ ज्वां मुखे, उं पं ५ लां कण्ठे, ऊं यं मुं स्कन्धयोः, ऋं रं खिं पाण्योः, ॠं लं मम स्तनयोः, ऌं वं सर्व हृदि, ॡं शं शत्रून् कुक्षौ, एं षं भक्षय पार्श्वयोः, ऐं सं भक्षय नाभौ, ॐ हं हूं लिङ्गे, ॐ ळं फट् गुह्ये, अं अः क्षं स्वाहा नमः पादयोः। इति समन्त्रमातृकान्यासः।

अथान्तर्मातृकान्यासः । तत्र स्वरैः पूरकः, कादिमान्तैः कुम्भकः, यादिभी रेचकः। ॐअस्य श्रीअन्तर्मातृकान्यासस्य ब्रह्मा ऋषिः, गायत्री छन्दः, श्रीअन्तर्मातृकासरस्वती देवता, हलो बीजानि, स्वराः शक्तयः, अव्यक्तं कीलकं न्यासे विनियोगः इति कृताञ्जलिः स्मृत्वा न्यसेत् । ब्रह्मऋषये शि०, गायत्रीछन्दसे मुखे, अन्तर्मातृकासरस्वतीदेवतायै हृदि, हल्भ्यो बीजेभ्यो गुह्ये, स्वरेभ्यः शक्तिभ्यः पादयोः, अव्यक्तकीलकाय नाभौ, न्यासे विनियोगाय नमः सर्वाङ्गेषु, इति ऋष्यादिन्यासः। ॐऐंह्रींश्रींअंकं ५ आं अङ्गुष्ठाभ्यां नमः। एवं ४ँ इं चं ५ ईं तर्ज०, ४ँ उं टं ५ ऊं मध्यमा०, ४ँ एं तं ५ ऐं अनामिका०, ४ँ ओंपं ५ औं कनिष्ठिका०, ४ँ अं यं १० अः करतलकरपृष्ठाभ्यां०। एवं हृदयादिन्यासः। ततो ध्यानम्—

शुद्धस्फटिकसङ्काशां शुद्धक्षौमविराजिताम् ।
मुक्तारत्नस्फुरद्भूषां जपमालां कमण्डलुम् ॥
पुस्तकं वरदानं च बिभ्रतीं परमेश्वरीम् ।
एवं ध्यात्वा हृदम्भोजे मातृकां विन्यसेत् सुधीः ॥

इति ध्यात्वा न्यासं कुर्यात्। अं १६ कण्ठे, कं १२ अनाहते, डं १० नाभौ, बं ६ स्वाधिष्ठाने, वं ४ मूलाधारे, ळंक्षंः भ्रूमध्ये, इत्यन्तर्मातृका। ततो बहिर्मातृकान्यासं यथोक्तं कुर्यात्।

मन्त्रसहित मातृकान्यास—ॐ उं कं खं गं घं ङं ॐ नमः शिरसि। आं चं छं जं झं ञं ह्रीं नमः ललाटे। इं टं ठं डं ढं णं श्रीं नमः नेत्रयोः। ईं तं थं दं धं नं ज्वां नमः मुखे। उं पं फं बं भं मं लां नमः कण्ठे। ॐ यं रं लं वं मुं नमः स्कन्धयोः। ऋं रं खिं नमः पाण्योः। ऋ लं मम नमः स्तनयोः। ॠं वं सर्वं नमः हृदि। ऌं शं शत्रून् नमः कुक्षौ। एं षं भक्षय नमः पार्श्वयोः। ऐ सं भक्षय नमः नाभौ। ओं हं हूं नमः लिङ्गे। औं लं फट् गुह्ये। अं अः क्षं स्वाहा नमः पादयोः।

अन्तर्मातृका न्यास—स्वरवर्णों से पूरक, क से म तक के वर्णों से कुम्भक एवं य से क्ष तक के वर्णों से रेचक करे। ॐ अस्य श्री अन्तर्मातृकान्यासस्य ब्रह्मा ऋषिः, गायत्री छन्दः श्री अन्तर्मातृका सरस्वती देवता हलो बीजं स्वराः शक्तयः अव्यक्तं कीलकं न्यासे विनियोगः।

ऋष्यादि न्यास— ब्रह्मऋषये नमः शिरसि। अन्तर्मातृका सरस्वती देवतायै नमः हृदि। हल्भ्यो बीजेभ्यो नमः गुह्ये। स्वरेभ्यः शक्तिभ्यः नमः पादयोः। अव्यक्तकीलकाय नमः नाभौ। न्यासे विनियोगाय नमः सर्वाङ्गेषु।

करन्यास—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं अं कं खं गं घं ङं आं अंगुष्ठाभ्यां नमः। ॐ ऐं ह्रीं श्रीं इं चं छं जं झं ञं ईं तर्जनीभ्यां स्वाहा। ॐ ऐं ह्रीं श्रीं उं टं ढं डं ढं णं ऊं मध्यमाभ्यां नमः। ॐ ऐं ह्रीं श्रीं एं तं थं दं धं नं ऐं अनामिकाभ्यां नमः। ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ओं पं फं बं भं मं औं कनिष्ठाभ्यां नमः। ॐ ऐं ह्रीं श्रीं अं यं रं लं वं षं सं हं ळं क्षं अः करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः।

हृदयादि न्यास—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं अं कं खं गं घं ङं आं हृदयाय नमः। ॐ ऐं ह्रीं श्रीं इं चं छं जं झं ञं ईं शिरसे स्वाहा। ॐ ऐं ह्रीं श्रीं उं टं ठं डं ढं णं ऊं शिखायै वषट्। ॐ ऐं ह्रीं श्रीं एं तं थं दं धं नं ऐं कवचाय हुं। ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ओं पं फं बं भं मं औं नेत्रत्रयाय वौषट्। ॐ ऐं ह्रीं श्रीं अं यं रं लं वं शं सं हं ळं क्षं अः अस्त्राय फट्।

न्यास के पश्चात् निम्नवत् ध्यान करे—

शुद्धस्फटिकसंकाशां शुद्धक्षौमविराजिताम्।
मुक्तारत्नस्फुरदूषां जपमालां कमण्डलुम्।।
पुस्तकं वरदानं च विभ्रतीं परमेश्वरीम्।
एवं ध्यात्वा हृदम्भोजे मातृकां विन्यसेत् सुधीः।।

इस प्रकार ध्यान करके न्यास करे। कण्ठस्थ विशुद्धि में अं से अः तक सोलह स्वरवर्णों का न्यास करे। हृदयस्थ अनाहत चक्र में कं से ठं तक के बारह वर्णों का न्यास करे। नाभि में स्थित मणिपूर में डं से फं तक के १० वर्णों का न्यास करे। लिङ्गमूलस्थ सर्वाधिष्ठान में बं से लं तक के आठ वर्णों का न्यास करे। मूलाधार में वं शं षं सं चार वर्णों का न्यास करे। भ्रूमध्य के आज्ञा चक्र में हं क्षं का न्यास करे। बहिर्मातृका यथोक्त रूप से करे।

ततस्तत्त्वन्यासः। मूलं आत्मतत्त्वाय स्वाहा पादादिनाभ्यन्तम्। मू० विद्यातत्त्वा० नाभ्यादिभ्रूमध्यपर्यन्तम्। मू० शिवतत्त्वा० आज्ञादिशिरोऽन्तम्। मू० सर्वतत्त्वेभ्यः स्वाहा सर्वाङ्गेषु। इति तत्त्वन्यासः।

अस्य मन्त्रस्योत्कीलनादिर्यथा—श्रीं मूलं ह्रीं उत्कीलनाय नमः। हूं मूलं फट् सञ्जीवनाय नमः। ॐ ज्वालामुखि मम सर्वशत्रून् भक्षय-भक्षय हूं फट् स्वाहा ॐ ह्रीं श्रीं तौटिल्याय नमः।

येन मन्त्रेण श्रीदेवी त्वरिता सम्प्रजायते।
वरं प्रदातुं देवेशि तौटिल्यं परिकीर्तितम्॥
विना तौटिल्यमन्त्रेण सर्वं निष्फलतां व्रजेत्।

ॐ ह्रीं श्रीं ज्वालामुखि भैरवशापं मोचय-मोचय हूं स्वाहा शापहार्यै नमः। ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं कुरुकुल्लायै नमः।

स्नाने जपे तथा होमे यो मनः सम्प्रसादयेत्।
कुरुकुल्लेति विख्याता साधकानां वरानने॥
कुरुकुल्लां परित्यज्य यो मन्त्रं सञ्जपेत्प्रिये।
सर्वं जपादिकं व्यर्थं साधकस्य भवेद् ध्रुवम्॥

अथास्त्रम्—'ॐ स्त्रीं ज्वालादेव्यस्त्राय ह्रीं महास्त्राय श्रीं सर्वास्त्राय हूं फडस्त्राय अस्त्रविद्यायै नमः' इति त्रिः पठेत्।

तत्त्वन्यास—ॐ ह्रीं श्रीं ज्वालामुखि मम सर्वशत्रून् भक्षय भक्षय हूं फट स्वाहा आत्मतत्त्वाय स्वाहा—पादादिनाभ्यन्तम्। ॐ ह्रीं श्रीं ज्वालामुखि मम सर्वशत्रून् भक्षय भक्षय हूं फट् स्वाहा विद्यातत्त्वाय स्वाहा—नाभ्यादि भ्रूमध्यपर्यन्तम्। ॐ ह्रीं श्रीं ज्वालामुखि मम सर्वशत्रून् भक्षय भक्षय हूं फट् स्वाहा शिवतत्त्वाय स्वाहा—आज्ञादि शिरोऽन्तम्। ॐ ह्रीं श्रीं ज्वालामुखि मम सर्वशत्रून् भक्षय भक्षय हूं फट् स्वाहा सर्वतत्त्वेभ्यो स्वाहा—सर्वाङ्गेषु।

मन्त्र का उत्कीलन आदि—श्रीं ॐ ह्रीं श्रीं ज्वालामुखि मम सर्वशत्रून् भक्षय भक्षय स्वाहा ह्रीं उत्कीलनाय नमः। हूं ॐ ह्रीं श्रीं ज्वालामुखि मम सर्वशत्रून् भक्षय भक्षय स्वाहा फट् सञ्जीवनाय नमः स्वाहा। ॐ ज्वालामुखि मम सर्वशत्रून् भक्षय भक्षय हूं फट् स्वाहा ह्रीं श्रीं तौटिल्याय नमः। इससे श्रीदेवी त्वरिता हो जाती है। वर प्रदान करने से उसे 'तौटिल्य' कहा जाता है। ॐ ह्रीं श्रीं ज्वालामुखि भैरवशापं मोचय मोचय हूं स्वाहा शापहार्यै नमः। ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं कुरुकुल्लायै नमः। स्नान, जप तथा हवन में यह मन्त्र इष्ट को प्रसन्न करता है। साधकों के बीच में यह कुरुकुल्ला नाम से विख्यात है। कुरुकुल्ला का परित्याग करके यदि कोई मन्त्र का जप करता है तो उस साधक के जप आदि सभी व्यर्थ होते हैं। अस्त्रमन्त्र—ॐ स्त्रीं ज्वालादेव्यस्त्राय ह्रीं महास्त्राय श्रीं सर्वास्त्राय हूं फडस्त्राय अस्त्रविद्यायै नमः। इस मन्त्र का पाठ तीन बार करे।

अथ मूलमन्त्रन्यासः। ॐ नमो मस्तके, ह्रीं ललाटे, श्रीं भ्रूमध्ये, ज्वां नासिकायां, लां नेत्रयोः, मुं मुखे, खिं कण्ठे, मं स्कन्धयोः, मं स्तनयोः, सं वक्षसि, वँ कुक्षौ, शं पार्श्वयोः, त्रून् नाभौ, भं लिङ्गे, क्षं पृष्ठे, यं कट्यां, भं गुदे, क्षं मेढ्रे, यं ऊर्वोः, हूं जानुनोः, फट् जङ्घयोः, स्वां गुल्फयोः, हां पादयोः मूलं सर्वाङ्गेषु। इति मूलमन्त्रन्यासः।

अथ दैवतन्यासः। ॐह्रीं मायादेव्यै वारुणीवात्यालीसहितायै नमो मस्तके। ह्रीं मोहिन्यै श्रीवाराहीकुलसुन्दरीसहितायै नमो मुखे। ह्रीं बालादेव्यै श्रीकूवरीकौलिनीसहितायै नमो हृदि। श्रीं भगरूपिणीदेव्यै श्रीकुण्ठीकुत्सितासहितायै नमः कुक्षौ। ह्रीं भगावासादेव्यै श्रीकुटिलाकुहूसहितायै नमो नाभौ। ह्रीं भेरुण्डादेव्यै श्रीकुन्तीकुम्भेश्वरीसहितायै नमो गुल्फे। ह्रीं मृडानीदेव्यै श्रीकुन्ताकूचरीसहितायै नमो गुल्फयोः। श्रींह्रीं वैन्दवेश्वरीदेव्यै श्रीकारुणीकृतिसहितायै नमः पादयोः। इति दैवतन्यासः।

मूलमन्त्र न्यास—ॐ नमो मस्तके। ह्रीं नमः ललाटे। श्रीं नमः भ्रूमध्ये। ज्वां नमः नासिकायै। लां नमः नेत्रयोः। मुं नमः मुखेखिं। नमः कण्ठे। मं नमः स्कन्धयोः। मं नमः स्कन्धयोः। मं नमः स्तनयोः। सं नमः वक्षसि। वँ नमः कुक्षौ। शं नमः पार्श्वयोः। त्रून् नमः नाभौ। भं नमः लिङ्गे। क्षं नमः पृष्ठे। यं नमः कट्यां। भं नमः गुदे। क्षं नमः मेढ्रे। यं नमः ऊर्वौं। हूं नमः जानुने। फट् नमः जङ्घयोः। स्वां नमः गुल्फयोः। हां नमः पादयोः। ॐ ह्रीं श्रीं ज्वालामुखि मम सर्वशत्रून् भक्षय भक्षय हूं फट् स्वाहा सर्वांगेषु।

दैवत न्यास—ॐ ह्रीं मायादेव्यै वारुणी-वात्याली-सहितायै नमो मस्तके। ह्रीं मोहिन्यै श्रीवाराही-कुलसुन्दरीसहितायै नमो मुखे। ह्रीं बालादेव्यै श्रीकूवरी-कौलिनी-सहितायै नमो हृदि। श्रीं भगरूपिणीदेव्यै श्रीकुण्ठीकुत्सितासहितायै नमः कुक्षौ। ह्रीं भगावासादेव्यै श्रीकुटिलाकुहूसहितायै नमो नाभौ। ह्रीं मेरुण्डादेव्यै श्रीकुन्तीकुम्भेश्वरीसहितायै नमो गुल्फे। ह्रीं मृडानीदेव्यै श्रीकुन्ताकूवरीसहितायै नमो गुल्फयोः। श्रीं ह्रीं वैन्दवेश्वरीदेव्यै श्रीकारुणीकृतिसहितायै नमः पादयोः।

पूर्ववदृष्यादिन्यासं पीठन्यासं कुर्यात्। यथा—मण्डूकाय नमो मूलाधारे। कालाग्निरुद्राय नमः स्वाधिष्ठाने। आधारशक्त्यै नमो मणिपूरके। प्रकृत्यै नमो हृदये। कमठाय० शेषाय० सुधार्णवासनाय० पृथिव्यै० इक्षुसमुद्राय० मदिरासमुद्राय० घृतसमुद्राय० दुग्धसमुद्राय० दक्षांसे, धर्माय० वामांसे, ज्ञानाय० वामोरौ, वैराग्याय० दक्षोरौ, ऐश्वर्याय० मुखे, अधर्माय० वामपार्श्वे, अज्ञानाय० नाभौ, अवैराग्याय० दक्षपार्श्वे, अनैश्वर्याय० हृदि।

पुनर्हृदि—मायायै० विद्यायै० अनन्ताय० धर्माय० आनन्दकन्दाय० संविन्नालाय० प्रकृतिमयपत्रेभ्यो० विकृतिमयकेसरेभ्यो० पञ्चाशद्वर्णबीजाढ्यसर्वतत्त्वरूपायै कर्णिकायै० अं अर्कमण्डलाय० सों सोममण्डलाय० रं वह्निमण्डलाय० आं आत्मने० अं अन्तरात्मने० पं परमात्मने० ह्रीं ज्ञानात्मने० ह्रीं पीठासनाय० ह्रीं षट्चक्रासनाय० ॐ हूं सहस्त्रदलकमलकर्णिकायै० ह्रीं शवासनाय० ह्रीं वेदासनाय० ह्रीं शवासनाय० ह्रीं वेदासनाय० ह्रींह्रींहूं फट् स्वाहा रुद्राब्जपीठाय नमः इति पीठन्यासं कृत्वा, तत्रैव स्वाभेदेन श्रीज्वालामुखीदेवीं ध्यायेत्। यथा—

ज्वालापर्वतसंस्थितां त्रिनयनां पीठत्रयाधिष्ठितां
ज्वालाडम्बरभूषितां सुवदनां नित्यामदृश्यां जनैः ।
षट्चक्राम्बुजमध्यगां वरशराम्भोजाभयान् बिभ्रतीं
चिद्रूपां सकलार्थदीपनकरीं ज्वालामुखीं नौम्यहम् ॥

इति हृत्कमले श्रीदेवीं ध्यात्वा, स्वैक्येन विभाव्य मूलविद्यया स्वशिरसि पुष्पाञ्जलिं दत्त्वा, पुनर्हृदयकमले यथोक्तरूपां देवीं साङ्गां सावरणां सशिवां ध्यात्वा, वक्ष्यमाणप्रकारेण पीठपूजापूर्वकं मानसैरुपचारैः संपूज्य नैवेद्यं दत्त्वा भोजनावसरेऽन्तर्वैश्वदेवं कुर्यात्।

पूर्ववत् ऋष्यादि न्यास एवं पीठ न्यास करे। जैसे—मण्डूकाय नमः मूलाधारे। कालाग्निरुद्राय नमः स्वाधिष्ठाने। आधारशक्त्यै नमः मणिपूरके। प्रकृत्यै नमः हृदये। कमठाय नमः। शेषाय नमः। सुधार्णवासनाय नमः। पृथिव्यै नमः। इक्षुसमुद्राय नमः। मदिरासमुद्राय नमः। घृतसमुद्राय नमः। दुग्धसमुद्राय नमः दक्षांसे। धर्माय नमः वामांसे। ज्ञानाय नमः वामोरौ। वैराग्याय नमः दक्षोरौ। ऐश्वर्याय नमः मुखे। अधर्माय नमः वामपार्श्वे। अज्ञानाय नमः नाभौ। अवैराग्याय नमः दक्षपार्श्वे। अनैश्वर्याय नमः हृदि।

पुनः हृदय में—मायायै नमः। विद्यायै नमः। अनन्ताय नमः। धर्माय नमः। आनन्दकन्दाय नमः। संविन्नालाय नमः। प्रकृतिमयपत्रेभ्यो नमः। विकृतिमयकेसरेभ्यो नमः। पञ्चाशद्वर्णबीजाढ्यसर्वतत्त्वरूपायै कर्णिकायै नमः। अं अर्कमण्डलाय नमः। सौं सोममण्डलाय नमः। रं वह्निमण्डलाय नमः। आं आत्मने नमः। अं अन्तरात्मने नमः। पं परमात्मने नमः। ह्रीं ज्ञानात्मने नमः। ह्रीं पीठासनाय नमः। ह्रीं षट्चक्रासनाय नमः। ॐ हूं सहस्त्रदलकमलकर्णिकायै नमः। ह्रीं शवासनाय नमः। ह्रीं वेदासनाय नमः। ह्रीं शवासनाय नमः। ह्रीं वेदासनाय नमः। ह्रीं ह्रीं हूं फट् स्वाहा रुद्राब्जपीठाय नमः।

पुनः वहीं पर अपने में और देवी में अभेद मानकर श्री ज्वालामुखि का इस प्रकार ध्यान करे—

ज्वालापर्वतसंस्थितां त्रिनयनां पीठत्रयाधिष्ठितां
ज्वालाडम्बरभूषितां सुवदनां नित्यामदृश्यां जनैः।
षट्चक्राम्बुजमध्यगां वरशराम्भोजाभयान् बिभ्रतीं
चिद्रूपां सकलार्थदीपनकरीं ज्वालामुखीं नौम्यहम्।।

हृदयकमल में देवी का ऐसा ध्यान करके उनसे अपने को अभिन्न मान कर मूल विद्या से अपने शिर पर पुष्पाञ्जलि देवे। फिर हृदयकमल में यथोक्त रूपा देवी का साङ्गा सावरणा सशिवा ध्यान करके वक्ष्यमाण प्रकार से पीठपूजापूर्वक मानसोपचारों से पूजा करे। नैवेद्य अर्पण करे। भोजन के अवसर पर वैश्वदेव करे।

तत्र मूलाधारे आत्मान्तरात्मपरमात्मज्ञानात्मेत्यात्मचतुष्टयं सचतुरश्रं कुण्डलिन्यग्निसमुज्ज्वलं कुण्डं ध्यात्वा, तत्र श्रीपरदेवतां ध्यात्वा तन्मुखे मूलान्ते 'अहन्तां जुहोमि स्वाहा' इत्थमहन्तासत्यपैशुन्यकामक्रोधलोभमोहमदमात्सर्याणि सुषुम्नास्रुक्सक्तमनःस्रुवेण प्रत्येकं हुत्वा,

धर्माधर्महविर्दीप्ते स्वात्माग्नौ मनसा स्रुचा।
सुषुम्नावर्त्मना नित्यमक्षवृत्तीर्जुहोम्यहम् स्वाहा ।।
प्रकाशाकाशहस्ताभ्यामवलम्ब्योन्मनीस्रुचम्।
धर्माधर्मकलास्नेहपूर्णां वह्नौ जुहोम्यहम् स्वाहा ।।

इति हुत्वा, अथवा—

अन्तर्निरन्तरनिरिन्धनमेधमाने
मायान्धकारपरिपन्थिनि संविदग्नौ।
कस्याचिदद्भुतविकासिमरीचिभूमौ
विश्वं जुहोमि वसुधादिशिवावसानम्, स्वाहा ।।

इति हुत्वा, पुनर्हृदयकमले श्रीदेवीं ध्यात्वा, उत्तरपोशनादिसर्वोपचारैराराध्य, मूलं यथाशक्ति जपित्वा, प्राणायामादिना जपं समर्प्य श्रीगुरुं प्रणम्य स्वदेहं गन्धादिनः संभूष्य मनसा यथाशक्ति जपहोमादिकं च कृत्वा, स्वशरीरं कामकलारूपं ध्यायन् स्वदेहं पूजायोग्यं कृत्वा सामान्यार्घ्यं कुर्यात्।

मूलाधार में आत्मा, अन्तरात्मा, परमात्मा, ज्ञानात्मा—इन चारो को चतुरस्र

कुण्ड में कुण्डलिनी प्रज्वलित कर अग्निरूप का ध्यान करके उसी स्थान पर परदेवता का ध्यान करे और उनके मुख में 'मूल मन्त्र अहन्तां जुहोमि स्वाहा' कहकर अहन्ता, असत्य, पैशुन्य, काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद, मात्सर्य का हवन सुषुम्ना-स्रुक् सक्तमन स्रुवा से अलग-अलग हवन करे, तत्पश्चात् निम्नाङ्कित प्रार्थना करे—

धर्माधर्महविर्दीप्ते स्वात्माग्नौ मनसा स्रुचा।
सुषुम्नावर्त्मना नित्यमक्षवृत्तीर्जुहोम्यहम् स्वाहा।।
प्रकाशाकाशहस्ताभ्यामवलम्ब्योन्मनीस्रुचम्।
धर्माधर्मकलास्नेहपूर्णां वह्नौ जुहोम्यहम् स्वाहा।।
अन्तर्निरन्तरनिरिन्धनमेधमानेमायान्धकारपरिपन्थिनि संविदग्नौ।
कस्याञ्चिद्द्भुतविकासिमरिचिभूमौ विश्वं जुहोमि वसुधादिशिवावसानम् स्वाहा।।

इस प्रकार हवन करके फिर हृदयकमल में श्रीदेवी का ध्यान करके उत्तरापोशनादि सर्वोपचारों से पूजन करे। मूल मन्त्र का यथाशक्ति जप करे। प्राणायामादि करके जप का समर्पण करे। श्रीगुरु को प्रणाम करे। अपने देह को गन्धादि से सजाकर यथाशक्ति मानसिक जप-हवनादि करे। अपने शरीर का ध्यान कामकला के रूप में करे। अपने देह को पूजा के योग्य बनाकर सामान्यार्घ्य स्थापित करे।

तत्र स्वदक्षे त्रिकोणवृत्तबिम्बं चक्रं विधाय, तत्र 'आधारशक्तये नमः' इति संपूज्य तदुपरि त्रिपादिकां संस्थाप्य 'रं वह्निमण्डलाय दशकलात्मने नमः' इति संपूज्य तत्र अस्त्राय फडिति क्षालितपात्रं शङ्खादिकं वा संस्थाप्य, ('अं सूर्यमण्डलाय द्वादशकलात्मने नमः' इति संपूज्य शुद्धजलेन तत्पात्रमापूर्य 'सों सोममण्डलाय षोडशकलात्मने नमः' इति संपूज्य,) तत्र 'गङ्गे च यमुने चैव' इत्यादिना तीर्थान्यावाह्य गन्धाक्षतपुष्पाणि निःक्षिपेत्। एवं सूर्यसोमकलाः संपूज्य धेनुमुद्रां प्रदर्शयेदिति सामान्यार्घ्यविधिः।

सामान्यार्घ्य में अपने दाँयें त्रिकोण वृत्त विम्ब चक्र बनावे। उसका पूजन 'आधारशक्तये नमः' से करे। उसके ऊपर त्रिपादिका स्थापित करे। 'रं वह्निमण्डलाय दशकलात्मने नमः' से उसका पूजन करे। उसपर क्षालित पात्र शङ्ख आदि को स्थापित करे। 'अं सूर्यमण्डलाय द्वादशकलात्मने नमः' से उसका पूजन करे। शुद्ध जल से पात्र को पूर्ण करे। 'सौं सोममण्डलाय षोडशकलात्मने नमः' से उस जल का पूजन करे। उसमें 'गङ्गे च यमुने चैव' से तीर्थों का आवाहन अङ्कुशमुद्रा से करे। गन्ध-अक्षत-पुष्प उसमें डाले। इस प्रकार सोम-सूर्यकला का पूजन करके धेनुमुद्रा दिखावे। यही सामान्यार्घ्य विधि है।

ततः स्ववामे षट्कोणान्तर्गतत्रिकोणद्वयबिन्दुं बाह्यवृत्तबिम्बं मण्डलं विरचय्य, तत्र 'मण्डूकाय नमः' इत्यादिपीठपूजाक्रमेण पीठपूजामारभेत्। ततो नमः इत्याधारं प्रक्षाल्य मण्डलोपरि संस्थाप्य 'रं वह्निमण्डलाय दशकलात्मने नमः' इति संपूज्य, फडिति कलशं प्रक्षाल्य कारणेन प्रपूर्य रक्तवस्त्र-माल्यादिना सम्भूष्य श्रीदेवीबुद्ध्या संस्थाप्य 'अं अर्कमण्डलाय द्वादश-कलात्मने नमः' इति कलशं संपूज्य, 'सों चन्द्रमण्डलाय षोडशकलात्मने नमः' इति द्रव्यं संपूज्य, फडिति संरक्ष्य हूमित्यवगुण्ठ्य मूलेन संवीक्ष्य मूलेन गन्धमाघ्राय, कुम्भे पुष्पं दत्त्वा शापमोचनं कुर्यात्। यथा—

ॐ एकमेव परं ब्रह्म स्थूलसूक्ष्ममयं ध्रुवम्।
कचोद्भवां ब्रह्महत्यां तेन ते नाशयाम्यहम्॥१॥
ॐ सूर्यमण्डलसंभूते वरुणालयसम्भवे।
अमाबीजमये देवि शुक्रशापाद् विमुच्यताम्॥२॥
ॐ वेदानां प्रणवो बीजं ब्रह्मानन्दमयं यदि।
तेन सत्येन देवेशि ब्रह्महत्यां व्यपोहतु॥३॥

इति त्रिः, ततो वां वीं वूं वैं वौं वः ब्रह्मशापमोचितायै सुरादेव्यै नमः इति त्रिः, ह्रीं श्रीं क्रां क्रीं क्रूं क्रैं क्रौं क्रः कृष्णशापं मोचय २ अमृतं स्रावय स्रावय स्वाहा इत्यपि त्रिः पठित्वा ॐह्रीं नमस्तेजोराशेऽशेषसत्त्वाह्लादिनि मयूरमुखि अमोघसिद्धिदायिनि महोत्साहनिमित्ते कपालिनि वर्ध २ रङ्ग २ समयं मे प्रयच्छ २ रुद्ररौद्रसुरासवे शुक्रशापनिकृन्तनि ब्रह्महत्याहरे ह्रीं हूं लां लूं फट् स्वाहा, इति शुक्रशापहरीविद्यां दशधा जपेत्।

ॐ हंसः शुचिषद्वसुरन्तरिक्षसद्धोता वेदिषदतिथिर्दुरोणसत्।
नृषद्वरसदृतसद्व्योमसदब्जा गोजा ऋतजा अद्रिजा ऋतम्॥

इत्यपि त्रिः पठेत्।

कलश-स्थापन—अपने बाँयें बिन्दु, दो त्रिकोण और षट्कोण तथा वृत्त से मण्डल बनाकर उसमें पीठपूजा के क्रम से पीठपूजा 'मण्डूकाय नमः' इत्यादि मन्त्रों से करे। 'नमः' से आधार को धोकर मण्डल पर स्थापित करे। 'रं वह्निमण्डलाय दशकलात्मने नमः' से पूजा करे। 'फट्' से कलश को धोकर मदिरा से भरे। लाल वस्त्र, माला आदि से उसे सजावे। श्रीदेवी मानकर उसका स्थापन करे। 'अं अर्कमण्डलाय द्वादशकलात्मने नमः' से कलश का पूजन करे। 'सौं चन्द्रमण्डलाय षोड़शकलात्मने नमः' से द्रव्य का पूजन करे। 'फट्' से संरक्षण, 'हूं' से अवगुण्ठन एवं मूल मन्त्र से

संवीक्षण करे। मूल से कलश में गन्ध और पुष्प छोड़े। तब निम्न प्रकार से शापमोचन करे—

ॐ एकमेव परं ब्रह्म स्थूलसूक्ष्ममयं ध्रुवम्।
कचोद्भवां ब्रह्महत्यां तेन ते नाशयाम्यहम्।।
ॐ सूर्यमण्डलसम्भूते वरुणालयसम्भवे।
अमाबीजमये देवि शुक्रशापाद्विमुच्यताम्।।
ॐ वेदानां प्रणवो बीजं ब्रह्मानन्दमयं यदि।
तेन सत्येन देवेशि ब्रह्महत्यां व्यपोहतु।।

इन श्लोकों का तीन बार पाठ करे। तब इस मन्त्र का तीन बार पाठ करे—वां वीं वूं वैं वौं वः ब्रह्मशापमोचितायै सुरादेव्यै नमः। ह्लीं श्रीं क्रां क्रीं क्रूं क्रैं क्रौं क्रः कृष्णशापं मोचय मोचय अमृतं स्रावय स्रावय स्वाहा—इस मन्त्र का भी तीन बार पाठ करे।

ॐ ह्लीं नमस्तेजोराशे अशेषसत्वाह्लादिनि मयूरमुखि अमोघसिद्धिदायिनि महोत्साहनिमित्ते कपालिनि वर्ध वर्ध रङ्ग रङ्ग समयं मे प्रयच्छ प्रयच्छ रुद्ररौद्रसुरासवे शुक्रशापनिकृन्तनि ब्रह्महत्याहरे ह्लीं हूं लां लूं फट् फट् स्वाहा—इस शुक्रशापहरी विद्या का पाठ दश बार करे।

ॐ हंसः शुचिषद् वसुरन्तरिक्षसद् होता वेदिषदतिथिर्दुरोणसत्।
नृषद्वरसदृतसद्व्योमसदब्जा गोजा ऋतजा अद्रिजा ऋतम्।।

इसका पाठ भी तीन बार करे।

ततः आनन्दभैरवं सुरादेवीं च ध्यायेत्। यथा—

सूर्यकोटिप्रतीकाशं चन्द्रकोटिसुशीतलम्।
अष्टादशभुजं देवं पञ्चवक्त्रं त्रिलोचनम्।।१।।
अमृतार्णवमध्यस्थं ब्रह्मपद्मोपरि स्थितम्।
वृषारूढं नीलकण्ठं सर्वाभरणभूषितम्।।२।।
कपालखट्वाङ्गधरं घण्टाडमरुवादिनम्।
पाशाङ्कुशधरं देवं गदामुसलधारिणम्।।३।।
खड्गखेटकपट्टीश-मुद्गरशूलकुन्तिनम्।
विचित्रखेटकं मुण्डवरदाभयपाणिकम्।।४।।
लोहितं देवदेवेशं भावयेत् साधकोत्तमः।
दत्त्वा पुष्पाञ्जलिं कुम्भे जपेदानन्दभैरवम्।।५।।

इत्यानन्दभैरवं ध्यात्वा सुरादेवीं ध्यायेत्। यथा—

समुद्रे मथ्यमाने तु क्षीराब्धौ सागरोत्तमे।
तत्रोत्पन्ना सुरादेवी कुमारीरूपधारिणी ॥६॥
भावयेच्च सुरादेवीं चन्द्रकोट्ययुतप्रभाम्।
हिमकुन्देन्दुधवलां पञ्चवक्त्रां त्रिलोचनाम् ॥७॥
अष्टादशभुजैर्युक्तां सर्वानन्दकरोद्यताम्।
प्रहसन्तीं विशालाक्षीं देवदेवस्य सम्मुखीम् ॥८॥

इति सुरादेवीं ध्यात्वा 'हसरक्षमलवयऊं आनन्दभैरवाय वौषट्, सहक्षमलवरयऊं सुरादेव्यै वौषट्' इति देवदेव्यौ त्रिः संपूज्य, दशधा मूलं संजप्य, दक्षिणावर्तेन त्रिपङ्क्त्या अं १६ कं १६ थं १६ इत्यकथादिशक्तिचक्रं विलिख्य, तन्मध्ये हंक्षं च संलिख्य, एतत्समावेशाद् द्रव्यमध्येऽमृतं विचिन्त्य, धेनुमुद्रयामृतीकृत्य वमिति सुधाबीजं मूलमप्यष्टधा घटं धृत्वा पठित्वा, आत्मश्रीचक्रयोर्मध्ये त्रिकोणषट्कोणवृत्तचतुरस्त्रं विलिख्य, चतुरस्त्रे—ॐ पूर्णगिरिपीठाय नमः, ॐ उड्डीयाणपीठाय नमः, ॐ कामरूपपीठाय नमः, ॐ जालन्धरपीठाय नमः इति संपूज्य, षडङ्गेन षट्कोणं प्रपूज्य, त्रिकोणस्याग्रे ॐ नमः, दक्षे ह्रीं नमः, वामे श्रीं नमः, इति त्रिकोणं सम्पूज्य, मध्ये ॐह्रीं आधारशक्तये नमः इति संपूज्य, त्रिकोणगर्भे षट्कोणभूषितां यन्त्रिकां संस्थाप्य सामान्यार्घ्यजलेनाभ्युक्ष्य पूजयेत्।

तत्पश्चात् आनन्दभैरव और सुरादेवी का इस प्रकार से ध्यान करे—

सूर्यकोटिप्रतीकाशं चन्द्रकोटिसुशीतलम्।
अष्टादशभुजं देवं पञ्चवक्त्रं त्रिलोचनम्।।१।।
अमृतार्णवमध्यस्थं ब्रह्मपद्मोपरि स्थितम्।
वृषारूढं नीलकण्ठं सर्वाभरणभूषितम्।।२।।
कपालखट्वाङ्गधरं घण्टाडमरूवादिनम्।
पाशाङ्कुशधरं देवं गदामुसलधारिणम्।।३।।
खड्गखेटकपट्टीशमुद्गरशूलकुन्तिनम् ।
विचित्रखेटकं मुण्डवरदाभयपाणिकम्।।४।।
लोहितं देवदेवेशं भावयेत् साधकोत्तमः।
दत्त्वा पुष्पाञ्जलिं कुम्भे जपेदानन्दभैरवम्।।५।।

इस प्रकार आनन्दभैरव का ध्यान करके निम्नवत् सुरादेवी का ध्यान करे—

समुद्रे मध्यमाने तु क्षीराब्धौ सागरोत्तमे।
तत्रोत्पन्ना सुरादेवी कुमारीरूपधारिणी।।
भावयेच्च सुरादेवीं चन्द्रकोट्ययुतप्रभाम्।
हिमकुन्देन्दुधवलां पञ्चवक्त्रां त्रिलोचनाम्।
अष्टादशभुजैर्युक्तां सर्वानन्दकरोद्यताम्।
प्रहसन्तीं विशालाक्षीं देवदेवस्य सम्मुखीम्।।

सुरादेवी के ध्यान के बाद 'हसरक्षमलवयऊं आनन्दभैरवाय वौषट् सहक्षमलवरयऊं सुरादेव्यै वौषट्' से देव-देवी का तीन बार पूजन करे एवं दश बार मूल मन्त्र का जप करे। अकथादि शक्ति चक्र में दक्षिणावर्त क्रम से तीन पंक्तियों में सोलह-सोलह वर्णों को लिखे, जैसे—

अं आं इं ईं उं ऊं ऋं ॠं ऌं ॡं एं ऐं ओं औं अं अः = १६
कं खं गं घं ङं चं छं जं झं ञं टं ठं डं ढं णं तं = १६
थं दं धं नं पं फं बं भं मं यं रं लं वं शं षं सं = १६

इनके मध्य में हं क्षं लिखे। इसे द्रव्य में समाविष्ट समझकर द्रव्य को अमृत समझे। धेनुमुद्रा से अमृतीकरण करे। तत्पश्चात् आठ बार इस मन्त्र का जप घट पर हाथ रखकर करे—वं ॐ ह्रीं श्रीं ज्वालामुखि मम सर्वशत्रून् भक्षय भक्षय हूं फट स्वाहा।

अपने और चक्र के बीच में त्रिकोण, षट्कोण, वृत्त, चतुरस्र बनाकर पूजन करे; जैसे—

चतुरस्र में—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं पूर्णगिरिपीठाय नमः। ॐ ऐं ह्रीं श्रीं उड्डीयानपीठाय नमः। ॐ ऐं ह्रीं श्रीं कामरूपपीठाय नमः। ॐ ऐं ह्रीं श्रीं जालन्धरपीठाय नमः।

षट्कोण में—षडङ्ग मन्त्र से हृदय, शिर, शिखा, कवच, नेत्र और अस्त्र का पूजन करे।

त्रिकोण में—अग्रकोण में ॐ नमः। दक्षकोण में ह्रीं नमः। वामकोण में श्रीं नमः से पूजन करे।

मध्य में—ॐ ह्रीं आधारशक्तये नमः से आधारशक्ति का पूजन करे। त्रिकोणगर्भ में षट्कोण अङ्कित यन्त्र स्थापित करके सामान्यार्घ्य जल से अभ्युक्षण करके पूजन करे।

यथा—यं धूम्रार्चिषे नमः, रं ऊष्मायै०, लं ज्वलिन्यै०, वं ज्वालिन्यै०,

शं विस्फुलिङ्गिन्यै०, षं सुश्रियै०, सं सुरूपायै०, हं कपिलायै०, ळं हव्यवाहायै०, क्षं कव्यावाहायै नमः इति संपूज्य, मध्ये 'रं वह्निमण्डलाय दशकलात्मने नमः' इति प्रपूज्य, षट्कोणे षडङ्गं च संपूज्य, मध्ये मूलेन देवीं संपूज्य, हूंहूं ब्रह्माण्डचषकाय फट् स्वाहा, इति नारिकेलपात्रं प्रक्षाल्य, यन्त्रिकोपरि संस्थाप्य, तत्र—कंभं तपिन्यै नमः, खंबं तापिन्यै० गंफं धूम्रायै०, घंपं मरीच्यै०, ङंनं ज्वलिन्यै०, चंधं रुच्यै०, छंदं सुपुम्नायै०, जंथं भोगदायै०, झंतं विश्वायै०, ञंणं बोधिन्यै०, टंढं क्षमायै०, ठंडं धारिण्यै नमः, अं अर्कमण्डलाय द्वादशकलात्मने नमः इति संपूज्य, त्रिकोणं षट्कोणं सचतुरस्त्रं पात्रे विलिख्य बीजत्रयेण त्रिकोणं संपूज्य, षडङ्गेन षट्कोणं संपूज्य, ततो विलोममातृकां पठन्नमृतेन त्रिकोणं प्रपूर्य जलेन च भागमेकं संपूर्य तत्र सुगन्धादि निक्षिप्य, अं अमृतायै नमः, आं मानदायै, इं पूषायै, ईं तुष्ट्यै, उं पुष्ट्यै, ऊं रत्यै, ऋं धृत्यै, ॠं शशिन्यै, लृं चन्द्रिकायै, लॄं कान्त्यै, एं ज्योत्स्नायै, ऐं श्रियै, ओं प्रीत्यै, औं अङ्गदायै, अं पूर्णायै, अः पूर्णामृतायै, सों षोडशकलात्मने सोममण्डलाय नमः इति संपूज्य, पूर्ववद् द्रव्ये यन्त्रं विलिख्य, बीजत्रयेण त्रिकोणं संपूज्य, षडङ्गेन षट्कोणं प्रपूज्य, गङ्गेत्यादिना तीर्थमावाह्य आनन्दभैरवभैरव्यौ स्वस्वमन्त्रेण संपूज्य, पूर्वे ग्लूं गगनरत्नेभ्यो नमः। दक्षे स्लूं स्वर्गरत्नेभ्यो नमः। उत्तरे म्लूं मर्त्यरत्नेभ्यो नमः। पश्चिमे प्लूं पातालरत्नेभ्यो नमः। मध्ये न्लूं नागरत्नेभ्यो नमः इति संपूज्य, मांसादिकं संशोधयेत्।

यं धूम्रार्चिषे नमः। रं ऊष्मायै नमः। लं ज्वलिन्यै नमः। वं ज्वालिन्यै नमः। शं विस्फुलिङ्गिन्यै नमः। षं सुश्रियै नमः। सं सुरूपायै नमः। हं कपिलायै नमः। ळं हव्यवाहायै नमः। क्षं कव्यवाहायै नमः। इस प्रकार पूजन करके मध्य में 'रं वह्निमण्डलाय दशकलात्मने नमः' से पूजन करे।

षट्कोण में षडङ्ग का पूजन करे। मध्य में मूल मन्त्र से देवी का पूजन करे। 'हूं हूं ब्रह्माण्डचषकाय फट् स्वाहा' से नारियल-पात्र को धोकर यन्त्रिका पर स्थापित करे। उस पर पूजन करे; जैसे— कं भं तपिन्यै नमः। खं बं तापिन्यै नमः। गं फं धूम्रायै नमः। घं पं मरीच्यै नमः। ङं नं ज्वलिन्यै नमः। चं धं रुच्यै नमः। छं दं सुषुम्नायै नमः। जं थं भोगदायै नमः। झं तं विश्वायै नमः। ञं णं बोधिन्यै नमः। टं ढं क्षमायै नमः। ठं डं धारिण्यै नमः। अं अर्कमण्डलाय द्वादशकलात्मने नमः से पूजन करे।

त्रिकोण, षट्कोण, चतुरस्र बनाकर तीनों बीजों से त्रिकोण के कोनों में पूजन करे।

जैसे—ॐ नमः, ह्रीं नमः, श्रीं नमः। षट्कोण में षडङ्ग मन्त्र से हृदय, शिर, शिखा, कवच, नेत्र, अस्त्र का पूजन करे। तब विलोम मातृका अर्थात् क्षं से अं तक के वर्णों को वोलते हुए पात्र के एक भाग को जल से भरे। उसमें गन्धादि छोड़े। पूजन करे—अं अमृतायै नमः, आं मानदायै नमः, इं पूषायै नमः। ईं तुष्ट्यै नमः। उं पुष्ट्यै नमः। ऊं रत्यै नमः। ऋं धृत्यै नमः। ॠं शशिन्यै नमः। ऌं चन्द्रिकायै नमः। ॡं कान्त्यै नमः। एं ज्योत्स्नायै नमः। ऐं श्रियै नमः। ओं प्रीत्यै नमः। औं अङ्गदायै नमः। अं पूर्णायै नमः। अः पूर्णमृतायै नमः। सों षोडशकलात्मने सोममण्डलाय नमः।

पूर्ववत् द्रव्य में यन्त्र लिखकर तीनों बीजों से कोनों में पूजन करे। षडङ्ग मन्त्रों से षट्कोण का पूजन करे। गङ्गेत्यादि से तीर्थों का आवाहन करे। आनन्दभैरव और आनन्दभैरवी का अपने-अपने मन्त्रों से पूजन करे। तब निम्न प्रकार से पूजन करे—

पूर्व में—ग्लूं गगनरत्नेभ्यो नमः। दक्षिण में—स्लूं स्वर्गरत्नेभ्यो नमः। उत्तर में म्लूं मर्त्यरत्नेभ्यो नमः। पश्चिम में—प्लूं पातालरत्नेभ्यो नमः। मध्य में—न्लूं नागरत्नेभ्यो नमः। इसके बाद मांसादि का शोधन करे।

यथा—तत्र स्वाग्रे चतुरश्रं विधाय तत्र मांसादिपात्रं संस्थाप्य, यमिति संशोष्य, रमिति सन्दह्य, वमित्यमृतेनाऽप्लाव्य, धेनुमुद्रयामृतीकृत्य, मूलं तदुपरि दशधा प्रजप्य, क्रमेण शोधयेत्। यथा—

ॐ प्रतद्विष्णुः स्तवते वीर्येण मृगो न भीमः कुचरो गिरिष्ठाः ।
यस्योरुषु त्रिषु विक्रमणेष्वधिक्षियन्ति भुवनानि विश्वा ॥

इति द्वितीयशोधनम्। ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात्॥

इति मीनशोधनम्। 'ॐ तद्विष्णोः परमं पदं' इत्यादिना मुद्राशोधनम्।

ॐ विष्णुर्योनिं। कल्पयतु त्वष्टा रूपाणि पिंशतु।
आसिञ्चत् प्रजापतिर्धाता गर्भं दधातु ते ॥
गर्भं धेहि सिनीवालि गर्भं धेहि सरस्वति ।
गर्भं ते ह्यश्विनौ देवावाधत्तां पुष्करस्रजा ॥

इति पञ्चमं शोधयेत्। ततः पात्रोपरि हूमित्यवगुण्ठ्य वमित्यमृतीकृत्य तालत्रयेण दिशः संबद्ध्य, तदुपरि मूलं सप्तधा प्रजप्य योनिमुद्रां प्रदर्शयेत्।

अपने आगे चतुरस्र बनाकर उस पर मांसादि का पात्र रखे। 'यं' से शोषण करे। 'रं'

से दाहन करे। 'वं' अमृत से प्लावन करे। धेनुमुद्रा से अमृतीकरण करे। उसके ऊपर मूल मन्त्र का जप दश बार करे। तब क्रमानुसार शोधन करे; जैसे—

प्रथम मांस-शोधन— ॐ प्रतद्विष्णुः स्तवते वीर्येण मृगो न भीमः कुचरो गिरिष्ठाः।
यस्योरुषु त्रिषु विक्रमणेष्वधिक्षियन्ति भुवनानि विश्वा।।

द्वितीय मीन शोधन— ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात्।।

चतुर्थ मुद्रा शोधन— ॐ तद्विष्णोः पदं इत्यादि से मुद्रा-शोधन करे।

पञ्चम शोधन—

ॐ विष्णुर्योनिं कल्पयतु त्वष्टा रूपाणि पिंशतु।
आसिञ्चन्तु प्रजापतिर्धाता गर्भं दधातु ते।।
गर्भं धेहि सिनीवालि गर्भं धेहि सरस्वति।
गर्भं ते ह्यश्विनौ देवावाधत्तां पुष्करस्रजा।।

तब पात्र के ऊपर 'हूं' से अवगुण्ठन करे। 'वं' से अमृतीकरण करे। तीन ताली बजाकर दशो दिशाओं का बन्धन करे। तब उस पर मूलमन्त्र का दश बार जप करके योनि-मुद्रा दिखावे।

ततः श्रीपात्रोपरि कुण्डलिन्याः प्रयोगेण राजदन्तवर्त्मना निःसृताममृतधारां योनिमुद्रोल्लासितेन करेणानीय, मूलं

ॐ ब्रह्माण्डखण्डसंभूतमशेषरससंभृतम् ।
आपूरितं महापात्रं पीयूषरसमावह ॥

ऐं अमृते अमृतोद्भवे अमृतेश्वरि अमृतवर्षिणि अमृतं स्रावय २ ॐजुंसः स्वाहा इत्यभिमन्त्र्य,

सौः तद्रूपेणैकरस्यं च दत्त्वार्घ्ये तत्स्वरूपिणि ।
भूत्वा परामृताकारं मयि चित्स्फुरणं कुरु ॥

इत्यभिमन्त्र्य, ह्सौं नमः इति संपूज्य, शङ्खमुद्रां प्रदर्श्य षडङ्गेन सकलीकृत्य मत्स्यमुद्रया पात्रमाच्छाद्य मूलं दशधा संजप्य पात्रं देवीरूपं भावयेदिति श्रीपात्रस्थापनविधिः।

श्रीपात्र-स्थापन—तब श्रीपात्र पर कुण्डलिनी-प्रयोग से राजदन्त मार्ग से निकलती हुई अमृतधारा को योनिमुद्रा से उल्लासित करे। मूल मन्त्र—

ॐ ब्रह्माण्डखण्डसम्भूतमशेषरससम्भृतम्।
आपूरितं मया पात्रं पीयूषरसमावह।।

ऐं अमृते अमृतोद्भवे अमृतेश्वरि अमृतवर्षिणि अमृतं स्रावय स्रावय ॐ जु सः—से अभिमन्त्रित करे।

सौः तद्रूपेणैकरस्यं च दत्वार्घ्यं तत्स्वरूपिणि।
भूत्वा परामृताकारं मयि चित्स्फुरणं कुरु।।

इससे मन्त्रित करे। ह्सौं नमः से पूजन करे। शङ्ख मुद्रा दिखावे। षडङ्ग से सकलीकरण करे। मत्स्य मुद्रा से पात्र को अच्छादित करे। उस पर मूल मन्त्र का जप दश बार करे। पात्र को देवीरूप समझे। यही श्रीपात्र-स्थापन विधि है।

ततो देव्या आज्ञामादाय घटसमीपे गुरुपात्रं ततः शक्तिपात्र-भोगपात्र-स्वपात्र-योगिनीपात्र-वीरपात्र-बलिपात्र-पाद्यपात्रार्घ्यपात्राचमनीयपात्र-मधुर्पकपात्रमित्येतानि पात्राणि संस्थाप्य, ततश्चर्वणयुतकारणेन तत्त्वमुद्रया श्रीपात्रामृतबिन्दून् समुद्धृत्य, हसरक्षमलवयऊं सुरादेव्यै वौषट् आनन्देश्वरभैरवं तर्पयामि नमः सुरादेवीं तर्पयामि नमः इति त्रिः सन्तर्प्य, ततो गुरुपात्रामृतेन श्रीपादुकामुच्चार्य श्रीमच्छ्रीअमुकनन्दनाथश्रीपादुकां पू० इति त्रिः सन्तर्प्य, एवं परमगुरुं परमाचार्यगुरुं परमेष्ठिगुरुं च श्रीगुरुपात्रामृतेन सन्तर्प्य, ततः श्रीपात्रामृतेन मूलं श्रीमच्छ्रीमहादेवभैरवसहितां सवाहनां समुद्रां सपरिकरां सायुधां श्रीज्वालामुखीं तर्पयापि नमः इति स्वहृदि सन्तर्प्य, प्रोक्षणीपात्रं संस्थाप्य श्रीपात्रामृतबिन्दुना संस्कृत्य मूलेन स्वात्मानं संप्रोक्षयेत्। अनेनैव जलेन यागभूमिवस्तूनि च प्रोक्षयेत्। इति कलशस्थापनविधिः।

गुरुपात्रादि-स्थापन—इसके बाद देवी की आज्ञा लेकर कलश के निकट गुरुपात्र, शक्तिपात्र, भोगपात्र, स्वपात्र, योगिनीपात्र, वीरपात्र, बलिपात्र, पाद्यपात्र, अर्घ्यपात्र, आचमनीय पात्र एवं मधुपर्कपात्र का स्थापन करे। इसके बाद तर्पण करे।

भैरव-भैरवी-तर्पण—मुद्रासहित कारण से तत्त्वमुद्रा द्वारा श्रीपात्र से अमृतबिन्दु लेकर हसरक्षमलवयऊं सुरादेव्यै वौषट् आनन्दभैरवं तर्पयामि नमः। सुरादेवीं तर्पयामि नमः। इस प्रकार तीन बार तर्पण करे।

गुरुतर्पण—गुरुपात्र से अमृत लेकर श्रीपादुका कहकर श्रीमच्छ्री अमुकानन्दनाथश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः तीन बार तर्पण करे। इसी प्रकार परमगुरु, परमाचार्यगुरु, परमेष्ठिगुरु का तर्पण गुरुपात्र के अमृत से करे।

देवतर्पण—इसके बाद श्रीपात्र के अमृत से देवता का तर्पण करे; जैसे—ॐ ह्रीं श्रीं ज्वालामुखि मम सर्वशत्रून् भक्षय भक्षय हूं फट् स्वाहा श्रीमच्छ्रीमहादेवभैरवसहितां सवाहनां समुद्रां सपरिकरां सायुधां श्रीज्वालामुखीं तर्पयामि नमः। यह तर्पण अपने हृदय में करे।

प्रोक्षणी-पात्र स्थापन—प्रोक्षणी-पात्र का स्थापन करे। श्रीपात्र के अमृतबिन्दु से उसका संस्कार करे। मूल मन्त्र से अपना प्रोक्षण करे। इसी जल से यागभूमि और यागसामग्रियों का भी प्रोक्षण करे। यही कलशस्थापन विधि है।

ततः पूर्ववत् पीठन्यासक्रमेण श्रीचक्रपीठोपरि पीठपूजां विधाय कुसुमाञ्जलिं गृहीत्वा, श्रीदेवीं ध्यात्वा यमिति वायुबीजेन स्वहृदयाद्वामनासापुटेन श्रीदेवीं तेजोमयीं कुसुमाञ्जलौ समानीय, तत्र विधिवद् ध्यात्वा,

ॐ देवेशि भक्तिसुलभे परिवारसमन्विते।
यावत् त्वां पूजयिष्यामि तावद् देवि इहावह॥

इति पठित्वा कुसुमाञ्जलिं श्रीचक्रोपरि निःक्षिपेत्। ततो मूलं श्रीमहादेवसहिते ज्वालामुखि इहागच्छ २ इह संतिष्ठ २ इह संनिधत्स्व २ इह संनिरुद्धा भव २ मम सर्वोपचारसहितां पूजां गृह्ण २ स्वाहा, इत्यावाहनादिमुद्राः प्रदर्श्य श्रीचक्रपीठोपरि लेलिहानमुद्रां प्रदर्श्य, प्राणप्रतिष्ठां कुर्यात्।

पूजन—पीठन्यासक्रम से श्रीचक्रपीठ पर पीठ पूजा करे। पुष्पाञ्जलि लेकर श्री- देवी का ध्यान करके 'यं' वायुबीज से अपने हृदय से वाम नासापुट से तेजोमयी देवी को कुसुमाञ्जलि में ले आये। विधिवत् ध्यान करके निमन मन्त्रों को पढ़कर उनका आवाहन करे—

ॐ देवेशि भक्तिसुलभे परिवारसमन्विते।
यावत् त्वां पूजयिष्यामि तावद् देवि इहावह।।

अञ्जलि के फूलों को श्रीचक्र पर समर्पित करे। तब मूल मन्त्र 'श्रीमहादेवसहिते ज्वालामुखि इहागच्छ इहागच्छ, इह संतिष्ठ इह संतिष्ठ, इह संनिधत्स्व, इह संनिधत्स्व, इह संनिरुद्धा भव, इह संनिरुद्धा भव मम सर्वोपचारसहितां पूजां गृह्ण गृह्ण स्वाहा' कहते हुये आवाहनादि मुद्रा दिखावे। श्रीचक्र पीठ पर लेलिहानमुद्रा दिखावे तत्पश्चात् प्राण-प्रतिष्ठा करे।

ॐ आंह्रींक्रों हंसः सोहं श्रीज्वालामुख्याः प्राणा इह प्राणाः १ ३ँ जीव इह स्थितः १ ३ँ सर्वेन्द्रियाणि इह स्थितानि १ ३ँ वाङ्मनश्चक्षुःश्रोत्रजिह्वा-

प्राणप्राणा इहागत्य सुखं चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा, इति प्राणप्रतिष्ठां विधाय, दशदिग्बन्धनं च विधाय, हुमित्यवगुण्ठ्य, अमृतमुद्रयामृतीकृत्य, षडङ्गेन सकलीकृत्य, परमीकृत्य धेनुयोनिमुद्रे प्रदर्श्य, श्रीपात्रामृतेन मूलं श्रीमहादेवभैरवसहितां श्रीज्वालामुखीं तर्पयामि नमः इति त्रिः सन्तर्प्य, मू० श्रीमहादेवभैरवसहितायै श्रीज्वालामुखीभगवत्यै एतत्पादयोः पाद्यं नमः। एवं मू० अर्घ्यं स्वाहा। मू० एतदाचमनीयं स्वधा। एतन्मधुपर्कं स्वधा। मू० पुनराचमनीयं स्वधा। मू० एतत्स्नानीयं नमः। इति गङ्गादिजलेन सर्वाङ्गे संस्नाप्य, शुद्धदुकूलेनाङ्गं प्रोञ्छ्य, विचित्रपट्टवस्त्रकुङ्कुमकस्तूरीचन्दनसिन्दूरमुकुटकुण्डलहारादिनानालङ्कारान् दत्त्वा पुनराचमनीयं दद्यात्। ततो मध्यमानामङ्गुष्ठैः, मूलं एष गन्धो नमः इति तिलकं ललाटे कुर्यात्। अङ्गुष्ठतर्जनीभ्यां मूलं श्रीमहादेवभैरवसहितायै श्रीज्वालामुख्यै अक्षतपुष्पाणि वौषट् इति पुष्पैः संपूज्य, धूपपात्रं फडिति संपूज्य पुरतः स्थापयित्वा वामतर्जन्या स्पृशन् श्रीपात्रामृतेन धूपं निवेदयामीति निवेद्य, 'ॐजगद्ध्वनिमन्त्रमातः स्वाहा' इति घण्टां संपूज्य वामेन पाणिना तां वादयन् मध्यमानामाङ्गुष्ठैः पात्रं धृत्वा, मूलं ॐज्वालारूपिण्यै विद्महे जगद्धक्षिण्यै धीमहि तन्नो ज्वालामुखी प्रचोदयात्। मू०

वनस्पतिरसोत्पन्नो गन्धाढ्यो गन्ध उत्तमः ।
आघ्रेयः सर्वदेवानां धूपोऽयं प्रतिगृह्यताम् ॥

इति त्रिधोत्तोल्य देवीं धूपयेत्।

प्राणप्रतिष्ठा—ॐ आं ह्रीं क्रों हंसः सोहं श्रीज्वालामुख्याः प्राणा इह इह प्राणाः। ॐ आं ह्रीं क्रों हंसः सोहं श्रीज्वालामुख्याः जीव इह स्थितः। ॐ आं ह्रीं क्रों हंसः सोहं श्रीज्वालामुख्याः सर्वेन्द्रियाणि इह स्थितानि। ॐ आं ह्रीं क्रों हंसः सोहं श्रीज्वालामुख्याः वाङ्मनश्चक्षुःश्रोत्रानि जिह्वाघ्राणप्राणा इहागत्य सुखं चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा। इस प्रकार प्राणप्रतिष्ठा करके दशदिग्बन्धन करे। हूं से अवगुण्ठन करे। अमृतमुद्रा से अमृतीकरण करे। षडङ्ग मन्त्रों से सकलीकरण करे। परमीकृत करे। धेनु योनिमुद्रा दिखावे। 'श्रीपात्रामृतेन मूलं श्रीमहादेवभैरवसहितां श्रीज्वालामुखीं तर्पयामि नमः' से तीन बार तर्पण करे। ॐ ह्रीं श्रीं ज्वालामुखि मम सर्वशत्रून् भक्षय भक्षय हूं फट् स्वाहा। श्रीमहादेवभैरवसहितायै श्रीज्वालामुखीभगवत्यै एतत्पादयोः पाद्यं नमः। इसी प्रकार मूलं अर्घ्यं स्वाहा। मूलं एद् आचमनीयं स्वधा। मलं एतन्मधुपर्कं स्वधा। मूलं पुनराचमनीयं स्वधा। मूलं एतत्स्नानीयं नमः। गङ्गादि जल से सर्वाङ्गीण स्नान कराये।

शुद्ध वस्त्र से अङ्ग का प्रोक्षण करे। विचित्र पट्टवस्त्र, कुङ्कुम, कस्तूरी, चन्दन, सिन्दूर, मुकुट, कुण्डल, हारादि नाना अलङ्कारादि को समर्पित करे। पुनः आचमनीय प्रदान करे। तब मध्यमा-अनामा-अंगुष्ठयोग से मूल मन्त्र बोलते हुए 'एष गन्धो नमः' कहकर ललाट में तिलक लगावे। तत्पश्चात् अंगुष्ठ और तर्जनी के योग से मूल मन्त्र बोलते हुये श्रीमहादेवभैरवसहितायै श्रीज्वालामुख्यै अक्षतपुष्पाणि वौषट्—इससे फूलों से पूजन करे। फट् से धूपपात्र को पूजन कर स्थापित करे। बाँईं तर्जनी से छूते हुए श्रीपात्र के अमृत से 'धूपं निवेदयामि' से धूप प्रदान करे। 'ॐ जगद्ध्वनिगन्त्रमातः स्वाहा' से घण्टे का पूजन करे। बाँयें हाथ से पकड़कर बजाये। मध्यमा-अनामा-अंगुष्ठ से पात्र पकड़कर मूलं ॐ ज्वालारूपिण्यै विद्महे जगद् भक्षिण्यै धीमहि तन्नो ज्वालामुखि प्रचोदयात्।

मूलं वनस्पति रसोत्पन्नो गन्धाढ्यो गन्ध उत्तम।
आघ्रेयः सर्वदेवानां धूपोऽयं प्रतिगृह्यताम्।।

तीन बार धूपपात्र घुमाकर देवी को धूप दिखावे।

ततो दीपं संमुखं संस्थाप्य पूर्ववत् प्रोक्षणपूजने कृत्वा वाममध्यमया दीपपात्रं संस्पृशन् दीपं निवेदयामीति निवेद्य, पूर्ववत् घण्टां वादयन् मध्यमानामामध्ये दीपपात्रमङ्गुष्ठेन धृत्वा दर्शयन् गायत्रीं च पठन्

ॐसुप्रकाशो महादीपः सर्वतस्तमनाशकः ।
प्रसीद मम देवेशि दीपोऽयं प्रतिगृह्यताम् ।।

इति दीपयेत्। ततः स्वर्णादिपात्रे कुङ्कुमेन वसुपत्रं चन्द्ररूपं चरुं कृत्वा मध्ये दीपमेकमष्टपत्रेषु दीपाष्टकं संस्थाप्य, श्रीं सौः ग्लूं स्लूं म्लूं प्लूं न्लूं सौः श्रीं श्रीरत्नेश्वर्यै नमः इत्यभ्यर्च्य, मूलेन चाभ्यर्च्य स्थालकमामस्तकमुद्धृत्य नववारं मूलं

समस्तचक्रचक्रेशीयुते देवि नवात्मिके।
आरात्रिकमिदं देवि गृहाण मम सिद्धये ।।

इति चक्रमुद्रया नीराजयेदिति नीराजनविधिः।

ततो नानानैवेद्यं स्वर्णपात्रे निःक्षिप्य हूमित्यवगुण्ठ्य वमित्यमृतीकृत्य, मूलं सप्तधा सञ्जप्य वामाङ्गुष्ठेन नैवेद्यपात्रं स्पृशन् मूलान्ते

हेमपात्रगतं दिव्यं परमान्नं सुसंस्कृतम्।
पञ्चधा षड्रसोपेतं गृहाण परमेश्वरि ।।

नैवेद्यं निवेदयामीति दक्षानामाङ्गुष्ठाभ्यां निवेदयेत्। ततो मूलं अमृतोपस्तरणमसि स्वाहा इत्यपोशानं दत्त्वा, पञ्च प्राणादिमुद्राः प्रदर्श्य सुतृप्तां देवीं भावयित्वा, पुनराचमनीयं दत्त्वा मूलान्ते कर्पूरादियुक्तं ताम्बूलं निवेदयामीति ताम्बूलं दद्यात्।

तदनन्तर अपने सामने दीपक रखकर पूर्ववत् प्रोक्षण पूजन करे। वाम-मध्यमा से दीपपात्र को छूते हुए 'दीपं निवेदयामि' पूर्ववत् घण्टी बजावे। मध्यमा-अनामा-अंगुष्ठ से दीपक को पकड़कर दिखावे। गायत्री का पाठ करे। तब इसका पाठ करे—

ॐ सुप्रकाशो महादीपः सर्वतस्तमनाशकः।
प्रसीद मम देवेशि दीपोऽयं प्रतिगृह्यताम्।।

तब सोने आदि के पात्र में कुङ्कुम से अष्टपत्र चन्द्ररूप का बनाकर उसके दलों में एक- एक दीपक के हिसाब से आठ दीपक रखे। 'श्रीं सौः ग्लूं स्लूं म्लूं प्लूं न्लूं सौः श्रीं श्रीरत्नेश्वर्यै नमः' से पूजन करे। मूल मन्त्र से अर्चन करे। थाली को मस्तक पर रखकर नव बार मूल के साथ इस मन्त्र को पढ़े—

समस्तचक्रचक्रेशीयुते देवि नवात्मिके।
आरात्रिकमिदं देवी गृहाण मम सिद्धये।।

चक्रमुद्रा से आरती करे।

तब सोने के थाल में नाना प्रकार के नैवेद्य रखकर 'हू' से अवगुठन करे। 'वं' से अमृतीकरण करे। मूल मन्त्र का जप सात बार करे। वामाङ्गुष्ठ से नैवेद्य पात्र का स्पर्श किए हुए मूल के साथ यह कहे—

हेमपात्रगतं दिव्यं परमात्रम् सुसंस्कृतम्।
पञ्चधा षड् रसोपेतं गृहाण परमेश्वरि।।

'नैवेद्यं निवेदयामि' कहते हुये दक्ष अनामा-अङ्गुष्ठ के योग से नैवेद्य निवेदन करे। तब मूल मन्त्र अमृतोपमस्तरणमसि स्वाहा से आपोशन प्रदान करे। प्राणादि पाँच मुद्राओं को दिखाकर भावना करे कि देवी सन्तृप्त हो गयीं। फिर आचमनीय प्रदान करे। मूल मन्त्र के साथ कर्पूरादियुक्त ताम्बूल समर्पित करे।

ॐऐं नमः उच्छिष्टचाण्डालि मातङ्गिनि सर्ववशङ्करि स्वाहा श्रीशेषिकापादुकां पू० इदमुच्छिष्टभोजनं कल्पयित्वा देवीईशाने त्रिकोणे क्षिपेत्। ततः सर्वेषामर्घ्यपात्रजलेनोत्सर्गः कार्यः। ततस्तत्त्वमुद्रया श्रीपात्रामृतेन देवीं त्रिः सन्तर्प्य, हृदि क्षोभिणीं, मुखे द्राविणीं, भ्रूमध्ये आकर्षिणीं, ललाटे वशिनीं,

ब्रह्मरन्ध्रे आह्लादिनीं, इति पञ्चमुद्रामयीं योनिमुद्रां प्रदर्श्य, कृताञ्जलिः श्रीज्वालामुखि ते आवरणं पूजयामि, इत्याज्ञां गृहीत्वा आवरणपूजामारभेत। यथा—

तत्रादौ पूर्वत आरभ्य दक्षावर्तेन, ॐह्रींगांगींगूं गणेशश्रीपा० पूर्वे, ॐह्रीं धं धर्मराजश्रीपा० दक्षे, ॐह्रीं वं वासुकिश्रीपा० पश्चिमे, ॐह्रीं नं नरसिंहश्रीपा० उत्तरे, इति गन्धाक्षतपुष्पैः संपूज्य भूपुरे प्रथमावरणम्। तत्रैव गुरुपूजनम्।

'ॐ ऐं नमः उच्छिष्टचाण्डालि मातङ्गिनि सर्ववशङ्करि स्वाहा श्रीशेषिकापादुकां पूजयामि' से उच्छिष्ट भोजन कल्पित करके देवी के ईशान में त्रिकोण बनाकर रखे। तब सबों का उत्सर्ग अर्घ्यपात्र के जल से करे। तब तत्त्वमुद्रा से श्रीपात्र के अमृत से देवी का तीन बार तर्पण करे। हृदय में क्षोभिणी, मुख में द्राविणी, भ्रूमध्य में आकर्षिणी, ललाट में वशिनी, ब्रह्मरन्ध्र में आह्लादिनी पञ्च मुद्रामयी योनिमुद्रा दिखावे। हाथ जोड़कर बोले—श्रीज्वालामुखि ते आवरणं पूजयामि। ऐसी आज्ञा लेकर आवरणपूजा प्रारम्भ करे; जैसे—

प्रथम आवरण—भूपुर के चारो द्वारों पर दक्षावर्त पूर्वादि क्रम से—ॐ ह्रीं गां गीं गूं गणेशश्रीपादुकां पूजयामि—पूर्व में। ॐ ह्रीं धं धर्मराजश्रीपादुकां पूजयामि—दक्षिण में। ॐ ह्रीं वं वासुकिश्रीपादुकां पूजयामि—पश्चिम में। ॐ ह्रीं नं नरसिंहश्रीपादुकां पूजयामि—उत्तर में गन्धाक्षत-पुष्प से पूजन करे। पुनः उन्हीं स्थानों में गुरु, परमगुरु, परमेष्ठिगुरु और परात्परगुरु—चार गुरुओं का पूजन करे।

अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं प्रथमावरणार्चनम्।।

इस मन्त्र से पूजा समर्पित करते हुये पुष्पाञ्जलि देकर योनिमुद्रा से प्रणाम करे।

ततः षोडशपत्रेषु षोडशज्वाला वामावर्तक्रमेण पूजयेत्। यथा—ॐश्रीं वारुणीश्रीपा०। ॐह्रीं वात्यालीश्रीपा०। ॐह्रीं वाराहीश्रीपा०। ॐह्रीं कुलसुन्दरीश्रीपा०। ॐऐंक्लीं कूवरीश्रीपा०। ॐ सौःक्लीं कुलिकाश्रीपा०। ॐक्रीं कुण्ठीश्रीपा०। ॐक्रीं कुत्सिताश्रीपा०। ॐक्रींहूं कुटिलाश्रीपा०। ॐह्रींक्रीं कुहूश्रीपा०। ॐक्रीं कुन्तीश्रीपा०। ॐऐंक्लीं कुम्भेश्वरीश्रीपा०। ॐक्रीं कुन्ताश्रीपा०। ॐक्रीं कूचरीश्रीपा०। ॐक्रीं कारुणीश्रीपा०। ॐह्रींश्रीऐंक्लींसौः कृतिश्रीपा०। इति गन्धपुष्पाक्षतैः संपूज्य षोडशदले द्वितीयावरणम्।

ततोऽष्टदलेषु अष्टौ कन्या वामावर्तेन पूजयेत्। यथा—ह्रीं मायाश्रीपा०। ह्रीं मोहिनीश्रीपा०। ऐंक्लींसौः बालाश्रीपा०। ॐह्रींभैं भगरूपिणीश्रीपा०। ॐह्रींभैं भगावासाश्रीपा०। ॐह्रींभैं भीररुण्डाश्रीपा०। ॐऐंसौः मृडानीश्रीपा०। ॐह्रींश्रींऐंसौःक्लींब्लूं बैन्दवेश्वरीश्रीपा०। इति गन्धाक्षतपुष्पैः संपूज्य तृतीयावरणम्।

द्वितीय आवरण—षोड़शपत्रों में ज्वालाओं का पूजन वामावर्त पूर्वादि क्रम से—ॐ श्रीं वारुणीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। ॐ ह्रीं वात्यालीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। ॐ ह्रीं वाराहीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। ॐ ह्रीं कुलसुन्दरीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। ॐ ऐं क्लीं कूवरीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। ॐ सौः क्लीं कुलिकाश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। ॐ क्रीं कुण्ठीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। ॐ क्रीं कुत्सिताश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। ॐ क्रीं हूं कुटिलाश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। ॐ ह्रीं क्रीं कुहूश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। ॐ क्रीं कुन्तीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। ॐ ऐं क्लीं कुम्भेश्वरीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। ॐ क्रीं कुन्तीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। ॐ क्रीं कूचरीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। ॐ क्रीं कारुणीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। ॐ ह्रीं श्रीं ऐं क्लीं सौः कृतिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। गन्धाक्षत पुष्प से पूजन करके निम्न मन्त्र से पूजा समर्पित करते हुये पुष्पाञ्जलि देकर योनिमुद्रा से प्रणाम करे—

अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं द्वितीयावरणार्चनम्।।

तृतीय आवरण—अष्टदल में पूर्वादि वामावर्त क्रम से अष्टकन्यापूजन—१. ह्रीं मायाश्रीपादुकां पूजयामि। २. ह्रीं मोहिनीश्रीपादुकां पूजयामि। ३. ऐं क्लीं सौः बालाश्रीपादुकां पूजयामि। ४. ॐ ह्रीं भैं भगरूपिणीश्रीपादुकां पूजयामि। ५. ॐ ह्रीं भैं भगावासाश्रीपादुकां पुजयामि। ६. ॐ ह्रीं भैं भीरुण्डाश्रीपादुकां पूजयामि। ७. ॐ ऐं सौः मृडानीश्रीपादुकां पूजयामि। ८. ॐ ह्रीं श्रीं ऐं सौः क्लीं ब्लूं बैन्दवेश्वरीश्रीपादुकां पूजयामि।

गन्धाक्षत पुष्पों से इनका पूजन करे। तदनन्तर निम्न मन्त्र से पूजा समर्पित करते हुये पुष्पाञ्जलि देकर योनिमुद्रा से प्रणाम निवेदन करे—

अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं तृतीयावरणार्चनम्।।

ततोऽन्तर्दशपत्रेषु दशज्वालाः पूजयेत्। यथा—ॐह्रींब्रां ब्राह्मीश्रीपा०। रँ शां शाम्भवीश्रीपा०। रँ दुं दुर्गाश्रीपा०। रँ वां वाराहीश्री०। रँ कुं

कुलकामिनीश्रीपा०। रँ नां नारसिंहीश्रीपा०। रँ कौं कौमारीश्रीपा०। रँ मां मातङ्गीश्रीपा०। रँ भैं भद्रकालीश्रीपा०। रँ स्त्रीं उग्रताराश्रीपा०। इति गन्धाक्षतपुष्पैः संपूज्य चतुर्थावरणम्।

तत ऊर्ध्वत्रिकोणे ॐश्रीं त्रिपुरासुन्दरीश्रीपा०। ततोऽधः ॐक्रीं दक्षिणकालिकाश्रीपा०। ततो मध्ये बिन्दौ मूलं महादेवभैरवसहितश्रीज्वालामुखीश्री०। ॐह्लीं ज्वालिनीश्री०। रँ जटिनीश्री०। रँ जातीश्री०। रँ जालन्धरीश्री०। इति बिन्दौ संपूजय सन्तर्प्य योनिमुद्रया प्रणमेदिति पञ्चमावरणम्।

चतुर्थ आवरण—दशदल में दश ज्वाला-पूजन—१. ॐ ह्लीं ब्रां ब्राह्मीश्रीपादुकां पूजयामि। २. ॐ ह्लीं शां शाम्भवीश्रीपादुकां पूजयामि। ३. ॐ ह्लीं दुं दुर्गाश्रीपादुकां पूजयामि। ४. ॐ ह्लीं वां वाराहीश्रीपादुकां पूजयामि। ५. ॐ ह्लीं कुं कुलकामिनीश्रीपादुकां पूजयामि। ६. ॐ ह्लीं नां नारसिंहीश्रीपादुकां पूजयामि। ७. ॐ ह्लीं कौं कौमारीश्रीपादुकां पूजयामि। ८. ॐ ह्लीं मां मातङ्गीश्रीपादुकां पूजयामि। ९. ॐ ह्लीं भैं भद्रकालीश्रीपादुकां पूजयामि। १०. ॐ ह्लीं स्त्रीं उग्रताराश्रीपादुकां पूजयामि। गधाक्षत पुष्पों से इनका पूजन करे। निम्न मन्त्र से पूजा का समर्पण करे—

अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं चतुर्थावरणार्चनम्।।

अन्त में पुष्पाञ्जलि प्रदान कर योनिमुद्रा से प्रणाम निवेदन करे।

पञ्चम आवरण—षट्कोण में बिन्दु में—ऊर्ध्व त्रिकोण में—ॐ श्रीं त्रिपुरासुन्दरीश्रीपादुकां पूजयामि। अधः त्रिकोण में—ॐ श्रीं दक्षिणकालिकाश्रीपादुकां पूजयामि। मध्य बिन्दु में—मूलमन्त्र महादेवभैरवसहितश्रीज्वालामुखीश्रीपादुकां पूजयामि। ॐ ह्लीं ज्वालिनीश्रीपादुकां पूजयामि। ॐ ह्लीं जटिनीश्रीपादुकां पूजयामि। ॐ ह्लीं जातीश्रीपादुकां पूजयामि। ॐ ह्लीं जालन्धरीश्रीपादुकां पूजयामि। गन्धाक्षत पुष्पों से इनका पूजन करे। तर्पण करें। योनिमुद्रा से प्रणाम करें।

अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं पञ्चमावरणार्चनम्।।

इस मन्त्र से पूजा का समर्पण करे।

ततश्चतुःसमुद्रान् पूजयेत्। ॐह्लींसः सुधासमुद्रश्री०। ॐक्षां क्षीरसमुद्रश्री०। ॐद्रां दधिसमुद्रश्री०। ॐलूं लवणसमुद्रश्री०। इति विदिग्गते चतुरश्रके

चतुःसमुद्रान् संपूज्य संतर्प्य, अत्रैवायुधानि पूजयेत्। यथा—ॐह्रींवं वरश्री०। २ँ अं अभयश्री०। २ँ क्रीं कमलश्री० २ँ श्रीं शरश्री०। इत्यायुधानि संपूज्य सन्तर्प्य, अत्रैवासनचतुष्टयं पूजयेत्। यथा—ॐह्रीं शवासनश्री० २ँ पद्मासनश्री०। २ँ पीठत्रयासनश्री०। २ँ रुद्राब्जपीठासनश्री० इति संपूज्य सन्तर्प्य योनिमुद्रया प्रणमेदिति षष्ठावरणम्।

पुनर्बिन्दौ श्रीदेवीं गन्धादिनैवद्यान्तैरुपचारैः संपूज्य सन्तर्प्य पुनः पुष्पाञ्जलित्रयेण पूजयेत्। इत्थं संपूज्य नित्यहोममाचरेत्। यथा—तत्राग्नौ जले वा श्रीचक्रं विलिख्य विभाव्य वा तत्र स्वहृदयाद्देवीमावाह्य मूलेन स्रुक्स्रुवघृतचरुसंस्कारं विधाय होमं कुर्यात्। यथा—प्राणाय स्वाहा, अपानाय स्वाहा, समानाय स्वाहा, उदानाय स्वाहा, व्यानाय स्वाहा, इति पञ्चाहुतीर्हुत्वा, षडङ्गाहुतीर्जुहुयात्। ॐह्रांश्रां हृदयाय नमः स्वाहा, एवमस्त्रान्तं षडङ्गाहुतीर्हुत्वा, आवरणदेवता अपि हुत्वा देवीं स्वहृद्यानीयाग्निं विसर्जयेदिति नित्यहोमविधिः।

षष्ठ आवरण—चारो समुद्रों का पूजन-तर्पण भूपुर के चारों कोनों में करे—ॐ ह्रीं सः सुधासमुद्रश्रीपादुकां पूजयामि। ॐ क्षां क्षीरसमुद्रश्रीपादुकां पूजयामि। ॐ द्रां दधिसमुद्रश्रीपादुकां पूजयामि। ॐ लूं लवणसमुद्रश्रीपादुकां पूजयामि।

समुद्रों के बगल में आयुधों का पूजन-तर्पण करे—ॐ ह्रीं वं वरश्रीपादुकां पूजयामि। ॐ ह्रीं अं अभयश्रीपादुकां पूजयामि। ॐ ह्रीं क्रीं कमलश्रीपादुकां पूजयामि। ॐ ह्रीं श्रीं शरश्रीपादुकां पूजयामि।

इन्हीं स्थानों में चारो आसनों का पूजन-तर्पण करे—ॐ ह्रीं शवासनश्रीपादुकां पूजयामि। ॐ ह्रीं पद्मासनश्रीपादुकां पूजयामि। ह्रीं पीठत्रयासनश्रीपादुकां पूजयामि। ॐ ह्रीं रुद्राब्जपीठासनश्रीपादुकां पूजयामि।

इस प्रकार पूजन करके तर्पण करे। योनिमुद्रा से प्रणाम करे। तदनन्तर निम्न मन्त्र बोलते हुये पूजा समर्पित करते हुये पुष्पाञ्जलि समर्पित करे—

अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं षष्ठावरणार्चनम्।।

इसके बाद फिर बिन्दु में श्रीदेवी का पूजन गन्ध-अक्षत-पुष्प-धूप-दीप-नैवेद्य आदि उपचारों से करे। तर्पण करे। तीन पुष्पाञ्जलि प्रदान करे। इस प्रकार पूजन करके नित्य हवन करे।

नित्य हवन—अग्नि या जल में श्रीचक्र अङ्कित करके या भावना करके उसमें अपने हृदय से देवी को लाकर आवाहन करे। मूल मन्त्र से स्रुक स्रुव से घी चरु को संस्कृत

करके हवन करे। जैसे—प्राणाय स्वाहा, अपानाय स्वाहा, समानाय स्वाहा, उदानाय स्वाहा, व्यानाय स्वाहा से पाँच आहुतियाँ प्रदान करे।

इसके बाद षडङ्ग आहुति प्रदान करे जैसे—ॐ ह्रां श्रां हृदयाय नमः स्वाहा। ॐ ह्रां श्रां शिरसे स्वाहा स्वाहा। ॐ ह्रां श्रां शिखायै वषट् स्वाहा। ॐ ह्रां श्रीं कवचाय हुं स्वाहा। ॐ ह्रां श्रां नेत्राय वौषट् स्वाहा। ॐ ह्रां श्रां अस्त्राय फट् स्वाहा।

आवरण देवताओं को भी एक-एक आहुति प्रदान करके देवी को अपने हृदय में लाकर अग्नि का विसर्जन करे। यही नित्य हवन की विधि है।

तत ईशाने मण्डलं कृत्वां 'वां वटुकाय नमः, ॐह्रींश्रीं एह्येहि देवीपुत्र वटुकनाथ कपिलजटाभारभास्वर त्रिनेत्र ज्वालामुख सर्वविघ्नान् नाशय २ सर्वोपचारसहितां पूजां बलिं गृह्ण २ स्वाहा' इति वामाङ्गुष्ठानामिकाभ्यां बलिं दद्यात्। तत आग्नेये यां योगिनिभ्यो नमः,

ऊर्ध्वं ब्रह्माण्डतो वा दिवि गगनतले भूतले निस्तले वा
पाताले वानले वा पवनसलिलयोर्यत्र कुत्र स्थिता वा।
क्षेत्रे पीठोपपीठादिषु च कृतपदा धूपदीपालिमांसैः
प्रीता देव्यः सदा नः शुभबलिविधिना पान्तु वीरेन्द्रवन्द्याः ॥

यां योगिनीभ्यो नमः 'सर्वयोगिभ्यो हूंफट् स्वाहा' इति वामाङ्गुष्ठमध्यमाभिर्विसृजेत्। ततो नैर्ऋते 'क्षां क्षेत्रपालाय नमः, ॐक्षांक्षींक्षूंक्षैंक्षौंक्षः क्षेत्रपालालिबलिसहितं बलिं गृह्ण २ स्वाहा,

योऽस्मिन् क्षेत्रे निवासी च क्षेत्रपालः सकिङ्करः।
स प्रीतो बलिदानेन सर्वरक्षां करोतु मे ॥

इति वामाङ्गुष्ठतर्जनीभ्यां बलिमुत्सृजेदिति। ततो वायव्ये 'गांगींगूंगं गणपतये वर वरद सर्वजनं मे वशमानय बलिं गृह्ण २ स्वाहा' इति वामाङ्गुष्ठमध्यमाभ्यां बलिमुत्सृजेदिति। तत उत्तरे ॐसर्वभूतेभ्यो नमः 'ॐह्रीं सर्वविघ्नकृद्भ्यः सर्वभूतेभ्यो हूं स्वाहा एष बलिर्नमः' इति सर्वाङ्गुलीभिर्बलिमुत्सृजेदिति बलिपञ्चकं दद्यात्। अशक्त एकपात्र एव कुर्यात्।

बलिदानपञ्चक

१. वटुकबलि—पूजन पीठ के ईशान में मण्डल बनाकर उसमें निम्न मन्त्र पढ़कर वटुक को बलि प्रदान करे—वां वटुकाय नमः ॐ ह्रीं श्रीं एह्येहि देवीपुत्र वटुकनाथ कपिलजटाभारभास्वर त्रिनेत्र ज्वालामुख सर्वविघ्नान् नाशय नाशय सर्वोपचारसहितां पूजां बलिं गृह्ण गृह्ण स्वाहा। यह बलि वामांगुष्ठ-अनामिका योग से प्रदान करे।

२. योगिनीबलि—पीठ के आग्नेय में यां योगिनीभ्यो नमः।

ऊर्ध्वं ब्रह्माण्डतो वा दिवि गगनतले भूतले निस्तले वा
पाताले वानले वा पवनसलिलयोर्यत्र कुत्र स्थिता वा।
क्षेत्रे पीठोपपीठादिषु च कृतपदा धूपदीपालिमांसैः
प्रीता देव्यः सदा नः शुभबलिविधिना पान्तु वीरेन्द्रवन्द्याः।।

यां योगिनीभ्यो मम: सर्वयोगिनीभ्यो हूं फट् स्वाहा। यह बलि वामांगुष्ठ और मध्यमा अंगुलि के योग से दे।

३. क्षेत्रपालबलि—पीठ के नैर्ऋत्य में क्षेत्रपाल को बलि दे। क्षां क्षेत्रपालाय नमः ॐ क्षां क्षीं क्षूं क्षैं क्षौं क्षः क्षेत्रपालालि बलिसहितं बलि गृह्ण गृह्ण स्वाहा।

योऽस्मिन् क्षेत्रे निवासी च क्षेत्रपालः सकिङ्करः।
स प्रीतो बलिदानेन सर्वरक्षां करोतु मे।।

यह बलि वामांगुष्ठ-तर्जनी के योग से प्रदान करे।

४. गणपतिबलि—पीठ के वायव्य में गणपति को बलि प्रदान करे। गां गीं गूं गं गणपतये वंर वरद सर्वजनं मे वशमानय बलिं गृह्ण गृह्ण स्वाहा। वामांगुष्ठ-मध्यमा के योग से बलि उत्सर्ग करे।

५. सर्वभूत-बलि—पीठ के उत्तर में सर्व भूतों को बलि प्रदान करे। ॐ सर्व भूतेभ्यो नमः, ॐ ह्रीं सर्व विघ्नकृद्भ्यः सर्वभूतेभ्यो हूं स्वाहा एष बलिः नमः। यह बलि सभी अँगुलियों के योग से प्रदान करे। इस प्रकार पञ्चबलि का उत्सर्ग करे। अशक्त एक ही पात्र में बलि प्रदान करे।

अस्मिन्नेवावसरे छागादिबलिं दद्यात्। तत्र मूलेन पशुं संस्नाप्य गन्धस्रगादिभिरलंकृत्य देव्यग्रे संस्थाप्य, मूलेन प्रोक्षणीजलेन प्रोक्ष्यास्त्राय फडिति संरक्ष्य हुमित्यवगुण्ठ्य मूलेन धेनुमुद्रयामृतीकृत्य 'सर्वदेवतारूपिणे बलिरूपायामुकपशवे नमः' इति गन्धादिना त्रिः संपूज्य, तस्य दक्षकर्णे 'ॐपशुपाशाय विद्महे विप्रकर्णाय धीमहि तन्नो जीवः प्रचोदयात्।' इति पशुगायत्रीं त्रिः पठित्वा, पुरतः खड्गं निधाय 'ॐकालि कालि वज्रेश्वरि लोहदण्डायै नमः' इति गन्धादिना त्रिरभ्यर्च्य, तस्य मुष्टौ ॐऐंह्रींश्रीं वागीश्वरीब्रह्माभ्यां नमः, मध्ये ४ँ लक्ष्मीनारायणाभ्यां नमः, ४ँ उमामहेश्वराभ्यां नमः इति संपूज्य तं धृत्वा मन्त्रयेत्।

ॐखड्गायासुरनाशाय देवकार्यार्थतपर ।
पशुश्छेद्यस्त्वया तीघ्रं खड्गनाथ नमोऽस्तु ते ॥

इत्यभिमन्त्र्य, गन्धाक्षतजलादिकमादाय, मूलं मासादिकमुत्कीर्त्यामुकगोत्रोऽमुकशर्मामुककामः श्रीज्वालामुख्या इमं पशुं तुभ्यमर्पयाम्यहं संप्रसीद, इति पठित्वा पशोः शिरसि निःक्षिपेत्। ततस्तच्छिरो धृत्वा,

ॐयज्ञार्थं पशवः सृष्टा यज्ञार्थं पशुघातनम्।
अतस्त्वां घातयिष्यामि तस्माद्यज्ञे वधोऽवधः ॥
शिवायत्तमिदं पिण्डमतस्त्वं शिवतां गतः ।
उद्बुध्यस्व पशो त्वं हि नाशिवस्त्वं शिवोऽसि हि ॥

इति सम्बोधयित्वा खड्गमादाय 'सौः अस्त्राय फट् छिन्धि २ स्वाहा' इति खड्गं तस्य स्कन्धे योजयेत्। ततः स्वयं देवीरूपो भूत्वा निर्विकल्प एकेन प्रहारेण च्छिन्द्यात्। सविकल्पः परहस्तेन च्छेदयेत्। अत्रैव ब्राह्मणातिरिक्तैः स्वास्त्रादिबलिर्देयः। इति बलिं दत्त्वा मूलदेवीं संपूज्य रक्तेन सन्तर्प्य, जलममृतीकृत्य मूलेन त्रिरभिमन्त्र्य, मूलं श्रीज्वालामुखि इमं जलं गृहाणेति जलं दत्त्वा योनिमुद्रया प्रणमेत्।

पशुबलि—इसी अवसर पर छागबलि भी प्रदान करे। मूल मन्त्रोच्चारणपूर्वक पशु को स्नान कराये। गन्ध-माला आदि से सजाये। तब उसे देवी के सामने खड़ा करे। मूल मन्त्र बोलते हुए प्रोक्षणी पात्र के जल से उसका प्रोक्षण करे। अस्त्रमन्त्र 'फट्' से उसका रक्षण करे। 'हुं' से अवगुण्ठन करे। मूल मन्त्र से धेनुमुद्रा के द्वारा उसका अमृतीकरण करे। 'सर्वदेवतारूपिणि बलिरूपाय अमुकपशवे नमः' से गन्धादि द्वारा उसका पूजन तीन बार करे। उसके कान में पशुगायत्री का पाठ तीन बार करे—ॐ पशुपाशाय विद्महे विप्रकर्णाय धीमहि तन्नो जीवः प्रचोदयात्। सामने खड्ग रखकर 'ॐ कालि कालि वज्रेश्वरी लोहदण्डायै नमः' मन्त्र से गन्धादि द्वारा तीन बार पूजन करे। खड्ग के मूठ का पूजन 'ॐ ऐं ह्रीं श्रीं वागीश्वरीब्रह्माभ्यां नमः' से; खड्गमध्य में 'ॐ ऐं ह्रीं श्रीं लक्ष्मीनारायणाभ्यां नमः' से और खड्ग के अन्तिम भाग का पूजन 'ॐ ऐं ह्रीं श्रीं उमामहेश्वराभ्यां नमः' से करे। इसके बाद खड्ग को हाथ से पकड़कर उसे अभिमन्त्रित करे। अभिमन्त्रण मन्त्र है—

ॐ खड्गायासुरनाशाय देवकार्यार्थतत्पर।
पशुच्छेद्यस्त्वया शीघ्रं खड्गनाथ नमोस्तु ते।।

इस प्रकार खड्ग को अभिमन्त्रित करके गन्धाक्षत जलादि हाथ में लेकर सङ्कल्प करे—ॐ ह्रीं श्रीं ज्वालामुखि मम सर्वशत्रून् भक्षय भक्षय हूं फट् स्वाहा, मासानां उत्तमे मासे अमुके मासे अमुकगोत्रो अमुकशर्मा अमुककामः श्रीज्वालामुख्या इमं पशुं तुभ्यमर्पयाम्यहं सम्प्रसीद—यह कहकर पशु का शिर काट दे। तब उसके शिर को लेकर इस प्रकार कहे—

ॐ यज्ञार्थं पशवः सृष्टा यज्ञार्थं पशुघातनम्।
अतस्त्वां घातयिस्यामि तस्माद्यज्ञे वधोऽवधः।।
शिवायत्तमिदं पिण्डमतस्त्वं शिवतां गतः।
उद्बुध्यस्व पशो त्वं हि नाशिवस्त्वं शिवोऽसि हि।।

इन श्लोकों से पशु को उद्बोधित करके 'सौः अस्त्राय फट् छन्धि छिन्धि स्वाहा' कहकर खड्ग को पशु के कन्धे पर रखे। तब स्वयं देवीरूप होकर निर्विकल्प एक ही प्रहार से पशु का शिरच्छेदन कर दे। सविकल्प में दूसरे से छेदन करावे। इसमें भी ब्राह्मण के अतिरिक्त अपने परिवार से बलि का छेदन कराये। इस प्रकार बलि देकर मूल देवी का पूजन करके रक्त से तर्पण करे। तब जल का अमृतीकरण करके मूल मन्त्र के तीन जप से अभिमन्त्रित करे। 'मूल श्रीज्वालामुखि इमं जलं गृहाण' यह कहकर जल देवे। योनिमुद्रा से प्रणाम करे।

ततः कुमारीं सूक्ष्मक्रमेण मूलेन पूजयेत्। ततो मूलेन मूलदेवीं संपूज्य, प्राणायामर्ष्यादिकरषडङ्गन्यासान् विधाय स्वात्मानं कामकलारूपं ध्यायन् मालामादाय,

ॐमां माले माले महामाले सर्वशक्तिस्वरूपिणि।
चर्तुवर्गस्त्वयि न्यस्तस्तस्मान्मे सिद्धिदा भव॥

इति संपूज्य,

गं अविघ्नं कुरु माले त्वं सर्वभावेषु सर्वदा।

इति दक्षकरेण मालां गृहीत्वा स्वशिरसि श्रीगुरुं, कण्ठे पीतवर्णां मूलविद्यां, हृदये ज्वालामुखीदेवीं, श्रीगुरुचरणयोः स्वात्मानं ध्यात्वा, भ्रूमध्ये तेषां चतुर्णामैक्यं विभाव्य, विशुद्धौ चतुष्टयमेकीभूतमानीय देवतारूपं क्षणं ध्यात्वा, मूलं स्मरन् यथाशक्ति जपं कृत्वा, जपान्ते

त्वं माले सर्वदेवानां प्रीतिदा शुभदा भव।
शुभं कुरुष्व मे भद्रे यशो वीर्यं च देहि मे॥

इति मालां स्वशिरसि संस्थाप्य पुनरपि प्राणायामर्घ्यादिकरषडङ्गन्यासान् विधाय 'गुह्यातीति' सामान्यार्घ्यामृतेन वामहस्ते तेजोमयं जपफलं समर्प्य, मालां संपूज्य रहः स्थापयेत्। ततो मूलदेव्यै पुष्पाञ्जलिं दत्वा, कवच-सहस्रनामस्तोत्रपाठं कृत्वा श्रीदेवीं सन्तोष्य, प्रागुक्तगुरुस्तोत्रेण श्रीगुरुं स्तुत्वा प्रणम्य,

सर्वशक्तिक्रमोद्भूतिप्रभिन्नामहमात्मिकाम् ।
देवस्य देवतां काञ्चित् संवित्सुखमयीं श्रये ।।

इति नत्वा क्षमापयेत्।

तब कुमारी पूजन करे। पहले एकवर्षा, तब द्विवर्षा—इस क्रम से कुमारियों का पूजन करे। तब मूल मन्त्र से मूल देवी का पूजन करे। प्राणायाम, ऋष्यादि, कर, षडङ्ग न्यास करे। अपने को कामकला के रूप में ध्यान करे। माला लेकर प्रार्थना करे। पूजन करे।

ॐ मां माले माले महामाले सर्वशक्तिस्वरूपिणि।
चतुर्वर्गस्त्वयि न्यस्तस्तमान्मे सिद्धिदा भव।।

इस प्रकार माला की पूजा करके बोले—

गं अविघ्नं कुरु माले त्वं सर्वभावेषु सर्वदा।

यह कहकर दक्ष कर से माला ग्रहण करके अपने शिर पर श्रीगुरु, कण्ठ में पीत वर्ण मूल विद्या, हृदय में ज्वालामुखी देवी, आत्मा में श्रीगुरुचरण भ्रूमध्य में उन चारो—गुरु, मन्त्र, देवता और आत्मा को अभिन्न मानकर ध्यान करे। उन चारो को आज्ञा से विशुद्धि में लाकर एकीभूत करके देवतारूप में ध्यान करे। यथाशक्ति मूल मन्त्र का जप करे। जप के बाद जप समर्पित करे—

त्वं माले सर्वदेवानां प्रीतिदा शुभदा भव।
शुभं कुरुष्व मे भद्रे यशो वीर्यं च देहि मे।।

इस प्रार्थना के बाद माला को अपने शिर पर रखकर फिर प्राणायाम, ऋष्यादि, कर, षडङ्ग न्यास करे। तब 'गुह्याति गुह्य' मन्त्र द्वारा सामान्य अर्घ्यामृत से तेजोमय जपफल श्रीदेवी के बाँयें हाथ में समर्पित करे। माला को पूजकर स्थापित करे। तब मूल देवी को पुष्पाञ्जलि देवे। कवच, सहस्रनाम, स्तोत्रपाठ करके देवी को सन्तुष्ट करे। पूर्ववर्णित गुरुस्तोत्र से श्रीगुरु की वन्दना करे, प्रणाम करे।

सर्वशक्तिक्रमोद्भूतिप्रभिन्नामहमात्मिकाम्।
देवस्य देवतां काञ्चित् संवित्सुखमयीं श्रये।।

इस मन्त्र से प्रणाम करने के बाद क्षमाप्रार्थना करे।

भूमौ स्खलितपादानां भूमिरेवावलम्बनम्।
त्वयि जातापराधानां तवमेव शरणं शिवे॥
अपराधो भवत्येव सेवकस्य पदे पदे।
कोऽपरः सहते लोके केवलं स्वामिनं विना॥
अपराधसहस्राणि क्रियन्तेऽहर्निशं मया।
समक्षं सविधं सर्वमिति मातः क्षमस्व मे॥

इति प्रणामपूर्वं क्षमाप्य, अर्घ्योदकं चुलुकेन गृहीत्वा, ॐ इतः पूर्वं प्राणबुद्धिदेहधर्माधिकारतो जाग्रत्स्वप्नसुषुप्त्यवस्थासु मनसा वाचा कर्मणा पद्भ्यामुदरेण शिश्ना यत् स्मृतं यदुक्तं यत् कृतं तत् सर्वं श्रीदेव्यर्पणमस्तु स्वाहा, इत्यनेन देव्याश्चरणारबिन्दयोर्गृहीतोदकदानेनात्मानं समर्प्य, कृताञ्जलिर्भूत्वा,

यद् दत्तं भक्तिमात्रेण पुष्पं पत्रं फलं जलम्।
निवेदितं च नैवेद्यं तद् गृहाणानुकम्पया॥
आवाहनं न जानामि न जानामि विसर्जनम्।
पूजाभागं न जानामि त्वं गतिः परमेश्वरि॥
कर्मणा मनसा वाचा नास्ति वान्या गतिर्मम।
अन्तश्चारेण भूतानां रक्ष त्वं परमेश्वरि॥
मातर्योनिसहस्रेषु येषु येषु व्रजाम्यहम्।
तेषु तेष्वच्युता भक्तिरच्युतेऽस्तु सदा त्वयि॥
देवी दात्री च भोक्त्री च देवी सर्वमिदं जगत्।
देवी जयति सर्वत्र या देवी सोऽहमेव हि॥
यदक्षरपदभ्रष्टं मात्राहीनं च यद्गतम्।
क्षन्तुमर्हसि देवेशि कस्य न स्खलितं मनः॥
क्षमस्व देवदेवेशि ज्वालामुखि महेश्वरि।
तव पादाम्बुजे नित्यं निश्चला भक्तिरस्तु मे॥

इति पुष्पैः क्षमापयित्वा, योनिमुद्रया प्रणम्य शङ्खमुद्धृत्य देव्युपरि भ्रामयित्वा,

साधु वासाधु वा कर्म यद्यदाचरितं मया।
तत् सर्वं कृपया देवि गृहाणाराधनं मम॥

इति देवीदक्षहस्ते शङ्खजलं किञ्चिद् दत्त्वा, शङ्खं स्वस्थाने संस्थाप्य, तज्जलं किञ्चिद्वामहस्ते निधाय मूलेन सप्तधाभिमन्त्र्य स्वात्मानमन्यानपि सामयिकान् तेन प्रोक्ष्य, पुष्पाञ्जलिमादाय

गच्छ गच्छ परं स्थानं स्वस्थानं परमेश्वरि।
यत्र ब्रह्मादयो देव न विदुः परमं पदम्॥

इति विसृज्य संहारमुद्रया श्रीचक्रात् पुष्पमादाय तत्तेजः समुद्धृत्याघ्राय पूरकयोगेन हृदयकमलं प्रापय्य, तत्र यथोक्तरूपां ध्यायन्,

तिष्ठ तिष्ठ परे स्थाने स्वस्थाने परमेश्वरि।
यत्र ब्रह्मादयः सर्वे सुरास्तिष्ठन्ति मे हृदि॥

इति हृदयकमले संस्थाप्य 'चण्डेश्वराय नमः' इति निर्माल्यं संपूज्य ऐशान्यां जलेन त्रिकोणं विधाय, तत्र 'निर्माल्यवासिन्यै नमः' इति नैवेद्यशतांशं सहस्रांशं वा निर्माल्यपुष्पसहितं क्षिपेत्, तालत्रयपूर्वं निर्माल्यवासिनीं विसर्जयेत्।

भूमौ स्खलितपादानां भूमिरेवावलम्बनम्।
त्वयि जातापराधानां त्वमेव शरणं शिवे।।
अपराधो भवत्येव सेवकस्य पदे पदे।।
कोऽपरः सहते लोके केवलं स्वामिनं विना।।
अपराधसहस्राणि क्रियन्तेऽहर्निशं मया।
समक्षं सविधं सर्वमिति मातः क्षमस्व मे।।

प्रणामपूर्वक क्षमा माँगकर चुल्लू भर अर्घ्योदक ग्रहण करे और निम्न मन्त्र का पाठ करे—ॐ इतः पूर्वं प्राणबुद्धिदेहधर्माधिकारतो जाग्रत्-स्वप्न-सुषुप्ति-अवस्थासु मनसा वाचा कर्मणा पद्भ्यामुदरेण शिश्ना यत् स्मृतं यदुक्तं यत् कृतं तत् सर्वं श्रीदेव्यर्पणमस्तु स्वाहा।

इस प्रकार कहकर देवी के चरणारविन्द में गृहीत जलदान के साथ-साथ अपने को भी समर्पित कर दे। तत्पश्चात् हाथ जोड़कर प्रार्थना करे—

यद् दत्तं भक्तिमात्रेण पुष्पं पत्रं फलं जलम्।
निवेदितं च नैवेद्यं तद् गृहाणानुकम्पया।।
आवाहनं न जानामि न जानामि विसर्जनम्।
पूजाभागं न जानामि त्वं गतिः परमेश्वरि।।

कर्मण मनसा वाचा नास्ति वान्या गतिर्मम।
अन्तश्चारेण भूतानां रक्ष त्वं परमेश्वरि।।
मातर्योनिसहस्त्रेषु येषु येषु व्रजाम्यहम्।
तेषु तेषु च्युता भक्तिरच्युतेऽस्तु सदा त्वयि।।
देवी दात्री च भोक्त्री च देवी सर्वमिदं जगत्।
देवी जयति सर्वत्र या देवी सोऽहमेव हि।।
यदक्षरपदभ्रष्टं मात्राहीनं च यद्गतम्।
क्षन्तुमर्हसि देवेशि कस्य न स्खलितं मनः।।
क्षमस्व देवदेवेशि ज्वालामुखि महेश्वरि।
तव पादाम्बुजे नित्यं निश्चला भक्तिरस्तु मे।।

इस प्रकार पुष्पों से क्षमाप्रार्थना करके योनिमुद्रा से प्रणाम करे। हाथों में शङ्ख लेकर देवी पर घुमावे और कहे---

साधु वासाधु वा कर्म यद्यदाचरितं मया।
तत् सर्वं कृपया देवि गृहाणाराधनं मम।।

शङ्ख का कुछ जल देवी के हाथ में देकर शङ्ख को अपने स्थान में रख दे। उसमें से कुछ जल अपने बाँयें हाथ में लेकर मूल मन्त्र के सात जप से अभिमन्त्रित करे। तब अपना और अन्य उपस्थित सामयिकों का उससे प्रोक्षण करे। पुष्पाञ्जलि लेकर निम्न श्लोक का पाठ करे—

गच्छ गच्छ परं स्थानं स्वस्थानं परमेश्वरि।
यत्र ब्रह्मादयो देवा न विदुः परमं पदम्।।

पुष्पाञ्जलि देकर विसर्जन करे। संहारमुद्रा से श्रीचक्र पर से फूल लेकर उसे देवी के तेज से युक्त मानकर सूँघे। पूरक योग से अपने हृदयकमल में ले आये और इस प्रकार ध्यान करे—

तिष्ठ तिष्ठ परे स्थाने स्वस्थाने परमेश्वरि।
यत्र ब्रह्मादयः सर्वे सुराः तिष्ठन्ति मे हृदि।।

इस प्रकार देवी को हृदयकमल में स्थापित करके 'चण्डेश्वराय नमः' से चण्डेश्वर का पूजन करे। पीठ के ईशान कोन में त्रिकोण बनावे। उसमें 'निर्माल्यवासिन्यै नमः' से नैवेद्य का शतांश या सहस्त्रांश फूलों के साथ रखे। तीन ताली बजाकर निर्माल्यवासिनी का विसर्जन करे।

ततः—

देव नाथ गुरो स्वामिन् देशिक स्वात्मनायक ।
त्राहि त्राहि कृपासिन्धो पूजां पूर्णतरां कुरु ॥

इति श्रीगुरुं प्रणम्य प्रार्थ्य, श्रीपात्रं समुद्धृत्यामस्तकान्तं शिरःस्थाय श्रीगुरवे समर्प्य, तत्पात्रं दक्षकरे निधाय वामकरेण तत्त्वमुद्रया श्रीपादुकामन्त्रेण श्रीपादुकां तर्पयामि नमः इति त्रिः सन्तर्प्य तत्पात्रं स्वस्थाने संस्थाप्य, तज्जलं किञ्चित् पात्रान्तरे निधाय, ॐ आत्मतत्त्वाय नमः, ह्रीं विद्यातत्त्वाय नमः, श्रीं शिवतत्त्वाय नमः, मूलं सर्वतत्त्वाय नमः इति चतुस्तत्त्वानि जले विन्यस्य तज्जलं चुलकेनादाय, ॐऐंह्रींश्रीं प्रकृतिबुद्ध्यहङ्कारमनःश्रोत्रत्वक्चक्षुर्जिह्वाघ्राणवाक्पाणिपादपायूपस्थशब्दस्पर्शरूपरसगन्धाकाशवाय्वग्निसलिलपृथिव्यात्मकं अं आं इं ईं उं ऊं ऋं ॠं लृं ॡं एं ऐं ओं औं अं अः ऐं मूलं आत्मतत्त्वात्मकाशुद्धचतुर्विंशतितत्त्वसहितं स्थूलदेहं शोधयामि स्वाहा, ॐऐंह्रींश्रीं मायाकलाविद्यारागकालनियतिपुरुषात्मकशुद्धाशुद्धसप्ततत्त्वसहितं कं खं गं घं ङं चं छं जं झं ञं टं ठं डं ढं णं तं थं दं धं नं पं फं बं भं मं क्लीं मूलं विद्यातत्त्वात्मकं सूक्ष्मदेहं शोधयामि स्वाहा, ॐऐंह्रींश्रीं शिवशक्तिसदाशिवेश्वरशुद्धविद्यादिपञ्चतत्त्वसहितं यं रं लं वं शं षं सं हं ळं क्षः सौः मूलं शिवतत्त्वात्मकं परदेहं शोधयामि स्वाहा, ॐऐंह्रींश्रीं शिवादिषट्त्रिंशत्तत्त्वसहितं अं आं इत्यादि क्षः इत्यन्तं ऐंक्लींसौः मूलं सर्वतत्त्वस्थूलसूक्ष्मपराख्यदेहरूपाभिमानिनं जीवात्मानं शोधयामि स्वाहा, इति चुलकचतुष्टयं स्वीकृत्य तत्पात्रं कराभ्यामादाय, मूलं गुरुपादुकामुच्चार्य,

ॐ प्रकाशाकाशहस्ताभ्यामवलम्ब्योन्मनीस्रुचम् ।
धर्माधर्मकलास्नेहपूर्णां वह्नौ जुहोम्यहं स्वाहा ॥

इति तज्जलमश्नीयात्।

इसके बाद श्रीगुरु को प्रणाम निम्न मन्त्र से करे—

देव नाथ गुरो स्वामिन् देशिक स्वात्मनायक।
त्राहि त्राहि कृपासिन्धो पूजां पूर्णतरां कुरु।।

पात्रासादन—श्रीपात्र को लेकर मस्तकान्त शिर पर रखकर श्रीगुरु को समर्पित करे। तब उस पात्र को अपने दाँयें हाथ में लेकर बाँयें हाथ के तत्त्वमुद्रा से श्रीपादुका मन्त्र द्वारा तीन बार तर्पण 'तर्पयामि नमः' से करे। उस पात्र को अपने स्थान में रखकर उसमें

से थोड़ा जल दूसरे पात्र में लेकर चारो तत्त्वों का न्यास करे—ॐ आत्मतत्त्वाय नमः, ह्रीं विद्यातत्त्वाय नमः, श्रीं शिवतत्त्वाय नमः, मूलं सर्वतत्त्वाय नमः। उस जल को चुल्लू में लेकर निम्न मन्त्र का पाठ करे—

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं प्रकृति बुद्धि अहंकार मनः श्रोत्र, त्वक् चक्षु जिह्वा घ्राण वाक् पाणि पाद पायु उपस्थ शब्द स्पर्श रूप रस गन्ध आकाश वायु अग्नि सलिल पृथिव्यात्मकं अं आं इं ईं उं ऊं ऋं ॠं ऌं ॡं एं ऐं ओं औं अं अः ऐं ॐ ह्रीं श्रीं ज्वालामुखि मम सर्वशत्रून् भक्षय भक्षय हूं फट् स्वाहा आत्मतत्त्वात्माकाशुद्धचतुर्विंशतितत्त्वसहितं स्थूलदेहं शोधयामि स्वाहा।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं माया कला विद्या राग काल नियति पुरुषात्मक शुद्धाशुद्ध सप्त तत्त्वसहितं कं खं गं घं ङं चं छं जं झं ञं टं ठं डं ढं णं तं थं दं धं नं पं फं बं भं मं क्लीं ॐ ह्रीं श्रीं ज्वालामुखि मम सर्वशत्रून् भक्षय भक्षय हूं फट् स्वाहा विद्यातत्त्वात्मकं सूक्ष्मदेहं शोधयामि स्वाहा।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं शिव शक्ति सदाशिवेश्वर शुद्धविद्यादि पञ्चतत्त्व सहितं यं रं लं वं शं षं सं हं ळं क्षं सौः ॐ ह्रीं श्रीं ज्वालामुखि मम सर्वशत्रून् भक्षय भक्षय हूं फट् स्वाहा शिवतत्त्वात्मकं परदेहं शोधयामि स्वाहा।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं शिवादि षट् त्रिंशतत्त्वसहितं अं आं इं ईं उं ऊं ऋं ॠं ऌं ॡं एं ऐं ओं औं अं अः कं खं गं घं ङं चं छं जं झं ञं टं ठं डं ढं णं तं थं दं धं नं पं फं बं भं मं यं रं लं वं शं षं सं हं ळं क्षः ऐं क्लीं सौः ॐ ह्रीं श्रीं ज्वालामुखि मम सर्वशत्रून् भक्षय भक्षय हूं फट् स्वाहा सर्वतत्त्वस्थूलसूक्ष्मपराख्यदेहरूपाभिमानिनं जीवात्मानं शोधयामि स्वाहा।

चार चुल्लू जल पात्र में भरकर पात्र को हाथ में लेकर मूल मन्त्र और गुरुपादुका मन्त्र का उच्चारण करके इस श्लोक का पाठ करे—

ॐ प्रकाशाकाशहस्ताभ्यामवलम्ब्योन्मनीस्रुचम्।
धर्माधर्मकलास्नेहपूर्णां वह्नौ जुहोम्यहं स्वाहा।।

उस जल को पी जाय।

ततः कराभ्यां मूर्धादिपादान्तं षट्त्रिंशत्तत्त्वात्मकतां भावयन् स्वदेहं स्पृशेत्। ततः स्वसामयिकैः सह यथाशास्त्रं गुरूपदिष्टविधिना पात्रवन्दनं कुर्यात्। तत्रादौ मूलाधारात् कुण्डलिनीमिष्टदेवतारूपामुत्थाप्य स्वजिह्वाग्रान्तमानीय पात्रं वामहस्तकृतत्रिखण्डोपरि दक्षहस्तेनाच्छाद्य श्लोकं पठेत्।

अधुना देवि वक्ष्येऽहं पात्रवन्दनमीश्वरि।
तत्कालं यद्वरानन्दपात्रं देवैश्च वन्दितम् ॥१॥
पूजायां पात्रमानन्दभरितं परमेश्वरि।
गुरुणा दत्तमभ्यर्च्य प्रणमेच्छिरसा तदा ॥२॥
श्रीमद्भैरवशेखरप्रविलसच्चन्द्रामृतप्लावितं
क्षेत्राधीश्वरयोगिनीगणमहासिद्धैः समाराधितम्।
आनन्दागमकं महात्मकमिदं साक्षात् त्रिखण्डामृतं
वन्दे श्रीप्रथमं कराम्बुजगतं पात्रं विशुद्धिप्रदम् ॥३॥

ॐ आत्मतत्त्वं शोधयामि स्वाहा।

तब हाथों से मूर्धा से पैरों तक का स्पर्श करके भावना करे कि मेरा देह छत्तीस तत्त्वमय है। तब उपस्थित सामयिकों के साथ यथाशास्त्र गुरूपदिष्ट विधि से पात्रवन्दना करे। तव मूलाधार से इष्टरूपिणी कुण्डलिनी को उठाकर जीभ के अग्रभाग में ले आये। तब बाँयें हाथ के त्रिखण्ड पर पात्र रखकर दाँयें हाथ से ढ़ककर निम्न क्रम से श्लोकों को पढ़ते हुये तत्त्वशोधन करे।

१.आत्मतत्त्व-शोधन—

अधुना देवि वक्ष्येऽहं पात्रवन्दनमीश्वरि।
तत्कालं यद्वरानन्दपात्रं देवैश्च वन्दितम्।।
पूजायां पात्रमानन्दभरितं परमेश्वरि।
गुरुणा दत्तमभ्यर्च्य प्रणमेच्छिरसा सदा।।
श्रीमद्भैरवशेखरप्रविलसच्चन्द्रामृतप्लावितं
क्षेत्राधीश्वरयोगिनीगणमहासिद्धैः समाराधितम्।
आनन्दागमकं महात्मकमिदं साक्षात्त्रिखण्डामृतं
वन्दे श्रीप्रथमं कराम्बुजगतं पात्रं विशुद्धिप्रदम्।।

ॐ आत्मतत्त्वं शोधयामि स्वाहा से आत्मतत्त्व का शोधन करे।

हैमं चैणरसावहं दयितया दत्तं च पेयादिभिः
किञ्चिच्चञ्चलरक्तपङ्कजदृशा सानन्दमालोकितम्।
वामे स्वादुविशुद्धशुद्धिशकलं पाणौ निधाय स्वके
वन्दे पात्रमहं द्वितीयमधुनानन्दैकसंवर्धनम् ॥४॥

ॐ विद्यातत्त्वं शोधयामि स्वाहा।

ॐ सर्वाम्नायकलाकलापकलितं कौतूहलोद्द्योतनं
चन्द्रोपेन्द्रमहेन्द्रशम्भुवरुणब्रह्मादिभिः सेवितम् ।
ध्यातं देवगणैः परं मुनिगणैर्मोक्षार्थिभिः सर्वदा
वन्दे पात्रमहं तृतीयमधुना स्वात्मावबोधक्षमम् ।।५।।

ॐ शिवतत्त्वं शोधयामि स्वाहा।

मद्यं मीनरसावहं हरिहरब्रह्मादिभिः सेवितं
मुद्रामैथुनधर्मकर्मनिरतं क्षाराम्लतिक्ताश्रितम् ।
आचार्यार्चितमष्टभैरवकलान्यासेन चाच्छादितं
पायात् पञ्चमकारतत्त्वनिलयं पात्रं चतुर्थं नुमः ।।६।।

प्रकृतितत्त्वं शोधयामि स्वाहा।

२. विद्या तत्त्व-शोधन—

हैमं चैणरसावहं दयितया दत्तं च पेयादिभिः
किञ्चिच्चञ्चलरक्तपङ्कजदृशा सानन्दमालोकितम् ।
वामे स्वादुविशुद्धशुद्धिशकलं पाणौ निधाय स्वके
वन्दे पात्रमहं द्वितीयमधुनानन्दैकसंवर्धनम् ।।४।।

ॐ विद्यातत्त्वं शोधयामि स्वाहा कहे।

३. शिवतत्त्व-शोधन—

ॐ सर्वाम्नायकलाकलापकलितं कौतूहलोद्द्योतनं
चन्द्रोपेन्द्रमहेन्द्रशम्भुवरुणब्रह्मादिभिः सेवितम्।
ध्यातं देवगणैः परं मुनिगणैर्मोक्षार्थिभिः सर्वदा
वन्दे पात्रमहं तृतीयमधुना स्वात्मावबोधक्षमम्।।५।।

ॐ शिवतत्त्वं शोधयामि स्वाहा कहे।

४. प्रकृतितत्त्व-शोधन—

मद्यं मीनरसावहं हरिहरब्रह्मादिभिः सेवितं
मुद्रामैथुनधर्मकर्मनिरतं क्षाराम्लतिक्ताश्रितम्।
आचार्यार्चितमष्टभैरवकलान्यासेन चाच्छादितं
पायात् पञ्चमकारतत्त्वनिलयं पात्रं चतुर्थं नुमः।।६।।

प्रकृतितत्त्वं शोधयामि स्वाहा।

आधारे भुजगाधिराजवलये पात्रं महीमण्डलं
द्रव्यं सप्तसमुद्रवारि पिशितं चाष्टौ च दिग्दन्तिनः।
सोऽहं भैरवमर्चयन् प्रतिदिनं तारागणैरक्षतै-
रादित्यप्रमुखैः सुरासुरगणैराज्ञाकरैः किङ्करैः ॥७॥

पुरुषतत्त्वं शोधयामि स्वाहा।

सच्छत्रामलभद्रपीठपरमानन्दोदयादायकं-
रम्यं राज्यकरं सदा सुखकरं सायुज्यसाम्राज्यदम्।
नानाव्याधिभवान्धकारहरणं जन्मान्तरध्वंसनं
श्रीमद्भैरवभैरवीप्रियतरं पात्रं च षष्ठं नुमः ॥८॥

मनस्तत्त्वं शोधयामि स्वाहा।

जाग्रत्स्वप्नसुषुप्तिबोधपवनं चैतन्यसाक्ष्यप्रदं
विद्युद्भास्करवह्निचन्द्रधनुषां ज्योतिष्कलाव्यापितम्।
वामापिङ्गलमध्यगा त्रिवलया तस्याः प्रबोधोद्धतं
पात्रं सप्तममूषणेन तरुणानन्दप्रदं पातु माम् ॥९॥

बुद्धितत्त्वं शोधयामि स्वाहा।

खड्गं श्रीगुरुपादुकां च तिलकं कण्ठेऽपि सारस्वतं
शत्रोर्वाग्बलशौर्यकार्यहरणं देहस्थितेः कारणम्।
वाञ्छासिद्धिकरं मनःस्थितिकरं चावर्जनं योषितां
पात्रं चाष्टममष्टसिद्धिकरणं प्रौढप्रसन्नं भजे ॥१०॥

अहङ्कारतत्त्वं शोधयामि स्वाहा।

५. पुरुषतत्त्व-शोधन—

आधारे भुजगाधिराजवलये पात्रं महीमण्डलं
द्रव्यं सप्तसमुद्रवारि पिशितं चाष्टौ च दिग्दन्तिनः।
सोऽहं भैरवमर्चयन् प्रतिदिनं तारागणैरक्षतै-
रादित्यप्रमुखैः सुरासुरगणैराज्ञाकरैः किङ्करैः ॥७॥

पुरुषतत्त्वं शोधयामि स्वाहा।

६. मनस्तत्त्व-शोधन—

सच्छत्रामलभद्रपीठपरमानन्दोदयादायकं-
रम्यं राज्यकरं सदा सुखकरं सायुज्यसाम्राज्यदम्।

नानाव्याधिभवान्धकारहरणं जन्मान्तरध्वंसनं
श्रीमद्भैरवभैरवीप्रियतरं पात्रं च षष्ठं नुमः ।।८।।

मनस्तत्त्वं शोधयामि स्वाहा।

७. बुद्धितत्त्व-शोधन—

जाग्रत्स्वप्नसुषुप्तिबोधपवनं चैतन्यसाक्ष्यप्रदं
विद्युद्भास्करवह्निचन्द्रधनुषां ज्योतिष्कलाव्यापितम् ।
वामापिङ्गलमध्यगा त्रिवलया तस्याः प्रबोधोद्धतं
पात्रं सप्तमम्मूषणेन तरुणानन्दप्रदं पातु माम् ।।९।।

बुद्धितत्त्वं शोधयामि स्वाहा।

८. अहंकारतत्त्व-शोधन—

खड्गं श्रीगुरुपादुकां च तिलकं कण्ठेऽपि सारस्वतं
शत्रोर्वाग्वलशौर्यकार्यहरणं देहस्थितेः कारणम् ।
वाञ्छासिद्धिकरं मनःस्थितिकरं चावर्जनं योषितां
पात्रं चाष्टममष्टसिद्धिकरणं प्रौढप्रसन्नं भजे ।।१०।।

अहङ्कारतत्त्वं शोधयामि स्वाहा।

सर्वानन्दकरं सदा शिवपदं सर्वार्थसम्पत्प्रदं
साम्राज्यार्थकरं समस्तसुखदं चाज्ञानविध्वंसनम् ।
आयुष्कान्तियशोविवर्धनकरं संसारमोहच्छिदं
पात्रं लक्षगुणात्मकं च नवमं प्रौढप्रतापं भजे ।।११।।

शक्तितत्त्वं शोधयामि स्वाहा।

ब्रह्मविष्णुमहेशानां देवानां च विशेषतः।
दुर्लभं पावनं पात्रं दशमं प्रणमाम्यहम् ।।१२।।

भैरवतत्त्वं शोधयामि स्वाहा।

पापघ्नं शान्तिशुभदं दिव्यं स्वादु सुखावहम् ।
पात्रमेकादशं वन्दे गुरुसेवासुखागतम् ।।१३।।

सर्वतत्त्वं शोधयामि स्वाहा। इति पात्रवन्दनं कृत्वा पात्रप्रशंसा कुर्यात्।

९. शक्तितत्त्व-शोधन—

सर्वानन्दकरं सदा शिवपदं सर्वार्थसम्पत्प्रदं
साम्राज्यार्थकरं समस्तसुखदं चाज्ञानविध्वंसनम् ।

आयुष्कान्तियशोविवर्धनकरं संसारमोहच्छिदं
पात्रं लक्षगुणात्मकं च नवमं प्रौढप्रतापं भजे ।।११।।

शक्तितत्त्वं शोधयामि स्वाहा।

१०. भैरवतत्त्व-शोधन—

ब्रह्मविष्णुमहेशानां देवानां च विशेषतः।
दुर्लभं पावनं पात्रं दशमं प्रणमाम्यहम् ।।१२।।

भैरवतत्त्वं शोधयामि स्वाहा।

११. सर्वतत्त्व-शोधन—

पापघ्नं शान्तिशुभदं दिव्यं स्वादु सुखावहम् ।
पात्रमेकादशं वन्दे गुरुसेवासुखागतम् ।।१३।।

सर्वतत्त्वं शोधयामि स्वाहा।

इस प्रकार पात्रवन्दन के पश्चात् पात्रप्रशंसा करे।

पात्रं कृत्वा करे मन्त्री सर्वकर्म लभेत्सुखी ।
इह लोके श्रियं भुक्त्वा देहान्ते भैरवो भवेत् ।।१४।।
करे पात्रं मुखे स्तोत्रमानन्दो हृदयाम्बुजे ।
भक्तिर्गुरुपदाम्भोजे स्मरणं किमतः परम् ।।१५।।
एकेन शुष्कचणकेन घटं पिबामि
वापीं पिबामि सहसा लवणार्द्रकेण ।
आस्वाद्य मांसमलिरोहितमुण्डखण्डं
गङ्गां पिबामि यमुनां सह सागरेण ।।१६।।
करे माला मुखे हाला वामे रामा सुकोमला ।
त्रिपुरा हृदये बाला यागशाला गृहे गृहे ।।१७।।
पात्रं भैरवपात्रं गोत्रं श्रीनाथपादुकागोत्रम् ।
शास्त्रं संविच्छास्त्रं ज्ञानं तत्त्वावबोधकं ज्ञानम् ।।१८।।

हाथों में पात्र लेकर साधक सभी कर्मों में सफल और सुखी होता है। इस संसार में वैभवों को भोगकर देहान्त के बाद भैरव होता है। हाथ में पात्र, मुख में स्तोत्रपाठ, हृदय में आनन्द, गुरुपद-कमलों में भक्ति—इससे परे और क्या हो सकता है। एक ही सूखे चने की मुद्रा के साथ एक घड़ा मद्य पी सकता हूँ। वापी पी सकता हूँ। नमक और अदरख के स्वाद के साथ मांस अलि रोहू मछली का मुण्डखण्ड, गङ्गा और यमुनासहित

सागर को पी सकता हूँ। हाथ में माला, मुख में हाला, बाँयें सुकोमल रमणी, हृदय में त्रिपुरा बाला हो तो घर-घर यागशाला हो जाय। पात्र भैरवपात्र, गोत्र श्रीनाथपादुका गोत्र, शास्त्र संवित् शास्त्र, ज्ञान तत्त्वों का बोधक ज्ञान है।।१४-१८।।

अलिपिशितपुरन्ध्रीभोगपूजापरोऽहं
बहुविधकुलमार्गारम्भसम्भावितोऽहम् ।
पशुजनविमुखोऽहं भैरवीमाश्रितोऽहं
गुरुचरणरतोऽहं भैरवोऽहं शिवोऽहम् ॥१९॥

मैं मद्य-मांस-रमणी-भोग-पूजापरायण हूँ। मैं बहुत प्रकार के कुलमार्गों का आरम्भ करने की सम्भावना से युक्त हूँ। मैं पाशबद्ध मनुष्यों से विमुख हूँ। मैं भैरवी का आश्रित हूँ। मैं गुरुचरण में रत हूँ। मैं भैरव हूँ। मैं शिव हूँ।।१९।।

वामे चन्द्रमुखी मुखे च मदिरा पात्रं कराम्भोरुहे
मूर्ध्नि श्रीगुरुचिन्तनं भगवतीध्यानास्पदं मानसम् ।
जिह्वायां जपसाधनं परिणतिः कौलक्रमाभ्यासने
ये सन्तो नियतं पिबन्ति सरसं ते भुक्तिमुक्ती गताः ॥२०॥

जिनके बाँयें भाग में चन्द्रमुखी, करकञ्ज में मद्यपात्र, मूर्धा में गुरुचिन्तन, भगवतीध्यानास्पद मन, जीभ में जपसाधन, कौलक्रम के अभ्यास में परिणीत और जिनका पान नियत है, उन्हें सरस भोग और मोक्ष प्राप्त होता है।।२०।।

वामे रामा रमणकुशला दक्षिणे चालिपात्र-
मग्रे मुद्राश्चणकवटकाः सूकरस्योष्णशुद्धिः ।
स्कन्धे वीणा सरसकविता सद्गुरोः सत्कथायां
कौलो मार्गः परमगहनो योगिनामप्यगम्यः ॥२१॥

जिनके बाँयें रमण में निपुण रमणी, दाँयें हाथ में मद्यपात्र, सामने चने की बड़ी की मुद्रा, सूकर मृग का गर्म मांस, कन्धे पर वीणा, सरस कविता, सद् गुरु की सुन्दर कथा हो, वही कौल है। यह कौल मार्ग परम गूढ़ है और यह योगियों द्वारा भी जानने योग्य नहीं है।।२१।।

पीत्वा पीत्वा पुनः पीत्वा यावत् पतति भूतले ।
उत्थाय च पुनः पीत्वा पुनर्जन्म न विद्यते ॥२२॥
धर्माधर्महविर्दीप्ते स्वात्माग्नौ मनसा स्रुचा ।
सुषुम्नावर्त्मना नित्यमक्षवृत्तीर्जुहोम्यहम् ॥२३॥

प्रकाशाकाशहस्ताभ्यामवलम्ब्योन्मनीस्रुचा ।
धर्माधर्मकलास्नेहपूर्णां वह्नौ जुहोम्यहम् ॥२४॥
यावन्न चलते दृष्टिर्यावन्न चलते मनः ।
तावत् पानं प्रकर्तव्यं पशुपानमतः परम् ॥२५॥

कौल पीता है, फिर पीता है, तब तक पीता है, जब तक भूमि पर नहीं गिरता है। उठकर फिर पीता है। ऐसे कौल का पुनर्जन्म नहीं होता। धर्म-अधर्म की आहुति अपनी आत्मा की प्रज्वलित अग्नि में मन की स्रुचा से सुषुम्ना मार्ग से नित्य अक्षवृत्ति का मैं हवन करता हूँ। प्रकाश और आकाश के हाथ से उन्मनी स्रुचा के अवलम्बन से धर्म-अधर्म कला तेल से प्रज्वलित अग्नि में मैं हवन करता हूँ। जब तक दृष्टि चञ्चल नहीं होती, जब तक मन चलायमान नहीं होता तब तक मद्यपान करना चाहिये इससे अधिक पान पशुपान कहलाता है।।२२-२५।।

इत्थं पात्रप्रशंसां कृत्वा, ततः स्वसामयिकान् यथाशास्त्रं गुरूपदिष्टविधिना संपूज्य संतर्प्य, पूर्वस्थापितबलिपात्रस्थमन्नादिकमेकस्मिन् पात्रे कृत्वा तद्गृहादुत्थाय सोदकपात्रहस्तो बहिर्गत्वा, जलेन शुचौ देशे चतुरश्र-वृत्तत्रिकोणात्मकं मण्डलं कृत्वा, तत्र

गदात्रिशूलडमरुपात्रहस्तं त्रिलोचनम् ।
कृष्णाभं भैरवं देवं सर्वविघ्नविनाशनम् ॥

इत्युच्छिष्टभैरवं ध्यात्वा, गन्धादिना संपूज्य, 'ॐ उच्छिष्टभैरव एह्येहि बलिं गृह्ण २ हूं फट स्वाहा' इति पात्रस्थं बलिद्रव्यं तत्र मण्डले विसृज्य, तत्पात्रे हस्तौ पादौ च प्रक्षाल्याचम्य, तत्पात्रं जलेनापूर्य पूजागृहद्वारं गत्वा प्रविश्य स्वासने समुपविश्य तत्पात्रस्थजले श्रीपात्रजलबिन्दुं दत्त्वा तेन जलेन स्वात्मानमभिषिञ्चन् शान्तिस्तोत्रं पठेत् । तदुक्तं श्रीदेवीरहस्ये (२१प०)। यथा—

इस प्रकार पात्र-प्रशंसा करके उपस्थित सामयिकों को यथाशास्त्र गुरूपदिष्ट विधि से पूजा करे और तृप्त करे। पूर्वस्थापित बलिपात्रस्थ अन्नादि को एक पात्र में करे। उस पात्र के साथ जल लेकर बाहर जाये। पवित्र स्थान में जल से चतुरस्र, वृत्त, त्रिकोण-युक्त एक मण्डल बनाए। तब निम्न प्रकार से भैरव का ध्यान करे—

गदात्रिशूलडमरुपात्रहस्तं त्रिलोचनम्।
कृष्णाभं भैरवं देवं सर्वविघ्नविनाशनम्।।

इस प्रकार के उच्छिष्ट भैरव का ध्यान करके गन्धादि से पूजन करे। 'ॐ ऐं ह्रीं श्रीं उच्छिष्टभैरव एह्येहि बलिं गृह्ण गृह्ण हूं फट् स्वाहा' कहकर पात्रस्थ बलिद्रव्य को उस मण्डल में रख दे। उस पात्र में अपने हाथ-पैरों को धोकर आचमन करे। उस पात्र को जल से भरकर पूजागृह के द्वार पर आये। गृह में प्रवेश करके आसन पर बैठे। उस पात्रस्थ जल में श्रीपात्र से जलबिन्दु डाले। उस जल से अपना अभिषेक करे। शान्तिस्तोत्र का पाठ करे। शान्ति स्तोत्र देवी रहस्य में इस प्रकार का है।

शान्तिस्तोत्रम्

देवि वक्ष्यामि पूजान्ते शान्तिस्तोत्रमनुत्तमम् ।
वीरा येन परानन्दपदं प्राप्स्यन्त्यनामयम् ।।१।।
योगिनीचक्रमध्यस्थं मातृमण्डलवेष्टितम् ।
नमामि शिरसा नाथं भैरवं भैरवीप्रियम् ।।२।।
अनादिघोरसंसारव्याधिध्वंसैकहेतवे ।
नमः श्रीनाथवैद्याय कुलौषधिप्रदायिने ।।३।।
आपदो दुरितं रोगाः समयाचारलङ्घनात् ।
ते सर्वेऽत्र व्यपोहन्तु दिव्यचक्रस्य मेलनात् ।।४।।

शान्तिस्तोत्र—श्रीभैरव ने कहा कि हे देवि! अब मैं उत्तम शान्तिस्तोत्र को बतलाता हूँ। पूजा के अन्त में जिसका पाठ करके वीर साधक परानन्द पद प्राप्त करके निःस्पृह हो जाता है। मैं उस भैरवी-प्रिय भैरवनाथ को शिर बनाकर प्रणाम करता हूँ, जो योगिनी चक्र के मध्य में स्थित मातृमण्डल से घिरे रहते हैं। जो अनादि घोर संसार व्याधि के विनाश के लिये अकेले ही समर्थ हैं, उस श्रीनाथ वैद्य, कुल औषध देने वाले को प्रणाम करता हूँ। समयाचार के लङ्घन से जो आपदा होती है और जो रोग होते हैं, उन सबों का विनाश दिव्य चक्रमेलन से होता है।।१-४।।

आयुरारोग्यमैश्वर्यं कीर्तिर्लाभः सुखं जयः ।
कान्तिर्मनोरथश्चास्तु पान्तु सर्वाश्च देवताः ।।५।।
सम्पूजकानां परिपालकानां यतीन्द्रयोगीन्द्रतपोधनानाम् ।
देशस्य राष्ट्रस्य कुलस्य राज्ञां करोतु शान्तिं भगवान् कुलेशः ।।६।।
नन्दन्तु साधककुलान्वयदर्शका ये सृष्ट्याद्यनाख्यचतुरुक्तमहान्वया ये ।
नन्दतु सर्वकुलकौलरताः परे येऽप्यन्येविशेषपदभेदकशाम्भवा ये ।।७।।

सभी देवता आयु, आरोग्य, ऐश्वर्य, कीर्तिलाभ, सुख, जप, कान्ति, मनोरथ की रक्षा करें। सम्पूजकों, परिपालकों, यतीन्द्रों, योगिन्द्रों, तपोधनियों, देश, राष्ट्र, कुल, राजा की

शान्ति भगवान् कुलेश करें। जो साधक कुलान्वयदर्शक हैं, वे आनन्दित हों। सृष्टि के आदि से अनाख्य जो चार महान्वय हैं, वे सभी आनन्दित हों। सभी कुल कौलरत या इनके अतिरिक्त विशेष पद-भेदक जो शैव हैं, वे सभी आनन्दित हों।।५-७।।

नन्दन्तु सिद्धगुरवः स्वगुरुक्रमौघा
ज्येष्ठानुगाः समयिनो वटुकाः कुमार्यः।
षड्योगिनीप्रवरवीरकुलप्रसूता
नन्दन्तु भूमिपतिगोद्विजसाधुलोकाः ।।८।।
नन्दन्तु नीतिनिपुणा निरवद्यनिष्ठा
निर्मत्सरा निरुपमा निरुपद्रवाश्च।
नित्या निरञ्जनरता गुरवो निरीहाः
शाक्ताश्च शान्तमनसो हृतशोकशङ्काः ।।९।।
नन्दन्तु योगनिरताः कुलयोगयुक्ता
आचार्यसामयिकसाधकपुत्रकाश्च ।
गावो द्विजा युवतयो यतयः कुमार्यो
धर्मे भवन्तु निरता गुरुभक्तियुक्ताः ।।१०।।
नन्दन्तु साधककुला अणिमादिनिष्ठाः
शापाः पतन्तु समयद्विषि योगिनीनाम्।
सा शाम्भवी स्फुरतु कापि ममाध्यवस्था
यस्यां गुरोश्चरणपकङ्कजमेव लभ्यम् ।।११।।

सिद्ध गुरु, स्वगुरुक्रमौघ, ज्येष्ठानुग, सामयिक वटुक और कुमारियाँ सभी आनन्दित हों। षड्योगिनं प्रवर वीर कुलोत्पन्न, राजा, गो, द्विज साधु सभी लोग आनन्दित हों। नीति-निपुण, निरवद्य निष्ठा वाले लोग, द्वेषहीन, निरुपम, निरुपद्रव, नित्या निरञ्जनरत निरीहगुरु, शान्त मन वाले शाक्त सभी शोक और शंका से रहित होकर आनन्दोल्लसित हों। योगनिरत, कुलयोगाभ्यासी आचार्य, सामयिक, साधकपुत्र, गाय, द्विज, युवतियाँ यतिजन कुमारी सभी गुरुभक्ति से युक्त होकर धर्म में लग्न रहें। साधककुल अणिमादि में निष्ठित सभी आनन्दित हों। समयद्वेषियों के शाप का विनाश हो। योगियों के द्वेषी विनष्ट हों। कुछ मेरी भी ऐसी अवस्था हो, जिसमें शाम्भवी भाव का स्फुरण हो, जिसको गुरु के चरणकमल का लाभ हुआ हो वे भी आनन्दित हों।।८-११।।

याश्चक्रक्रमभूमिकावसतयो नाडीषु या संस्थिता
याः कायद्रुमरोमकूपनिलया याः संस्थिता धातुषु।

उच्छ्वासोर्मिमरुत्तरङ्गनिलया निःश्वासवासाश्रया-
स्ता देव्यो रिपुपक्षभक्षणपरास्तृप्यन्तु कौलार्चिताः ॥१२॥
या दिव्यक्रमपालिकाः क्षितिगता या देवतास्तोयगा
या नित्यं प्रथितप्रभाः शिखिगता या मातरिश्वाश्रयाः ।
या व्योमामृतमण्डलामृतमया याः सर्वगाः सर्वदा-
स्ताः सर्वाः कुलमार्गपालनपराः शान्तिं प्रयच्छन्तु मे ॥१३॥

जो चक्रक्रम भूमिका में नाड़ी में बसते हों या स्थित हों, जो कायावृक्ष के रोमकूप-निलय में हों या धातुओं में स्थित हों, जिनका आवास-उच्छ्वास उर्मि वायु तरङ्ग में निलय हो, जो निःश्वास-श्वास में ही स्थित हों, उनके शत्रुओं का भक्षण श्रीदेवी करें। कौलों से अर्चित सभी तृप्ति प्राप्त करें। जो दिव्य क्रम का पालन करने वाले हों, जो भूमिगत हो, जो देवता जलगत हों, जो नित्य प्रथित प्रभा वाले हों, जो शिखीगत हों या जिनका आश्रय आकाश में चलने वाले पवन में हो, जो आकाशमण्डल के अमृतमय हों, जो सर्वत्र सर्वदा सर्वगामी हों, वे सभी कुलमार्गपालन में तत्पर लोग शान्ति प्राप्त करें।।१२-१३।।

ऊर्ध्वं ब्रह्माण्डतो वा दिवि गगनतले भूतले निस्तले वा
पाताले वा तले वा सलिलपवनयोर्यत्र कुत्र स्थिता वा ।
क्षेत्रे पीठोपपीठादिषु च कृतपदा धूपदीपादिकेन
प्रीता देव्यः सदा नः शुभबलिविधिना पान्तु वीरेन्द्रवन्द्याः ॥१४॥
ब्रह्माशेषेशदुर्गागुहवटुकगणा भैरवाः क्षेत्रपाला
वेतालादित्यरुद्रग्रहवसुमनुसिद्धाप्सरोगुह्यकाद्याः ।
भूता गन्धर्वविद्याधरऋषिपितृयक्षासुराहिप्रभूता
योगीशाश्चारणाः किंपुरुषमुनिवराश्चक्रगाः पान्तु सर्वे ॥१५॥

जो देवियाँ ब्रह्माण्ड में या अन्तरिक्ष में, गगन में, भूतल में या पाताल में या जल में या पवन में जहाँ-कहीं भी स्थित हों, वे सभी आनन्दित हों। जो क्षेत्र में, पीठ में, उपपीठ में हों, वे सभी धूप-दीप आदि से, शुभ बलिदान से प्रसन्न होकर वीरेन्द्रवन्द्या देवियाँ सदैव हमारी रक्षा करें। ब्रह्मा, श्रीशेष, ईश, दुर्गा, गुह, वटुक, गण, भैरव, क्षेत्रपाल, वेताल, आदित्य, रुद्र, ग्रह, वसु, मनु, सिद्ध, अप्सरा, गुह्यक, भूत, गन्धर्व, विद्याधर, ऋषि, पितर, यक्ष, असुर, अहिप्रभूत, योगीश, चारण, किंपुरुष, मुनिवर सभी चक्र में उपस्थित लोगों की रक्षा करें।।१४-१५।।

देहस्थाखिलदेवता गजमुखाः क्षेत्राधिपा भैरवा
योगिन्यो वटुकाश्च यक्षपितरो भूताः पिशाचा ग्रहाः ।

अन्ये भूचरदिक्चराश्च खचरा वेतालकाश्चेटका-
स्तृप्ताः स्युः कुलपुत्रकस्य पिबतः पानं सदीपं चरुम् ॥१६॥
सत्यं चेद्गुरुवाक्यमेव पितरो देवाश्च चेद्योगिनी-
प्रीतिश्चेत् परदेवता च यदि चेद्वेदाः प्रमाणं च चेत् ।
शाक्तेयं यदि दर्शनं भवति चेदाज्ञेयमेषास्ति चेत्
सन्त्यत्रापि च कौलिकाश्च यदि चेत् स्यान्मे जयः सर्वदा ॥१७॥

देहस्थ सभी देवता, गजमुख, क्षेत्रपाल, भैरव, योगिनी, वटुक, यक्ष, पितर, भूत, पिशाच, ग्रह, भूचर, दिक्चर, खेचर, वेताल, चेटक, सभी कुलपुत्र के द्वारा प्रदत्त दीपकसहित चरु पाकर मद्य पीकर तृप्ति प्राप्त करें। गुरु के वचन यदि सत्य हैं तो देवता, पितर और योगिनियाँ प्रसन्न हों, परदेवता प्रसन्न हों। यदि वेद प्रमाण हैं, यदि शाक्तों का दर्शन कल्याणकारी है, यहाँ पर उपस्थित कौलिक भी यदि सन्त हैं तो सर्वदा मेरी जय हो।।१६-१७।।

तृप्यन्तु मातरः सर्वाः समुद्राः सगणाधिपाः ।
योगिन्यः क्षेत्रपालाश्च मम देहे व्यवस्थिताः ॥१८॥
शिवाद्यवनिपर्यन्तं ब्रह्मादिस्तम्बसंयुतम् ।
कालाग्न्यादिशिवान्तं च जगद्यज्ञेन तृप्यतु ॥१९॥
पठित्वेदं नमेद्वीरान् वीरवन्दनमाचरेत् ।
स्तुवेद्वीरान्नमेद्वीरान् मन्त्रसिद्धिः प्रजायते ॥२०॥

इत्थं शान्तिस्तोत्रं पठित्वा वीरवन्दनस्तोत्रं पठेत्।

मेरे देह में व्यवस्थित सभी मातृकाएँ गणाधिप योगिनी और क्षेत्रपाल तृप्त हों। शिव से लेकर पृथ्वी तक के सभी तत्त्व, ब्रह्मा से लेकर कीट तक के जीव, कालाग्नि से लेकर शिव तक जो जगत् है, वह सभी इस यज्ञ से तृप्त हो। इसका पाठ करके वीरों को प्रणाम करे। वीरवन्दन करे। वीरों की स्तुति करके उन्हें प्रणाम करने से मन्त्रसिद्धि मिलती है।।१८-२०।।

शान्तिस्तोत्र के पाठ के बाद वीरवन्दन स्तोत्र का पाठ करे।

वीरवन्दनस्तोत्रम्

जगत्त्रयाभ्यर्चितशासनेभ्यः परार्थसम्पादनकोविदेभ्यः ।
समुद्धृतक्लेशमहोरगेभ्यो नमो नमः साधकनायकेभ्यः ॥१॥
प्रहीणसर्वाश्रयवासनेभ्यः सर्वार्थतत्त्वोदितसाधनेभ्यः ।
सर्वप्रजाभ्युद्धरणोद्यतेभ्यो नमो नमः साधकनायकेभ्यः ॥२॥

वीरवन्दनस्तोत्र—उन साधक नायकों को मैं बार-बार प्रणाम करता हूँ, जो शासनानुसार तीनों लोकों से अर्चित है, जो परार्थ साधन में संलग्न कोविदों से अर्चित हैं और जो क्लेशरूपी महा सर्पो से सबका उद्धार करते हैं। उन साधकनायकों को मैं बार-बार प्रणाम करता हूँ जो सभी आश्रय और वासनाओं से परे हैं, जो साधना से सर्वार्थ तत्त्व के ज्ञानी हैं, जो सभी लोगों के उद्धार के लिये उद्यत रहते हैं।।१-२।।

विधूतकेशालिकपालिकेभ्यः सुरासवारक्तविलोचनेभ्यः ।
नवीनकान्तारततत्परेभ्यो नमो नमः शाम्भविशाम्भवेभ्यः ।।३।।
विभूतिलिप्ताङ्गदिगम्बरेभ्यश्चिताग्निधूमालिभयानकेभ्यः ।
कपालपात्रामृतपानकेभ्यः नमो नमो भैरविभैरवेभ्यः ।।४।।

उन शाक्तों और शैवों को मैं बार बार प्रणाम करता हूँ, जिनके केश विखरे हैं और नरकपाल में मदिरा है, सुरा-आसव पीने से जिनकी आँखें लाल हैं, जो युवतियों एवं रमणियों से रमण करने में तत्पर रहते हैं।

उन भैरव एवं भैरवियों को मैं बार-बार प्रणाम करता हूँ, जो अपने समस्त अंगों में विभूति धारण कर दिगम्बर बने हुये हैं, जो चिता की लपटों एवं धूम के मध्य भयानक प्रतीत होते हैं एवं जो कपालपात्र द्वारा अमृत का पान करने में निरत हैं।।३-४।।

सिद्ध्यष्टकाधानमहामुनिभ्यः श्रीभैरवाचारकृतादरेभ्यः ।
स्वाधीनतान्यक्कृतनिर्जरेभ्यो नमो नमो भैरविभैरवेभ्यः ।।५।।
अनेन वीरस्तवकीर्तनेन समुद्धृतक्लेशसुवासनोऽहम् ।
संसारकान्तारमहार्णवेऽस्मिन्निमज्जमानं जगदुद्धरेयम् ।।६।।

उन भैरवी-भैरवों को मैं बार-बार प्रणाम करता हूँ, जो आठों सिद्धियों को स्वयं में समाहित किये महामुनि हैं, जो भैरवाचार का आचरण करके आदर पाते हैं, जो स्वाधीन हैं एवं जरा से रहित हैं। इस वीरवन्दनस्तोत्र के पाठ से मैं सभी क्लेशों और वासनाओं से मुक्त हो गया हूँ। संसार कान्तार महार्णव में निमग्न जगत् का मैं उद्धार करना चाहता हूँ।।५-६।।

इति शान्तिस्तोत्रं वीरवन्दनं च पठित्वा सर्वान् सामयिकानभिषिच्य, विशेषार्घ्यपात्रमुद्धृत्य शिरःस्थाप्य श्रीगुरवे समर्प्य तथैव तत्पादुकां त्रिः संपूज्य मूलविद्यया गुरुपादुकाविद्यान्ते च, स्वाहेति स्वमूलाधारकुण्डलिन्यात्मकपरदेवतामुखे हवनबुद्ध्या तज्जलं पात्रान्तरे कृत्वाश्नीयात्। शेषं प्रियशिष्याय प्रसादबुद्ध्या किञ्चिद् दद्यात्। सोऽपि स्वपात्रे कृत्वा तज्जलं

प्राश्नीयादित्थमर्घ्यप्रतिपत्तिः। ततः स्वगुरूपदिष्टविधिना शेषकृत्यं समापयेत्। ततस्ताम्रादिपात्रे गन्धपुष्पाक्षतान्वितं जलमापूर्य,

ॐ नमो विवस्वते ब्रह्मन् भास्वते विष्णुतेजसे।
जगत्पवित्रे शुचये सवित्रे कर्मदायिने॥

'ॐह्रांह्रींसः सूर्य एष तेऽर्घः स्वाहा' इत्यर्घ्यं सूर्याय दत्त्वा कृताञ्जलिः—

ॐयज्ञश्छिद्रं तपःच्छिद्रं यच्छिद्रं पूजने मम।
अच्छिद्रमस्तु तत्सर्वं भास्करस्य प्रसादतः॥

इत्यच्छिद्रमवधारयेत्।

ततो मूलेन प्राणायामर्ष्यादिकरषडङ्गन्यासान् विधाय षडासनवाग्देवताष्टकन्यासान् विधाय प्रागुक्तगुरुस्तोत्रं पठित्वा, श्रीगुरुं प्रणम्य मूलविद्यया द्वितीयकूटेन निर्माल्यं शिरसि धृत्वा मूलविद्ययैव चरणोदकं स्वीकृत्य श्रीपरदेवताभक्तेभ्यो नैवेद्यादिकं विभज्य सुहृद्बान्धवजनैः साकं भुक्त्वा स्वात्मानं कामकलारूपं भावयन् सुखं विहरेदिति।

शान्तिस्तोत्र और वीरवन्दन स्तोत्र का पाठ करके चक्र में उपस्थित सभी सामयिकों का अभिषेक करे। विशेषार्घ्यपात्र को माथे पर रखकर गुरु को समर्पित करे। मूल मन्त्र और श्रीगुरुपादुका मन्त्र से तीन बार गुरुपादुका का पूजन करे। स्वाहा से मूलाधार में कुण्डलिनीरूपी परदेवता के मुख में हवन बुद्धि से थोड़ा विशेषार्घ्य दूसरे पात्र में लेकर पान करे। शेष प्रिय शिष्यों को प्रसाद मानकर देवे। शिष्य भी उस जल को अपने पात्र में लेकर पीये। यह अर्घ्य प्रतिपत्ति है। इसके बाद अपने गुरु के उपदेशानुसार शेष कर्मों का समापन करे।

ताम्बा आदि के पात्र में गन्धाक्षत पुष्प रखकर उसे जल से भरकर उससे सूर्य को अर्घ्य प्रदान करे; अर्घ्यमन्त्र है—

ॐ नमो विवस्वते ब्रह्मन् भास्वते विष्णुतेजसे।
जगत्पवित्रे शुचये सवित्रे कर्मदायिने।।
ॐ ह्रां ह्रीं सः सूर्य एष तेऽर्घः स्वाहा।

इस प्रकार अर्घ्य देकर हाथ जोड़कर इस मन्त्र का पाठ करे।

ॐ यज्ञश्छिद्रं तपःच्छिद्रं यच्छिद्रं पूजने मम।
अच्छिद्रमस्तु तत्सर्वं भास्करस्य प्रसादतः।।

इस प्रकार अच्छिद्रावधारण करे— मूल मन्त्र से प्राणायाम, ऋष्यादि कर-अङ्गन्यास

करे। षडासन, वाग्देवता अष्टक न्यास करके गुरुस्तोत्र का पाठ करे। गुरु को प्रणाम करे। मूल विद्या के द्वितीय कूट से निर्माल्य शिर पर धारण करके मूल विद्या से चरणोदक पीये। श्रीपरदेवता के भक्तों को नैवेद्यादि प्रदान करे। हित मित्रों के साथ शाकाहार करके अपनी आत्मा को कामकलारूप का समझे। सुखपूर्वक विहार करे।

उपसंहारः

इत्येषा नित्यपूजायाः पद्धतिर्गद्यरूपिणी।
ज्वालासर्वस्वरूपापि न देया तत्त्ववादिभिः॥
श्रीज्वालापद्धतिर्गुह्या नित्यार्चनक्रमाङ्किता।
गुह्यातिगुह्यगुह्याढ्या गोपनीया मुमुक्षुभिः॥

इति श्रीरुद्रयामले तन्त्रे दशविद्यारहस्ये
श्रीज्वालामुखीपूजापद्धतिः॥२॥

गद्यरूप में लिखित यह नित्य पूजा पद्धति ज्वालामुखी का सर्वस्व है। तत्त्ववादियों को भी इसे नहीं बतलाना चाहिये। श्रीज्वालामुखी की यह पद्धति गुह्य है। नित्यार्चन क्रम वर्णन से पूर्ण है। मुमुक्षुओं के लिये भी गुह्य से गुह्य और गुह्याढ्य है। अत सर्वथा गोपनीय रखने योग्य है।

इस प्रकार रुद्रयामल तन्त्रोक्त श्रीदेवीरहस्य की भाषा टीका में
श्रीज्वालामुखीपूजापद्धति नामक पटल पूर्ण हुआ।

●

अथ श्रीज्वालामुखीकवचम्

श्रीभैरव उवाच

शृणु देवि जगन्मातर्ज्वालामुख्या ब्रवीम्यहम्।
कवचं मन्त्रगर्भं च त्रैलोक्यविजयाभिधम्॥१॥
अप्रकाश्यं परं गुह्यं न कस्य कथितं मया।
विनामुना न सिद्धिः स्यात् कवचेन महेश्वरि॥२॥
अवक्तव्यमदातव्यं दुष्टायासाधकाय च।
निन्दकायान्यशिष्याय न वक्तव्यं कदाचन॥३॥

श्रीभैरव ने कहा कि हे देवि! सुनो, अब मैं जगन्माता ज्वालामुखी के मन्त्रगर्भ कवच को कहता हूँ, जो त्रैलोक्यविजय के नाम से जाना जाता है। अभी तक यह कवच परम गुह्य और अप्रकाश्य है। इसे मैंने किसी को नहीं बतलाया है। इस कवच के बिना मन्त्र की सिद्धि नहीं मिलती है। दुष्ट साधकों, निन्दकों और दूसरे के शिष्य को इसे कभी नहीं बतलाना चाहिये।।१-३।।

श्रीदेव्युवाच

त्रैलोक्यनाथ वद मे बहुधा कथितं मया।
स्वयं त्वया प्रसादोऽयं कृतः स्नेहेन मे प्रभो॥४॥

श्रीदेवी ने कहा—हे त्रैलोक्यनाथ! इस कवच के बारे में मैंने आपसे बहुत बार पूछा है, परन्तु आपने नहीं कभी नहीं बताया। अब आप स्वयं प्रसन्न होकर बतला रहे हैं तो इससे मुझ पर आपका स्नेह प्रकट हो रहा है।।४।।

श्रीभैरव उवाच

प्रभाते चैव मध्याह्ने सायंकालेऽर्धरात्रके।
कवचं मन्त्रगर्भं च पठनीयं परात्परम्॥५॥
मधुना मत्स्यमांसादिमोदकेन समर्चयेत्।
देवतां परया भक्त्या पठेत् कवचमुत्तमम्॥६॥

श्री भैरव ने कहा—इस कवच का पाठ प्रभात में, मध्याह्न में, सायंकाल या आधी रात में करना चाहिये। मद्य, मांस, मत्स्य और लड्डू से देवता का अर्चन भक्तिपूर्वक करके इस उत्तम कवच का पाठ करना चाहिये।।५-६।।

ॐ ॐ मे पातु मूर्धानं ज्वाला द्व्यक्षरमातृका ।
ॐ ह्रींश्रीं मेऽवताद्भालं त्र्यक्षरी विश्वमातृका ॥७॥
ॐ ऐंक्लींसौः ममाव्यात् सा देवी माया भ्रुवौ मम ।
ॐ अंआंइंईंह्सौंः पायान्नेत्रे मे विश्वसुन्दरी ॥८॥
ॐ ह्रींऐंसौंः पातु नासां उंऊं कर्णौ च मोहिनी ।
ऋंॠंऌंॡंह्सौः मे बाला पायाद् गण्डौ च चक्षुषी ॥९॥

कवच—ॐ ह्रीं ज्वाला द्व्यक्षरी मातृका मेरे मूर्धा की रक्षा करे। ॐ ह्रीं श्रीं त्र्यक्षरी विश्वमातृका मेरे ललाट की रक्षा करे। ॐ ऐं क्लीं सौः मेरी रक्षा करे। माया देवी मेरे भ्रुवों की रक्षा करें। ॐ अं आं इं ईं ह्सौः विश्वसुन्दरी मेरे नेत्रों की रक्षा करें। ॐ ह्रीं ऐं सौः मेरी नासिका की और उं ऊं मोहिनी मेरे कानों की रक्षा करे। ऋं ॠं ऌं ॡं ह्सौः बाला मेरे कपोलों और नेत्रों की रक्षा करे।।७-९।।

एंऐंओंऔं सदाव्यान्मे मुखं श्रीभगरूपिणी ।
अंअः ॐह्रींक्लींसौः पायाद् गलं मे भगधारिणी ॥१०॥
कंखंगंघंह्सौंः पायात् स्कन्धौ मे त्रिपुरेश्वरी ।
ङंचंछंजंह्सौंः वक्षः पायाच्च बैन्दवेश्वरी ॥११॥
झंञंटंठंह्सौःऐंक्लींहूं ममाव्यात् सा भुजान्तरम् ।
डंढंणंतं स्तनौ पायाद् भीरुण्डा मम सर्वदा ॥१२॥

एं ऐं ओं औं श्रीभगरूपिणी सर्वदा मेरे मुख की रक्षा करें। अं अः ओं ह्रीं क्लीं सौः भगधारिणी मेरे गले की रक्षा करें। कं खं गं घं ह्सौः त्रिपुरेश्वरी मेरे कन्धों की रक्षा करें। ङं चं छं जं ह्सौः वैन्दवेश्वरी मेरे वक्ष की रक्षा करें। झं ञं टं ठं ह्सौः ऐं क्लीं हूं मेरी भुजाओं की रक्षा करें। डं ढं णं तं भीरुण्डा मेरे स्तनों की रक्षा सदैव करें।।१०-१२।।

थंदंधंनं कुक्षिं पायान्मम ह्रींश्रीं परा जया ।
पंफंबंश्रींह्रींसौंः पार्श्वं मृडानी पातु मे सदा ॥१३॥
भंमंयंरंश्रींह्सौंःलंवं नाभिं मे पान्तु कन्यकाः ।
शंषंसंहं सदा पातु गुह्यं मे गुह्यकेश्वरी ॥१४॥
ळंक्षः पातु सदा लिङ्गं ह्रींश्रीं लिङ्गनिवासिनी ।
ऐंक्लींसौंः पातु मे मेढ्रं पृष्ठं मे पातु वारुणी ॥१५॥

थं दं धं नं ह्रीं श्रीं पराजया मेरी कुक्षी की रक्षा करें। पं फं बं श्रीं ह्रीं सौः मृडानी

मेरे पार्श्वों की रक्षा करें। भं मं यं रं श्रीं ह्सौः लं वं कन्यका मेरी नाभि की रक्षा करें। शं वं सं हं गुहकेश्वरी मेरे गुह्य की रक्षा करें। ळं क्षः ह्रीं श्रीं लिङ्गनिवासिनी मेरे लिङ्ग की रक्षा सर्वदा करें। ऐं क्लीं सौः मेढ्र की और वारुणी पीठ की रक्षा करें।।१३-१५।।

ॐ श्रींह्रींक्लींहूंहूं पातु ऊरू मे पात्वमा सदा।
ॐ ऐंक्लींसौःयां वात्याली जङ्घे पायात् सदा मम ॥१६॥
ॐ श्रींसौंक्लीं सदा पायाज्जानुनी कुलसुन्दरी।
ॐ श्रींह्रींहूं कूवरी च गुल्फौ ऐंश्रीं ममावतु ॥१७॥
ॐ श्रींह्रींक्लींइंसौंः पायात् कुण्ठी क्रींह्रींह्सौंः मे तलम्।
ॐ प्रींश्रीं पादौ ह्सौंः पायाद् ह्रींश्रींक्रीं कुत्सिता मम ॥१८॥

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं हूं हूं सदा मेरे ऊरुओं की रक्षा करें। ॐ ऐं क्लीं सौः यां वात्याली मेरे जङ्घों की रक्षा सदा करें। ॐ श्रीं सौं क्लीं कुलसुन्दरी मेरे जानुओं की रक्षा सर्वदा करें। ॐ श्रीं ह्रीं हूं ऐं श्रीं कूबरी मेरे गुल्फों की रक्षा करें। ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं इं सौः क्रीं ह्रीं ह्सौः कुण्ठी मेरे तलवों की रक्षा करें। ॐ प्रीं श्रीं ह्सौः ह्रीं श्रीं कुत्सिता मेरे पैरों की रक्षा करें।।१६-१८।।

ॐ ह्रींश्रीं कुटिला ह्रींक्रीं पादपृष्ठं च मेऽवतु।
ॐ श्रींह्रींश्रीं च मे पातु पादस्था अङ्गुलीः सदा ॥१९॥
ॐ ह्रींह्सौंःऐं कुहूः मज्जां ॐ श्रीं कुन्ती ममावतु।
रक्तं कुम्भेश्वरी ऐंक्लीं शुक्रं पायाच्च कूचरी ॥२०॥

ॐ ह्रीं श्रीं ह्रीं क्रीं कुटिला मेरे पादपृष्ठों की रक्षा करें। ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं मेरे पैरों के अँगुलियों की रक्षा करें। ॐ ह्रीं ह्सौः ऐं कुहूः ॐ श्रीं कुन्ती मेरे मज्जा की रक्षा करें। कुम्भेश्वरी रक्त की रक्षा करें एवं ऐं क्लीं कूचरी वीर्य की रक्षा करें।।१९-२०।।

पातु मेऽङ्गानि सर्वाणि ॐ ह्रींश्रींक्लींऐंह्सौः सदा।
पादादिमूर्धपर्यन्तं ह्रींक्रींश्रीं कारुणी सदा ॥२१॥
मूर्धादिपादपर्यन्तं पातु क्लींश्रीं कृतिर्मम।
ऊर्ध्वं मे पातु ब्रां ब्राह्मी अधः श्रीं शाम्भवी मम ॥२२॥
दुं दुर्गा पातु मे पूर्वे वां वाराही शिवालये।
ह्रींक्रींहूंश्रीं च मां पातु उत्तरे कुलकामिनी ॥२३॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं ह्सौः मेरे सभी अङ्गों की रक्षा करें। ह्रीं क्रीं श्रीं वारुणी पाँव से लेकर मूंर्धा तक रक्षा करें। क्लीं श्रीं कृति मूर्धा से पैरों तक मेरी रक्षा करें। ऊर्ध्व

में ब्रां ब्राह्मी और अधोदेश में श्रीं शाम्भवी मेरी रक्षा करें। दुं दुर्गा पूरब दिशा में और वां वाराही ईशान में मेरी रक्षा करें। ह्रीं क्रीं हूं श्रीं कुलकामिनी मेरी रक्षा उत्तर दिशा में करें।।२१-२३।।

नारसिंही ह्सौःऐंक्लीं वायव्ये पातु मां सदा।
ॐ श्रींक्रींऐं च कौमारी पश्चिमे पातु मां सदा ॥२४॥
ॐ ह्रींश्रीं निर्ऋतौ पातु मातङ्गी मां शुभङ्करी।
ॐ श्रींह्रींक्लीं सदा पातु दक्षिणे भद्रकालिका ॥२५॥
ॐ श्रींऐक्लीं सदाग्नेय्यामुग्रतारा सदावतु।
ॐ वां दशदिशो रक्षेन्मां ह्रीं दक्षिणकालिका ॥२६॥

ह्सौः ऐं क्लीं नारसिंही मेरी रक्षा सदैव वायव्य में करें। ॐ श्रीं क्रीं ऐं कौमारी सदा मेरी रक्षा पश्चिम में करें। ॐ ह्रीं श्रीं शुभङ्करी मातङ्गी मेरी रक्षा नैर्ऋत्य में करें। ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं भद्रकालिका मेरी रक्षा सदैव दक्षिण दिशा में करे। ॐ श्रीं ऐं क्लीं उग्रतारा मेरी रक्षा आग्नेय में सर्वदा करें। ॐ वां दक्षिणकालिका मेरी रक्षा दशों दिशाओं में करें।।२४-२६।।

सर्वकालं सदा पातु ऐंसौः त्रिपुरसुन्दरी।
मारीभये च दुर्भिक्षे पीडायां योगिनीभये ॥२७॥
ॐ ह्रींश्रीं त्र्यक्षरी पातु देवी ज्वालामुखी मम।

ऐं सौः त्रिपुरसुन्दरी सभी समय मेरी रक्षा करें। ॐ ह्रीं श्रीं त्र्यक्षरी देवी ज्वालामुखी मेरी रक्षा महामारी-भय में, अकाल में और योगिनी-पीड़ा में करें।।२७।।

इतीदं कवचं पुण्यं त्रिषु लोकेषु दुर्लभम् ॥२८॥
त्रैलोक्यविजयं नाम मन्त्रगर्भं महेश्वरि।
अस्य प्रसादादीशोऽहं भैरवाणां जगत्त्रये ॥२९॥
सृष्टिकर्तापहर्ता च पठनादस्य पार्वति।

इस प्रकार का यह पुण्यदायक कवच तीनों लोकों में अत्यन्त दुर्लभ है। इसका नाम त्रैलोक्य-विजय है। यह मन्त्रगर्भित है। इसी के प्रभाव से मैं ईश हूँ और तीनों लोकों में भैरव हूँ। सृष्टिकर्ता और प्रलयकर्ता हूँ।।२८-२९।।

कुङ्कुमेन लिखेद्भूर्जे आसवेन स्वरेतसा ॥३०॥
स्तम्भयेदखिलान् देवान् मोहयेदखिलाः प्रजाः।
मारेयदखिलान् शत्रून् वशयेदपि देवताः ॥३१॥

भोजपत्र पर कुङ्कम एवं आसव और अपने वीर्य के घोल से इसे लिखकर धारण करने से सभी देवों का स्तम्भन होता है। सभी लोग मोहित होते हैं। सभी शत्रुओं का विनाश होता है। देवता भी वश में होते हैं।।३०-३१।।

बाहौ धृत्वा चरेद्युद्धं शत्रूञ्जित्वा गृहं व्रजेत्।
पोते रणे विवादे च कारायां रोगपीडने।।३२।।
ग्रहपीडादिकालेषु पठेत् सर्वं शमं व्रजेत्।
इतीदं कवचं देवि मन्त्रगर्भं सुरार्चितम्।।३३।।
यस्य कस्य न दातव्यं विना शिष्याय पार्वति।
मासैकेन भवेत् सिद्धिर्देवानां या च दुर्लभा।
पठेन्मासत्रयं मर्त्यो देवीदर्शनमाप्नुयात्।।३४।।

इति श्रीरुद्रयामले तन्त्रे दशविद्यारहस्ये श्रीज्वालामुखीकवचम्।।३।।

भुजा में धारण करके युद्ध में जाय तो शत्रु को जीतकर घर लौट आता है। जहाज में, युद्ध में, विवाद में, कारागार में, रोगपीड़ा में, ग्रहपीड़ा में इसके पाठ से शान्ति होती है। यह मन्त्रगर्भ कवच देवताओं से पूजित है। अपने शिष्य के सिवा किसी दूसरे को इसे नहीं देना चाहिये। एक महीने तक इसका पाठ करने से देवदुर्लभ सिद्धि मिलती है। तीन महीनों तक पाठ करने से देवी का दर्शन होता है।।३२-३४।।

इस प्रकार रुद्रयामल तन्त्रोक्त श्रीदेवीरहस्य की भाषा टीका में
श्रीज्वालामुखी कवच पूर्ण हुआ।

●

अथ श्रीज्वालामुखीसहस्रनामकम्

श्रीभैरव्युवाच

भगवन् सर्वधर्मज्ञ देवानामभयङ्कर ।
पुरा मे यत् त्वया प्रोक्तं वरं कैलाससानुतः ॥१॥
कृपया परया नाथ तं मे दातुं क्षमो भव ।

माहात्म्य—श्रीभैरवी ने कहा—भगवन् आप सर्वज्ञ हैं। देवताओं के लिये भी अभय देने वाले हैं। पहले कैलाश में जो आपने कहा था, वह वर आज दीजिये, मैं नतमस्तक हूँ। कृपा कीजिये, आप देने में समर्थ हैं।।१।।

श्रीभैरव उवाच

सत्यमेतत् त्वया प्रोक्तं वरं वरय पार्वति ॥२॥
तं प्रयच्छामि संसिद्ध्यै मनसा यदभीप्सितम् ।

श्रीभैरव ने कहा—हे पार्वति! तुम सत्य कह रही हो। जो वर देने के लिये मैंने कहा था, उसे माँगो। मैं देने के लिये तैयार हूँ, तुम्हारी जो इच्छा हो उसे माँग लो।।२।।

श्रीभैरव्युवाच

ज्वालामुख्यास्त्वया देव सहस्राणि च तत्त्वतः ॥३॥
प्रोक्तानि ब्रूहि मे भक्त्या यदि मे त्वत्कृपा भवेत् ।

श्रीभैरवी ने कहा कि यदि आपकी कृपा मुझ पर है तो मेरी भक्ति को देखते हुये आप ज्वालामुखी का सहस्रनाम मुझे सुनाइये।।३।।

श्रीभैरव उवाच

प्रवक्ष्यामि महादेवि ज्वालानामानि तत्त्वतः ॥४॥
सहस्राणि कलौ नृणां वरदानि यथेप्सितम् ।
अभक्ताय न दातव्यं दुष्टायासाधकाय च ॥५॥
या सा ज्वालामुखी देवी त्रैलोक्यजननी स्मृता ।
तस्या नामानि वक्ष्यामि दुर्लभानि जगत्त्रये ॥६॥

श्रीभैरव ने कहा—हे महादेवि! मैं ज्वालासहस्रनाम का तत्त्वतः वर्णन करता हूँ। कलियुग में मनुष्यों को इसके पाठ से यथेष्ट सिद्धि मिलती है। अभक्त एवं दुष्ट साधक

को इसे नहीं बतलाना चाहिये। यह जो ज्वालामुखी देवी है, वह तीनों लोकों की जननी है। उन्हीं के नामों का वर्णन करता हूँ, जो कि त्रिलोक में दुर्लभ है।।४-६।।

विना नित्यबलिं स्तोत्रं न रक्ष्यं साधकोत्तमैः।
दुर्भिक्षे शत्रुभीतौ च मारणे स्तम्भने पठेत्।।७।।
सहस्राख्यं स्तवं देव्याः सद्यः सिद्धिर्भविष्यति।
विना गन्धाक्षतैः पुष्पैर्धूपैर्दीपैविना बलिम्।।८।।
न रक्ष्यं साधकेनैव देवीनामसहस्रकम्।
दत्त्वा बलिं पठेद् देव्या मन्त्री नामसहस्रकम्।
देवि सत्यं मया प्रोक्तं सिद्धिहानिस्ततोऽन्यथा।।९।।

नित्य बलि के बिना केवल स्तोत्रपाठ से श्रेष्ठ साधकों की भी रक्षा नहीं होती। दुर्भिक्ष में, शत्रुभय में, मारण में, स्तम्भन में इसका पाठ करना चाहिये। इस देवी-सहस्रनामस्तोत्र के पाठ से तुरन्त सिद्धि मिलती है। इसके लिये गन्धाक्षत पुष्प धूप दीप और बलि देना जरूरी है। पूजन के बिना रक्षा नहीं होती है। देवी को बलि देकर साधक सहस्रनाम का पाठ करे। हे देवि! मैं सत्य कहता हूँ, पूजन से सिद्धि मिलती है, अन्यथा केवल पाठ से हानि होती है।।७-९।।

अस्य श्रीज्वालामुखीसहस्रनामस्तवस्य भैरव ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः, श्रीज्वालामुखी देवता, ह्रीं बीजं, श्रीं शक्तिः, ॐ कीलकं पाठे विनियोगः। भैरवऋषये नमः शिरसि। अनुष्टुप्छन्दसे नमो मुखे। श्रीज्वालामुखीदेवतायै नमो हृदि। ह्रीं बीजाय नमो नाभौ। श्रीं शक्तये नमो गुह्ये। ॐ कीलकाय नमः पादयोः। विनियोगाय नमः सर्वाङ्गेषु। ॐह्रामिति षड्दीर्घयुक्तकमायया करषडङ्गानि विधाय ध्यायेत्—

विनियोग—अस्य श्रीज्वालामुखीसहस्रनामस्तवस्य भैरव ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः, श्रीज्वालामुखी देवता, ह्रीं वीजं, श्रीं शक्ति, ॐ कीलकं पाठे विनियोगः।

ऋष्यादि न्यास—भैरवऋषये नमः शिरसि। अनुष्टुप् छन्दसे नमः मुखे। श्रीज्वालामुखीदेवतायै नमः हृदि। ह्रीं बीजाय नमः नाभौ। श्रीं शक्तये नमः गुह्ये। ॐ कीलकाय नमः पादयोः। विनियोगाय नम सर्वाङ्गेषु।

करन्यास—ॐ ह्रां अंगुष्ठाभ्यां नमः। ॐ ह्रीं तर्जनीभ्यां नमः। ॐ ह्रूं मध्यमाभ्यां नमः। ॐ ह्रैं अनामिकाभ्यां नमः। ॐ ह्रौं कनिष्ठाभ्यां नमः। ॐ ह्रः करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः।

हृदयादि न्यास—ॐ ह्रां हृदयाय नमः। ॐ ह्रीं शिरसे स्वाहा। ॐ ह्रूं शिखायै वषट्। ॐ ह्रैं कवचाय हुं। ॐ ह्रौं नेत्रत्रयाय वौषट्। ॐ ह्रः अस्त्राय फट्।

ध्यानम्

उद्यच्चन्द्रमरीचिसन्निभमुखीमेकादशाराब्जगां-
पाशाम्भोजवराभयान् करतलैः संबिभ्रतीं सादरात् ।
अग्नीन्द्वर्कविलोचनां शशिकलाचूडां त्रिवर्गोज्ज्वलां
प्रेतस्थां ज्वलदग्निमण्डलशिखां ज्वालामुखीं नौम्यहम् ॥

ध्यान—मैं ऐसी ज्वालामुखी देवी को प्रणाम करता हूँ, जिनका मुख उदीयमान चन्द्रकिरणों के समान है। जो एकादश दल कमल पर विराजती हैं। हाथों में पाश, कमल, वर और अभय है। जो आदरसहित विद्यमान हैं। अग्नि, चन्द्र, सूर्य उनके तीन नेत्र हैं। चूड़ा में द्वितीया का चाँद है। जिनके तीनों वर्ग उज्ज्वल हैं। जो प्रेत पर बैठी हैं। प्रज्ज्वलित अग्निमण्डल की शिखा के समान उन ज्वालामुखी देवी को मैं प्रणाम करता हूँ।

ॐह्रींज्वालामुखी जैत्री श्रींज्योत्स्ना जयदा जया ।
औदुम्बरा महानीला शुक्रलुप्ता शची श्रुतिः ॥१॥
स्मयदा स्मयहर्त्री च स्मरशत्रुप्रियङ्करी ।
मानदा मोहिनी मत्ता माया बाला बलन्धरा ॥२॥
भगरूपा भगावासा भीरुण्डा भयघातिनी ।
भीतिर्भयानकास्या च भ्रूः सुभ्रूः सुखिनी सती ॥३॥
शूलिनी शूलहस्ता च शूलिवामाङ्गवासिनी ।
शशाङ्कजननी शीता शीतला शारिका शिवा ॥४॥
स्रुचिका मधुमन्मान्या त्रिवर्गफलदायिनी ।
त्रेता त्रिलोचना दुर्गा दुर्गमा दुर्गतिर्गतिः ॥५॥
पूता प्लुतिर्विमर्शा च सृष्टिकर्त्री सुखावहा ।
सुखदा सर्वमध्यस्था लोकमाता महेश्वरी ॥६॥
लोकेष्टा वरदा स्तुत्या स्तुतिर्द्रुतगतिर्नुतिः ।
नयदा नयनेत्रा च नवग्रहनिषेविता ॥७॥
अम्बा वरूथिनी वीरजननी वीरसुन्दरी ।
वीसूर्वारुणी वार्ता वराऽभयकरा वधूः ॥८॥
वानीरतलगा वाम्या वामाचारफलप्रदा ।
वीरा शौर्यकरी शान्ता शार्दूलत्वक् च शर्वरी ॥९॥
शलभी शास्त्रमर्यादा शिवदा शम्बरान्तका ।

शम्बरारिप्रिया शम्भुकान्ता शशिनिभानना ॥१०॥
शस्त्रायुधधरा शान्तिर्ज्योतिर्दीप्तिर्जगत्प्रिया ।
जगती जित्वरा जारी मार्जारी पशुपालिनी(१००)॥११॥

ॐ ह्लीं ज्वालामुखी, जैत्री, श्रीं ज्योत्स्ना, जयदा, जया, औदुम्बरा, महानीला, शुक्रलुप्ता, शची, श्रुति, स्मयदा, स्मयहर्त्री, स्मरशत्रुप्रियङ्करी, मानदा, मोहिनी, मत्ता, माया, बाला, बलन्धरा, भगरूपा, भगावासा, भीरुण्डा, भयघातिनी, भीति, भयानकास्या, भ्रू, सुभ्रू, सुखिनी, सती, शूलिनी, शूलहस्ता, शूलिवामाङ्गवासिनी, शशाङ्कजननी, शीता, शीतला, शारिका, शिवा, स्रुचिका, मधुमन्मान्या, त्रिवर्गफलदायिनी, त्रेता, त्रिलोचना, दुर्गा, दुर्गमा, दुर्गतिगति, पूता, प्लुति, विमर्शा, सृष्टिकर्त्री, सुखावहा, सुखदा, सर्वमध्यस्था, लोकमाता, महेश्वरी, लोकेष्टा, वरदा, स्तुत्या, स्तुति, द्रुतगति, नुति, नयदा, नयनेत्रा, नवग्रहनिषेविता, अम्बा, वरूथिनी, वीरजननी, वीरसुन्दरी, वीरसू, वारुणी, वार्ता, वर-अभयकरा, वधू, वानीरतलगा, वाम्या, वामाचारफलप्रदा, वीरा, शौर्यकरी, शान्ता, शार्दूलत्वक्, शर्वरी, शलभी, शास्त्रमर्यादा, शिवदा, शम्बरान्तका, शम्बरारिप्रिया, शम्भुकान्ता, शशिनिभानना, शस्त्रायुधधरा, शान्ति, ज्योति, दीप्ति, जगत्प्रिया, जगती, जित्वरा, जारी, मार्जारी, पशुपालिनी।।१-११।।

मेरुमध्यगता मैत्री मुसलायुधधारिणी ।
मान्या मन्त्रेष्टदा माध्वी माध्वीरसविघूर्णिता ॥१२॥
मोदकाहारमत्ता च मत्तमातङ्गगामिनी ।
महेश्वरप्रियोन्नत्ता दार्वी दैत्यविमर्दिनी ॥१३॥
देवेष्टा साधकेष्टा च साध्वी सर्वत्रगाऽसमा ।
सन्तानकतरुश्छायासन्तुष्टाऽध्वश्रमापहा ॥१४॥
शारदा शरदब्जाक्षी शरच्चन्द्रनिभानना ।
नम्राङ्गी कर्कशाङ्गी च वज्राङ्गी वज्रधारिणी ॥१५॥
वज्रेष्टा वज्रकङ्काला वानरी वायुवेगिनी ।
वराकी कुलका काम्या कुलेष्टा कुलकामिनी ॥१६॥
कुन्ता कामेश्वरी क्रूरा कुल्या कामान्तकारिणी ।
कुन्ती कुन्तधरा कुब्जा कष्टहा बगलामुखी ॥१७॥
मृडानी मधुरा मूका प्रमत्ता बैन्दवेश्वरी ।
कुमारी कुलजाऽकामा कूवरी नडकूवरी ॥१८॥
नगेश्वरी नगावासा नगपुत्री नगारिहा ।

नागकन्या कुहूः कुण्ठी करुणा कृपयान्विता ॥१९॥
ककारवर्णरूपाढ्या ह्रीर्लज्जा श्रीः शुभाशुभा ।
खेचरी खगपत्नी च खगनेत्रा खगेश्वरी ॥२०॥
खाता खनित्री खस्था च जप्या जाप्याऽजरा ध्रुतिः ।
जगती जन्मदा जम्भी जम्बुवृक्षतलस्थिता ॥२१॥
जाम्बूनदप्रिया सत्या सात्त्विकी सत्त्ववर्जिता ।
सर्वमाता समालोका लोकाख्यातिर्लयात्मिका ॥२२॥
लूता लतारतिर्लज्जा वाजिगा वारुणी वशा ।

मेरुमध्यगता, मैत्री, मुसलायुधधारिणी, मान्या, मन्त्रेष्टदा, माध्वी, माध्वीरसविघूर्णिता, मोदकाहारमत्ता, मत्तमातंगगामिनी, महेश्वरप्रिया, उन्नता, दार्वी, दैत्यविमर्दिनी, देवेष्टा, साधकेष्टा, साध्वी, सर्वत्रगा, असमा, सन्तानकतरुश्छाया, सन्तुष्टा, अध्वश्रमापहा, शारदा, शरदब्जाक्षी, शरच्चन्द्रनिभानना, नम्राङ्गी, कर्कशाङ्गी, वज्राङ्गी, वज्रधारिणी, वज्रेष्टा, वज्रकङ्काला, वानरी, वायुवेगिनी, वराकी, कुलका, काम्या, कुलेष्टा, कुलकामिनी, कुन्ता, कामेश्वरी, क्रूरा, कुल्या, कामान्तकारिणी, कुन्ती, कुन्तधरा, कुब्जा, कष्टहा, बगलामुखी, मृडानी, मधुरा, मूका, प्रमत्ता, बैन्दवेश्वरी, कुमारी, कुलजा, अकामा, कूवरी, नडकूवरी, नगेश्वरी, नगावासा, नगपुत्री, नगारिहा, नागकन्या, कुहू, कुण्ठी, करुणा, कृपयान्विता, ककारवर्णरूपाढ्या, ह्री, लज्जा, श्रीः, शुभा, अशुभा, खेचरी, खगपत्नी, खगनेत्रा, खगेश्वरी, खाता, खनित्री, खस्था, जप्या, जाप्या, अजरा, ध्रुति, जगती, जन्मदा, जम्भी जम्बुवृक्षतलस्थिता, जाम्बूनदप्रिया, सत्या, सात्त्विकी, सत्ववर्जिता, सर्वमाता, समालोका, लोकाख्याति, लयात्मिका, लूता, लतारति, लज्जा, वाजिगा, वारुणी, वशा।।१२-२२।।

कुटिला कुत्सिता ब्राह्मी ब्रह्माणी ब्रह्मदायिनी ॥२३॥
व्रतेष्टा वाजिनी वस्तिर्वामनेत्रा वशङ्करी ।
शङ्करी शङ्करेष्टा च शशाङ्ककृतशेखरा ॥२४॥
कुम्भेश्वरी कुरुघ्नी च पाण्डवेष्टा परात्परा ।
महिषासुरसंहर्त्री माननीया मनुप्रिया ॥२५॥
दक्षिणा दक्षजा दक्षा द्राक्षा दूती द्युतिर्धरा ।
धर्मदा धर्मराजेष्टा धर्मस्था धर्मपालिनी ॥२६॥
धनदा धनिका धर्म्या पताका पार्वती प्रजा ।
प्रजावती पुरी प्रज्ञा पूः पुत्री पत्रिवाहनी ॥२७॥

पत्रिहस्ता च मातङ्गी पत्रिका च पतिव्रता ।
पुष्टिः प्लक्षा श्मशानस्था देवी धनदसेविता ॥२८॥
दयावती दया दूरा दूता निकटवासिनी ।
नर्मदाऽनर्मदा नन्दा नाकिनी नाकसेविता ॥२९॥
नासा सङ्क्रान्तिरीड्या च भैरवी च्छिन्नमस्तका ।
श्यामा श्यामाम्बरा पीता पीतवस्त्रा कलावती ॥३०॥
कौतुकी कौतुकाचारा कुलधर्मप्रकाशिनी ।
शाम्भवी गारुडीविद्या गरुडासनसंस्थिता ॥३१॥
विनता वैनतेयेष्टा वैष्णवी विष्णुपूजिता ।
वान्तदा वालुका वेत्री वेत्रहस्ता वराङ्गना ॥३२॥
विवेकलोचना विज्ञा विशाला विमला ह्यजा ।
विवेका प्रचुरा लुप्ता नौर्नारायणपूजिता ॥३३॥

कुटिला, कुत्सिता, व्राह्मी, ब्रह्माणी, ब्रह्मदायिनी, व्रतेष्टा, वाजिनी, वस्ति, वामनेत्रा, वशङ्करी, शङ्करी, शङ्करेष्टा, शशाङ्ककृतशेखरा, कुम्भेश्वरी, कुरुघ्नी, पाण्डवेष्टा, परात्परा, महिषासुरसंहर्त्री, माननीया, मनुप्रिया, दक्षिणा, दक्षजा, दक्षा, द्राक्षा, दूती, द्युति, धरा, धर्मदा, धर्मराजेष्टा, धर्मस्था, धर्मपालिनी, धनदा, धनिका, धर्म्या, पताका, पार्वती, प्रजा, प्रजावती, पुरी, प्रज्ञा, पूः, पुत्री, पत्रिवाहिनी, पत्रिहस्ता, मातङ्गी, पत्रिका, पतिव्रता, पुष्टि, प्लक्षा, श्मशानस्था, देवी, धनदसेविता, दयावती, दया, दूरा, दूता, निकटवासिनी, नर्मदा, अनर्मदा, नन्दा, नाकिनी, नाकसेविता, नासा, संक्रान्तिरीड्या, भैरवी, छिन्नमस्तिका, श्यामा, श्यामाम्बरा, पीता, पीतवस्त्रा, कलावती, कौतुकी, कौतुकाचारा, कुलधर्मप्रकाशिनी, शाम्भवी, गारुड़ी विद्या, गरुड़ासनसंस्थिता, विनता, वैनतेयेष्टा, वैष्णवी, विष्णुपूजिता, वान्तदा, वालुका, वेत्री, वेत्रहस्ता, वराङ्गना, विवेकलोचना, विज्ञा, विशाला, विमला, अजा, विवेका, प्रचुरा, लुप्ता, नौर्नारायणपूजिता।।२३-३३।।

नारायणी(३००)च सुमुखी दुर्जया दुःखहारिणी ।
दौर्भाग्यहा दुराचारा दुष्टहन्त्री च द्वेषिणी ॥३४॥
वाङ्मयी भारती भाषा मषी लेखकपूजिता ।
लेखपत्री च लोलाक्षी लास्या हास्या प्रियङ्करी ॥३५॥
प्रेमदा प्रणयज्ञा च प्रमाणा प्रत्ययाङ्किता ।
वाराही कुब्जिका कारा काराबन्धनमोक्षदा ॥३६॥

उग्रा चोग्रतरोग्रेष्टा नृमान्या नरसिंहिका ।
नरनारायणस्तुत्या नरवाहनपूजिता ॥३७॥
नृमुण्डा नूपुराढ्या च नृमाता त्रिपुरेश्वरी ।
दिव्यायुधोग्रतारा च त्र्यक्षा त्रिपुरमालिनी ॥३८॥
त्रिनेत्रा कोटराक्षी च षट्चक्रस्था क्रिमीश्वरी ।
क्रिमिहा क्रिमियोनिश्च कला चन्द्रकला चमूः ॥३९॥
चर्माम्बरा च चार्वङ्गी चञ्चलाक्षी च भद्रदा ।
भद्रकाली सुभद्रा च भद्राङ्गी प्रेतवाहिनी ॥४०॥
सुषमा स्त्रीप्रिया कान्ता कामिनी कुटिलालका ।
कुशब्दा कुगतिर्मेधा मध्यमाङ्गा च काश्यपी ॥४१॥
दक्षिणाकालिका काली कालभैरवपूजिता ।
क्लींकारी कुमतिर्वाणी बाणासुरनिसूदिनी ॥४२॥
निर्ममा निर्ममेष्टा च निरयोनिर्निराश्रया ।
निर्विकारा निरीहा च निलया नृपपुत्रिणी ॥४३॥
नृपसेव्या विरिञ्चीष्टा विशिष्टा विश्वमातृका ।
मातृकाऽर्णविलिप्ताङ्गी मधुस्नाता मधुद्रवा ॥४४॥
शुक्रेष्टा शुक्रसन्तुष्टा शुक्रस्नाता कृशोदरी ।
वृषा वृष्टिरनावृष्टिर्लभ्या लोभविवर्जिता ॥४५॥

नारायणी, सुमुखी, दुर्जया, दुःखहारिणी, दौर्भाग्यहा, दुराचारा, दुष्टहन्त्री, द्वेषिणी, वाङ्मयी, भारती, भाषा, मषी, लेखकपूजिता, लेखपत्री, लोलाक्षी, लास्या, हास्या, प्रियङ्करी, प्रेमदा, प्रणयज्ञा, प्रमाणा, प्रत्ययाङ्किता, वाराही, कुब्जिका, कारा, काराबन्धनमोक्षदा, उग्रा, उग्रतरा, उग्रेष्टा, नृमान्या, नरसिंहिका, नरनारायणस्तुत्या, नरवाहनपूजिता, नृमुण्डा, नूपुराढ्या, नृमाता, त्रिपुरेश्वरी, दिव्यायुधा, उग्रतारा, त्र्यक्षा, त्रिपुरमालिनी, त्रिनेत्रा, कोटराक्षी, षट्चक्रस्था, क्रिमीश्वरी. क्रिमिहा, क्रिमियोनि, कला, चन्द्रकला, चमू, चर्माम्बरा, चार्वङ्गी, चञ्चलाक्षी, भद्रदा, भद्रकाली, सुभद्रा, भद्राङ्गी, प्रेतवाहिनी, सुषमा, स्त्रीप्रिया, कान्ता, कामिनी, कुटिलालका, कुशब्दा, कुगतिर्मेधा, मध्यमाङ्गा, काश्यपी, दक्षिणाकालिका, काली, कालभैरवपूजिता, क्लींङ्कारी, कुमतिर्वाणी, वाणासुरनिसूदिनी, निर्ममा, निर्ममेष्टा, निरयोनि, निराश्रया, निर्विकारा, निरीहा, निलया, नृपपुत्रिणी, नृपसेव्या, विरिञ्चिष्टा, विशिष्टा, विश्वमातृका, मातृकार्णविलिप्ताङ्गी, मधुस्नाता, मधुद्रवा, शुक्रेष्टा, शुक्रसन्तुष्टा, शुक्रस्नाता, कृशोदरी, वृषा, वृष्टि, अनावृष्टि, लभ्या, लोभविवर्जिता।।३४-४५।।

अब्धिश्च ललना लक्ष्या लक्ष्मी रामा रमा रतिः ।
रेवा रम्भोर्वशी वश्या वासुकिप्रियकारिणी ॥४६॥
शेषा शेषरता श्रेष्ठा शेषशायिनमस्कृता ।
शय्या शर्वप्रिया शस्ता प्रशस्ता शम्भुसेविता ॥४७॥
आशुशुक्षणिनेत्रा च क्षणदा क्षणसेविता ।
क्षुरिका कर्णिका सत्या सचराचररूपिणी ॥४८॥
चरित्री च धरित्री च दितिर्दैत्येन्द्रपूजिता ।
गुणिनी गुणरूपा च त्रिगुणा निर्गुणा घृणा ॥४९॥
घोषा गजाननेष्टा च गजाकारा गुणिप्रिया ।
गीता गीतप्रिया तथ्या पथ्या त्रिपुरसुन्दरी ॥५०॥
पीनस्तनी च रमणी रमणीष्टा च मैथुनी ।
पद्मा पद्मधरा वत्सा धेनुर्मेरुधरा मघा ॥५१॥
मालती मधुरालापा मातृजा मालिनी तथा ।
वैश्वानरप्रिया वैद्या चिकित्सा वैद्यपूजिता ॥५२॥
वेदिका वारपुत्री च वयस्या वाग्भवी प्रसूः ।
क्रीता पद्मासना सिद्धा सिद्धलक्ष्मीः सरस्वती ॥५३॥
सत्त्वरेष्ठा सत्त्वसंस्था सामान्या सामवायिका ।
साधकेष्टा च सत्पत्नी सत्पुत्री सत्कुलाश्रया ॥५४॥
समदा प्रमदा श्रान्ता परलोकगतिः शिवा ।
घोररूपा घोररावा मुक्तकेशी च मुक्तिदा ॥५५॥
मोक्षदा बलदा पुष्टिर्मुक्तिर्बलिप्रियाऽभया ।
तिलप्रसूननासा च प्रसूना कुलशीर्षिणी ॥५६॥

अब्धि, ललना, लक्ष्या, लक्ष्मी, रामा, रमा, रति, रेवा, रम्भा, उर्वशी, वश्या, वासुकिप्रियकारिणी, शेषा, शेषरता, श्रेष्ठा, शेषशायिनमस्कृता, शय्या, सर्वप्रिया, शस्ता, प्रशस्ता, शम्भुसेविता, आशुशुक्षणिनेत्रा, क्षणदा, क्षणसेविता, क्षुरिका, कर्णिका, सत्या, सचराचररूपिणी, चरित्री, धरित्री, दिति-दैत्येन्द्रपूजिता, गुणिनी, गुणरूपा, त्रिगुणा, निर्गुणा, घृणा, घोषा, गजाननेष्टा, गजाकारा, गुणिप्रिया, गीता, गीतप्रिया, तथ्या, पथ्या, त्रिपुरसुन्दरी, पीनस्तनी, रमणी, रमणीष्टा, मैथुनी, पद्मा, पद्मधरा, वत्सा, धेनु, मेरुधरा, मघा, मालती, मधुरालापा, मातृजा, मालिनी, वैश्वानरप्रिया, वैद्या, चिकित्सा, वैद्यपूजिता, वेदिका, वारपुत्री, वयस्या, वाग्भवी, प्रसू, क्रीता, पद्मासना,

सिद्धा, सिद्धलक्ष्मी, सरस्वती, सत्त्वश्रेष्ठा, सत्त्वसंस्था, सामान्या, सामवायिका, साधकेष्टा, सत्पत्नी, सत्पुत्री, सत्कुलाश्रया, समदा, प्रमदा, श्रान्ता, परलोकगति, शिवा, घोररूपा, घोररावा, मुक्तकेशी, मुक्तिदा, मोक्षदा, बलदा, पुष्टि, मुक्ति, बलिप्रिया, अभया, तिलप्रसूननासा, प्रसूना, कुलशीर्षिणी।।४६-५६।।

परद्रोहकरी(५००)पान्था पारावारसुता भगा।
भगप्रिया भर्गशिखा हेला हैमवतीश्वरी।।५७।।
हेरुकेष्टा वटुस्था च वटुमाता वटेश्वरी।
नटिनी त्रोटिनी त्राता स्वसा सारवती सभा।।५८।।
सौभाग्या भाग्यदा भाग्या भोगदा भूः प्रभावती।
चन्द्रिका कालहर्त्री च ज्योत्स्नोल्काऽशनिराह्निका।।५९।।
ऐहिकी चौष्मिकी चोष्मा ग्रीष्मांशुद्युतिरूपिणी।
ग्रीवा ग्रीष्मानना गव्या कैलासाचलवासिनी।।६०।।
मल्ली मार्तण्डरूपा च मानहर्त्री मनोरमा।
मानिनी मानकर्त्री च मानसी तापसी तुटिः।।६१।।
पयःस्था तु परब्रह्मस्तुता स्तोत्रप्रिया तनुः।
तन्वी तनुतरा सूक्ष्मा स्थूला शूरप्रियाऽधमा।।६२।।
उत्तमा मणिभूषाढ्या मणिमण्डपसंस्थिता।
माषा तीक्ष्णा त्रपा चिन्ता मण्डिका चर्चिका चला।।६३।।
चण्डी चुल्ली चमत्कारकर्त्री हर्त्री हरीश्वरी।
हरिसेव्या कपिश्रेष्ठा चर्चिता चारुरूपिणी।।६४।।
चण्डीश्वरी चण्डरूपा मुण्डहस्ता मनोगतिः।
पोता पूता पवित्रा च मज्जा मेध्या सुगन्धिनी।।६५।।
सुगन्धा पुष्पिणी पुष्या प्रेरिता पवनेश्वरी।
प्रीता क्रोधाकुला न्यस्ता न्यक्कारा सुरवाहिनी।।६६।।
स्रोतस्वती मधुमती देवमाता सुधाम्बरा(६००)।

परद्रोहकरी, पान्था, पारावारसुता, भगा, भगप्रिया, भर्गशिखा, हेला, हैमवती, ईश्वरी, हेरुकेष्टा, वटुस्था, वटुमाता, वटेश्वरी, नटिनी, त्रोटिनी, त्राता, स्वसा, सारवती, सभा, सौभाग्या, भाग्यदा, भाग्या, भोगदा, भू, प्रभावती, चन्द्रिका, कालहर्त्री, ज्योत्स्ना, उल्का, अशनि, आह्निका, ऐहिकी, औष्मिकी, उष्मा, ग्रीष्मांशुद्युतिरूपिणी, ग्रीवा, ग्रीष्मानना, गव्या, कैलासाचलवासिनी, मल्ली, मार्तण्डरूपा, मानहर्त्री, मनोरमा, मानिनी, मानकर्त्री,

मानसी, तापसी, तुटि, पय:स्था, परब्रह्मस्तुता, स्तोत्रप्रिया, तनु, तन्वी, तनुतरा, सूक्ष्मा, स्थूला, शूरप्रिया, अधमा, उत्तमा, मणिभूषाढ्या, मणिमण्डप- संस्थिता, माषा, तीक्ष्णा, त्रपा, चिन्ता, मण्डिका, चर्चिका, चला, चण्डी, चुल्ली, चमत्कारकर्त्री, हर्त्री, हरीश्वरी, हरिसेव्या, कपिश्रेष्ठा, चर्चिता, चारुरूपिणी, चण्डीश्वरी, चण्डरूपा, मुण्डहस्ता, मनोगति, पोता, पूता, पवित्रा, मज्जा, मेध्या, सुगन्धिनी, सुगन्धा, पुष्पिणी, पुष्पा, प्रेरिता, पवनेश्वरी, प्रीता, क्रोधाकुला, न्यस्ता, न्यक्कारा, सुरवासिनी, स्रोतस्वती, मधुमती, देवमाता, सुधाम्बरा।।५७-६६।।

मत्स्या मत्स्येन्द्रपीठस्था वीरपाना मदातुरा ।।६७।।
पृथिवी तैजसी तृप्तिर्मूलाधारा प्रभा पृथुः ।
नागपाशधरानन्ता पाशहस्ता प्रबोधिनी ।।६८।।
प्रसादना कलिङ्गाख्या मदनाशा मधुद्रवा ।
मधुवीरा मदान्धा च पावनी वेदना स्मृतिः ।।६९।।
बोधिका बोधिनी पूषा काशी वाराणसी गया ।
कौशी चोज्जयिनी धारा काश्मीरी कुङ्कुमाकुला ।।७०।।
भूमिः सिन्धुः प्रभासा च गङ्गा गौरी शुभाश्रया ।
नानाविद्यामयी वेत्रवती गोदावरी गदा ।।७१।।
गदहर्त्री गजारूढा इन्द्राणी कुलकौलिनी ।
कुलाचारा कुरूपा च सुरूपा रूपवर्जिता ।।७२।।
चन्द्रभागा च यमुना यामी यमक्षयङ्करी ।
काम्भोजी सरयूश्चित्रा वितस्तैरावती झषा ।।७३।।
चषिका पथिका तन्त्री वीणा वेणुः प्रियंवदा ।
कुण्डलिनी निर्विकल्पा गायत्री नरकान्तका ।।७४।।
कृष्णा सरस्वती तापी पयोर्णा शतरुद्रिका ।
कावेरी शतपत्राभा शतबाहुः शतह्रदा ।।७५।।
रेवती रोहिणी क्षिप्या क्षीणा क्षोणी क्षमा क्षया ।
क्षान्तिर्भ्रान्तिर्गुरुर्गुर्वी गरिष्ठा गोकुला नदी ।।७६।।
नादिनी कृषिणी कृष्या सत्कुटी भूमिका भ्रमा ।

मत्स्या, मत्स्येन्द्रपीठस्था, वीरपाना, मदातुरा, पृथिवी, तैजसी, तृप्ति, मूलाधारा, प्रभा, पृथु, नागपाशधरा, अनन्ता, पाशहस्ता, प्रबोधिनी, प्रसादना, कलिङ्गाख्या, मदनाशा, मधुद्रवा, मधुवीरा, मदान्धा, पावनी, वेदना, स्मृति, बोधिका, बोधिनी, पूषा, काशी,

वाराणसी, गया, कौशी, उज्जयिनी, धारा, काश्मीरी, कुङ्कुमाकुला, भूमि, सिन्धु, प्रभासा, गङ्गा, गौरी, शुभाश्रया, नानाविद्यामयी, वेत्रवती, गोदावरी, गदा, गदहर्त्री, गजारूढ़ा, इन्द्राणी, कुलकौलिनी, कुलाचारा, कुरूपा, सुरूपा, रूपवर्जिता, चन्द्रभागा, यमुना, यामी, यमक्षयङ्करी, काम्भोजी, सरयू, चित्रा, वितस्ता, ऐरावती, झषा, चषिका, पथिका, तन्त्री, वीणा, वेणु, प्रियंवदा, कुण्डलिनी, निर्विकल्पा, गायत्री, नरकान्तका, कृष्णा, सरस्वती, तापी, पयोर्णा, शतरुद्रिका, कावेरी, शत- पत्राभा, शतबाहु, शतह्रदा, रेवती, रोहिणी, क्षिप्या, क्षोणा, क्षोणी, क्षमा, क्षया, क्षान्ति, भ्रान्ति, गुरुर्गुर्वी, गरिष्ठा, गोकुला, नदी, नादिनी, कृषिणी, कृष्या, सत्कुटी, भूमिका, भ्रमा।।६७-७६।।

बिभ्राजमाना तीर्थ्या च तीर्था तीर्थफलप्रदा ।।७७।।
तरुणी तामसी पाशा विपाशा पाशधारिणी ।
पशूपहारसन्तुष्टा कुक्कुटी हंसवाहना ।।७८।।
मधुरा विपुलाऽकाङ्क्षा वेदकाण्डी विचित्रिणी ।
स्वप्नावती सरित् सीताधारिणी मत्सरी च मुत् ।।७९।।
शतद्रूर्भारती कद्रूरनन्तानन्तशाखिनी ।
वेदना वासवी वेश्या पूतना पुष्पहासिनी ।।८०।।
त्रिशक्तिः शक्तिरूपा चाक्षरमाता क्षुरी क्षुधा ।
मन्दा मन्दाकिनी मुद्रा भूता भूतपतिप्रिया ।।८१।।
भूतेष्टा पञ्चभूतघ्नी स्वक्षा कोमलहासिनी ।
वासिनी कुहिका लम्भा लम्बकेशी सुकेशिनी ।।८२।।
ऊर्ध्वकेशी विशालाक्षी घोरा पुण्यपतिप्रिया ।
पांसुला पात्रहस्ता च खर्परी खर्परायुधा ।।८३।।
केकरी काकिनी कुम्भी सुफला केकराकृतिः ।
विफला विजया श्रीदा श्रीदसेव्या शुभङ्करी ।।८४।।
शैत्या शीतालया शीधुपात्रहस्ता कृपावती ।
कारुण्या विश्वसारा च करुणा कृपणा कृपा ।।८५।।
प्रज्ञा ज्ञाना च षड्वर्गा षडास्या षण्मुखप्रिया ।
क्रौञ्ची क्रौञ्चाद्रिनिलया दान्ता दारिद्र्यनाशिनी ।।८६।।
शाला चाभासुरा साध्या साधनीया च सामगा ।
सप्तस्वरा सप्तधरा सप्तसप्तिविलोचना ।।८७।।
स्थितिः क्षेमङ्करी स्वाहा वाचाली विविधाम्बरा ।

विभ्राजमाना, तीर्थ्या, तीर्था, तीर्थफलप्रदा, तरुणी, तामसी, पाशा, विपाशा, पाशधारिणी, पशूपहारसन्तुष्टा, कुक्कुटी, हंसवाहना, मधुरा, विपुलाकांक्षा, वेदकाण्डी, विचित्रिणी, स्वप्नावती, सरित्, सीताधारिणी, मत्सरी, मुत्, शतद्रु, भारती, कद्रू, अनन्ता, अनन्तशाखिनी, वेदना, वासवी, वेश्या, पूतना, पुष्पहासिनी, त्रिशक्ति, शक्तिरूपा, अक्षरमाता, क्षुरी, क्षुधा, मन्दा, मन्दाकिनी, मुद्रा, भूता, भूतपतिप्रिया, भूतेष्टा, पञ्चभूतघ्नी, स्वक्षा, कोमलहासिनी, वासिनी, कुहिका, लम्भा, लम्बकेशी, सुकेशिनी, ऊर्ध्वकेशी, विशालाक्षी, घोरा, पुण्यपतिप्रिया, पांशुला, पात्रहस्ता, खर्परी, खर्परायुधा, केकरी, काकिनी, कुम्भी, सुफला, केकराकृति, विफला, विजया, श्रीदा, श्रीदसेव्या, शुभङ्करी, शैत्या, शीतालया, शीधुपात्रहस्ता, कृपावती, कारुण्या, विश्वसारा, करुणा, कृपणा, कृपा, प्रज्ञा, ज्ञाना, षड्वर्गा, षडास्या, षण्मुखप्रिया, क्रौंची, क्रौंचाद्रि- निलया, दान्ता, दारिद्र्यनाशिनी, शाला, अभासुरा, साध्या, साधनीया, सामगा, सप्तस्वरा, सप्तधरा, सप्तसप्तिविलोचना, स्थिति, क्षेमङ्करी, स्वाहा, वाचाली, विवि-धाम्बरा।।७७-८७।।

कलकण्ठी घोषधरा सुग्रीवा कन्धरा रुचिः ।।८८।।
शुचिस्मिता समुद्रेष्टा शशिनी वशिनी सुदृक् ।
सर्वज्ञा सर्वदा शारी सुनासा सुरकन्यका ।।८९।।
सेना सेनासुता शृङ्गी शृङ्गिणी हाटकेश्वरी ।
होटिका हारिणी लिङ्गा भगलिङ्गस्वरूपिणी ।।९०।।
भगमाता च लिङ्गाख्या लिङ्गप्रीता कलिङ्गजा ।
कुमारी युवती प्रौढा नवोढा प्रौढरूपिणी ।।९१।।
रम्या रजोवती रज्जू रजोली राजसी घटी ।
कैवर्ती राक्षसी रात्री रात्रिञ्चरक्षयङ्करी ।।९२।।
महोग्रा मुदिता भिल्ली भल्लहस्ता भयङ्करी ।
तिलाभा दारिका द्वाःस्था द्वारिका मध्यदेशगा ।।९३।।
चित्रलेखा वसुमती सुन्दराङ्गी वसुन्धरा ।
देवता पर्वतस्था च परभूः परमाकृतिः ।।९४।।
परमूर्तिर्मुण्डमाला नागयज्ञोपवीतिनी ।
श्मशानकालिका श्मश्रुः प्रलयात्मा प्रलोपिनी ।।९५।।
प्रस्थस्था प्रस्थिनी प्रस्था धूम्रार्चिर्धूम्ररूपिणी ।
धूम्राङ्गी धूम्रकेशा च कपिला कालनाशिनी ।।९६।।
कङ्काली कालरूपा च कालमाता मलिम्लुची ।

शर्वाणी रुद्रपत्नी च रौद्री रुद्रस्वरूपिणी ॥९७॥
सन्ध्या त्रिसन्ध्या संपूज्या सर्वैश्वर्यप्रदायिनी ।
कुलजा सत्यलोकेशा सत्यवाक् सत्यवादिनी ॥९८॥
सत्यस्वरा सत्यमयी हरिद्वारा हरिन्मयी ।
हरिद्रत्नमयी राशि(९००)ग्रहतारातिथितनुः ॥९९॥

कलकण्ठी, घोषधरा, सुग्रीवा, कन्धरा, रुचि, शुचिस्मिता, समुद्रेष्टा, शशिनी, वशिनी, सुदृक्, सर्वज्ञा, सर्वदा, शारी, सुनासा, सुरकन्यका, सेना, सेनासुता, शृङ्गी, शृङ्गिणी, हाटकेश्वरी, होटिका, हारिणी, लिङ्गा, भगलिङ्गस्वरूपिणी, भगमाता, लिङ्गा, लिङ्गप्रीता, कलिङ्गजा, कुमारी, युवती, प्रौढ़ा, नवोढ़ा, प्रौढ़रूपिणी, रम्या, रजोवती, रज्जू, रजोली, राजसी, घटी, कैवर्ती, राक्षसी, रात्री, रात्रिञ्चरक्षयङ्करी, महोग्रा, मुदिता, भिल्ली, भल्लहस्ता, भयङ्करी, तिलाभा, दारिका, द्वा:स्था, द्वारिका, मध्यदेशगा, चित्रलेखा, वसुमती, सुन्दराङ्गी, वसुन्धरा, देवता, पर्वतस्था, परभूः, परमाकृति, परमूर्ति, मुण्डमाला, नागयज्ञोपवीतिनी, श्मशानकालिका, श्मश्रुः, प्रलयात्मा, प्रलोपिनी, प्रस्थस्था, प्रस्थिनी, प्रस्था, धूम्रार्चि, धूम्ररूपिणी, धूम्राङ्गी, धूम्रकेशा, कपिला, कालनाशिनी, कङ्काली, कालरूपा, कालमाता, मलिम्लुची, शर्वाणी, रुद्रपत्नी, रौद्री, रुद्रस्वरूपिणी, सन्ध्या, त्रिसन्ध्या, सम्पूज्या, सर्वैश्वर्यप्रदायिनी, कुलजा, सत्यलोकेशा, सत्यवाक्, सत्यवादिनी, सत्यस्वरा, सत्यमयी, हरिद्वारा, हरिन्मयी, हरिद्रत्नमयी, राशि, ग्रहतारातिथितनु।।८८-९९।।

तुम्बुरुस्त्रुटिका त्रोटी भुवनेशी भयापहा ।
राज्ञी राज्यप्रदा योग्या योगिनी भुवनेश्वरी ॥१००॥
तुरी तारा महालक्ष्मीर्भीडा भार्गी भयानका ।
कालरात्रिर्महारात्रिर्महाविद्या शिवालया ॥१०१॥
शिवासङ्गा शिवस्था च समाधिरग्निवाहना ।
अग्नीश्वरी महाव्याप्तिर्बलाका बालरूपिणी ॥१०२॥
वटुकेशी विलासा च सदसत्पुरभैरवी ।
विघ्नहा खलहा गाथा कथा कन्था शुभाम्बरा ॥१०३॥
क्रतुहा क्रतुजा क्रान्ता माधवी चामरावती ।
अरुणाक्षी विशालाक्षी पुण्यशीला विलासिनी ॥१०४॥
सुमाता स्कन्दमाता च कृत्तिका भरणी बलिः ।
जिनेश्वरी सुकुशला गोपी गोपतिपूजिता ॥१०५॥

गुप्ता गोप्यतरा ख्याता प्रकटा गोपितात्मिका।
कुलाम्नायवती कीला पूर्णा स्वर्णाङ्गदोत्सुका ॥१०६॥
उत्कण्ठा कलकण्ठी च रक्तपा पानपाऽमला।
संपूर्णचन्द्रवदना यशोदा च यशस्विनी ॥१०७॥
आनन्दा सुन्दरी सर्वानन्दा नन्दात्मजा लया।
विद्युत् खद्योतरूपा च सादरा जविका जविः ॥१०८॥
जननी जनहर्त्री च खर्परा खञ्जनेक्षणा।
जीर्णा जीमूतलक्ष्या च जटिनी जयवर्धिनी ॥१०९॥
जलस्था च जयन्ती च जम्भारिवरदा तथा।
सहस्रनामसम्पूर्णा देवी ज्वालामुखी स्मृता(१०००)॥११०॥

तुम्बरुस्त्रुटिका, त्रोटी, भुवनेश्वरी, भयापहा, राज्ञी, राज्यप्रदा, योग्या, योगिनी, भुवनेश्वरी, तुरी, तारा, महालक्ष्मी, भीड़ा, भार्गी, भयानका, कालरात्रि, महारात्रि, महाविद्या, शिवालया, शिवासङ्गा, शिवस्था, समाधिरग्निवाहना, अग्नीश्वरी, महाव्याप्ति, बलाका, बालरूपिणी, वटुकेशी, विलासा, सदसत्पुरभैरवी, विघ्नहा, खलहा, गाथा, कथा, शुभाम्बरा, क्रतुहा, क्रतुजा, क्रान्ता, माधवी, अमरावती, अरुणाक्षी, विशालाक्षी, पुण्यशीला, विलासिनी, सुमाता, स्कन्दमाता, कृत्तिका, भरणी, बलि, जिनेश्वरी, सुकुशला, गोपी, गोपतिपूजिता, गुप्ता, गोप्यतरा, ख्याता, प्रकटा, गोपितात्मिका, कुलाम्नायवती, कीला, पूर्णा, स्वर्णाङ्गदा, उत्सुका, उत्कण्ठा, कलकण्ठी, रक्तपा, पानपा, अमला, सम्पूर्णचन्द्रवदना, यशोदा, यशस्विनी, आनन्दा, सुन्दरी, सर्वानन्दा, नन्दात्मजा, लया, विद्युत्खद्योतरूपा, सादरा, जविका, जवि, जननी, जनहर्त्री, खर्परा, खञ्जनेक्षणा, जीर्णा, जीमूतलक्ष्या, जटिनी, जयवर्धिनी, जलस्था, जयन्ती, जम्भारिवरदा, ज्वालामुखी।।१००-११०।।

इति नाम्नां सहस्रं तु ज्वालामुख्याः शिवोदितम्।
चतुर्वर्गप्रदं नित्यं बीजत्रयप्रकाशितम् ॥१११॥
मोक्षैकहेतुमतुलं भुक्तिमुक्तिप्रदं नृणाम्।
स्तुत्यं च साधनीयं च सर्वस्वं सारमुत्तमम् ॥११२॥
महामन्त्रमयं विद्यामयं विद्याप्रदं परम्।
परब्रह्मस्वरूपं च साक्षादमृतरूपणम् ॥११३॥
अद्वैतरूपणं नाम्नां सहस्रं भैरवोदितम्।

माहात्म्य—इस प्रकार श्री शिव द्वारा कथित यह ज्वालामुखी-सहस्रनाम चतुर्वर्ग-प्रदायक होने के साथ-साथ बीजत्रय से नित्य प्रकाशित है। मनुष्यों के लिये यह मोक्ष का

एकमात्र साधन है। अतुल्य भोग और मोक्ष का दायक है। यह स्तुति के योग्य है, साधना के योग्य है एवं समस्त तत्त्वों का भी सर्वस्व है। यह महामन्त्रमय, विद्यामय, विद्याप्रद और श्रेष्ठ है। यह परब्रह्म का स्वरूप है। साक्षात् अमृत के समान है। भैरव द्वारा कथित यह सहस्रनाम अद्वैतरूप है।।१११-११३।।

यः पठेत् पाठयेद्वापि शृणोति श्रावयेदपि ।।११४।।
भक्त्या युतो महादेवि स भवेद्भैरवोपमः ।
शिवरात्र्यां च संक्रान्तौ ग्रहणे जन्मवासरे ।।११५।।
भैरवस्य बलिं दत्त्वा मूलमन्त्रेण मान्त्रिकः ।
पठेन्नामसहस्रं च ज्वालामुख्याः सुदुर्लभम् ।।११६।।
अनन्तफलदं गोप्यं त्रिसन्ध्यं यः पठेत् सुधीः ।
अणिमादिविभूतीनामीश्वरो धार्मिको भवेत् ।।११७।।

जो इसका पाठ करता है या करवाता है अथवा सुनता है या सुनाता है, वह महादेवी की भक्ति से युक्त होता है और भैरव के समान हो जाता है। शिवरात्रि में, संक्रान्ति में, ग्रहण में, जन्मदिन में साधक को मूल मन्त्र से बलि देकर ज्वालामुखी के अति दुर्लभ इस सहस्रनाम का पाठ करना चाहिये। अनन्त फलप्रद एवं गोप्य सहस्रनाम का पाठ जो तीनों सन्ध्याओं में करता है, वह अणिमादि सिद्धियों का स्वामी और धार्मिकों में श्रेष्ठ होता है।।११४-११७।।

अर्धरात्रे समुत्थाय शून्यगेहे पठेदिदम् ।
नाम्नां सहस्रकं दिव्यं त्रिवारं साधकोत्तमः ।।११८।।
कर्मणा मनसा वाचा ज्वालामुख्याः सुतो भवेत् ।
मध्याह्ने प्रत्यहं गत्वा प्रेतभूमिं विधानवित् ।।११९।।
नरमांसबलिं दत्त्वा पठेत् साहस्रनामकम् ।
दिव्यदेहधरो भूत्वा विचरेद्भुवनत्रयम् ।।१२०।।

आधी रात में उठकर सूने घर में इस दिव्य सहस्रनाम का पाठ साधक यदि तीन बार करता है तो वह मन-कर्म-वचन से ज्वालामुखी का पुत्र होता है। प्रतिदिन मध्याह्न में श्मशान में जाकर जो साधक नरमांस की बलि देकर इस सहस्रनाम का पाठ करता है, वह दिव्य देहधारी होकर तीनों लोकों में भ्रमण कर सकता है।।११८-१२०।।

शनिवारे कुजेऽष्टम्यां पठेन्नामसहस्रकम् ।
दत्त्वा क्षीरबलिं तस्यै करस्थाः सर्वसिद्धयः ।।१२१।।

विना नैवेद्यमात्रेण न रक्ष्यं साधकोत्तमैः ।
कुजवारे सदा देवि दत्त्वासवबलिं नरः ॥१२२॥
पठेत् साधक एवाशु लभेद् दर्शनमुत्तमम् ।
शनिवारे सदा विद्यां जप्त्वा दत्त्वा बलिं प्रिये ॥१२३॥
कपोतस्य महेशानि पठेन्नामसहस्रकम् ।
तद्गृहे वर्धते लक्ष्मीर्गोकर्णमिव नित्यशः ॥१२४॥

शनिवार या मङ्गलवार की अष्टमी में जो दूध की बलि देकर सहस्रनाम का पाठ करता है। उसके हाथ में सभी सिद्धियाँ आ जाती हैं। बिना नैवेद्य के इसका पाठ करने पर श्रेष्ठ साधक की रक्षा नहीं होती। जो साधक प्रत्येक मंगलवार को आसव की बलि प्रदान कर इस सहस्रनाम का पाठ करता है, वह शीघ्र ही ज्वालामुखी देवी का दर्शन प्राप्त करता है। जो साधक प्रत्येक शनिवार को कबूतर की बलि देकर सहस्रनाम का पाठ करता है, उसके घर में लक्ष्मी गोकर्ण के समान नित्य बढ़ती है।।१२१-१२४।।

शतावर्तं चरेद्रात्रौ साधको दर्शनं लभेत् ।
वन्ध्या वा काकवन्ध्या वा कुङ्कुमेन लिखेदिदम् ॥१२५॥
स्वस्तन्येन च शुक्रेण भूर्जे नामसहस्रकम् ।
गले वा वामबाहौ वा धारयेत् प्रत्यहं प्रिये ॥१२६॥
वन्ध्यापि लभते पुत्राञ्शूरान् विद्याधरोपमान् ।
इदं धृत्वा सव्यबाहौ गत्वा रणधरां प्रति ॥१२७॥
निर्जित्य शत्रुसङ्घातान् सुखी याति स्वकं गृहम् ।
वारत्रयं पठेन्नित्यं शत्रुनाशाय पार्वति ॥१२८॥

जो साधक रात में इसका एक सौ पाठ करता है, उसे देवी का दर्शन प्राप्त होता है। वन्ध्या या काकवन्ध्या इस सहस्रनाम को कुङ्कुम, अपने स्तन के दूध और पति के वीर्य से भोजपत्र पर प्रतिदिन लिखकर अपने गले या वामबाहु में धारण करे तो उसे विद्याधर के समान शूरवीर पुत्रों का लाभ होता है।

जो राजा इसे बाँयीं भुजा में धारण करके युद्धभूमि में जाता है, वह शत्रुसमूहों को जीतकर सुखपूर्वक घर लौट आता है। हे पार्वति! शत्रुनाश के लिये इसका पाठ तीन दिन करना चाहिये।।१२५-१२८।।

वारद्वयं पठेल्लक्ष्म्यै मुक्त्यै तु शतधा पठेत् ।
वश्यार्थे दशधा नित्यं मारणार्थे च विंशतिम् ॥१२९॥

स्तम्भनार्थे पठेन्नित्यं सप्तधा मान्त्रिकोत्तमः ।
भूम्यर्थे त्रिंशतिं देवि पठेन्नामसहस्रकम् ॥१३०॥
प्रत्यहमेकवारं तु मृतो मोक्षमवाप्नुयात् ।

धन प्राप्ति के लिये दो दिन पाठ करना चाहिये। मोक्ष-प्राप्ति के लिये एक सौ पाठ किया जाता है एवं वशीकरण के लिये नित्य दश पाठ किया जाता है। मारण के लिये नित्य बीस पाठ करे। उत्तम साधक को स्तम्भन के लिये नित्य सात पाठ करना चाहिये। भूमि-प्राप्ति के लिये नित्य तीस पाठ करे। जो मनुष्य प्रतिदिन एक पाठ करता है, उसे मरणोपरान्त मोक्ष प्राप्त होता है।।१२९-१३०।।

अप्रकाश्यमदातव्यमवक्तव्यमभक्तिषु ॥१३१॥
अशाक्तायाकुलीनाय कुपुत्राय दुरात्मने ।
गुरुभक्तिविहीनाय दीक्षाहीनाय पार्वति ॥१३२॥
दत्त्वा कुष्ठी भवेल्लोके परत्र नरकं व्रजेत् ।
श्रद्धायुक्ताय भक्ताय साधकाय महात्मने ।
साचाराय सुशीलाय दत्त्वा मोक्षमवाप्नुयात् ॥१३३॥

इति श्रीरुद्रयामले तन्त्रे दशविद्यारहस्ये श्रीज्वालामुखीसहस्रनामस्तोत्रम्॥४॥

अभक्तों को इसे नहीं बतलाना चाहिये, न देना चाहिये और न ही उनके सामने कहना चाहिये। जो शाक्त न हो, जो कुलमार्गी न हो, जो कुपुत्र, दुष्टात्मा, गुरुभक्ति- विहीन हो, उसे इसे नहीं बतलाना चाहिये। इन सबों को सहस्रनाम देने या बतलाने से बतलाने वाला इस संसार में कुष्ठरोगी होता है और मरने पर नरकवासी होता है। श्रद्धायुक्त, भक्त, साधक, महात्मा, आचारवान् एवं सुशील को देने से दाता को मोक्ष प्राप्त होता है।।१३१-१३३।।

इस प्रकार रुद्रयामल तन्त्रोक्त श्रीदेवीरहस्य की भाषा टीका में
श्रीज्वालामुखी सहस्रनाम पूर्ण हुआ।

●

अथ श्रीज्वालामुखीस्तोत्रम्

श्रीभैरव उवाच

तारं यो भजते मातर्बीजं तव सुधाकरम्।
पारावारसुता नित्यं निश्चला तद्गृहे वसेत्॥१॥
शून्यं यो दहनाधिरूढममलं वामाक्षिसंसेवितं
सेन्दुं बिन्दुयुतं भवानि वरदे स्वान्ते स्मरेत् साधकः।
मूकस्यापि सुरेन्द्रसिन्धुजलवद्वाग्देवता भारती
सद्यः पद्यपयीं निरर्गलतरा मातर्मुखे तिष्ठति॥२॥
शुभं वह्न्यारूढं मतियुतमनल्पेष्टफलदं
सबिन्द्वीन्दुं मन्दो यदि जपति बीजं तव प्रियम्।
तदा मातः स्वःस्त्रीजनविहरणक्लेशसहितः
सुखमिन्द्रोद्याने स्वपिति स भवत्पूजनरतः॥३॥

श्रीभैरव ने कहा—हे माते! तुम्हारे सुधाकर बीज ‘ॐ’ का जो जप करता है, उसके घर में नित्य अचञ्चला लक्ष्मी का वास होता है। अपने अन्त:करण में जो साधक ‘ह्रीं’ का स्मरण करता है, गूङ्गा होने पर भी उसके मुख में सरस्वती वास करती है और उसके मुख से कविता धाराप्रवाह निकलती है।

हे प्रिये! तुम्हारे बीज ‘श्रीं’ का जो जप करता है, वह इच्छानुसार स्त्रियों के साथ नन्दनवन में विहार करता है और तुम्हारी पूजा में लगा रहता है।।१-३।।

ज्वालामुखीति जपते तव नामवर्णान्
यः साधको गिरिशपत्नि सुभक्तिपूर्वम्।
तस्याङ्घ्रिपद्मयुगलं सुरनाथवेश्याः
सीमन्तरत्नकिरणैरनुरञ्जयन्ति॥४॥
पाशाम्बुजाभयधरे मम सर्वशत्रून्
शब्दं त्विति स्मरति यस्तव मन्त्रमध्ये।
तस्याद्रिपुत्रि चरणौ बहुपांसुयुक्तौ
प्रक्षालयन्त्यरिवधूनयनाश्रुपाताः॥५॥

भक्षयद्वयमिदं यदि भक्त्या साधको जपति चेतसि मातः ।
स स्मराररिव त्वत्प्रसादतस्त्वत्पदं च लभते दिवानिशम् ॥६॥

हे देवि! तुम्हारे नाम 'ज्वालामुखी' के वर्णों का जो साधक भक्तिपूर्वक जप करता है, उसके दोनों पादपद्मों को अप्सरायें अपने शिरोरत्न से अनुरञ्जित करती हैं। तुम्हारे मन्त्र के मध्य में 'पाशाम्बुजाभयधरे मम सर्वशत्रून्' जोड़कर जो जप करता है, उसके पाँवों को शत्रुपत्नियाँ अपने आँसुओं से धोती हैं। जो साधक भक्तियुक्त चित्त से 'भक्षय भक्षय' का जप दिन-रात करता है, वह शिव के समान होकर उनकी कृपा से शिवत्व को प्राप्त करता है।।४-६।।

कूर्चबीजमनघं यदि ध्यायेत् साधकस्तव महेश्वरि योऽन्तः ।
अष्ट हस्तकमलेषु सुवश्यास्तस्य त्र्यम्बकसमस्तसिद्धयः ॥७॥
ठद्वयं तव मनूत्तरस्थितं यो जपेत्तु परमप्रभावदम् ।
तस्य देवि हरिशङ्करादयः पूजयन्ति चरणौ दिवौकसः ॥८॥

हे महेश्वरि! जो साधक तुम्हारे अनघ कूर्च बीज 'हूं' का ध्यान त्र्यम्बक के आठ कर-कमलों, सहित करता है, वह सभी सिद्धियों को प्राप्त करता है। परम प्रभावपूर्ण तुम्हारे मन्त्र के 'स्वाहा' का जप जो साधक करता है, उसके चरणों की पूजा हरि-शङ्करादि देवता करते हैं।।७-८।।

ॐह्रींश्रीं त्र्यक्षरे देवि सुरासुरनिसूदिनि ।
त्रैलोक्याभयदे मातर्ज्वालामुखि नमोऽस्तु ते ॥९॥
उदितार्कद्युते लक्ष्मि लक्ष्मीनाथसमर्चिते ।
वराम्बुजाभयधरे ज्वालामुखि नमोऽस्तु ते ॥१०॥
सर्वसारमयि शर्वे सर्वामरनमस्कृते ।
सत्ये सति सदाचारे ज्वालामुखि नमोऽस्तु ते ॥११॥

ॐ ह्रीं श्रीं—तीन अक्षरों में रहनेवाली हे सुर-असुर-निसूदिनि, तीनों लोकों को अभय देनेवाली ज्वालामुखी देवि! तुम्हें प्रणाम है। नवोदित सूर्य की द्युति वाली, वर-अभय और पद्म धारण करने वाली, लक्ष्मी और विष्णु से पूजित हे ज्वालामुखि! तुमको प्रणाम है। सर्वसारमयी, शर्वाणी, सभी देवताओं से नमस्कृत, सत्याचरण में सर्वदा निरत रहने वाली हे ज्वालामुखि! तुझे प्रणाम है।।९-११।।

यस्या मूर्ध्नि शशी विलोचनगता यस्या रवीन्द्वग्नयः
पाशाम्भोजवराभयाः करतलाम्भोजेषु सद्धेतयः ।

गात्रे कुङ्कुमसन्निभा द्युतिरहिर्यस्या गले सन्ततं
देवीं कोटिसहस्ररश्मिसदृशीं ज्वालामुखीं नौम्यहम् ॥१२॥

जिसके मूर्धा में चन्द्रमा है; सूर्य, चन्द्र, अग्नि—ये तीन जिसके नेत्र हैं; जिसके हाथों में पाश, कमल, वर और अभय हैं; करतल कमल में सद् हेतियाँ हैं। जिसके गात्र कुङ्कुम के समान हैं। द्युति से युक्त हैं; जिसके गले में सर्प है; जो सदैव कोटि सहस्र किरणों के समान प्रज्ज्वलित है, उस ज्वालामुखी देवी को प्रणाम है।।१२।।

निद्रां नो भजते विधिर्भगवति शङ्का शिवं नो त्यजेद्
विष्णुर्व्याकुलतामलं कमलिनीकान्तोऽपि धत्ते भयम् ।
दृष्ट्वा देवि त्वदीयकोपदहनज्वालां ज्वलन्तीं तदा
देवः कुङ्कुमपीतगण्डयुगलः संक्रन्दनः क्रन्दति ॥१३॥

हे देवि! तुम्हारे क्रोध की प्रज्ज्वलित ज्वाला को देखकर ब्रह्मा की निद्रा गायब हो जाती है, शिव शङ्काकुल हो जाते हैं, विष्णु व्याकुल हो जाते हैं। कमलिनीकान्त सूर्य को भी भय हो जाता है। देवताओं के कुङ्कुम को समान लाल गाल पीले पड़ जाते हैं और वे जोर-जोर से रोने लगते हैं।।१३।।

यामाराध्य दिवानिशं सुरसरित्तीरे स्तवैरात्मभू-
रुद्यद्भास्वरघर्मभानुसदृशीं प्राप्तोऽमरज्येष्ठताम् ।
दारिद्र्योरगदष्टलोकत्रितयीसञ्जीविनीं मातरं
देवीं तां हृदये शशाङ्कशकलाचूडावतंसां भजे ॥१४॥

गङ्गा के तट पर अहर्निश आपकी स्तोत्रों से आराधना करके अत्यन्त तप्त सूर्य के समान भास्कर होकर जो लोग अमर ज्येष्ठता प्राप्त करते हैं, दरिद्रतारूपी सर्पदंश से पीड़ित तीनों लोकों के लिये हे माँ! आप सञ्जीविनी-स्वरूपा हैं। उस देवी के शशाङ्क शकल चूड़ा अवतंस वाले रूप का हम भजन करते हैं।।१४।।

आपीनस्तनश्रोणिभारनमितां कन्दर्पदर्पोज्ज्वलां
लावण्याङ्कितरम्यगण्डयुगलां यस्त्वां स्मरेत् साधकः ।
वश्यास्तस्य धराभृदीश्वरसुते गीर्वाणवामभ्रुवः
पादाम्भोजतलं भजन्ति त्रिदशा गन्धर्वसिद्धादयः ॥१५॥

आपका स्तन स्थूल है। कटि शरीरभार से झुकी हुई है, आप कामदेव के दर्प को चूर करने वाली हैं। आपके दोनों कपोल लावण्ययुक्त सुन्दर हैं। आपके इस रूप का स्मरण जो साधक करता है, उसके वश में नागिनियाँ और देवकन्याएँ होती हैं एवं जिसके पादपद्मों का देवगण, गन्धर्वगण एवं सिद्धादि सदा भजन करते हैं।।१५।।

हत्वा देवि शिरो विधेर्यदकरोत् पात्रं कराम्भोरुहे
शूलप्रोतममुं हरिं व्यगमयत् सद्भूषणं स्कन्धयोः ।
कालान्ते त्रितयं मुखेन्दुकुहरे शम्भोः शिरः पार्वति
तन्मातर्भुवने विचित्रमखिलं जाने भवत्याः शिवे ॥१६॥

हे देवि! महाकाल भैरव ब्रह्मा के शिर को काटकर अपने हाथ में पात्र के समान धारण करते हैं। त्रिशूल में प्रोत होकर विष्णु उनके कन्धे का आभूषण हो जाते हैं। प्रलय काल में तीनों लोक उनके मुख में चले जाते हैं। हे माते! इस भुवन में सब कुछ विचित्र है और इसका मर्म तुम्हें ही ज्ञात है।।१६।।

गायत्री प्रकृतिर्गलेऽपि विधृता सा त्वं शिवे वेधसा
श्रीरूपा हरिणापि वक्षसि धृताप्यर्धाङ्गभागे तथा ।
शर्वेणापि भवानि देवि सकलाः ख्यातुं न शक्ता वयं
त्वद्रूपं हृदि मादृशां जडधियां ध्यातुं कथैवास्ति का ॥१७॥

हे शिवे! जिस प्रकृति को गले में गायत्री ने धारण कर रखा है, वह तुम्हीं हो। विष्णु के वक्ष में विराजमान लक्ष्मीरूप में भी तुम्हीं हो। शिव के शरीर के आधे भाग में भी तुम्हीं हो। हे देवि! तुम्हारे समस्त स्वरूपों का वर्णन करने में जब स्वयं भगवान् शिव भी समर्थ नहीं हैं तो फिर मैं कैसे समर्थ हो सकता हूँ। हे भवानि! तुम्हारी सभी लीलाओं और रूपों का ध्यान मैं जड़बुद्धि अपने हृदय में कैसे कर सकता हूँ।।१७।।

ज्वालामुखीस्तवमिमं पठते यदन्तः
श्रीमन्त्रराजसहितं विभवैकहेतुम् ।
इष्टप्रदानसमये भुवि कल्पवृक्षं
स्वर्गं व्रजेत् सुरवधूजनसेवितः सः ॥१८॥

ज्वालामुखी के इस स्तोत्र का पाठ पूजा के अन्त में जो करते हैं और मन्त्रराज का जप करते हैं, उन्हें सभी प्रकार के वैभव प्राप्त होते हैं। इच्छित सिद्धि देने में यह स्तोत्र कल्पवृक्ष के समान है। देहान्त के बाद इसका साधक सुरवधू अप्सराओं से सेवित स्वर्गलोक में वास करता है।।१८।।

इति श्रीपरमाज्वालातत्त्वं पञ्चाङ्गमीरितम् ।
परारहस्यकं श्यामासर्वस्वं कुलसुन्दरि ॥१९॥
गोप्यं गुह्यतमं सारं शिवदं पुण्यवर्धनम् ।
कोटियज्ञफलप्राज्यं कुलाचारैककारणम् ॥२०॥
स्तुत्यं रोगापहं दिव्यं सर्वैश्वर्यप्रदायकम् ।
सर्वस्वभूतं देवेशि रहस्यं मम पार्वति ॥२१॥

इस प्रकार श्री ज्वाला का परमतत्त्व पञ्चाङ्ग का वर्णन पूरा हुआ। हे कुलसुन्दरि! यह परा रहस्य श्यामा सर्वस्व है। यह गोप्य, गुह्यतम, सार, कल्याणकारी, पुण्यवर्द्धक, कोटि यज्ञों का फल देने वाला एवं कुलाचार का एकमात्र साधन है। यह दिव्य स्तोत्र रोगविनाशक, सभी ऐश्वर्यों को देने वाला, देवेशी के रहस्य का सर्वस्व है।।१९-२१।।

परशिष्याय नो देयं दत्त्वा हानिर्भवेन्मनोः।
गुरुपूजां विधायादौ गुरुं सन्तोष्य यत्नतः ॥२२॥
गृह्णीयात् परमेशानि ज्वालामुख्या यथाविधि।
पञ्चाङ्गमखिलं दिव्यं रहस्यं पारदैवतम् ॥२३॥
सर्वसिद्धिर्भवेदाशु देवानामपि दुर्लभा।

दूसरे के शिष्य के लिये अदेय है। देने से मन्त्र सिद्ध नहीं होता है। पहले गुरु का पूजन करे, फिर यत्नपूर्वक उन्हें सन्तुष्ट करे तब परमेशानी ज्वालामुखी के स्तोत्र को यथाविधि ग्रहण करे। यह पञ्चाङ्ग परा देवता का सब कुछ है, दिव्य रहस्य है। इससे देवताओं को भी दुर्लभ सभी सिद्धियाँ थोड़े ही समय में मिल जाती हैं।।१९-२३।।

श्रीदेव्युवाच

क्रीतास्मि भवतानेन स्तोत्रेणापि महेश्वर।
सर्वथा तव दास्यस्मि पञ्चाङ्गश्रवणेन हि ॥२४॥

श्रीदेवी ने कहा कि इस स्तोत्र के द्वारा अपने मुझे खरीद लिया है। इस पञ्चाङ्ग को सुनकर मैं सर्वथा आपकी दासी हो गयी हूँ।।२४।।

श्रीभैरव उवाच

इदं रहस्यं परमं तव भक्त्या मयोदितम्।
पञ्चाङ्गमाखिलं देव्या गोपनीयं मुमुक्षुभिः ॥२५॥

इति श्रीरुद्रयामले तन्त्रे दशविद्यारहस्ये श्रीज्वालामुखीस्तोत्रम्॥५॥

श्री भैरव ने कहा—हे देवि! इस रहस्य का वर्णन मैंने तुम्हारी भक्ति से विवश होकर किया है। यह पञ्चाङ्ग मुमुक्षुओं से भी गोपनीय है।।२५।।

इस प्रकार रुद्रयामल तन्त्रोक्त श्रीदेवीरहस्य की भाषा टीका में
श्रीज्वालामुखीस्तोत्र पूर्ण हुआ।

समाप्तमिदं श्रीज्वालामुखीपञ्चाङ्गम्

अथ श्रीशारिकापञ्चाङ्गम्

श्रीशारिकापटलम्

पञ्चाङ्गप्रस्तावः

श्रीभैरव उवाच

शृणु देवि प्रवक्ष्यामि पटलं देवदुर्लभम्।
सर्वसिद्धिकरं दिव्यं सर्वैश्वर्यप्रदायकम्॥१॥
या देवदेवी वरदा शारिका त्रिपुरेश्वरी।
त्रैलोक्यजननी दुर्गा विद्या सप्ताक्षरी परा॥२॥
सप्तविद्येश्वरी सैव सप्तलोकान्तराश्रया।
सप्तद्वीपमयी पृथ्वी शून्यरूपा कुलेश्वरी॥३॥
या देवी चेतना लोके शिलारूपास्ति शारिका।
सर्वेप्सितप्रदा नित्यं प्रद्युम्नपीठमाश्रिता॥४॥
वक्ष्यामि पटलं तस्या मन्त्रोद्धारप्रकाशकम्।
यन्त्रोद्धारं लयाङ्गाढ्यं यथावद्वर्णयामि ते॥५॥
मन्त्रोद्धारं महद्गोप्यं सर्वसिद्धिप्रदं कलौ।
मन्त्रं हितार्थं लोकानां तत्रादौ शृणु पार्वति॥६॥

पञ्चाङ्गप्रस्ताव—श्रीभैरव ने कहा कि हे देवि! सुनिये, अब मैं देवदुर्लभ शारिका के पटल का वर्णन करता हूँ, जो सभी सिद्धियों को देने वाला, दिव्य और सभी ऐश्वर्यों को देने में सक्षम है। यह देवी शारिका वरदायिका, तीनों लोकों की स्वामिनी, जननी, दुर्गा विद्या, सप्ताक्षरी और परा हैं। यह सप्तविद्येश्वरी सात लोकों के अन्दर रहने वाली, सप्त द्वीपमयी पृथ्वी, शून्यस्वरूपा कुलेश्वरी हैं। यह देवी लोक में चेतन शिलारूप शारिका हैं। यह सभी आकांक्षाओं को पूर्ण करने वाली एवं नित्य प्रद्युम्न पीठ में रहने वाली है। इसके मन्त्रोद्धार-प्रकाशक पटल का वर्णन करता हूँ। लयाङ्ग से समन्वित यन्त्रोद्धार का यथावत् वर्णन करता हूँ। इसके अत्यन्त गुप्त सर्वसिद्धिप्रद मन्त्र का उद्धार करता हूँ। हे पार्वति! कलियुग में यह मन्त्र लोकहितकारी है। अत: पहले मन्त्रोद्धार सुनो।।१-६।।

शारिकामन्त्रोद्धारः

तारं परामातटसिन्धुरार्णाः खं शर्म तन्मध्यगतं च नाम।
अन्तेऽश्मरी पार्वति शारिकाया स्त्रयोदशार्णो मनुरस्ति गोप्यः ॥७॥

शारिकामन्त्रोद्धार—तार = ॐ, परा = ह्रीं, मा = श्रीं, तट = ह्रूं, सिन्धुर = द्रां, खं = आं, शर्म = शं, नाम = शारिकायै, अश्मरी = नमः के योग से यह मन्त्र बनता है—ॐ ह्रीं श्रीं हूं फ्रां आं शां शारिकायै नमः। शारिका का यह तेरह अक्षरों का मन्त्र गोपनीय है।।७।।

शारिकामन्त्रप्रशंसा

मन्त्रस्यास्य महादेवि न विघ्नो नापि दूषणम्।
न विपर्ययभीर्लोके सिद्धसाध्यारिसंशयः ॥८॥
पुरश्चर्याफलं नापि न कायक्लेशसंग्रहः।
साक्षात् सिद्धिप्रदो मन्त्रः सर्वविघ्नापहारकः ॥९॥
ब्रह्महत्या-सुरापान-महापातकजं मलम्।
प्रक्षालयति मन्त्रोऽयमभक्ष्यभक्षणं द्रुतम् ॥१०॥
मन्त्रमुत्कीलयेदादौ मन्त्रं सञ्जीवयेत्ततः।
सिद्धं मन्त्रं जपेन्मध्ये दद्यादन्ते च सम्पुटम् ॥११॥

शारिका-मन्त्रप्रशंसा—हे महादेवि! इस मन्त्र में न कोई विघ्न है! न दोष है। इसमें न कोई विपर्यय है, न ही सिद्ध, साध्य, अरि होने का संशय है। इसके पुरश्चरण-फल को प्राप्त करने में काया को कोई कष्ट नहीं होता है। यह मन्त्र साक्षात् सिद्धिप्रद और सभी विघ्नों का विनाशक है। ब्रह्महत्या, सुरापान, महापातकजन्य सभी मलों का प्रक्षालन करता है। यह मन्त्र अभक्ष्य-भक्षण जनित पाप का तुरन्त शमन करने वाला है। पहले मन्त्र का उत्कीलन करे, तब उसे सञ्जीवित करे। सिद्ध मन्त्र का जप आदि और अन्त में सम्पुट लगाकर करे।।८-११।।

ततः सिद्धमनुः सिद्धो नासाध्यो भवति ध्रुवम्।
अस्य मन्त्रस्य देवेशि प्रसादाद्भैरवोऽस्म्यहम् ॥१२॥
विष्णुर्नारायणो देवि ब्रह्मा लोकपितामहः।
न देयः परशिष्याय भक्तिहीनाय पार्वति ॥१३॥
अन्यथा सिद्धिहानिः स्यादुभयोः शिवशापतः।

उपर्युक्त प्रक्रिया पूर्ण करने पर ही यह सिद्धमन्त्र सिद्ध होता है। यह असाध्य कभी नहीं होता—यह निश्चित है। हे देवेशि! इस मन्त्र के प्रभाव से ही मैं भैरव हूँ। विष्णु

नारायण हैं और ब्रह्मा लोकपितामह हैं। इस मन्त्र को दूसरे के शिष्य को नहीं देना चाहिये। भक्तिहीनों को भी यह मन्त्र नहीं देना चाहिये। अन्यथा मन्त्र लेने और देने वाले—दोनों को ही सिद्धि नहीं होती। ऐसा शिव जी का शाप है।।१२-१३।।

शारिकामन्त्रर्ष्यादीनि

मन्त्रस्यास्य ऋषिः प्रोक्तो महादेवो महेश्वरि ।।१४।।
त्रिष्टुप् छन्दः समाख्यातं शारिका देवता स्मृता ।
शर्म बीजं रमा शक्तिः सिन्धुरं कीलकं स्मृतम् ।।१५।।
धर्मार्थकाममोक्षार्थे विनियोग इतीरितः ।
तारपरारमाबीजैः षड्दीर्घोच्चाररूपकैः ।।१६।।
न्यासं कुर्यात् षडङ्गादि येन देवीमयो भवेत् ।

विनियोग—अस्य मन्त्रस्य ऋषि: महादेव:, छन्द: त्रिष्टुप्, देवता शारिका, शां बीजम्, श्रीं शक्ति, फ्रां कीलकम्, धर्मार्थकाममोक्षार्थे विनियोग:।

न्यास—ॐ ह्रीं श्रीं के षड्दीर्घ रूप से करन्यास षडङ्ग न्यास करके साधक देवीरूप होकर जप करे।

करन्यास—ॐ ह्रां श्रां अंगुष्ठाभ्यां नम:। ॐ ह्रीं श्रीं तर्जनीभ्यां नम:। ॐ ह्रीं श्रूं मध्यमाभ्यां नम:। ॐ ह्रैं श्रैं: अनामिकाभ्यां नम:। ॐ ह्रौं श्रौं कनिष्ठाभ्यां नम:। ॐ ह्र: श्र: करतलकरपृष्ठाभ्यां नम:।

हृदयादि न्यास—ॐ ह्रां श्रां हृदयाय नम:। ॐ ह्रीं श्रीं शिरसे स्वाहा। ॐ ह्रूं श्रूं शिखायै वषट्। ॐ हैं श्रैं कवचाय हुम्। ॐ ह्रौं श्रौं नेत्रत्रयाय वौषट्। ॐ ह्र: श्र: अस्त्राय फट्।।१४-१६।।

ध्यानमस्याः प्रवक्ष्यामि जगच्चैतन्यकारणम् ।
येन ध्यातेन देवेशि परानन्दः प्रजायते ।।१७।।

हे देवेशि! समस्त चराचर जगत् के चैतन्य रहने में कारणभूता उस शारिका देवी के ध्यान का अब मैं वर्णन करता हूँ, जिसको करने से साधक में अलौकिक आनन्द उत्पन्न होता है।।१७।।

शारिकाध्यानम्

बालार्ककोटिद्युतिमिन्दुचूडां वरासिचक्राभयबाहुमाद्याम् ।
सिंहाधिरूढां शिववामदेह लीनां भजे चेतसि शारिकेशीम् ।।१८।।

शारिका-ध्यान—शारिका देवी की प्रभा करोड़ों नवोदित सूर्य के समान है। चूड़ा

में चाँद है। हाथों में वर, अभय, खड्ग और चक्र है। इनका वाहन सिंह है। शिवशरीर के वामार्द्ध में इनका निवास है। ऐसी शारिका देवी का ध्यान मैं अपने हृदय में करता हूँ।।१८।।

शारिकायन्त्रोद्धारः

यन्त्रोद्धारं प्रवक्ष्यामि साधकानां शुभावहम्।
सर्वार्थसाधकं दिव्यं सर्वाशापरिपूरकम् ॥१९॥
खत्रिकोणवसुकोणसुवृत्तोद्द्योतनागदलवृत्त(सत्रि)मण्डलम् ।
भूगृहं शिखिरवीन्दुभाञ्चितं यन्त्रमेतदुदितं शिवाऽऽलयम् ॥२०॥

शारिकायन्त्रोद्धार—साधकों के लिये कल्याणकारी यन्त्र का उद्धार करता हूँ। यह यन्त्र सभी मनोरथों का साधन है, दिव्य है एवं सभी आशाओं को पूरा करने वाला है। त्रिकोण, अष्टकोण, अष्टदल, तीन वृत्त और तीन भूपुर से शिव के आवासस्वरूप यह यन्त्र बनता है।।१९-२०।।

शारिकायन्त्र

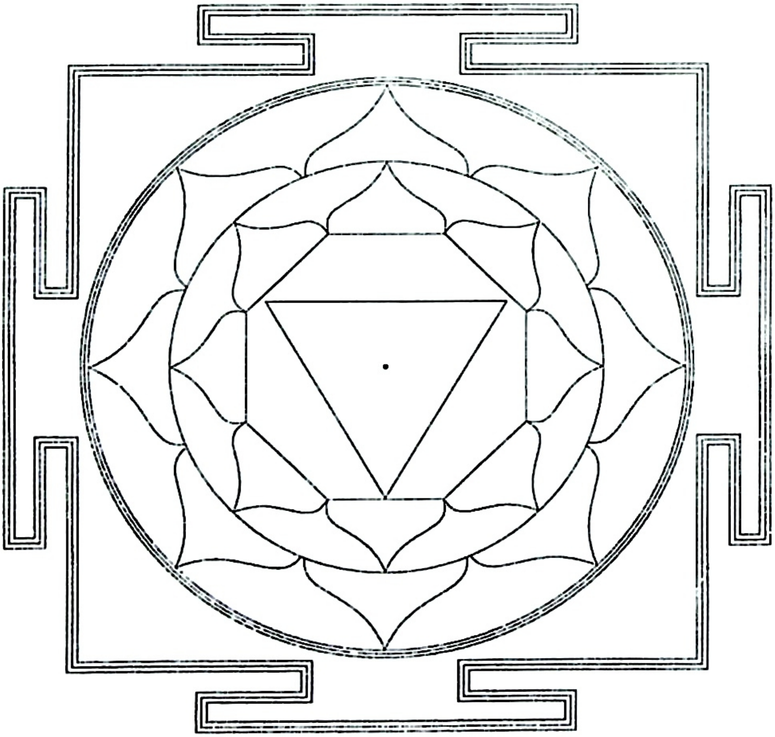

शारिकाया महायन्त्रं त्रैलोक्योद्धारकारकम्।
न देयं परशिष्येभ्यो दत्त्वा तु ब्रह्महा भवेत् ॥२१॥
लयाङ्गमस्य वक्ष्यामि ब्रह्मविष्णुसमर्चितम्।
यन्त्रराजस्य देवेशि चतुर्वर्गप्रदायकम् ॥२२॥

शारिका का यह महायन्त्र तीनों लोकों का उद्धार-कारक है। दूसरे के शिष्य को इसे नहीं देना चाहिये। देने से ब्रह्महत्या का पाप लगता है। अब ब्रह्मा-विष्णुसमर्चित इस यन्त्र के लयाङ्ग-पूजन का वर्णन करता हूँ। यह लयाङ्ग-पूजन चारो पुरुषार्थों को देने में समर्थ है।।२१-२२।।

शारिकालयाङ्गम्

गणेशधर्मवरुणाः कुबेरसहिताः शिवे।
पूज्या दूर्वाक्षतैः पुष्पैश्चतुर्द्वारिषु साधकैः ॥२३॥
इन्द्राद्याश्चैव दिक्पालास्तथेशानक्रमेण च।
ब्राह्मी च वैष्णवी देवी चण्डिकाप्यपराजिता ॥२४॥
कौमारी शाम्भवी चैव वाराही नारसिंहिका।
पूज्या वामक्रमेणैता मातृचक्रस्थमातरः ॥२५॥

लयाङ्ग-पूजन—भूपुर के चारों द्वारों पर गणेश, धर्म, वरुण, कुबेर का पूजन दूब-अक्षत-फूल से करना चाहिये। ईशानादि क्रम से इन्द्रादि दश दिक्पालों का पूजन करना चाहिये। ब्राह्मी, वैष्णवी, चण्डिका, अपराजिता, कौमारी, शाम्भवी, वाराही, नारसिंही का पूजन वामावर्त क्रम से मातृकाचक्र में करना चाहिये।।२३-२५।।

तत्रैव गुरवोऽभ्यर्च्यास्त्रिषु वृत्तेषु साधकैः।
गुरुं च परमं देवि परापरगुरुं तथा ॥२६॥
परमेष्ठिगुरुं देवि नुत्वा पूज्याश्च भैरवाः।
संहारो भीषणो देवि कपाल्युन्मत्तभैरवौ ॥२७॥
क्रोधश्चण्डो रुरुश्चैवमसिताङ्गो महेश्वरि।
इत्येतान् भैरवान् देवि वसुपत्रेषु पूजयेत् ॥२८॥
ब्राह्म्याद्या मातरो यत्र तत्र संपूजयेत् सदा।
भैरवान् दक्षिणावृत्त्या मातृचक्रं तु वामतः ॥२९॥

वृत्तत्रय के अन्तरालद्वय में गुरु, परमगुरु, परापरगुरु एवं परमेष्ठिगुरु का पूजन करे, प्रणाम करे। अष्टदल में संहार, भीषण, कपाली, उन्मत्त, क्रोध, चण्ड, रुरु और असिताङ्ग भैरव का पूजन करे। ब्राह्मी आदि मातृकाओं के स्थान में ही भैरवों का भी पूजन करे। भैरवी

का पूजन वामावर्त क्रम से और मातृकाओं का पूजन दक्षिणावर्त क्रम से किया जाता है।।२६-२९।।

अमा कामा च चार्वङ्गी देवी च टङ्कधारिणी।
तारा च पार्वती देवि संपूज्या यक्षिणी शिवा ।।३०।।
वामावर्तक्रमेणैव वसुकोणगताः शिवे।
कालिका त्रिपुरा दुर्गा पूज्या मध्यत्रिकोणगाः ।।३१।।
ईशानक्रमयोगेन यथाभीष्टफलप्रदाः।
मध्ये श्रीशारिकादेवीं वामदेवाङ्कमध्यगाम् ।।३२।।
मकारैः पञ्चभिः कौलः कौलाचारपरायणः।
संपूजयेन्महादेवि साधको मन्त्रसाधकः ।।३३।।
वरं चक्रं च खड्गं च पूजयेदभयं तथा।
बिन्दौ पुष्पाक्षतैश्चैव धूपदीपादितर्पणैः ।।३४।।
नैवेद्याचमनीयाद्यैस्ताम्बूलैश्च सुवासितैः।
लयाङ्गमिदमाख्यातं प्रयोगाञ्छृणु पार्वति ।।३५।।

हे देवि! अष्टकोण में अमा, कामा, चार्वङ्गी, टङ्कधारिणी, तारा, पार्वती, यक्षिणी और शिवा का पूजन करे। हे शिवे! मध्य त्रिकोण में कालिका, त्रिपुरा और दुर्गा का पूजन करे। ईशानक्रमयोग से इनका पूजन करने से अभीष्ट फल की प्राप्ति होती है। मध्य बिन्दु में वामदेव की गोद में बैठी शारिका देवी का पूजन कौलाचार-परायण कौल पञ्च मकारों—मद्य, मत्स्य, मीन, मुद्रा और मैथुन से करे। बिन्दुमण्डल में वर, अभय, चक्र एवं खड्ग का पूजन करे।

बिन्दु में शारिका देवी का पूजन गन्ध, पुष्प, अक्षत, धूप, दीप, नैवेद्य, तर्पण, आचमनीय और सुगन्धित ताम्बूल से करे। हे पार्वति! यह लयाङ्ग का वर्णन हुआ। अब इस मन्त्र का प्रयोग सुनो।।३०-३५।।

शारिकामन्त्रस्याष्टौ प्रयोगाः

स्तम्भनं मोहनं चैव मारणाकर्षणे तथा।
वशीकारं तथोच्चाटं शान्तिकं पौष्टिकं तथा ।।३६।।
एतेषां साधनं वक्ष्ये रहस्यं परमाद्भुतम्।
येन साधनमात्रेण साधको भैरवो भवेत् ।।३७।।

शारिका मन्त्र के आठ प्रयोग—स्तम्भन, मोहन, मारण, आकर्षण, वशीकरण,

उच्चाटन, शान्ति और पुष्टि के साधनभूत परम अद्भुत रहस्य का वर्णन करता हूँ। इनके साधनमात्र से ही साधक भैरवतुल्य हो जाता है।।३६-३७।।

स्तम्भनम्

रवौ स्नात्वा शिवे कूपे कृत्वा कर्माह्निकं तथा।
अर्धरात्रे निराहारो जपेन्मूलं चतुष्पथे ।।३८।।
अयुतं नियमेनैव दशांशं होममाचरेत्।
घृतरास्नाशटीक्षौद्रकृकलासादिभिः शिवे ।।३९।।
ब्रह्मा हरिः शिवो जिष्णुः स्तम्भवान् भवति ध्रुवम्।

स्तम्भन—हे शिवे! रविवार में कूपजल से स्नान करके दैनिक नित्य कर्म करके निराहार रहे। आधी रात में चौराहे पर जाकर दश हजार जप करे। उसका दशांश एक हजार हवन करे। हवनसामग्री में घी, रास्ना, शटी (आमा हलदी), मधु, गिरगिट आदि मिलावे। इससे ब्रह्मा, विष्णु, शिव, जिष्णु भी स्तभित होते हैं।।३८-३९।।

मोहनम्

चन्द्रे मध्याह्नसमये वेतसीमूलमण्डले ।।४०।।
त्रिकोणं मण्डलं कृत्वा श्रीचक्रं पूजयेत्ततः।
अयुतं प्रजपेन्मूलं नियमेन सुरेश्वरि ।।४१।।
हुनेदाज्यपेयोमत्स्यकर्पूरासवतज्जटाः ।
शीतोद्धृतेन देवेशि भस्मना तिलकं चरेत् ।।४२।।
तस्य दर्शनमात्रेण त्रैलोक्यं मोहमेष्यति।

मोहन—हे सुरेश्वरि! सोमवार के दोपहर दिन में वेतसी-मूलमण्डल में जाकर त्रिकोण मण्डल बनाकर श्रीचक्र का पूजन करे। मूल मन्त्र का जप दश लाख करे। गोघृत, दूध, मछली, कपूर, आसव एवं जिसे वश करना हो उसकी जटा के सम्मिश्रण से हवन करे। भस्म के ठण्ढ़ा होने पर उस भस्म से तिलक करे। उसको देखते ही तीनों लोक मोहित हो जाता है।।४०-४२।।

मारणम्

भौमे निशामुखे गत्वा श्मशानमयुतं जपेत् ।।४३।।
चितायां तत्र दीप्ताग्नौ हुनेदाज्यं सगोमयम्।
शमीमूले नरास्थीनि शत्रुनाम्ना निखातयेत् ।।४४।।
अपि देवसमो वापि शत्रुर्मृत्युमुखं व्रजेत्।

मारण—मङ्गलवार की रात के प्रथम प्रहर में श्मशान में जाकर दश हजार मन्त्र-जप करे। वहाँ चिता की प्रज्ज्वलित अग्नि में गोघृत और गोबर से हवन करे। नरास्थि से शत्रुनाम लिखकर शमी की जड़ में गाड़ दे। इससे देवता के समान शत्रु भी मृत्यु के मुख में चला जाता है।।४३-४४।।

आकर्षणम्

बुधे गत्वा वनं देवि वटाश्वत्थतले जपेत् ॥४५॥
अयुतं मूलमेकाकी हुनेत् पुष्पचयं सितम् ।
साज्यं सासवरक्तं च पुष्पाणि च महेश्वरि ॥४६॥
मेनका पीनवक्षोजा प्रातः प्रादुर्भविष्यति ।

आकर्षण—हे महेश्वरि! बुधवार को जङ्गल में जाकर वटवृक्ष या पीपलवृक्ष के नीचे मूल मन्त्र का जप अकेले दश हजार करे। उजले फूल, गोघृत, आसव, रक्त और पुष्प के मिश्रण से हवन करे। इससे भारी स्तनों वाली मेनका भी प्रात:काल साधक के पास उपस्थित हो जाती है।।४५-४६।।

वशीकरणम्

गुरौ गत्वा शवासीनो जपेन्मूलं चतुष्पथे ॥४७॥
अयुतं वायुतार्धं वा हुनेत् पायसमासवम् ।
स्वयं चासवलोलाक्षः साज्यं ताम्बूलमिश्रितम् ॥४८॥
इन्द्राग्नियममांसादवरुणानिलवित्तदाः ।
सेश्वराः सहसा तस्य वशमेष्यन्त्यसंशयम् ॥४९॥

वशीकरण—गुरुवार में चौराहे पर शव के ऊपर बैठकर मूल मन्त्र का जप दश हजार करे या पाँच हजार करे। खीर, मदिरा, गोघृत, ताम्बूल के मिश्रण से स्वयं आसव पीकर लोलाक्ष होकर हवन करे तो साधक के वश में इन्द्र, अग्नि, यम, निर्ऋति, वरुण, वायु, कुबेर, ईशान भी हो जाते हैं। इसमें संशय नहीं है।।४७-४९।।

उच्चाटनम्

शुक्रेऽर्धरात्रे विष्ट्यां वा गत्वा प्रेतालयं परम् ।
एकाकी प्रजपेत्तत्र कृत्वा पानाञ्जनं शिवे ॥५०॥
अयुतं तु चितावह्नौ हुनेदाज्यं सकाञ्जिकम् ।
चिताङ्गारचये देवि रिपोरुच्चाटनं भवेत् ॥५१॥

उच्चाटन—हे शिवे! शुक्रवार की आधी रात में श्मशान में अकेले जाकर शराब पीकर अञ्जन लगाकर दश हजार मन्त्र-जप करे। चिता की प्रज्ज्वलित अग्नि में गोघृत और काञ्जीक से हवन करे। हे देवि! उस चिता के अङ्गार को चुनने-मात्र से शत्रु का उच्चाटन हो जाता है।।५०-५१।।

शान्तिः

शनौ मध्याह्नसमये स्नात्वा कृत्वाह्निकीं क्रियाम्।
गत्वा देवालयं देवि देवीं ध्यात्वा यथाविधि ॥५२॥
तदग्रे पूजयेद्यन्त्रं जपेन्मूलमथायुतम्।
तत्र त्रिकोणकुण्डे तु हुनेदाज्यं सभैरवम् ॥५३॥
रुरुमांसं कुलेशानि कुक्कुटस्य शिरस्तथा।
सद्यः सर्वभयानां च शान्तिर्भवति पार्वति ॥५४॥

शान्ति—शनिवार को दोपहर दिन में स्नान करके दैनिक नित्य कर्म करे। देवालय में जाकर देवी का ध्यान यथाविधि करे। देवी के आगे यन्त्र का पूजन करे। मूल मन्त्र का जप दश हजार करे। त्रिकोण कुण्ड बनाकर उसमें गोघृत, मैरेय, रुरु मांस एवं मुर्गे के शिर के मिश्रण के हवन करे। हे पार्वति! इससे सभी प्रकार की भीतियों की शान्ति हो जाती है।।५२-५४।।

पुष्टिः

अष्टम्यां च चतुर्दश्यां गत्वा प्रेतालयं शिवे।
जपेदयुतमर्धं वा हुनेत् पायसशर्कराम् ॥५५॥
मृद्वीकां त्रींश्च मद्यादीन्महापुष्टिः प्रजायते।

पुष्टि—अष्टमी या चतुर्दशी में श्मशान में जाकर दश हजार या पाँच हजार मन्त्र-जप करे। खीर, शक्कर, मृद्विका और मदिरा के मिश्रण से हवन करे। इससे अलौकिक पुष्टि प्राप्त होती है।।५५।।

इत्येष विधिराख्यातः सर्वतन्त्रेषु गोपितः।
नाख्येयो न च देष्टव्यो योगिनीचक्रपूजकैः ॥५६॥
इत्येष पटलो गुह्यः सकलागमसारवान्।
रहस्यभूतोऽयं देवि गोपनीयो मुमुक्षुभिः ॥५७॥

इति श्रीरुद्रयामले तन्त्रे दशविद्यारहस्ये श्रीशारिकादेवीपटलः॥१॥

इस प्रकार सभी तन्त्रों में गोपित विधि का वर्णन पूरा हुआ। योगिनीचक्र के पूजकों को इसे न तो बतलाना चाहिये और न ही देना चाहिये। यह पटल गुह्य और सभी आगमों का सार है। रहस्य है। मुमुक्षुओं से भी इसे गुप्त रखना चाहिये।।५६-५७।।

इस प्रकार रुद्रयामल तन्त्रोक्त श्रीदेवीरहस्य की भाषा टीका में
श्रीशारिका देवी पटल पूर्ण हुआ।

●

अथ श्रीशारिकापूजापद्धतिः

श्रीभैरव उवाच

अधुना पद्धतिं वक्ष्ये शारिकार्चनसंयुताम्।
गद्यपद्यमयीं गोप्यां सकलागमनिश्चिताम् ॥१॥
प्रातःकृत्यमकृत्वा तु यो देवीं च समर्चयेत्।
तस्य पूजा तु विफला शौचहीना यथा क्रिया ॥२॥

श्री भैरव ने कहा कि हे देवि! अब मैं शारिका के अर्चन से युक्त शारिकापद्धति का वर्णन गद्य-पद्य में करता हूँ। यह सभी आगमों सुनिश्चित किया गया है और गोप्य है। प्रातःकृत्य न करके जो देवी का अर्चन करता है, उसकी पूजा वैसे ही विफल हो जाती है, जैसे कि शौचविहीन क्रिया निष्फल होती है।।१-२।।

तत्रादौ ब्राह्मे मुहूर्ते प्रातःकृत्यं विधाय नद्यां स्नानसन्ध्यादि कर्म कृत्वा, गृहमागत्य पूजामण्डपद्वारदेवताः पूजयेत्। यथा—ॐ ह्रीं द्वारश्रियै नमः ऊर्ध्वे, गं गणपतये नमः दक्षे, क्षां क्षेत्रपालाय नमः वामे, वां वास्तुपुरुषाय नमः देहल्यां, इत्यभ्यर्च्य वामपादपुरःसरमन्तः प्रविश्य, स्वासने उपविश्य, अस्य श्री आसनशोधनमन्त्रस्य मेरुपृष्ठ ऋषिः सुतलं छन्दः कूर्मो देवता आसनशोधने विनियोगः।

पृथ्वि त्वया धृता लोका देवि त्वं विष्णुना धृता।
त्वं च धारय मां देवि पवित्रं कुरु चासनम् ॥

'ॐ ह्रीं आधारशक्तिकमलासनाय नमः' इत्यासनं संपूज्य,

अपसर्पन्तु ते भूता ये भूता भुवि संस्थिताः।
ये भूता विघ्नकर्तारस्ते नश्यन्तु शिवाज्ञया ॥
पाषाण्डकरिणो भूता भूता भूम्यन्तरिक्षगाः।
अपसर्पन्तु ते सर्वे ते नश्यन्तु शिवाज्ञया ॥
भूताः प्रेताः पिशाचाश्च राक्षसाश्च सरीसृपाः।
अपसर्पन्तु ते सर्वे देव्या अस्त्रेण ताडिताः ॥

इति तालत्रयेण तर्जनीमध्यमाभ्यामूर्ध्वोर्ध्वं तालत्रयदानेन वामपार्ष्णिघातत्रयेण

च दिव्यदृष्ट्या च त्रिविधविघ्नानुत्सार्य, दशभिश्छोटिकाभिर्दशदिग्बन्धनं कृत्वा चतुर्दिक्षु वह्निप्राकारं सञ्चिन्त्य, प्राणायामत्रयं कुर्यात्।

सबसे पहले ब्राह्म मुहूर्त में उठकर प्रातः कृत्य करे। नदी में जाकर स्नान-सन्ध्यादि कर्म करे। घर पर आकर द्वारदेवता का पूजन करे। जैसे—ॐ ह्रीं द्वारश्रियै नमः ऊपर में, गं गणपतये नमः दाँयें, क्षां क्षेत्रपालाय नमः बाँयें, वां वास्तुपुरुषाय नमः नीचे।

इस प्रकार द्वारपूजन करके बाँयाँ पैर आगे बढ़ाकर घर में प्रवेश करे। आसन पर बैठकर आशन का शोधन करे—अस्य श्री आसनशोधनमन्त्रस्य मेरुपृष्ठ ऋषिः, सुतलं छन्दः, कूर्मो देवता, आसनशोधने विनियोगः।

पृथ्वि त्वया धृता लोका देवि त्वं विष्णुना धृता।
त्वं च धारय मां देवि पवित्रं कुरु चासनम्।।

'ॐ ह्रीं आधारशक्तिकमलासनाय नमः' इन मन्त्रों से आसन का पूजन करके भूतोत्सारण करे—

अपसर्पन्तु ते भूता ये भूता भूवि संस्थिता।
ये भूता विघ्नकर्तारस्ते नश्यन्तु शिवाज्ञया।।
पाषाण्डकारिणो भूता भूता भूम्यन्तरिक्षगाः।
अपसर्पन्तु ते सर्वे ते नश्यन्तु शिवाज्ञया।।
भूताः प्रेताः पिशाचाश्च राक्षसाश्च सरीसृपाः।
अपर्सपन्तु ते सर्वे देव्या अस्त्रेण ताड़िताः।।

इन श्लोकों को पढ़कर तर्जनी-मध्यमा सीधी करके तीन ताली बजाये। बाँयीं एँड़ी से पृथ्वी पर तीन बार आघात करे। एकटक देखते हुए तीनों प्रकार के विघ्नों का उत्सारण करे। दश बार चुटकी बजाकर दशो दिशाओं का बन्धन करे। चारो दिशाओं में अग्नि के दीवाल का चिन्तन करे। तीन प्राणायाम करे।

१६ पूरकम् ६४ कुम्भकम् ३२ रेचकम् इत्येकः, विपर्ययेण द्वितीयः, प्रथमवत् तृतीयः। इति प्राणायामत्रयेण निरस्तसकलकिल्विषं स्वदेहं देवताराधनयोग्यं विभाव्य न्यासं कुर्यात्। अस्य श्रीशारिकाभगवतीमन्त्रस्य महादेव ऋषिः, त्रिष्टुप् छन्दः, श्रीशारिकादेवी देवता, शां बीजं, श्रीं शक्तिः, फ्रां कीलकं, धर्मार्थकाममोक्षार्थे पूजने विनियोगः—इति कृताञ्जलिर्वदेत्। महादेवऋषये नमः शिरसि, त्रिष्टुप्छन्दसे नमो मुखे, श्रीशारिकादेवतायै नमो हृदि, शां बीजाय नमो गुह्ये, श्रीं शक्तये नमः पादयो, फ्रां

कीलकाय नमो नाभौ, पूजने विनियोगाय नमः सर्वाङ्गेषु। इति ऋष्यादिन्यासः।

ॐह्रांश्रां अङ्गुष्ठाभ्यां नमः, ॐ ह्रींश्रीं तर्जनीभ्यां नमः, ॐह्रूंश्रूं मध्यमाभ्यां नमः, ॐ ह्रैंश्रैं अनामिकाभ्यां नम;, ॐह्रौंश्रौं कनिष्ठाभ्यां नमः, ॐह्रःश्रः करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः इति करन्यासः। एवं षडङ्गेष्वपि न्यसेत्। इति न्यासैर्देहं सन्नह्य—

मूलाधारे मूलविद्यां विद्युत्कोटिसमप्रभाम्।
सूर्यकोटिप्रतीकाशां चन्द्रकोटिप्रभां प्रिये॥
बिसतन्तुस्वरूपां तां बिन्दुत्रिवलयां प्रिये।
ऊर्ध्वशक्तिनिपातेन सहजेन वरानने॥
मूलशक्तिदृढत्वेन मध्यशक्तिप्रबोधतः।
परमानन्दसन्दोहसानन्दां चिन्तयेत् पराम्॥

इत्यन्तर्यजनं कृत्वा, मूलाधारे आत्मान्तरात्मपरमात्मज्ञानात्मेत्यात्मचतुष्टयं सचतुरश्रं कुण्डल्यग्निसमुज्ज्वलं कुण्डं ध्यात्वा, तन्मुखे मूलान्ते 'अहन्तां जुहोमि स्वाहा' इत्यहन्तां समर्प्य, असत्यं पैशुन्यं कामं क्रोधं लोभं मदं मात्सर्यं जुहोमि सुषुम्नासक्तमनःस्रुवेण प्रत्येकं हुत्वा, अथवा

धर्माधर्महविर्दीप्ते स्वात्माग्नौ मनसा स्रुचा।
सुषुम्नावर्त्मना नित्यमक्षवृत्तीर्जुहोम्यहम्॥

इति हुत्वा पुनः हृत्कमले यथोक्तरूपां देवीं ध्यात्वा मानसोपचारैराराध्य यथाशक्ति जपहोमादिकं च मनसैव कृत्वा, कामकलारूपं स्वात्मानं विचिन्त्य स्वदेहं गन्धादिना संपूज्य कलशस्थापनं कुर्यात्।

सोलह मात्रा से पूरक, चौंसठ मात्रा से कुम्भक और बत्तीस मात्रा से रेचक करे। यह एक प्राणायाम माना जाता है। विपरीतक्रम से दूसरा प्राणायाम करे। तीसरा प्राणायाम प्रथमवत् करे। इस तीन प्राणायाम से अपने देह के सभी किल्विषों को विनष्ट समझे। अपने को देवता के आराधन के योग्य समझे। तब न्यास करे—

विनियोग—अस्य श्री शारिकामन्त्रस्य महादेव ऋषिः, त्रिष्टुप् छन्दः श्रीशारिका देवी देवता, शां बीजं, श्रीं शक्तिः, फ्रां कीलकं, धर्मार्थकाममोक्षार्थे विनियोगः। यह सब हाथ जोड़कर बोले।

ऋष्यादि न्यास—महादेवऋषये नमः शिरसि, त्रिष्टुप् छन्दसे नमः मुखे, श्रीशारिका-देवतायै नमः हृदि, शां बीजाय नमो गुह्ये, श्रीं शक्तये नमः पादयोः, फ्रां कीलकाय नमः नाभौ, पूजने विनियोगाय नमः सर्वाङ्गेषु।

करन्यास—ॐ ह्रां श्रां अंगुष्ठाभ्यां नमः। ॐ ह्रीं श्रीं तर्जनीभ्यां नमः। ॐ ह्रूं श्रूं मध्यमाभ्यां नमः। ॐ ह्रैं श्रैं अनामिकाभ्यां नमः। ॐ ह्रौं श्रौं कनिष्ठाभ्यां नमः। ॐ ह्रः श्रः करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः।

षडङ्गन्यास—ॐ ह्रां श्रां हृदयाय नमः। ॐ ह्रीं श्रीं शिरसे स्वाहा। ॐ ह्रूं श्रूं शिखायै वषट्। ॐ ह्रैं श्रैं कवचाय हुम्। ॐ ह्रौं श्रौं नेत्राय वौषट्। ॐ ह्रः श्रः अस्त्राय फट्।

इसके बाद अन्तर्यजन करे और निम्न श्लोकों का पाठे करे—

मूलाधारे मूलविद्यां विद्युत्कोटिसमप्रभाम्।
सूर्यकोटिप्रतीकाशां चन्द्रकोटिप्रभां प्रिये।।
बिसतन्तुस्वरूपां तां बिन्दुत्रिवलां प्रिये।
ऊर्ध्वशक्तिनिपातेन सहजेन वरानने।।
मूलशक्तिदृढ़त्वेन मध्यशक्तिप्रबोधतः।
परमानन्दसन्दोहसानन्दां चिन्तयेत् पराम्।।

इस प्रकार अन्तर्यजन करके मूलाधार में आत्मा, अन्तरात्मा, परमात्मा और ज्ञानात्माचतुष्टय से चतुरस्र कुण्ड बनाकर उसमें कुण्डलिनीरूपी प्रज्ज्वलित अग्नि का ध्यान करे। कुण्डलिनी के मुख में 'अहन्तां जुहोमि स्वाहा' कहकर अहन्ता को समर्पित करे। तब असत्यं जुहोमि, पैशुन्यं जुहोमि, कामं जुहोमि, क्रोधं जुहोमि, लोभं जुहामि, मदं जुहोमिं, मात्सर्यं जुहोमि से सुषुम्नासक्त मन की स्रुचा से प्रत्येक का हवन करे अथवा यह कहे—

धर्माधर्महविर्दीप्ते स्वात्माग्नौ मनसा स्रुचा।
सुषुम्नावर्त्मना नित्यमक्षवृत्तीर्जुहोम्यहम्।।

इस प्रकार के हवन के बाद फिर हृदयकमल में यथोक्तरूपा देवी का ध्यान करे। मानसोपचारों से पूजा करके मानसिक रूप से यथाशक्ति जप-होमादि करे। अपनी आत्मा का कामकलारूप में चिन्तन करे। अपने देह का पूजन गन्धादि से करे। तब कलश-स्थापन करे।

तत्र स्वदक्षे त्रिकोणं वृत्तमण्डलं विधाय 'आधारशक्तये नमः' इत्यभ्यर्च्य, तत्राधारं निधाय तदुपरि अस्त्राय फडिति शोधितं, नमः इति पूरितं, पात्रं शङ्खं वा संस्थाप्य, तत्र गङ्गे च यमुने चैवेत्यादिना तीर्थान्यावाह्य, ॐमिति गन्धादि निःक्षिप्य 'वह्निसूर्यसोमकलाभ्यो नमः' इति संपूज्य धेनुमुद्रां

प्रदर्श्य स्वमन्त्रेण संपूजयेदिति सामान्यार्घ्यं विधाय। ततः स्ववामे षट्कोणान्तर्गतत्रिकोणबिन्दुबाह्यवृत्तचतुरश्रं विधाय सामान्यार्घ्योदकेन तं मण्डलमभ्युक्ष्य, तत्र 'आधारशक्तिभ्यो नमः' इति संपूज्य आधारं संस्थाप्य 'रं वह्निमण्डलाय दशकलात्मने नमः' इति प्रपूज्य, फडिति कलशं प्रक्षाल्य कारणेन प्रपूर्य, रक्तवस्त्रमाल्यादिना संभूष्य देवीबुद्ध्या संस्थाप्य, 'अं अर्कमण्डलाय द्वादशकलात्मने नमः' इति कलशं संपूज्य, 'सौं सोममण्डलाय षोडशकलात्मने नमः' इति द्रव्यं संपूज्य फडिति संरक्ष्य, हूमित्यवगुण्ठ्य, मूलेन संवीक्ष्य, नम इत्यभ्युक्ष्य मूलेन गन्धमाघ्राय, कुम्भे पुष्पं दत्त्वा शापमोचनं कुर्यात्।

एकमेव परं ब्रह्म स्थूलसूक्ष्ममयं ध्रुवम्।
कचोद्भवां ब्रह्महत्यां तेन ते नाशयाम्यहम्॥
सूर्यमण्डलसंभूते वरुणालयसंभवे।
अमाबीजमयि देवि शुक्रशापाद्विमुच्यताम्॥
वेदानां प्रणवो बीजं ब्रह्मानन्दमयो यदि।
तेन सत्येन देवेशि ब्रह्महत्यां व्यपोहतु॥

इति त्रिः पठित्वा, ततो 'वां वीं वूं वैं वौं वः ब्रह्मशापमोचितायै सुरादेव्यै नमः' इत्यपि त्रिरुच्चार्य, हंसः शुचिषदित्यादि अद्रिजा ऋतमित्यन्तं त्रिः पठित्वा, आनन्दभैरवमष्टादशभुजं त्रिनयनं पञ्चमुखं सुरादेवीसहितं ध्यात्वा, '९ँ आनन्दभैरवाय वौषट् सहक्षमलवरयऊं सुरादेव्यै वौषट्' इति त्रिः संपूज्य, द्रव्यमध्ये दक्षिणावर्तेन त्रिपंक्त्या अं १६ कं १६ थं १६ इति विलिख्य, तन्मध्ये हंसः इति, तत्समावेशाद् द्रव्यमध्येऽमृतं विचिन्त्य, धेनुमुद्रयामृतीकृत्य वमिति सुधाबीजं मूलमपि चाष्टधा पठेत्। तयोर्मध्ये त्रिकोणंषट्कोणवृत्तचतुरश्रं विलिख्य चतुरश्रे 'पूर्णगिरिपीठाय नमः, उड्डीयानपीठाय नमः, कामरूपपीठाय नमः, जालन्धरपीठाय नमः' इति संपूज्य, षट्कोणे षडङ्गं संपूज्य, त्रिखण्डेन त्रिकोणाग्रदक्षोत्तरं संपूज्य, मध्ये 'आधारशक्त्यै नमः' इति संपूज्य, त्रिकोणगर्भे यन्त्रिकां संस्थाप्य, नमः इति सामान्यार्घ्यजलेनाभ्युक्ष्य मध्ये 'रं वह्निमण्डलाय दशकलात्मने नमः' इति संपूज्य, फडिति पात्रं प्रक्षाल्य यन्त्रिकोपरि संस्थाप्य, तत्र 'अं अर्कमण्डलाय द्वादशकलात्मने नमः' इति संपूज्य, त्रिकोणवृत्तषट्कोणं पात्रे विलिख्य समस्तव्यस्तमन्त्रेण संपूज्य वं मूलं विलोममातृकां च

पठन्नमृतेन त्रिकोणं प्रपूर्य तत्र गन्धादि निःक्षिप्य 'सौं सोममण्डलाय षोडशकलात्मने नमः' इति संपूज्य पूर्ववद्यन्त्रं द्रव्ये विलिख्य, त्रिकोणत्रिरेखायां अं १६ कं १६ थं १६ इति विलिख्य मूलेन त्रिकोणं त्रिः संपूज्य, षडङ्गेन षट्कोणं संपूज्य, गङ्गे च यमुने चैवेति तीर्थमावाह्य, आनन्दभैरवभैरव्यौ स्वस्वमन्त्रेण संपूज्य, पूर्वादितः ग्लूं गगनरत्नेभ्यो नमः पूर्वे। स्लूं स्वर्गरत्नेभ्यो नमः दक्षिणे। म्लूं मर्त्यरत्नेभ्यो नमः पश्चिमे। प्लूं पातालरत्नेभ्यो नमः उत्तरे। न्लूं नागरत्नेभ्यो नमः मध्ये इति संपूज्य मांसादि संशोधयेत्।

अपने दाहिने भाग में त्रिकोण वृत्त से मण्डल बनाकर 'आधारशक्तये नमः' से पूजन करे। उस पर आधार स्थापित करे, उस आधार पर 'अस्त्राय फट्' से शोधित पात्र या शङ्ख रखे। 'नमः' कहकर उसमें जल भरे। उस जल में 'गङ्गे च यमुने चैव' से तीर्थों का आवाहन करे। 'ॐ' से गन्धादि छोड़े। 'वह्निसूर्यसोमकलाभ्यो नमः' से पूजन करे। धेनुमुद्रा दिखावे। अपने मन्त्र से उसका पूजन करे। इस प्रकार सामान्यार्घ्य स्थापित करे।

अपने बाँयें भाग में बिन्दु, त्रिकोण, षट्कोण, वृत्त, चतुरस्र बनाकर सामान्यार्घ्योदक से उस मण्डल को प्रोक्षित करे। उसका पूजन 'आधारशक्तिभ्यो नमः' से करे। उस पर आधार रखे। आधार का पूजन 'रं वह्निमण्डलाय दशकलात्मने नमः' से करे। 'फट्' से कलश को धोये। मद्य से पूर्ण करे। रक्त वस्त्र-मालादि से सुशोभित करे। देवी मानकर उसे स्थापित करे। कलश का पूजन 'अं अर्कमण्डलाय द्वादशकलात्मने नमः' से करे। 'सौं सोममण्डलाय षोडशकलात्मने नमः' से द्रव्य का पूजन, 'हूं' से अवगुण्ठन, मूल मन्त्र से वीक्षण एवं 'नमः' से अभ्युक्षण कर मूल मन्त्र से गन्धग्रहण कर कलश में पुष्प छोड़कर शापमोचन करे। 'एकमेव परं ब्रह्म.....ब्रह्महत्यां व्यपोहतु' श्लोक को तीन बार पढ़कर 'वां वीं वूं वैं वौं वः ब्रह्मशापमोचितायै सुरादेव्यै नमः' इसे भी तीन बार उच्चारित कर 'हंस शुचिषद् .... अद्रिजा ऋतम्' इसे भी तीन बार पढ़कर अट्ठारह भुजा वाले, तीन नेत्र वाले एवं पाँच मुख वाले आनन्दभैरव का सुरादेवीसहित ध्यान करके उनका पूजन कर दक्षिणावर्त क्रम से 'अ' से 'अः', 'क' से 'त' एवं 'थ' से 'स' तक सोलह-सोलह वर्णों को तीन पंक्तियों में लिखकर उसके मध्य में हंस के समावेश से द्रव्य को अमृतस्वरूप मानकर धेनुमुद्रा द्वारा अमृतीकरण करते हुये सुधाबीज 'वं' एवं मूल मन्त्र का आठ बार जप करे। उनके मध्य में त्रिकोण, षट्कोण, वृत्त, चतुरस्र बनाकर चतुरस्र में 'पूर्णगिरिपीठाय नमः, उड्डीयानपीठाय नमः, कामरूपपीठाय नमः, जालन्धरपीठाय नमः से पीठपूजन कर, षट्कोण में षडङ्ग पूजा कर

त्रिकोण में आगे दाँईं तरफ त्रिखण्ड से पूजन कर मध्य में 'आधारशक्त्यै नमः' से पूजन कर त्रिकोण के मध्य में यन्त्र को स्थापित कर 'नमः' से सामान्यार्घ्य जल से अभ्युक्षण कर मध्य में 'रं वह्निमण्डलाय दशकलात्मने नमः' से पूजन कर 'फट्' से पात्र को धोकर यन्त्र के ऊपर स्थापित करे। वहाँ पर 'अं अर्कमण्डलाय द्वादशकलात्मने नमः' से पूजन कर पात्र में त्रिकोण, वृत्त, षट्कोण लिखकर समस्त व्यस्त मन्त्र से पूजन करे। वं ॐ ह्रीं श्रीं हूं क्रां आं शां शारिकायै नमः क्षं ळं हं सं..... आं अं विलोम मातृका कहकर कलश का तीन भाग अमृत से भरे। गन्धादि छोड़े। 'सौं सोममण्डलाय षोड़शकलात्मने नमः' से पूजन करे। द्रव्य पर पूर्ववत् यन्त्र लिखे। त्रिकोण की तीन रेखाओं में से प्रत्येक का पूजन करे। पहली रेखा का पूजन अं आं इं ईं उं ऊं ऋं ॠं ऌं ॡं एं ऐं ओं औं अं अः—इन सोलह स्वरों से करे। दूसरी रेखा का पूजन कं खं गं घं ङं चं छं जं झं ञं टं ठं डं ढं णं तं—इन सोलह व्यञ्जन वर्णों से करे। तीसरी रेखा का पूजन थं दं धं नं पं फं बं भं मं यं रं लं वं शं षं सं—इन सोलह व्यञ्जन वर्णों से करे। मूल मन्त्र से त्रिकोण का पूजन तीन बार करे। षडङ्ग मन्त्र से षट्कोण की पूजा करे। 'गङ्गे च यमुने चैव' से तीर्थों का आवाहन करे। आनन्दभैरव और आनन्दभैरवी का पूजन उनके मन्त्रों से करे। पूर्वादि क्रम से पूजा करे। पूर्व में—ग्लूं गगनरत्नेभ्यो नमः। दक्षिण में—स्लूं स्वर्गरत्नेभ्यो नमः। पश्चिम में—प्लूं पातालरत्नेभ्यो नमः। उत्तर में—न्लूं नागरत्नेभ्यो नमः। इस प्रकार पूजन करने के बाद मांसादि का शोधन करे।

मांसपात्रमानीय फडस्त्राय फडिति सामान्यार्घ्योदकेनाभ्युक्ष्य हुमित्यवगुण्ठ्य वमित्यमृतमुद्रयामृतीकृत्य मूलं सप्तधोच्चार्य 'प्र तद्विष्णुः स्तवते' इत्यृचा संशोधयेत्। त्र्यम्बकं यजामहे' इत्यृचा मीनं शोधयेत्।

ॐ विष्णुर्योनिं कल्पयतु त्वष्टा रूपाणि पिंशतु ।
आसिञ्चतु प्रजापतिर्धाता गर्भं दधातु ते ।
गर्भं धेहि सिनीवालि गर्भं धेहि सरस्वति ।
गर्भं ते अश्विनौ देवा आधत्तां पुष्करस्त्रजम् ॥

ॐ ह्सः भ्रौं जुंसः अमृते अमृतोद्भवे अमृतवर्षिणि अमृतं स्त्रावय २ स्वाहा, इति कुण्डगोलादिकं संशोध्यावगुण्ठ्यामृतीकृत्य तदुपरि सप्तधा मूलं सञ्जप्य तत्र देवीमावाह्य, तालत्रयेण दिग्बन्धनं विधाय योनिमुद्रां प्रदर्श्य ह्सौं नमः इति संपूज्य शंखमुद्रां प्रदर्श्य, षडङ्गेन सकलीकृत्य मत्स्यमुद्रया पात्रमाच्छाद्य मूलमुच्चरन् पात्रं देवीरूपं विभावयेत्। ततो घटसमीपे गुरुशक्तिभोगस्वपात्रयोगिनीवीरबलिपाद्यार्घ्याचमनीयमधु-

पर्कपात्राणि क्रमेण संस्थापयेत्। ततश्चर्वणयुतकारणेन तत्त्वमुद्रया श्रीपात्राद् बिन्दून्समुद्धृत्य 'आनन्दभैरवं तर्पयामि नमः' इति त्रिः सन्तर्प्य, ततः 'श्रीमच्छ्री- अमुकानन्दनाथश्रीगुरुपादुकां तर्पयामि नमः' इति त्रिः, एवं परमगुरुपर-माचार्यादीन् सन्तर्प्य, श्रीपात्रामृतेन मूलेन श्रीदेवीं सायुधां सवाहनां सपरिवारां तर्पयामि नमः, इति सन्तर्पयेदिति कलशस्थापनम्।

मांसपात्र को लेकर 'फट् अस्त्राय फट्' कहकर सामान्यार्घ्योदक से अभ्युक्षण करे। 'हूं' से अवगुण्ठन करे। 'वं' से अमृती मुद्रा से उसका अमृतीकरण करे। मूल मन्त्र का उच्चारण सात बार करे। 'प्रतद्विष्णु स्तवते' नामक ऋचा से शोधन करे। 'त्र्यम्बकं यजामहे' से मत्स्य का शोधन करे। निम्नलिखित ऋचाओं से कुण्ड-गोलादि का शोधन करे—

ॐ विष्णुर्योनिं कल्पयतु त्वष्टा रूपाणि पिंशतु।
आसिञ्चतु प्रजापतिर्धाता गर्भं दधातु ते।।
गर्भं धेहि सिनीवालि गर्भं धेहि सरस्वति।
गर्भं धेहि अश्विनौ देवा आधत्तां पुष्करस्त्रजम्।।

ॐ ह्सः श्रौं जुंसः अमृते अमृतोद्भवे अमृतवर्षिणि अमृतं श्रावय श्रावय स्वाहा।

इन मन्त्रों से कुण्ड-गोलादि का शोधन करके उनका अवगुण्ठन और अमृतीकरण करे। उन पर मूल मन्त्र का जप सात बार करे। उसमें देवी का आवाहन करे। तीन ताली बजाकर दिग्बन्ध करे। योनिमुद्रा दिखाये। 'ह्सौ नमः' से पूजा करे। शङ्खमुद्रा दिखाये। षडङ्ग मन्त्रों से सकलीकरण करे। मत्स्यमुद्रा से पात्र को आच्छादित करे। मूल मन्त्र का उच्चारण करके उसे देवीरूप समझे।

कलश के समीप गुरु, शक्ति, भोग, योगिनी, वीरबलि, स्वपात्र, पाद्य, अर्घ्य, आचमनीय, मधुपर्क पात्रों को क्रमशः स्थापित करे। तब चर्वणसहित कारण से तत्त्व-मुद्रा के द्वारा श्रीपात्र से कुछ बूँद द्रव्य लेकर 'आनन्दभैरवं तर्पयामि नमः' से तीन बार तर्पण करे। तब 'श्रीमच्छ्री अमुकानन्दनाथश्रीगुरुपादुकां तर्पयामि नमः' कहकर तीन बार तर्पण करे। इसी प्रकार परमगुरु और परमाचार्य आदि का तर्पण करे। श्रीपात्र के अमृत से मूल मन्त्रोच्चारण करके श्रीदेवी, उनके आयुध, वाहन, परिवार का तर्पण करे। मन्त्र है—श्रीदेवीं सायुधां सवाहनां सपरिवारां तर्पयामि नमः। इस प्रकार कलश-स्थापन की विधि पूर्ण होती है।

ततः पीठपूजां कुर्यात्। ॐ मण्डूकाय नमः, कालाग्निरुद्राय०, मूलप्रकृत्यै,

आधारशक्त्यै, कमठाय, अनन्ताय, पृथिव्यै, सुधार्णवाय, रत्नद्वीपाय, कल्पवनाय, नन्दनोद्यानाय, मणिमण्डपाय, मणिवेदिकायै, रत्नसिंहासनाय, सूर्यसोमवह्निमण्डलेभ्यो, ह्सौः सदाशिवमहाप्रेतासनाय नमः इति पीठं संपूज्य, वायुबीजेन वामनासापुटेन स्वहृदयाद् देवीं कुसुमाञ्जलौ संयोज्य,

देवेशि भक्तिसुलभे परिवारसमन्विते।
यावत् त्वां पूजयिष्यामि तावद् देवि इहावह॥

इति पठित्वा, मूलं श्रीवामदेवसहिते श्रीशारिकाभगवति इहागच्छ २ इह संतिष्ठ २ इह संनिधेहि २ संनिरुद्धा भव २ मम सर्वोपचारसहितां पूजां गृह्ण २ इत्यावाहनादिमुद्राः प्रदर्श्य, प्राणप्रतिष्ठां लेलिहानमुद्रया विधाय, दशदिग्बन्धनं कृत्वा अवगुण्ठ्य च धेनुयोनी प्रदर्श्य वरासिचक्राभयमुद्राश्च प्रदर्श्य, श्रीपात्रामृतेन सायुधां सवाहनां सपरिवारां सावरणां श्रीशारिका-भगवतीश्रीपादुकां तर्पयामि नमः इति त्रिः सन्तर्प्य, मूलं श्रीवामदेव-सहितशारिकाभगवत्यै पाद्यं नमः, एवमर्घ्यं स्वाहा, आचमनीयं सुधा, मधुपर्कं सुधा मुखे, स्नानीयं नमः,

पादुके परिधायाथ शारिके रत्ननिर्मिते।
स्नानमण्डपमायाहि स्नानार्थं शक्रदिग्गतम्॥

मूलेन स्नात्वा, पुनः

शारिके परिधायाथ पादुके रत्ननिर्मिते।
आगच्छ निर्मितं रम्यमलङ्कारस्य मण्डपम्॥

इति सुस्नाप्य शुद्धदुकूलेनाङ्गं प्रोञ्छ्य, विचित्रपटवस्त्रकुङ्कुमकस्तूरीचन्दन-सिन्दूरमुकुटकुण्डलहारादिनानालङ्कारान् दत्त्वा, मूलेन मध्यमानामाङ्गुष्ठाग्रैर्गन्धो नमः, एवमङ्गुष्ठतर्जनीभ्यां पुष्पाणि वौषट्, 'ॐ जगद्ध्वनिमन्त्रमातः स्वाहा' इति घण्टां संपूज्य वामेन पाणिना तां वादयन् मूलेन धूपं दद्यात्। एवं दीपचामरच्छत्रध्वजादर्शनैवेद्यादीन् निवेदयेत्। ततस्तत्त्वमुद्रया देवीं त्रिः सन्तर्प्य कृताञ्जलिः 'श्रीशारिकाभगवति आवरणं ते पूजयामि नमः' इत्याज्ञां गृहीत्वावरणपूजामारभेत्।

पीठपूजा—तब पीठपूजा करे। ॐ मण्डूकाय नमः, कालाग्निरुद्राय नमः। मूल प्रकृत्यै नमः। आधारशक्त्यै नमः। कमठाय नमः। अनन्ताय नमः। पृथिव्यै नमः। सुधार्णवाय नमः। रत्नद्वीपाय नमः। कल्पवनाय नमः। नन्दनोद्यानाय नमः। मणिमण्डपाय नमः।

मणिवेदिकायै नमः। रत्नसिंहासनाय नमः। सूर्यसोमवह्निमण्डलाभ्यां नमः। ह्सौः सदाशिवमहाप्रेतासनाय नमः। इन मन्त्रों से पीठपूजा करे। वायुबीज बोलकर वाम नासापुट से अपने हृदय से देवी को कुसुमाञ्जलि में संयोजित करके निम्न मन्त्र को पढ़े—

देवेशि भक्तिसुलभे परिवारसमन्विते।
यावत्त्वां पूजयिष्यामि तावद् देवि इहावह।।

यह पढ़कर इसका उच्चारण करे—ॐ ह्रीं श्रीं हूं फ्रां आं शां शारिकायै नमः श्रीवामदेवसहितश्रीशारिकाभगवति इहागच्छ इहागच्छ, इह संतिष्ठ इह संतिष्ठ. इह सन्निधेहि इह सन्निधेहि, सन्निरुद्धा भव सन्निरुद्धा भव, मम सर्वोपचारसहितां पूजां गृह्ण गृह्ण। इस प्रकार पढ़ते हुये आवाहनी मुद्रा दिखावे। लेलिहान मुद्रा से प्राणप्रतिष्ठा करे। दश दिग्बन्ध करे। अवगुण्ठन करे। धेनु-योनि-मुद्रा दिखाये। वर, असि, चक्र, अभयमुद्रा दिखाये। श्रीपात्र के अमृत से इस मन्त्र से तर्पण करे—सायुधां सवाहनां सपरिवारां सावरणां श्रीशरिकाभगवतीश्रीपादुकां तर्पयामि नमः। तीन बार तर्पण करे। तब पूजन करे—मूल मन्त्र श्रीवामदेवसहितशारिकाभगवत्यै पाद्यं नमः। मूल मन्त्र श्रीवामदेवसहितशारिकाभगवत्यै अर्घ्यं स्वाहा। मूल मन्त्र श्रीवामदेवसहितशारिकाभगवत्यै आचमनीयं सुधा मुखे। मूल मन्त्र श्रीवामदेवसहितशारिकाभगवत्यै मधुपर्कं सुधा मुखे। मूल मन्त्र श्रीवामदेवसहितशारिकाभगवत्यै स्नानीयं नमः। तदनन्तर—

पादुके परिधायाथ शारिके रत्ननिर्मिते।
स्नानमण्डपमायाहि स्नानार्थं शक्रदिग्गतम्।।

यह मन्त्र पढ़कर भावना करे कि देवी स्नानमण्डप में आ गयी। मूल मन्त्र 'ॐ ह्रीं श्रीं हूं फ्रां आं शां शारिकायै नमः' से स्नान कराये। फिर—

शारिके परिधायाथ पादुके रत्ननिर्मिते।
आगच्छ निर्मितं रम्यमलंकारस्य मण्डपम्।।

इस प्रकार स्नान कराकर शुद्ध वस्त्र से अङ्गों का प्रोक्षण करे। विचित्र पट्टवस्त्र, कुङ्कुम, कस्तूरी, चन्दन, सिन्दूर, मुकुट, कुण्डल, हारादि नाना अलङ्कार समर्पित करे। मूल मन्त्रोच्चारणपूर्वक मध्यमा-अनामा-अँगुष्ठ के योग से 'गन्धो नमः' से गन्ध समर्पित करे। मूल मन्त्रोच्चारणपूर्वक अँगुष्ठ-तर्जनी से 'पुष्पाणि वौषट्' से पुष्प दे। 'ॐ जगद्ध्वनिमन्त्रमातः स्वाहा' से घण्टा का पूजन करे। बाँयें हाथ से उसे बजाये, मूल मन्त्र से धूप प्रदान करे। इसी प्रकार दीपक, चामर, छत्र, ध्वज, ऐनक, नैवेद्य को निवेदित करे। तब तत्त्वमुद्रा से देवी का तीन बार तर्पण करे। हाथ जोड़कर इस प्रकार कहे—श्रीशारिकाभगवति आवरणं ते पूजयामि नमः। इस प्रकार आज्ञा लेकर आवरणपूजा प्रारम्भ करे।

तत्रादौ चतुर्द्वारपूजा। ॐह्रींश्रींगं गणपतिश्रीपादुकां पूजयामि नमस्तर्पयामि नमः। ॐ धं धर्मश्री०। ॐ वं वरुणश्री०। ॐ कुं कुबेरश्री०। पुष्पाञ्जलिं दत्त्वा योनिमुद्रया प्रणमेदिति चतुर्द्वारप्रथमरेखायां पूर्वादिक्रमेण पूजनम्।

अथ द्वितीयरेखायां—ॐह्रींश्रीं इन्द्रश्रीपादुकां पू०। ॐ अग्निश्री०। ॐ यमश्री। ॐ निर्ऋतिश्री०। ॐ वरुणश्री०। ॐ वायुश्री०। ॐ कुबेरश्री०। ॐ ईशानश्री०। ॐ ब्रह्मश्री०। ॐ विष्णुश्री०। पुष्पाञ्जलिं दत्त्वा योनिमुद्रया प्रणमेदिति।

ततस्तृतीयरेखायामेतेषामायुधानि पूजयेत्। यथा—ॐ वज्रश्री०। ॐ शक्तिश्री०। ॐ दण्डश्री०। ॐ खड्गश्री०। ॐ पाशश्री०। ॐ ध्वजश्री०। ॐ गदाश्री०। ॐ त्रिशूलश्री०। ॐ पद्मश्री०। ॐ चक्रश्री०। पुष्पाञ्जलिं दत्त्वा योनिमुद्रया प्रणमेदिति प्रथमावरणम्।

प्रथम आवरण—भूपुर की प्रथम रेखा के चारो द्वारों पर इनका पूजन पूर्वादि क्रम से करे—ॐ ह्रीं श्रीं गं गणपतिश्रीपादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि नमः। ॐ ह्रीं श्रीं धं धर्मश्रीपादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि नमः। ॐ ह्रीं श्रीं वं वरुणश्रीपादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि नमः। ॐ ह्रीं श्रीं कुं कुबेरश्रीपादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि नमः। पुष्पाञ्जलि देकर योनिमुद्रा से प्रणाम करे।

भूपुर की द्वितीय रेखा में पूर्वादि क्रम से दश दिक्पालों का पूजन करे—ॐ ह्रीं श्रीं इन्द्रश्रीपादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि नमः। ॐ ह्रीं श्रीं अग्निश्रीपादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि नमः। ॐ ह्रीं श्रीं यमश्रीपादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि नमः। ॐ ह्रीं श्रीं निर्ऋतिश्रीपादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि नमः। ॐ ह्रीं श्रीं वरुणश्रीपादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि नमः। ॐ ह्रीं श्रीं वायुश्रीपादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि नमः। ॐ ह्रीं श्रीं कुवेरश्रीपादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि नमः। ॐ ह्रीं श्रीं ईशानश्रीपादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि नमः। ॐ ह्रीं श्रीं ब्रह्माश्रीपादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि नमः। ॐ ह्रीं श्रीं विष्णुश्रीपादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि नमः। पुष्पाञ्जलि देकर योनिमुद्रा से प्रणाम करे।

तृतीय रेखा में दिक्पालों के आयुधों का पूजन पूर्वादि क्रम से करे—ॐ ह्रीं श्रीं वज्रश्रीपादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि नमः। ॐ ह्रीं श्रीं शक्तिश्रीपादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि नमः। ॐ ह्रीं श्रीं दण्डश्रीपादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि नमः। ॐ ह्रीं श्रीं खड्गश्रीपादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि नमः। ॐ ह्रीं श्रीं पाशश्रीपादुकां पूजयामि नमः

तर्पयामि नमः। ॐ ह्रीं श्रीं ध्वजश्रीपादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि नमः। ॐ ह्रीं श्रीं गदाश्रीपादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि नमः। ॐ ह्रीं श्रीं त्रिशूलश्रीपादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि नमः। ॐ ह्रीं श्रीं पद्मश्रीपादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि नमः। ॐ ह्रीं श्रीं चक्रश्रीपादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि नमः।

निम्न मन्त्र पढ़कर पुष्पाञ्जलि निवेदित करते हुये योनिमुद्रा से प्रणाम करते हुये पूजा समर्पित करे—

अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं प्रथमावरणार्चनम्।।

अथ त्रिवृत्तपूजा। तत्रादौ प्रथमरेखायां मू० दिव्यौघपराख्यगुरुपङ्क्तिश्रीपा०, द्वितीयरेखायां मूलं सिद्धौघापराख्यगुरुपङ्क्तिश्रीपा०, तृतीयरेखायां मूलं मानवौघपरापराख्यगुरुपङ्क्तिश्रीपा०, अत्रैव ॐ स्वगुरुश्री०, ॐ परमगुरुश्री, ॐ परमेष्ठिगुरुश्री०, ॐ परमाचार्यगुरुश्री०, इति पुष्पाञ्जलिं दत्त्वा योनिमुद्रया प्रणमेदिति द्वितीयावरणम्।

ततोऽष्टदलेषु मूलेन पुष्पाञ्जलिं दत्त्वा अष्ट मातृकाः पूजयेत्। यथा—स्वाग्रदलमारभ्य वामावर्तेन पूजनम्। ॐ ब्राह्मीश्री०। ॐ वैष्णवीश्री०। ॐ चण्डिकाश्री०। ॐ अपराजिताश्री०। ॐ कौमारीश्री०। ॐ शाम्भवीश्री०। ॐ वाराहीश्री०। नारसिंहिकाश्री० इति संपूज्य सन्तर्प्य, अष्टदलकेसरेषु दक्षावर्तेनाष्टभैरवान् पूजयेत्। ॐ असिताङ्गभैरवश्री०। ॐ रुरुभैरवश्री०। ॐ चण्डभैरवश्री०। ॐ क्रोधेशभैरवश्री०। ॐ उन्मत्तभैरवश्री० ॐ कपालिभैरवश्री०। ॐ भीषणभैरवश्री०। ॐ संहारभैरवश्री० इति संपूज्य सन्तर्प्य योनिमुद्रया प्रणमेदिति तृतीयावारणम्। (तत्रैव वामावृत्त्या ब्राह्म्यादीनां पूजा कार्या ।)

द्वितीय आवरण—वृत्तत्रय-पूजन—प्रथम रेखा में—मूल मन्त्र दिव्यौघपराख्यगुरुपंक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। द्वितीय रेखा में—मूल मन्त्र सिद्धौघापराख्यगुरुपंक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। तृतीय रेखा में—मूल मन्त्र मानवौघपरापराख्यगुरुपंक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। इसी में—ॐ ह्रीं श्रीं स्वगुरुश्रीपादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि नमः। ॐ ह्रीं श्रीं परमगुरुश्रीपादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि नमः। ॐ ह्रीं श्रीं परमेष्ठिगुरुश्रीपादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि नमः। ॐ ह्रीं श्रीं परमाचार्यगुरुश्रीपादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि नमः। निम्न मन्त्र पढ़कर पुष्पाञ्जलि देकर योनिमुद्रा से प्रणाम करते हुये पूजा का समर्पण करे—

अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं द्वितीयावरणार्चनम्।।

तृतीय आवरण—अष्टदल में मूल मन्त्र से पुष्पाञ्जलि देकर अष्ट मातृकाओं का पूजन करे। अपने सामने के दल से प्रारम्भ करके वामावर्त क्रम से पूजन करे—ॐ ह्रीं श्रीं ब्राह्मीश्रीपादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि नमः। ॐ ह्रीं श्रीं वैष्णवीश्रीपादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि नमः। ॐ ह्रीं श्रीं चण्डिकाश्रीपादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि नमः। ॐ ह्रीं श्रीं अपराजिताश्रीपादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि नमः। ॐ ह्रीं श्रीं कौमारीश्रीपादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि नमः। ॐ ह्रीं श्रीं शाम्भवीश्रीपादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि नमः। ॐ ह्रीं श्रीं नारसिंहीश्रीपादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि नमः। इनके पूजन के बाद इनका तर्पण करे।

अष्टदल के केसरों में दक्षिणावर्त क्रम से आठ भैरवों का पूजन करे—ॐ ह्रीं श्रीं असिताङ्गभैरवश्रीपादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि नमः। ॐ ह्रीं श्रीं रुरुभैरवश्रीपादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि नमः। ॐ ह्रीं श्रीं चण्डभैरवश्रीपादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि नमः। ॐ ह्रीं श्रीं क्रोधेशभैरवश्रीपादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि नमः। ॐ ह्रीं श्रीं उन्मत्तभैरवश्रीपादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि नमः। ॐ ह्रीं श्रीं कपालीभैरवश्रीपादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि नमः। ॐ ह्रीं श्रीं भीषणभैरवश्रीपादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि नमः। ॐ ह्रीं श्रीं संहारभैरवश्रीपादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि नमः।

पूजन के बाद तर्पण करे। यहीं पर वामावर्तक्रम से ब्राह्मी आदि की भी पूजा करे। योनिमुद्रा से प्रणाम करे। तदनन्तर निम्न मन्त्र पढ़ते हुये पुष्पाञ्जलि-प्रदानपूर्वक की गई पूजा को समर्पित करे—

अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं तृतीयावरणार्चनम्।।

अथ वसुकोणे मूलेन पुष्पाञ्जलिं दत्त्वा ॐ अमाश्री०। ॐ कामाश्री०। ॐ चार्वङ्गीश्री०। ॐ टङ्कधारिणीश्री०। ॐ ताराश्री०। ॐ पार्वतीश्री०। ॐ यक्षिणीश्री०। ॐ शिवाश्री० इति संपूज्य सन्तर्प्य योनिमुद्रया प्रणमेदिति चतुर्थावरणम्।

ततस्त्रिकोणेऽग्रकोणमारभ्य ॐ कलिकाश्री०। ईशाने ॐ त्रिपुरसुन्दरीश्री०। आग्नेये ॐ श्रीदुर्गाश्री०। इति संपूज्य सन्तर्प्य योनिमुद्रया प्रणमेदिति पञ्चमावरणम्।

चतुर्थावरण—अष्टकोण में पुष्पाञ्जलि मूलमन्त्र से देकर आठ मातृकाओं का पूजन करे—ॐ ह्रीं श्रीं अमाश्रीपादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि नमः। ॐ ह्रीं श्रीं कामाश्रीपादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि नमः। ॐ ह्रीं श्रीं चार्वङ्गीश्रीपादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि नमः। ॐ ह्रीं श्रीं टङ्कधारिणीश्रीपादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि नमः। ॐ ह्रीं श्रीं ताराश्रीपादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि नमः। ॐ ह्रीं श्रीं पार्वतीश्रीपादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि नमः। ॐ ह्रीं श्रीं यक्षिणीश्रीपादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि नमः। ॐ ह्रीं श्रीं शिवाश्रीपादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि नमः।

पूजन के बाद तर्पण करे। योनि मुद्रा से प्रणाम करे और कृत पूजा को निम्न मन्त्र पढ़ते हुये पुष्पाञ्जलि देकर समर्पित करे—

अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं चतुर्थावरणार्चनम्।।

पञ्चम आवरण—त्रिकोण में अग्रकोण से प्रारम्भ करके कोनों में पूजन करे—अग्रकोण में—ॐ ह्रीं श्रीं कालीश्रीपादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि नमः। ईशानकोण में—ॐ ह्रीं श्रीं त्रिपुरसुन्दरीश्रीपादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि नमः। अग्निकोण में—ॐ ह्रीं श्रीं दुर्गाश्रीपादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि नमः।

पूजन के बाद तर्पण करे। योनिमुद्रा से प्रणाम करे एवं पुष्पाञ्जलि देकर पूजा समर्पित करे—

अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं पञ्चमावरणार्चनम्।।

ततो बिन्दौ मूलेन पुष्पाञ्जलिं दत्त्वा तत्र यथोक्तरूपां श्रीदेवीं ध्यात्वा, पुष्पाञ्जलिं गृहीत्वा मूलं सप्तधोच्चार्य श्रीमच्छ्रीवामदेवसहितश्रीशारिकाभगवतीश्रीपादुकां पूजयामि नमस्तर्पयामि नमः, इति संपूज्य सन्तर्प्य पूर्ववद् गन्धकुसुमधूपदीपच्छत्रादिभिः संपूजयेत् (तत्रैव वराभयौ खड्गचक्रे यथोक्तविधिना पूज्यौ)। ततः कवचसहस्रनामस्तोत्राणि पठेत्, नित्यहोमं च कुर्यात्। ततो यथाशक्ति मूलं जप्त्वा 'गुह्यातिगुह्यगोप्त्री त्वं' इत्यादिना तर्पणं कुर्यात्।

षष्ठ आवरण—बिन्दु में मूल मन्त्र से पुष्पाञ्जलि देकर यथोक्त रूप से देवी का ध्यान करे। पुष्पाञ्जलि लेकर मूल मन्त्र का सात बार उच्चारण करके कहे—'श्रीमच्छ्रीवामदेवसहितश्रीशारिकाभगवतीश्रीपादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि नमः। इस प्रकार पूजन-

तर्पण करके विन्दुमण्डल में ही आयुधों का पूजन करे—ॐ ह्रीं श्रीं वरश्रीपादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि नमः। ॐ ह्रीं श्रीं अभयश्रीपादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि नमः। ॐ ह्रीं श्रीं खड्गश्रीपादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि नमः। ॐ ह्रीं श्रीं चक्रश्रीपादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि नमः।

तर्पण करके योनि मुद्रा से प्रणाम करे और पुष्पाञ्जलि देकर पूजा समर्पित करे—

अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं षष्ठावरणार्चनम्।।

इसके बाद सभी आवरणशक्तियों सहित श्रीदेवी का पूजन गन्ध, पुष्प, धूप, दीप, नैवेद्य, छत्रादि से करे। तब कवच, सहस्रनाम, स्तोत्र का पाठ करे। नित्य हवन करे। तब यथाशक्ति मूल मन्त्र का जप कर 'गुह्यातिगुह्यगोप्त्री त्वं' से जप समर्पण करे। तर्पण करे।

सर्वमङ्गल्यमाङ्गल्ये शिवे सर्वार्थसाधिके।
शरण्ये त्र्यम्बके गौरि नारायणि नमोऽस्तु ते॥

इति सप्तवारं प्रदक्षिणीकृत्य, सामयिकैः सह मूलेन पात्रवन्दनं कृत्वा, पात्रमुद्धृत्य मस्तकान्तं नीत्वा देव्या प्रसादीकृतं विभाव्य, मूलं आत्मतत्त्वं शोधयामि स्वाहा, मूलं विद्यातत्त्वं शोधयामि स्वाहा, मूलं शिवतत्त्वं शोधयामि स्वाहा, मूलं सर्वतत्त्वं शोधयामि स्वाहा, इति चुलकचतुष्टयं पीत्वा शेषं मूलमन्त्रं पठन् पिबेत्। चर्वणं च स्वीकृत्य,

नन्दन्तु साधकाः सर्वे विनश्यन्तु विदूषकाः।
अवस्था शाम्भवी मेऽस्तु प्रसन्नोऽस्तु गुरुः सदा॥

इत्यादि शान्तिस्तोत्रं पठित्वा, ईशाने मण्डलं विधाय तत्र निर्माल्येन 'निर्माल्यवासिन्यै नमः' इति संपूज्य सन्तर्प्य, सामान्यार्घ्योदकं गृहीत्वा 'इतः पूर्वं प्राणबुद्धिदेहधर्माधिकारतो जाग्रत्स्वप्नसुषुप्त्यवस्थासु मनसा वाचा कर्मणा पद्भ्यामुदरेण शिश्ना यत्कृतं तत्सर्वं मदीयं श्रीशारिका-भगवतीचरणार्पणमस्तु स्वाहा' इति सन्तर्प्य, सामान्यार्घ्यपात्रं गृहीत्वा—

साधु वासाधु यत्कर्म यद्यदाचरितं मया।
तत्सर्वं कृपया देवि गृहाण मम सिद्धये॥

इत्यपश्चक्रोपरि त्रिः परिभ्राम्य देवीहस्ते जलं निधाय शेषजलं स्ववामहस्ते संस्थाप्य मूलं पठन् सप्तधा स्वात्मानं प्रोक्षयेत्। ततः—

गच्छगच्छ परं स्थानं स्वस्थानं परमेश्वरि।
यत्र ब्रह्मादयो देवाः न विदुः परमं पदम्॥

इति पुष्पाञ्जलिना देवीं क्षमापयित्वा, संहारमुद्रया चक्रात् पुष्पं गृहीत्वाघ्राय

तिष्ठ तिष्ठ परे स्थाने स्वस्थाने परमेश्वरि।
यत्र ब्रह्मादयः सर्वे सुरास्तिष्ठन्ति मे हृदि॥

इति स्वहृदये देवीमानीय सुखं विहरेदिति।

सर्वमङ्गलमाङ्गल्ये शिवे सर्वार्थसाधिके।
शरण्ये त्र्यम्बके गौरि नारायणि नमोस्तु ते।।

का पाठ करके सात प्रदक्षिणा करे। सामयिकों के साथ मूल मन्त्र से पात्रवन्दना करे। पात्र को उठाकर मस्तक पर लाकर भावना करे कि यह देवी का प्रसाद है।

ॐ ह्रीं श्रीं हूं फ्रां आं शां शारिकायै नमः आत्मतत्त्वं शोधयामि स्वाहा। ॐ ह्रीं श्रीं हूं फ्रां आं शां शारिकायै नमः विद्यातत्त्वं शोधयामि स्वाहा। ॐ ह्रीं श्रीं हूं फ्रां आं शां शारिकायै नमः शिवतत्त्वं शोधयामि स्वाहा। ॐ ह्रीं श्रीं हूं फ्रां आं शां शारिकायै नमः सर्वतत्त्वं शोधयामि स्वाहा।

इन चार मन्त्रों से चार चुल्लू पीकर शेष का पान मूल मन्त्र पढ़कर करे, चर्वण करे। तब निम्न शान्ति स्तोत्र का पाठ करे—

नन्दन्तु साधकाः सर्वे विनश्यन्तु विदूषकाः।
अवस्था शाम्भवी मेऽस्तु प्रसन्नोऽस्तु गुरुः सदा।।

शान्तिस्तोत्र के पाठ के बाद पीठ के ईशान में मण्डल बनाकर निर्माल्य से 'निर्माल्यवासिन्यै नमः' से निर्माल्यवासिनी का पूजन करे, तर्पण करे, सामान्यार्घ्योदक लेकर इस प्रकार कहे—इतः पूर्वं प्राणवुद्धिदेहधर्माधिकारतो जाग्रत्-स्वप्न-सुषुप्ति-अवस्थासु मनसा वाचा कर्मणा पद्भ्यामुदरेण शिश्ना यत्कृतं तत्सर्वं मदीयं श्रीशारिका-भगवतीचरणार्पणमस्तु स्वाहा। इस प्रकार से तर्पण करके सामान्य अर्घ्यपात्र लेकर इस प्रकार कहे—

साधु वासाधु यत्कर्मं यद्याचरितं मया।
तत्सर्वं कृपया देवि गृहाण मम सिद्धये।।

इतना कहकर जल को श्रीचक्र पर तीन बार घुमाकर देवी के हाथ में दे दे। शेष जल अपने बाँयें हाथ में लेकर सात बार मूल मन्त्र का जप करे। सात बार अपना प्रोक्षण करे। तब निम्न श्लोक का पाठ करे—

गच्छ गच्छ परं स्थानं स्वस्थानं परमेश्वरि।
यत्र ब्रह्मादयो देवाः न विदुः परमं पदम्।।

पुष्पाञ्जलि लेकर देवी से क्षमा माँगे। संहारमुद्रा से श्रीचक्र से पुष्प लेकर सूँघे और इस प्रकार कहे—

तिष्ठ तिष्ठ परे स्थाने स्वस्थाने परमेश्वरि।
यत्र ब्रह्मादयः सर्वे सुरास्तिष्ठन्ति मे हृदि।।

इस प्रकार देवी को अपने हृदय में स्थापित करके सुखपूर्वक विहार करे।

इत्येषा नित्यपूजायाः पद्धतिर्गद्यरूपिणी ।
शारिकासर्वस्वरूपा न देया तत्त्ववादिभिः ।।
शारिकपद्धतिर्गुह्या नित्यार्चनक्रमाङ्किता ।
अदीक्षितान्यशिष्येभ्यो गोपनीया तु देशिकैः ।।

इति श्रीरुद्रयामले तन्त्रे दशविद्यारहस्ये
श्रीशारिकायाः पद्धतिः।।२।।

गद्य में लिखित सर्वस्वरूपा शारिका की यह नित्य पूजा पद्धति तत्त्ववादियों को भी नहीं देनी चाहिये। शारिकापद्धति अत्यन्त गुह्य है। यह नित्यार्चन क्रम में लिखित है। अदीक्षित या दूसरे के शिष्य या देशिकों से भी यह गोपनीय रखने के योग्य है।

इस प्रकार रुद्रयामल तन्त्रोक्त श्रीदेवीरहस्य की भाषा टीका में
श्रीशारिकापद्धति पूर्ण हुई।

●

अथ श्रीशारिकाकवचम्

श्रीभैरव उवाच

अधुना शृणु देवेशि शारिकाकवचं परम् ।
त्रैलोक्यमोहनं नाम मूलमन्त्रमयं परम् ॥१॥
यस्य श्रवणमात्रेण सर्वयज्ञफलं लभेत् ।
सर्वापत्तारणं दिव्यं सर्वसिद्धिप्रदं कलौ ॥२॥
सर्वस्वं मे रहस्यं मे परमं परमाद्भुतम् ।
धारणादस्य देवेशि विष्णुना स जलोद्भवः ॥३॥
दानवेन्द्रो हतः शीघ्रमन्धकारो यथेन्दुना ।
मयापि त्रिपुराध्यक्षो दानवो जिष्णुना बलः ॥४॥
जम्भो वृत्रासुरो देवि प्रभावादस्य वर्मणः ।

कवच-महिमा—हे देवेशि! अब मैं शारिका के श्रेष्ठ कवच का वर्णन करता हूँ। यह मूल मन्त्रमय है। इसे त्रैलोक्यमोहन कहते हैं। इस कवच के सुनने से ही सभी यज्ञों का फल प्राप्त होता है। कलियुग में सभी आपत्तियों से उबारने वाला यह कवच दिव्य और सभी सिद्धियों को देने वाला है। यह मेरा सर्वस्व है, मेरा रहस्य है। परम अद्भुत है। इसी को धारण करके विष्णु ने जल से बाहर आकर दानवेन्द्र का ठीक उसी प्रकार वध किया था, जैसे चन्द्रमा अन्धकार को दूर करता है। मैंने भी इसी के प्रभाव से त्रिपुरासुर का वध किया था। विष्णु ने भी इसी कवच के बल से जम्भ, वृत्रासुर आदि दानवों का वध किया था।।१-४।।

कवचस्यास्य देवेश ऋषिर्भैरव ईरितः ॥५॥
त्रिष्टुप् छन्दो देवता च त्रैलोक्यमोहनेश्वरी ।
शारिका शर्म बीजं च मा शक्तिः कीलकं गजः ।
त्रैलोक्यमोहविद्यार्थे विनियोगः प्रकीर्तितः ॥६॥

हे देवेशि! इस कवच के ऋषि भैरव, छन्द त्रिष्टुप्, त्रैलोक्यमोहनेश्वरी शारिका देवता, शां बीज, श्रीं शक्ति, फ्रां कीलक कहे गये हैं। त्रैलोक्यमोहन विद्या की प्राप्ति के लिये इसका विनियोग कहा गया है।।५-६।।

अस्य श्रीशारिकाभगवतीकवचस्य श्रीभैरव ऋषिः, त्रिष्टुप् छन्दः, त्रैलो-

क्यमोहनेश्वरी शारिकाभगवती देवता, शां बीजं, श्रीं शक्तिः फ्रां कीलकं, त्रैलोक्यमोहनकवचपाठे विनियोगः। भैरवऋषये नमः शिरसि। त्रिष्टुप्छन्दसे नमो मुखे। श्रीशारिकादेवतायै नमो हृदि। शां बीजाय नमो नाभौ। श्रीं शक्तये नमो गुह्ये। फ्रां कीलकाय नमः पादयोः। त्रैलोक्यमोहनकवचविनियोगाय नमः सर्वाङ्गेषु। शामिति षड्दीर्घयुक्तबीजेन कर-षडङ्गन्यासौ कृत्वा ध्यायेत्।

विनियोग—अस्य श्रीशारिकाभगवतीकवचस्य श्रीभैरव ऋषिः, त्रिष्टुप् छन्दः, त्रैलोक्यमोहनेश्वरी शारिका भगवती देवता, शां बीजं, श्रीं शक्ति, फ्रां कीलकं, त्रैलोक्यमोहनकवचपाठे विनियोगः।

ऋष्यादि न्यास—भैरवऋषये नमः शिरसि। त्रिष्टुप् छन्दसे नमः मुखे। श्रीशारिका देवतायै नमः हृदि। शां बीजाय नमो नाभौ। श्रीं शक्तये नमः गुह्ये। फ्रां कीलकाय नमः पादयोः। त्रैलोक्यमोहनकवचविनियोगाय नमः सर्वांगेषु।

करन्यास—शां अंगुष्ठाभ्यां नमः। शीं तर्जनीभ्यां नमः। शूं मध्यमाभ्यां नमः। शैं अनामिकाभ्यां नमः। शौं कनिष्ठाभ्यां नमः। शः करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः।

षडङ्ग न्यास—शां हृदयाय नमः। शीं शिवसे स्वाहा। शूं शिखायै वषट्। शैं कवचाय हुँ। शौं नेत्रत्रयाय वौषट्। शः अस्त्राय फट्।

इस प्रकार कर-षडङ्गन्यास करके देवी का ध्यान करे।

ध्यानम्

श्रीशङ्खचक्रमुसलाम्बुजयुग्महस्तां नागेन्द्रहारवलयां सितकण्ठमाल्याम्।
सिन्दूरकुङ्कुमसहस्रमरीचिदीप्तिं श्रीशारिकां त्रिनयनां हृदये स्मरामि ॥

ध्यान—भगवती शारिका के हाथों में शङ्ख, चक्र, मुसल और कमल है। गले में नागेन्द्र का हार है। वलय है। सितकण्ठ में माला है। सिन्दूर-कुङ्कुम की दीप्ति सहस्र सूर्य के समान है। तीन नेत्र हैं। इस रूप की शारिका देवी का स्मरण मैं अपने हृदय में करता हूँ।

कवचम्

ॐ मे दुर्गा शिरः पायादेकाक्षरविभूषणा।
ॐह्रीं चण्डी ललाटं मे जगदुल्लासरूपिणी ॥७॥
ॐह्रींश्रीं त्र्यक्षरा पातु भ्रुवौ मे भगमालिनी।
ॐह्रींश्रीं हूं च नेत्रेऽव्यात् सर्वमङ्गलमङ्गला ॥८॥
ॐह्रींश्रीं हूं फ्रां अव्यान्मे श्रुती शङ्करवल्लभा।
ॐह्रींश्रीं हूं फ्रां आं पातु नासां नारायणेश्वरी ॥९॥

कवच—ॐ एकाक्षरविभूषित दुर्गा मेरे शिर की रक्षा करें। ॐ ह्रीं जगत् उल्लासरूपिणी चण्डी मेरे ललाट की रक्षा करें। ॐ ह्रीं श्रीं त्र्यक्षरा भगमालिनी मेरे भ्रुवों की रक्षा करें। ॐ ह्रीं श्रीं हूं सर्वमङ्गला मेरे नेत्रों की रक्षा करें। ॐ ह्रीं श्रीं हूं फ्रां शङ्करवल्लभा मेरे कानों की रक्षा करें। ॐ ह्रीं श्रीं हूं फ्रां आं नारायणेश्वरी मेरी नासिका की रक्षा करें।।७-९।।

ॐह्रींश्रीं हूं फ्रां आं शां मे पातु वक्त्रं सरस्वती ।
अंआंइंईं रदान् पातु मातृकाशेखरेश्वरी ।।१०।।
उंऊंऋंॠं लृंलृंएंऐं पायादोष्ठौ भवप्रिया ।
ओंऔंअंअः गलं पातु नीलकण्ठासनेश्वरी ।।११।।
कंखंगंघंङं मे पातु स्कन्धौ स्कन्दसमर्चिता ।
चंछंजंझंञं मे पायाद् वक्षो वामप्रियाम्बिका ।।१२।।

ॐ ह्रीं श्रीं हूं फ्रां आं शां सरस्वती मेरे मुख की रक्षा करें। अं आं इं ईं मातृका शेखरेश्वरी मेरे दाँतों की रक्षा करें। उं ऊं ऋं ॠं लृं लृं एं ऐं भवप्रिया मेरे ओष्ठों की रक्षा करें। ओं औं अं अः नीलकण्ठासनेश्वरी मेरे गले की रक्षा करें। कं खं गं घं ङं स्कन्दसमर्चिता मेरे कन्धों की रक्षा करें। चं छं जं झं ञं वामप्रियाम्बिका मेरे वक्ष की रक्षा करें।।१०-१२।।

टंठंडंढंणं मे पायात् पार्श्वौ पर्वतनन्दिनी ।
तंथंदंधंनं मे पातु कुक्षिं कुलाकुलेश्वरी ।।१३।।
पंफंबंभंमं मे पातु नाभिं नारदसेविता ।
यंरंलंवं गुदं पातु गुह्यकेश्वरपूजिता ।।१४।।
शंषंसंहं कटिं पातु देवी कात्यायनी सदा ।
ळंक्षः ऊरू सदा पातु सर्वसारस्वतप्रदा ।।१५।।

टं ठं डं ढं णं पर्वतनन्दिनी मेरे दोनों पार्श्वों की रक्षा करें। मेरी कुक्षि तं थं दं धं नं कुलाकुलेश्वरी से संरक्षित हो। पं फं बं भं मं नारदसेविता से मेरी नाभि संरक्षित हो। यं रं लं वं गुह्यकेश्वरी के द्वारा गुदा संरक्षित हो। शं षं सं हं कात्यायनी के द्वारा मेरी कटि रक्षित हो। ळं क्षं सर्वसारस्वतप्रदा सदैव मेरे ऊरुओं की रक्षा करें।।१३-१५।।

ॐ शां जानू शिवा पातु ॐआं जङ्घेऽवतादुमा ।
ॐ फ्रां पादौ सदा पातु राजमातङ्गिनी मम ।।१६।।
ॐहूं पादादिमूर्धान्तं वपुर्मे पातु कुब्जिका ।
ॐश्रीं मूर्धादिपादान्तं वपुर्मे पातु शारदा ।।१७।।
ॐह्रीं सप्ताक्षरी पातु शारिका सकलं वपुः ।

ॐ शां शिवा मेरे जानुओं की एवं ॐ आं उमा मेरे जङ्घों की रक्षा करें। ॐ फ्रां राजमातङ्गिनी के द्वारा मेरे पैरों की रक्षा सदैव हो। ॐ हूं कुब्जिका आपाद मस्तक मेरे शरीर की रक्षा करें। ॐ श्रीं शारदा मूर्द्धादिपादान्त मेरे शरीर की रक्षा करें। ॐ ह्रीं श्रीं हूं फ्रां आं शां सप्ताक्षरी शारिका मेरे सारे शरीर की रक्षा करें।।१६-१७।।

पूर्वे मां पातु ब्रह्माणी वह्नौ मे वैष्णवी सदा ।।१८।।
दक्षिणेऽवतु मां चण्डी नैर्ऋते माऽपराजिता ।
पश्चिमेऽवतु कौमारी वायव्ये शाम्भवी च माम् ।।१९।।
वाराही चोत्तरे पायादीशाने नारसिंहिका ।
प्रभाते माममा पातु मध्ये कामाऽवताच्च माम् ।।२०।।

पूर्व में मेरी रक्षा ब्रह्माणी करे। आग्नेय में सदा वैष्णवी रक्षा करे। दक्षिण में रक्षिका चण्डी हो और अपराजिता से मैं नैर्ऋत्य में रक्षित होऊँ। कौमारी पश्चिम में और वायव्य में शाम्भवी मेरी रक्षा करें। वाराही उत्तर में और नारसिंही मेरी रक्षा ईशान में करें। प्रभात में अमा और मध्याह्न में कामा मेरी रक्षा करें।।१८-२०।।

चार्वङ्गी मां दिनान्तेऽव्यान्निशादौ टङ्कधारिणी ।
निशीथेऽव्यादुग्रतारा निशान्ते पार्वती च माम् ।।२१।।
सर्वत्र यक्षिणी पातु शिवा मां पातु सर्वदा ।
असिताङ्गः क्षितेः पातु रुरुर्मां पातु पाथसः ।।२२।।
चण्डो मां पातु मरुतः क्रोधोऽव्यान्मां हुताशनात् ।
उन्मत्तः सोमतः पातु कपाली सूर्यतोऽवतु ।।२३।।

सायंकाल में मेरी रक्षा चार्वङ्गी और रात में टङ्कधारिणी करें। निशीथ में उग्रतारा और निशान्त में मेरी रक्षा पार्वती करे। सर्वत्र मेरी रक्षा यक्षिणी करे और शिवा सर्वदा मेरी रक्षा करें। असिताङ्ग भूतल पर और रुरु मार्ग में मेरी रक्षा करें। चण्ड मेरी रक्षा वायु से करे और क्रोध अग्नि से रक्षा करें। उन्मत्त चन्द्रमा से और कपाली सूर्य से मेरी रक्षा करें।।२१-२३।।

भीषणो यज्ञविघ्नात्तु संहारः शून्यमण्डलात् ।
रणे मां कालिका पातु द्यूते त्रिपुरसुन्दरी ।।२४।।
दुर्गावतु विवादे मां श्रीचक्रं सर्वदावतु ।
सर्वत्र सर्वदा देवी पातु मां शारिका परा ।।२५।।
धनं पुत्रं सुतान् दारान् गृहं यद्वस्तु मामकम् ।
तत्तन्मम शिवः पातु वामदेवश्चिदीश्वरः ।।२६।।

भीषण यज्ञविघ्नों से और संहार शून्यमण्डल से मेरी रक्षा करें। युद्ध में कालिका और जुआ में मेरी रक्षा त्रिपुरसुन्दरी करें। दुर्गा विवाद में और श्रीचक्र मेरी रक्षा सदैव करें। सर्वत्र सर्वदा मेरी रक्षा परा देवी माँ शारिका करे। चिदीश्वर वामदेव शिव मेरे धन, पुत्र, पुत्रियों, पत्नी, गृह और जो भी मेरी वस्तुयें हैं, सबकी रक्षा करें।।२४-२६।।

कवचमाहात्म्यम्

इत्येतत् कवचं दिव्यं त्रिषु लोकेषु दुर्लभम्।
त्रैलोक्यमोहनं नाम शारिकाया रहस्यकम्॥२७॥
विनामुना न सिद्धिः स्यात् कवचेन्द्रेण पार्वति।
कोटिलक्षप्रजप्तस्य मन्त्रस्यास्य महेश्वरि॥२८॥
तस्मात् पठेच्छिवे वर्म मनुगर्भमनुक्षणम्।
सर्वोत्पातप्रशमनं बलबुद्धिप्रवर्धनम्॥२९॥

कवच-माहात्म्य—यह दिव्य कवच तीनों लोकों में दुर्लभ है। शारिका का यह त्रैलोक्यमोहन कवच देवी का रहस्य है। हे पार्वति! बिना इस कवच के इन्द्र को भी सिद्धि नहीं मिल सकती है। एक करोड़ लाख मन्त्र जप करने पर भी इसके बिना सिद्धि नहीं मिल सकती है। इसलिये हे शिवे! इस मन्त्रगर्भ मनु कवच का पाठ साधक को अवश्य करना चाहिये। इसके पाठ से सभी उत्पात शान्त हो जाते हैं एवं बल-बुद्धि में वृद्धि होती है।।२७-२९।।

परमानन्ददं लोके परमैश्वर्यकारणम्।
यः पठेत् पाठयेद्वापि शृणोति भावयेदपि॥३०॥
स एव भैरवाध्यक्षस्त्रैलोक्यविजयी विभुः।
रवौ भूर्जे लिखेद्वर्म स्वयम्भूकुसुमसृजा॥३१॥
कुसुमेनाष्टगन्धेन स्तन्येन निजरेतसा।
धारयेन्मूर्ध्नि वा बाहौ प्राप्नुयात् परमां गतिम्॥३२॥

इस संसार में यह परमानन्ददायक और सभी ऐश्वर्यों को प्रदान करने वाला है। जो इसका पाठ करता है या पाठ करवाता है, सुनता है या सुनवाता है, वह भैरवाध्यक्ष होकर त्रैलोक्यविजयी विभु हो जाता है। रविवार को भोजपत्र पर स्वयम्भू कुसुम, कुङ्कुम, अष्टगन्ध, स्त्रीदुग्ध एवं अपने वीर्य के घोल से इस कवच को लिखकर जो अपने मूर्धा में या बाँह में धारण करता है, वह परम गति को प्राप्त करता है।।३०-३२।।

धनकामी लभेद्वित्तं पुत्रकामी लभेत् प्रजाम्।
रणे रिपून्नरो हत्वा कल्याणी गृहमाविशेत्॥३३॥

धृत्वा वक्षसि देवेशि वाग्मित्वं जायते क्षणात्।
वन्ध्या च काकवन्ध्या च मृतवत्सा लभेत् सुतान् ॥३४॥
मार्कण्डेयायुषो देवि साक्षाद्वैश्रवणोपमान्।
किंकिं न लभते मर्त्यः पठन् कवचमुत्तमम् ॥३५॥

धन की कामना वाले को धन एवं पुत्रार्थी को पुत्र प्राप्त होता है। वह युद्ध में शत्रु का वध करके सुखपूर्वक घर लौट आता है। इस कवच को वक्ष पर धारण करने से क्षणमात्र में ही वाग्मीत्व प्राप्त होता है। वन्ध्या, काकवन्ध्या या मृतवत्सा को पुत्र प्राप्त होते हैं। वह मार्कण्डेय के समान दीर्घायु और कुबेर के समान धनी होता है। इस कवच के पाठ से मनुष्य को सभी कुछ प्राप्त होता है।।३३-३५।।

यः पठेदर्धरात्रे तु श्मशाने मुक्तकुन्तलः।
पीत्वा शीधुं स देवेशि देवीदर्शनमाप्नुयत् ॥३६॥
स्तम्भयेद्भास्करं वायुं मोहयेत् त्रिजगद् ध्रुवम्।
बहु किं कथ्यतां तस्य कवचस्यास्य धारणात् ॥३७॥
पठनाच्छ्रवणाद् वापि स भवेद् भैरवोपमः।
इतीदं कवचं देवि त्रैलोक्यवश्यकारणम् ॥३८॥

आधी रात में श्मशान में खुले केश से शीधु पीकर जो इस कवच का पाठ करता है, उसे देवी का दर्शन होता है। वह सूर्य और वायु को स्तम्भित कर सकता है और तीनों लोकों को मोहित कर सकता है। बहुत क्या कहा जाय, इसके धारण करने से पाठ या श्रवण करने से साधक भैरवतुल्य हो जाता है। हे देवि! यह कवच त्रैलोक्य को वश में करने वाला है।।३६-३८।।

त्रैलोक्यमोहनं नाम गोपनीयं सुरेश्वरि।
यस्य कस्य न दातव्यं विना शिष्येण पार्वति ॥३९॥
दीक्षिताय कुलीनाय दत्त्वा मोक्षमवाप्नुयात्।
विना दानं न गृह्णीयान्न दद्याद् दक्षिणां विना ॥४०॥
दत्त्वा गृहीत्वाप्युभयोः सिद्धिहानिर्भवेद् ध्रुवम्।

इसका नाम त्रैलोक्यमोहन है और हे सुरेश्वरि! यह गोपनीय है। हे पार्वति! अपने शिष्य के अतिरिक्त किसी दूसरे को इसे नहीं बतलाना चाहिये। दीक्षित और कुलीन को यह कवच देने से मोक्ष मिलता है। बिना दान के शिष्य इसे ग्रहण न करे और दक्षिणा के बिना गुरु इसे अपने शिष्य को न दे। ऐसा न करने से देने वाले और लेने वाले दोनों की सिद्धि में निश्चित ही हानि होती है।।३९-४०।।

अन्यथा यस्तु गृह्णीयाद् दद्याद्वा कवचेश्वरम् ।।४१।।
पुत्रान् दारान् सुतांश्चैव(तस्य)योगिन्यो भक्षयन्ति हि ।
अज्ञात्वा कवचं देवि पूजयेच्छ्रीशिलां शिवे ।।४२।।
स भेवच्छिवहा सत्यं सर्वोपद्रवसङ्कुलः ।
धृत्वा यः कवचं देवि पूजयेच्छ्रीशिलां शिवे ।।४३।।
स एव परमां सिद्धिं लभते नात्र संशयः ।

ऐसा न करके जो कवच ग्रहण करता है और कवच देता है, उन दोनों के पुत्रों, पत्नियों एवं पुत्रियों का भक्षण योगिनियाँ कर लेती हैं। हे शिवे! इस कवच को जाने बिना जो श्रीयन्त्र का पूजन करता है, वह शिवघाती होता है और सभी उपद्रवों से घिर जाता है। इस कवच को धारण करके जो श्रीचक्र का पूजन करता है, वह परम सिद्धि प्राप्त करता है, इसमें कोई संशय नहीं है।।४१-४३।।

इतीदं कवचं देवि सारं सर्वस्वमुत्तमम् ।।४४।।
रहस्यं शारिकारत्नं गोपनीयं स्वयोनिवत् ।
सर्वकामप्रदं दिव्यं त्रैलोक्यमोहनाभिधम् ।।४५।।

इति श्रीरुद्रयामले तन्त्रे दशविद्यारहस्ये श्रीशारिकायाः
त्रैलोक्यमोहनकवचम्।।३।।

यह कवच उत्तम सार सर्वस्व है। शारिकारहस्य का रत्न है। हे देवि! अपनी योनि के समान यह कवच गोपनीय है। त्रैलोक्यमोहन नामक यह कवच दिव्य और सभी मनोरथों को पूर्ण करने वाला है।।४४-४५।।

इस प्रकार रुद्रयामल तन्त्रोक्त श्रीदेवीरहस्य की भाषा टीका में
श्रीशारिका का त्रैलोक्यमोहनकवच पूर्ण हुआ।

●

अथ श्रीशारिकासहस्रनामकम्

सहस्रनाममाहात्म्यम्

श्रीभैरव उवाच

या सा देवी पुराख्याता शारिकारूपधारिणी।
जालन्धरराक्षसघ्नी प्रद्युम्नशिखरे स्थिता ॥१॥
तस्या नामसहस्रं ते मन्त्रगर्भं जयावहम्।
कथयामि परां विद्यां सहस्राख्याभिधां शिवे ॥२॥
शिलायाः शारिकाख्यायाः परसर्वस्वरूपिणीम्।
विना नित्यक्रियां देवि विना न्यासं विनार्चनम् ॥३॥
विना पुरस्क्रियां जाप्यं विना होमं च तर्पणम्।
विना श्मशानगमनं विना समयपूजनम् ॥४॥
यया लभेत् फलं सर्वं तां विद्यां शृणु पार्वति।
या देवी चेतना लोके शिलारूपास्ति शारिका ॥५॥
सृजत्यवति विश्वं तु संहरिष्यति तामसी।
सैव संसारिणां देवि परमैश्वर्यदायिनी ॥६॥

सहस्रनाम-माहात्म्य—श्री भैरव ने कहा कि जिस शारिकारूपधारिणी देवी का जिक्र पहले किया गया था, वह जालन्धर राक्षस का वध करने वाली है और प्रद्युम्न-शिखर पर विराजमान रहती है। हे शिवे! उसके विजयदायक मन्त्रगर्भ सहस्रनामरूप पराविद्या का मैं वर्णन करता हूँ। शिला नाम की शारिका परसर्वस्वरूपिणी हैं। हे पार्वति! यह वह विद्या है, जिससे बिना नित्य क्रिया, बिना न्यास, बिना अर्चन, बिना पुरश्चरण-जप, बिना हवन-तर्पण, बिना श्मशानगमन, बिना समय-पूजन के सभी फल सहज ही प्राप्त होते हैं। जो देवी चेतन संसार में शिलारूप में रहती हैं, वह शारिका देवी विश्व की सृष्टि करती है, पालन करती है और तामसी रूप में प्रलय करती है, वही देवी संसारियों को सभी प्रकार के ऐश्वर्य भी देती है।।१-६।।

परपदप्रदाप्यन्ते महाविद्यात्मिका शिला।
तस्या नामसहस्रं ते वर्णयामि रहस्यकम् ॥७॥
रहस्यं मम सर्वस्वं सकलाचारवल्लभम्।

यो जपेत् परमां विद्यां पठेदाख्यासहस्रकम् ॥८॥
धारयेत् कवचं दिव्यं पठेत् स्तोत्रेश्वरं परम् ।
किं तस्य दुर्लभं लोके नाप्नुयाद् यद्यदीश्वरि ॥९॥

अन्त में यह शिला परम पद देती है। यह शिला महाविद्यात्मिका है। उसके रहस्यरूप सहस्रनाम का मैं वर्णन करता हूँ। यह रहस्य मेरा सर्वस्व है और सभी आचारों का वल्लभ है। जो इस परमा विद्या का जप करता है, सहस्रनाम का पाठ करता है, कवच धारण करता है और स्तोत्रेश्वर का पाठ करता है, हे ईश्वरि! उसके लिये संसार में कुछ भी प्राप्त करना दुर्लभ नहीं है।।७-९।।

अस्य नाम्नां सहस्रस्य महादेव ऋषिः स्मृतः ।
छान्दोऽनुष्टुब् देवता च शारिका परिकीर्तिता ॥१०॥
शर्म बीजं रमा शक्तिः सिन्धुरः कीलकं स्मृतम् ।
धर्मार्थकाममोक्षार्थे विनियोगः प्रकीर्तितः ॥११॥
ध्यानमस्याः प्रवक्ष्यामि शृणु पर्वतनन्दिनी ।

इस सहस्रनाम के ऋषि महादेव कहे गये हैं। छन्द अनुष्टुप् और देवता शारिका हैं। बीज शां, शक्ति श्रीं और कीलक फ्रां कहा गया है। धर्म, अर्थ, काम एवं मोक्ष की प्राप्ति के लिये इसका विनियोग कहा गया है। हे पर्वतनन्दिनि! अब इसके ध्यान को कहता हूँ, तुम श्रवण करो।।१०-११।।

विनियोग

अस्य श्रीशारिकाभगवतीसहस्रनामस्तोत्रस्य श्रीमहादेव ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः, श्रीशारिकाभगवती देवता, शां बीजं, श्रींशक्तिः, फ्रां कीलकं धर्मार्थकाममोक्षार्थे विनियोगः। ऋष्यादिन्यासं कृत्वा, ह्रां श्रामित्यादिना कराङ्गन्यासौ।

विनियोग—अस्य श्रीशारिकाभगवतीसहस्रनामस्तोत्रस्य श्रीमहादेव ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः, श्रीशारिकाभगवती देवता, शां बीजम्, श्रीं शक्तिः, फ्रां कीलकं, धर्मार्थकाममोक्षार्थे विनियोगः। ऋष्यादि न्यास करके ह्रां श्रां इत्यादि से करन्यास और अङ्गन्यास करे।

करन्यास—ह्रां श्रां अंगुष्ठाभ्यां नमः। ह्रीं श्रीं तर्जनीभ्यां नमः। ह्रूं श्रूं मध्यमाभ्यां नमः। ह्रैं श्रैं अनामिकाभ्यां नमः। ह्रौं श्रौं कनिष्ठाभ्यां नमः। ह्रः श्रः करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः।

अङ्गन्यास—ह्रां श्रां हृदयाय नमः। ह्रीं श्रीं शिरसे स्वाहा। ह्रूं श्रूं शिखायै वषट्। ह्रैं श्रैं कवचाय हुं। ह्रौं श्रौं नेत्रत्रयाय वौषट्। ह्रः श्रः अस्त्राय फट्।

शारिकाध्यानम्

बालार्ककोटिसदृशीमिन्दुचूडां कराम्बुजैः ।
वरचक्राभयासींश्च धारयन्तीं हसन्मुखीम् ।।१।।
सिंहारूढां रक्तवस्त्रां रक्ताभरणभूषिताम् ।
वामदेवाङ्कनिलयां हृत्पद्मे शारिकां भजे ।।२।।
बालार्ककोटिद्युतिमिन्दुचूडां वरासिचक्राभयबाहुमाद्याम् ।
सिंहाधिरूढां शिववामदेहलीनां भजे चेतसि शारिकेशीम् ।।३।।

ध्यान—शारिका देवी करोड़ों नवोदित सूर्य के समान वर्ण वाली हैं। इनके चूड़ा में चन्द्रमा है। करकञ्जों में वर, अभय, खड्ग और चक्र हैं। मुस्कानयुक्त मुख है। सिंह पर सवार हैं। वस्त्र लाल हैं। सभी अलङ्कार लाल रङ्ग के हैं। वामदेव शिव की गोद में बैठी हैं। मैं अपने हृदयकमल में शारिका का भजन करता हूँ।

इनके शरीर की प्रभा करोड़ों नवोदित सूर्य के समान है। चूड़ा में चन्द्र हैं। हाथों में वर, अभय, खड्ग और चक्र हैं। सिंह पर सवार हैं। शिव के बाँयें भाग में लीन हैं। ऐसी शारिकेशी का मैं चित्त से भजन करता हूँ।।१-३।।

सहस्रनाम

ॐह्रींश्रींहूंफ्रांआंशांश्रीशारिका श्यामसुन्दरी ।
शिला शारी शुकी शान्ता शान्तमानसगोचरा ।।१।।
शान्तिस्था शान्तिदा शान्तिः श्यामा श्यामपयोधरा ।
देवी शशाङ्कबिम्बाभा शशाङ्ककृतशेखरा ।।२।।
शशाङ्कशोभिलावण्या शशाङ्कमध्यवासिनी ।
शार्दूलवाहा देवेशी शार्दूलस्थितिरुत्तमा ।।३।।
शार्दूलचर्मवसना शक्तिः शार्दूलवाहना ।
गौरी पद्मावती पीना पीनवक्षोजकुड्मला ।।४।।
पीताम्बरा रक्तदन्ता दाडिमीकुसुमोपमा ।
स्फुरद्रत्नांशुखचिता रत्नमण्डलविग्रहा ।।५।।
रक्ताम्बरधरा देवी रत्नमालाविभूषणा ।
रत्नसम्मूर्छिताभा च दीप्ता दीप्तशिखा दया ।।६।।
दयावती कल्पलता कल्पान्तदहनोपमा ।
भैरवी भीमनादा च भयानकमुखी भगा ।।७।।
कारा कारुण्यरूपा च भगमालाविभूषणा ।

भगेश्वरी भगस्था च कुरुकुल्ला कृशोदरी ॥८॥
कादम्बरी पटोत्कृष्टा परमा परमेश्वरी।
सती सरस्वती सत्या सत्यासत्यस्वरूपिणी ॥९॥
परम्परा पटाकारा पाटला पाटलप्रभा।
पद्मिनी पद्मवदना पद्मा पद्मकरा शिवा ॥१०॥
शिवाश्रया शरच्छान्ता शची रम्भा विभावरी।
द्युमणिस्तरणा पाठा पीठेशी पीवराकृतिः ॥११॥
अचिन्त्या मुसलाधारा मातङ्गी मधुरस्वना।
वीणागीतप्रिया गाथा गारुडी गरुडध्वजा ॥१२॥
अतीवसुन्दराकारा सुन्दरी सुन्दरालका।
अलका नाकमध्यस्था नाकिनी नाकिपूजिता ॥१३॥
पातालेश्वरपूज्या च पातालतलचारिणी।
अनन्तानन्तरूपा च ह्यज्ञाता(१००)ज्ञानवर्धिनी ॥१४॥

सहस्रनाम—ॐ ह्रीं श्रीं हूं फ्रां आं शां श्री शारिका, श्यामसुन्दरी, शिला, शारी, शुकी, शान्ता, शान्तमानसगोचरा, शान्तिस्था, शान्तिदा, शान्ति, श्यामा, श्यामपयोधरा, देवी, शशाङ्कबिम्बाभा, शशाङ्ककृतशेखरा, शशाङ्कशोभिलावण्या, शशाङ्कमध्यवासिनी, शार्दूलवाहा, देवेशी, शार्दूलस्थितिरुत्तमा, शार्दूलचर्मवसना, शक्ति, शार्दूलवाहना, गौरी, पद्मावती, पीना, पीनवक्षोजकुट्मला, पीताम्बरा, रक्तदन्ता, दाड़िमीकुसुमोपमा, स्फुरद्रत्नांशुखचिता, रत्नमण्डलविग्रहा, रक्ताम्बरधरा देवी, रत्नमालाविभूषणा, रत्नसम्मूर्च्छिताभा, दीप्ता, दीपशिखा, दया, दयावती, कल्पलता, कल्पान्तदहनोपमा, भैरवी, भीमनादा, भयानकमुखी, भगाकारा, कारुण्यरूपा, भगमालाविभूषणा, भगेश्वरी, भगस्था, कुरुकुल्ला, कृशोदरी, कादम्बरी, पटोत्कृष्टा, परमा, परमेश्वरी, सती, सरस्वती, सत्या, सत्यासत्यस्वरूपिणी, परम्परा, पटाकारा, पाटला, पाटलप्रभा, पद्मिनी, पद्मवदना, पद्मा, पद्मकरा, शिवा, शिवाश्रया, शरच्छान्ता, शची, रम्भा, विभावरी, द्युमणिस्तरणा, पाठा, पीठेशी, पीवराकृति, अचिन्त्या, मुसलाधारा, मातङ्गी, मधुरस्वना, वीणागीतप्रिया, गाथा, गारुडी, गरुड़ध्वजा, अतीवसुन्दराकारा, सुन्दरी, सुन्दरालका, अलका, नाकमध्यस्था, नाकिनी, नाकिपूजिता, पातालेश्वरपूज्या, पातालतलचारिणी, अनन्ता, अनन्तरूपा, अज्ञाता, ज्ञानवर्धिनी।।१-१४।।

अमेया ह्यप्रमेया च ह्यनन्तादित्यरूपिणी।
द्वादशादित्यसंपूज्या शमी श्यामाकबीजिनी ॥१५॥

विभासा भासुरवर्णा समस्तासुरघातिनी ।
सुधामयी सुधामूर्तिः सुधा सर्वप्रियङ्करी ॥१६॥
सुखदा च सुरेशानी कृशानुवल्लभा हविः ।
स्वाहा स्वाहेशनेत्रा च ह्यग्निवक्राग्नितर्पिता ॥१७॥
सोमसूर्याग्निनेत्रा च भूर्भुवःस्वःस्वरूपिणी ।
भूमिर्भूदेवपूज्या च स्वयम्भूः स्वात्मपूजका ॥१८॥
स्वयम्भूपुष्पमालाढ्या स्वयम्भूपुष्पवल्लभा ।
आनन्दकन्दली कन्दा स्कन्दमाता शिलालया ॥१९॥
चेतना चिद्भवाकारा भवपत्नी भयापहा ।
विघ्नेश्वरी गणेशानी विघ्नविध्वंसिनी निशा ॥२०॥
वश्या वशिजनस्तुत्या स्तुतिः श्रुतिधरा श्रुतिः ।
शास्त्रविधानविज्ञा च वेदशास्त्रार्थकोविदा ॥२१॥
वेद्या वेदमयी विद्या विधातृवरदा वधूः ।
वधूरूपा वधूपूज्या वधूपानप्रतर्पिता ॥२२॥
वधूपूजनसन्तुष्टा वधूमालाविभूषणा ।
वामा वामेश्वरी वाम्या कुलाकुलविचारिणी ॥२३॥
वितर्कतर्कनिलया प्रलयानलसन्निभा ।
यज्ञेश्वरी यज्ञमुखा याजका यज्ञपात्रका ॥२४॥
यक्षेश्वरी यक्षधात्री पार्वती पर्वताश्रया ।
पिलम्पिला पदस्थाना पददा नरकान्तका ॥२५॥
नारी नर्मप्रिया श्रीदा श्रीदश्रीदा(२००)शरायुधा ।

अमेया, अप्रमेया, अनन्तादित्यरूपिणी, द्वादशादित्यसम्पूज्या, शमी, श्यामाकबीजिनी, विभासा, भासुरवर्णा, समस्तासुरघातिनी, सुधामयी, सुधामूर्ति, सुधा, सर्वप्रियङ्करी, सुखदा, सुरेशानी, कृशानुवल्लभा, हवि, स्वाहा, स्वाहेशनेत्रा, अग्निवक्राग्नितर्पिता, सोमसूर्याग्निनेत्रा, भूर्भुवःस्वःस्वरूपिणी, भूमि, भूदेवपूज्या, स्वयम्भू, स्वात्मपूजका, स्वयम्भूपुष्पमालाढ्या, स्वयम्भूपुष्पवल्लभा, आनन्दकन्दली, कन्दा, स्कन्दमाता, शिलालया, चेतना, चिद्भवाकारा, भवपत्नी, भयापहा, विघ्नेश्वरी, गणेशानी, विघ्नविध्वंसिनी, निशा, वश्या, वशिजनस्तुत्या, स्तुति, श्रुतिधरा, श्रुति, शास्त्रविधानविज्ञा, वेदशास्त्रार्थकोविदा, वेद्या, वेदमयी, विद्या, विधातृवरदा, वधू, वधूरूपा, वधूपूज्या, वधूपानप्रतर्पिता, वधूपूजनसन्तुष्टा, वधूमालाविभूषणा, वामा, वामेश्वरी, वाम्या, कुलाकुल विचारिणी, वितर्कतर्कनिलया,

प्रलयानलसन्निभा, यज्ञेश्वरी, यज्ञमुखा, याजका, यज्ञपात्रका, यज्ञेश्वरी, यज्ञधात्री, पार्वती, पर्वताश्रया, पिलम्पिला, पदस्थाना, पददा, नरकान्तका, नारी, नर्मप्रिया, श्रीदा, श्रीदश्रीदा, शरायुधा।।१५-२५।।

कामेश्वरी रतिर्हूतिराहुतिर्हव्यवाहना ।।२६।।
हरेश्वरी हरिवधूर्हाटकाङ्गदमण्डिता ।
हपुषा स्वर्गतिर्वैद्या सुमुखा च महौषधिः ।।२७।।
सर्वरोगहरा माध्वी मधुपानपरायणा ।
मधुस्थिता मधुमयी मधुदानविशारदा ।।२८।।
मधुतृप्ता मधुरूपा मधूककुसुमप्रभा ।
माधवी माधवीवल्ली मधुमत्ता मदालसा ।।२९।।
मारप्रिया मारपूज्या मारदेवप्रियङ्करी ।
मारेशी च मृत्युहरा हरिकान्ता मनोन्मना ।।३०।।
महावैद्यप्रिया वैद्या वैद्याचारा सुरार्चिता ।
सामन्ता पीनवपुषी गुटी गुर्वी गरीयसी ।।३१।।
कालान्तका कालमुखी कठोरा करुणामयी ।
नीला नाभी च वागीशी दूर्वा नीलसरस्वती ।।३२।।
अपारा पारगा गम्या गतिः प्रीतिः पयोधरा ।
पयोदसदृशच्छाया पारदाकृतिलालसा ।।३३।।
सरोजनिलया नीतिः कीर्तिः कीर्तिकरी कथा ।
काशी काम्या कपर्दाशा काशपुष्पोपमा रमा ।।३४।।
रामा रामप्रिया रामभद्रदेवसनर्चिता ।
रामसंपूजिता रामसिद्धिदा रामराज्यदा ।।३५।।
रामभद्रार्चिता रेवा देवकी देववत्सला ।
देवपूज्या देववन्द्या देवदावनचर्चिता ।।३६।।
दूती द्रुतगतिर्दम्भा दामिनी विजया जया ।
अशेषसुरसंपूज्या निःशेषासुरसूदिनी ।।३७।।
वटिनी वटमूलस्था लास्यहास्यैकवल्लभा ।
अरूपा निर्गुणा सत्या सदासन्तोषवर्धिनी ।।३८।।
सौम्या यजुर्वहा याम्या(३००)यमुना यामिनी यमी ।

कामेश्वरी, रति, हूति, आहुति, हव्यवाहना, हरेश्वरी, हरिवधू, हाटकाङ्गदमण्डिता,

हपुषा, स्वर्गति, वैद्या, सुमुखा, महौषधि, सर्वरोगहरा, माध्वी, मधुपानपरायणा, मधुस्थिता, मधुमयी, मधुदानविशारदा, मधुतृप्ता, मधुरूपा, मधूककुसुमप्रभा, माधवी, माधवीवल्ली, मधुमत्ता, मदालसा, मारप्रिया, मारपूज्या, मारदेवप्रियङ्करी, मारेशी, मृत्युहरा, हरिकान्ता, मनोन्मना, महावैद्यप्रिया, वैद्या, वैद्याचारा, सुरार्चिता, सामन्ता, पीनवपुषी, गुटी, गुर्वी, गरीयसी, कालान्तका, कालमुखी, कठोरा, करुणामयी, नीला, नाभी, वागीशी, दूर्वा, नीलसरस्वती, अपारा, पारगा, गम्या, गति, प्रीति, पयोधरा, पयोदसदृशच्छाया, पारदाकृति, लालसा, सरोजनिलया, नीति, कीर्ति, कीर्तिकरी, कथा, काशी, काम्या, कपर्दाशा, काशपुष्पोपमा, रमा, रामा, रामप्रिया, रामभद्रदेवसमर्चिता, रामसम्पूजिता, रामसिद्धिदा, रामराज्यदा, रामभद्रार्चिता, रेवा, देवकी, देववत्सला, देवपूज्या, देववन्द्या, देवदानवचर्चिता, दूती, द्रुतगति, दम्भा, दामिनी, विजया, जया, अशेषसुरसम्पूज्या, निःशेषासुरसूदिनी, वटिनी, वटमूलस्था, लास्यहास्यैकवल्लभा, अरूपा, निर्गुणा, सत्या, सदासन्तोषवर्धिनी, सौम्या, यजुर्वहा, याम्या, यमुना, यामिनी, यमी।।२६-३८।।

दाक्षी दया च वरदा दाल्भ्यसेव्या पुरन्दरी ।।३९।।
पौरन्दरी पुलोमेशी पौलोमी पुलकाङ्कुरा ।
पुरस्था वनभूर्वन्या वानरी वनचारिणी ।।४०।।
समस्तवर्णनिलया समस्तवर्णपूजिता ।
समस्तवर्णवर्णाढ्या समस्तगुरुवल्लभा ।।४१।।
समस्तमुण्डमालाढ्या मालिनी मधुपस्वना ।
कोशप्रदा कोशवासा चमत्कृतिरलम्बुसा ।।४२।।
हासदा सदसद्रूपा सर्ववर्णमयी स्मृतिः ।
सर्वाक्षरमयी विद्या मूलविद्येश्वरीश्वरी ।।४३।।
अकारा षोडशाकारा काराबन्धविमोचिनी ।
ककारव्यञ्जनाक्रान्ता सर्वमन्त्राक्षरालया ।।४४।।
अणुरूपाप्यमला च त्रैगुण्याप्यपराजिता ।
अम्बिकाम्बालिका चाम्बा अनन्तगुणमेखला ।।४५।।
अपर्णा पर्णशाला च साट्टहासा हसन्तिका ।
अद्रिकन्याप्यट्टहासाप्यजरामाप्यरुन्धती ।।४६।।
अब्जाक्षी चाब्जिनी देवी ह्यम्बुजासनपूजिता ।
अब्जहस्ता ह्यब्जपादा चाब्जपूजनतोषिता ।।४७।।
अकारमातृकादेवी सर्वानन्दकरी कला ।

आनन्दसुन्दरी आद्या आघूर्णारुणलोचना ।।४८।।
अदिदेवान्तकाऽक्रूरा आदित्यकुलभूषणा ।
आंबीजमण्डना देवी चाकारमातृकावलिः ।।४९।।
इन्दूस्तुतेन्दुबिम्बास्या इनकोटिसमप्रभा ।
इन्दिरा मन्दुराशाला चेतिहासा कथा स्मृतिः ।।५०।।
इला चेक्षुरसास्वादा इकाराक्षरभूषिता ।
इन्द्रस्तुता चेन्द्रपूज्या इनभद्रा इनेश्वरी ।।५१।।
इभगतिरिभगीतिरिकाराक्षरमातृका ।
ईश्वरी वैभवप्रख्या चेशानीश्वरवल्लभा ।।५२।।
ईशा कामकलादेवी ईकाराश्रितमातृका(४००) ।

दाक्षी, दया, वरदा, दाल्भ्यसेव्या, पुरन्दरी, पौरन्दरी, पुलोमेशी, पौलोमी, पुलकाङ्कुरा, पुरस्था, वनभू, वन्या, वानरी, वनचारिणी, समस्तवर्णनिलया, समस्तवर्णपूजिता, समस्तवर्णवर्णाढ्या, समस्तगुरुवत्सला, समस्तमुण्डमालाढ्या, मालिनी, मधुपस्वना, कोशप्रदा, कोशवासा, चमत्कृति, अलम्वुसा, हासदा, सदसद्रूपा, सर्ववर्णमयी, स्मृति, सर्वाक्षरमयी, विद्या, मूलविद्येश्वरी, ईश्वरी, अकारा, षोड़शाकारा, कारावन्धविमोचिनी, ककारव्यञ्जनाक्रान्ता, सर्वमन्त्राक्षरालया, अणुरूपा, अमला, त्रैगुण्या, अपराजिता, अम्बिका, अम्वालिका, अम्वा, अनन्तगुणमेखला, अपर्णा, पर्णशाला, साट्टहासा, हसन्तिका, अद्रिकन्या, अट्टहासा, अजरा, अमा, अरुन्धती, अब्जाक्षी, अब्जिनी देवी, अम्बुजासनपूजिता, अब्जहस्ता, अब्जपादा, अब्जपूजनतोषिता, अकारमातृकादेवी, सर्वानन्दकरी, कला, आनन्दसुन्दरी, आद्या, आघूर्णारुणलोचना, आदिदेवान्तका, अक्रूरा, आदित्यकुलभूषणा, आंबीजमण्डना, देवी, आकारमातृकावलि, इन्दुस्तुता, इन्दुबिम्बास्या, इनकोटिसमप्रभा, इन्दिरा, मन्दुराशाला, इतिहासा, कथा, स्मृति, इला, इक्षुरसास्वादा, इकाराक्षरभूषिता, इन्द्रस्तुता, इन्द्रपूज्या, इनभद्रा, इनेश्वरी, इभगति, इभगीति, इकाराक्षरमातृका, ईश्वरी, वैभवप्रख्या, ईशानी, ईश्वरवल्लभा, ईशा, कामकलादेवी, ईकाराश्रितमातृका।।३९-५२।।

उग्रप्रभोग्रचित्ता च उग्रवामाङ्गवासिनी ।।५३।।
उषा वैष्णवपूज्या च उग्रतारोल्मुकानना ।
उमेश्वरीश्वरी श्रेष्ठा उदकस्था ह्युदेश्वरी ।।५४।।
उदकाच्छोदकदा च उकारोद्भासमातृका ।
ऊष्मा प्यूषा ऊषणा च तथोचितवरप्रदा ।।५५।।
ऋणहर्त्री ऋकारेशी ऋलृवर्णा लृवर्णभाक् ।

लृकारभ्रुकुटिर्बाला बालादित्यसमप्रभा ॥५६॥
एणाङ्कमुकुटा चैहा एकाराक्षरबीजिता ।
एणप्रिया एणमध्यवासिनी एणवत्सला ॥५७॥
एणाङ्कमध्यसंस्था च ऐकारोद्भावमातृका ।
ॐकारशेखरा देवी औचित्यपदमण्डिता ॥५८॥
अम्भोजनिलया स्वस्था अ:स्वरूपा च स्वर्गतिः ।
षोडशस्वररूपा च षोडशस्वरगायिनी ॥५९॥
षोडशी षोडशाकारा कमला कमलोद्भवा ।
कामेश्वरा कलाभिज्ञा कुमारी कुटिलालका ॥६०॥
कुटिला कुटिलाकारा कुटुम्बसंयुता शिवा ।
कुलाकुलपदेशानी कुलेशी कुब्जिका कला ॥६१॥
कामा कामप्रिया कीरा कमनीया कपर्दिनी ।
कालिका भद्रकाली च कालकामान्तकारिणी ॥६२॥
कपालिनी कपालेशी कर्पूरचयचर्चिता ।
कादम्बरी कोमलाङ्गी काश्मीरी कुङ्कुमद्युतिः ॥६३॥
कुन्ता कूर्चार्णबीजाढ्या कमनीया कुलाकुला ।
करालास्या करालाक्षी विकरालस्वरूपिणी ॥६४॥
काम्यालका कामदुघा कामिनी कामपालिनी ।
कन्थाधरा कृपाकर्त्री ककाराक्षरमातृका ॥६५॥
खड्गहस्ता खर्परेशी खेचरी खगगामिनी ।
खेचरीमुद्रया युक्ता खेचरत्वप्रदायिनी ॥६६॥
खगासना खलोलाक्षी खेटेशी खलनाशिनी ।
खेटकायुधहस्ता(५००)च खरांशुद्युतिसन्निभा ॥६७॥

उग्रप्रभा, उग्रचित्ता, उग्रवामाङ्कवासिनी, उषा, वैष्णवपूज्या, उग्रतारा, उल्मुकानना, उमा, ईश्वरीश्वरी, श्रेष्ठा, उदकस्था, उदेश्वरी, उदकाच्छोदकदा, उकारोद्भासमातृका, ऊष्मा, प्यूषा, ऊषणा, उचितवरप्रदा, ऋणाहर्त्री, ऋकारेशी, ऋलृवर्णा, लृवर्णा, लृकारभ्रुकुटि, बाला, बालादित्यसमप्रभा, एणाङ्कमुकुटा, एहा, एकाक्षरबीजिता, एणप्रिया, एणमध्यवासिनी, एणवत्सला, एणाङ्कमध्यसंस्था, ऐकारोद्भवमातृका, ॐकारशेखरा, देवी, औचित्यपदमण्डिता, अम्भोजनिलया, स्वस्था, अ:स्वरूपा, स्वर्गति, षोड़शस्वररूपा, षोड़शस्वरगायिनी, षोड़शी, षोड़शाकारा, कमला, कमलोद्भवा, कामेश्वरा, कलाभिज्ञा,

कुमारी, कुटिलालका, कुटिला, कुटिलाकारा, कुटुम्बसंयुता, शिवा, कुलाकुल- पदेशानी, कुलेशी, कुब्जिका, कला, कामा, कामप्रिया, कीरा, कमनीया, कपर्दिनी, कालिका, भद्रकाली, कालकामान्तकारिणी, कपालिनी, कपालेशी, कर्पूरचयचर्चिता, कादम्बरी, कोमलाङ्गी, काश्मीरी, कुङ्कुमद्युति, कुन्ता, कूर्चार्णबीजाढ्या, कमनीया, कुलाकुला, करालास्या, करालाक्षी, विकरालस्वरूपिणी, काम्यालका, कामदुघा, कामिनी, कामपालिनी, कन्याधरा, कृपाकर्त्री, ककाराक्षरमातृका, खड्गहस्ता, खर्परेशी, खेचरी, खगगामिनी, खेचरीयुक्ता, खेचरत्वप्रदायिनी, खगासना, खलोलाक्षी, खेटेशी, खलनाशिनी, खेटकायुधहस्ता, खरांशुद्युतिसन्निभा।।५३-६७।।

खान्ता खबीजनिलया खकारोल्लासमातृका।
वैखरी बीजनिलया खस्था खेचरवल्लभा ॥६८॥
गुण्या गजास्यजननी गणेशवरदा गया।
गोदावरी गदाहस्ता गङ्गाधरवरप्रदा ॥६९॥
गोधा गोवाहनेशनी गरलाशनवल्लभा।
गाम्भीर्यभूषणा गङ्गा गकारार्णविभूषणा ॥७०॥
घोणा घोणाकरस्तुत्या घुर्घुरा घोरनादिनी।
घटस्था घटजसेव्या घनरूपा घुणेश्वरी ॥७१॥
घनवाहनसेव्या च घकाराक्षरमातृका।
ङान्ता ङवर्णनिलया ङाणुरूपा ङणालया ॥७२॥
ङेशा ङेन्ता ङनाजाप्या ङवर्णाक्षरभूषणा।
चामीकररुचिश्चान्द्री चन्द्रिका चन्द्ररागिणी ॥७३॥
चला चलञ्चला चेला चन्द्रा चन्द्रकरा चली।
चञ्चरीकस्वनालापा चमत्कारस्वरूपिणी ॥७४॥
चटुली चाटुकी चार्वी चम्पा चम्पकसन्निभा।
चीनांशुकधरा चाट्वी चकारार्णविभूषणा ॥७५॥
छत्री च्छत्रधरा च्छिन्ना च्छिन्नमस्ता छटच्छविः।
छायासुतप्रिया च्छाया छवर्णामलमातृका ॥७६॥
जगदम्बा जगज्ज्योतिर्ज्योतीरूपा जटाधरा।
जयदा जयकर्त्री च जयस्था जयहासिनी ॥७७॥
जगत्प्रिया जगत्पूज्या जगत्कर्त्री जरातुरा।
ज्वरघ्नी जम्भदमनी जगत्प्राणा जयावहा ॥७८॥

जम्भारिवरदा जैत्री जीवना जीववाक्प्रदा ।
जाग्रती च जगन्निद्रा जगद्योनिर्जलन्धरा ।।७९।।
जालन्धरधरा जाया जकाराक्षरमातृका ।
झम्पा झिञ्झेश्वरी झान्ता झकाराक्षरमातृका ।।८०।।
ञाणुरूपा ञिणावासा(६००)ञकारेशी ञणायुधा ।

खान्ता, खबीजनिलया, खकारोल्लासमातृका, वैखरी, खबीजनिलया, खस्था, खेचरवल्लभा, गुण्या, गजास्यजननी, गणेशवरदा, गया, गोदावरी, गदाहस्ता, गङ्गाधरवरप्रदा, गोधा, गोवाहनेशानी, गरलाशनवल्लभा, गाम्भीर्यभूषणा, गङ्गा, गकारार्णविभूषणा, घोणा, घोणाकरस्तुत्या, घुर्घुरा, घोरनादिनी, घटस्था, घटजसेव्या, घनरूपा, घुणेश्वरी, घनवाहनसेव्या, घकाराक्षरमातृका, ङान्ता, ङवर्णनिलया, ङाणुरूपा, ङणालया, ङेशा, ङेन्ता, ङनाजाप्या, ङवर्णाक्षरभूषणा, चामीकररुचि, चान्द्री, चन्द्रिका, चन्द्रागिणी, चला, चलञ्चला, चेला, चन्द्रा, चन्द्रकरा, चली, चञ्चरीकस्वनालापा, चमत्कारस्वरूपिणी, चटुली, चार्वी, चाटुकी, चम्पा, चम्पकसन्निभा, चीनांशुकधरा, चाट्वी, चकारार्णविभूषणा, छत्री, छत्रधरा, छिन्ना, छिन्नमस्ता, छटच्छवि, छायासुतप्रिया, छाया, छवर्णामलमातृका, जगदम्बा, जगज्ज्योति, ज्योतीरूपा, जटाधरा, जयदा, जयकर्त्री, जयस्था, जयहासिनी, जगत्प्रिया, जगत्पूज्या, जगत्कर्त्री, जरातुरा, ज्वरघ्नी, जम्भदमनी, जगत्प्राणा, जयावहा, जम्भारिवरदा, जैत्री, जीवना, जीववाक्प्रदा, जाग्रती, जगन्निद्रा, जगद्योनि, जलन्धरा, जालन्धरधरा, जाया, जकाराक्षरमातृका, झम्पा, झिञ्झेश्वरी, झान्ता, झकाराक्षरमातृका, ञाणुरूपा, ञिणावासा, ञकारेशी, ञणायुधा।।६८-८०।।

ञवर्णबीजभूषाढ्या ञकाराक्षरमातृका ।।८१।।
टङ्कायुधा टकाराढ्या टोटाक्षी टसुकुन्तला ।
टङ्कायुधा टकीरूपा टकाराक्षरमातृका ।।८२।।
ठक्कुरा ठक्कुरेशानी ठकारत्रितयेश्वरी ।
ठःस्वरूपा ठवर्णाढ्या ठकाराक्षरमातृका ।।८३।।
डक्का डक्केश्वरी डिम्भा डवर्णाक्षरमातृका ।
ढिणी ढेहा ढिल्लहस्ता ढकाराक्षरमातृका ।।८४।।
णेशा णान्ता णवर्गान्ता णकाराक्षरभूषणा ।
तुरी तुर्या तुलारूपा त्रिपुरा तामसप्रिया ।।८५।।
तोतुला तारिणी तारा सप्तविंशतिरूपिणी ।
त्रिपुरा त्रिगुणा ध्येया त्र्यम्बकेशी त्रिलोकधृत् ।।८६।।

त्रिवर्गेशी त्रयी त्र्यक्षी त्रिपदा वेदरूपिणी ।
त्रिलोकजननी त्राता त्रिपुरेश्वरपूजिता ॥८७॥
त्रिकोणस्था त्रिकोणेशी कोणत्रयनिवासिनी ।
त्रिकोणपूजनतुष्टा त्रिकोणपूजनश्रिता ॥८८॥
त्रिकोणदानसंलग्ना सर्वकोणशुभार्थदा ।
वसुकोणस्थितादेवी वसुकोणार्थवादिनी ॥८९॥
वसुकोणपूजिता च षट्चक्रक्रमवासिनी ।
नागपत्रस्थिता शारी त्रिवृत्तपूजनार्थदा ॥९०॥
चतुर्द्वाराग्रगा चक्रबाह्यान्तरनिवासिनी ।
तामसी तोमरप्रख्या तुम्बुरुस्वननादिनी ॥९१॥
तुलाकोटिस्वना तापी तपसां फलवर्धिनी ।
तरलाक्षी तमोहर्त्री तारकासुरघातिनी ॥९२॥
तरी तरणिरूपा च तकाराक्षरमातृका ।
स्थली स्थविररूपा च स्थूला स्थाली स्थलाब्जिनी ॥९३॥
स्थावरेशा स्थूलमुखी थकाराक्षरमातृका ।
दूतिका शिवदूती च दण्डायुधधरा द्युतिः ॥९४॥
दया दीनानुकम्पा च दम्भोलिधरवल्लभा ।
देशानुचारिणी द्रेक्का द्राविडेशी दवीयसी ॥९५॥
दाक्षायणी द्रुमलता(७००.)देवमाताधिदेवता ।

ञवर्णबीजभूषाढ्या, ञकाराक्षरमातृका, टङ्कायुधा, टकाराढ्या, टोटाक्षी, टसुकुन्तला, टङ्कायुधा, टकीरूपा, टकाराक्षरमातृका, ठक्कुरा, ठक्कुरेशानी, ठकारत्रितयेश्वरी, ठःस्वरूपा, ठवर्णाढ्या, ठकाराक्षरमातृका, डक्का, डक्केश्वरी, डिम्भा, डवर्णाक्षरमातृका, ढिणी, ढेहा, ढिल्लहस्ता, ढकाराक्षरमातृका, णेशा, णान्ता, णवर्गान्ता, णकाराक्षरभूषणा, तुरी, तुर्या, तुलारूपा, त्रिपुरा, तामसप्रिया, तोतुला, तारिणी, तारा, सप्तविंशतिरूपिणी, त्रिपुरा, त्रिगुणा, ध्येया, त्र्यम्बकेशी, त्रिलोकधृत्, त्रिवर्गेशी, त्रयी, त्र्यक्षी, त्रिपदा, वेदरूपिणी, त्रिलोकजननी, त्राता, त्रिपुरेश्वरपूजिता, त्रिकोणस्था, त्रिकोणेशी, कोणत्रयनिवासिनी, त्रिकोणपूजनतुष्टा, त्रिकोणपूजनश्रिता, त्रिकोणदानसंलग्ना, सर्वकोणशुभार्थदा, वसुकोणस्थितादेवी, वसुकोणार्थवादिनी, वसुकोणपूजिता, षट्चक्रक्रमवासिनी, नागपत्रस्थिता, शारी, त्रिवृत्तपूजनार्थदा, चतुर्द्वाराग्रगा, चक्रबाह्यान्तरनिवासिनी, तामसी, तोमरप्रख्या, तुम्बुरुस्वननादिनी, तुलाकोटिस्वना, तापी, तपसां फलवार्धिनी, तरलाक्षी, तमोहर्त्री, तारकासुरघातिनी, तरी, तरणिरूपा,

तकाराक्षरमातृका, स्थली, स्थविररूपा, स्थूला, स्थाली, स्थलाब्जिनी, स्थावरेशा, स्थूलमुखी, थकाराक्षरमातृका, दूतिका, शिवदूती, दण्डायुधधरा, द्युति, दया, दीनानुकम्पा, दम्भोलिधरवल्लभा, देशानुचारिणी, द्रेक्का, द्राविडेशी, दवीयसी, दाक्षायणी, द्रुमलता, देवमाताधिदेवता।।८१-९५।।

दधिजा दुर्लभा देवी देवता परमाक्षरा ।।९६।।
दामोदरसुपूज्या च दामोदरवरप्रदा ।
दनुपुत्री विनाशा च दनुपुत्रकुलार्चिता ।।९७।।
दण्डहस्ता दण्डिपूज्या दमदा च दमस्थिता ।
दशधेनुसुरूपा च दकाराक्षरमातृका ।।९८।।
धर्म्या धर्मप्रसूर्धन्या धनदा धनवर्धिनी ।
धृतिर्धूर्ता धन्यवधूर्धकाराक्षरमातृका ।।९९।।
नलिनीनालिका नाप्या नाराचायुधधारिणी ।
नीपोपवनमध्यस्था नागरेशी नरोत्तमा ।।१००।।
नरेश्वरी नृपाराध्या नृपपूज्या नृपार्थदा ।
नृपसेव्या नृपवन्द्या नरनारायणप्रसूः ।।१०१।।
नर्तकी नीरजाक्षी च नवर्णाक्षरभूषणा ।
पद्मेश्वरी पद्ममुखी पत्रयाना परापरा ।।१०२।।
पारावारसुता पाठा परवर्गविमर्दिनी ।
पूः पुरारिवधूः पम्पा पत्नी पत्रीशवाहना ।।१०३।।
पीवरांसा पतिप्राणा पीतलाक्षी पतिव्रता ।
पीठा पीठस्थितापीठा पीतालङ्कारभूषणा ।।१०४।।
पुरूरवस्तुता पात्री पुत्रिका पुत्रदा प्रजा ।
पुष्पोत्तंसा पुष्पवती पुष्पमालाविभूषणा ।।१०५।।
पुष्पमालातिशोभाढ्या पकाराक्षरमातृका ।
फलदा स्फीतवस्त्रा च फेरवारावभीषणा ।।१०६।।
फल्गुनी फल्गुतीर्थस्था फवर्णाकृतमण्डला ।
बलदा बालखिल्या च बाला बलरिपुप्रिया ।।१०७।।
बाल्यावस्था बर्बरेशी बकाराकृतिमातृका ।
भद्रिका भीमपत्नी च भीमा भर्गशिखाऽभया ।।१०८।।
भयघ्नी भीमनादा च भयानकमुखेक्षणा ।

भिल्लीश्वरी भीतिहरा भद्रदा भद्रकारिणी ॥१०९॥
भद्रेश्वरी भद्रधरा भद्राख्या भाग्यवर्धिनी(८००) ।

दधिजा, दुर्लभादेवी, देवता, परमाक्षरा, दामोदरसुपूज्या, दामोदरवरप्रदा, दनुपुत्री, विनाशा, दंनुपुत्रकुलार्चिता, दण्डहस्ता, दण्डिपूज्या, दमदा, दमस्थिता, दशधेनुसुरूपा, दकाराक्षरमातृका, धर्म्या, धर्मप्रसू, धन्या, धनदा, धनवर्धिनी, धृति, धूर्ता, धन्यवधू, धकाराक्षरमातृका, नलिनी, नालिका, नाप्या, नाराचायुधधारिणी, नीपोपवनमध्यस्था, नागरेशी, नरोत्तमा, नरेश्वरी, नृपाराध्या, नृपपूज्या, नृपार्थदा, नृपसेव्या, नृपवन्द्या, नरनारायणप्रसू, नर्तकी, नीरजाक्षी, नवर्णाक्षरभूषणा, पद्मेश्वरी, पद्ममुखी, पत्रयाना, परापरा, पारावारसुता, पाठा, परवर्गविमर्दिनी, पूः पुरारिवधू, पम्पा, पत्रीशवाहना, पीवरांसा, पतिप्राणा, पीतलाक्षी, पतिव्रता, पीठा, पीठस्थिता, पीठा, पीतालङ्कारभूषणा, पुरूरवस्तुता, पात्री, पुत्रिका, पुत्रदा, प्रजा, पुष्पोत्तंसा, पुष्पवती, पुष्पमालाविभूषणा, पुष्पमालातिशोभाढ्या, पकाराक्षरमातृका, फलदा, स्फीतवस्त्रा, फेरवारावभीषणा, फल्गुनी, फल्गुतीर्थस्था, फवर्णाकृतमण्डला, वलदा, वालखिल्या, बाला, बलरिपुप्रिया, वाल्यावस्था, बर्बरेशी, बकाराकृतिमातृका, भद्रिका, भीमपत्नी, भीमा, भर्गशिखा, अभया, भयघ्नी, भीमनादा, भयानकमुखेक्षणा, भिल्लीश्वरी, भीतिहरा, भद्रदा, भद्रकारिणी, भद्रेश्वरी, भद्रधरा, भद्राख्या, भाग्यवर्धिनी।।९३-१०९।।

भगमाला भगावासा भवानी भवतारिणी ॥११०॥
भगयोनिर्भगाकारा भगस्था भगरूपिणी ।
भगलिङ्गामृतप्रीता भकाराक्षरमातृका ॥१११॥
मान्या मानप्रदा मीना मीनकेतनलालसा ।
मदोद्धता मनोन्मान्या मेना मैनाकवत्सला ॥११२॥
मधुमत्ता मधुपूज्या मधुदा मधुमाधवी ।
मांसाहारा मांसप्रीता मांसभक्ष्या च मांसदा ॥११३॥
मारार्ता मत्स्यरूपा च मत्स्यघाता महत्तरा ।
मेरुशृङ्गाग्रतुङ्गास्या मोदकाहारपूजिता ॥११४॥
मातङ्गिनी मधुमता मदमत्ता मदेश्वरी ।
मज्जा मुग्धानना मुग्धा मकाराक्षरभूषणा ॥११५॥
यशस्विनी यतीशानी यत्नकर्त्री यजुःप्रिया ।
यज्ञधात्री यज्ञफला यजुर्वेदऋचांफला ॥११६॥
यशोदा यतिसेव्या च यात्रा यात्रिकवत्सला ।
योगेश्वरी योगगम्या योगेन्द्रजनवत्सला ॥११७॥

यदुपुत्री यमघ्नी च यकाराक्षरमातृका ।
रत्नेश्वरी रमानाथसेव्या रथ्या रजस्वला ॥११८॥
राज्यदा राजराजेशी रोगहर्त्री रजोवती ।
रत्नाकरसुता रम्या रात्री रात्रिपतिप्रभा ॥११९॥
रक्षोघ्नी राक्षसेशानी रक्षोनाथसमर्चिता ।
रतिप्रिया रतिमुखा रकाराकृतिशेखरा ॥१२०॥
लम्बोदरी ललज्जिह्वा लास्यतत्परमानसा ।
लूतातन्तुवितानास्या लक्ष्मीर्लज्जा लयालिनी ॥१२१॥
लोकेश्वरी लोकधात्री लाटस्था लक्षणाकृतिः ।
लम्बा लम्बकचोल्लासा लकाराकारवर्धिनी ॥१२२॥
लिङ्गेश्वरी लिङ्गलिङ्गा लिङ्गमाला लसद्द्युतिः ।
लक्ष्मीरूपा रसोल्लासा रामा रेवा रजस्वला ॥१२३॥
लयदा लक्षणा(९००)लोला लकाराक्षरमातृका ।

भगमाला, भगवासा, भवानी, भवतारिणी, भगयोनि, भगाकारा, भगस्था, भगरूपिणी, भगलिङ्गामृतप्रीता, भकाराक्षरमातृका, मान्या, मानप्रदा, मीना, मीनकेतनलालसा, मदोद्धृता, मनोन्मान्या, मेना, मैनाकवत्सला, मधुमत्ता, मधुपूज्या, मधुदा, मधुमाधवी, मांसाहारा, मांसप्रीता, मांसभक्ष्या, मांसदा, मारार्ता, मत्स्यरूपा, मत्स्यघाता, महत्तरा, मेरुशृंगाग्रतुङ्गास्या, मोदकाहारपूजिता, मातङ्गिनी, गधुमत्ता, मदमत्ता, मदेश्वरी, मज्जा, मुग्धानना, मुग्धा, मकाराक्षरभूषणा, यशस्विनी, यतीशानी, यत्नकर्त्री, यजु:प्रिया, यज्ञधात्री, यज्ञफला, यजुर्वेदत्रृचांफला, यशोदा, यतिसेव्या, यात्रा, यात्रिकवत्सला, योगेश्वरी, योगगम्या, योगेन्द्रजनवत्सला, यदुपुत्री, यमघ्नी, यकाराक्षरमातृका, रत्नेश्वरी, रमानाथसेव्या, रथ्या, रजस्वला, राज्यदा, राजराजेशी, रोगहर्त्री, रजोवती, रत्नाकरसुता, रम्या, रात्री, रात्रिपतिप्रभा, रक्षोघ्नी, राक्षसेशानी, रक्षोनाथसमर्चिता, रतिप्रिया, रतिमुखा, रकाराकृतिशेखरा, लम्बोदरी, ललज्जिह्वा, लास्यतत्परमानसा, लूतातन्तुवितानास्या, लक्ष्मी, लज्जा, लयालिनी, लोकेश्वरी, लोकधात्री, लाटस्था, लक्षणाकृति, लम्बा, लम्बकचोल्लासा, लकाराकारवर्धिनी, लिङ्गेश्वरी, लिङ्गलिङ्गा, लिङ्गमाला, लसद्द्युति, लक्ष्मीरूपा, रसोल्लासा, रामा, रेवा, रजस्वला, लयदा, लक्षणा, लोला, लकाराक्षरमातृका।।११०-१२३।।

वाराही वरदात्री च वीसूर्वीरदायिनी ॥१२४॥
वीरेश्वरी वीरजन्या वीरचर्वणचर्चिता ।
वरायुधा वराका च वामना वामनाकृतिः ॥१२५॥

वधूता वधकावध्या वध्यभूर्वाणिजप्रिया।
वसन्तलक्ष्मीर्वटुकी वटुका वटुकेश्वरी ॥१२६॥
वटुप्रिया वामनेत्रा वामाचारैकलालसा।
वार्ता वाम्या वरारोहा वेदमाता वसुन्धरा ॥१२७॥
वयोयाना वयस्या च वकाराक्षरमातृका।
शम्भुप्रिया शरच्चर्चा शाद्वला शशिवत्सला ॥१२८॥
शीतद्युतिः शीतरसा शोणोष्ठी शीकरप्रदा।
श्रीवत्सलाञ्छना शर्वा शर्ववामाङ्गवासिनी ॥१२९॥
शशाङ्कामललक्ष्मीश्च शार्दूलतनुरङ्गिजा।
शोपहर्त्री शमीमूला शकाराकृतशेखरा ॥१३०॥
षोडशी षोडशीरूपा षढा षोढा षडानना।
षट्कूटा षड्रसास्वादा षडशीतिमुखाम्बुजा ॥१३१॥
षडास्यजननी षण्ठा षवर्णाक्षरमातृका।
सारस्वतप्रसूः सर्वा सर्वगा सर्वतोमुखा ॥१३२॥
समा सीता सतीमाता सागराभयदायिनी।
समस्तशापशमनी सालभञ्जी सुदक्षिणा ॥१३३॥
सुषुप्तिः सुरसा साध्वी सामगा सामवेदजा।
सत्यप्रिया सोममुखी सूत्रस्था सूतवल्लभा ॥१३४॥
सनकेशी सुनन्दा च स्ववर्गस्था सनातनी।
सेतुभूता समस्ताशा सकाराक्षरवल्लभा ॥१३५॥
हालाहलप्रिया हेला हाहारावविभूषणा।
हाहाहूहूस्वरूपा च हलधात्री हलिप्रिया ॥१३६॥
हरिनेत्रा घोररूपा हविष्याहुतिवल्लभा।
हंक्षंळंक्षःस्वरूपा च सर्वमातृकपूजिता ॥१३७॥
ॐऐंसौः ह्रींमहाविद्या आंशांफ्रांहूंस्वरूपिणी।

वाराहीं, वरदात्री, वीरसू, वीरदायिनी, वीरेश्वरी, वीरजन्या, वीरचर्वणचर्चिता, वरायुधा, वराका, वामना, वामनाकृति, वधूता, वधकावध्या, वध्यभू, वाणिजप्रिया, वसन्तलक्ष्मी, वटुकी, वटुका, वटुकेश्वरी, वटुप्रिया, वामनेत्रा, वामाचारैकलालसा, वार्ता, वाम्या, वरारोहा, वेदमाता, वसुन्धरा, वयोयाना, वयस्या, वकाराक्षरमातृका, शम्भुप्रिया, शरच्चर्चा, शाद्वला, शशिवत्सला, शीतद्युति, शीतरसा, शोणोष्ठी, शीकरप्रदा, श्रीवत्सलाञ्छना,

शर्वा, शर्ववामाङ्गवासिनी, शशाङ्कामललक्ष्मी, शार्दूलतनु, अद्रिजा, शोषहर्त्री, शमीमूला, शकाराकृतशेखरा, षोड़शी, षोड़शीरूपा, षढ़ा, षोढ़ा, षडानना, षट्कूटा, षड्रसास्वादा, षडशीतिमुखाम्बुजा, षडास्याजननी, षण्ठा, षवर्णाक्षरमातृका, सारस्वतप्रसू, सर्वा, सर्वगा, सर्वतोमुखा, समा, सीता, सतीमाता, सागराभयदायिनी, समस्तशापशमनी, सालभञ्जी, सुदक्षिणा, सुषुप्ति, सुरसा, साध्वी, सामगा, सामवेदजा, सत्यप्रिया, सोममुखी, सूत्रस्था, सृत, वल्लभा, सनकेशी, सुनन्दा, स्ववर्गस्था, सनातनी, सेतुभूता, समस्ताशा, सकाराक्षरवल्लभा, हालाहलप्रिया, हेला, हाहारावविभूषणा, हाहाहूहूस्वरूपा, हलधात्री, हलिप्रिया, हरिनेत्रा, घोररूपा, हविष्याहुतिवल्लभा, हंक्षंळंक्षंस्वरूपा, सर्वमातृकपूजिता, ॐऐंसौःह्रीमहाविद्या, आंशांक्रांहूंस्वरूपिणी।।१२४-१३७।।

फलश्रुतिः

इति श्रीशारिकादेव्या मन्त्रनामसहस्रकम्।।१३८।।
पुण्यं पुण्यजनस्तुत्यं नुत्यं वैष्णवपूजितम्।
इदं यः पठते देवि श्रावयेद्यः शृणोति च।।१३९।।
स एव भगवान् देवः सत्यं सत्यं सुरेश्वरि।
एककालं द्विकालं वा त्रिकालं पठते नरः।।१४०।।
वामाचारपरो देवि तस्य पुण्यफलं शृणु।
मूकत्वं बधिरत्वं च कुष्ठं हन्याच्च श्वित्रिकाम्।।१४१।।

फलश्रुति—श्री शारिका देवी का यह सहस्रनाम मन्त्र पुनीत, पुनीत जनस्तुत्य, नमन करने योग्य और वैष्णवजन द्वारा पूजित है। इसका जो पाठ करता है या सुनता या सुनाता है, वह साक्षात् भगवान् शंकर होता है। हे सुरेश्वरि! यह सत्य है, सत्य है। एक बार, दो बार या तीन बार जो वामाचार-परायण मनुष्य श्रद्धापूर्वक रात्रि में इसका पाठ करता है, उसके पुण्यफल का वर्णन सुनो। उसके मूकत्व, बधिरत्व, कुष्ठ एवं सफेद कुष्ठ का शीघ्र विनाश हो जाता है।।१३८-१४१।।

वातपित्तकफान् गुल्मान् रक्तस्रावं विषूचिकाम्।
सद्यः शमयते देवि श्रद्धया यः पठेन्निशि।।१४२।।
अपस्मारं कर्णपीडां शूलं रौद्रं भगन्दरम्।
मासमात्रं पठेद्यस्तु स रोगैर्मुच्यते ध्रुवम्।।१४३।।
भौमे शनिदिने वापि चक्रमध्ये पठेद्यदि।
सद्यस्तस्य महेशानि शारिका वरदा भवेत्।।१४४।।

जो श्रद्धापूर्वक रात्रि में इसका पाठ करता है, हे देवि! उसके वात-पित-कफजनित

रोग, गुल्म, रक्तस्राव, विषूचिका तत्काल ही नष्ट हो जाते हैं। एक महीने तक निरन्तर पाठ करने से मिरगी रोग, कर्णपीड़ा, भयंकर शूल और भगन्दर आदि से छुटकारा हो जाता है—यह निश्चित है। भौमवार या शनिवार में चक्रमध्य में यदि साधक इसका पाठ करता है तो हे महेशानि! शारिका तुरन्त उसको वर प्रदान करती है।।१४२-१४४।।

चतुष्पथे पठेद्यस्तु त्रिरात्रं रात्रिव्यत्यये।
दत्त्वा बलिं सुरां मुद्रां मत्स्यं मांसं सभक्तकम्॥१४५॥
वब्बोलत्वग्रसाकीर्णं शारी प्रादुर्भविष्यति।
यः पठेद् देवि लोलायां चितायां शवसन्निधौ॥१४६॥
पायंपायं त्रिवारं तु तस्य पुण्यफलं शृणु।
ब्रह्महत्यां गुरोर्हत्यां मद्यपानं च गोवधम्॥१४७॥
महापातकसङ्घातं गुरुतल्पगतोद्भवम्।
स्तेयं वा भ्रूणहत्यां वा नाशयेन्नात्र संशयः॥१४८॥

एक-एक रात्रि छोड़कर तीन रातों में चौराहे पर इसका पाठ करके जो साधक मद्य, मांस, मत्स्य, मुद्रा की बलि भातसहित देता है, तो उसके समक्ष बब्बूल के छाल पर उभरी आकृति वाली शारिका प्रकट होती है। हे देवि! जो साधक कामिनी की चिता में शव के समीप इसका पाठ करता है और तीन बार आचमन करता है, उसके पुण्यफल को सुनो। उसके ब्रह्महत्या, गुरुहत्या, मद्यपान, गोवध, महापातकसंघात, गुरुतल्पगतोद्भूत पाप, चोरी, भ्रूणहत्या आदि सभी पापों को शीघ्र विनाश हो जाता है; इससें कोई संशय नहीं है।।१४५-१४८।।

स एव हि रमापुत्रो यशस्वी लोकपूजितः।
वरदानक्षमो देवि वीरेशो भूतवल्लभः॥१४९॥
चक्रार्चने पठेद्यस्तु साधकः शक्तिसन्निधौ।
त्रिवारं श्रद्धया युक्तः स भवेद्भैरवेश्वरः॥१५०॥

हे देवि! वही लक्ष्मीपुत्र है, यशस्वी है, लोकपूजित है, वरदान देने में सक्षम है, वही वीरेश प्रिय भैरवेश्वर है और जो भूतों का चक्रार्चन के क्रम में शक्ति के समीप इसका पाठ तीन वार श्रद्धापूर्वक करता है।।१४९-१५०।।

किंकिं न लभते देवि साधको वीरसाधकः।
पुत्रवान् धनवांश्चैव सत्याचारपरः शिवे॥१५१॥
शक्तिं संपूज्य देवेशि पठेत् स्तोत्रं परामयम्।
इह लोके सुखं भुक्त्वा परत्र त्रिदिवं व्रजेत्॥१५२॥

इति नामसहस्रं तु शारिकाया मनोरमम्।
गुह्यं गुह्यतमं लोके गोपनीयं स्वयोनिवत्॥१५३॥

इति श्रीरुद्रयामले तन्त्रे दशविद्यारहस्ये श्रीशारिकायाः
सहस्रनामस्तोत्रकम्॥४॥

साधक या वीरसाधक इसके पाठ से क्या-क्या नहीं प्राप्त कर सकता है। हे शिवे! वह पुत्रवान, धनवान और सत्याचार-परायण हो जाता है। जो साधक शक्ति की पूजा करके इस परामय सहस्रनाम स्तोत्र का पाठ करता है, वह इस संसार में सुखों का भोग करके अन्त काल में स्वर्ग में वास करता है। यह शारिका का नामसहस्र अत्यन्त मनोरम है। संसार में गुह्य एवं गुह्यतम है। यह अपनी योनि के समान ही गोपनीय है।।१५१-१५३।।

इस प्रकार रुद्रयामल तन्त्रोक्त श्रीदेवीरहस्य की भाषा टीका में
श्रीशारिकासहस्रनाम पूर्ण हुआ।

●

अथ श्रीशारिकास्तोत्रम्

श्रीभैरव उवाच

श्रृणु देवि प्रवक्ष्यामि स्तोत्रं मन्त्रात्मकं परम्।
पञ्चाङ्गभूतं सर्वस्वं मन्त्रकोटिफलप्रदम्॥१॥

पूर्वपीठिका—श्री भैरव ने कहा—हे देवि! सुनो, अब मैं शारिका-पञ्चाङ्ग के एक अङ्ग मन्त्रात्मक स्तोत्र को कहता हूँ। यह इस पञ्चाङ्ग का सर्वस्व है और करोड़ मन्त्रों के फल को देने में सक्षम है॥१॥

अस्य श्रीशारिकाभगवतीस्तवराजस्य श्रीमहादेव ऋषिः, त्रिष्टुप् छन्दः, श्रीशारिकाभगवती देवता, शां बीजं, श्रीं शक्तिः, फ्रां कीलकं, श्रीविद्यासिद्ध्यर्थे स्तवराजपाठे विनियोगः। न्यासं विधाय ध्यायेत्।

विनियोग—अस्य श्रीशारिकाभगवतीस्तवराजस्य श्रीमहादेव ऋषिः, त्रिष्टुप् छन्दः, श्रीशारिकाभगवती देवता, शां बीजं, श्रीं शक्तिः, फ्रां कीलकं, श्रीविद्यासिद्ध्यर्थे विनियोगः। तदनन्तर न्यास करके देवी का ध्यान करे।

बालार्ककोटिद्युतिमिन्दुचूडां वरासिचक्राभयबाहुमाद्याम्।
सिंहाधिरूढां शिववामदेह लीनां भजे चेतसि शारिकेशीम्॥

ध्यान—श्री शारिका देवी की द्युति करोड़ नवोदित सूर्य के समान है। चूड़ा में चन्द्रमा है। हाथों में वर, खड्ग, चक्र और अभय है। सिंह पर सवार हैं। शिव के बाँयें अङ्ग में लीन हैं। ऐसी शारिकेशी का भजन मैं एकाग्र चित्त से करता हूँ।

त्र्यक्षं त्र्यक्षे तव मनुशिरोमौलिमाणिक्यभूतं
ध्यायेच्चित्ते शशिधरकलाबिन्दुविम्बावतंसम्।
यो मन्त्रीशो जपति मनसा माननीयो महद्भि-
र्धन्यः पुण्यैः स भवति मरुद्वीज्यमानो मरुत्वान्॥१॥
पराबीजं तेजोनिधिमधिमनौ यः प्रजपते
जगन्मोहध्वान्तामितपटलसूर्योदयमिदम्।
स लोकेशो भूत्वा विचरति महामान्त्रिकमणि-
र्धरायां वा नाके फणिपुरि यथेच्छं त्रिभुवने॥२॥

स्तोत्र—हे त्रिलोचने! तुम्हारे मन्त्रमय शिर पर मौलि में माणिक्य के समान 'ॐ' है। तुम्हारे शशिधर कला बिन्दु बिम्ब अवतंस का ध्यान जो चित्त में करता है और मन्त्रेश्वर का मानसिक जप करता है, वह माननीय, महान्, धन्य और पुण्यवान, मरुत द्वारा वीज्यमान और मरुत्वान हो जाता है। मन्त्र के तेजोनिधि पराबीज 'ह्रीं' का जो जप करता है, उसके सांसारिक मोह का नाश वैसे ही हो जाता है, जैसे सूर्योदय होने पर अन्धकार समाप्त हो जाता है। वह साधक लोकेश तथा महामान्त्रिक मणि होकर पृथ्वी पर या स्वर्ग में या नागलोक में अर्थात् तीनों लोकों में अपनी इच्छानुसार विचरण करता है।।१-२।।

माबीजमानन्दजमिन्दुचूडं सिद्धो जपेद्यस्तव मन्त्रमध्ये।
स देवि देवेश्वरविष्टरार्धनिविष्ट ईषन्मदिरारुणाक्षः ।।३।।

हे देवि! आनन्दस्वरूप चन्द्र के मूर्धा में स्थित 'श्रीं' का जप स्तोत्र के मध्य में जो सिद्ध करता है, वह इन्द्र के सिंहासन के आधे भाग में उसके साथ बैठता है। उसकी आँखें मदिरामद से किञ्चित् लाल होती हैं।।३।।

कूर्चं चमत्कारलसत्प्रसादं जपेच्छिवे यः स्मरकेलिलोलः।
हुंकारमात्रेण स वैरिवर्गं हत्वा भवेद्भूपतिसार्वभौमः ।।४।।

चमत्कार के प्रसाद सुशोभित कूर्च 'हूं' का जप जो साधक करता है, वह कामक्रीड़ा में निपुण साधक की अपने हुंकारमात्र से समस्त शत्रुसमूह को नष्ट कर देता है और समस्त पृथ्वी का एकछत्र राजा होता है।।४।।

गजार्णमाकर्ण्य जपेत्क्षणं यो मृगेक्षणापीनकुचान्तरस्थः।
स मेनकाकामरणप्रवीणो लीलावतीं केलिकलां करोति ।।५।।

गजार्ण 'फ्रां' को सुनकर जो क्षण भर पीनस्तनी मृगनयनी का हृदय में ध्यान करते हुये जप करता है, वह मेनका के साथ रमण करने में प्रवीण हो जाता है। लीलावती उसके साथ केलिकला करती है।।५।।

शून्यं बीजं मन्त्रमध्ये जपेद्यो मूढो जाड्याम्भोधिमग्नोऽरिभग्नः।
तस्यास्याब्जान्निःसरन्ते सुवाचो गद्यैः पद्यैर्मद्यसारप्रचाराः ।।६।।

मन्त्र के मध्य में स्थित 'आं' बीज का जप जड़ता के सागर में निमग्न मूर्ख भी यदि करता है तो उसकी जड़ता समाप्त हो जाती है और उसके मुख से गद्य-पद्यमयी सुन्दर सारगर्भित वाणी निकलने लगती है।।६।।

कल्याणबीजं यदि साधकेन्द्रो जपेच्छिवे चेतसि वार्धरात्रे।
स भोगवांल्लभ्यपरो नरेन्द्रो भोगावतीं प्राप्य भवेद्गणेशः ।।७।।

जो श्रेष्ठ साधक कल्याणवीज 'शां' का जप आधी रात में एकाग्र चित्त से करता है, वह राजाओं के लिये भी दुर्लभ भोग को प्राप्त करता है। इस श्रेष्ठ पुरुष को रमण के लिये सुन्दरियाँ मिलती हैं और उन सुन्दरियों को प्राप्त कर वह साक्षात् कामदेव हो जाता है।।७।।

श्रीशारिकायै तव मन्त्रमध्ये यो नाममन्त्रं जपते महेशि।
तस्याजिभूमौ नृपवर्गलक्ष्मीर्वशे भवेत् साधकलोकमौले: ॥८॥

हे महेशि! तेरे मन्त्र के मध्य में स्थित 'श्रीशारिकायै' नाममन्त्र का जप जो साधक करता है, उस साधक के वश में पृथ्वी पर स्थित समस्त नृपवर्ग और लक्ष्मी हो जाती है। वह साधक लोक में सर्वश्रेष्ठ माना जाता है।।८।।

अश्मरीबीजमीशानि यो जपेदर्धरात्रके।
सिंहासना भगवती वरदा दर्शनप्रदा ॥९॥

आधी रात में जो अश्मरी-बीज 'नम:' का जो जप करता है, उसे सिंहासनासीना भगवती वरदा दर्शन देती हैं।।९।।

बिन्दुत्रिकोणवसुकोणसुवृत्तनागपत्र-
त्रिवृत्तधरणीगृहमण्डलस्थाम्।
बालार्कबिम्बसदृशाननबिम्बपद्मां
यो ध्यायतेऽम्ब स भवेद्भुवि सार्वभौम: ॥१०॥

हे माते! बिन्दु, त्रिकोण, अष्टकोण, अष्टदल, त्रिवृत्, त्रिरेखात्मक भूपुरमण्डल में स्थित नवोदित सूर्यविम्ब के समान तुम्हारे मुखकमल का जो ध्यान करता है, वह संसार में सार्वभौम राजा होता है।।१०।।

यो बिन्दु: स पितामहो हरिरसौ सूर्य: स्वर: कीर्तितो
यो रेफो दुरितौघमर्दनकरो रुद्र: सदा गीयते।
य: प्राण: स पर: स एव भगवान्नाद: शिव: सर्वदा
देवी चन्द्रकला कलङ्करहिता माये तु तुभ्यं नम: ॥११॥

श्रीचक्र में जो बिन्दु है, वही ब्रह्मा और विष्णु हैं और वही सूर्यस्वर कहा गया है। समस्त पापों के नाश करने वाले रुद्र रेफ का सदा गान करते रहते हैं। जो प्राण है, वही पर है, वही भगवान् का नाद सदाशिव है। हे देवि! कलङ्करहित चन्द्रकला मायास्वरूप तुम्हें प्रणाम है।।११।।

श्रीशारिकास्तवमिमं पठति प्रभाते
यो वार्धरात्रसमयेऽर्चनकर्मकाले।

इन्द्रः सुरासुरयुतः स्वयमेति तस्य
पूजां विधाय ददते त्रिदिवाधिपत्यम् ॥१२॥

फलश्रुति—जो शारिका के इस स्तोत्र का पाठ प्रभात में करता है या आधी रात के अर्चनकाल में करता है; सुर, असुरसहित स्वयं इन्द्र उसकी पूजा करते हैं और स्वर्गलोक का आधिपत्य उसे सौंप देते हैं।।१२।।

इतीदं देवि पञ्चाङ्गं शारिकाया रहस्यकम्।
सर्वस्वं परमं गुह्यं त्रैलोक्योद्धरणक्षमम् ॥१३॥
पुण्यं पवित्रमायुष्यं श्रेयस्करं यशस्करम्।
मकारैः पञ्चभिः पूज्यं साध्यं साधकसत्तमैः ॥१४॥
संरक्ष्यं पुत्रवद् देवि दर्शयेदिष्टमित्रवत्।
इदं रहस्यमाख्यातं शारिकासारमुत्तमम् ॥१५॥
अभक्ताय न दातव्यं कुचैलाय दुरात्मने।
निन्दकायान्यशिष्याय स मन्त्री निरयी भवेत् ॥१६॥

हे देवि! यह पञ्चाङ्ग देवी शारिका का रहस्य है। यही शारिका का सर्वस्व है। तीनों लोकों का उद्धार करने में सक्षम है। यह पुण्यप्रदायक, पवित्र, आयुवर्धक श्रेयस्कर और यशस्कर है। हे देवि! जो साधकसत्तम पञ्चमकारों से इसकी पूजा करता है, उसकी रक्षा शारिका देवी पुत्र के समान करती हैं और इष्टमित्र के समान उसे दर्शन देती हैं। इस प्रकार शारिकारहस्य के उत्तम सार का मेरे द्वारा वर्णन किया गया। दुरात्माओं, अभक्तों और कुचैलों को इसे नहीं देना चाहिये। जो गुरुनिन्दकों, परशिष्यों को इसे देता है, वह नरकवासी होता है।।१३-१६।।

श्रीदेव्युवाच

भगवन् भवतानेन पञ्चाङ्गकथनेन हि।
क्रीतास्मि तव दास्यस्मि किमन्यत् कथयामि ते ॥१७॥

श्री देवी ने कहा कि हे भगवन्! आपने इस पञ्चाङ्ग का वर्णन करके मुझे खरीद लिया है। मैं आपकी दासी हूँ। इसके अतिरिक्त मैं और क्या कह सकती हूँ।।१७।।

श्रीभैरव उवाच

पञ्चाङ्गतत्त्वमीशानि शिलासर्वस्वमुत्तमम्।
गुह्यं गोप्यतमं देवि गोपनीयं मुमुक्षुभिः ॥१८॥

इति श्रीरुद्रयामले तन्त्रे दशविद्यारहस्ये
श्रीशारिकास्तोत्रम्॥५॥

श्री भैरव ने कहा—हे ईशानि! यह पञ्चाङ्गतत्त्व उत्तम शिलासर्वस्व है। यह गुह्य, गोप्यतम और मुमुक्षुओं से भी गोपनीय है।।१८।।

इस प्रकार रुद्रयामल तन्त्रोक्त श्रीदेवीरहस्य की भाषा टीका में
श्रीशारिकास्तोत्र पूर्ण हुआ।

●

समाप्तमिदं श्रीशारिकापञ्चाङ्गम्

अथ श्रीमहाराज्ञीपञ्चाङ्गम्

महाराज्ञीपटलम्

पञ्चाङ्गप्रस्तावः

श्रीशैलशिखरासीनं भगवन्तमुमापतिम् ।
चन्द्रार्धमुकुटं देवं सूर्यसोमाग्निलोचनम् ।।१।।
गजचर्मपरीधानं विरूपाक्षं सुराधिपम् ।
गणगन्धर्वयक्षेन्द्रदेवासुरनमस्कृतम् ।।२।।
विहसन्तं जपन्तं च पठन्तं च मुहुर्मुहुः ।
नागाभरणभूषाढ्यं ब्रह्माच्युतनमस्कृतम् ।।३।।
उत्थाय प्रणता भूत्वा पर्यपृच्छत भैरवी ।

महाराज्ञी-पटल—भगवान् उमापति श्रीशैलशिखर पर बैठे हैं। उनके मुकुट में अर्द्धचन्द्र है। सूर्य-चन्द्र-अग्नि उनके नेत्र हैं। हाथी की चमड़ी का परिधान है। विरूपाक्ष, देवेन्द्र, गन्धर्व, यक्षेन्द्र, देवता और असुर उन्हें प्रणाम कर रहे हैं। ब्रह्मा, विष्णु प्रणाम कर रहे हैं।

भगवान् शंकर मुस्कुरा रहे हैं, जप कर रहे हैं, बार-बार स्तोत्रपाठ कर रहे हैं। नागों के आभरण से वे भूषित हैं। भैरवी ने उठकर, शिर झुकाकर हाथ जोड़कर उनसे प्रश्न किया।।१-३।।

श्रीदेव्युवाच

भगवंस्त्वं परो देवः सुरासुरनमस्कृतः ।
गुणी वेदान्ततन्त्रज्ञो गुणातीतश्चिदीश्वरः ।।४।।
सततं किं जपासक्तस्तत्त्वं सर्वोत्तमं प्रभो ।
अद्याप्यविदितं यन्मे तत्तत्त्वं वक्तुमर्हसि ।।५।।

श्रीदेवी ने कहा—हे भगवन्! आप परमदेव हैं, देव-दैत्य आपको प्रणाम करते हैं। आप गुणवान, वेदान्ततत्त्व के ज्ञाता, गुणों से परे और चिदीश्वर हैं; तब आप किस सर्वोत्तम तत्त्व का जप करने में सदैव आसक्त रहते हैं, यह बात मुझे आज भी ज्ञात नहीं है। अत: उसे बताने की कृपा करें।।४-५।।

श्रीभैरव उवाच

या देवी निष्कला श्यामा निराभासा निरञ्जना।
महाश्रीषोडशीविद्या सा राज्ञीति निगद्यते ॥६॥
सकला राज्यदा लोके विद्याराज्ञी महेश्वरी।
देवी पञ्चदशी सैव परब्रह्मकुटुम्बिनी ॥७॥
नृणां दारिद्र्यनाशाय प्रादुर्भूताद्य भारते।
यस्याः पञ्चदशीविद्यां गुह्यामविदितां पुरा ॥८॥
तां जपामि महाविद्यां तत्पञ्चाङ्गं स्मराम्यहम्।

श्रीभैरव ने कहा—जो देवी, निष्कला, श्यामा, निराभासा, निरञ्जना, महाश्री षोड़शी विद्या है, उसे राज्ञी कहते हैं। वह संसार में सभी राज्यों को देने वाली महेश्वरी विद्याराज्ञी हैं। वही देवी पञ्चदशी है और वही परब्रह्मकुटुम्बिनी है। मनुष्यों की दरिद्रता के नाश के लिये वर्तमान में उसका भारत में प्रादुर्भाव हुआ है। जिसकी पञ्चदशी विद्या प्राचीन काल से गुह्य और अविदित है, उसी महाविद्या का जप और उसी के पञ्चाङ्ग का स्मरण मैं सदा करता रहता हूँ।।६-८।।

श्रीदेव्युवाच

भगवन् करुणाम्भोधे शरणागतवत्सल।
या देवी लोकमातेति राज्ञी राज्यप्रदायिनी ॥९॥
दारिद्र्यहारिणी त्वद्य तत्पञ्चाङ्गं वदस्व मे।
तत्त्वतो वेदतन्त्राढ्यं यद्यहं प्रेयसी तव ॥१०॥

श्रीदेवी ने कहा—हे भगवन्! करुणा के सागर! शरणागतवत्सल! जो देवी लोकमाता, राज्ञी, राज्यप्रदायिनी एवं दारिद्र्यहारिणी के नाम से प्रसिद्ध है, आज उसके पञ्चाङ्ग को आप मुझसे कहिये। यदि मैं आपकी प्रेयसी हूँ, तो तत्त्वतः वेदतत्त्वाढ्य उस पञ्चाङ्ग को मुझे बतलाइये।।९-१०।।

श्रीभैरव उवाच

शृणुष्वावहिता भूत्वा पटलं मन्त्रविग्रहम्।
राज्ञ्याः सर्वस्वभूतं मे रहस्यं देवदुर्लभम् ॥११॥
मन्त्रोद्धारं महादेवि राज्ञ्या मद्वदनोदितम्।
श्रुत्वा गोपय यत्नेन येन सिद्धिः प्रजायते ॥१२॥

राज्ञी के सर्वस्वभूत देवदुर्लभ रहस्यरूप मन्त्रविग्रह पटल को अब सावधानीपूर्वक

सुनो। मेरे मुख से कथित महादेवी राज्ञी के मन्त्र का उद्धार सुनकर यत्नपूर्वक उसे गुप्त रखने से ही सिद्धि मिलती है।।११-१२।।

महाराज्ञीमन्त्रोद्धारः

तारं माया मानलः कामशक्ती
मध्ये चाख्या भगवत्यै च राज्यै।
मायाबीजं ठद्वयं देवि राज्या
मन्त्रोद्धारो वर्णितो गोपनीयः ॥१३॥

तार = ॐ, माया = ह्रीं, मा = श्रीं, अनल = रां, काम = क्लीं, शक्ति = सौः, भगवत्यै = राज्यै, मायाबीज = ह्रीं, ठद्वय = स्वाहा के योग से राज्ञी का मन्त्र स्पष्ट होता है। मन्त्र है—ॐ ह्रीं श्रीं रां क्लीं सौः भगवत्यै राज्यै ह्रीं स्वाहा।।१३।।

महाराज्ञीमन्त्रप्रशंसा

नास्यान्तरायो न क्लेशो न विपर्ययभीः शिवे।
सर्वसिद्धिप्रदो देवि मन्त्रोऽयं भाग्यवर्धनः ॥१४॥
मन्त्रमुत्कीलयेदादौ ततः सञ्जीवयेन्मनुम्।
सिद्धं मन्त्रं जपेद् देवि ततः संपुटितं चरेत् ॥१५॥
ततो मन्त्रोऽयमीशानि साक्षात् सिद्धिप्रदो भवेत्।
यन्त्रोद्धारं प्रवक्ष्यामि सर्वाशापरिपूरकम् ॥१६॥

महाराज्ञी मन्त्र की प्रशंसा—पञ्च दशाक्षर इस मन्त्र की साधना में न कोई अन्तराय, न कष्ट और न ही कोई विपर्यय है। यह मन्त्र सर्वसिद्धिप्रदायक और भाग्यवर्द्धक है। हे देवि! पहले मन्त्र का उत्कीलन करे तब उसे सञ्जीवित करे। पहले सिद्ध मन्त्र का जप करे तब उसका सम्पुटित जप करे। हे ईशानि! ऐसा करने से यह मन्त्र साक्षात् सिद्धिप्रद होता है। सभी आशाओं को पूरा करने वाले इसके यन्त्र का अब मैं उद्धार कहता हूँ।।१४-१६।।

महाराज्ञीयन्त्रोद्धारः

सर्वसम्पत्प्रदं चैव सर्वार्थसाधकं तथा।
सर्वसिद्धिप्रदं चक्रं सर्वानन्दमयं तथा ॥१७॥
सर्वसंमोहनं चक्रं पीठार्चायां प्रपूजयेत्।
बिन्दुस्त्र्यश्रं षडस्रं च वृत्ताष्टदलमण्डितम् ॥१८॥
वृत्तत्रयं धरासद्म राज्ञीश्रीचक्रमीरितम्।

महाराज्ञी-यन्त्रोद्धार—यह यन्त्र सभी सम्पत्तियों को देने वाला एवं सर्वार्थसाधक है। यह चक्र सभी सिद्धियों को देने वाला एवं सर्वानन्दमय है। इस सर्वसम्मोहन यन्त्र पीठपूजा करने के उपरान्त पूजन करना चाहिये। विन्दु, त्रिकोण, षट्कोण, अष्टदल, वृत्तत्रय, भूपुर से महाराज्ञी का यह श्रीचक्र वनता है।।१७-१८।।

महाराज्ञीयन्त्रम्

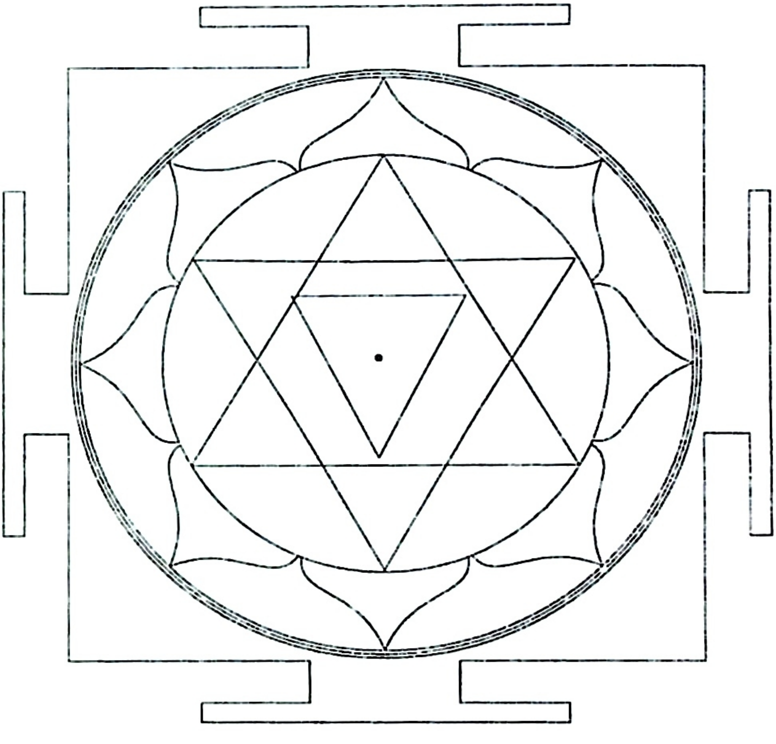

महाराज्ञीयन्त्रलयाङ्गम्

लयाङ्गमस्य देवेशि शृणु वेदागमोद्धृतम् ॥१९॥
यस्य श्रवणमात्रेण पूजायुतफलं लभेत् ।
गणेशो भीमराजश्च कुमारो जाङ्गलेश्वरः ॥२०॥
इन्द्राद्या लोकपालाश्च पूजनीयाश्च भूगृहे ।
वृत्तत्रयेऽभ्यर्चनीया गुरुपंक्तित्रयी शिवे ॥२१॥
दिव्यसिद्धौघमर्त्यौघाः पूज्या गन्धाक्षतैः प्रिये ।
वासुकिर्नीलनागश्च तक्षकः पद्मनागकः ॥२२॥

लयाङ्ग—हे देवि! इस यन्त्र के लयाङ्ग को अब सुनिये, जो वेद और आगम से लिया गया है। इस लयाङ्ग के सुनने-मात्र से ही दश हजार पूजा का फल प्राप्त होता है। इसके भूपुर में गणेश, भीमराज, कुमार, जाङ्गलेश्वर और इन्द्रादि दश लोकपालों की पूजा होती है। हे शिवे! वृत्तत्रय में गुरुपंक्तित्रयी की पूजा होती है। दिव्यौघ, सिद्धौघ और मानवौघों की पूजा गन्धाक्षत से होती है। हे पार्वति! पूर्वादि दिशाओं में वासुकि, नीलनाग, तक्षक और पद्मनाग की पूजा होती है॥१९-२२॥

पूर्वादिदिक्षु संपूज्या विदिक्षु शृणु पार्वति।
कर्कोटकः शङ्खपालः कुलिकः शेष ईश्वरि॥२३॥
आग्नेयक्रमतः पूज्या ब्राह्म्याद्या मातरस्तथा।
भैरवास्त्वष्ट संपूज्या वामावर्तेन पार्वति॥२४॥
ब्राह्मी च वैष्णवी चैव रुद्राणी चापराजिता।
कौमारी चैव चामुण्डा वाराही नारसिंहिका॥२५॥
असिताङ्गो रुरुश्चण्डः क्रोधेशोन्मत्तभीषणाः।
कपालीशश्च संहारः पूजनीया यथाक्रमम्॥२६॥

विदिशा में आग्नेय क्रम से कर्कोटक, शङ्खपाल, कुलिक और शेष का पूजन होता है। हे पार्वति! अष्टदल में आग्नेय क्रम से ब्राह्मी आदि अष्टमातृकाओं और अष्टभैरवों की पूजा वामावर्त क्रम से होती है। ब्राह्मी, वैष्णवी, रुद्राणी, अपराजिता, कौमारी, चामुण्डा, वाराही, नारसिंही—ये अष्ट मातृकायें हैं। असिताङ्ग, रुरु, चण्ड, क्रोधेश, उन्मत्त, भीषण, कपाली, संहार—ये अष्ट भैरव हैं। इनकी पूजा यथाक्रम से करनी चाहिये॥२३-२६॥

श्रीदुर्गा शारिकादेवी वैखरी च शिवा शिवे।
कालिका त्रिपुरा चैव वामावृत्त्या षडश्रके॥२७॥
लक्ष्मीः सरस्वती बाला पूजनीयास्त्रिकोणके।
बिन्दौ राज्यप्रदा राज्ञी विद्या पञ्चदशाक्षरी॥२८॥
भूतेश्वरं शिवं देवि खड्गं पद्मं समर्चयेत्।
कलशं च सुधापात्रं पूजयेद्वटुकं तथा॥२९॥
योगिनीः क्षेत्रपालांश्च भूतांस्तत्र विनायकम्।
रामेश्वरं महेशानि लयाङ्गमिदमीरितम्॥३०॥

षट्कोण में श्रीदुर्गा, शारिका, वैखरी, शिवा, कालिका और त्रिपुरा का पूजन वामावर्त क्रम से होता है। त्रिकोण में लक्ष्मी, सरस्वती और बाला का अर्चन होता है। बिन्दु में राज्यप्रदा राज्ञी विद्या पञ्च दशाक्षरी का पूजन होता है। भूतेश्वर, शिव, खड्ग, पद्म,

कलश, सुधा, पात्र, वटुक, योगिनी, क्षेत्रपाल, भूतगण, विनायक, रामेश्वर का पूजन होता है। हे महेशानि! इसी को लयाङ्ग कहते हैं।।२७-३०।।

महाराज्ञीमन्त्रर्ष्यादीनि

श्रीराज्ञीमूलमन्त्रस्य ऋषिर्ब्रह्मा समीरितः ।
गायत्री छन्द ईशानि राज्ञीदेवी च देवता ।।३१।।
माया बीजं शरच्छक्तिः कामः कीलकमीश्वरि ।
भोगापवर्गसिद्ध्यर्थे विनियोगः प्रकीर्तितः ।।३२।।

विनियोग—हे ईशानि! इस श्रीराज्ञी मूल मन्त्र के ऋषि ब्रह्मा कहे गये हैं छन्दगायत्री एवं राज्ञी देवी देवता कहे गय हैं। माया = ह्रीं बीज, शरत् = फट् शक्ति एवं काम = क्लीं कीलक कहा गया है। हे ईश्वरि! भोग एवं अपवर्ग की सिद्धि हेतु इसका विनियोग कहा गया है।।३१-३२।।

ध्यानमस्याः प्रवक्ष्यामि सात्त्विकं कामनावहम् ।
सर्वसिद्धिप्रदं देवि मन्त्रकोटिफलप्रदम् ।।३३।।

हे देवि! अब मैं राज्ञी देवी के सात्त्विक ध्यान का वर्णन करता हूँ, जो कामनाप्रद, सर्वसिद्धिप्रद और करोड़ मन्त्रों का फल देने में सक्षम है।।३३।।

महाराज्ञीध्यानम्

उद्यद्दिवाकरसहस्ररुचिं त्रिनेत्रां
सिंहासनोपरिगतामुरगोपवीताम् ।
खड्गाम्बुजाढ्यकलशामृतपात्रहस्तां राज्ञीं
भजामि विकसद्वदनारबिन्दाम् ।।३४।।
चतुर्भुजां चन्द्रकलार्धशेखरां
सिंहासनस्थां भुजगोपवीतिनीम् ।
पाशाङ्कुशाम्भोरुहखड्गधारिणीं राज्ञीं
भजे चेतसि राज्यदायिनीम् ।।३५।।

ध्यान—हजार नवोदित सूर्यों के समान जिनकी आभा है, तीन नेत्र हैं, सिंहासन पर विराजमान हैं, नागों का यज्ञोपवीत है, खड्ग, पद्म, कलश और अमृतपात्र हाथों में हैं, प्रफुल्ल कमल के समान मुख है; ऐसी राज्ञी का मैं भजन करता हूँ।

चार भुजाएँ हैं। अर्ध चन्द्रकला मूर्धा में है। सिंहासन पर बैठी हैं। नागों का यज्ञोपवीत है। पाश, अङ्कुश, कमल, खड्ग हाथों में है। ऐसी राज्यदायिनी राज्ञी का ध्यान में हृदय मैं अपने करता हूँ।।३३-३५।।

महाराज्ञीमन्त्रस्याष्टौ प्रयोगाः

अधुना देवि वक्ष्यामि प्रयोगानष्ट तत्त्वतः ।
येषां साधनमात्रेण मन्त्रः कल्पद्रुमो भवेत् ॥३६॥
स्तम्भनं मोहनं चैव मारणाकर्षणे प्रिये ।
वशीकारं तथोच्चाटं शान्तिकं पौष्टिकं तथा ॥३७॥
एतेषां साधनं वक्ष्ये प्रयोगाणां महेश्वरि ।

प्रयोग—हे देवि! अब मैं राज्ञी-मन्त्र के आठ प्रयोगों को तत्त्वतः कहता हूँ, जिनका साधन करने से मन्त्र कल्पवृक्ष के समान हो जाता है। इन आठ प्रयोगों में स्तम्भन, मोहन, मारण, आकर्षण, वशीकरण, उच्चाटन, शान्ति और पुष्टि हैं। हे महेश्वरि! अब इनके साधन और प्रयोगों का वर्णन करता हूँ।।३६-३७।।

स्तम्भनम्

रवौ स्नात्वा जपेन्मूलं श्मशानेऽयुतसंख्यया ॥३८॥
हुनेच्चितानले सर्पिर्मालिनीकेशसञ्चयम् ।
स्तम्भनं जायते वारिचन्द्रवातार्कपाथसाम् ॥३९॥

स्तम्भन—रविवार को स्नान करके श्मशान में मूल मन्त्र का जप दश हजार करे। चिता की अग्नि में गाय के घी और मालिनी के केश से हवन करे। इससे शत्रु, चन्द्र, वायु, सूर्य, जल का स्तम्भन होता है।।३८-३९।।

मोहनम्

चन्द्रे तथा श्मशानस्थः शववेशधरः सुधीः ।
जपेन्मन्त्रायुतं सम्यक् कुर्याद् होमं दशांशतः ॥४०॥
घृतवानीरशाखाभिर्लवङ्गैर्मोहनं भवेत् ।

मोहन—सोमवार में श्मशान में जाकर साधक शववेश धारण करके दश हजार मन्त्र जप करे। सम्यक् रूप से दशांश अर्थात् एक हजार हवन घी, वानीरशाखा और लवङ्ग से करे तो मोहन होता है।।४०।।

मारणम्

भौमे स्नात्वा श्मशाने च चिताग्रे सञ्जपेन्मनुम् ॥४१॥
हुनेद् दशांशतः सर्पिर्मीनकण्टकगोमयान् ।
शत्रुः कालसमानोऽपि मृत्युमेष्यति पार्वति ॥४२॥

मारण—मंगलवार में स्नान करके श्मशान में चिता के आगे मन्त्र का जप करे।

गाय के घी का मछली का काँटा और गोबर मिलाकर दशांश हवन करे। हे पार्वति! इससे साक्षात् काल के समान शत्रु की भी मृत्यु हो जाती है।।४१-४२।।

आकर्षणम्

बुधे श्मशाने देवेशि जपेन्मन्त्रायुतं निशि।
हुनेदाज्यं दशांशेन सचण्डालकचं प्रिये ॥४३॥
रम्भा तिलोत्तमा वापि प्रातः प्रादुर्भविष्यति।

आकर्षण—बुधवार में श्मशान में जाकर दश हजार मन्त्र-जप करे। गोघृत और चाण्डाल के बाल से जप का दशांश हवन करे। इससे रम्भा अथवा तिलोत्तमा भी प्रात:काल में साधक के सामने उपस्थित होती है।।४३।।

वशीकरणम्

गुरौ जपेन्मनुं देवि श्मशाने मुक्तकुन्तलः ॥४४॥
अयुतं तद्दशांशेन हुनेदाज्यं सपायसम्।
सशरं घनसारं च भृत्यतां याति वासवः ॥४५॥

वशीकरण—गुरुवार में श्मशान में जाकर केश खोलकर दश हजार मन्त्र-जप करे; तदनन्तर गाय के घी, पायस, नरकुल और घनसार के मिश्रण से जप का दशांश हवन करे। इससे इन्द्र भी दास हो जाता है।।४४-४५।।

उच्चाटनम्

शुक्रे श्मशानदेशे तु जपेदयुतसंख्यया।
दिगम्बरो मुक्तकेशो हुनेदाज्यं च सोल्मुकम् ॥४६॥
सदूर्वाशर्करं हुत्वा रिपुमुच्चाटयिष्यति।

उच्चाटन—शुक्रवार में श्मशान में नग्न होकर अपने केशों को खोल कर दश हजार मन्त्र-जप करे। इसके बाद आज्य, उल्मुक, दूब एवं शक्कर के मिश्रण से हवन करे। ऐसा करने से शत्रु का उच्चाटन होता है।।४६।।

शान्तिः

शनौ श्मशाननिलये जपेद्राज्ञीमनुं सुधीः ॥४७॥
अयुतं तद्दशांशेन हुनेदाज्यं सशम्बुकम्।
समेषप्लीहक्षारं च शमयेदभितो भयम् ॥४८॥

शान्ति—शनिवार में श्मशान में जाकर साधक राज्ञीमन्त्र का दश हजार जप करे।

घी, घोंघा, भेड़, रोहेड़ा-क्षार के मिश्रण से दशांश हवन करे। इसके चारो ओर से होने वाले भयों की शान्ति होती है।।४७-४८।।

पुष्टिः

रवौ श्मशाने सञ्जप्य मूलं चायुतसंख्यया।
हुनेत् कपोतमांसाज्यमाहिषं पलमद्रिजे ।।४९।।
पितृणां देवतानां च पुष्टिदोऽयं प्रयोगकः।

पुष्टि—श्मशान से जाकर मूल मन्त्र का जप दश हजार करे। कबूतर के मांस, गाय का घी, भैंस के मांस को मिलाकर हवन करे। हे अद्रिजे! इस प्रयोग के करने से पितरों और देवताओं की पुष्टि होती है।।४९।।

इत्येष पटलो राज्ञ्याः सर्वागमरहस्यवान् ।।५०।।
अन्यशिष्याय न देयो दुर्जनाय विशेषतः।
गुरुभक्तिविहीनाय कुचैलाय दुरात्मने ।।५१।।
अभक्तेभ्योऽपि पुत्रेभ्यो दत्त्वा निरयमाप्नुयात्।

राज्ञी का यह पटल सभी आगमों का रहस्य है। इसे दूसरे के शिष्य को और विशेषकर दुष्ट लोगों को नहीं देना चाहिये। गुरुभक्ति-विहीन, कुचैल और दुर्जनों के साथ-साथ अपने अभक्त पुत्र को भी देने से दाता नरकगामी होता है।।५०-५१।।

देयं शिष्याय शान्ताय गुरुभक्ताय पार्वति।
दीक्षिताय कुलीनाय राज्ञीभक्तिरताय च ।।५२।।

अपने शान्त एवं गुरुभक्त शिष्य को ही इसे देना चाहिये। साथ ही दीक्षित, कुलीन एवं राज्ञी के भक्त को देना चाहिये।।५२।।

पटलोपसंहारः

इदं रहस्यं परमं तव भक्त्या मयोदितम्।
गुह्यं गोप्यतमं लोके गोपनीयं स्वयोनिवत् ।।५३।।

इति श्रीरुद्रयामले तन्त्रे दशविद्यारहस्ये श्रीमहाराज्ञीपटलम्।।१।।

तुम्हारी भक्ति के कारण इस परम रहस्य को मैंने कहा है। यह संवाद में अत्यन्त गुह्य, गोप्यतम है और अपनी योनि के समान गोपनीय है।।५३।।

इस प्रकार रुद्रयामल तन्त्रोक्त श्रीदेवीरहस्य की भाषा टीका में
श्रीमहाराज्ञी पटल पूर्ण हुआ।

●

अथ श्रीमहाराज्ञी-पूजापद्धतिः

श्रीभैरव उवाच

अधुना देवि वक्ष्येऽहं पद्धतिं गद्यरूपिणीम्।
श्रीराज्ञीनित्यपूजायास्तत्त्वतः सौख्यदायिनीम् ॥१॥
प्रातःकृत्यमकृत्वा तु यो देवीं भक्तितोऽर्चयेत्।
तस्य पूजा तु विफला शौचहीना यथा क्रिया ॥२॥

अब मैं श्री राज्ञी की गद्य-पद्यमयी पूजापद्धति का वर्णन करता हूँ, जो वास्तव में सभी प्रकार के सुखों को देने वाली है। प्रातःकृत्य न करके जो साधक भक्ति-भाव से भी देवी का अर्चन करता है, उसकी पूजा वैसे ही विफल हो जाती है, जैसे शौचविहीन क्रिया निष्फल होती है।।१-२।।

तत्र श्रीमान्साधको ब्राह्मे मुहूर्ते शयनतलात् उत्थाय करचरणादि प्रक्षाल्य निजासने बन्द्धपद्मासनः समुपविश्य स्वशिरःस्थसहस्त्राराधोमुखकमलकर्णिकान्तर्गतं निजगुरुं स्वशक्त्या सहितं ध्यात्वा मानसैरुपचारैः संपूज्य दण्डवन्नत्वा, तत्र सशिवां देवीं ध्यात्वा मूलं यथाशक्त्या जप्त्वा जपं गुरवे समर्प्य तदाज्ञां गृहीत्वा बहिरागत्य मलादिशोधनं विधाय नद्यादौ गत्वा वर्णोक्तं शौचं कृत्वा, 'ॐक्लीं कामदेवाय सर्वजनप्रियाय नमः' इति दन्तान्विशोध्य मलापकर्षणं स्नानं कृत्वा, मृत्त्रयं मूलेन संशोध्य जले श्रीचक्रं योनिचक्रं वा विभाव्य, तत्र 'गांगीं गङ्गे च यमुने चैव' इत्यादिनाङ्कुशमुद्रया तीर्थान्यावाह्य, तत्र

बालार्ककोटिसदृशे भूतेश्वरसमन्विते।
महापञ्चदशीविद्ये जलेऽस्मिँस्त्वमिहावह ॥

इत्यावाहनादिमुद्राः प्रदर्श्य, मृदमङ्गे विलिप्य मूलमुच्चार्य कुम्भमुद्रया जले त्रिवारं पुनर्मज्जेत्। ततो 'ॐह्रांह्रींसः सूर्याय एष तेऽर्घो नमः' इत्यर्घ्यत्रयं दत्त्वा, मूलं यथाशक्त्या जप्त्वा वाससी परिधाप्य, वैदिकीं सन्ध्यां निर्वर्त्य तान्त्रिकीं कुर्यात्।

श्रीमान् साधक ब्राह्म मुहूर्त में शय्या का त्यागकर हाथ-पैर आदि धोकर अपने आसन पर पद्मासन में बैठकर अपने शिर के अधोमुख सहस्त्रदल कमल की कर्णिका में

शक्तिसहित गुरु का ध्यान करे। मानसिक उपचारों से उनका पूजन करे। दण्डवत् प्रणाम करे। वहीं पर शिव के सहित देवी का ध्यान करके यथाशक्ति जप करे। जप उन्हें समर्पित करे। उनकी आज्ञा लेकर बाहर जाये। मलादि शोधन करे। नदी आदि में जाकर शौच करे। 'ॐ क्लीं कामदेवाय सर्वजनप्रियाय नम:' से दतुवन करे। दन्तशोधन के बाद मलापकर्षण स्नान करे। मिट्टी के तीन गोलों का मूल मन्त्र से शोधन करे। जल में श्रीचक्र, योनिचक्र की कल्पना करे। उसमें 'गां गीं गङ्गे च यमुने चैव' इत्यादि से अङ्कुश मुद्रा बनाकर तीर्थों का आवाहन करे। तब उसमें पञ्चदशी विद्या का आवाहन निम्न मन्त्र से करे—

बालार्ककोटिसदृशे भूतेश्वरसमन्विते।
महापञ्चदशीविद्ये जलेऽस्मिंस्त्वमिहावह।।

आवाहनादि मुद्रा दिखाये। मिट्टी को अङ्गों में लगाये। मूल मन्त्र का उच्चारण करके कुम्भ मुद्रा से जल में तीन बार निमज्जन करे। तब 'ॐ ह्रां ह्रीं स: सूर्याय एष तेऽर्घो नम:' से तीन अर्घ्य देवे। मूल मन्त्र का यथाशक्ति जप करके वस्त्र बदले। इस प्रकार वैदिकी संध्या करके तान्त्रिकी सन्ध्या करे।

तत्र मूलषडङ्गं विधाय वामहस्ते जलं निधाय पञ्चभूतमन्त्रेण यंरंवंलंहं सप्तधाभिमन्त्र्य, तत्त्वमुद्रयाच्छाद्य मूलमुच्चरंस्तद्गलितोदकबिन्दुभि: सप्तवारं शिर: प्रोक्ष्य, दक्षिणहस्ते धृत्वा इडया देहान्तर्नीत्वा पापं प्रक्षाल्य, तज्जलं पिङ्गलया विरिच्य वामहस्ते तज्जलं सकलुषं वामभागस्थशिलायां फडिति नि:क्षिपेत्। इत्यघमर्षणं कृत्वा, प्रणवमायाभ्यां प्राणायामत्रयं कृत्वा, ॐह्रीं आत्मतत्त्वं शोधयामि स्वाहा। ॐह्रीं विद्यातत्त्वं शोधयामि स्वाहा। ॐह्रीं शिवतत्त्वं शोधयामि स्वाहा। इत्याचम्य, षडङ्गन्यासं ॐह्रीं इत्यादिना विधाय गायत्रीं जपेत्। ॐ राज्यप्रदायै विद्महे ह्रीं पञ्चदशाक्षर्य्यै धीमहि श्रीं तन्नो महाराज्ञी प्रचोदयात् ३। गायत्रीं मूलविद्यां च जप्त्वा, गायत्र्या श्रीमहाराज्ञीभूतेश्वराभ्यामिदमर्घ्यं स्वाहा इत्यर्घ्यत्रयं दत्त्वा, पुनर्जले योनिचक्रं विभाव्य मूलं सप्तधोच्चार्य 'श्रीसाङ्गा सवाहना सायुधा सपरिच्छदा भूतेश्वरसहिता श्रीमहाराज्ञी तृप्यतां' इति सप्तवारं सन्तर्प्य, भूतेश्वरं पृथक् त्रि: सन्तर्प्य, परिवारान् प्रणवमायाभ्यां सकृत् सन्तर्प्य, गुरुपरमगुरुपरमेष्ठिगुरून् पितृँश्च सन्तर्प्य, पूर्ववत् सूर्यायार्घ्यत्रयं दत्त्वा पुनर्देवदेव्यौ हृदि समानीय, तीर्थं विसृज्य यागगृहमागच्छेदिति संध्याविधि:।

तान्त्रिकी सन्ध्या—मूल मन्त्र से षडङ्ग न्यास करके बाँयें हाथ में जल लेकर पञ्चभूत मन्त्र 'यं रं वं लं हं' का जप सात बार करके उसे मन्त्रित करे। तत्त्वमुद्रा से दाहिने

हाथ से उसे ढके। मूल मन्त्र उच्चारण करते हुए उसमें से टपके कुछ बूँद जल से अपने शिर का प्रोक्षण सात बार करे। तब उस जल को दाँयीं हथेली में लेकर इड़ा नाड़ी से अपने देह में ले आये और पापों का प्रक्षालन करे। उस जल को पिङ्गला नाड़ी से बाहर निकाल कर बाँईं हथेली में लेकर कलुष-सहित पापपुरुष को अपने वाम भाग में स्थित कल्पित शिला पर 'फट्' से पटक दे। इस अघमर्षण के बाद तीन प्राणायाम करे। तत्त्वशोधन करे। जैसे ॐ ह्रीं आत्मतत्त्वं शोधयामि स्वाहा। ॐ ह्रीं विद्यातत्त्वं शोधयामि स्वाहा। ॐ ह्रीं शिवतत्त्वं शोधयामि स्वाहा। ॐ ह्रीं सर्वतत्त्वं शोधयामि स्वाहा। इन मन्त्रों से चार बार आचमन करे। तब न्यास करे।

'ॐ ह्रीं' इत्यादि से षडङ्ग न्यास करके राज्ञी के गायत्री मन्त्र का जप करे। राज्ञी का गायत्री मन्त्र है—ॐ राज्यप्रदायै विद्महे ह्रीं पञ्चदशाक्षर्यै धीमहि तन्नो महाराज्ञी प्रचोदयात्। इस राज्ञी गायत्री का जप तीन बार करे। गायत्री-सहित मूल विद्या का जप कर गायत्रीसहित 'श्री महाराज्ञीभूतेश्वराभ्यामिदमर्घ्यं स्वाहा' कहकर तीन बार अर्घ्य करे।

फिर जल में योनिचक्र, त्रिकोण की कल्पना करे। मूल मन्त्र का उच्चारण सात बार करके 'श्रीसाङ्गा, सवाहना, सायुधा, सपरिच्छदा भूतेश्वरसहिता श्रीमहाराज्ञी तृप्यतां' से सात बार तर्पण करे। भूतेश्वर का तर्पण तीन बार अलग से करे। परिवार का तर्पण 'ॐ ह्रीं' से करे। गुरु, परमगुरु, परमेष्ठिगुरु एवं पितरों का तर्पण करे। पूर्ववत् सूर्य को तीन अर्घ्य देवे। तत्पश्चात् देव-देवी को अपने हृदय में ले आये। तीर्थ का विसर्जन करे। यागमण्डप में आये। इतना करने पर तान्त्रिक सन्ध्या पूर्ण होती है।

तत्र पादौ प्रक्षाल्य ॐह्रीं इति द्वारदेवता-गणेश-वटुक-क्षेत्रेश-योगिनी-गङ्गा-सरस्वती-देहली-द्वारश्रियोऽभ्यर्च्य, वामस्कन्धेन द्वारशाखे स्पृष्ट्वा मण्डपान्तः प्रविश्य विष्टरशुद्धिं कुर्यात्। ॐआं आसनशोधनमन्त्रस्य मेरुपृष्ठ ऋषिः, सुतलं छन्दः, कूर्मो देवता, आसनशोधने विनियोगः। प्रीं पृथिव्यै नमः।

महि त्वया धृता लोका देवि त्वं विष्णुना धृता ।
त्वं च धारय मां लोके पवित्रं कुरु चासनम् ॥

ॐ आं आधारशक्तये नमः। कूर्माय नमः। अनन्ताय नमः। अष्टदलपद्माय नमः। सहस्रदलपद्माय नमः। तत्रोपविश्य,

अपसर्पन्तु ते भूता ये भूता भुवि संस्थिताः ।
ये भूता विघ्नकर्तारस्ते नश्यन्तु शिवाज्ञया ॥

इति तालत्रयं दत्त्वा भौमान् विघ्नानुत्सार्य, नाराचमुद्रां प्रदर्श्य,

भूताः प्रेताः पिशाचाश्च राक्षसाश्च सरीसृपाः ।
अपसर्पन्तु ते सर्वे देव्यस्त्रेण तु पीडिताः ॥

इति वामपार्ष्णिघातत्रयं दत्त्वा गुरुं प्रणमेत्।

अज्ञानतिमिरान्धस्य ज्ञानाञ्जनशलाकया ।
चक्षुरुन्मीलितं येन तस्मै श्रीगुरवे नमः ॥

ॐ गुरुभ्यो नमः। ॐ परमगुरुभ्यो नमः। ॐ परापरगुरुभ्यो नमः। परमेष्ठिगुरुभ्यो नमः। इति संपूज्य अस्य श्रीमहाराज्ञीमन्त्रस्य ब्रह्मा ऋषिः, गायत्रीं छन्दः, श्रीभूतेश्वरीमहाराज्ञी देवता, ह्रीं बीजं, सौः शक्तिः, क्लीं कीलकं, चतुर्वर्गपुरुषार्थसिद्धये विनियोगः।

यागमण्डप के बाहर पैरों को धोकर 'ॐ ह्रीं' से द्वार देवता, गणेश, वटुक, क्षेत्रपाल, योगिनी, गङ्गा, सरस्वती, देहली और द्वारश्री का अर्चन करे। बाँयें कन्धे से द्वारशाखा का स्पर्श करके मण्डप के अन्दर प्रवेश करे। आसनशुद्धि करे।

ॐ आं आसनशोधनमन्त्रस्य मेरुपृष्ठ ऋषिः, सुतलं छन्दः, कूर्मो देवता, आसनशोधने विनियोगः। प्रीं पृथिव्यै नमः।

महि त्वया धृता लोका देवि त्वं विष्णुना धृता।
त्वं च धारय मां देवि पवित्रं कुरु चासनम्।।

ॐ आधारशक्तये नमः। कूर्माय नमः। अनन्ताय नमः। अष्टदलपद्माय नमः। सहस्रदलपद्माय नमः। इस प्रकार आसनशुद्धि करके उस पर बैठे। तत्पश्चात् भूतोत्सारण करे—

अपसर्पन्तु ते भूता ये भूता भुवि संस्थिता।
ये भूता विघ्नकर्तारस्ते नश्यन्तु शिवाज्ञया।।

तीन ताली बजाकर भूमि के विघ्नों का उत्सारण करे। नाराच मुद्रा दिखावे और इस श्लोक का उच्चारण करे—

भूताः प्रेताः पिशाचाश्च राक्षसाश्च सरीसृपाः।
अपसर्पन्तु ते सर्वे देव्यस्त्रेण तु पीड़िता।।

बाँईं एँड़ी से पृथ्वी पर तीन बार आघात करे। गुरु को प्रणाम करे—

अज्ञानतिमिरान्धस्य ज्ञानाञ्जनशलाकया।
चक्षुरुन्मीलितं येन तस्मै श्रीगुरवे नमः।।

ॐ गुरुभ्यो नमः। ॐ परमगुरुभ्यो नमः। ॐ परापरगुरुभ्यो नमः। ॐ परमेष्ठिगुरुभ्यो नमः—इन मन्त्रों से गुरुओं का पूजन करे। तब मन्त्र का विनियोग करे—

विनियोग—अस्य श्रीमहाराज्ञीमन्त्रस्य ब्रह्मा ऋषिः, गायत्रीं छन्दः, श्री भूतेश्वरी महाराज्ञी देवता, ह्रीं बीजं, सौः शक्तिः, क्लीं कीलकं, चतुर्वर्गपुरुषार्थसिद्धये विनियोगः।

ब्रह्मऋषये नमः शिरसि, गायत्रीच्छन्दसे नमो मुखे, राज्ञीदेवतायै नमो हृदि, ह्रीं बीजाय नमो नाभौ, सौः शक्तये नमो गुह्ये, क्लीं कीलकाय नमः पादयोः, पूजायां विनियोगाय नमः सर्वाङ्गेषु। ॐह्रीं अङ्गुष्ठाभ्यां नमः। ॐह्रीं तर्जनीभ्यां नमः । ॐह्रूं मध्यमाभ्यां नमः। ॐह्रैं अनामिकाभ्यां नमः। ॐह्रौं कनिष्ठिकाभ्यां नमः। ॐह्रः करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः। इति करन्यासः। एवं षडङ्गन्यासः।

इत्थं न्यासं विधाय भूतशुद्धिं कुर्यात्। ॐह्रीं इत्याधारात् कुण्डलिनीं प्रदीपकलिकाकारां सुषुम्नामार्गेण ब्रह्मपथान्तर्नीत्वा परमशिवं प्रापय्य तयोः सामरस्यं विधाय, तदुद्भूतानन्दामृतधारया कुलगुरून् सन्तर्प्य, पुनः षट्चक्रं भित्त्वा स्वस्थानमानीय, वामकुक्षौ पापपुरुषमङ्गुष्ठमात्राकारं कृष्णवर्णं रक्तश्मश्रुलं ध्यात्वा प्राणायामयोगेन शोषणादि कुर्यात्। आदौ यमिति वायुबीजेन षोडशवारजप्तेन शोषयेत्। रमित्यग्निबीजेन षोडशवारजप्तेन दाहयेत्। वमिति वरुणबीजेन षोडशवारजप्तेनाप्लावयेत्। लमिति भूबीजेन षोडशधा जप्तेन देहं दृढं विचिन्त्य, हमित्याकाशबीजेन षोडशधा जप्तेन स्वात्मानं दिव्यदेहमुत्पाद्य प्राणप्रतिष्ठां कुर्यात्।

ऋष्यादि न्यास—ब्रह्मऋषये नमः शिरसि, गायत्रीछन्दसे नमो मुखे, राज्ञी देवतायै नमो हृदि, सौः शक्तये नमः गुह्ये, क्लीं कीलकाय नमो पादयोः, पूजायां विनियोगाय नमः सर्वांगेषु।

करन्यास—ॐ ह्रां अंगुष्ठाभ्यां नमः। ॐ ह्रीं तर्जनीभ्यां नमः। ॐ ह्रूं मध्यमाभ्यां नमः। ॐ ह्रैं अनामिकाभ्यां नमः। ॐ ह्रौं कनिष्ठाभ्यां नमः। ॐ ह्रः करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः।

षडङ्गन्यास— ॐ ह्रां हृदयाय नमः। ॐ ह्रीं शिरसे स्वाहा। ॐ ह्रूं शिखायै वषट्। ॐ ह्रैं कवचाय हुं। ॐ ह्रौं नेत्रत्रयाय वौषट्। ॐ ह्रः अस्त्राय फट्।

न्यास के बाद भूतशुद्धि करे—ॐ ह्रीं से कुण्डलिनी को मूलाधार से उठाकर दीपशिखा के रूप में सुषुम्ना मार्ग से ब्रह्मरन्ध्र में लाकर परमशिव से मिला दे। उनकी

समरसता की कल्पना करे। इससे उत्पन्न आनन्दामृत की धारा से कुलगुरुओं का तर्पण करे। फिर षट्चक्रों का भेदन करते हुए मूलाधार में कुण्डलिनी को ले आये। वाम कुक्षि में अङ्गुष्ठाकार कृष्ण वर्ण, लाल दाढ़ी वाले पापपुरुष का ध्यान करके प्राणायाम योग से उसका शोषणादि करे। 'यं' बीज के सोलह जप से उसका शोषण करे। अग्निबीज 'रं' के सोलह जप से दाहन करे। वरुणबीज 'वं' से सोलह जप से उसका प्लावन करे। भूबीज 'लं' के सोलह जप से देह को दृढ़ करे। आकाशबीज 'हं' से सोलह जप से अपने दिव्य देह को उत्पन्न समझे। तदनन्तर प्राणप्रतिष्ठा करे।

ॐह्रींआंक्रोंसोहंहंसः मम प्राणा इह प्राणाः ८ँ मम जीव इह स्थितः ८ँ मम वाङ्मनश्चक्षुःश्रोत्रजिह्वाघ्राणप्राणा इहागत्य सुखं चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा इति प्राणप्रतिष्ठां विधाय पूर्ववत् प्राणायामं कृत्वा, तत्त्वत्रयेणाचम्य न्यासं कुर्यात्। ॐनमो ब्रह्मरन्ध्रे, ह्रीं शिरसि, श्री नेत्रयोः, रां कर्णयोः, क्लीं नासाग्रे, सौः मुखे, भं कण्ठे, गं भुजयोः, त्रं वक्षसि, त्यैं कुक्षौ, रां नाभौ, ज्यैं गुह्ये, ह्रीं जान्वोः, स्वां जङ्घयोः, ह्रां नमः सर्वाङ्गेषु। इति मूलमन्त्रन्यासः।

ॐह्रांश्रां हृदयाय नमः। ॐह्रींश्रीं शिरसे स्वाहा। ॐह्रूंश्रूं शिखायै वषट्। ॐह्रैंश्रैं कवचाय हुं०। ॐह्रौंश्रौं नेत्राभ्यां वौषट्। ॐह्रःश्रः अस्त्राय फट्। ॐरां हृदयाय०, अङ्गुष्ठाभ्यां नमः। ॐरीं शिरसे०, तर्जनीभ्यां नमः। ॐरूं शिखायै०, मध्यमाभ्यां नमः। ॐरैं कवचाय०, अनामिकाभ्यां०। ॐरौ नेत्राभ्यां०, कनिष्ठिकाभ्यां०। ॐरः अस्त्राय फट्, करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः। ॐ सौः क्लां अङ्गुष्ठाभ्यां नमः। ॐ सौः क्लीं तर्जनीभ्यां०। ॐसौः क्लूं मध्यमाभ्यां०। ॐसौः क्लैं अनामिकाभ्यां०। ॐसौः क्लौं कनिष्ठिकाभ्यां०। ॐसौःक्लः करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः। एवं हृदयादि षडङ्गन्यासः।

ॐ ह्रीं आं क्रों सोहं हंसः मम प्राणा इह प्राणाः। ॐ ह्रीं आं क्रों सोहं हंसः मम जीव इह स्थितः। ॐ ह्रीं आं क्रों मम वाङ्मनश्चक्षुःश्रोत्रजिह्वाघ्राणप्राणाः इहागच्छ सुखं चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा—इस मन्त्र से प्राणप्रतिष्ठा करके पूर्ववत् प्राणायाम करे। तत्त्वत्रय से आचमन करे। न्यास करे।

मूलमन्त्र न्यास—ॐ नमो ब्रह्मरन्ध्रे, ह्रीं शिरसि, श्री नेत्रयोः, रां कर्णयोः, क्लीं नासाग्रे, सौः मुखेः, भं कण्ठे, गं भुजयोः, वं वक्षसि, त्यैं, कुक्षौ, रां नाभौ, ज्यैं गुह्ये, ह्रीं जान्वोः, स्वां जङ्घयोः, हां नमः सर्वाङ्गेषु। मूलमन्त्रन्यास के बाद षडङ्ग न्यास करे।

षडङ्ग-न्यास—ॐ ह्रां श्रां हृदयाय नमः। ॐ ह्रीं श्रीं शिरसे स्वाहा। ॐ ह्रूं श्रूं शिखायै वषट्। ॐ ह्रैं श्रैं कवचाय हुं। ॐ ह्रौं श्रौं नेत्राभ्यां वौषट्। ॐ ह्रः श्रः अस्त्राय फट्।

हृदयादि न्यास—ॐ रां हृदयाय नमः। ॐ रीं शिरसे स्वाहा। ॐ रूं शिखायै वषट्। ॐ रैं कवचाय हुं। ॐ रौं नेत्रत्रयाय वौषट्। ॐ रः अस्त्राय फट्।

करन्यास—ॐ रां अंगुष्ठाभ्यां नमः। ॐ रीं तर्जनीभ्यां नमः। ॐ रूं मध्यमाभ्यां नमः। ॐ रैं अनामिकाभ्यां नमः। ॐ रौं कनिष्ठाभ्यां नमः। ॐ रः करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः। ॐ सौः क्लां अंगुष्ठाभ्यां नमः। ॐ सौः क्लीं तर्जनीभ्यां नमः। ॐ सौः क्लूं मध्यमाभ्यां नमः। ॐ सौः क्लैं अनामिकाभ्यां नमः। ॐ सौः क्लौं कनिष्ठाभ्यां नमः। ॐ सौः क्लः करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः।

ॐह्रीं जालन्धरपीठाय नमो मूलाधारे। ॐश्रीं उड्डीयानपीठाय नमः स्वाधिष्ठाने। ॐरां कामरूपपीठाय नमः अनाहते। ॐक्लीं मधुपुरीपीठाय नमो मणिपूरे। ॐसौः वाराणसीपीठाय नमो विशुद्धौ। ॐह्रीं अनन्तपीठाय नमः आज्ञायां। ॐस्वाहा शारदापीठाय नमो ब्रह्मरन्ध्रे। इति पीठन्यासः।

ॐअंकं५आं हृदयाय नमः। ॐह्रींइंचं५ईं शिरसे स्वाहा। ॐश्रींउंटं५ऊं शिखायै वषट्। ॐरांएंतं५ऐं कवचाय हुं। ॐक्लींओंपं५औं नेत्रत्रयाय वौषट्। ॐसौःअंयं१०अः अस्त्राय फट्। एवं करन्यासः। इति शुद्धमातृकान्यासः।

पीठन्यास—ॐ ह्रीं जालन्धरपीठाय नमः मूलाधारे। ॐ श्रीं उड्डीयानपीठाय नमः स्वाधिष्ठाने। ॐ रां कामरूपपीठाय नमः अनाहते। ॐ क्लीं मधुपुरीपीठाय नमः मणिपूरे। ॐ सौः वाराणसीपीठाय नमः विशुद्धौ। ॐ ह्रीं अनन्तपीठाय नमो आज्ञायाम्। ॐ स्वाहा शारदापीठाय नमः ब्रह्मरन्ध्रे।

शुद्ध मातृकान्यास—ॐ अं कं खं गं घं ङं आं हृदयाय नमः। ॐ ह्रीं चं छं जं झं ञं ईं शिरसे स्वाहा। ॐ श्रीं उं टं ठं डं ढं णं ऊं शिखायै वषट्। ॐ रां एं तं थं दं धं नं ऐं कवचाय हुं। ॐ क्लीं ओं पं फं बं भं मं औं नेत्रत्रयाय वौषट्। ॐ सौः अं यं रं लं वं शं षं सं हं ळं क्षं अः अस्त्राय फट्।

ततो मातृकान्यासं च कृत्वा, ॐ आत्मतत्त्वाय हृदयाय नमः। ह्रीं विद्यातत्त्वाय शिरसे०। श्रीं शिवतत्त्वाय शिखायै०। रां शक्तितत्त्वाय कवचाय०। क्लीं शिवतत्त्वाय नेत्रेभ्यो०। सौः सर्वतत्त्वाय अस्त्राय फट्। एवं करन्यासः, इति तत्त्वन्यासः।

ॐह्रामिति पूर्ववत् षडङ्गं विधाय कामकलारूपं स्वात्मानं विचिन्त्य, हृत्कर्णिकायां श्रीभूतेश्वराङ्कगतां श्रीमहाराज्ञीं विचिन्त्य मानसैरुप-चारैः संपूज्य, बहिः श्रीचक्रं बिन्दुबिम्बोल्लसित-त्रिकोणविराजमान-षडश्रशोभित-वसुदलालंकृत-वृत्तत्रयोद्भासित-चतुर्द्वारोपशोभितं विलिख्य वा संस्थाप्य योगपीठं परिकल्प्य योगपीठपूजां कुर्यात्।

तब मातृकान्यास करके तत्त्वन्यास करे—ॐ आत्मतत्त्वाय हृदयाय नमः। ह्रीं विद्यातत्त्वाय शिरसे स्वाहा। ॐ शिवतत्त्वाय शिखायै वषट्। रां शक्तितत्त्वाय कवचाय हुं। क्लीं शिवतत्त्वाय नेत्रेभ्यो वौषट्। सौः सर्वतत्त्वाय अस्त्राय फट्।

इसके बाद ॐ ह्रां से पूर्ववत् षडङ्ग न्यास करके अपने को कामकलारूप समझकर हृदयकमल की कर्णिका में श्री भूतेश्वरांकगता श्री महाराज्ञी का ध्यान करके मानसोपचारों से पूजन करे।

बाहर अपने सामने बिन्दु, त्रिकोण, षट्कोण, अष्टदल, वृत्तत्रय, चार द्वारयुक्त भूपुर-युक्त चक्र बनाये या बने बनाये चक्र को स्थापित करे। योगपीठ की कल्पना करके योगपीठ की पूजा करे।

ॐह्रीं मण्डूकाय नमः। रँ कालाग्निरुद्राय०। रँ मूलप्रकृतये नमः। रँ आधारशक्त्यै०। रँ वराहाय०। रँ कूर्माय०। रँ अनन्ताय०। रँ पृथिव्यै०। रँ सुधाम्बुधये०। मध्ये रँ सुवर्णद्वीपाय०। रँ कल्पवनाय०। मध्ये रँ मणिगेहाय०। रत्न-वेदिकायै०। तन्मध्ये रँ चिन्तामणिमण्डपाय०। तत्र रँ श्मशानाय०। रँ धर्मज्ञानवैराग्यैश्वर्येभ्यो०। तद्वामे रँ अधर्माज्ञाना-वैराग्यानैश्वर्येभ्यो०। तदुपरि रँ रं वह्निमण्डलाय नमः। रँ अं अर्कमण्ड-लाय०। रँ सों सोममण्डलाय०। रँ तं तमसे०। रँ रं रजसे०। रँ सं सत्त्वाय०। मूलं सहस्रदलकमलाय०। संविन्नालाय०। प्रकृतिमयपत्रेभ्यो०। विकृतिमयकेसरेभ्यो०। पञ्चाशद्बीजभूषितकर्णिकायै०। मूलं मातृकामुच्चार्य श्रीयोगपीठाय नमः इत्यक्षतपुष्पैरभ्यर्च्य, श्रीयोगपीठोपरि श्रीचक्रं (संस्थाप्य वा) विभाव्य, आत्मश्रीचक्रयोर्मध्ये पात्रार्चनं कुर्यात्।

तत्र स्ववामे वृत्तषट्कोणचतुरश्रं मण्डलं विलिख्य मूलेन षडङ्गेनार्चां विधाय, 'ॐह्रींश्रींमहाराज्ञीभगवतीसामान्यार्घ्यमण्डलाय नमः'। इत्यक्षतैरभ्यर्च्य, 'रं वह्निमण्डलाय दशकलात्मने नमः' इत्यक्षतैरभ्यर्च्य, तत्राधारं संस्थाप्य, 'अं अर्कमण्डलाय द्वादशकलात्मने नमः' इत्यभ्यर्च्य, विलोममातृकया

शङ्खं संपूर्य तत्र 'सोंः सोममण्डलाय षोडशकलात्मने नमः' इत्यभ्यर्च्य, तत्र सूर्यमण्डलादङ्कुशमुद्रया तीर्थानि, 'गङ्गे च यमुने चैव' इत्यादिनावाह्य, शुद्धं भावयेदिति सामान्यार्घ्यविधिः।

पीठपूजन—ॐ ह्रीं मण्डूकाय नमः। ॐ ह्रीं कालाग्निरुद्राय नमः। ॐ ह्रीं मूलप्रकृतये नमः। ॐ ह्रीं आधारशक्तये नमः। ॐ ह्रीं वराहाय नमः। ॐ ह्रीं कूर्माय नमः। ॐ ह्रीं अनन्ताय नमः। ॐ ह्रीं पृथिव्यै नमः। ॐ ह्रीं सुधाम्बुधये नमः। पीठ के मध्य में—ॐ ह्रीं सुवर्णद्वीपाय नमः। ॐ ह्रीं कल्पवनाय नमः। मध्य में—ॐ ह्रीं मणिगेहाय नमः। रत्नवेदिकायै नमः। उसके बीच में—ॐ ह्रीं चिन्तामणिमण्डपाय नमः। वहीं पर ॐ ह्रीं श्मशानाय नमः। ॐ ह्रीं धर्मज्ञानवैराग्यैश्वर्येभ्यो नमः। उसके बाँयें ॐ ह्रीं अधर्म अज्ञान अवैराग्य अनैश्वर्येभ्यो नमः। उसके ऊपर ॐ ह्रीं रं वह्नि मण्डलाय नमः। ॐ ह्रीं अं अर्कमण्डलाय नमः। ॐ ह्रीं सों सोममण्डलाय नमः। ॐ ह्रीं तं तमसे नमः ॐ ह्रीं रं रजसे नमः। ॐ ह्रीं सं सत्त्वाय नमः। मूलं सहस्रदलकमलाय नमः। संविन्नालाय नमः। प्रकृतिमयपत्रेभ्यो नमः। विकृतिमयकेसरेभ्यो नमः। पञ्चाशद्वीजभूषितकर्णिकायै नमः। मूल मन्त्र और मातृका का उच्चारण करके श्री योगपीठाय नमः से गन्धाक्षत पुष्प से अर्चन करे। योगपीठ पर श्रीचक्र को स्थापित करे या अङ्कित करे।

पात्रासादन—अपने और श्रीचक्र के बीच में पात्रस्थापन कर उसका पूजन करे। अपने बाँयें भाग में वृत्त, षट्कोण, चतुरस्र मण्डल अङ्कित करके मूल मन्त्र से षडङ्गों का पूजन करे। 'ॐ ह्रीं श्रीं महाराज्ञी भगवती सामान्यार्घ्यमण्डलाय नमः' से अक्षत से पूजा करे। 'रं वह्निमण्डलाय दशकलात्मने नमः' से अक्षत से पूजा करे। उस पर आधार स्थापित करे। आधार का पूजन 'अं अर्कमण्डलाय द्वादशकलात्मने नमः' से अक्षत से करे। क्षं से अं तक विलोम मातृका से शङ्ख को जल से भरे। जल का पूजन 'सोंः सोममण्डलाय षोड़शकलात्मने नमः' से करे। तब सूर्यमण्डल से अंकुश मुद्रा के द्वारा 'गङ्गे च यमुने चैव' इत्यादि से तीर्थों का आवाहन करे। इस प्रकार की क्रिया से सामान्यार्घ्य को शुद्ध समझे।

सामान्यार्घ्यस्य वामे त्रिकोणषट्कोणवृत्तचतुरश्रं मण्डलं विधाय षडङ्गेनाभ्यर्च्य, मूलविद्यामुच्चार्य 'श्रीराज्ञीकलशमण्डलाय नमः' तत्राधारं संस्थाप्य, 'रं वह्निमण्डलाय दशकलात्मने नम' इति संपूज्य, तत्रास्त्रक्षालितकलशं संस्थाप्य, 'अं अर्कमण्डलाय द्वादशकलात्मने नमः' इति संपूज्य, तत्रानामिकाङ्गुष्ठाभ्याममृतधारापातेन कलशमापूर्य, तत्र 'सौः सोममण्डलाय षोडशकलात्मने नमः' इति पुष्पाक्षतैः संपूज्य, 'ॐह्रींश्रींरांरींरूंरैंरौंरः

अमृते अमृतोद्भवे अमृतवर्षिणि अमृतं स्रावय २ शुक्रशापं मोचय २ ॐह्रींश्रींसुरादेव्यै वौषट्' इति त्रिरभिमन्त्र्य मूलं दशधा जप्त्वा, आनन्देश्वराय विद्महे सुरादेव्यै धीमहि तन्नोऽर्धनारीश्वरः प्रचोदयात् ३ इति त्रिरानन्दभैरवगायत्रीं जप्त्वा हसक्षमलवरयऊं आनन्दभैरवाय वौषट्, सहक्षमलवरयऊं आनन्दभैरवीसुरादेवीपादुकाभ्यो नमः इति संपूज्य,

ॐ ह्रीं सूर्यमण्डलसंभूते वरुणालयसंभवे ।
अमाबीजमये देवि शुक्रशापाद्विमुच्यताम् ॥
ॐह्रीं वेदानां प्रणवो बीजं ब्रह्मानन्दमयं यदि ।
तेन सत्येन देवेशि ब्रह्महत्यां विहन्यतु ॥
ॐह्रीं एकमेव परं ब्रह्म स्थूलसूक्ष्ममयं ध्रुवम् ।
कचोद्भवां ब्रह्महत्यां तेन ते नाशयाम्यहम् ॥
ॐह्रीं पवमानः परानन्दः पवमानः परो रसः ।
पवमानं परं ज्ञानं तेन ते पावयाम्यहम् ॥
ॐह्रीं कृष्णशापविनिर्मुक्तां त्वं मुक्ता ब्रह्मशापतः ।
विमुक्ता रुद्रशापेन पवित्रा भव सांप्रतम् ॥

इति संपूज्य, मूलं त्रिधा जपन् द्रव्योपरि धेनुयोनिमत्स्यमुद्राः प्रदर्श्य, कुम्भं पूर्णमित्युक्त्वा सुधामयं ध्यात्वा तत्त्वमुद्रयाच्छादयेदिति द्रव्यशुद्धिः।

कलशस्थापन—सामान्यार्घ्य के बाँयें भाग में त्रिकोण, षट्कोण, वृत्त, चतुरस्र मण्डल बनाकर षडङ्ग पूजन करे। मूल विद्या का उच्चारण करके 'श्रीराज्ञीकलशमण्डलाय नमः' कहकर उस पर आधार स्थापित करे। 'रं वह्निमण्डलाय दशकलात्मने नमः' से पूजन करे। उस आधार पर 'फट्' से प्रक्षालित कलश को स्थापित करे। उस कलश का पूजन 'अं अर्कमण्डलाय द्वादशकलात्मने नमः' से करे। उस कलश में अनामिका-अँगुष्ठ के योग से अमृतधार गिराकर कलश को पूर्ण करे। कलश के अमृत का पूजन 'सों सोममण्डलाय षोड़शकलात्मने नमः' कहते हुये पुष्पाक्षत से करे।

शापमोचन—इसके बाद कलशद्रव्य का शापमोचन करे। ॐ ह्रीं श्रीं रां रीं रूं रैं रौं रं रः अमृते अमृतोद्भवे अमृतवर्षिणि अमृतं श्रावय श्रावय शुक्रशापं मोचय मोचय ॐ ह्रीं श्रीं सुरादेव्यै वौषट्' के तीन पाठ से उसे अभिमन्त्रित करे। मूल मन्त्र का जप दश बार करे। 'आनन्देश्वराय विद्महे सुरादेव्यै धीमहि तन्नोऽर्धनारीश्वरः प्रचोदयात्' का पाठ तीन बार करे। आनन्दभैरव गायत्री का तीन जप करके हसक्षमलवरयऊं ॐ आनन्दभैरवाय वौषट्, सहक्षमलवरयऊं आनन्दभैरवीसुरादेवीपादुकाभ्यो नमः से पूजन करे।

ॐ ह्रीं सूर्यमण्डलसम्भूते वरुणालयसम्भवे।
अमाबीजमये देवि शुक्रशापाद् विमुच्यताम्।।
ॐ ह्रीं वेदानां प्रणवो बीजं ब्रह्मानन्दमयं यदि।
तेन सत्येन देवेशि ब्रह्महत्यां विहन्यतु।।
ॐ ह्रीं एकमेव परं ब्रह्म स्थूलसूक्ष्ममयं ध्रुवम्।
कचोद्भवां ब्रह्महत्यां तेन ते नाशयाम्यहम्।।
ॐ ह्रीं पवमानः परानन्दः पवमानः परो रसः।
पवमानं परं ज्ञानं तेन ते पावयाम्यहम्।।
ॐ ह्रींकृष्णशापविनिर्मुक्तात्वंमुक्ताब्रह्मशापतः।
विमुक्ता रुद्रशापेन पवित्रा भव साम्प्रतम्।।

इन श्लोकों से पूजा करे। मूल मन्त्र का तीन बार जप करे। तव द्रव्य पर धेनु, योनि, मत्स्यमुद्रा को प्रदर्शित करे। तब 'कुम्भं पूर्णम्' कहकर उसे अमृतमय समझकर तत्त्वमुद्रा से उसे आच्छादित करे। इस प्रकार द्रव्यशुद्धि की विधि पूर्ण होती है।

ॐ ह्रीं कृतावतारो हरिणा कलिना पीडितं जगत्।
बलिना निगृहीतं तु कौलिकानां हिताय च।
भवानीपरितोषार्थं स्वयं मीनोऽभवत् प्रभुः॥

मीनोपरि मूलं त्रिधा जपन् मुद्रात्रयं प्रदर्श्य,

ॐ ह्रीं छागलादिगवान्तादिकृतरूपाय वै नमः।
बल्यर्थं देवदेव्योश्च पवित्री भव साम्प्रतम्॥ इति,
ॐ ह्रीं राज्ञीयन्त्रार्चनाकाले यानि यानीह सिद्धये।
वस्तूनि सौरभेयानि पवित्राणीह सांप्रतम्॥

मूलं त्रिधा जपन् मुद्रात्रयं प्रदर्श्य, कलशादुत्तरतः पाद्यार्घ्यमधुपर्काचमनीयपात्राणि संस्थाप्य श्रीचक्रं पूजयेदिति पात्रस्थापनम्।

मत्स्य-मांसादि का शोधन—

ॐ ह्रीं कृतावतारो हरिणा कलिना पीड़ितं जगत्।
बलिना निगृहीतं तु कौलिकानां हिताय च।
भवानीपरितोषार्थं स्वयं मीनोऽभवत् प्रभुः।।

यह कहकर मत्स्य पर मूल मन्त्र का तीन बार जप करे। धेनु, योनि, मत्स्यमुद्रा दिखाये।

ॐ ह्रीं छागलादिगवान्तादिकृतरूपाय वै नमः।
बल्यर्थं देवदेव्योश्च पवित्रीभव साम्प्रतम्।।

यह कहकर मांस का शोधन करे।

पूजनसामग्री का पवित्रीकरण—

ॐह्रींराज्ञीयन्त्रार्चनाकाले यानि यानीह सिद्धये।
वस्तूनि सौरभेयानि पवित्राणीह साम्प्रतम्।।

मूल मन्त्र तीन बार जपकर धेनु, योनि, मत्स्यमुद्रा दिखाये। कलश के उत्तर तरफ पाद्य, अर्घ्य, मधुपर्क, आचमनीय पात्रों का स्थापन करे। गुरु, शक्ति, वटुक, साधक पात्रों को स्थापित करे। सामान्यार्घ्य के समान इन सबों का पूजन करे। पात्रस्थापन का वर्णन पूरा हुआ। अब श्रीचक्र का पूजन करे।

तत्र हृदयकमलोद्भूतेश्वराङ्कोपविष्टां श्रीराज्ञीं सुषुम्नामार्गेण बहिरानीय श्रीचक्रबिन्दुपीठोपरि संस्थाप्य, तत्रावाहनादिमुद्राः प्रदर्श्य खड्गपद्मकलशामृतपात्रमुद्राः प्रदर्श्य, मूलेन प्राणप्रतिष्ठामन्त्रेण प्राणान् दत्त्वा, मू० श्रीभूतेश्वरभूतेश्वरीभ्यां पाद्यार्घ्याचमनीयादि परिकल्पयामि नमः। मू० भूतेश्वरभूतेश्वरीभ्यां मधुपर्काचमनीयगन्धाक्षतपुष्पादीन् परिकल्पयामि नमः। मूलेन नैवेद्याचमनीयताम्बूलादि समर्प्य, मूलषडङ्गं विधाय भैरवाज्ञां गृहीत्वा, देवदेव्यौ नुत्वा परिवारदेवीर्विचिन्त्य दण्डवत्प्रणिपत्य चतुरश्रं पूजयेत्।

श्रीचक्रपूजन—अपने हृदय कमल से भूतेश्वर की गोद में बैठी श्री राज्ञी को बाहर लाकर श्रीचक्र में स्थापित करे। आवाहनादि मुद्रा दिखाये। खड्ग, पद्म, कलश, अमृतपात्र मुद्रा दिखाये। मूल मन्त्र से प्राणप्रतिष्ठा मन्त्र के द्वारा प्राणप्रतिष्ठा करे।

'ॐ ह्रीं श्रीं रां क्लीं सौः भगवत्यै राज्यै ह्रीं स्वाहा श्रीभूतेश्वरभूतेश्वरीभ्यां मधुपर्क-आचमनीय-गन्धाक्षतपुष्पादीन् परिकल्पयामि नमः' मूल मन्त्र से नैवेद्य आचमनीय ताम्बूलादि देकर मूल मन्त्र से षडङ्ग न्यास करके आज्ञा लेकर देव-देवी को प्रणाम करके परिवारदेवता का चिन्तन करके दण्डवत् प्रणाम करके भूपुर में पूजन करे।

ॐह्रीं सर्वाशापरिपूरकचक्राय नमः इति पुष्पाञ्जलिं दत्त्वा, ॐह्रींगां गणेश्वरश्रीपादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि नमः। २ँ भैं भीमराजश्रीपादुकां पूजयामि नमस्तर्पयामि नमः। २ँ ह्रौं कुमारश्रीपादुकां पू०। २ँ जुं जाङ्गलेश्वरश्रीपादुकां० इति। तत्रैव दिग्विदिक्षु २ँ इन्द्रश्री०। २ँ अग्निश्री०। २ँ धर्मराजश्री०। २ँ निर्ऋतिश्री०। २ँ वरुणश्री०। २ँ वायुश्री०। २ँ कुबे-

रश्री०। रँ ईशानश्री०। ऊर्ध्वे रँ ब्रह्मश्री०। अधः रँ अनन्तश्री० इति गन्धाक्षतैर्वामावर्तेन संपूजयेदिति। पुनस्तत्रैव रँ वज्रश्री०। रँ शक्तिश्री०। रँ दण्डश्री०। रँ खड्गश्री०। रँ पाशश्री०। रँ ध्वजश्री०। रँ गदाश्री०। रँ त्रिशूलश्री०। रँ पद्मश्री०। रँ चक्रश्री० इति पुष्पाक्षतैरर्चयेदिति प्रथमावरणम्।

प्रथम आवरण—ॐ ह्रीं सर्वाशापरिपूरकचक्राय नमः से पुष्पाञ्जलि प्रदान करे। फिर पूर्वादि क्रम से चारों द्वारों पर—ॐ ह्रीं गां गणेश्वरश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। ॐ ह्रीं भैं भीमराजश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। ॐ ह्रीं ह्रौं कुमारश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

दिशा-विदिशाओं में दिक्पालों और आयुधों का पूजन पूर्वादि क्रम में—

ॐ ह्रीं इन्द्रश्रीपादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि नमः—पूर्व में।
ॐ ह्रीं अग्निश्रीपादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि नमः—अग्नि में।
ॐ ह्रीं धर्मराजश्रीपादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि नमः—दक्षिण में।
ॐ ह्रीं निर्ऋतिश्रीपादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि नमः—नैर्ऋत्य में।
ॐ ह्रीं वरुणश्रीपादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि नमः—पश्चिम में।
ॐ ह्रीं वायुश्रीपादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि नमः—वायव्य में।
ॐ ह्रीं कुवेरश्रीपादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि नमः—उत्तर में।
ॐ ह्रीं ईशानश्रीपादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि नमः—ईशान में।
ॐ ह्रीं ब्रह्माश्रीपादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि नमः—ईशान-पूर्व मध्य में।
ॐ ह्रीं अनन्तश्रीपादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि नमः—नैर्ऋत्य पश्चिम मध्य में।

इनका पूजन गन्धाक्षत पुष्प से करे। वही पर उनके आयुधों का पुष्प-अक्षत से पूजन करे—ॐ ह्रीं वज्रश्रीपादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि नमः। ॐ ह्रीं शक्तिश्रीपादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि नमः। ॐ ह्रीं दण्डश्रीपादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि नमः। ॐ ह्रीं खड्गश्रीपादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि नमः। ॐ ह्रीं पाशश्रीपादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि नमः। ॐ ह्रीं ध्वजश्रीपादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि नमः। ॐ ह्रीं गदाश्रीपादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि नमः। ॐ ह्रीं त्रिशूलश्रीपादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि नमः। ॐ ह्रीं पद्मश्रीपादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि नमः। ॐ ह्रीं चक्रश्रीपादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि नमः। इसके बाद

अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं प्रथमावरणार्चनम्।।

कहकर पुष्पाञ्जलि प्रदान करते हुये पूजा समर्पित करे एवं योनिमुद्रा से प्रणाम करे।

ततो वृत्तत्रये ॐ ह्रीं सर्वसम्पत्प्रदचक्राय नमः इति पुष्पाञ्जलिं दत्त्वा, ॐ ह्रीं गुरुश्रीपादुकां०। रँ परमगुरुश्री०। रँ परापरगुरुश्री०। रँ परमेष्ठिगुरुश्री० इति गन्धाक्षतैरभ्यर्चयेदिति द्वितीयावरणम्।

ततो वसुदले ॐ ह्रीं सर्वार्थसाधकचक्राय नमः इति पुष्पाञ्जलिं दत्त्वा, ॐ ह्रीं वासुकिश्रीपादुकां०। रँ नीलनागश्री०।रँ तक्षकश्री०। रँ पद्मनागश्री० इति पूर्वादिदिक्षु, रँ कर्कोटकश्री०। रँ शङ्खपालश्री०। रँ कुलिकश्री०। रँ शेषनागश्री० इति विदिक्षु गन्धाक्षतैरभ्यर्चयेदिति।

तत्रैव ॐ ह्रीं असिताङ्गभैरवयुतब्राह्मीश्री०। रँ रुरुभैरवयुतवैष्णवीश्री०। रँ चण्डभैरवयुतरुद्राणीश्री०। रँ क्रोधभरैवयुतापराजिताश्री०। रँ उन्मत्तभैरवयुतकौमारीश्री०। रँ भीषणभैरवयुतचामुण्डाश्री०। रँ कपालिभैरवयुतवाराहीश्री०। रँ संहारभैरवयुतनारसिंहिकाश्री० इति वसुदले वामावर्तेन गन्धाक्षतपुष्पैरभ्यर्चयेदिति तृतीयावरणम्।

द्वितीय आवरण—वृत्तत्रय में—गन्ध-अक्षत-पुष्प से इनका पूजन करे। ॐ ह्रीं सर्वसम्पत्प्रदचक्राय नमः कहकर पुष्पाञ्जलि देवे। ॐ ह्रीं स्वगुरुश्रीपादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि नमः। ॐ ह्रीं परमगुरुश्रीपादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि नमः। ॐ ह्रीं परापरगुरुश्रीपादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि नमः। ॐ ह्रीं परमेष्ठिगुरुश्रीपादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि नमः। इसके बाद पुष्पाञ्जलि समर्पित करते हुये निम्न मन्त्र से पूजा विसर्जित करे एवं योनिमुद्रा से प्रणाम करे।

अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं द्वितीयावरणार्चनम्।।

तृतीयावरण—अष्टदल में ॐ ह्रीं सर्वार्थसाधकचक्राय नमः कहकर पुष्पाञ्जलि देवे। तदनन्तर वामावर्त क्रम से गन्ध-अक्षत-पुष्प से इनकी पूजा करे—

ॐ ह्रीं वासुकिश्रीपादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि नमः—पूर्व में।
ॐ ह्रीं नीलनागश्रीपादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि नमः—दक्षिण में।
ॐ ह्रीं तक्षकश्रीपादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि नमः—पश्चिम में।
ॐ ह्रीं पद्मनागश्रीपादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि नमः—उत्तर में।
ॐ ह्रीं कर्कोटकश्रीपादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि नमः—आग्नेय में।
ॐ ह्रीं शङ्खपालश्रीपादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि नमः—नैर्ऋत्य में।

ॐ ह्रीं कुलिकश्रीपादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि नमः—वायव्य में।

ॐ ह्रीं शेषनागश्रीपादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि नमः—ईशान में।

अष्टदल में ही भैरवी की पूजा भी वामावर्त क्रम से गन्ध-अक्षत-पुष्प से करे—ॐ ह्रीं असितांगभैरवयुतब्राह्मीश्रीपादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि नमः। ॐ ह्रीं रुरुभैरवयुतवैष्णवीश्रीपादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि नमः। ॐ ह्रीं चण्डभैरवयुतरुद्राणीश्रीपादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि नमः। ॐ ह्रीं क्रोधभैरवयुतअपराजिताश्रीपादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि नमः। ॐ ह्रीं उन्मत्तभैरवयुतकौमारीश्रीपादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि नमः। ॐ ह्रीं भीषणभैरवयुतचामुण्डाश्रीपादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि नमः। ॐ ह्रीं कपालिभैरवयुतवाराहीश्रीपादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि नमः। ॐ ह्रीं संहारभैरवयुतनारसिंहीश्रीपादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि नमः।

अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं तृतीयावरणार्चनम्।।

कहकर पुष्पाञ्जलि समर्पित करते हुये पूजा समर्पित करे एवं योनिमुद्रा से प्रणाम करे।

ततः षट्कोणे ॐह्रीं सर्वसिद्धिप्रदाय श्रीचक्राय नमः इति पुष्पाञ्जलिं दत्त्वा, वामावर्तेन ॐह्रीं दुर्गाश्री०। रँ शारिकाश्री०। रँ वैखरीश्री०। रँ शिवाश्री०। रँ कालिकाश्री०। रँ त्रिपुराश्री० इति गन्धाक्षतैरभ्यर्चयेदिति चतुर्थावरणम्।

ततस्त्रिकोणे ईशानाग्नेयाग्रतो ॐह्रीं सर्वसंमोहनचक्राय नमः इति पुष्पाञ्जलिं दत्त्वा, ॐह्रीं लक्ष्मीश्री०। रँ सरस्वतीश्री०। रँ बालाश्री० इति गन्धपुष्पाक्षतैरभ्यर्चयेदिति पञ्चमावरणम्।

चतुर्थावरण—षट्कोण में ॐ ह्रीं सर्वसिद्धिप्रदाय श्रीचक्राय नमः से पुष्पाञ्जलि देकर वामावर्त क्रम से इनका पूजन गन्ध-पुष्प-अक्षत से करे—ॐ ह्रीं दुर्गाश्रीपादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि नमः। ॐ ह्रीं शारिकाश्रीपादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि नमः। ॐ ह्रीं वैखरीश्रीपादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि नमः। ॐ ह्रीं शिवाश्रीपादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि नमः। ॐ ह्रीं कालिकाश्रीपादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि नमः। ॐ ह्रीं त्रिपुराश्रीपादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि नमः।

अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं चतुर्थावरणार्चनम्।।

कहकर पुष्पाञ्जलि देते हुये पूजा समर्पित करे एवं योनिमुद्रा से प्रणाम करे।

पञ्चम आवरण—त्रिकोण, ईशान, आग्नेय और अपने सामने के कोण में ॐ ह्रीं सर्वसम्मोहनचक्राय नमः से पुष्पाञ्जलि देकर गन्ध-अक्षत-पुष्प से इनकी पूजा करे—ॐ ह्रीं लक्ष्मीश्रीपादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि नमः। ॐ ह्रीं सरस्वतीश्रीपादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि नमः। ॐ ह्रीं बालाश्रीपादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि नमः।

अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं पञ्चमावरणार्चनम्।।

कहकर पुष्पाञ्जलि देते हुये पूजा समर्पित करे एवं योनिमुद्रा से प्रणाम करे।

ततो बिन्दौ ॐह्रीं सर्वानन्दमयचक्राय नमः इति पुष्पाञ्जलिं दत्त्वा मूलविद्यां सप्तवारमुच्चार्य ॐह्रीं श्रीभूतेश्वरभूतेश्वरीश्रीपादुकां०। मूलं श्रीमहाराज्ञीश्री०। २ँ श्रीराज्यप्रदाश्री०। २ँ पञ्चदशाक्षरीश्री०। २ँ भूतेश्वरश्री०। २ँ खड्ग-श्री०। २ँ पद्मश्री०। २ँ कलशश्री०। २ँ सुधापात्रश्री० इति गन्धपुष्पाक्षतैः पूजयेदिति षष्ठावरणम्।

षष्ठावरण—बिन्दु में ॐ ह्रीं सर्वानन्दमयचक्राय नमः से पुष्पाञ्जलि दे। मूल विद्या ॐ ह्रीं श्रीं रां क्लीं सौः भगवत्यै राज्यै ह्रीं स्वाहा का सात बार उच्चारण करके—ॐ ह्रीं श्रीभूतेश्वरभूतेश्वरीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। ॐ ह्रीं मूलं श्रीमहाराज्ञीश्रीपादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि नमः। ॐ ह्रीं श्रीराज्यप्रदाश्रीपादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि नमः। ॐ ह्रीं पञ्चदशाक्षरीश्रीपादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि नमः। ॐ ह्रीं भूतेश्वरश्रीपादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि नमः। ॐ ह्रीं खड्गश्रीपादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि नमः। ॐ ह्रीं पद्मश्रीपादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि नमः। ॐ ह्रीं कलशश्रीपादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि नमः। ॐ ह्रीं सुधापात्रश्रीपादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि नमः। गन्धाक्षत पुष्प से पूजन करे।

अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं षष्ठावरणार्चनम्।।

कहकर पुष्पाञ्जलि देते हुये पूजा समर्पित करे एवं योनिमुद्रा से प्रणाम करे।

भैरवचक्रे मूलं भूतेश्वरभूतेश्वरीभ्यां गन्धाक्षतपुष्पधूपदीपाचमनीयनैवेद्यताम्बूलच्छत्रचामरारात्रिकादीन् निवेद्य, नैवेद्यं च 'अमृतोपस्तरणमसि स्वाहा' इति। बलिमुत्सृजेत्—ॐह्रीं देवीपुत्रवटुकनाथ कपिलजटाभारभास्वर त्रिनेत्र ज्वालामुख इमं बलिं पूजां गृह्ण २ मम वाञ्छितां सिद्धिं देहि २, इति दक्षिणे। ॐ यांयींयूं योगिनीगणेभ्यो नमः स्वाहा इत्युत्तरे। ॐह्रींक्षांक्षीं

ॐह्रींश्रीं क्षेत्रपालाय रामेश्वराय वौषट् इति पश्चिमे। ॐगांग्लां गणपतये नमः इति पूर्वे। ॐसौः सर्वविघ्नकृद्भ्यो भूतेभ्यः स्वाहा इति बलिमुत्सृज्य निर्ऋति दिशि संस्थाप्य, पूर्ववन्मन्त्रसंकल्पं विधाय मूलषडङ्गं कृत्वा देवीं ध्यात्वा मालामभ्यर्च्य दक्षिणहस्ते धृत्वा यथाशक्त्या मूलविद्यां जपेत्। ततो 'गुह्यातिगुह्यगोप्त्री त्वं' इत्यादिना जपं देव्या हस्ते समर्प्य तेजोरूपं जपफलं गृहीत्वा, देवदेव्योरग्रतः कवच-सहस्रनाम-स्तवपाठं विधाय तदपि समर्प्य,

प्रातःप्रभृतिसायान्तं सायादिप्रातरन्ततः ।
यत्करोमि जगन्मातस्तदस्तु तव पूजनम् ॥

इति पुष्पाञ्जलिं दत्त्वा योनिमुद्रया प्रणम्य, संहारमुद्रया देवदेव्यौ पुष्पेण नासाग्रमानीय हृत्कमलकर्णिकायां प्रापयित्वा, देवीरूपोऽहं सोऽहमिति विचिन्त्य स्वशक्त्या सह सुखं विहरेत्। पात्रार्पणं कृत्वा च राज्ञीकृतविग्रहो भूत्वानन्दकृतं स्वात्मानं विभावयेदिति नित्यपूजाविधिः।

भैरवचक्र में मूल मन्त्र से 'भूतेश्वरभूतेश्वरीभ्यां' से गन्ध, अक्षत, पुष्प, धूप, दीप, आचमनीय, नैवेद्य, ताम्बूल, छत्र, चामर, आरती आदि का समर्पण करे एवं नैवेद्य का निवेदन 'अमृतोपस्तरणमसि स्वाहा' से करे।

बलि—'ॐ ह्रीं देवीपुत्रवटुकनाथ कपिलजटाभारभास्वर त्रिनेत्र ज्वालामुख इमं बलिं पूजां गृह्ण गृह्ण मम वाञ्छितां सिद्धिं देहि देहि' से पीठ की दक्षिण दिशा में वटुक को बलि प्रदान करे। 'ॐ यां यीं यूं योगिनीगणेभ्यो नमः स्वाहा' से उत्तर में बलि दे।
'ॐ ह्रीं क्षां क्षीं ॐ ह्रीं श्रीं क्षेत्रपालाय रामेश्वराय वौषट्' से पश्चिम में बलि दे। 'ॐ गां ग्लां गणपतये नमः' से पूर्व में बलि प्रदान करे। 'ॐ सौः सर्वविघ्नकृद्भ्यो भूतेभ्यः स्वाहा' से बलि नैर्ऋत्य में दे।

पूर्ववत् मन्त्र-सङ्कल्प करके मूल से षडङ्ग न्यास करे। देवी का ध्यान करे। माला का पूजन करके दाहिने हाथ में लेकर यथाशक्ति जप करे। 'गुह्यातिगुह्य' से जप देवी के हाथ में समर्पित करे। तेजरूप जपफल ग्रहण करके देव-देवी के आगे कवच-सहस्रनाम, स्तोत्र का पाठ करे। इन्हें भी देवी को समर्पित करे। तब निम्नवत् प्रार्थना करे—

प्रातःप्रभृतिसायान्तं सायादिप्रातरन्ततः।
यत्करोमि जगन्मातस्तदस्तु तव पूजनम्।।

इस प्रकार प्रार्थना करने के बाद पुष्पाञ्जलि देकर योनिमुद्रा से प्रणाम करे। संहारमुद्रा से यन्त्र पर से एक फूल लेकर देव-देवी को नासाग्र से हृदयकमल की कर्णिका में

ले आकर स्थापित करे। 'देवीरूपोऽहं सोऽस्य' का चिन्तन करके अपनी शक्ति के साथ सुख से विहार करे। पात्र अर्पण करके अपने को राज्ञी के स्वरूप मानकर आनन्दित होकर विचरण करे। इस प्रकार नित्य पूजा-विधि पूर्ण होती है।

इत्येषा नित्यपूजायाः पद्धतिर्गद्यरूपिणी ।
राज्ञीसर्वस्वरूपा हि न देया तत्त्ववादिभिः ॥
श्रीराज्ञ्याः पद्धतिर्गुह्या नित्यार्चनक्रमाङ्किता ।
गुह्यातिगुह्यतत्त्वाढ्या गोपनीया मुमुक्षुभिः ॥

इति श्रीरुद्रयामले तन्त्रे दशविद्यारहस्ये श्रीमहाराज्ञी-नित्यपूजापद्धतिः॥२॥

इस प्रकार यह गद्यरूपिणी नित्य पूजापद्धति का वर्णन समाप्त हुआ। यह राज्ञी-सर्वस्वरूपा है। तत्त्ववादियों को भी इसे नहीं देना चाहिये। नित्यार्चन क्रमाङ्कित श्री राज्ञी की पद्धति अत्यन्त गुह्य है। यह गुह्यातिगुह्य तत्त्वों से भरपूर है और मुमुक्षुओं से भी गोपनीय है।

इस प्रकार रुद्रयामल तन्त्रोक्त श्रीदेवीरहस्य की भाषा टीका में
श्रीमहाराज्ञीनित्यपूजापद्धति पूर्ण हुई।

●

श्रीमहाराज्ञीकवचम्

श्रीभैरव उवाच

श्रृणु देवि प्रवक्ष्यामि राज्ञीकवचमुत्तमम्।
त्रैलोक्यविजयं नाम दिव्यं भोगापवर्गदम्।।१।।
मूलमन्त्रमयं मुख्यमष्टसिद्धिप्रदायकम्।
सर्वैश्वर्यप्रदं लोके सर्वागमविनिश्चितम्।।२।।
पठनाद् धारणाद् देवि महापातकनाशनम्।
महोत्पातप्रशमनं मूलविद्यामनोहरम्।।३।।

कवच-महिमा—श्री भैरव ने कहा कि हे देवि! सुनो; अब मैं राज्ञी के उत्तम कवच का वर्णन करता हूँ। इसका नाम त्रैलोक्यविजय है। यह दिव्य भोगों और अपवर्ग को देने वाला है। यह मूल मन्त्रमय है। आठो सिद्धियों को देने वाला है। सभी आगमों से निश्चित संसार में यह ऐश्वर्य-प्रदायक है। इसके पाठ से और इसे धारण करने से महापापों का नाश होता है। यंह मनोहर मूल विद्या बड़े-बड़े उत्पातों को शान्त करने वाला है।।१-३।।

विरूपाक्षः शिवो देवि विष्णुर्नारायणो बली।
ब्रह्मा पितामहो लोके जिष्णुर्गीर्वाणनायकः।।४।।
महोनिधिस्तथा सूर्यस्तारकाधिपतिः शशी।
रत्नाकरश्च जलधिः शेषश्चानन्ततां गतः।।५।।
श्रीराज्याः कवचस्यास्य पठनाद् धारणात् सदा।
बहुनोक्तेन देवेशि कवचस्यास्य धारणात्।।६।।
मर्त्योऽप्यमरतां याति राज्ञीपदमवाप्नुयात्।

इसी के प्रभाव से विरूपाक्ष शिव हैं, विष्णु नारायण हैं और इन्द्र देवताओं के राजा हैं। इसी के प्रभाव से सूर्य महानिधि हैं और चन्द्रमा तारागणों के अधिपति हैं। इसी के प्रभाव से सागर रत्नाकर है और शेषनाग अनन्त हैं। ये सभी राज्ञी के कवच का सदा पाठ करते हैं और धारण किए रहते हैं। बहुत कहने से क्या लाभ; कवच को धारण करने से मर्त्य भी अमर होकर राज्ञी के पद को प्राप्त करता है।।४-६।।

ऋषिरस्य महादेवि ब्रह्मा च्छन्दः समीरितम्।।७।।
गायत्री देवता राज्ञी माया बीजमुदाहृतम्।

शरच्छक्तिः कीलकं च कामराजः सुरेश्वरि ॥८॥
भोगापवर्गसिद्ध्यर्थे विनियोग इति स्मृतः ।

हे महादेवि! इस महाराज्ञी कवच के ऋषि ब्रह्मा एवं छन्द गायत्री कहे गये हैं। श्रीमहाराज्ञी इसके देवता हैं और ह्रीं इसका बीज कहा गया है। शक्ति सौः और क्लीं इसका कीलक कहा गया है। हे सुरेश्वरि! भोग एवं अपवर्ग की सिद्धि के लिये इसका विनियोग कहा गया है।।७-८।।

अस्य श्रीमहाराज्ञीत्रैलोक्यविजयकवचस्य श्रीब्रह्मा ऋषिः, गायत्री छन्दः, श्रीमहाराज्ञी देवता, ह्रीं बीजं, सौः शक्तिः, क्लीं कीलकं, भोगापवर्गसिद्ध्यर्थे विनियोगः। ब्रह्मऋषये नमः शिरसि। गायत्रीछन्दसे नमो मुखे। महाराज्ञीदेवतायै नमो हृदि। ह्रीं बीजाय नमो नाभौ। सौः शक्तये नमो गुह्ये। क्लीं कीलकाय नमः पादयोः। विनियोगाय नमः सर्वाङ्गेषु। ॐ ह्रामित्यादिषड्दीर्घयुक्तमायाबीजेन कराङ्गन्यासं कृत्वा ध्यायेत्।

विनियोग—अस्य श्रीमहाराज्ञीत्रैलोक्यविजयकवचस्य श्रीब्रह्मा ऋषिः, गायत्री छन्दः, श्रीमहाराज्ञी देवता, ह्रीं बीजं, सौः शक्तिः, क्लीं कीलकं, भोगापवर्गसिद्ध्यर्थे विनियोगः।

ऋष्यादि न्यास—ब्रह्मऋषये नमः शिरसि। गायत्रीछन्दसे नमः मुखे। महाराज्ञीदेवतायै नमः हृदि। ह्रीं बीजाय नमः नाभौ। सौः शक्तये नमो गुह्ये। क्लीं कीलकाय नमः पादयोः। विनियोगाय नमः सर्वांगेषु।

करन्यास—ॐ ह्रां अंगुष्ठाभ्यां नमः। ॐ ह्रीं तर्जनीभ्यां नमः। ॐ ह्रूं मध्यमाभ्यां नमः। ॐ ह्रैं अनामिकाभ्यां नमः। ॐ ह्रौं कनिष्ठाभ्यां नमः। ॐ ह्रः करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः।

अङ्गन्यास— ॐ ह्रां हृदयाय नमः। ॐ ह्रीं शिरसे स्वाहा। ॐ ह्रूं शिखायै वषट्। ॐ ह्रैं कवचाय हूं। ॐ ह्रौं नेत्राय वौषट्। ॐ ह्रः अस्त्राय फट्।

उद्यद्दिवाकरसहस्ररुचिं त्रिनेत्रां सिंहासनोपरिगतामुरगोपवीताम् ।
खड्गाम्बुजाढ्यकलशामृतपात्रहस्तां राज्ञीं भजामि विकसद्वदनारविन्दाम् ॥१॥
चतुर्भुजां चन्द्रकलार्धशेखरां सिंहासनस्थां भुजगोपवीतिनीम् ।
पाशाङ्कुशाम्भोरुहखड्गधारिणीं राज्ञीं भजे चेतसि राज्यदायिनीम् ॥२॥

ध्यान—हजार नवोदित सूर्यों के समान आभा, तीन नेत्र, सिंहासन पर विराजमान, सर्पों का यज्ञोपवीत है। हाथों में खड्ग, पद्म, कलश और अमृतपात्र है। ऐसी राज्ञी के प्रफुल्लित कमल के समान मुख का मैं ध्यान करता हूँ।

चतुर्भुजा, शिर पर अर्द्ध चन्द्र-कला, सिंहासनासीन, सर्पों का यज्ञोपवीत, पाश, अङ्कुश, कमल, खड्‌गधारिणी, राज्य देने वाली राज्ञी देवी का भजन मैं अपने चित में करता हूँ।।१-२।।

ॐ लक्ष्मीर्मे शिरः पातु ह्रीं ललाटं सरस्वती।
श्रीं बाला पातु मां नेत्रं त्र्यश्रं पातु श्रुती मम ।।९।।
रां दुर्गा पातु मे नासां क्लीं मुखं पातु शारिका।
सौः कण्ठं वैखरी पातु भं भुजौ पातु मे शिवा ।।१०।।
गं हस्तौ पातु मे काली वं वक्षस्त्रिपुरावतु।
षडश्रं पातु मे मध्यं वृत्तं पार्श्वौ ममावतु ।।११।।
त्यैं पृष्ठं पातु मे ब्राह्मी रां नाभिं पातु वैष्णवी।
ज्यैं गुदं पातु रुद्राणी ह्रीं कटिं मेऽपराजिता ।।१२।।

कवच—ॐ लक्ष्मी मेरे शिर की और ह्रीं सरस्वती मेरे ललाट की रक्षा करे। श्रीं बाला मेरे नेत्रों की रक्षा करे और त्र्यश्र मेरे कानों की रक्षा करे। रां दुर्गा मेरे नासिका की रक्षा करें। क्लीं शारिका मेरे मुख की रक्षा करें। सौः वैखरी मेरे कण्ठ की रक्षा करें। भं शिवा मेरी भुजाओं की रक्षा करें। गं काली मेरे हाथों की रक्षा करें। वं त्रिपुरा मेरे वक्ष की रक्षा करें। षट्‌कोण मेरी कमर की रक्षा करे। वृत्त मेरे पार्श्वों की रक्षा करे। त्यैं ब्राह्मी मेरे पीठ की रक्षा करे। रां वैष्णवी नाभि की रक्षा करें। ज्यैं रुद्राणी गुदा की रक्षा करें एवं ह्रीं अपराजिता कटि की रक्षा करें।।९-१२।।

स्वां कौमारी पातु जानू हां जङ्घेऽवतु चण्डिका।
स्वाहा गुल्फौ च वाराही ॐ पादौ नारसिंहिका ।।१३।।
विस्मारितं च यत् स्थानं यत् स्थानं नामवर्जितम्।
तत् सर्वं पातु मे राज्ञी मूलविद्यामयी परा ।।१४।।

स्वां कौमारी जानुओं की रक्षा करे। हां चण्डिका जङ्घों की रक्षा करे। स्वाहा वाराही गुल्फों की रक्षा करें। ॐ नारसिंहिका पैरों की रक्षा करें। शरीर के जो विस्मृत अङ्ग हैं या जो स्थान नामरहित हैं, मेरे शरीरस्थ उन सभी स्थानों की रक्षा मूल विद्यामयी परा राज्ञी करें।।१३-१४।।

वासुकिः पूर्वतः पातु नीलनागोऽनलेऽवतात्।
तक्षको दक्षिणे पातु नैर्ऋते पद्मनागकः ।।१५।।
कर्कोटकः पश्चिमेऽव्याच्छङ्खपालस्तु वायुगे।
कुलिकश्चोत्तरे पातु शेष ईशानमण्डले ।।१६।।

वासुकि पूर्व में रक्षा करें। नील नाग अग्निकोण में रक्षा करें। तक्षक दक्षिण में रक्षा करें। पद्मनाग नैर्ऋत्य में रक्षा करें। कर्कोटक पश्चिम में रक्षा करें। शङ्खपाल वायव्य में रक्षा करें। कुलिक उत्तर में रक्षा करें और शेषनाग ईशान में रक्षा करें।।१५-१६।।

ब्राह्मी ब्राह्ममुहूर्तेऽव्याद् दिनादौ वैष्णवी मम।
रुद्राणी पातु मध्याह्ने सायं पात्वपराजिता ।।१७।।
निशादौ पातु कौमारी निशीथे चण्डिकावतु।
निशान्ते पातु वाराही सर्वदा नारसिंहिका ।।१८।।
असिताङ्गः क्षितेः पातु पयसो रुरुभैरवः।
चण्डो मां पवनात् पातु क्रोधेशः पातु मानलात् ।।१९।।

ब्राह्म मुहूर्त में ब्राह्मी और दिवसारम्भ में वैष्णवी रक्षा करे। रुद्राणी मध्याह्न में रक्षा करें और सायंकाल में अपराजिता रक्षा करें। रात के प्रारम्भ में कौमारी और अर्धरात्रि में चण्डिका रक्षा करें। रात के अन्त में वाराही और नारसिंही सदैव रक्षा करें। असिताङ्ग भूतल पर और रुरुभैरव जल में मेरी रक्षा करें। चण्ड वायु से और क्रोधेश अग्नि से मेरी रक्षा करें।।१७-१९।।

उन्मत्तः सोमतः पातु भीषणः सूर्यतोऽवतु।
याजकाच्च कपालीशो व्योम्नः संहारकोऽवतात् ।।२०।।
सदा समन्ततः पातु वपुर्वसुदलं मम।
गुरवः पान्तु सर्वत्र दिगीशाः पान्तु सर्वतः ।।२१।।
वृत्तत्रयं पातु नित्यं धरागेहं सदावतु।
श्रीचक्रं पातु भीतिभ्यो योगिन्यः पान्तु सर्वदा ।।२२।।

उन्मत्त चन्द्रमा से और भीषण सूर्य से मेरी रक्षा करें। कपालीश यज्ञ में और संहार आकाश में मेरी रक्षा करें। अष्टदल मेरे पूरे शरीर की रक्षा सर्वदा चारो ओर से रक्षा करें। गुरुगण सर्वत्र रक्षा करें। दिक्पाल सभी प्रकार से रक्षा करें। वृत्तत्रय नित्य मेरी रक्षा करें और भूपुर सदैव रक्षा करे। श्रीचक्र भयों से मेरी रक्षा करे और योगिनियाँ सभी ओर से सदा-सर्वदा मेरी रक्षा करें।।२०-२२।।

ऊर्ध्वं चाधः सदा पातु देवो रामेश्वरः शिवः।
सर्वत्र सर्वदा सत्यं वपुर्भूतेश्वरोऽवतात् ।।२३।।
पादादिमूर्धपर्यन्तं वपुः सर्वत्र मेऽवतु।
शिरसः पादपर्यन्तं राज्ञी पञ्चदशाक्षरी ।।२४।।

ऊपर-नीचे रामेश्वर शिव मेरी रक्षा सदैव करें। सत्यस्वरूप भूतेश्वर मेरी रक्षा सर्वत्र सर्वदा करें। राज्ञी पञ्चदशाक्षरी आपादमस्तक और शिर से पाँव तक मेरे पूरे शरीर की रक्षा सर्वत्र सर्वदा करें।।२३-२४।।

इतीदं कवचं राज्ञ्या मन्त्रगर्भं जयावहम्।
त्रैलोक्यविजयं नाम दारिद्र्यभयनाशनम्॥२५॥
सर्वरोगहरं साक्षात् सिद्धिदं पापनाशनम्।
महाभयहरं देवि मूलविद्यामयं परम्॥२६॥
परमार्थप्रदं नित्यं भोगमोक्षैककारणम्।
यः पठेत् कवचं देवि रणे राजभये क्षणात्॥२७॥
संग्रामेषु रिपूञ्जित्वा विजयी गृहमेष्यति।
पठनात् कवचस्यास्य राजकोपः प्रशाम्यति॥२८॥

फलश्रुति—यही राज्ञी का मन्त्रगर्भित विजय प्रदान करने वाला कवच है। इस कवच का नाम त्रैलोक्यविजय है। यह दरिद्रता और भय का विनाशक है। यह सभी रोगों का नाशक, साक्षात् सिद्धि-प्रदायक और पापों का विनाशक है। महान् भयों का विनाशक यह कवच देवी के मूल विद्यास्वरूप है। यह नित्य परमार्थ-प्रदायक और भोग एवं मोक्ष का एकमात्र साधन है। युद्ध में या राजभय के क्षण में इस कवच का पाठ करने से पाठक शत्रु को जीतकर युद्ध में विजयी होकर वापस घर आ जाता है एवं इसके पाठ से राजकोप शान्त होता है।।२५-२८।।

द्यूते धनं लभेद् द्यूती श्मशाने सिद्धिमाप्नुयात्।
त्रिवारं यः पठेद्रात्रौ रेतःस्रावे महेश्वरि॥२९॥
तस्य राज्ञी महाविद्या स्वप्नेऽभीष्टप्रदा भवेत्।

जुआ खेलने वाले को जुआ में धन प्राप्त होता है। श्मशान में सिद्धि मिलती है। हे महेश्वरि! रात में मैथुन के समय जो इसका तीन पाठ करता है, उसे राज्ञी स्वयं स्वप्न में अभीष्ट फल प्रदान करती है॥२९॥

स्वयम्भूकुसुमैः शुद्धै रेतसा चोभयाङ्कितैः॥३०॥
रसैर्भूर्जे लिखेद्वर्म रवौ प्रातर्महेश्वरि।
चीनतन्तुभिरव्यक्तं लाक्षया वेष्टितं तथा॥३१॥
सुवर्णगुटिकान्तःस्थं पूजयेद्यन्त्रराजवत्।
गुटिकैषा महाविद्या राज्ञी मूर्तिरिवापरा॥३२॥

रविवार के प्रात:काल में स्वयम्भू कुसुम और वीर्य के घोल से भोजपत्र पर इस कवच को लिखे। गुटिका बनाकर उस पर रेशमी धागा लपेटे। लाह से उसे वेष्टित करे। सोने के ताबीज में भरे। यन्त्रराज के समान उसका पूजन करे। हे महेश्वरि! यह दिव्य गुटिका राज्ञी की दूसरी मूर्ति के समान होती है।।३०-३२।।

मूलविद्यामयी देवि सर्वाभीष्टफलप्रदा।
शिर:स्था धनदा देवि कण्ठस्था वाक्प्रदायिनी ।।३३।।
वक्ष:स्था पुत्रदा देवि कटिस्था भोगदायिनी।
पृष्ठस्था बलदा नित्यं कुक्षिस्था रोगनाशिनी ।।३४।।

हे देवि! यह मूल विद्यामयी गुटिका सर्वेप्सित फल को देने वाली होती है। इस गुटिका को यदि शिर पर धारण किया जाय तो यह धन प्रदान करती है और कण्ठ में धारण किया जाय तो वाक्शक्ति प्रदान करती है। वक्ष में धारण करने से पुत्र देती है। कमर में धारण करने से भोग प्रदान करती है। पीठ पर धारण करने से बल देती है। कुक्षि में नित्य धारण करने से रोगों का नाश करती है।।३३-३४।।

सर्वार्थसाधिनी लोके यथाभीष्टफलप्रदा।
गुटिकेयं शुभा राज्ञ्या न देया यस्य कस्यचित् ।।३५।।
इदं कवचमीशानि मूलविद्यामयं ध्रुवम्।
सारस्वतप्रदं लक्ष्मीपुत्रपौत्रविवर्धनम् ।।३६।।
आयुष्करं पुष्टिकरं श्रीकरं च यशस्करम्।
चतुष्षष्ट्यादितन्त्राणां सारमादाय वर्णितम् ।।३७।।

संसार में सर्वार्थसाधिनी यह गुटिका इच्छानुसार फल प्रदान करती है। राज्ञी की इस शुभ गुटिका को जिस-किसी को नहीं देना चाहिये। हे ईशानि! यह कवच मूल विद्यास्वरूप है। यह सारस्वतप्रद होने के साथ-साथ निश्चित रूप से धन, पुत्र एवं पौत्र का वर्धक है। आयुस्कर, पुष्टिकर, श्रीकर और यशस्कर है। चौंसठ तन्त्रों के सारों का संग्रह करके यह वर्णित किया गया है।।३५-३७।।

श्मशाने य: पठेत् सायं महाचीनक्रमेश्वर:।
स साधको महादेवि राज्ञीपुत्रो भविष्यति ।।३८।।
इतीदं मम सर्वस्वं त्रैलोक्यविजयाभिधम्।
कवचं मन्त्रगर्भं तु गोपनीयं स्वयोनिवत् ।।३९।।

इति श्रीरुद्रयामले तन्त्रे दशविद्यारहस्ये श्रीमहाराज्ञ्या-
स्त्रैलोक्यविजयं नाम कवचम्।।३।।

सायंकाल में श्मशान में चीनाचारी होकर जो साधक इसका पाठ करता है, वह राज्ञी का पुत्र होता है। यह त्रैलोक्यविजय नामक कवच मेरा सर्वस्व है। यह मन्त्रगर्भ कवच अपनी योनि के समान गोपनीय है।।३८-३९।।

इस प्रकार रुद्रयामल तन्त्रोक्त श्रीदेवीरहस्य की भाषा टीका में
श्रीमहाराज्ञी का त्रैलोक्यविजय नामक कवच पूर्ण हुआ।

●

अथ महाराज्ञीसहस्रनामकम्

सहस्रनाममाहात्म्यम्

श्रीभैरव उवाच

भगवन् वेदतत्त्वज्ञ मन्त्रतन्त्रविचक्षण।
शरण्य सर्वलोकेश शरणागतवत्सल।।१।।
कथं श्रियमवाप्नोति लोके दारिद्र्यदुःखभाक्।
मान्त्रिको भैरवेशान तन्मे गदितुमर्हसि।।२।।

माहात्म्य—श्री भैरव ने कहा—हे भगवन्! आप वेदों के तत्त्वों को जानने वाले एवं मन्त्र-तन्त्र में विचक्षण हैं। सभी लोकों को शरण देने वाले ईश हैं। शरणागत- वत्सल हैं। हे भैरवेशान! दारिद्र्य-दुःख से दुःखी मान्त्रिक किस प्रकार धन को प्राप्त करे, वह उपाय मुझे बतलाइये।।१-२।।

श्रीभैरव उवाच

या देवी निष्कला राज्ञी भगवत्यमलेश्वरी।
सा सृजत्यवति व्यक्तं संहरिष्यति तामसी।।३।।
तस्या नामसहस्रं ते वक्ष्ये स्नेहेन पार्वति।
अवाच्यं दुर्लभं लोके दुःखदारिद्र्यनाशनम्।।४।।
परमार्थप्रदं नित्यं परमैश्वर्यकारणम्।
सर्वागमरहस्याढ्यं सकलार्थप्रदीपनम्।।५।।
समस्तशोकशमनं महापातकनाशनम्।
सर्वमन्त्रमयं दिव्यं राज्ञीनामसहस्रकम्।।६।।

श्री भैरव ने कहा कि जो अमलेश्वरी निष्कला राज्ञी भगवती हैं, वहीं सृष्टि को व्यक्त करती है एवं पालन करती है और तामसी रूप में वही संहार भी करती है। हे पार्वति! तुम्हारे स्नेहवश उसके सहस्रनाम का मैं वर्णन करता हूँ। यह संसार में वाचन के योग्य नहीं है और दुःख-दारिद्र्य का विनाशक है। यह परमार्थप्रदायक है एवं परम ऐश्वर्य का साधन है। सभी आगमों के रहस्यों से परिपूर्ण है एवं सभी मनोरथों को पूरा करने वाला है। यह सभी शोकों का विनाशक है एवं महापापों का नाशक है। राज्ञी का यह सहस्रनाम सर्वमन्त्रमय और दिव्य है।।३-६।।

विनियोगः

अस्य श्रीमहाराज्ञीनामसहस्रस्य ब्रह्मा ऋषिः, गायत्रं छन्दः, श्रीभूतेश्वरीमहाराज्ञी देवता, ह्रीं बीजं, सौः शक्तिः, क्लीं कीलकं, महाराज्ञीसहस्रनामपाठे विनियोगः।

ब्रह्मऋषये नमः शिरसि। गायत्रीच्छन्दसे नमो मुखे। श्रीभूतेश्वरीमहाराज्ञीदेवतायै नमो हृदि। ह्रींबीजाय नमो नाभौ। सौः शक्तये नमो गुह्ये। क्लीं कीलकाय नमः पादयोः। विनियोगाय नमः सर्वाङ्गेषु। ॐह्रामित्यादिना करषडङ्गन्यासं विधाय ध्यानं कुर्यात्।

विनियोग—अस्य श्रीराज्ञीनामसहस्रस्य ब्रह्मा ऋषिः, गायत्री छन्दः, श्रीभूतेश्वरी-महाराज्ञी देवता, ह्रीं बीजं, सौः शक्तिः, क्लीं कीलकं, महाराज्ञीसहस्रनामपाठे विनियोगः।

ऋष्यादि न्यास—ब्रह्मऋषये नमः शिरसि। गायत्रीछन्दसे नमः मुखे। श्रीभूतेश्वरी-महाराज्ञीदेवतायै नमो हृदि। ह्रीं बीजाय नमो नाभौ। सौः शक्तये नमो गुह्ये। क्लीं कीलकाय नमः पादयोः। विनियोगाय नमः सर्वाङ्गेषु।

करन्यास—ॐ ह्रां अंगुष्ठाभ्यां नमः। ॐ ह्रीं तर्जनीभ्यां नमः। ॐ ह्रूं मध्यमाभ्यां नमः। ॐ ह्रैं अनामिकाभ्यां नमः। ॐ ह्रौं कनिष्ठाभ्यां नमः। ॐ ह्रः कतरलकरपृष्ठाभ्यां नमः।

अङ्गन्यास—ॐ ह्रां हृदयाय नमः। ॐ ह्रीं शिरसे स्वाहा। ॐ ह्रूं शिखायै वषट्। ॐ ह्रैं कवचाय हूं। ॐ ह्रौं नेत्राय वौषट्। ॐ ह्रः अस्त्राय फट्।

इस प्रकार न्यास करके ध्यान करे।

ध्यानम्

या द्वादशार्कपरिमण्डितमूर्तिरेका सिंहासनस्थितिमतीमुरगैर्वृताञ्च।
देवीमनक्षगतिमीश्वरतां प्रपन्नां तां नौमि भर्गवपुषीं परमार्थराज्ञीम् ॥१॥
चतुर्भुजां चन्द्रकलार्धशेखरां सिंहासनस्थां भुजगोपवीतिनीम्।
पाशाङ्कुशाम्भोरुहखड्गधारिणीं राज्ञीं भजे चेतसि राज्यदायिनीम् ॥२॥

जो मूर्ति बारह आदित्यों द्वारा मण्डित, सिंहासन पर स्थित, सर्पों से घिरी हुई है, जो देवी अनक्ष गति एवं ईश्वरता से परिपूर्ण है, उस प्रकाशमान शरीर वाली परमार्थ राज्ञी को मैं प्रणाम करता हूँ! जिसके चार हाथ हैं, शिर पर अर्ध चन्द्रकला है, सिंहासन पर बैठी हैं, सर्पों का यज्ञोपवीत है, जो पाश-अङ्कुश-पद्म और खड्ग धारण की हुई हैं, उस राज्यदायिनी राज्ञी का भजन हम चित्त में करते हैं।।१-२।।

सहस्रनाम

ॐह्रींश्रीरां महाराज्ञी क्लींसौः पञ्चदशाक्षरी ।
ह्रींस्वाहात्र्यक्षरीविद्या पराभगवती विभा ॥१॥
भास्वती भद्रिका भीमा भर्गरूपा महस्विनी ।
माननीया मनीषा च मनोजा च मनोजवा ॥२॥
मानदा मन्त्रविद्या च महाविद्या षडक्षरी* ।
षट्कूटा त्रिकूटा च त्रयी वेदत्रयी शिवा ॥३॥
शिवाकारा विरूपाक्षी शशिखण्डावतंसिनी ।
महालक्ष्मीर्महोरस्का महौजस्का महोदया ॥४॥
मातङ्गी मोदकाहारा मदिरारुणलोचना ।
साध्वी शीलवती शीला सुधाकलशधारिणी ॥५॥
खड्गिनी पद्मिनी पद्मा पद्मकिञ्जल्करञ्जिता ।
हृत्पद्मवासिनी हृद्या पानपात्रधरा धरा ॥६॥
धराधरेन्द्रतनया दक्षिणा दक्षजा दया ।
दयावती महामेधा मोदिनी बोधिनी गदा ॥७॥
गदाधरार्चिता गोधा गङ्गा गोधावरी गया ।
महाप्रभावसहिता महोरगविभूषणा ॥८॥
महामुनिकृतातिथ्या माध्वी मानवती मघा ।
बाला सरस्वती लक्ष्मीर्दुर्गा दुर्गतिनाशिनी ॥९॥
शारी शरीरमध्यस्था वैखरी खेचरेश्वरी ।
शिवदा शिववक्षःस्था कालिका त्रिपुरापुरी ॥१०॥
पुरारिकुक्षिमध्यस्था मुरारिहृदयेश्वरी ।
बलारिराज्यदा चण्डी चामुण्डा मुण्डधारिणी ॥११॥
मुण्डमालाञ्चिता मुद्रा क्षोभणा कर्षणक्षमा ।
ब्राह्मी नारायणीदेवी कौमारी चापराजिता ॥१२॥
रुद्राणीं च शचीन्द्राणी वाराही वीरसुन्दरी ।
नारसिंही भैरवेशी भैरवाकारभीषणा ॥१३॥
नागालङ्कारशोभाढ्या नागयज्ञोपवीतिनी ।
नागकङ्कणकेयूरा (१००) नागहारा सुरेश्वरी ॥१४॥

---

* रेखाङ्कितमेकमेव नाम ज्ञेयम्।

सहस्रनाम—ॐ ह्रीं श्रीं रां महाराज्ञी, क्लीं सौः पञ्चदशाक्षरी, ह्रीं स्वाहा त्र्यक्षरी विद्या, परांभगवती, विभा, भास्वती, भद्रिका, भीमा, भर्गरूपा, महस्विनी, माननीया, मनीषा, मनोजा, मनोजवा, मानदा, मन्त्रविद्या, महाविद्या षडक्षरी, षट्कूटा, त्रिकूटा, त्रयी, वेदत्रयी, शिवा, शिवाकारा, विरूपाक्षी, शशिखण्डावतंसिनी, महालक्ष्मी, महोरस्का, महौजस्का, महोदया, मातङ्गी, मोदकाहारा, मदिरारुणालोचना, साध्वी, शीलवती, शाला, सुधाकलशधारिणी, खड्गिनी, पद्मा पद्मकिञ्जल्करञ्जिता, हृत्पद्मवासिनी, हृद्या, पानपात्रधरा, धरा, धराधरेन्द्रतनया, दक्षिणा, दक्षजा, दया, दयावती, महामेधा, मोदिनी, बोधिनी, गदा, गदाधरार्चिता, गोधा, गङ्गा, गोधावरी, गया, महाप्रभावसहिता, महोरगविभूषणा, महामुनिकृतातिथ्या, माध्वी, मानवती, मघा, बाला, सरस्वती, लक्ष्मी, दुर्गा, दुर्गतिनाशिनी, शारी, शरीरमध्यस्था, वैखरी, खेचरेश्वरी, शिवदा, शिववक्षःस्था, कालिका, त्रिपुरापरी, पुरारिकुक्षिमध्यस्था, मुरारिहृदयेश्वरी, बलारिराज्यदा, चण्डी, चामुण्डा, मुण्डधारिणी, मुण्डमालाञ्चिता, मुद्रा, क्षोभणा, कर्षणक्षमा, ब्राह्मी, नारायणी देवी, कौमारी, अपराजिता, रुद्राणी, शचीन्द्राणी, वाराही, वीरसुन्दरी, नारसिंही, भैरवेशी, भैरवाकारभीषणा, नानालङ्कारशोभाढ्या, नागयज्ञोपवीतिनी, नागकङ्कणकेयूरा, नागहारा, सुरेश्वरी।।१-१४।।

सुरारिघातिनी पूता पूतना डाकिनीक्रिया।
क्रियावती कुरी कृत्या डाकिनी लाकिनी लया।।१५।।
लीलावती रसाकीर्णा नागकन्यामनोहरा।
हारकङ्कणशोभाढ्या सदानन्दा शुभङ्करी।।१६।।
प्रहासिनी मधुमती सरसी स्मरमोहिनी।
महोग्रवपुषी वार्ता वामाचारप्रिया सिरा।।१७।।
सुधामयी वेणुकरा वैरिघ्नीवीरसुन्दरी।
वारिमध्यस्थिता वामा वामनेत्रा शशिप्रभा।।१८।।
शर्मदा शङ्करी सीता रवीन्द्रशिखिलोचना।
मदिरा वारुणी वीणागीतिज्ञा मदिरावती।।१९।।
वटस्था वारुणशक्तिर्वटजा वटवासिनी।
वटुकी वीरसूवन्द्या स्तम्भिनी मोहिनी च मुत्।।२०।।
मुद्गराङ्कुशहस्ता च वराभयकरा कुटी।
पाटीरद्रुमवल्ली च वटिका वटुकेश्वरी।।२१।।
इष्टदा कृषिभूः कीरी रेवतीरमणप्रिया।
रोहिणी रेवती रम्या रमणा रोमहर्षिणी।।२२।।

रसोल्लासा रसासारा सारिणी तारिणी तडित् ।
तरी तरित्रहस्ता च तोतुला तरणिप्रभा ॥२३॥
रत्नाकरप्रिया रम्भा रत्नालङ्कारशोभिता ।
रुक्माङ्गदा गदाहस्ता गदाधरवरप्रदा ॥२४॥
षड्रसा द्विरसा माला मालाभरणभूषिता ।
मालती मल्लिकामोदा मोदकाहारवल्लभा ॥२५॥
वल्लभी मथुरा माया काशी काञ्ची ललन्तिका ।
हसन्तिका हसन्ती च भ्रमन्ती च वसन्तिका ॥२६॥
क्षेमा क्षेमङ्करी क्षामा क्षौमवस्त्रा(२००)क्षणेश्वरी ।

सुरारिघातिनी, पूता, पूतना, डाकिनीक्रिया, क्रियावती, कुरी, कृत्या, डाकिनी, लाकिनी, लया, लीलावर्ता, रसाकीर्णा, नागकन्यामनोहरा, हारकङ्कणशोभाढ्या, सदानन्दा, शुभङ्करी, प्रहासिनी, मधुमती, सरसी, स्मरमोहिनी, महोग्रवपुषी, वार्ता, वामाचारप्रिया, सिरा, सुधामयी, वेणुकरा, वैरिहावीरसुन्दरी, वारिमध्यस्था, वामा, वामनेत्रा, शशिप्रभा, शर्मदा, शङ्करी, सीता, रवीन्दुशिखिलोचना, मदिरा, वारुणी, वीणागीतिज्ञा, मदिरावती, वटस्था, वारुणीशक्ति, वटजा, वटवासिनी, वटुकी, वीरसू, वन्ध्या, स्तम्भिनी, मोहिनी, चमू, मुद्गराङ्कुशहस्ता, वराभयकरा, कुटी, पार्टीरद्रुमवल्ली, वटिका, वटुकेश्वरी, इष्टदा, कृषिभू, कीरी, रेवतीरमणप्रिया, रोहिणी, रेवती, रम्या, रमणा, रोमहर्षिणी, रसोल्लासा, रसासारा, सारिणी, तारिणी, तड़ित्, तरी, तरित्रहस्ता, तोतुला, तरणिप्रभा, रत्नाकरप्रिया, रम्भा, रत्नालङ्कारशोभिता, रुक्माङ्गदा, गदाहस्ता, गदाधरवरप्रदा, षड्रसा, द्विरसा, माला, मालाभरणभूषिता, मालती, मल्लिका, आमोदा, मोदकाहारवल्लभा, वल्लभी, मथुरा, माया, काशी, काञ्ची, ललन्तिका, हसन्तिका, हसन्ती, भ्रमन्ती, वसन्तिका, क्षेमा, क्षेमङ्करी, क्षामा, क्षौमवस्त्रा, क्षणेश्वरी॥१५-२६॥

क्षणदा क्षेमदा सीरा सीरपाणिसमर्चिता ॥२७॥
क्रीता क्रीतातपा क्रूरा कमनीया कुलेश्वरी ।
कूर्चबीजा कुठाराढ्या कूर्मिणी कूर्मसुन्दरी ॥२८॥
कारुण्या चैव काश्मीरी दूती द्वारवती ध्रुवा ।
ध्रुवस्तुता ध्रुवगतिः पीठेशी बगलामुखी ॥२९॥
सुमुखी शोभना ज्योतिः रत्नज्वालामुखी नतिः ।
अलकोज्जयिनी भोग्या भङ्गी भोगावती बला ॥३०॥
धर्मराजपुरी पूता पूर्णसत्त्वाऽमरावती ।

अयोध्या योधनीया च युगमाता च यक्षिणी ॥३१॥
यज्ञेश्वरी योगगम्या योगिध्येया यशस्विनी ।
यशोवती च चार्वङ्गी चारुहासा चलाचला ॥३२॥
हरीश्वरी हरेर्माया मायिनी वायुवेगिनी ।
अम्बालिकाऽम्बा भर्गेशी भृगुकूटा महामतिः ॥३३॥
कोशेश्वरी च कमला कीर्तिदा कीर्तिवर्धिनी ।
कठोरवाक्कुहूमूर्तिः चन्द्रविम्बसमानना ॥३४॥
चन्द्रकुङ्कुमलिप्ताङ्गी कनकाचलवासिनी ।
मलयाचलसानुस्था हिमाद्रितनयातनुः ॥३५॥
हिमाद्रिकुक्षिदेशस्था कुब्जिका कोसलेश्वरी ।
कारैकनिगडा गूढा गूढगुल्फातिगोपिता ॥३६॥
तनुजा तनुरूपा च बाणचापधरा नुतिः ।
धुरीणा धूम्रवाराही धूम्रकेशाऽरुणानना ॥३७॥
अरुणेशी रतिः स्वातिर्गरिष्ठा च गरीयसी ।
महानसी महाकारा सुरासुरभयङ्करी ॥३८॥
अणुरूपा महज्ज्योतिरनिरुद्धसरस्वती ।
श्यामा श्याममुखी शान्ता श्रान्तसन्तापहारिणी ॥३९॥
गौर्गण्या गोमयी गुह्या गोमती गुरुवागऽया ।
गीतसन्तोषसंसक्ता(३००)ग्राहिणी ग्रहिणी ग्रहा ॥४०॥

क्षणदा, क्षेमदा, सीरा, सीरपाणिसमर्चिता, क्रीता, क्रीतातपा, क्रूरा, कर्मनाशा, कुलेश्वरी, कूर्चबीजा, कुठाराढ्या, कूर्मिणी, कूर्मसुन्दरी, कारुण्या, काश्मीरी, दूती, द्वारवती, ध्रुवा, ध्रुवस्तुता, ध्रुवगति, पीठेशी, बगलामुखी, सुमुखी, शोभना ज्योतिः, रत्नज्वालामुखी, नति, अलका, उज्जयिनी, भोग्या, भङ्गी, भोगावती, बला, धर्मराजपुरीपूता, पूर्णसन्ना, अमरावती, अयोध्या, योधनीया, युगमाता, यक्षिणी, यज्ञेश्वरी, योगगम्या, योगिध्येया, यशस्विनी, यशोवती, चार्वङ्गी, चारुहासा, चलाचला, हरीश्वरी, हरेर्माया, मायिनी, वायुवेगिनी, अम्बालिका, अम्बा, भर्गेशी, भृगुकूटा, महामति, कोशेश्वरी-कमला, कीर्तिदा कीर्तिवर्धिनी, कठोरवाक्कुहूमूर्ति, चन्द्रविम्बसमानना, चन्द्रकुङ्कुमलिप्ताङ्गी, कनकाचलवासिनी, मलयाचलसानुस्था, हिमाद्रितनयातनु, हिमाद्रिकुक्षिदेशस्था, कुब्जिका, कोसलेश्वरी, कारैकनिगडा, गूढा, गूढ़गुल्फातिगोपिता, तनुजा, तनुरूपा, बाणचापधरा, नुति, धुरीणा, धूम्रवाराही, धूम्रकेशा, अरुणानना, अरुणेशी, रति, स्वाति, गरिष्ठा, गरीयसी, महानसी, महाकारा,

सुरासुरभयङ्करी, अणुरूपा, महज्ज्योति, अनिरुद्धा, सरस्वती, श्यामाश्याममुखी, शान्ता, श्रान्तसंतापंहारिणी, गौर्गण्या, गोमयी, गुह्या, गोमती, गुरुवागगया. गीतसन्तोषसंसक्ता, ग्राहिणी, ग्रहिणी ग्रहा।।२७-४०।।

गणप्रिया गजगतिर्गान्धारी गन्धमोदिनी।
गन्धमादनसानुस्था सह्याचलकृतालया।।४१।।
गजाननप्रिया गव्या ग्राहिका ग्राहवाहना।
गुहप्रसूर्गुहावासा ग्रहमालाविभूषणा।।४२।।
कौवेरी कुहका भ्रान्तिस्तर्कविद्या प्रियङ्करी।
पीताम्बरा पटाकारा पताका सृष्टिजा सुधा।।४३।।
दाक्षायणी दक्षसुता दक्षयज्ञविनाशिनी।
ताराचक्रस्थिता तारा तुरी तुर्या तुटिस्तुला।।४४।।
सन्ध्यात्रयी सन्धिजरा सन्ध्यातारुण्यलालिता।
ललिता लोहिता लम्पा चम्पा कम्पाकुला सृणिः।।४५।।
सृतिः सत्यवती स्वस्था समाना मानवर्धिनी।
महोमयी मनस्तुष्टिः कामधेनुः सनातनी।।४६।।
सूक्ष्मरूपा सूक्ष्ममुखा स्थूलरूपा कलावती।
तलातलाश्रया सिन्धुस्त्र्यम्बिका लम्पिका जया।।४७।।
सौदामिनी सुधादेवी सनकर्पिसमर्चिता।
मन्दाकिनी च यमुना विपाशा नर्मदानदी।।४८।।
गण्डक्यैरावती सिप्रा वितस्ता च सरस्वती।
रेवा चैरावती चेक्षुमती सागरवासिनी।।४९।।
देवकी देवमाता च देवेशी देवसुन्दरी।
दैत्यघ्नी दमनी दात्री दितिर्दितिजसुन्दरी।।५०।।
विद्याधरी च विद्येशी विद्याधरजसुन्दरी।
मेनका चित्रलेखा च चित्रिणी च तिलोत्तमा।।५१।।
उर्वशी मोहिनी रम्भा चाप्सरोगणसुन्दरी।
यक्षिणी यक्षलोकेशी नरवाहनपूजिता।।५२।।
यक्षेन्द्रतनया योग्या यक्षनायकसुन्दरी।
गन्धवती चिता गन्धा सुगन्धा गीततत्परा।।५३।।
गन्धर्वतनाया नम्रा(४००)गीतिर्गन्धर्वसुन्दरी।

गणप्रिया, गजगति, गान्धारी, गन्धमोदिनी, गन्धमादनसानुस्था, सह्याचलकृतालया, गजाननप्रिया, गव्या, ग्राहिका, ग्राहवाहना, गुहप्रसू, गुहावासा, ग्रहमालाविभूषणा, कौवेरी, कुहकाभ्रान्ति, तर्कविद्या, प्रियङ्करी, पीताम्बरा, पटाकारा, पताका, सृष्टिजा, सुधा, दाक्षायणीदक्षसुता, दक्षयज्ञविनाशिनी, ताराचक्रस्थितातारा, तुरी, तुर्या, तुटि, तुला, सन्ध्यात्रयी, सन्धिजरा, सन्ध्यातारुण्यलालिता, ललिता, लोहिता, लम्पा, चम्पा, कम्पाकुलासृणि, सृति, सत्यवती, स्वस्था, समाना मानवर्धिनी, महोमयी, मनस्तुष्टि, कामधेनु संनातनी, सूक्ष्मरूपा, सूक्ष्ममुखा, स्थूलरूपा, कलावती, तलातलाश्रया, सिन्धु, त्र्यम्बिका, लम्पिकाजया, सौदामिनी, सुधादेवी, सनकर्षिसमर्चिता, मन्दाकिनी, यमुना, विपाशा, नर्मदानदी, गण्डकी, ऐरावती, सिप्रा, वितस्ता, सरस्वती, रेवा, इरावती, इक्षुमती, सागरवासिनी, देवकी देवमाता, देवेशी, देवसुन्दरी, दैत्यघ्नी, दमनी, दात्री, दिति, दितिजसुन्दरी, विद्याधरी, विद्येशी, विद्याधरजसुन्दरी, मेनका, चित्रलेखा, चित्रिणि, तिलोत्तमा, उर्वशी, मोहिनी, रम्भा, अप्सरोगणसुन्दरी, यक्षिणी, यक्षलोकेशी, नरवाहनपूजिता, यक्षेन्द्रतनया, योग्या, यक्षनायकसुन्दरी, गन्धवती, चितागन्धा, सुगन्धा, गीततत्परा, गन्धर्वतनया, नम्रा, गीति, गन्धर्वसुन्दरी।।४१-५३।।

मन्दोदरी करालाक्षी मेघनादवरप्रदा ।।५४।।
मेघवाहनसन्तुष्टा मेघमूर्तिश्च राक्षसी ।
रक्षोहन्त्री केकसी च रक्षोनायकसुन्दरी ।।५५।।
किन्नरी कम्बुकण्ठी च कलकण्ठस्वना सुधा ।
किंमुखी हयवक्त्रा च केला किन्नरसुन्दरी ।।५६।।
पिशाची राजमातङ्गी उच्छिष्टपदसंस्थिता ।
महापिशाचिनी चान्द्री पिशाचकुलसुन्दरी ।।५७।।
गुह्येश्वरी गुह्यरूपा गुर्वी गुह्यकसुन्दरी ।
सिद्धिप्रदा सिद्धवधूः सिद्धेशी सिद्धसुन्दरी ।।५८।।
भूतेश्वरी भूतालया भूतधात्री भयापहा ।
भूतभीतिहरी भव्या भूतजा भूतसुन्दरी ।।५९।।
पृथ्वी पार्थिवलोकेशी पृथा विष्णुसमर्चिता ।
वसुन्धरा वसुनता पृथिवी भूमिसुन्दरी ।।६०।।
अम्भोधितनयाऽलुप्ता जलजाक्षी जलेश्वरी ।
अमूर्तिरम्मयी मारी जलस्था जलसुन्दरी ।।६२।।
तेजस्विनी महोधात्री तैजसी सूर्यबिम्बगा ।

सूर्यकान्तिः सूर्यतेजास्तेजोरूपैकसुन्दरी ॥६२॥
वायुवाहा वायुमुखी वायुलोकैकसुन्दरी ।
गगनस्था खेचरेशी शून्यरूपा निराकृतिः ॥६३॥
निराभासा भासमाना द्युतिराकाशसुन्दरी ।
क्षितिमूर्तिधराऽनन्ता क्षितिभृल्लोकसुन्दरी ॥६४॥
अब्धियाना रत्नशोभा वरुणेशी वरायुधा ।
पाशहस्ता पोषणा च वरुणेश्वरसुन्दरी ॥६५॥
अनलैकरुचिज्योतिः पञ्चानिलगतिस्थितिः ।
प्राणापानसमानेच्छा चोदानव्यानरूपिणी ॥६६॥
पञ्चवातगतिर्नाडीरूपिणी वातसुन्दरी ।
अग्निरूपा वह्निशिखा वडवानलसन्निभा ॥६७॥
हेतिर्हविर्हुतज्योतिरग्निजा वह्निसुन्दरी ।
सोमेश्वरी सोमकला सोमपानपरायणा ॥६८॥
सौम्यानना सौम्यरूपा सोमस्था सोमसुन्दरी ।
सूर्यप्रभा सूर्यमुखी सूर्यजा सूर्यसुन्दरी ॥६९॥
याज्ञिकी यज्ञभागेच्छा यजमानवरप्रदा ।
याजकी यज्ञविद्या च यजमानैकसुन्दरी (५००) ॥७०॥

मन्दोदरी, करालाक्षी, मेघनादवरप्रदा, मेघवाहनसन्तुष्टा, मेघमूर्तिराक्षसी, रक्षोहन्त्री, केकसी, रक्षोनायकसुन्दरी, किन्नरी, कम्बुकण्ठी, कलकण्ठस्वना, सुधा, किम्मुखी हयवक्त्रा, केला, किन्नरसुन्दरी, पिशाची, राजमातङ्गी उच्छिष्टपदसंस्थिता, महापिशाचिनी, चान्द्री, पिशाचकुलसुन्दरी, गुह्येश्वरी, गुह्यरूपा, गुर्वी, गुह्यकसुन्दरी, सिद्धिप्रदा सिद्धवधू, सिद्धेशी, सिद्धसुन्दरी, भूतेश्वरी, भूतालाया भूतधात्री, भयापहा, भूतभीतिहरी, भव्या, भूतजा, भूतसुन्दरी, पृथ्वी, पार्थिवलोकेशी, पृथा विष्णुसमर्चिता, वसुन्धरा, वसुनता, पृथिवी, भूमिसुन्दरी, अम्भोधितनया, अलुप्ता, जलजाक्षी जलेश्वरी, अमूर्तिरम्मयी, मारी, जलस्था, जलसुन्दरी, तेजस्विनी, महोधात्री, तैजसी सूर्यबिम्बगा, सूर्यकान्ति सूर्यतेजा, तेजोरूपैकसुन्दरी, वायुवाहा, वायुमुखी, वायुलोकैकसुन्दरी, गगनस्था खेचरेशी, शून्यरूपा, निराकृति, निराभासा, भासमाना द्युति, आकाशसुन्दरी, क्षितिमूर्ति, धरा, अनन्ता, क्षितिभृल्लोकसुन्दरी, अब्धियाना, रत्नशोभा, वरुणेशी, वरायुधा, पाशहस्ता, पोषणा, वरुणेश्वरसुन्दरी, अनलैकरुचिज्योति, पञ्चानिलगतिस्थिति, प्राणापानसमानेच्छा, उदानव्यानरूपिणी, पञ्चवातगति, नाड़ीरूपिणी, वातसुन्दरी, अग्निरूपा, वह्निशिखा, वडवानलसन्निभा, हेति, हविर्हुतज्योति, अग्निजा,

वह्निसुन्दरी, सोमेश्वरी सोमकला, सोमपानपरायणा, सौम्यानना, सौम्यरूपा, सोमस्था सोमसुन्दरी, सूर्यप्रभा सूर्यमुखी, सूर्यजा, सूर्यसुन्दरी, याज्ञिकी, यज्ञभागेच्छा, यजमानवरप्रदा, याजकी यज्ञविद्या, यजमानैकसुन्दरी।।५४-७०।।

आकाशगामिनी वन्द्या शब्दजाकाशसुन्दरी।
मीनप्रिया मीननेत्रा मीनास्या मीनसुन्दरी ।।७१।।
कर्मपृष्ठगता कूर्मी कूर्मजा कूर्मरूपिणी।
वाराही वीरसूर्वह्नी वरारोहा मृगेक्षणा ।।७२।।
वराहमूर्तिर्वाचाला दंष्ट्रा वराहसुन्दरी।
नरसिंहाकृतिर्देवी दुष्टदैत्यनिसूदिनी ।।७३।।
प्रद्युम्नवरदा नारी नरसिंहैकसुन्दरी।
वामजा वामनाकारा नारायणपरायणा ।।७४।।
बलिदानवदर्पघ्नी वाम्या वामनसुन्दरी।
रामप्रिया रामकीलिः क्षत्रवंशक्षयङ्करी ।।७५।।
दनुपुत्री राजकन्या रामा परशुधारिणी।
भार्गवी भार्गवेष्टा च जामदग्न्यवरप्रदा ।।७६।।
कुठारधारिणी रात्रिर्जामदग्न्यैकसुन्दरी।
सीतालक्ष्मणसेव्या च रक्षःकुलविनाशिनी ।।७७।।
रामप्रिया च शत्रुघ्नी शत्रुघ्नभरतेष्टदा।
लावण्यामृतधाराढ्या लवणासुरघातिनी ।।७८।।
लोहितास्या प्रसन्नास्या स्वारामा रामसुन्दरी।
कृष्णकेशा कृष्णमुखी यादवान्तकरी लया ।।७९।।
यादोगणार्चिता योज्या राधाश्रीकृष्णसुन्दरी।
बुद्धप्रसूर्बुद्धदेवी जिनमार्गपरायणा ।।८०।।
जितक्रोधा जितालस्या जिनसेव्या जितेन्द्रिया।
जिनवंशधरोग्रा च नीलान्ता बुद्धसुन्दरी ।।८१।।
काली कोलाहलप्रीता प्रेतवाहा सुरेश्वरी।
कल्किप्रिया कम्बुधरा कलिकाकैकसुन्दरी ।।८२।।
विष्णुमाया ब्रह्ममाया शाम्भवी शववाहना।
इन्द्रावरजवक्षःस्था स्थाणुपत्नी पलालिनी ।।८३।।
जृम्भिणी जृम्भहर्त्री च जृम्भमाणकचालका।

कुलाकुलपदेशानी पददानफलप्रदा ॥८४॥
कुलवागीश्वरी कुल्या कुलजा कुलसुन्दरी ।
पुरन्दरेष्टा तारुण्यालया पुण्यजनेश्वरी ॥८५॥
पुण्योत्साहा पापहन्त्री पाकशासनसुन्दरी ।
सूर्यकोटिप्रतीकाशा सूर्यतेजोमयी मषी ॥८६॥
लेखिनी भ्राजिता रज्जुरूपिणी सूर्यसुन्दरी (६००) ।

आकाशगामिनी, वन्द्या, शब्दजा, आकाशसुन्दरी, मीनप्रिया, मीननेत्रा, मीनास्या, मीनसुन्दरी, कूर्मपृष्ठगता कूर्मी, कूर्मजा, कूर्मरूपिणी, वाराही, वीरसू, वर्ह्या, वरारोहा, मृगेक्षणा, वराहमूर्ति, वाचाला, दंष्ट्रा, वराहसुन्दरी, नरसिंहाकृति देवी, दुष्टदैत्यनिसूदिनी, प्रद्युम्नवरदां, नारी, नरसिंहैकसुन्दरी, वामजा, वामनाकारा, नारायणपरायणा, बलिदानवदर्पघ्नी, वाम्या, वामनसुन्दरी, रामप्रिया, रामकला, क्षत्रवंशक्षयङ्करी, दनुपुत्री, राजकन्या, रामा, परशुधारिणी, भार्गवी, भार्गविष्टा, जामदग्न्यवरप्रदा, कुठारधारिणी, रात्रि, जामदग्न्यैकसुन्दरी, सीता, लक्ष्मणसेव्या, रक्षःकुलविनाशिनी, रामप्रिया, शत्रुघ्नी, शत्रुघ्नभरतेष्टदा, लावण्या, अमृतधाराढ्या, लवणासुरघातिनी, लोहितास्या प्रसन्नास्या, स्वारामा, रामसुन्दरी, कृष्णकेशा, कृष्णमुखी, यादवान्तकरीलया, यादोगणार्चिता, योज्या, राधा, श्रीकृष्णसुन्दरी, बुद्धप्रसूबुद्धदेवी, जिनमार्गपरायणा, जितक्रोधा, जितालस्या, जिनसेव्या, जितेन्द्रिया, जिनवंशधरोग्रा, नीलान्ता बुद्धसुन्दरी, काली, कोलाहलप्रीता, प्रेतवाहा, सुरेश्वरी, कल्किप्रिया, कम्बुधरा, कलिकालैकसुन्दरी, विष्णुमाया, ब्रह्ममाया, शाम्भवी शव वाहना, इन्द्रावरजवक्षःस्था, स्थाणुपत्नी, पलालिनी, जृम्भिणी जृम्भहर्त्री, जृम्भमाणकचालका, कुलाकुलपदेशानी, पददानफलप्रदा, कुलवागीश्वरी, कुल्याकुलजा, कुलसुन्दरी, पुरन्दरेष्टदा, तारुण्यालया, पुण्यजनेश्वरी, पुण्योत्साहा, पापहन्त्री, पाकशासनसुन्दरी, सूर्यकोटिप्रतीकाशा, सूर्यतेजोमयी, मषी, लेखिनी, भ्राजिता, रज्जुरूपिणी, सूर्यसुन्दरी।।७१-८६।।

चन्द्रिका च सुधाधारा ज्योत्स्ना शीतांशुसुन्दरी ॥८७॥
लोलाक्षी च शताक्षी च सहस्राक्षी सहस्रपात् ।
सहस्रशीर्षा चेन्द्राक्षी सहस्रभुजवल्लिका ॥८८॥
कोटिरत्नांशुशोभा च शुभ्रवस्त्रा शतानना ।
शतानन्दा श्रुतिधरा पिङ्गला चोग्रनादिनी ॥८९॥
सुषुम्ना हारकेयूरनूपुरारावसङ्कुला ।
घोरनादा घोरमुखी चोन्मुखी चोल्मुकायुधा ॥९०॥
गोपिता गूर्जरी गाथा गायत्री वेदवल्लभा ।

वल्लकीस्वननादा च नादविद्या नदीतटी ॥९१॥
बिन्दुरूपा चक्रयोनिर्बिन्दुनादस्वरूपिणी ।
चक्रेश्वरी भैरवेशी महाभैरववल्लभा ॥९२॥
कालभैरवभार्या च कल्पान्तरङ्गनर्तकी ।
प्रलयानलधूम्राभा योनिमध्यकृतालया ॥९३॥
भूचरी खेचरीमुद्रा नवमुद्राविलासिनी ।
वियोगिनी श्मशानस्था श्मशानार्चनतोषिता ॥९४॥
भास्वराङ्गी भर्गशिखा भर्गवामाङ्गवासिनी ।
भद्रकाली विश्वकाली श्रीकाली मेघकालिका ॥९५॥
नीरकाली कालरात्रिः काली कामेशकालिका ।
इन्द्रकाली पूर्वकाली पश्चिमाम्नायकालिका ॥९६॥
श्मशानकालिका भद्रकाली श्रीकृष्णकालिका ।
क्रींकारोत्तरकाली श्रींहुंह्रींदक्षिणकालिका ॥९७॥
सुन्दरी त्रिपुरेशानी त्रिकूटा त्रिपुरार्चिता ।
त्रिनेत्रा त्रिपुराध्यक्षा त्रिपुटा पुटभैरवी ॥९८॥
त्रिलोकजननी त्रेता महात्रिपुरसुन्दरी ।
कामेश्वरी कामकला कालकामेशसुन्दरी ॥९९॥
त्र्यक्षरी त्र्यक्षरीदेवी भावना भुवनेश्वरी ।
एकाक्षरी चतुष्कूटा त्रिकूटेशी लयेश्वरी ॥१००॥
चतुर्वर्णा च वर्णेशी वर्णाढ्या चतुरक्षरी ।
पञ्चाक्षरी च षड्वक्त्रा षट्कूटा च षडक्षरी ॥१०१॥
सप्ताक्षरी नवानेवी परमाष्टाक्षरेश्वरी ।
नवमी पञ्चमी षष्ठी नागेशी च नवाक्षरी ॥१०२॥
दशाक्षरी दशास्येशी देविकैकादशाक्षरी ।
द्वादशादित्यसङ्काशा(७००)द्वादशी द्वादशाक्षरी ॥१०३॥

चन्द्रिका, सुधाधारा ज्योत्स्ना, शीतांशुसुन्दरी, लोलाक्षी, शताक्षी, सहस्राक्षी, सहस्रपात्, सहस्रशीर्षा, इन्द्राक्षी, सहस्रभुजवल्लिका, कोटिरत्नांशुशोभा, शुभ्रवस्त्रा, शुभानना, शतानन्दा, श्रुतिधरा, पिङ्गला, उग्रनादिनी, सुषुम्ना, हारकेयूरनूपुरारावसङ्कुला, घोरनादा, घोरमुखी, उन्मुखी उल्मुकायुधा, गोपिता, गूर्जरीगाथा, गायत्री वेदवल्लभा, वल्लकीस्वननादा, नादविद्या, नदीतटी, विन्दुरूपा चक्रयोनि, विन्दुनादस्वरूपिणी, चक्रेश्वरी, भैरवेशी, महाभैरववल्लभा,

कालभैरवभार्या, कल्पान्तरङ्गनर्तकी, प्रलयानल धूम्राभा, योनिमध्यकृतालया, भूचरी, खेचरीमुद्रा, नवमुद्राविलासिनी, वियोगिनी, श्मशानस्था, श्मशानार्चनतोषिता, भास्वराङ्गी भर्गशिखा, भर्गवामाङ्गवासिनी, भद्रकाली, विश्वकाली, श्रीकाली, मेघकालिका, नीरकाली, कालरात्रि, काली, कामेशकालिका, इन्द्रकाली, पूर्वकाली, पश्चिमाम्नायकालिका, श्मशानकालिका, भद्रकालि, श्रीकृष्णकालिका, क्रींकारोत्तरकाली, श्रीं हुं ह्रीं दक्षिणकालिका, सुन्दरी त्रिपुरेशानी, त्रिकूटा त्रिपुरार्चिता, त्रिनेत्रा, त्रिपुराध्यक्षा, त्रिपुटा, पुटभैरवी, त्रिलोकजननी, त्रेता, महात्रिपुरसुन्दरी, कामेश्वरी कामकला, कालकामेशसुन्दरी, त्र्यक्षरी, त्र्यक्षरीदेवी, भावना, भुवनेश्वरी, एकाक्षरी, चतुष्कूटा, त्रिकूटेशी, लयेश्वरी, चतुर्वर्णा, वर्णेशी वर्णाढ्या, चतुरक्षरी, पञ्चाक्षरी, षड्वक्त्रा, षट्कूटा, षडक्षरी, सप्ताक्षरी, नवानेवी, परमाष्टाक्षरेश्वरी, नवमी, पञ्चमी, षष्ठी, नागेशी, नवाक्षरी, दशाक्षरी, दशास्येशी, देविकैकादशाक्षरी, द्वादशादित्यसंकाशा, द्वादशी, द्वादशाक्षरी।।८७-१०३।।

त्रयोदशी वेदगर्भा वाद्या त्रयोदशाक्षरी ।
चतुर्दशाक्षरी विद्या विद्यापञ्चदशाक्षरी ।।१०४।।
षोडशी सर्वविद्येशी महाश्रीषोडशाक्षरी ।
महाश्रीषोडशीविद्या चिन्तामणिमनुप्रिया ।।१०५।।
द्वाविंशत्यक्षरी श्यामा महाकालकुटुम्बिनी ।
वज्रतारा कालतारा नारी तारोग्रतारिणी ।।१०६।।
कामतारा शब्दतारा स्पर्शतारा रसाश्रया ।
रूपतारा गन्धतारा महानीलसरस्वती ।।१०७।।
कालज्वाला वह्निज्वाला ब्रह्मज्वाला जटाकुला ।
विष्णुज्वाला जिष्णुशिखा भद्रज्वाला करालिनी ।।१०८।।
विकरालमुखीदेवी कराली भूतिभूषणा ।
चिताशयासना चिन्ता चितामण्डलमध्यगा ।।१०९।।
भूतभैरवसेव्या च भूतभैरवपालिनी ।
बन्धकी बद्धसम्मुद्रा भवबन्धविनाशिनी ।।११०।।
भवानी देवदेवेशी दीक्षा दीक्षितपूजिता ।
साधकेशी सिद्धिदात्री साधकानन्दवर्धिनी ।।१११।।
साधकाश्रयभूता च साधकेष्टफलप्रदा ।
रजोवती राजसी च रजकी च रजस्वला ।।११२।।
पुष्पप्रिया पुष्पवती स्वयम्भूपुष्पमालिका ।

स्वयम्भूपुष्पगन्धाढ्या पुलस्त्यसुतघातिनी ॥११३॥
पात्रहस्ता सुता पौत्री पीतास्या पीतभूषणा ।
पिङ्गानना पिङ्गकेशी पिङ्गला पिङ्गलेश्वरी ॥११४॥
मङ्गला मङ्गलेशानी सर्वमङ्गलमङ्गला ।
पुरूरवेश्वरी पाशधरा चापधराऽधुरा ॥११५॥
पुण्यधात्री पुण्यमयी पुण्यलोकनिवासिनी ।
होतृसेव्या हकारस्था सकारस्था सुखावती ॥११६॥
सखी शोभावती सत्या सत्याचारपरायणा ।
सतीशानकलेशानी वामदेवकलाश्रिता ॥११७॥
सद्योजातकलादेवी शिवाऽघोरकलाकृतिः ।
शर्वरी क्षीरसदृशी क्षीरनीरविवेकिनी(८००)॥११८॥

त्रयोदशी, वेदगर्भा, वाद्या, त्रयोदशाक्षरी, चतुर्दशाक्षरीं विद्या, विद्या पञ्चदशाक्षरी, षोड़शी, सर्वविद्येशी, महाश्रीषोड़शाक्षरी, महाश्रीषोडशीविद्या, चिन्तामणिमनुप्रिया, द्वाविंशत्यक्षरी, श्यामा, महाकालकुटुम्बिनी, वज्रतारा, कालतारा, नारी, तारोग्रतारिणी, कामतारा, शब्दतारा, स्पर्शतारा, रसाश्रया, रूपतारा, गन्धतारा, महानीलसरस्वती, कालज्वाला, वह्निज्वाला, ब्रह्मज्वाला, जटाकुला, विष्णुज्वाला, जिष्णुशिखा, भद्रज्वाला, करालिनी, विकरालमुखी देवी, कराली, भूतिभूषणा, चिताशयासना, चिन्ता, चिता-मण्डलमध्यगा, भूतभैरवसेव्या, भूतभैरवपालिनी, बन्धकी, बद्धसम्मुद्रा, भवबन्धविनाशिनी, भवानी, देवदेवेशी, दीक्षा, दीक्षितपूजिता, साधकेशी, सिद्धिदात्री, साधकानन्दवर्धिनी, साधकाश्रयभूता, साधकेष्टफलप्रदा, रजोवती, राजसी, रजकी, रजस्वला, पुष्पप्रिया, पुष्पवती, स्वयम्भूपुष्पमालिका, स्वयम्भूपुष्पगन्धाढ्या, पुलस्त्यसुतघातिनी, पात्रहस्ता, सुता, पौत्री, पीतास्या, पीतभूषणा, पिङ्गानना, पिङ्गकेशी, पिङ्गला, पिङ्गलेश्वरी, मङ्गला, मङ्गलेशानी, सर्वमङ्गलमङ्गला, पुरूरवेश्वरी, पाशधरा, चापधरा, अधुरा, पुण्यधात्री पुण्यमयी, पुण्यलोकनिवाशिनी, होतृसेव्या, हकारस्था, सकारस्था, सुखावती, सखी, शोभावती, सत्या, सत्याचारपरायणा, सतीशानकलेशानी, वामदेवकलाश्रिता, सद्योजातकला-देवी, शिवा, अघोरकलाकृति, शर्वरी, क्षीरसदृशी, क्षीरनीरदिवेकिनी।।१०४-११८।।

वितर्कनिलया नित्या नित्यक्लिन्ना पराम्बिका ।
पुरारिदयिता दीर्घा दीर्घनासाऽल्पभाषिणी ॥११९॥
काशिका कौशिकी कोश्या कोशदा रूपवर्धिनी ।
तुष्टिः पुष्टिः प्रजाप्रीता प्राजिका पूजकप्रिया ॥१२०॥

प्रजावती गर्भवती गर्भपोषणपोषिता ।
शुक्लवासाः शुक्लरूपा शुचिवासा जयावहा ॥१२१॥
जानकी जन्यजनका जनतोषणतत्परा ।
वादप्रिया वाद्यरता वादिता वादसुन्दरी ॥१२२॥
वाक्स्तम्भिनी कीरवाणी धीराधीरा धुरन्धरा ।
स्तनन्धयी सामिधेनी निरानन्दा निरालया ॥१२३॥
समस्तसुखदा सारा वारांनिधिवरप्रदा ।
वालुकी वीरपानेष्टा वसुधात्री वसुप्रिया ॥१२४॥
शुक्रानन्दा शुक्ररसा शुक्रपूज्या शुकप्रिया ।
शुकी च शुकहस्ता च समस्तनरकान्तका ॥१२५॥
समस्ततत्त्वनिलया भगरूपा भगेश्वरी ।
भगविम्बा भगाह्वा भगलिङ्गस्वरूपिणी ॥१२६॥
भगलिङ्गेश्वरी श्रीदा भगलिङ्गामृतस्रवा ।
क्षीराशना क्षीररुचिराज्यपानपरायणा ॥१२७॥
मधुपानपरा प्रौढा पीवरांसा परम्परा ।
पिलम्पिला पटोलेशा पाटलारुणलोचना ॥१२८॥
क्षीराम्बुधिप्रिया क्षीबा सरला सरलायुधा ।
संग्रामा सुनया स्रस्ता संसृतिः सनकेश्वरी ॥१२९॥
कन्या कनकरेखा च कान्यकुब्जनिवासिनी ।
काञ्चनाभतनुः काष्ठा कुष्ठरोगविनाशिनी ॥१३०॥
कठोरमूर्धजा कुन्ती कुन्तायुधधरा धृतिः ।
चर्माम्बरा क्रूरनखा चकोराक्षी चतुर्भुजा ॥१३१॥
चतुर्वेदप्रिया चाट्वी चतुर्वर्गफलप्रदा ।
ब्रह्माण्डचारिणी स्फूर्तिर्ब्रह्माणी ब्रह्मसम्मता ॥१३२॥
सत्कारकारिणी सूतिः सूतिका लतिकालता ।

वितर्कनिलया, नित्यानित्यक्लिन्ना, पराम्बिका, पुरारिदयिता, दीर्घा, दीर्घनासा, अल्पभाषिणी, काशिका, कौशिकी, कोश्या कोशदा, रूपवर्धिनी, तुष्टि, पुष्टि, प्रजाप्रीता, प्राजिका, पूजकप्रिया; प्रजावती, गर्भवती, गर्भपोषणपोषिता, शुक्लवासा, शुक्लरूपा, शुचिवासा, जयावहा, जानकी, जन्यजनका, जनतोषणतत्परा, वादप्रिया वाद्यरता, वादिता, वादसुन्दरी, वाक्स्तम्भिनी, कीरवाणी, धीराधीरा, धुरन्धरा, स्तनन्धयी, सामिधेनी, निरानन्दा, निरालया,

समस्तसुखदा, सारा, वारान्निधिवरप्रदा, वालुकी, वीरपानेष्टा, वसुधात्री, वसुप्रिया, शुक्रानन्दा, शुक्ररसा, शुक्रपूज्या, शुकप्रिया, शुकी, शुकहस्ता, समस्तनरकान्तका, समस्ततत्त्वनिलया, भगरूपा भगेश्वरी, भगबिम्बा, भगाह्वया, भगलिङ्गस्वरूपिणी, भगलिङ्गेश्वरी, श्रीदा, भगलिङ्गामृतस्रवा, क्षीराशना, क्षीररुचिरा, आज्यपानपरायणा, मधुपानपराप्रौढ़ा, पीवरांसा, परम्परा, पिलम्पिला, पटोलेशा, पाटलारुणलोचना, क्षीराम्बुधिप्रिया, क्षीबा, सरला, सरलायुधा, संग्रामा, सुनया, स्रस्ता, संसृति, सनकेश्वरी, कन्या-कनकरेखा, कान्यकुब्जनिवासिनी, काञ्चनाभतनु, काष्ठा, कुष्ठरोगविनाशिनी, कठोरमूर्धजा, कुन्ती, कुन्तायुधधरा, धृति, चर्माम्बरा, क्रूरनखा, चकोराक्षी, चतुर्भुजा, चतुर्वेदप्रिया, चाट्वी, चतुर्वर्गफलप्रदा, ब्रह्माण्डचारिणी, स्फूर्ति, ब्रह्माणी ब्रह्मसम्मता, सत्कारकारिणी, सूति, सूतिका, लतिका, लता।।११९-१३२।।

कल्पवल्ली कृषाङ्गी च कल्पपादपवासिनी ॥१३३॥
कल्पशाखा महाविद्या विद्याराज्ञी सुखाश्रया ।
भूतिराज्ञी विश्वराज्ञी लोकराज्ञी शिवाश्रया ॥१३४॥
ब्रह्मराज्ञी विष्णुराज्ञी रुद्रराज्ञी जटाश्रया ।
नागराज्ञी वंशराज्ञी वीरराज्ञी रजःप्रिया ॥१३५॥
सत्त्वराज्ञी तमोराज्ञी गुणराज्ञी चलाचला ।
वसुराज्ञी सत्यराज्ञी तपोराज्ञी जपप्रिया ॥१३६॥
मन्त्रराज्ञी वेदराज्ञी तन्त्रराज्ञी श्रुतिप्रिया ।
वेदराज्ञी मन्त्रिराज्ञी दैत्यराज्ञी दयाकरा ॥१३७॥
कालराज्ञी प्रजाराज्ञी तेजोराज्ञी हराश्रया ।
पृथ्वीराज्ञी पयोराज्ञी वायुराज्ञी मदालसा ॥१३८॥
सुधाराज्ञी सुराराज्ञी भीमराज्ञी भयोज्झिता ।
तथ्यराज्ञी जयाराज्ञी महाराज्ञी कुलाकृतिः ॥१३९॥
वामराज्ञी चीनराज्ञी हरिराज्ञी हलीश्वरी ।
पराराज्ञी यक्षराज्ञी भूतराज्ञी शिवासना ॥१४०॥
वटुराज्ञी प्रेतराज्ञी शेषराज्ञी शमप्रदा ।
आकाशराज्ञी राजेशी राजराज्ञी रतिप्रिया ॥१४१॥
पातालराज्ञी भूराज्ञी प्रेतराज्ञी विषापहा ।
सिन्द्धराज्ञी विभाराज्ञी तेजोराज्ञी विभामयी ॥१४२॥
भास्वद्राज्ञी चन्द्रराज्ञी ताराराज्ञी स्ववासिनी ।
ग्रहराज्ञी लताराज्ञी वृक्षराज्ञी मतिप्रदा ॥१४३॥

धीरराज्ञी मनोराज्ञी मनुराज्ञी च काश्यपी ।
मुनिराज्ञी रत्नराज्ञी युगराज्ञी मणिप्रमा ॥१४४॥
सिन्धुराज्ञीं नदीराज्ञी नदराज्ञी दरीस्थिता ।
बिन्दुराज्ञी नादराज्ञी आत्मराज्ञी च सद्गतिः ॥१४५॥
पुत्रराज्ञी ध्यानराज्ञी लयराज्ञी सदीश्वरी ।
ईशानराज्ञी राजेशी स्वाहाराज्ञी महत्तरा ॥१४६॥
वह्निराज्ञी योगिराज्ञी यज्ञराज्ञी चिदाकृतिः ।
जगद्राज्ञी तत्त्वराज्ञी वाग्राज्ञी विश्वरूपिणी ॥१४७॥
पञ्चदशाक्षरीराज्ञी ॐ ह्रींभूतेश्वरेश्वरी ।

कल्पवल्ली कृषाङ्गी, कल्पपादपवासिनी, कल्पशाखा, महाविद्या, विद्याराज्ञी सुखाश्रया, भूतिराज्ञी, विश्वराज्ञी, लोकराज्ञी शिवाश्रया, ब्रह्मराज्ञी, विष्णुराज्ञी, भद्रराज्ञी जटाश्रया, नाजराज्ञी, वंशराज्ञी, वीरराज्ञी रज:प्रिया, सत्त्वराज्ञी, तमोराज्ञी, गुणराज्ञी चलाचला, वसुराज्ञी, सत्यराज्ञी, तपोराज्ञी जपप्रिया, मन्त्रराज्ञी, वेदराज्ञी, तन्त्रराज्ञी श्रुतिप्रिया, वेदराज्ञी, मन्त्रिराज्ञी, दैत्यराज्ञी दयाकरा, कालराज्ञी, प्रजाराज्ञी, तेजोराज्ञी हराश्रया, पृथ्वीराज्ञी, पयोराज्ञी, वायुराज्ञी मदालसा, सुधाराज्ञी, सुराराज्ञी, भीमराज्ञी भयोज्झिता, तथ्यराज्ञी, जयाराज्ञी, महाराज्ञी कुलाकृति, वामराज्ञी, चीनराज्ञी, हरिराज्ञी हलीश्वरी, पराराज्ञी, यक्षराज्ञी, भूतराज्ञी शिवासना, वटुराज्ञी, प्रेतराज्ञी, शेषराज्ञी शमप्रदा, आकाशराज्ञी, राजेशी, राज्यराज्ञी रतिप्रिया, पातालराज्ञी, भूराज्ञी, प्रेतराज्ञी, विषापहा, सिद्धराज्ञी, विभाराज्ञी, तेजोराज्ञी, विभामयी, भास्वद् राज्ञी, चन्द्रराज्ञी, ताराराज्ञी, खवासिनी, ग्रहराज्ञी, लताराज्ञी, वृक्षराज्ञी, मतिप्रदा, धीरराज्ञी, मनोराज्ञी, मनुराज्ञी, काश्यपी, मुनिराज्ञी, रत्नराज्ञी, युगराज्ञी, मणिप्रभा, सिन्धुराज्ञी, नदीराज्ञी, नदराज्ञी, दरीस्थिता, विन्दुराज्ञी, नादराज्ञी, आत्मराज्ञी, सद्गति, पुत्रराज्ञी, ध्यानराज्ञी, लयराज्ञी, सदीश्वरी, ईशानराज्ञी, राजेशी, स्वाहाराज्ञी, महत्तरा, वह्निराज्ञी, योगराज्ञी, यज्ञराज्ञी, चिदाकृति, जद्रराज्ञी, तत्त्वराज्ञी, वाग्राज्ञी, विश्वरूपिणी, पञ्चदशाक्षरी राज्ञी, ॐ ह्रीं भूतेश्वरेश्वरी।।१३३-१४७।।

फलश्रुतिः

इतीदं मन्त्रसर्वस्वं राज्ञीनामसहस्रकम् ॥१४८॥
पञ्चदशाक्षरीतत्त्वं मन्त्रसारं मनुप्रियम् ।
सर्वतत्त्वमयं पुण्यं महापातकनाशनम् ॥१४९॥
सर्वसिद्धिप्रदं लोके सर्वरोगनिवर्हणम् ।
सर्वोत्पातप्रशमनं ग्रहशान्तिकरं परम् ॥१५०॥

सर्वदेवप्रियं प्राज्यं सर्वशत्रुभयापहम्।
सर्वदु:खौघशमनं सर्वशोकविनाशनम् ॥१५१॥

फलश्रुति—यह राज्ञी सहस्रनाम मन्त्रसर्वस्व है। यह पञ्चदशाक्षरी मन्त्र का तत्त्वस्वरूप हैं, समस्त मन्त्रों के सारस्वरूप है और अत्यन्त प्रिय मन्त्र है। यह सभी तत्त्वों से युक्त हैं, पुनीत हैं एवं महापापों का विनाशक हैं। संसार में सभी सिद्धियों का दाता और सभी रोगों का विनाशक हैं। सभी उत्पातों का शमन करने वाला एवं ग्रहशान्ति के लिये भी अतीव श्रेष्ठ हैं। यह सभी देवताओं को अत्यन्त प्रिय एवं पूज्य हैं। सभी शत्रुओं के लिये भयदायक हैं। समस्त दु:खों के समूह का विनाशक है एवं सभी शोकों का भी विनाशक हैं।।१४८-१५१।।

पठेद्वा पाठयेन्नाम्नां सहस्रं शक्तिसन्निधौ।
दूरादेव पलायन्ते विपद: शत्रुभीतय: ॥१५२॥
राक्षसा भूतवेताला: पन्नगा हरिणद्विष:।
पठनाद्विद्रवन्त्याशु महाकालादिव प्रजा: ॥१५३॥
श्रवणात्पातकं नश्येच्छ्रावयेद्य: स भाग्यवान्।
नानाविधानि भोगानि सम्भुज्य पृथिवीतले।
गमिष्यति परां भूमिं त्वरितं नात्र संशय: ॥१५४॥

शक्ति की सन्निधि में इस सहस्रनाम का स्वयं पाठ करे या पाठ कराये तो सभी विपत्तियाँ और शत्रुओं का भय दूर से ही भाग जाता है। राक्षस, भूत, वेताल, सर्प, हरिणद्वेषी इसके पाठ से तत्काल उसी प्रकार दूर भाग जाते है, जैसे कि उन्हें महाकाल का दर्शन हो गया हो। इसके पाठ को सुनने से पापों का नाश होता है। जो इसे दूसरों को सुनाता हैं, वह भाग्यवान पृथ्वी पर नाना प्रकार के भोगों को भोगकर अन्त में परादेवी के लोक में जाता हैं, इसमें कोई संशय नहीं है।।१५२-१५४।।

अश्वमेधसहस्रस्य वाजिपेयस्य कोटय:।
गङ्गास्नानसहस्रस्य चान्द्रायणायुतस्य च ॥१५५॥
तप्तकृच्छ्रैकलक्षस्य राजसूयस्य कोटय:।
सहस्रनामपाठस्य कलां नार्घन्ति षोडशीम् ॥१५६॥
सर्वसिद्धीश्वरं साध्यं राज्ञीनामसहस्रकम्।
मन्त्रगर्भं पठेद्यस्तु राज्यकामो महेश्वरि ॥१५७॥
वर्षमेकं शतावर्तं महाचीनक्रमाकुल:।
शक्तिपूजापरो रात्रौ स लभेद्राज्यमीश्वरि ॥१५८॥

हजार अश्वमेध यज्ञ, करोड़ वाजपेय यज्ञ, हजार गङ्गास्नान, दश हजार चान्द्रायण, एक लाख तप्तकृच्छ्र व्रत और करोड़ राजसूय यज्ञ के फल भी इस सहस्रनामपाठ की सोलहवीं कला के बराबर नहीं हैं। राज्ञी का यह सहस्रनाम सभी सिद्धिश्वरों का साध्य है। हे महेश्वरि! जो राज्य पाने की इच्छा से शक्ति-पूजापरायण महाचीनाचारी एक वर्ष तक रात में सौ पाठ करता है, उसे राज्य प्राप्त हो जाता है।।१५५-१५८।।

पुत्रकामी पठेत् सायं चिताभस्मानुलेपनः।
दिगम्बरो मुक्तकेशः शतावर्तं महेश्वरि ॥१५९॥
श्मशाने तु लभेत् पुत्रं साक्षाद्वैश्रवणोपमम्।
परदारार्चनरतो भगबिम्बं स्मरन् सुधीः ॥१६०॥
पठेन्नामसहस्रं तु वसुकामी लभेद् धनम्।

पुत्र की कामना से शरीर में चिताभस्म लगाकर नग्न होकर केश खोल कर सायंकाल में श्मशान में जो इसका सौ पाठ करता है, उसे साक्षात् कुबेर के समान धनी पुत्र प्राप्त होता है। परायी स्त्री के अर्चन में रत जो साधक भगबिम्ब का स्मरण करते हुए इस सहस्रनाम का पाठ करता है, उसे अपनी अभीप्सिता को प्राप्त करता है। धन की इच्छा से यदि इस सहस्रनाम का कोई पाठ करता है तो उसे धन प्राप्त होता है।।१५९-१६०।।

रवौ वारत्रयं देवि पठेन्नामसहस्रकम् ॥१६१॥
मृदुविष्टरनिर्विष्टः क्षीरपानपरायणः।
स्वप्ने सिंहासनां राज्ञीं वरदां भुवि पश्यति ॥१६२॥
क्षीरचर्वणसन्तृप्तो वीरपानरसाकुलः।
यः पठेत् परया भक्त्या राज्ञीनामसहस्रकम् ॥१६३॥
स सद्यो मुच्यते घोरान्महापातकजाद्भयात्।

जो साधक रविवार में सहस्रनाम का पाठ तीन बार कोमल आसन पर बैठकर दूध पीते हुये करता है तो उसे स्वप्न में सिंहासनारूढ़ राज्ञी वरदान देती हुई दिखायी देती है। दूध और मुद्रा चवर्ण से सन्तुष्ट वीर रसपान से मत्त जो साधक परम भक्तिपूर्वक इस राज्ञी-सहस्रनाम का पाठ करता है, वह घोर महापाप के कारण उत्पन्न भय से भी मुक्त हो जाता है।।१६१-१६३।।

यः पठेत् साधको भक्त्या शक्तिवक्षःकृतासनः ॥१६४॥
शुक्रोत्तरणकाले तु तस्य हस्तेऽष्टसिद्धयः।
यः पठेन्निशि चक्राग्रे परस्त्रीध्यानतत्परः ॥१६५॥

सुरासवरसानन्दी स लभेत् संयुगे जयम्।
इदं नामसहस्रं तु सर्वमन्त्रमयं शिवे ॥१६६॥

वीर्यपात के समय शक्ति की छाती को आसन बनाकर जो साधक इस सहस्रनाम का पाठ करता है, उसके हाथ में सभी सिद्धियाँ आ जाती हैं। सुरा-आसवपान से आनन्दित एवं परस्त्री के ध्यान में तत्पर जो साधक रात में इसका पाठ करता है तो उस स्त्री के साथ समागम करने में वह विजयी होता है। हे शिवे! यह सहस्रनाम सर्वमन्त्रमय है।।१६४-१६६।।

भूर्जत्वचि लिखेद्रात्रौ चक्रार्चनसमागमे।
अष्टगन्धेन पूतेन वेष्टयेत् स्वर्णपत्रके ॥१६७॥
धारयेत् कण्ठदेशे तु सर्वसिद्धिः प्रजायते।
यो धारयेन्महारक्षां सर्वदेवातिदुर्लभाम् ॥१६८॥
रणे राजकुलं द्यूते चौररोगाद्युपद्रवे।
स प्राप्नोति जयं सद्यः साधको वीरनायकः ॥१६९॥

चक्रार्चन के समय भोजपत्र पर अष्टगन्ध से रात में इस सहस्रनाम को लिखकर सोने के ताबीज में भरकर कण्ठ में धारण करने से साधक को सभी सिद्धियाँ प्राप्त होती हैं। इसके धारणकर्ता को सभी देवताओं के लिये भी दुर्लभ महारक्षा प्राप्त होती है। वह साधक युद्ध में, राजदरबार में, जुआ में, चोर-रोगादि के उपद्रव में तत्काल विजयी होकर वीरों का नायक होता है।।१६७-१६९।।

श्रीचक्रं पूजयेद्यस्तु धारयेद्वर्म मस्तके।
पठेन्नामसहस्रं तु स्तोत्रं मन्त्रात्मकं तथा ॥१७०॥
किं किं न लभते कामं देवानामपि दुर्लभम्।
सुरापानं ततः संविच्चर्वणं मीनमांसकम् ॥१७१॥
नवकन्यासमायोगो मुद्रा वीणारवः प्रिये।
सत्सङ्गो गुरुसान्निध्यं राज्ञीश्रीचक्रमग्रतः ॥१७२॥
यस्य देवि स एव स्याद्योगी ब्रह्मविदीश्वरः।

जो साधक श्रीचक्र का पूजन करता है, मस्तक में कवच धारण करता है और मन्त्रात्मक इस सहस्रनाम का पाठ करता है, वह देवों को भी दुर्लभ क्या-क्या नहीं प्राप्त करता है? अर्थात् सब कुछ प्राप्त कर सकता है। हे प्रिये! सुरापान, संवित् चर्वण, मीन-मांस- भक्षण, नवकन्या का समायोग, मुद्रा, वीणावादन के साथ गुरु की सन्निधि में

सत्सङ्ग राज्ञी श्रीचक्र के आगे जिसके द्वारा किया जाता है, वह साधक योगी और ब्रह्मज्ञानी होता है।।१७०-१७२।।

इदं रहस्यं परमं भक्त्या तव मयोदितम् ॥१७३॥
अप्रकाश्यमदातव्यं न देयं यस्य कस्यचित् ।
अन्यशिष्याय दुष्टाय दुर्जनाय दुरात्मने ॥१७४॥
गुरुभक्तिविहीनाय सुरास्त्रीनिन्दकाय च ।
नास्तिकाय कुशीलाय न देयं तत्त्वदर्शिभिः ॥१७५॥

हे पार्वति! तुम्हारी भक्ति के कारण ही इस परम रहस्य का उद्घाटन मेरे द्वारा किया गया है। इसे न तो किसी को बतलाना चाहिये और न ही किसी को देना चाहिये। तत्त्वदर्शियों द्वारा दूसरे के शिष्य, दुष्ट, दुर्जन, दुरात्मा, गुरुभक्ति-हीन, सुरा-परस्त्री-निन्दक, नास्तिक एवं कुशील को इसे नहीं देना चाहिये।।१७३-१७५।।

देयं शिष्याय शान्ताय भक्तायाद्वैतवादिने ।
दीक्षिताय कुलीनाय राज्ञीभक्तिरताय च ।
दत्त्वा भोगापवर्गत्वं लभेत् साधकसत्तमः ॥१७६॥
इति नामसहस्रं तु राज्याः शिवमुखोदितम् ।
अत्यन्तदुर्लभं गोप्यं गोपनीयं स्वयोनिवत् ॥१७७॥

इति श्रीरुद्रयामले तन्त्रे दशविद्यारहस्ये
श्रीमहाराज्ञीसहस्रनामकम्॥४॥

शान्त, भक्त, अद्वैतवादी, कुलीन, दीक्षित, राज्ञीभक्ति में लीन अपने शिष्य को देने से साधकसत्तम भोग और अपवर्ग दोनों को प्राप्त करता है। यह शिव के मुख से निर्गत राज्ञी का सहस्रनाम अत्यन्त दुर्लभ, गोप्य और अपनी योनि के समान गोपनीय है।।१७६-१७७।।

इस प्रकार रुद्रयामल तन्त्रोक्त श्रीदेवीरहस्य की भाषा टीका में
श्रीमहाराज्ञीसहस्रनाम पूर्ण हुआ।

◆

अथ श्रीमहाराज्ञीस्तोत्रम्

स्तोत्रमाहात्म्यम्

श्रीभैरव उवाच

अधुना कथयिष्यामि स्तोत्रराजं परात्मकम्।
मूलमन्त्रमयं दिव्यं तत्त्वभूतं मनोहरम् ॥१॥
राज्ञीप्रियं पापहरं लक्षपूजाफलप्रदम्।
जपलक्षसमं स्तोत्रं ध्यानकोटिसमं प्रिये ॥२॥

माहात्म्य—श्री भैरव ने कहा कि अब मैं मूल मन्त्रमय, दिव्य, तत्त्वभूत, मनोहर परात्मक स्तोत्रराज का वर्णन करता हूँ। यह स्तोत्र राज्ञी को बहुत ही प्रिय, पापहर, लक्षपूजा-फलप्रद एवं एक लाख जप और करोड़ ध्यान के बराबर है।।१-२।।

राज्ञीस्तोत्रस्य देवेशि ब्रह्मा ऋषिरुदाहृतः।
गायत्रं छन्द इत्युक्तं श्रीराज्ञी देवतेरिता ॥३॥
माया बीजं परा शक्तिः कामः कीलकमीश्वरि।
भोगापवर्गसिद्ध्यर्थे विनियोगः प्रकीर्तितः ॥४॥

हे देवेशि! इस राज्ञीस्तोत्र के ऋषि ब्रह्मा कहे गये हैं, गायत्री छन्द एवं श्रीराज्ञी देवता कहे गये हैं। हे ईश्वरि! इसका बीज ह्रीं, शक्ति सौः, कीलक क्लीं एवं भोग तथा अपवर्ग की सिद्धि हेतु विनियोग कहा गया है।।३-४।।

अस्य श्रीमहाराज्ञीस्तवराजमन्त्रस्य ब्रह्मा ऋषिः, गायत्रं छन्दः, श्रीभूतेश्वरीमहाराज्ञी देवता, ह्रीं बीजं, सौः शक्तिः, क्लीं कीलकं, भोगापवर्गसिद्धये विनियोगः। ब्रह्मऋषये नमः शिरसि, गायत्रं छन्दसे नमो मुखे, श्रीराज्ञीभूतेश्वरीदेवतायै नमो हृदि, ह्रींबीजाय नमो नाभौ, सौः शक्तये नमो गुह्ये, क्लीं कीलकाय नमः पादयोः विनियोगाय नमः सर्वाङ्गेषु।

विनियोग—अस्य श्रीमहाराज्ञीस्तवराजमन्त्रस्य ब्रह्मा ऋषिः, गायत्रं छन्दः, श्रीभूतेश्वरी महाराज्ञी देवता, ह्रीं बीजं, सौः शक्तिः, क्लीं कीलकं, भोगापवर्गसिद्धये विनियोगः।

ऋष्यादिन्यास—ब्रह्मऋषये नमः शिरसि। गायत्रं छन्दसे नमो मुखे। श्रीराज्ञी देवतायै नमो हृदि। ह्रीं बीजाय नमो नाभौ। सौः शक्तये नमो गुह्ये। क्लीं कीलकाय नमो पादयोः। विनियोगाय नमः सर्वांगेषु।

ध्यानम्

उद्यद्दिवाकरसहस्त्ररुचिं त्रिनेत्रां सिंहासनोपरि गतामुरगोपवीताम् ।
खड्गाम्बुजाढ्यकलशामृतपात्रहस्तां राज्ञीं भजामि विकसद्वदनारबिन्दाम् ॥१॥

ध्यान—हजार उदीयमान सूर्य के समान आभा, तीन नेत्र, सिंहासन पर बैठी, सर्पो का यज्ञोपवीत, हाथों में खड्ग, पद्म, कलश और अमृतपात्र से युक्त राज्ञी के विकसित मुखकमल का मैं ध्यान करता हूँ।।१।।

स्तोत्रम्

तारमिन्दुकलिकावतंसितं वेदसागरमणिं मनोहरम् ।
यो जपेदुषसि रत्नमालया राज्यमाशु लभते स साधकः ॥२॥
भूतिमिन्दुनवबिन्दु(म्ब)मण्डितां नादबिन्दुललितां जपेत्तु यः ।
वारमेकमुरुवारणस्थितो जेष्यति स्मयमयानरीन् रणे ॥३॥

स्तोत्र—नाद विन्दु युक्त मनोहर वेदसागरमणि के समान ॐ का जो जप रत्नमाला से करता है, वह साधक अल्प काल में ही राज्य प्राप्त करता है। चन्द्रबिन्दुयुक्त नादबिन्दु से ललित 'ह्रीं' का जप सुर-चारणों के मध्य में स्थित होकर जो साधक एक बार भी करता है, वह शिव के समान शत्रु को भी युद्ध में जीत लेता है।।२-३।।

रमां जपेद्यो भुवनेशि मन्त्री तवन्मन्त्रमध्ये मदनोपतप्तः ।
रम्भां समालिङ्ग्य विमानचारी लीलां भजेन्नन्दनवाटिकायाम् ॥४॥
वह्निबीजमणिमादिसिद्धिदं बिन्दुबिम्बशशिखण्डमण्डितम् ।
यो जपेन्निशि धनाभिलाषवान् स क्षणाद्भवति वित्तदोपमः ॥५॥

हे भुवनेशि! जो कामव्यथित साधक तुम्हारे मन्त्र के मध्य में स्थित 'श्रीं' का जप करता है, उसका आलिङ्गन रम्भा करती है और वह साधक उसके साथ विमान में बैठकर नन्दनवन में लीला-विहार करता है। अणिमादि सिद्धि-प्रदायक चन्द्रबिन्दु से युक्त वह्निबीज 'रां' का जप जो धनाभिलाषी रात में करता है, वह क्षणमात्र में ही कुबेर के समान धनी हो जाता है।।४-५।।

कामराजममराभिवन्दितो यो जपेन्निधुवनेऽक्षमालया ।
तस्य यान्ति वशतां सुराङ्गनाः किं पुनर्जगति भूभृदङ्गनाः ॥६॥
शक्तिं भक्त्या यो जपेच्छक्तिपूजा काले कालीपादपद्मार्पितान्तः ।
नक्तं तस्य स्मेरवक्त्रा घृताची वेश्या वश्या स्वर्गता वा शची च ॥७॥

देवों द्वारा अभिवन्दित 'क्लीं' का जप जो निधुवन में अक्षमाला से करता है, उसके

वश में सुरबालाएँ होती हैं; फिर संसार की सुन्दरियों के बारे में तो कहना ही क्या है। पूजा के समय काली के पदकमलों में अपने अन्तःकरण को अर्पित करके रात में भक्तिपूर्वक जो 'सौः' का जप करता है, उसके वश में मुस्कुराती घृताची, वेश्या या स्वर्ग में रहने वाली शची भी हो सकती हैं।।६-७।।

भगवत्यै तथा राज्ञ्यै नाममन्त्रमिति स्मरेत्।
यो देवि तस्य वश्याः स्युर्भैरवस्याष्टसिद्धयः ॥८॥
मायार्णमन्ते यदि साधकेन्द्रो जपेन्महेशानि शवालयस्थः।
तत्रैव देवीं परमार्थराज्ञीं पश्येत् स सद्यो वरसिद्धिदात्रीम् ॥९॥

जो 'भगवत्यै राज्ञ्यै' इस नाममन्त्र का स्मरण करता है, उसके वश में भैरव और अष्ट सिद्धियाँ होती हैं। मन्त्रान्त में स्थित 'ह्रीं' का जप जो साधकश्रेष्ठ श्मशान में करता है, वह वहीं पर वर एवं सिद्धिदात्री परमार्थ राज्ञी का दर्शन पाता है।।८-९।।

ठद्वयं यदि जपेन्निशाक्षये क्षीरभुक् सुतटिनीतटस्थितः।
जिष्णुविष्णुकमलासनेश्वरा यान्ति देवि वशतां तदा क्षणात् ॥१०॥
भूगेहवृत्तत्रयनागपत्रषडश्रयोन्यश्रकबिन्दुबिम्बे।
निषेदुषीं राजकुलाधिदेवीं राज्ञीं भजे राजकुलावतंसाम् ॥११॥

रात के अन्त में दूध पीकर गङ्गा के तट पर स्थित होकर जो 'स्वाहा' का जप करता है, उसके वश में इन्द्र, विष्णु और कमलासन ब्रह्मा भी हो जाते हैं। भूपुर, वृत्तत्रय, अष्टदल, षट्कोण, त्रिकोण, विन्दु से युक्त श्रीचक्र में स्थित राजकुलाधिदेवी राज्ञी का जो भजन करता है, वह राजाओं में श्रेष्ठतम होता हैं।।१०-११।।

देवि श्रीभूतधात्रि प्रवरगुणमये निष्कले निर्गुणे मे
माये मातः शरण्ये गिरिवरतनये चिन्मये तत्त्वरूपे।
दुर्गे चण्डि प्रमत्ते त्रिपुरविजयिनि स्मेरवक्त्रे वरेण्ये
कारुण्याढ्ये प्रशस्ते सुरदितिजनुते राज्ञि त्वं वै प्रसीद ॥१२॥

हे देवि! श्रीभूतधात्री, प्रवरगुणमये, निष्कले, निर्गुणे, माये, माते, गिरिराजसुते, चिन्मयतत्त्वरूपे! मैं तुम्हारी शरण में हूँ। दुर्गे, चण्डि, प्रमत्ते, त्रिपुरविजयिनी, स्मेरवक्त्रे, वरेण्ये, कारुण्याढ्ये, प्रशस्ते, देव-दैत्य-नमस्कृते राज्ञि! तुम मुझपर प्रसन्न हो।।१२।।

फलश्रुतिः

इति स्तोत्रं मन्त्रस्फुरणकरुणानन्दनिलयं
पठेद्भक्त्या प्रातस्तव गिरिसुते यो निरलसम्।

भवेत् सद्यो भूमौ नृपमुकुटनीराजितपदो
मृतो मुक्तिं मर्त्यस्तव भवनमाप्नोति वरदे ॥१३॥
इति राज्ञ्याः परं तत्त्वं पञ्चाङ्गमखिलं शिवे।
सर्वस्वं च रहस्यं मे सर्वसारस्वतप्रदम् ॥१४॥

फलश्रुति—हे गिरिवरनन्दिनि! इस मन्त्रगर्भ, करुणानन्दधाम स्तोत्र का पाठ जो प्रात:काल में निरालस होकर भक्ति से करता है, वह थोड़े ही दिनों में पृथ्वी पर स्थित समस्त राजाओं में श्रेष्ठ होता है। हे वरदे! वह मरने पर मुक्त होकर आपके लोक में वास करता है। हे शिवे! समस्त पञ्चाङ्गों में राज्ञी का यह पञ्चाङ्ग सर्वश्रेष्ठ है; साथ ही यह मेरा भी सर्वस्व है, रहस्यपूर्ण है एवं समस्त बुद्धियों का प्रदाता है।।१३-१४।।

आनन्दवर्धनं गुह्यं परमैश्वर्यकारणम्।
भोगापवर्गदं पुण्यं दारिद्र्यभयनाशनम् ॥१५॥
राज्यप्रदं भक्तिकरं सर्वशत्रुनिवर्हणम्।
पञ्चाङ्गमखिलं देव्या न वक्तव्यं दुरात्मने।
तव भक्त्या मयाख्यातं गोपनीयं प्रयत्नतः ॥१६॥

यह परम आनन्दवर्धक है, गुह्य और समस्त ऐश्वर्य का साधन है। भोग और अपवर्ग को देने वाला यह पञ्चाङ्ग पुण्यप्रद एवं दारिद्र्य तथा भय का विनाशक है। यह राज्यप्रद, भक्तिदायक एवं सभी शत्रुओं का विनाशक है। इस अखिल पञ्चाङ्ग को दुरात्माओं को नहीं बतलाना चाहिये। तुम्हारी भक्ति के कारण मैंने इसका वर्णन किया है; इसे यत्नपूर्वक गुप्त रखना चाहिये।।१५-१६।।

श्रीदेव्युवाच

भगवन् करुणाम्भोधे क्रीतास्मि भवताधुना।
दास्यस्मि तव भक्तास्मि कृतार्थास्मि जगत्प्रभो ॥१७॥
पञ्चाङ्गकथनेनास्या राज्ञ्या देव्या महेश्वर।
भवत्प्रसादाद् देव्यस्मि किमन्यत् कथयामि ते ॥१८॥

श्री देवी ने कहा कि हे भगवन्! करुणासागर! मैं आज से आपकी खरीदी हुई दासी हो गयी। हे जगत् प्रभो! मैं आपकी दासी हूँ, भक्त हूँ और कृतार्थ हूँ। हे महेश्वर! राज्ञी-देवी के इस पञ्चाङ्ग के कथन से आपकी कृपा से ही मैं देवी हूँ और अधिक क्या कहूँ।।१७-१८।।

श्रीभैरव उवाच

इदं रहस्यं पञ्चाङ्गं राज्ञीदेव्या मयेरितम्।
कौलानां सिद्धिदं वामाद्गोपनीयं स्वयोनिवत् ॥१९॥

इति श्रीरुद्रयामले तन्त्रे दशविद्यारहस्ये
श्रीमहाराज्ञीस्तोत्रम्॥५॥

श्री भैरव ने कहा कि राज्ञी देवी के रहस्यरूप इस पञ्चाङ्ग का वर्णन मेरे द्वारा किया गया। यह कौलिकों के लिये सिद्धि-प्रदायक है। वामाचारियों से इसे अपनी योनि के समान गुप्त रखना चाहिये।।१९।।

इस प्रकार रुद्रयामल तन्त्रोक्त श्रीदेवीरहस्य की भाषा टीका में
श्रीमहाराज्ञीस्तोत्र पूर्ण हुआ।

●

समाप्तमिदं श्रीमहाराज्ञीपञ्चाङ्गम्

अथ बालात्रिपुरापञ्चाङ्गम्

श्रीबालापटलम्

पञ्चाङ्गप्रस्तावः

कैलासशिखरासीनं भगवन्तमुमापतिम्।
चन्द्रार्धमुकुटं देवं सोमसूर्याग्निलोचनम्॥१॥
गजचर्मपरीधानं विरूपाक्षं सुरार्चितम्।
गणगन्धर्वयक्षेन्द्रदेवासुरनमस्कृतम्॥२॥
विहसन्तं जपन्तं च पठन्तं च मुहुर्मुहुः।
उत्थाय प्रणता भूत्वा चेदं पृच्छति भैरवी॥३॥

पञ्चाङ्ग-प्रस्ताव—भगवान् उमापति शिखर पर विराजमान हैं। देव के मुकुट में अर्द्धचन्द्र हैं। सोम-सूर्य-अग्नि—ये तीन उनके नेत्र हैं। गजचर्म का वस्त्र है। विरूपाक्ष हैं एवं देवताओं से अर्चित हैं। गन्धर्व, यक्ष, इन्द्र एवं देव-दैत्यों से नमस्कृत हैं। वे विहँस रहे हैं। जप कर रहे हैं और बार-बार पाठ कर रहे हैं। भैरवी ने उठकर उन्हें प्रणाम किया और इस प्रकार पूछा।।१-३।।

श्रीभैरव्युवाच

भगवन् करुणाम्भोधे सर्वागमविशारद।
त्वत्प्रसादान्मया सर्वाः श्रुता विद्याः सुरेश्वर॥४॥
इदानीं श्रोतुमिच्छामि बालां त्रिपुरसुन्दरीम्।
देयास्ति यदि मे देव वद विद्यां महेश्वर॥५॥

श्री भैरवी ने कहा—भगवन्! करुणासागर! सर्वागम-विशारद! आपकी कृपा से मैंने सभी विद्याओं का श्रवण किया। हे सुरेश्वर! अब मुझे बाला त्रिपुरसुन्दरी की विद्या को सुनने की इच्छा है। यदि मुझे बतलाने के योग्य हो तो हे देव महेश्वर! उस विद्या को मुझे बतलाइये।।४-५।।

श्रीभैरव उवाच

शृणु देवि प्रवक्ष्यामि पञ्चाङ्गं साधकेष्टदम्।
पटलं पद्धतिं वर्म तथा नाम्नां सहस्रकम्॥६॥
स्तवराजं महादेवि शृणुष्वैकाग्रमानसा।
श्रीबाला परमेशानी भुक्तिमुक्तिप्रदायिनी॥७॥

राज्यं देयं शिरो देयं गृहं लक्ष्मीयुतं तथा।
सर्वं देयं महादेवि न देयमिदमुत्तमम् ॥८॥

श्री भैरव ने कहा—हे देवि! सुनो; साधकों के इष्टप्रदायक बाला-पञ्चाङ्ग का वर्णन मैं करता हूँ। इस पञ्चाङ्ग के अङ्गभूत पटल, पद्धति, कवच, सहस्रनाम और स्तोत्रराज को एकाग्र मन से सुनो। श्रीवाला परमेश्वरी का यह पञ्चाङ्ग भुक्ति और मुक्ति दोनों को देने वाला है। हे देवि! राज्य दे दे, शिर दे दे, लक्ष्मी से युक्त घर दे दे, सब कुछ दे दे, परन्तु यह उत्तम पञ्चाङ्ग किसी को भी न दे।।६-८।।

अस्या विद्यायाः सदृशी विद्या नान्या कलौ युगे।
श्रीबालात्रिपुराविद्या शीघ्रं सिद्धिप्रदा स्मृता ॥९॥
देया शिष्याय शान्ताय गुरुभक्तिरताय च।
नाभक्ताय प्रदातव्या विद्येयं परमेश्वरि ॥१०॥
मन्त्रोद्धारं तथा मन्त्रं प्रस्तारं ध्यानमेव च।
प्रयोगान् सम्प्रवक्ष्यामि देवदेव्या महेश्वरि ॥११॥

कलियुग में इस विद्या के समान दूसरी कोई विद्या नहीं है। श्रीबालात्रिपुराविद्या को शीघ्र सिद्धिप्रदा कहा जाता है। हे परमेश्वरि! इस विद्या को शान्त एवं गुरुभक्ति-निरत शिष्य को ही देना चाहिये। जो भक्त न हो, उसे यह विद्या नहीं देनी चाहिये। हे महेश्वरि! इस देवदेवी के मन्त्र उद्धार, यन्त्र प्रस्तार, ध्यान और विविध प्रयोगों का अब मैं सम्यक् रूप से वर्णन करता हूँ।।९-११।।

बालामन्त्रोद्धारः

प्रथमं शृणु देवेशि मन्त्रोद्धारं फलप्रदम्।
गोपनीयं प्रयत्नेन येन सिद्धिः प्रजायते ॥१२॥
वाग्भवं कामराजञ्च शक्तिमध्येऽभिधं न्यसेत्।
नमोऽन्ते देवि बालाया मन्त्रोऽयं चाष्टवर्णकः ॥१३॥

मन्त्रोद्धार—हे देवेशि! सर्वप्रथम फलप्रद मन्त्रोद्धार को सुनो। इस मन्त्र को यत्नपूर्वक गोपनीय रखने से ही सिद्धि मिलती है। वाग्भव = ऐं, कामराज = क्लीं, शक्ति = सौः के बाद नाम = बालायै और अन्त में नमः लगाने से यह मन्त्रस्पष्ट होता है— ऐं क्लीं सौः बालायै नमः। इस मन्त्र में आठ अक्षर होते हैं।।१२-१३।।

बालामन्त्रप्रशंसा

नापि विघ्नो न वाशौचो न वारनियमस्तथा।
स्वयं सिद्धो महादेवि मन्त्रराजः कलौ युगे ॥१४॥

इस मन्त्र की साधना में न कोई विघ्न है, न अशौच की बाधा है और न किसी विशेष

वार नियम है। हे महादेवि! कलियुग में यह सर्वश्रेष्ठ मन्त्र स्वयंसिद्ध है।।१४।।

बालामन्त्रर्ष्यादि

दक्षिणामूर्तिपङ्क्त्यौ च मुनिश्छन्दः क्रमात् स्मृतम्।
देवता त्रिपुरा बाला आद्यन्ते बीजशक्तिके ॥१५॥
क्लीं कीलकं समादिष्टं धर्मकामार्थमुक्तये।
शिरसि वदने देवि हृदये गुह्यदेशके ॥१६॥
पादयोर्नाभिकमले सर्वाङ्गे च तथा न्यसेत्।
ऋष्यादिकं महादेवि कुर्यान् न्यासविकल्पनाम् ॥१७॥
करन्यासं षडङ्गं च बीजैः कुर्यान्महेश्वरि।
अस्या ध्यानं प्रवक्ष्यामि साधकानां हितप्रदम् ॥१८॥

विनियोग—हे महादेवि! इस मन्त्रराज के क्रम से ऋषि दक्षिणामूर्ति, छन्द पंक्ति, देवता त्रिपुरा बाला, ऐं बीज, सौः शक्ति, क्लीं कीलक कहे गये हैं। धर्म, काम, अर्थ एवं मुक्ति के लिये इसका विनियोग किया जाता है। विनियोग का स्वरूप इस प्रकार होता है—अस्य मन्त्रस्य दक्षिणामूर्ति ऋषिः, पंक्ति छन्दः, देवता त्रिपुरा बाला, ऐं बीजं, सौः शक्तिः, क्ली कीलकं, धर्मकामार्थमुक्तये विनियोगः।

ऋष्यादि न्यास—दक्षिणामूर्तिऋषये नमः शिरसि। पंक्तिछन्दसे नमः मुखे। बाला त्रिपुरादेवतायै नमः हृदि। ऐं बीजाय नमो गुह्ये। सौः शक्तये नमः पादयोः। क्लीं कीलकाय नमो नाभौ। विनियोगाय नमः सर्वांगे।

करन्यास—ऐं अंगुष्ठाभ्यां नमः। क्लीं तर्जनीभ्यां नमः। सौः मध्यमाभ्यां नमः। ऐं अनामिकाभ्यां नमः। क्लीं कनिष्ठाभ्यां नमः। सौः करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः।

अङ्गन्यास—ऐं हृदयाय नमः। क्लीं शिरसे स्वाहा। सौः शिखायै वषट्। ऐं कवचाय हुं। क्लीं नेत्रत्रयाय वौषट्। सौः अस्त्राय फट्।

अब साधकों के हित-प्रदायक इसके ध्यान का वर्णन करता हूँ।।१५-१८।।

ध्यानम्

रक्ताम्बरां चन्द्रकलावतंसां समुद्यदादित्यनिभां त्रिनेत्राम्।
विद्याक्षमालाभयदानहस्तां ध्यायामि बालामरुणाम्बुजस्थाम् ॥१९॥

ध्यान—श्री बाला के वस्त्र लाल रंग के हैं, माथे पर चन्द्रकला का आभूषण है। शरीर की कान्ति उदीयमान सूर्य के समान है। तीन नेत्र हैं। उनके चार हाथों में विद्या, अक्षमाला, अभय और वरमुद्रा है। लाल कमल पर विराजमान उन बाला का मैं ध्यान करता हूँ।।१९।।

इति ध्यात्वा महादेवीं जपेन्मन्त्रं सुसिद्धिदम्।
लक्षत्रयं पुरश्चर्याविधौ साधकसत्तमः ॥२०॥
अथ वक्ष्यामि देवेशि यन्त्रोद्धारं सुदुर्लभम्।
साधकस्य महादेव्या भुक्तिमुक्तिफलप्रदम् ॥२१॥

इस प्रकार महादेवी का ध्यान करके श्रेष्ठसिद्धिदायक गन्त्र का जप करे। पुरश्चरण विधि से श्रेष्ठ साधक तीन लाख जप करे। अव मैं श्री देवी के अति दुर्लभ यन्त्रोद्धार का वर्णन करता हूँ। महादेवी यह यन्त्र भोग और मोक्ष फलप्रदायक है।।२०-२१।।

बालायन्त्रोद्धारः

विन्दुत्रिकोणवसुकोणकनागपत्रवृत्तत्रयाञ्चितमहीसदनत्रयं च।
वालादिचक्रमिदमार्तिहरं गिरीशे व्रह्मेन्द्रविष्णुनमितं गदितं मया ते ॥२२॥

बालायन्त्रोद्धार—विन्दु, त्रिकोण, अष्टकोण, अष्टदल, वृत्तत्रय, भूपुरत्रय से यह आर्तिनाशक चक्र बनता है। हे गिरीशे! यह व्रह्मा एवं विष्णु के द्वारा नमस्कृत तथा मेरे द्वारा कथित है।।२२।।

बालायन्त्र

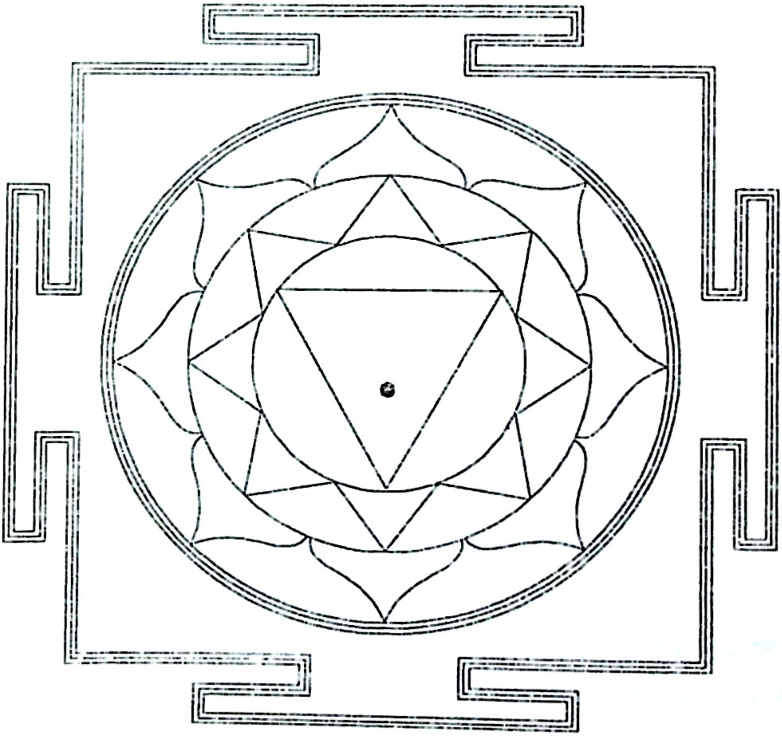

बालालयाङ्गम्

एवं विलिखिते यन्त्रे पीठशक्तीः प्रपूजयेत् ।
इच्छाज्ञानक्रियाश्चैव कामिनी कामदायिनी ॥२३॥
रती रतिप्रियानन्दा मनोनमन्यपि वान्तिमा ।
पीठशक्तीरिमा इष्ट्वा पीठं तन्मनुना दिशेत् ॥२४॥
व्योमपर्वततार्तीयं सदाशिवमहापदम् ।
पीठपद्मासनायान्ते नमोऽन्तः पीठमन्त्रकः ॥२५॥

लयांङ्ग-पूजन—इस प्रकार यन्त्र बनाकर उसपर पीठशक्तियों का पूजन करे। इच्छा, ज्ञान, क्रिया, कामिनी, कामदायिनी, रति, रतिप्रिया, नन्दा और मनोन्मनी—ये नव पीठशक्तियाँ है। इन शक्तियों का पूजन उनके मन्त्र से करे। आं दं ह्सौः सदाशिवमहापीठ-पद्मासनाय नमः से पीठपूजा करे॥२३-२५॥

षोडशार्णस्ततो मूर्तौ क्लिप्तायां मूलमन्त्रतः ।
आवाह्य पूजयेद् देवीमुपचारैः पृथग्विधैः ॥२६॥
देवीमिष्ट्वा मध्ययोनौ त्रिकोणे मतिपूर्वकः ।
वामकोणे रतिं दक्षे प्रीतिमग्रे मनोभवाम् ॥२७॥
योन्यां तु वह्निकोणादावङ्गानि परिपूजयेत् ।
मध्ययोन्यां बहिः पूर्वदिक्षु चाग्रे स्मरानपि ॥२८॥

अं आं इं ईं उं ऊं ऋं ॠं ऌं ॡं एं ऐं ओं औं अं अःस्वरूपिणी ऐं क्लीं सौः बालायै नमः से आवाहन करके अलग-अलग उपचारों द्वारा देवी का पूजन करे। पुनः त्रिकोण के मध्य बिन्दु में देवी का पूजन करे। त्रिकोण के वाम कोण में रति, दक्षकोण में प्रीति और अग्र-कोण में मनोभवा का पूजन करे। त्रिकोण के अग्निकोण से प्रारम्भ करके षडङ्गों का क्रमशः पूजन करे। मध्य त्रिकोण के बाहर पूर्व दिशा में कामदेव का पूजन करे।।२६-२८।।

बाणदेवीस्तद्वदेव शक्तीरष्टासु योनिषु ।
सुभगाख्या भगा पश्चात्तृतीया भगसर्पिणी ॥२९॥
भगमाला तथानङ्गाद्यानङ्गकुसुमा परा ।
अनङ्गमेखलानङ्गमदनेत्यष्टशक्तयः ॥३०॥

वहीं पर वाण देवी का पूजन करे। तब आठ त्रिकोणों में सुभगा, भगा, भगसर्पिणी, भगमाला, अनङ्गकुसुमा, अनङ्गमेखला, अनङ्गमदना नामक आठ शक्तियों का पूजन करे।।२९-३०।।

पद्मकेसरगा ब्राह्मीमुखाः पत्रेषु भैरवाः ।
दलाग्रेऽप्यष्ट पीठानि कामरूपाख्यमादिमम् ॥३१॥
मलयं कौलगिर्याख्यं चौहाराख्यं कुलान्तकम् ।
जालन्धरं तथौड्याणं देवकूटमथाष्टमम् ॥३२॥

अष्टदल के केसर में ब्राह्मी आदि अष्ट मातृकाओं की पूजा करे। अष्टदलपत्रों में अष्टभैरवी का पूजन करे। दल के आगे कामरूपादि आठ पीठों की पूजा करे। इन पीठों के नाम हैं—कामरूप, मलय, कौलगिरि, चौहार, कुलान्तक, जालन्धर, उड्डीयान और देवकूट।।३१-३२।।

भूगृहे च धरादिक्षु हेरुकं त्रिपुरान्तकम् ।
वेतालमग्निजिह्वं च कालान्तककपालिनौ ॥३३॥
एकपादं भीमरूपं मलयं हाटकेश्वरम् ।
शक्राद्यानायुधैः सर्वैः स्वस्वदिक्षु समर्चयेत् ॥३४॥
तद्बहिर्दिक्षु वटुकं योगिनीः क्षेत्रपालकम् ।
गणेशं विदिशासु वै वसून् सूर्यं शिवं तथा ॥३५॥

भूपुर में हेरुक, त्रिपुरान्तक, वेताल, अग्निजिह्व, कालान्तक, कपाली, एकपाद, भीमरूप, मलय, हाटकेश्वर का पूजन करे। इन्द्रादि लोकपालों और उनके अस्त्रों का पूजन उनकी दिशाओं में करे। भूपुर के बाहर पूर्वादि दिशाओं में वटुक, योगिनी, क्षेत्रपाल, गणेश का पूजन करे। आग्नेयादि दिशाओं में वसु, सूर्य, शिव और समस्त भूतों का पूजन करे एवं उनके आयुधों का भी पूजन करे।।३३-३५।।

सर्वभूतान् समभ्यर्च्य पूजयेदायुधांस्तथा ।
बालां मध्ये विभाव्यादौ कामेश्वराङ्कमध्यगाम् ॥३६॥
मकारैः पञ्चभिः कौलः कौलाचारपरायणः ।
सम्पूजयेन्महादेवि साधको मन्त्रसाधकः ॥३७॥
बिन्दौ गन्धाक्षतैः पुष्पैर्धूपदीपादितर्पणैः ।
लयाङ्गमिदमाख्यातं प्रयोगान् शृणु पार्वति ॥३८॥
यान् विधाय मनुः शीघ्रं सिद्धिभाग् भवति ध्रुवम् ।

यन्त्र के मध्य बिन्दु में कामेश्वर की गोद में बैठी हुई बाला का पूजन कौलाचारपरायण कौल साधक पञ्च मकारों से करे। हे महादेवि! मन्त्रसाधक बाला का पूजन बिन्दु में गन्ध, अक्षत, पुष्प, धूप, दीप, नैवेद्य एवं तर्पण से करे। यही लयाङ्ग पूजा है; अब इसके

प्रयोगों का वर्णन करता हूँ, जिसको करने से निश्चित ही मन्त्र शीघ्र सिद्धिदायक होता है।।३६-३८।।

बालामन्त्रस्याष्टौ प्रयोगाः

स्तम्भनं मोहनं चैव मारणाकर्षणे तथा ।।३९।।
वशीकारं तथोच्चाटं शान्तिकं पौष्टिकं तथा ।
एतत्साधनमाचक्षे सारभूतं मनोः प्रिये ।।४०।।
अदेयं देव्यभक्ताय गोप्यं गुह्यतमं पशोः ।

बाला मन्त्र के आठ प्रयोग—ये आठ प्रयोग हैं—स्तम्भन, मोहन, मारण, आकर्षण, वशीकरण, उच्चाटन, शान्ति और पुष्टि। मन्त्र के तत्त्वभूत इनके साधन का अब मैं वर्णन करता हूँ। इसे देवी के जो भक्त नहीं हैं, उन्हें कभी नहीं देना चाहिये एवं इसे पशुसाधकों से भी गुप्त रखना चाहिये।।३९-४०।।

स्तम्भनम्

प्रतिपद्दिवसे देवि स्नात्वा कृत्वाह्निकीं क्रियाम् ।।४१।।
मध्याह्ने निर्जनं गत्वा यथावदयुतावधि ।
होमो दशांशतः कार्यो घृतपायसबर्हकैः ।।४२।।
सन्तर्प्य देवताः सद्यः स्तम्भनं जायते ध्रुवम् ।
राजसूर्येन्दुवातानां दस्युवादिमुखेषु च ।।४३।।

स्तम्भन—प्रतिपदा के दिन में स्नान और दैनिक कृत्य करके मध्य दिवस में निर्जन स्थान में दश हजार मन्त्र-जप करे। जप का दशांश हवन घी, पायस, मोरपङ्ख से करे एवं देवता का तर्पण करे। इससे राजा, सूर्य, चन्द्र, वायु, डाकू, विरोधी—सभी के मुख का तुरन्त स्तम्भन होता है।।४१-४३।।

मोहनम्

दर्शे सायं श्मशाने तु जपेदुलूकविष्टरः ।
अयुतं तद्दशांशेन होमं सर्पिस्सुरान्वितैः ।।४४।।
कणकेसरपद्माक्षैर्मोहनं जगतां भवेत् ।

मोहन—दर्श अमावस की शाम में श्मशान में उल्लू की आसनी पर बैठकर दश हजार मन्त्रजप करे। उसका दशांश एक हजार हवन गोघृत, सुरा, नागकेसर, कमलगट्टा के मिश्रण से करे तो सारे संसार का मोहन होता है।।४४।।

मारणम्

भूताख्ये वासरे देवि गत्वा प्रेतालयं निशि ॥४५॥
चिताग्रे सञ्जपेद्विद्यां वीरेन्द्रः षोडशाक्षरीम् ।
अयुतं च हुनेन्मन्त्री चिताग्नौ घृतगुग्गुलम् ॥४६॥
चण्डालकेशसहितं म्रियते रिपुरुत्कटः ।

मारण—भौमवार की रात में श्मशान में चिता के आगे वीरसाधक षोडशाक्षरी विद्या का जप दश हजार करे। दशांश हवन चिता की आग में घी, गुग्गुल और चण्डाल के केश से करे। इससे बड़े से बड़े शत्रु की भी मृत्यु हो जाती है।।४५-४६।।

आकर्षणम्

अष्टम्यां शुक्लपक्षे तु जपेद्रहसि साधकः ॥४७॥
अयुतं मूलविद्याया ध्यात्वा कान्तां मनोगताम् ।
होमो दशांशतः सर्पिर्लाक्षापुष्पवतीरजः ॥४८॥
करीरपूलगोधूमैः स्त्रीणामाकर्षणं भवेत् ।

आकर्षण—शुक्ल पक्ष की अष्टमी में साधक एकान्त स्थान में मूल विद्या का जप दश हजार मनोगत कान्ता का ध्यान करते हुए करे। जप का दशांश हवन गोघृत, लाह, रजस्वला का रज, बबूल, तृण और गेहूँ के मिश्रण से करे। इससे इच्छित स्त्री का आकर्षण होता है।।४७-४८।।

वशीकरणम्

नवम्यां साधकः स्नात्वा कृत्वा कर्माह्निकं प्रिये ॥४९॥
अयुतं घृतमत्स्यण्डपद्ममुक्तैणरोमभिः ।
होमो विधेयो वरिशै(?)र्वासवो दासतां व्रजेत् ॥५०॥

वशीकरण—नवमी तिथि में साधक स्नानादि दैनिक कर्म करके दश हजार जप करे। घी, मछली का अण्डा, कमल, मोती एवं मृगरोम से दशांश हवन करे, इससे इन्द्र भी वश में होते हैं।।४९-५०।।

उच्चाटनम्

चतुर्थ्यां कृष्णपक्षे तु जपेच्चन्द्रोदये शिवे ।
नदीतीरे मनुं वीरोऽयुतं शीर्षासनस्थितः ॥५१॥
दशांशेन हुनेत्तत्र घृतनीलोत्पलत्वचः ।
लवङ्गमरिचाम्लादीन् रिपोरुच्चाटनं भवेत् ॥५२॥

उच्चाटन—कृष्ण पक्ष की चतुर्थी तिथि में चन्द्रोदय होने पर नदी के किनारे शीर्षासन में स्थित होकर वीर साधक दश हजार मन्त्र जप करे। उसका दशांश एक हजार हवन घी, नीलकंमल, लवङ्ग, मरीच, वच और आँवला के मिश्रण से करे। इससे शत्रु का उच्चाटन होता है।।५१-५२।।

शान्तिः

पञ्चम्यां निशि देवेशि जपेदयुतसंख्यया।
हुनेद् दशांशतः सर्पिर्मत्स्यमत्स्यण्डखर्परान् ।।५३।।
महामय-महाभीति-महोपद्रवशान्तये ।

शान्ति—पञ्चमी की रात में साधक दश हजार जप करे। जप का दशांश हवन, गोघृत, मछली, मछली के अण्डे एवं खपड़ा से करे। इससे महारोग, महाभय एवं महान् उपद्रवों की शान्ति होती है।।५३।।

पुष्टिः

महाष्टम्यां नरः स्नात्वा पीठे श्रेष्ठे दशाधिकाम् ।।५४।।
वीरो दशाङ्कसाहस्रीं हुनेत्तत्र दशांशतः।
घृतखर्जूरमृद्वीका-नागवल्लीदलस्रजः ।।५५।।
छागमांसं सरक्तं च महापुष्टिः प्रजायते।

पुष्टि—महाष्टमी में साधक स्नान करके श्रेष्ठ पीठ में दश हजार जप करे। जप का दशांश हवन घी, खजूर, मृद्वीका, नागवल्लीदल की माला एवं रक्तसहित छागमांस से करे। इससे महापुष्टि प्राप्त होती है।।५४-५५।।

पटलोपसंहारः

इदं रहस्यमाख्यातं सर्वतत्त्वनिरूपणम् ।।५६।।
सर्वस्वं मम देवेशि रहस्यं गोपयेत् कलौ।
सूर्यादिवारेषु जपैर्दशसाहस्रसंख्यकैः।
सर्वसिद्धिमवाप्नोति नात्र कार्या विचारणा ।।५७।।
इत्येष पटलो दिव्यः स्नेहात्तव प्रकाशितः।
गोप्याद् गोप्यो गोप्यतरो गोपनीयः स्वयोनिवत् ।।५८।।

इति श्रीरुद्रयामले तन्त्रे भैरव-भैरवीसंवादे
श्रीबालात्रिपुरसुन्दरीपटलः।।१।।

इस प्रकार सभी तत्त्वों के निरूपण करने वाले इस रहस्य का मैंने वर्णन किया। हे देवेशि! यह मेरा सर्वस्व है। कलियुग में इस रहस्य को गुप्त रखना चाहिये। रविवार में इसके मन्त्र का दश हजार जप करने से सभी सिद्धियाँ मिलती हैं। इसमें कुछ भी विचारणीय नहीं है। हे देवि! तुम्हारे स्नेहवश इस पटल को मैंने प्रकाशित किया है। यह गोप्य से भी गोप्य, गोप्यतर और अपनी योनि के समान गोपनीय है।।५६-५८।।

इस प्रकार रुद्रयामल तन्त्रोक्त श्रीदेवीरहस्य की भाषा टीका में
श्रीबालात्रिपुरसुन्दरी पटल पूर्ण हुआ।

●

अथ श्रीबालापद्धतिः

अधुना कथयिष्यामि पद्धतिं गद्यरूपिणीम्।
श्रीबालात्रिपुरेश्वर्यास्तत्त्वतः सौख्यदायिनीम् ।।१।।
प्रातःकृत्यमकृत्वा तु यो देवीं भक्तितोऽर्चयेत्।
तस्य पूजा तु विफला शौचहीना यथा क्रिया ।।२।।

अब मैं श्री बाला त्रिपुरेश्वरी की गद्यरूपिणी पद्धति को तत्त्वतः कहता हूँ। यह अपार सुख को देने वाली है। प्रातःकृत्य किये बिना जो अत्यन्त भक्ति के साथ भी देवी का अर्चन करता है, उसकी पूजा ठीक उसी प्रकार निष्फल होती है, जिस प्रकार शौचहीन क्रिया निष्फल होती है।।१-२।।

श्रीमान् साधको ब्राह्मे मुहूर्ते शयनतलादुत्थाय करचरणमुखादि प्रक्षाल्य, बद्धपद्मासनः समुपविश्य स्वशिरःस्थसहस्राराधोमुखकमलकणिकान्तर्गतं निजगुरुं स्वशक्त्या सहितं ध्यात्वा, मानसोपचारैः सम्पूज्य दण्डवन्नत्वा, गुरूक्तविधिना प्रातःकृत्यमजपाजपं च विधाय, स्वकार्यानुष्ठानाय भूमिं प्रार्थ्य श्वासानुसारेण तस्यां पादावुपन्यस्य, गृहाद्बहिर्निःसृत्य, नैर्ऋत्यां याम्यां वा दिशि मलमूत्रोत्सर्ग-शौचाचमन-दन्तधावनादिकं विधाय नद्यादौ गत्वा वैदिकं निर्वर्त्य तान्त्रिकमारभेत्। तत्रादौ मूलयुक्ततत्त्वत्रयेणाचम्य, ह्रींस्वाहा इत्यनेन वाचम्य, मूलं स्मरन् मलापकर्षणस्नानं विधाय, पुनराचम्य अद्येत्यादिमासाद्युत्कीर्तनं विधाय, श्रीकुलदेवताप्रीतये तान्त्रिकविधिना स्नानमहं करिष्ये इति संकल्प्य, जले त्रिकोणचक्रं विभाव्य सूर्यमण्डलात् 'गङ्गे च यमुने चैव' इत्यादिनाङ्कुशमुद्रया तीर्थमावाह्य, पुरःकल्पिततीर्थे संयोज्याचम्य स्वात्मानं प्रोक्ष्य, मूलेन मृदा स्नपनं विधाय, मूलं पठन्नावाहितां स्वदेवतां त्रिरभिषिच्य, श्रवणादिसप्तच्छिद्राणि निरुध्य त्रिर्निमज्ज्योन्मज्जेदिति स्नानविधिः।

ब्राह्म मुहूर्त में साधक शयनतल से उठकर हाथ-पैर-मुख धोकर बद्ध पद्मासन में बैठे। अपने शिर पर स्थित अधोमुख सहस्रदल कमल की कर्णिका में शक्तिसहित अपने गुरु का ध्यान करे। मानसिक उपचारों से उनका पूजन करके दण्डवत् प्रणाम करे। गुरु से उपदिष्ट विधि के अनुसार प्रातःकृत्य करके अजपा जप करे। अपने कार्य के अनुष्ठान

के लिये भूमि से प्रार्थना करके अपने प्रवहमान श्वास के अनुसार भूमि पर पैर रखकर घर से बाहर निकले। नैर्ऋत्य या दक्षिण दिशा में मल-मूत्र का उत्सर्ग करे। शौच-आचमन, दतुवन करे। तब नदी आदि जलाशयतट पर जाकर वैदिक सन्ध्या करके तान्त्रिकी सन्ध्या प्रारम्भ करे।

पहले मूल मन्त्रयुक्त तत्त्वत्रय से आचमन करे। ह्रीं स्वाहा से आचमन करे। मूल मन्त्र का स्मरण करते हुए मलापकर्षण करे। फिर आचमन करे। अद्येत्यादि मासाद्युत्कीर्तन करते हुये 'श्रीकुलदेवताप्रीतये तान्त्रिकविधिना स्नानमहं करिष्ये' कहकर सङ्कल्प करे। जल में त्रिकोण की कल्पना करके सूर्यमण्डल में 'गङ्गे च यमुने चैव' से अङ्कुशमुद्रा के द्वारा तीर्थों का आवाहन करे। पूर्वकल्पित तीर्थ में उसे मिलाकर आचमन करे। अपना प्रोक्षण करे। मूल मन्त्र से मिट्टी लगाकर स्नान करे। मूलमन्त्र से आवाहित देवताओं का अभिषेचन करे। कान आदि सात छिद्रों को बन्द करके तीन डुबकी जल में लगाये। इस प्रकार स्नानविधि पूर्ण होती है।

अथ सन्ध्या। तत्र पूर्ववदाचम्य स्वमूलप्राणायामर्ष्यादिकरषडङ्गं विधाय पूर्ववत्तीर्थमावाह्य, वामहस्ते तज्जलं निधाय दक्षहस्तेनाच्छाद्य यंरंवंलंहं इति पाञ्चभौतिकमन्त्रैः सप्तवारमभिमन्त्र्य, मूलविद्यया त्रिरभिमन्त्र्य, तज्जलबिन्दुभिर्वामाङ्गुष्ठानामिकाभ्यां मूलविद्यया स्वशिरस्त्रिः प्रोक्ष्यावशिष्टजलं वामहस्ते निधाय, त्रिरभिमन्त्र्य मूलमुच्चरंस्तत्त्वमुद्रया मूर्ध्नि सप्तधा मूलेन च त्रिधाभ्युच्य, शेषं जलं दक्षहस्ते समादाय तेजोरूपं ध्यात्वा 'इडया देहान्तःपापं प्रक्षाल्य, कृष्णवर्णं तज्जलं पापरूपं पिङ्गलया विरिच्य वामे कल्पितवज्रशिलायां फडिति निःक्षिपेत्। ततोऽर्घ्यं विधाय, ॐह्लांह्लींसः श्रीमार्तण्डभैरवाय प्रकाशशक्तिसहिताय इदमर्घ्यं परिकल्पयामि स्वाहा' इति त्रिरर्घ्यं कुलसूर्याय दत्त्वा, हृत्पद्मात् सूर्यमण्डले मूलदेवीं नीत्वा तत्र विधिवद् ध्यात्वा 'ऐं वागीश्वर्यै विद्महे क्लीं कामेश्वर्यै धीमहि सौः तन्नः शक्तिः प्रचोदयात्' इत्यनया मूलगायत्र्या चतसृषु संध्यासु सूर्यमण्डले मूलदेव्यै अर्घ्यं दत्त्वा यथाशक्ति जपेत्। ततश्चतसृषु संध्यासु क्रमशो मूलाधार-हृत्कमल-भ्रूमध्य-ब्रह्मरन्ध्रेभ्यो देवीतेजः समाकृष्य इडया विरेच्य, कल्पितवह्निसूर्यचन्द्र-तारामण्डलेषु निक्षिप्य, तत्र बालयौवन-प्रौढचिद्रूपां देवीं ध्यात्वा, ततः 'ऐं त्रिपुरादेव्यै विद्महे वागीश्वर्यै धीमहि तन्नो मुक्तिः प्रचोदयात्' इति प्रातः। 'क्लीं त्रिपुरादेव्यै विद्महे कामेश्वर्यै धीमहि तन्नः क्लिन्ना प्रचोदयात्' इति मध्याह्ने। 'सौः त्रिपुरादेव्यै विद्महे

शक्तीश्वर्यै धीमहि तन्नोऽमृते प्रचोदयात्' इति सायम्। 'ऐं वागीश्वर्यै विद्महे क्लीं कामेश्वर्यै धीमहि सौः तन्नः शक्तिः प्रचोदयात्' इति अर्धरात्रे। इति स्वस्वगायत्र्यार्घ्यं दत्त्वा यथाशक्ति स्वस्वगायत्रीं च जप्त्वा, पुनर्मूलगायत्रीं च जप्त्वा स्वस्वबीजाक्षरं सर्वं मूलं च जप्त्वा, प्राणायामादिना जपं समर्प्य मण्डलेभ्यो देवीतेजः स्वस्थाने देवीं हृद्यानीय ध्यायेदिति सन्ध्याविधिः।

सन्ध्या—पूर्ववत् आचमन करके मूल मन्त्र से प्राणायाम करके अर्घ्य दे। षडङ्ग-पूजन करके पूर्ववत् तीर्थों का आवाहन करे। बाँयें हाथ में जल लेकर दाँयें हाथ से ढककर पाँचभौतिक मन्त्र यं रं वं लं हं से सात बार अभिमन्त्रित करे। मूल विद्या से तीन बार मन्त्रित करे। उस जल को दाँयें हाथ में लेकर मूल विद्या के उच्चारणपूर्वक वामाङ्गुष्ठ-अनामिका के योग से जलबूँदों को लेकर अपने शिर का प्रोक्षण तीन बार करे। अवशिष्ट जल को बाँयें हाथ में लेकर मूल मन्त्र से तीन बार अभिमन्त्रित करे। मूल मन्त्र से सात बार और तीन बार अपने मूर्धा का अभ्युक्षण करे। शेष जल दाँयें हाथ में लेकर उसे तेजरूप माने। इड़ा से श्वास द्वारा भीतर ले जाकर उस जल से पाप का प्रक्षालन करे। तब उस काले जल को पापरूप मानकर पिङ्गला नाड़ी से बाहर करे। अपने बाँयें भाग में कल्पित शिला पर 'फट्' से उसे पटक दे। इसके बाद अर्घ्य दे।

'ॐ ह्रां ह्रीं सः श्रीमार्तण्डभैरवाय प्रकाशशक्तिसहिताय इदमर्घ्यं परिकल्पयामि स्वाहा' से तीन अर्घ्य कुलसूर्य को प्रदान करे। अपने हृदयकमल से देवी को सूर्य- मण्डल में लाकर वहाँ उनका विधिवत् ध्यान करे।

'ऐं वागेश्वर्यै विद्महे क्लीं कामेश्वर्यै धीमहि सौः तन्नः शक्तिः प्रचोदयात्' मूल गायत्री से चारो सन्ध्याओं में सूर्यमण्डल में मूल देवी को अर्घ्य देकर यथाशक्ति जप करे। चारों सन्ध्याओं में क्रमशः मूलाधार, अनाहत, आज्ञा, सहस्रदल कमल ब्रह्मरन्ध्र से देवी- तेज को निकालकर इड़ा से कल्पित अग्नि, सूर्य, चन्द्र, तारामण्डल में निक्षिप्त करे अर्थात् प्रातःसन्ध्या में मूलाधार से देवीतेज को निकालकर अग्निमण्डल में निक्षिप्त करे। मध्याह्न सन्ध्या में अनाहत से देवीतेज को निकालकर सूर्यमण्डल में निक्षिप्त करे। सायंसन्ध्या में आज्ञाचक्र से देवीतेज निकालकर चन्द्रमण्डल में निक्षिप्त करे। मध्यरात्रि की सन्ध्या में ब्रह्मरन्ध्र से देवीतेज को निकालकर तारामण्डल में निक्षिप्त करे। तब बाल, युवा, प्रौढ़, चिद्रूपा देवी का ध्यान करके चारो सन्ध्याओं में इस प्रकार अर्घ्य प्रदान करे—

प्रातः—ऐं त्रिपुरादेव्यै विद्महे वागीश्वर्यै धीमहि तन्नो मुक्तिः प्रचोदयात्।

मध्याह्न—क्लीं त्रिपुरादेव्यै विद्महे कामेश्वर्यै धीमहि तन्नः क्लिन्ना प्रचोदयात्।

सायं—सौः त्रिपुरादेव्यै विद्महे शक्तीश्वर्यै धीमहि तन्नोऽमृते प्रचोदयात्।

अर्धरात्रि—ऐं वागीश्वर्यै विद्महे क्लीं कामेश्वर्यै धीमहि सौः तन्नः शक्तिः प्रचोदयात्।

इस प्रकार चारो सन्ध्याओं में उनकी अपनी-अपनी गायत्री से अर्घ्य देकर यथाशक्ति प्रत्येक सन्ध्या-गायत्री का जप करे। तब मूल गायत्री का जप करे। स्व-स्व बीजाक्षरों से मूल मन्त्र का जप करे। प्राणायाम करके जप का समर्पण करे। जप का समर्पण करके मण्डल से देवीतेज को अपने स्थान हृदय में लाकर ध्यान करे। इस प्रकार सन्ध्याविधि पूर्ण होती है।

ततस्तर्पणम्। तत्र पूर्ववदाचम्य प्राणायामादि कृत्वा तीर्थमावाह्य, मूलेन जलं सप्तधामृतमुद्रयामृतीकृत्य तत्र जले यन्त्रं ध्यात्वा, तत्र देवीं हृदयात् सपरिवारामानीय षडङ्गयोगेन सकलीकृत्य कुण्डलिन्याः प्रयोगेणामृतेनाभिषिच्य विधिवत् प्रपूज्य, ऐशान्यां ४ँ श्रीकौलानन्दनाथभैरवस्तृप्यताम् इति त्रिः संतर्प्य, वह्नौ ४ँ परमगुरुं, नैर्ऋत्यां ४ँ परमाचार्यं, वायव्ये ४ँ परमेष्ठिगुरुं, त्रिः सकृद्वा संतर्प्य, दिव्यौघसिद्धौघमानवौघानपि गुरून् संतर्प्य जले यन्त्रं विभाव्य, मूलं कामेश्वरसहिता बालात्रिपुरा वागीश्वरी तृप्यतामिति त्रिः संतर्प्य परिवारानपि संतर्प्य, प्राणायामादि विधाय देवीं स्वहृदि विसृजेत् तीर्थं च स्वस्थाने विसृजेदिति तर्पणम्।

तर्पण—पूर्ववत् आचमन करके प्राणायामादि करके तीर्थों का आवाहन करे। मूल मन्त्र के सात जप से अमृतमुद्रा से जल का अमृतीकरण करे। उस जल में यन्त्र का ध्यान करे। उससे अपने हृदय से देवी को परिवारसहित लाकर षडङ्ग योग से सकलीकरण करे। कुण्डलिनी-प्रयोग से उत्पन्न अमृत से उनका अभिसेचन करके पूजन करे। तब इस प्रकार तर्पण करे—

ईशान—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीकौलानन्दनाथ भैरवस्तृप्यताम्—तीन अर्घ्य प्रदान करे।
आग्नेय—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं परमगुरुं तृप्यताम्—तीन अर्घ्य प्रदान करे।
नैर्ऋत्य—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं परमाचार्यं तृप्यताम्—तीन अर्घ्य प्रदान करे।
वायव्य—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं परमेष्ठिगुरुं तृप्यताम्—तीन अर्घ्य प्रदान करे।
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं दिव्यौघगुरुं तृप्यताम्।
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं सिद्धौघगुरुतृप्यताम्।
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं मानवौघगुरुं तृप्यताम्।

इस प्रकार गुरुओं का तर्पण करके जल में यन्त्र की कल्पना करे। उसकी भी इस प्रकार तीन बार तर्पण करे—ऐं क्लीं सौः बालायै नमः कामेश्वरसहिता बालात्रिपुरा वागीश्वरी तृप्यताम्।

तदनन्तर उनके परिवार का भी तर्पण करे। प्राणायामादि करके देवी का विसर्जन अपने हृदय में करे। तीर्थों का विसर्जन अपने-अपने स्थानों में करे। इस प्रकार तर्पण विधि पूर्ण होती है।

ततो यागगेहमागत्य जलादिना द्वारदेवताः पूजयेत्। ॐ धात्रे नमः, ॐ विधात्रे नमः, दक्षे। गं गङ्गायै नमः, यं यमुनायै नमः, वामे। द्वारश्रियै नमः वास्तुपुरुषाय नमः ऊर्ध्वे। देहल्यै नमः इत्यधः संपूज्य स्वासनमास्तीर्य 'ह्रीं आधारशक्तिकमलासनाय नमः' इति सम्पूज्य वीराद्यासनेनोपविश्य, 'पृथ्वि त्वया धृता लोकाः' इत्यादिना पृथिवीं प्रार्थ्य, मण्डूकाय नमः, कालाग्निरुद्राय०। ह्रीं आधारशक्तिकमलासनाय०। ह्रीं पीठासनाय०। इत्यासनं संपूज्य, तदुपरि समुपविश्य, संविदं यथामन्त्रं स्वीकुर्यात्। तद्विधिर्यथा—

संविदे ब्रह्मसम्भूते ब्रह्मपुत्रि सदानघे।
ब्राह्मणानां च तृप्त्यर्थं पवित्रा भव सर्वदा॥

ॐ ब्राह्मण्यै नमः स्वाहा।

ॐ सिद्धमूल्यक्षये देवि हीनबोधप्रबोधिनि।
राजप्रजावशङ्करि शत्रुपक्षनिसुदिनि॥

ऐं क्षत्रियायै नमः स्वाहा।

अज्ञानेन्धनदीप्ताग्ने ज्ञानाग्निब्रह्मरूपिणि।
आनन्दस्याहुतिं प्रीतिं सम्यग्ज्ञानं प्रयच्छ मे॥

ह्रीं वैश्यायै नमः स्वाहा।

नमस्यामि नमस्यामि योगमार्गप्रदर्शिनि।
त्रैलोक्यविजये मातः समाधिविजया भव॥

क्लीं शूद्रायै नमः स्वाहा।

इत्यभिमन्त्र्य, 'ॐ अमृते अमृतोद्भवे अमृतवर्षिणि अमृतमाकर्षय अमृतकाकर्षय सिद्धिं देहि देहि त्रिपुरसुन्दरीपदं मे वशमानय आनय स्वाहा' इति तदुपरि सप्तधा मूलं च जप्त्वा, धेनुयोनिमुद्रयामृतीकृत्य आवाहनादिमुद्राः संदर्श्य, छोटिकाभिर्दिग्बन्धनं विधाय, सप्तधा त्रिधा वा श्रीगुरुं देवतां च संतर्प्य, 'ऐं वदवद वाग्वादिनि मम जिह्वाग्रे स्थिरीभव सर्वसत्त्ववशङ्करि स्वाहा' इत्यनेन मुखे जुहुयात्। ततः आनन्दमयो भूत्वा।

अपसर्पन्तु ते भूता ये भूता भुवि संस्थिताः।
ये भूता विघ्नकर्तारस्ते नश्यन्तु शिवाज्ञया॥
पाषाण्डकारिणो ये च भूता भूम्यन्तरिक्षगाः।
दिवि लोके स्थिता ये च ते नश्यन्तु शिवाज्ञया॥

इति तर्जनीमध्यमाभ्यामूर्ध्वोर्ध्वं तालत्रयदानेन वामपार्ष्णिघातत्रयेण दिव्यदृष्ट्या च त्रिविधविघ्नानुत्सार्य, छोटिकाभिर्दशदिग्बन्धनं कृत्वा चतुर्दिक्षु वह्निप्राकारं संचिन्त्य प्राणायामं कुर्यात्।

तब यागमण्डप में आकर जलादि से द्वारदेवता का पूजन करे। ॐ धात्रे नमः। ॐ विधात्रे नमः—दाँयें। गं गङ्गायै, नमः, यं यमुनायै नमः—बाँयें। द्वारश्रियै नमः, वास्तुपुरुषाय नमः—ऊपर। देहल्यै नमः से देहली का पूजन नीचे करे। तब यागमण्डप में आकर आसनी बिछाकर पूजा करे—ह्रीं आधारशक्तिकमलासनाय नमः।

वीरासन या अन्य उपयुक्त आसन पर बैठकर 'पृथ्वि त्वया धृता लोका' इत्यादि से पृथ्वी की प्रार्थना करे। तब मण्डूकाय नमः। कालाग्निरुद्राय नमः। ह्रीं आधारशक्तिकमलासनाय नमः। ह्री पीठासनाय नमः इत्यादि से आसनी का पूजन करके उस पर बैठे। यथामन्त्र संविदा ग्रहण करें। उसकी विधि इस प्रकार है—

संविदे ब्रह्मसम्भूते ब्रह्मपुत्रि सदानघे।
ब्राह्मणानां च तृप्यर्थं पवित्रा भव सर्वदा।।

ॐ ब्राह्मण्यै नमः स्वाहा।

ॐ सिद्धिमूलकरे देवि हीनबोधप्रबोधिनि।
राजप्रजावशंकरी शत्रुपक्षनिसूदिनि।।

ऐं क्षत्रियायै नमः स्वाहा।

अज्ञानेन्धनदीप्ताग्ने ज्ञानाग्निब्रह्मरूपिणि।
आनन्दस्याहुतिं प्रीतिं सम्यग् ज्ञानं प्रयच्छ मे।।

ह्रीं वैश्यायै नमः स्वाहा।

नमस्यामि नमस्यामि योगमार्गप्रदर्शिनि।
त्रैलोक्यविजये मातः समाधिविजया भव।।

क्लीं शूद्रायै नमः स्वाहा।

उपर्युक्त मन्त्रों से संविदा को अभिमन्त्रित करे। तब इसका पाठ करे—ॐ अमृते अमृतोद्भवे अमृतवर्षिणि अमृतं आकर्षय आकर्षय, सिद्धिं देहि देहि त्रिपुरसुन्दरीपदं मे वशमानय आनय स्वाहा।

इसके बाद उसके ऊपर मूल मन्त्र 'ऐं कलीं सौः बालायै नमः' का जप सात बार करे। धेन, योनिमुद्रा से उसका अमृतीकरण करे। आवाहनादि मुद्रा दिखावे। सात या तीन बार श्रीगुरु और देवता का तर्पण करे। तब इसको पढ़े—ऐं वद वद वाग्वादिनि मम जिह्वाग्रे स्थिरीभव सर्वसत्त्ववशङ्करि स्वाहा। इस मन्त्र से मुख में संविदा से हवन करे। इसके बाद आनन्दमय होकर निम्नवत् भूतोत्सारण करे—

अपसर्पन्तु ते भूता ये भूता भुवि संस्थिता।
ये भूता विघ्नकर्तारस्ते नश्यन्तु शिवाज्ञया।।
पाषाण्डकारिणो ये च भूता भूम्यन्तरिक्षगाः।
दिवि लोके स्थिता ये च ते नश्यन्तु शिवाज्ञया।।

तर्जनी एवं मध्यमा को सीधी करके तीन ताली बजाये। बाँईं एँड़ी से तीन बार पृथ्वी पर आघात करे। एकटक क्रूर दृष्टि से सभी ओर देखकर तीनों प्रकार के विघ्नों का उत्सारण करे। छोटिका से चुटकी वजाकर दशो दिशाओं को बाँधे। अपने चारो ओर अग्नि की चहारदिवारी की कल्पना करके प्राणायाम करे।

तत्र प्रणवं षोडशवारमुच्चरन् दक्षाङ्गुष्ठेन दक्षनासापुटं निरुध्य वामेन पवनं पूरयेत्। ततस्तमेव चतुष्षष्टिवारमुच्चरन् दक्षानामाकनिष्ठिकाभ्यां वामं च पुटं निरुध्य द्वाभ्यां पवनं कुम्भयेत्। ततस्तमेव द्वात्रिंशद्वारमुच्चरन् वामं पुटं तथैव निरुध्य दक्षेण पवनं रेचयेदित्येकः प्राणायामः। एष एव विपर्ययेण द्वितीयः, प्रथमवत् तृतीयः। इति प्राणायामत्रयेण निरस्तसकलकलुषं स्वदेहं देवताराधनयोग्यं विभाव्य भूतशुद्धिं कुर्यात्।

प्राणायाम—दक्ष नासापुट को दक्ष अंगुष्ठ से बन्द करके सोलह बार प्रणव का मानसिक उच्चारण करते हुए वाम नासापुट से श्वास लेकर पूरक करे। तब दक्ष-अनामा-कनिष्ठा से बाँयीं नासा को बन्द करके अर्थात् दोनों नासापुटों को बन्द करके सोलह प्रणव का मानसिक उच्चारण करते हुए कुम्भक करे। तब बाँयीं नासा को निरुद्ध करके दक्ष नासापुट से बत्तीस प्रणव का मानसिक उच्चारण करते हुए वायु का रेचन करे। यह एक प्राणायाम हुआ। इसके विपरीत क्रम से दाँयें से पूरक, कुम्भक और बाँयें से रेचक करने से दूसरा प्राणायाम हुआ। पहले के समान फिर करने से तीसरा प्राणायाम होता है। इस प्रकार के तीन प्राणायाम से अपने देह को सभी कलुषों से रहित कर देवता-आराधन के योग्य समझकर भूतशुद्धि करे।

अथ मूलाधाराद्धंस इति मन्त्रेण कुण्डलिनीं पृथिव्या सह स्वाधिष्ठानमानीय, तत्र जले पृथिवीं लीनां विभाव्य तस्माज्जलेन सह मणिपूरकं समानीय,

तत्र वह्नौ जलं लीनं विभाव्य तस्माद्वह्निना सहानाहतं समानीय, तत्र वायौ वह्निं लीनं विचिन्त्य, तस्माद्वायुना सह विशुद्धं समानीय, तत्रस्थाकाशे वायुं लीनं विचिन्त्य तस्मादाकाशेन सहाज्ञाचक्रं समानीय, तत्र मनस्याकाशं लीनं विचिन्त्य, मनो नादे लीनं विभाव्य, ध्वनौ ध्वनिं समर्प्य, सहस्रदलकमलकर्णिकास्थचन्द्रमण्डलमध्यगतत्रिकोणान्तर्गततेजोमयबिन्दुरूपपरमशिवे देवतां समर्प्य, प्राणायामविधिना यमिति वायुबीजं धूम्रवर्णं षोडशवारं जपन् शारीरं पापपुरुषं,

वामकुक्षिस्थितं पापपुरुषं कज्जलप्रभम्।
ब्रह्महत्याशिरस्कं च स्वर्णस्तेयभुजद्वयम्॥
सुरापानहृदा युक्तं गुरुतल्पकटिद्वयम्।
तत्संसर्गिपदद्वन्द्वमङ्गप्रत्यङ्गपातकम् ॥
उपपातकरोमाणं रक्तश्मश्रुविलोचनम्।
खड्गचर्मधरं क्रुद्धं पापं कुक्षौ विचिन्तयेत्॥

इत्थं संशोष्य, रमिति वह्निवीजं रक्तवर्णं चतुष्षष्टिवारं जपंस्तमेव सन्दह्य, वमित्यमृतबीजं शुक्लवर्णं सहस्रारे विचिन्त्य द्वात्रिंशद्वारं जपंस्तदुद्भवामृतवृष्ट्या निष्पापं शरीरमुत्पाद्य, ललाटस्थलमिति पृथ्वीबीजेन पीतवर्णेन सुदृढीकृत्य, ह्रीमिति मूलस्थेन वीजेन सैश्वर्यं विधाय, सोहमिति मन्त्रेण कुण्डलिनीममृतलोलीभूतां पञ्चभूतानि जीवात्मपनं च ब्रह्ममार्गेण स्वस्वस्थाने नियोजयेत्। ततो देवीरूपमात्मानं विचिन्त्य हृदि हस्तं निधाय प्राणप्रतिष्ठां कुर्यात्।

भूतशुद्धि—मूलाधार से कुण्डलिनी को हंसमन्त्र से पृथ्वी के साथ स्वाधिष्ठान में लाकर वहाँ के जल में पृथ्वी को लीन कर दे। तब उसे जलसहित मणिपूर में ले आये। वहाँ अग्नि में जल को विलीन कर दे। तब उसे अग्निसहित अनाहत चक्र में ले आये। वहाँ पर वायु में लीन कर दे। वहाँ से वायुसहित उसे विशुद्धि चक्र में ले आये। वहाँ पर वायु को आकाश में विलीन कर दे। तब आकाशसहित उसे आज्ञा में ले आये। वहाँ उसे मन के आकाश में विलीन कर दे। मन को नाद में लीन करे। ध्वनि को ध्वनि में लीन करे। तब सहस्रदल कमल की कर्णिका के मध्य में चन्द्रमण्डल के मध्यगत त्रिकोण में तेजोमय बिन्दुरूप में परमशिव देवता को समर्पित करे। तब प्राणायाम-विधि से धूम्रवर्ण वायुबीज 'यं' का सोलह बार जप करे। शरीर की वाम कुक्षि में स्थित काजल के समान काले पापपुरुष का चिन्तन करे। उस पापपुरुष का शिर ब्रह्महत्या है। सोने की चोरी दोनों भुजाएँ हैं। सुरापान हृदय है। गुरुतल्प कटिद्वय हैं। उसके संसर्गी उसके दोनों पैर हैं।

अङ्ग-प्रत्यङ्ग पाप हैं। उपपातक रोम हैं। उसकी दाढ़ी लाल है। तीन आँखें हैं। वह क्रुद्ध है। उसके हाथों में ढाल और तलवार है। इस प्रकार के पापपुरुष का चिन्तन कुक्षि में करे। वायुबीज 'यं' से इसका शोषण करे। लाल रङ्ग के अग्निबीज के चौंसठ जप से उसे दग्ध करे। सहस्रार में शुक्ल वर्ण के अमृतबीज 'वं' के बत्तीस जप से अमृतवर्षा करके शरीर को निष्पाप करे। ललाटस्थ पीले रङ्ग के पृथ्वीबीज 'लं' से शरीर को सुदृढ़ करे। मूलस्थ 'ह्रीं' बीज से उसे ऐश्वर्ययुक्त होने का चिन्तन करे। 'सोहं' मन्त्र से कुण्डलिनी को अमृत के लिये लालायित करे। ब्रह्ममार्ग से जीवात्मा के साथ पाँचों भूतों को अपने-अपने स्थान में नियोजित करे। तब अपने को देवीरूप का मानकर हृदय पर हाथ रखकर प्राणप्रतिष्ठा करे।

'ॐआंह्रींक्रोंहंसः श्रीबालात्रिपुरायाः प्राणा इह प्राणाः १ ३ँ जीव इह स्थितः १ ३ँ सर्वेन्द्रियाणि इह स्थितानि १ ३ँ वाङ्मनश्चक्षुःश्रोत्रघ्राणप्राणा इहागत्य सुखं चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा' इति प्राणप्रतिष्ठां विधाय, स्वमूलऋष्यादिचिन्तनं विदधीत। यथा—

अस्य श्रीबालात्रिपुरामन्त्रस्य दक्षिणामूर्तिर्ऋषिः पङ्क्तिश्छन्दः श्रीबालात्रिपुरा देवता ऐं बीजं सौः शक्ति क्लीं कीलकं पूजादौ विनियोगः इति कृताञ्जलिः स्मृत्वा यथाविधि न्यसेत्। दक्षिणामूर्तिऋषये नमः शिरसि। पङ्क्तिच्छन्दसे नमो मुखे। श्रीबालात्रिपुरादेवतायै नमो हृदि। ऐं बीजाय नमो गुह्ये। सौः शक्तये नमः पादयोः। क्लीं कीलकाय नमो नाभौ। विनियोगाय नमः सर्वाङ्गेषु। ऐं नमो नाभ्यादिपादान्तं, क्लीं नमः कण्ठादिनाभ्यन्तं, सौः नमो मूर्धादिकण्ठान्तम्। ऐं नमो वामपाणितले, क्लीं नमो दक्षे, सौः नमः उभयोः।

द्रां क्षोभणबाणाय नमः अङ्गुष्ठयोः, द्रीं द्रावणबाणाय नमः तर्जन्योः, क्लीं आकर्षणबाणाय नमो मध्यमयोः, ब्लूं वशीकरणबाणाय नमः अनामिकयोः—इति बाणन्यासः।

प्राण-प्रतिष्ठा—ॐ आं ह्रीं क्रों हंसः श्रीबालात्रिपुरायाः प्राणाः इह प्राणाः। ॐ आं ह्रीं क्रों हंसः श्रीबालात्रिपुरायाः जीव इह स्थितः ॐ आं ह्रीं क्रों हंसः श्रीबालात्रिपुरायाः सर्वेन्द्रियाणि इह स्थितानि ॐ आं ह्रीं क्रों हंसः वाङ्मनश्चक्षुःश्रोत्रघ्राणप्राणा इहागत्य सुखं चिरं तिष्टन्तु स्वाहा। इस प्रकार प्राणप्रतिष्ठा करके अपने मूल मन्त्र से ऋष्यादि चिन्तन करे।

विनियोग—अस्य श्रीबालात्रिपुरामन्त्रस्य दक्षिणामूर्ति ऋषिः, पंक्ति छन्दः, श्रीबालात्रिपुरा देवता, ऐं बीजं, सौः शक्तिः, क्लीं कीलकं, पूजादौ विनियोगः।

हाथ जोड़कर स्मरण करे और यथाविधि न्यास करे।

ऋष्यादि न्यास—दक्षिणामूर्तिऋषये नमः शिरसि। पंक्तिछन्दसे नमो मुखे। श्रीबालात्रिपुरादेवतायै नमः हृदि। ऐं बीजाय नमो गुह्ये। सौः शक्तये नमः पादयोः। क्लीं कीलकाय नमो नाभौ। विनियोगाय नमः सर्वांगेषु। ऐं नमो नाभ्यादि पादान्तम्। क्लीं नमो नाभ्यादि कण्ठाभ्यन्तम्। सौः नमो मूर्धादि कण्ठान्तम्। ऐं नमो वामपाणितले। क्लीं नमो दक्षपाणितले। सौः नमो उभयोः पाणितले।

बाणन्यास—द्रां क्षोभणबाणाय नमः अंगुष्ठयोः। द्रीं द्रावणबाणाय नमः तर्जन्योः। क्लीं आकर्षणबाणाय नमो मध्यमयोः। ब्लूं वशीकरणबाणाय नमः अनामिकयोः। सः सम्मोहनबाणाय नमो कनिष्ठयोः।

> **सौः कामाय नमः अङ्गुष्ठयोः, क्लीं मन्मथाय नमः तर्जन्योः, ऐं कन्दर्पाय नमो मध्यमयोः, ब्लूं मकरध्वजाय नमः अनामिकयोः, स्त्रीं मेनकेतवे नमः कनिष्ठिकयोः—इति कामकरन्यासः।**
>
> **अथ स्वमूलकरन्यासः। ऐं अङ्गुष्ठाभ्यां नमः, क्लीं तर्जनीभ्यां, सौः मध्यमाभ्यां, ऐं अनामिकाभ्यां, क्लीं कनिष्ठिकाभ्यां, सौः करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः। एवं हृदयादिन्यासः।**
>
> **ततोऽन्तर्मातृकान्यासं बर्हिमातृकान्यासं च कृत्वा मातृकाविद्यान्यासं कुर्यात्। यथा—ऐं नमः मणिबन्धे, क्लीं नमः तले, सौः अग्रे, इति दक्षकरे। एवं वामकरे। ऐं नमः कक्षे, क्लीं कूर्परे, सौः पाणौ, इति दक्षे। एवं वामेऽपि। ऐं नमः अधःकक्षे, क्लीं जानुनि, सौः पादाग्रे इति दक्षे। एवं वामे। ऐं नमो लिङ्गे, क्लीं हृदि, सौः नादान्ते, इति विद्यान्यासः।**

कामकरन्यास—सौः कामाय नमः अंगुष्ठयोः। क्लीं मन्मथाय नमः तर्जन्यों। ऐं कन्दर्पाय नमो मध्यमयोः। ब्लूं मकरध्वजाय नमः अनामिकयोः। स्त्रीं मीनकेतवे नमः कनिष्ठिकयोः।

स्वमूल करन्यास—ऐं अंगुष्ठाभ्यां नमः। क्लीं तर्जनीभ्यां नमः। सौः मध्यमाभ्यां नमः। ऐं अनामिकाभ्यां नमः। क्लीं कनिष्ठाभ्यां नमः। सौः करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः।

हृदयादि न्यास—ऐं हृदयाय नमः। क्लीं शिरसे स्वाहा। सौः शिखायै वषट्। ऐं कवचाय हुं। क्लीं नेत्रत्रयाय वौषट्। सौः अस्त्राय फट्।

अन्तर्मातृका न्यास और बहिर्मातृका न्यास करके इस प्रकार विद्यामातृका न्यास करे—

ऐं नमः मणिबन्धे, क्लीं नमः तले, सौः नमः अग्रे—दाँयें हाथ में।
ऐं नमः मणिबन्धे, क्लीं नमः तले, सौः नमः अग्रे—बाँयें हाथ में।
ऐं नमः कक्षे, क्लीं नमः कूर्पर, सौः नमः पाणौ—दाँयें हाथ में।
ऐं नमः कक्षे, क्लीं नमः कूर्परे, सौः नमः पाणौ—बाँयें हाथ में।
ऐं नमः अधःकक्षे, क्लीं नमः जानुनि, सौः नमः पादाग्रे—दाँयें पैर में।
ऐं नमंः अधःकक्षे, क्लीं नमः जानुनि, सौः नमः पादाग्रे—बाँयें पैर में।
ऐं नमो लिङ्गे, क्लीं नमो हृदि, सौः नादान्ते।

अथ नवयोनिन्यासः। ऐं नमो दक्षकर्णे, क्लीं वामे, सौः चिबुके, ऐं दक्षशङ्खे, क्लीं वामे, सौः मुखे, ऐं दक्षनेत्रे, क्लीं वामे, सौः नासायां, ऐं दक्षबाहौ, क्लीं वामे, सौः कुक्षौ, ऐं दक्षजानुनि, क्लीं वामे, सौः नाभौ, ऐं क्लीं वामे, सौः गुह्ये, ऐं दक्षपार्श्वे, क्लीं वामे, सौः हृदि, ऐं दक्षस्तने, क्लीं वामे, सौः कण्ठे— इति नवयोनिन्यासः।

अथ रत्यादिन्यासः। मूलाधारे ऐं रत्यै नमः, हृदि क्लीं प्रीत्यै०, भ्रूमध्ये सौः मनोभवायै०। पुनरप्येषु स्थानेष्वेता विन्यसेत्। सौः अमृतेश्यै नमः, क्लीं योगेश्यै नमः, ऐं विश्वयोन्यै नमः। ततः पुनरपि षडङ्गन्यासः सम्प्रदायेन। ऐं हृदयाय नमः, क्लीं शिरसे०, सौः शिखायै०, ऐं कवचाय०, क्लीं नेत्राभ्यां०, सौः अस्त्राय फट्, इति न्यासैर्देहं संनह्य,

मूलाधारे मूलविद्यां विद्युत्कोटिसमप्रभाम्।
सूर्यकोटिप्रतीकाशां चन्द्रकोटिसुशीतलाम्॥
विसतन्तुस्वरूपां तां बिन्दुत्रिवलयां प्रिये।
ऊर्ध्वशक्तिदृढत्वेन मध्यशक्तिप्रबोधतः।
परमानन्दसंदोहसानन्दं चिन्तयेत् परम्॥

इत्यन्तर्यजनं कृत्वा पीठपूजां न्यासेन स्वदेहे कुर्यात्।

नवयोनि न्यास—ऐं नमो दक्षकर्णे। क्लीं नमः वामकर्णे। सौः नमः चिबुके। ऐं नमः दक्षशङ्खे। क्लीं नमः वामशङ्खे। सौः नमः मुखे। ऐं नमः दक्षनेत्रे। क्लीं नमः वामनेत्रे। सौः नमः नासायाम्। ऐं नमः दक्षबाहौ। क्लीं नमः वामबाहौ। सौ नमः कुक्षौ। ऐं नमः दक्षजानुनि। क्लीं नमः वामजानुनिः। सौः नमः नाभौ। ऐं नमः दक्षपादे। क्लीं नमः वामपादे। सौः नमः गुह्ये। ऐं नमः दक्षपार्श्वे। क्लीं नमः वामपार्श्वे। सौः नमः हृदि। ऐं नमः दक्षस्तने। क्लीं नमः वामस्तने। सौः नमः कण्ठे।

रत्यादि न्यास—मूलाधारे ऐं रत्यै नमः। हृदि क्लीं प्रीत्यै नमः। भ्रूमध्ये सौं मनोभवायै नमः। मूलाधारे सौः अमृतेश्यै नमः। हृदि क्लीं योगेश्यै नमः। भ्रूमध्ये ऐं विश्वयोन्यै नमः।

तब सम्प्रदाय के अनुसार षडङ्गन्यास करे। ऐं हृदयाय नमः। क्लीं शिरसे स्वाहा। सौः शिखायै वषट्। ऐं कवचाय हुम्। क्लीं नेत्रत्रयाय वौषट्। सौः अस्त्राय फट्।

अन्तर्यजन—

मूलाधारे मूलविद्यां विद्युत् कोटिसमप्रभाम्।
सूर्यकोटिप्रतीकाशां चन्द्रकोटिसुशीतलाम्।।
बिसतन्तुस्वरूपां तां बिन्दुत्रिवलयां प्रिये।
ऊर्ध्वशक्तिनिपातेन सहजेन वरानने।
परमानन्दसन्दोहसानन्दं चिन्तयेत् परम्।।

इसके बाद अपने देह में न्यास से पीठपूजा करे।

मूलाधारे आधारशक्तये नमः; प्रकृत्यै नमः, स्वाधिष्ठाने कमठाय०, मणिपूरे शेषाय०, अनाहते पृथिव्यै०, तत्रैव सुधाम्बुधये०, मणिद्वीपाय०, चिन्तामणिगृहाय०, रत्नवेदिकायै०, मणिपीठाय०, दिक्षु नानामुनिगणेभ्यो०, नानादेवेभ्यो०। धर्माय नमः दक्षांसे। ज्ञानाय० वामांसे। वैराग्याय० वामोरौ। ऐश्वर्याय० दक्षोरौ। अधर्माय० दक्षकुक्षौ। अज्ञानाय० दक्षपृष्ठे। अवैराग्याय नमः वामपृष्ठे। अनैश्वंर्याय० वामकुक्षौ। शेषाय०। पद्माय०। प्रकृतिमयपत्रेभ्यो०। विकृतिमयकेसरेभ्यो०। पञ्चाशद्वर्णभूषितकर्णिकायै०। सूर्यमण्डलाय०। सोममण्डलाय०। वह्निमण्डलाय०। सं सत्त्वाय०। रं रजसे०। तं तमसे०। आं आत्मने०। अं अन्तरात्मने०। पं परमात्मने०। ह्रीं ज्ञानात्मने०। पत्रेषु वामायै०। ज्येष्ठायै०। रोद्र्यै०। अम्बिकायै०। इच्छायै०। ज्ञानायै०। क्रियायै०। कुब्जिकायै०। चित्रायै०। विषघ्निकायै०। दूतर्यै०। आनन्दायै०। मध्ये मनोन्मन्यै०। ऐं परायै०। अपरायै०। परापरायै०। ह्सौं सदाशिवमहाप्रेतपद्मासनाय नमः। परमशिवपर्यङ्काय नमः, इति पीठं न्यस्य तत्रैव हृदये श्रीबालां ध्यायेत्।

मूलाधार में—आधारशक्तये नमः, प्रकृत्यै नमः। स्वाधिष्ठान में—कमठाय नमः। मणिपूर में—शेषाय नमः। अनाहत में—पृथिव्यै नमः। अनाहत में ही—सुधाम्बुधये नमः। मणिद्वीपाय नमः। चिन्तामणिगृहाय नमः। रत्नवेदिकायै नमः। मणिपीठाय नमः। दिशाओं में—नानामुनिगणेभ्यो नमः। नानादेवेभ्यो नमः। दक्ष अंस में—धर्माय नमः। वामांस में—

ज्ञानाय नमः। वाम ऊरु में—वैराग्याय नमः। दक्ष ऊरु में—ऐश्वर्याय नमः। दक्षकुक्षि में—अधर्माय नमः। दक्ष पृष्ठ में—अज्ञानाय नमः। वाम पृष्ठ में—अवैराग्याय नमः। वाम कुक्षि में—अनैश्वर्याय नमः। शेषाय नमः। पद्माय नमः। प्रकृतिमयपत्रेभ्यो नमः। विकृतिमयकेसरेभ्यो नमः। पञ्चाशद्वर्णभूषितकर्णिकायै नमः। सूर्यमण्डलाय नमः। सोममण्डलाय नमः। वह्निमण्डलाय नमः। सं सत्वाय नमः। रं रजसे नमः। तं तमसे नमः। आं आत्मने नमः। अं अन्तरात्मने नमः। पं परमात्मने नमः। ह्रीं ज्ञानात्मने नमः।

पत्रों में—वामायै नमः। ज्येष्ठायै नमः। रौद्र्यै नमः। अम्बिकायै नमः। इच्छायै नमः। ज्ञानायै नमः। क्रियायै नमः। कुब्जिकायै नमः। चित्रायै नमः। विषघ्निकायै नमः। दूत्यै नमः। आनन्दाय नमः।

मध्य में—मनोन्मन्यै नमः। ऐं परायै नमः। अपरायै नमः। परापरायै नमः। ह्सौः सदाशिवमहाप्रेतपद्मासनाय नमः। परमशिवपर्यङ्काय नमः।

इस प्रकार अपने हृदय में पीठन्यास करके वहीं श्री बाला का अग्रलिखित क्रम से ध्यान करे।

मूलादिब्रह्मरन्ध्रान्तं बिसन्ततुतनीयसीम्।
भ्रमद्भ्रमरनीलाभधम्मिल्लामलपुष्पिणीम् ॥१॥
ब्रह्मरन्ध्रस्फुरद्भिन्नमुखरेखाविराजिताम्।
मुखरेखालग्नरत्नतिलकां मुकुटोज्ज्वलाम् ॥२॥
विशुद्धमुक्तावज्राढ्यचन्द्ररेखाकिरीटिनीम्।
भ्रमद्भ्रमरनीलाभनयनत्रयराजिताम् ॥३॥
सूर्यभास्वन्महारत्नकुण्डलालंकृतां पराम्।
शुक्राकारस्फुरन्मुक्ताहारभूषणभूषिताम् ॥४॥

मूलाधार से ब्रह्मरन्ध्र तक कमलनाल के समान श्रीदेवी का शरीर है। भ्रमणशील भ्रमर के समान नीली आभा है। जूड़ा में धम्मिल्लपुष्प सुशोभित हैं। ब्रह्मरन्ध्र में स्फुरित् भिन्नमुख रेखायें विराजमान हैं। मुखरेखा पर रत्न का तिलक है। प्रकाशमान मुकुट है। उनके किरीट में विशुद्ध मोती, हीराजटित चन्द्ररेखा है। मँडराते हुए भौंरे के समान नीले आभा वाले तीन सुशोभित नेत्र हैं। परादेवी के कानों में महारत्नों के कुण्डल सूर्य के समान चमक रहे हैं। शुक्र के आकार का मोती चमक रहा है। हारादि भूषण से भूषित हैं।।१-४।।

ग्रैवेयाङ्गदपत्रालिस्फुरत्कान्तिजितामृताम्।
गङ्गातरङ्गकर्पूरशुभ्राम्बरविराजिताम् ॥५॥

श्रीखण्डवल्लीसदृशबाहुवल्लीविराजिताम् ।
कङ्कणादिलसद्भूषामणिबन्धलसत्प्रभाम् ॥६॥
रक्तोत्पलदलाकारपादपल्लवशोभिताम् ।
नक्षत्रमात्रासङ्काशमुक्तामञ्जीरमण्डिताम् ॥७॥
वामेन पाणिनैकेन पुस्तकं चापरेण तु ।
अभयं च प्रयच्छन्तीं साधकानां वरानने ॥८॥
अक्षमालां च वरदं दक्षपाणिद्वयेन तु ।
दधतीं चिन्तयेद् देवीं वश्यसौभाग्यवाक्प्रदाम् ।
क्षीरकुन्देन्दुधवलां प्रसन्नां संस्मरेत् प्रिये ॥९॥

ग्रैवेयक, अङ्गद, पत्रालि की कान्ति चन्द्रमा से भी बढ़कर है। गङ्गातरङ्ग और कपूर जैसे श्वेत शुभ्र वस्त्र हैं। श्रीखण्डवल्ली के समान उनकी बाहुवल्ली सुशोभित है। कङ्कण आदि की चमक से मणिबन्ध सुन्दर प्रकाश से प्रकाशित हैं। लाल कमल के आकार के सुन्दर पादपल्लव हैं। तारों के समान मुक्तामञ्जीर से मण्डित हैं। बाँयें एक हाथ में पुस्तक और दूसरे बाँयें हाथ में अभय है। हे वरानने! वे सदा साधकों को अभय प्रदान करती रहती हैं। दाँयें एक हाथ में अक्षमाला और दूसरे दाँयें हाथ में वरमुद्रा है। वश्यकारिणी, सौभाग्यदायिनी एवं वाक्प्रदायिनी शक्तियों को धारण करने वाली देवी का चिन्तन करते हुये हे प्रिये! दुग्ध, कुन्दपुष्प एवं चन्द्रमा के समान धवल वर्ण वाली प्रसन्नवदना देवी का स्मरण करना चाहिये।।५-९।।

इति श्रीबालात्रिपुरां ध्यात्वा मानसोपचारैराराध्य मनसा यथाशक्ति जपहोमादिकं च कृत्वा,

धर्माधर्महविर्दीप्ते स्वात्माग्नौ मनसा स्रुवा ।
सुषुम्नावर्त्मना नित्यमक्षवृत्तीर्जुहोम्यहं स्वाहा ॥

बाला त्रिपुरा के इस रूप का ध्यान करके मानस उपचारों से उनका पूजन करे। यथाशक्ति मानसिक जप, हवनादि करे। तब इस श्लोक का पाठ करे—

धर्माधर्महविर्दीप्ते स्वात्माग्नौ मनसा स्रुचा।
सुषुम्नावर्त्मना नित्यमक्षवृत्तीर्जुहोम्यहं स्वाहा।।

कामकलां विचिन्त्य तदुपरि श्रीबालां यथोक्तां ध्यायन्, स्ववामभागे षट्कोणान्तर्गतत्रिकोणद्वयबिन्दुबाह्यवृत्तचतुरश्रं कृत्वा स्वदक्षे त्रिकोणं वृत्तबिम्बं मण्डलं भूमौ विरच्य तत्राधारशक्तिं सम्पूज्य, तत्राधारं निःक्षिप्य, तदुपर्यस्त्रमन्त्रेण शोधितं हृन्मन्त्रेण पूरितं पात्रं शङ्खादिकं वा संस्थाप्य तत्र 'गङ्गे च

यमुने चैव' इत्यादिना तीर्थमावाह्य गन्धादीन् प्रणवेन निःक्षिप्य, वह्नि-सूर्यसोमकलाभिः सम्पूज्य धेनुमुद्रां प्रदर्श्य स्वमन्त्रेण च सम्पूजयेदिति विधिविहितसामान्यार्घ्योदकेन स्ववामे कृतमण्डलमभ्युक्ष्य, तत्र 'आधारशक्तिभ्यो नमः' इत्यादि पीठपूजाक्रमेण संपूज्य, नमः इत्याधारं प्रक्षाल्य मण्डलोपरि संस्थाप्य, 'रं वह्निमण्डलाय दशकलात्मने नमः' इति प्रपूज्य, फडिति कलशं प्रक्षाल्य, कारणेन प्रपूर्य रक्तवस्त्रमाल्यादिना संभूष्य देवी-बुद्ध्या संस्थाप्य, 'अं अर्कमण्डलाय द्वादशकलात्मने नमः' इति कलशे संपूज्य, 'ॐ चन्द्रमण्डलाय षोडशकलात्मने नमः' इति द्रव्ये संपूज्य, फडिति संरक्ष्य हूमित्यवगुण्ठ्य मूलेन संवीक्ष्य, नमः इत्यभ्युक्ष्य मूलेन गन्धमाघ्राय, कुम्भे पुष्पं दत्त्वा शापमोचनं कुर्यात्।

इसके बाद कामकला का चिन्तन करके उसके ऊपर श्रीबाला का ध्यान पूर्ववर्णित रूप में करे। अपने बाँयें भाग में बिन्दु, दो त्रिकोण के बाहर षट्कोण, इसके बाहर वृत्त और इसके बाहर चतुरस्रमण्डल और अपने दाँयें भाग में त्रिकोण, वृत्तमण्डल भूमि पर बनाकर आधारशक्ति का पूजन करे। उन पर आधारों को स्थापित करे। उन पात्रों का शोधन 'फट्' से करे। हृन्मन्त्र से शङ्खादि पात्रों में जल भरे। 'गङ्गे च यमुने चैव' से उनमें तीर्थों का आवाहन करे। उनमें 'ॐ' से गन्धादि डाले। अग्नि, सूर्य, सोमकला का पूजन करे। धेनुमुद्रा दिखाये। मूल मन्त्र से पूजन करे। विधिविहित सामान्य अर्घ्य जल से अपने वाम भाग में अङ्कित मण्डल का अभ्युक्षण करे। 'आधारशक्तिभ्यां नमः' से उसमें पीठपूजाक्रम से पूजा करे। 'नमः' से आधार को धोकर मण्डल पर स्थापित करे। 'रं वह्निमण्डलाय दशकलात्मने नमः' से पूजा करे। तब फट् से कलश को धोकर उसे कारण से भरे। लाल वस्त्र, माला आदि से भूषित करे। देवीबुद्धि से उसे स्थापित करे। 'अं अर्कमण्डलाय दशकलात्मने नमः' से कलश का पूजन करे। 'ॐ चन्द्रमण्डलाय षोडशकलात्मने नमः' से द्रव्य का पूजन करे। 'फट्' से उसका रक्षण करे। 'हूं' से अवगुण्ठन करे। मूल मन्त्र से उसे देखे। 'नमः' से अभ्युक्षण करे। मूल मन्त्र से गन्ध को सूँघकर कलश में पुष्प छोड़े। शापमोचन करे।

एकमेव परं ब्रह्म स्थूलसूक्ष्ममयं ध्रुवम्।
कचोद्भवां ब्रह्महत्यां तेन ते नाशयाम्यहम्॥
सूर्यमण्डलसम्भूते वरुणालयसम्भवे।
अमाबीजमयि देवि शुक्रशापाद्विमुच्यताम्॥
वेदानां प्रणवो बीजं ब्रह्मानन्दमयं यदि।

तेन सत्येन देवेशि ब्रह्महत्यां व्यपोहतु ॥
पवमानः परानन्दः पवमानः परो रसः ।
पवमानं परं ज्ञानं तेन ते पावयाम्यहम् ॥
कृष्णशापविनिर्मुक्ताः त्वं मुक्ता ब्रह्मशापतः ।
विमुक्ता रुद्रशापेन पवित्रा भव साम्प्रतम् ॥

इति त्रिः पठित्वा, ततः ॐ वांवींवूंवैंवौंवः ब्रह्मशापमोचितायै सुरादेव्यै नमः इत्यपि त्रिः। ह्रींश्रींक्रांक्रींक्रूंक्रैंक्रौंक्रः सुराकृष्णशापं मोचय मोदय अमृतं स्रावय स्रावय स्वाहा इति त्रिः।

हंसः शुचिषद्वसुरन्तरिक्षसद्धोता वेदिषदतिथिर्दुरोणसत् ।
नृषद्वरसदृतसद्व्योमसदब्जा गोत्रा ऋतजा अद्रिजा ऋतम् ॥

इत्यपि त्रिः पठित्वा, आनन्दभैरवं सुरादेवीं च तत्र ध्यात्वा, 'हसरक्षमलवयऊं आनन्दभैरवाय वौषट्, सहक्षमलवरयऊं सुरादेव्यै वौषट्' इति देवदेव्यौ त्रिः संपूज्य द्रव्यमध्ये दक्षिणावर्तेन त्रिः पंक्त्या अं १६ कं १६ थं १६ इति शक्तिचक्रं विलिख्य तन्मध्ये हंक्षं च, तत्समावेशाद् द्रव्यमध्येऽमृतं विचिन्त्य, धेनुमुद्रयामृतीकृत्य वमिति सुधाबीजं मूलमप्यष्टधा घटं धृत्वा पठित्वा, आत्मश्रीचक्रयोर्मध्ये त्रिकोणषट्कोणवृत्तचतुरस्रं विलिख्य, चतुरश्रे पूर्णगिरिपीठाय नमः, उड्डीयानपीठाय०, कामरूपपीठाय०, जालन्धर-पीठाय०, इति संपूज्य, षट्कोणे षडङ्गं संपूज्य, त्रिखण्डेन त्रिकोणाग्रदक्षोत्तरं संपूज्य, मध्ये आधारशक्तीः संपूज्य त्रिकोणगर्भे यन्त्रिकां संस्थाप्य, नमः इति सामान्यार्घ्यजलेनाभ्युक्ष्य, यं धूम्रार्चिषे नमः। रं ऊष्मायै०। लं ज्वलिन्यै०। वं ज्वालिन्यै०। शं विस्फुलिङ्गिन्यै०। षं सुश्रियै०। सं स्वरूपायै०। हं कपिलायै०। ळं हव्यवाहायै०। क्षं कव्यवाहायै०। मध्ये रं वह्निमण्डलाय दशकलात्मने नमः इति संपूज्य, षट्कोणे षडङ्गं संपूज्य, मध्ये मूलेन देवीं संपूज्य, पात्रं फडिति प्रक्षाल्य, यन्त्रिकोपरि संस्थापयेत्। तत्र कंभं तपिन्यै० नमः। खं बं तापिन्यै०। गं फं धूम्रायै०। घं पं मरीच्यै०। ङं नं ज्वलिन्यै०। चं धं रुच्यै०। छं दं सुषुम्नायै०। जं थं भोगदायै०। झं तं विश्वायै०। ञं णं बोधिन्यै०। टं ढं धारिण्यै०। ठं डं क्षमायै नमः। अं अर्कमण्डलाय द्वादशकलात्मने नमः इति संपूज्य त्रिकोणवृत्तषट्कोणं पात्रे विलिख्य समस्तव्यस्तमन्त्रेण संपूज्य, वरुणबीजं मूलं विलोममातृकां च पठन्, अमृतेन त्रिकोणं प्रपूर्य जलेन च भागमेकं प्रपूर्य, तत्र सुगन्धादि निःक्षिप्य,

अं अमृतायै नमः। आं मानदायै०। इं पूषायै०। ईं तुष्ट्यै०। उं पुष्ट्यै०। ऊं रत्यै०। ऋं धृत्यै०। ॠं शशिन्यै०। ऌं चण्डिकायै०। ॡं कान्त्यै०। एं ज्योत्स्नायै०। ऐं श्रियै०। ॐ प्रीत्यै०। औं अङ्गदायै०। अं पूर्णायै०। अः पूर्णामृतायै नमः। ॐ सोममण्डलाय षोडशकलात्मने नमः इति संपूज्य, पूर्ववन्मन्त्रं द्रव्ये विलिख्य त्रिकोणत्रिरेखायां अं आं इत्यादि क्षः इत्यन्तं मातृकां त्रिस्त्रिर्विलिख्य, मूलस्वण्डत्रयेण त्रिकोणं संपूज्य षट्कोणे षडङ्गं च, गङ्गेत्यादिना तीर्थमावाह्य, आनन्दभैरव-भैरव्यौ स्वमन्त्रेण संपूज्य, पूर्वादितः ग्लूं गगनरत्नेभ्यो नमः। स्लूं स्वर्गरत्नेभ्यो०। म्लूं मर्त्यरत्नेभ्यो०। प्लूं पातालरत्नेभ्ये०। मध्ये न्लूं नागरत्नेभ्यो० इति संपूज्य, मासांदि संशोध्य हूमित्यवगुण्ठ्य अमृतीकृत्य, तालत्रयेण दिशः सम्बद्ध्य , तदुपरि सप्तधा मूलं संपूज्य तत्र देवीमावाह्य, तालत्रयेण दिग्बन्धनं विधाय अवगुण्ठ्यामृतीकृत्य, योनिमुद्रां प्रदर्श्य, ह्सौं नमः इति संपूज्य, शंखमुद्रां प्रदर्श्य षडङ्गेन सकलीकृत्य मत्स्यमुद्रया पात्रमासाद्य मूलं दशधा जप्त्वा पात्रं देवीरूपं विभावयेदिति।

शापमोचन के लिये निम्न शापमोचन मन्त्रों का पाठ करे—

एकमेव परं ब्रह्म स्थूलसूक्ष्ममयं ध्रुवम्।
कचोद्भवां ब्रह्महत्यां तेन ते नाशयाम्यहम्।।
सूर्यमण्डलसम्भूते वरुणालयसम्भवे।
अमाबीजमयि देवि शुक्रशापाद् विमुच्यताम्।।
वेदानां प्रणवो बीजं ब्रह्मानन्दमयं यदि।
तेन सत्येन देवेशि ब्रह्महत्यां व्यपोहतु।।
पवमानः परानन्दः पवमानः परो रसः।
पवमानं परं ज्ञानं तेन ते पावयाम्यहम्।।
कृष्णशापविनिर्मुक्ता त्वं मुक्ता ब्रह्मशापतः।
विमुक्ता रुद्रशापेन पवित्रा भव साम्प्रतम्।।

इन श्लोकों का तीन बार पाठ करके तीन बार इस मन्त्र का पाठ करे—ॐ वां वीं वूं वैं वौं वः ब्रह्मशापमोचितायै सुरादेव्यै नमः।

तब तीन बार इस मन्त्र का पाठ करे—ह्रीं श्रीं क्रां क्रीं क्रूं क्रैं क्रौं क्रः सुराकृष्णशापं मोचय मोचय अमृतं स्त्रावय स्त्रावय स्वाहा।

तब तीन बार निम्नांकित मन्त्र का पाठ करे—

हंसः शुचिषद् वसुरन्तरिक्ष सद्धोता वेदिषदतिथिर्दुरोणसत्।
नृषद् वरसद्दृत सद् व्योम सदब्जा गोत्रा ऋतजा अद्रिजा ऋतम्।।

इसके बाद आनन्दभैरव एवं सुरा देवी का ध्यान करे। 'हसरक्षमलवयऊं आनन्दभैरवाय वौषट्' 'सहक्षमलवरयऊं सुरादेव्यै वौषट्' से देव-देवी का तीन बार पूजन करे। कलश के द्रव्य के ऊपर दक्षिणावर्त क्रम से तीन पंक्तियों में—अं आं इं ईं उं ऊं ऋं ॠं ऌं ॡं एं ऐं ओं औं अं अः १६, कं खं गं घं ङं चं छं जं झं ञं टं ठं डं ढं णं तं १६, थं दं धं नं पं फं बं भं मं यं रं लं वं शं षं सं से शक्तिचक्र अङ्कित करे। उनके मध्य में हं क्षं लिखे। इनके समावेश से द्रव्य में अमृत का चिन्तन करे। धेनुमुद्रा से अमृतीकरण करे। सुधाबीज 'वं' के साथ मूल मन्त्र का आठ बार पाठ घट पर हाथ रखकर करे।

पीठपूजा—अपने और श्रीचक्र के बीच में त्रिकोण, षट्कोण, वृत्त, चतुरस्र अङ्कित करे। चतुरस्र में पूर्णगिरिपीठाय नमः। उड्डीयानपीठाय नमः। कामरूपपीठाय नमः। जालन्धरपीठाय नमः से पीठों की पूजा करे। षट्कोण में षडङ्गों का पूजन करे। त्रिखण्डा मुद्रा से त्रिकोण के अग्र, दक्ष, उत्तर कोणों का पूजन करे। त्रिकोणमध्य बिन्दु में आधारशक्ति का पूजन करे। तब त्रिकोण में यन्त्र स्थापित करे। 'नमः' कहकर सामान्यार्घ्य जल से अभ्युक्षण करे। तब उसमें अग्नि की दश कलाओं का पूजन करे—रं ऊष्मायै नमः। लं ज्वलिन्यै नमः। वं ज्वालिन्यै नमः। शं विस्फुलिङ्गिन्यै नमः। षं सुश्रियै नमः। सं स्वरूपायै नमः। हं कपिलायै नमः। ळं हव्यवाहायै नमः। क्षं कव्यवाहायै नमः। मध्य में रं वह्निमण्डलाय दशकलात्मने नमः से पूजन करके षट्कोण में षडङ्गों का पूजन करे। मध्य में मूल मन्त्र से देवी का पूजन करे। पात्र को 'फट्' मन्त्र से धोकर, यन्त्रिका पर स्थापित करे।

वहीं पर कुम्भ में बारह सूर्यकलाओं का पूजन करे—कं भं तपिन्यै नमः। खं बं तापिन्यै नमः। गं फं धूम्रायै नमः। धं पं मरीच्यै नमः। ङं नं ज्वलिन्यै नमः। चं धं रुच्यै नमः। छं दं सुषुम्नायै नमः। जं थं भोगदायै नमः। झं तं विश्वायै नमः। ञं णं बोधिन्यै नमः। टं ढं धारिण्यै नमः। ठं डं क्षमायै नमः। अं अर्कमण्डलाय द्वादशकलात्मने नमः।

इसके बाद पात्र में त्रिकोण, वृत्त, षट्कोण मण्डल अङ्कित करके समस्त व्यस्त मन्त्र से पूजन करे। वरुणबीज वं एवं विलोम मातृका का पाठ करते हुये घट को तीन भाग अमृत से और एक भाग जल से भरे। उसमें सुगन्ध आदि डाले। तब सोलह चन्द्रकलाओं का पूजन करे—अं अमृतायै नमः। आं मानदायै नमः। इं पूषायै नमः। ईं तुष्ट्यै नमः। उं पुष्ट्यै नमः। ऊं रत्यै नमः। ऋं धृत्यै नमः। ॠं शशिन्यै नमः। ऌं चण्डिकायै नमः। ॡं

कान्त्यै नमः। एं ज्योत्स्नायै नमः। ऐं श्रियै नमः। ओं प्रीत्यै नमः। औं अङ्गदायै नमः। अं पूर्णायै नमः। अः पूर्णामृतायै मनः। ॐ सोममण्डलाय षोड़शकलात्मने नमः।

इस प्रकार पूजा करके पूर्ववत् द्रव्य में मूल मन्त्र अङ्कित करे। त्रिकोण की तीनों रेखाओं में अं से क्षं तक की मातृकाओं को लिखे। मूल मन्त्र के तीन खण्डों से त्रिकोण का पूजन करे। मन्त्र के तीन खण्ड इस प्रकार हैं—ऐं क्लीं सौः, बालायै, नमः। षट्कोण में षडङ्ग पूजा करे। गङ्गे इत्यादि से तीर्थावाहन करे। आनन्दभैरव-भैरवी की उनके मन्त्रों से पूजा करे। तब पूर्वादि क्रम से इस प्रकार पूजन करे—ग्लूं गगनरत्नेभ्यो नमः। स्लूं स्वर्गरत्नेभ्यो नमः। म्लूं मर्त्यरत्नेभ्यो नमः। प्लूं पातालरत्नेभ्यो नमः। मध्य में न्लूं नागरत्नेभ्यो नमः।

इस प्रकार के पूजन के बाद मांसादि का शोधन करे। मांसादि द्रव्यों का हूं से अवगुण्ठन करे। वं से अमृतीकरण करे। तीन ताली बजाकर दिग्बन्ध करे। उसके ऊपर सात बार मूल मन्त्र का जप करे और पूजन करे। उसमें देवी का आवाहन करे। तालत्रय से फिर दिग्बन्ध करे। अवगुण्ठन और अमृतीकरण करे। योनिमुद्रा दिखाये। ह्सौं नमः से पूजा करे। शङ्खमुद्रा दिखाये। षडङ्ग से सकलीकरण करे। मत्स्यमुद्रा से पात्र लेकर मूल मन्त्र का दश जप करे। पात्र को देवीरूप में देखे।

ततो देव्याज्ञामादाय घटसमीपे गुरुपात्रं ततः शक्तिपात्रं भोगपात्रं स्वपात्रं योगिनीमात्रं वीरपात्रं बलिपाद्यार्घ्याचमनीयपात्राणि संस्थाप्य, चर्वणयुत-कारणेन तत्त्वमुद्रया श्रीपात्राद् बिन्दून् समुद्धृत्य, आनन्दभैरवं तर्पयामि नमः इति तन्मन्त्रेण त्रिः सन्तर्प्य, ततः श्रीगुरु श्रीमच्छ्रीअमुकानन्दनाथश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः इति त्रिः सन्तर्प्य, श्रीपात्रामृतेन मूलदेवीं सायुधां सवाहनां सपरिवारां तर्पयामि नमः इति सन्तर्पयेदिति कलशपूजाविधिः।

तब देवी से आज्ञा लेकर घट के समीप गुरुपात्र, शक्तिपात्र, भोगपात्र, अपना पात्र, योगिनीपात्र, वीरपात्र, बलिपात्र, पाद्यपात्र, अर्घ्यपात्र, आचमनीय पात्रों को स्थापित करे। श्रीपात्र से मुद्रासहित कारण से बून्द लेकर आनन्दभैरवं तर्पयामि नमः से तीन बार तर्पण करे। श्रीगुरुश्रीमच्छ्री अमुकानन्दनाथश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः कहकर तीन बार तर्पण करे। श्रीपात्र के अमृत से मूल देवी का सायुधां सवाहनां सपरिवारां तर्पयामि नमः कहकर तीन बार तर्पण करे। इस प्रकार कलशपूजन विधि पूर्ण होती है।

अथ श्रीचक्रोपरि पीठपूजां पूर्ववद्विधाय श्रीबालां ध्यात्वा वायुबीजेन वामनासापुटेन देवीं स्वहृदयात् कुसुमाञ्जलावानीय श्रीचक्रे संस्थाप्य,

देवेशि भक्तिसुलभे परिवारसमन्विते ।
यावत्त्वां पूजयिष्यामि तावद् देवि इहावह ॥

इति पठित्वा, मूलं श्रीकामेश्वरशिवसहिते बालात्रिपुरे इहागच्छ इहागच्छ इह तिष्ठ इह तिष्ठ इह संनिधेहि इह संनिधेहि इह संनिरुद्धा भव इह संनिरुद्धा भव मम सर्वोपचारसहितां पूजां गृहाण गृहाण इत्यावाहनादिमुद्राः प्रदर्श्य, प्राणप्रतिष्ठां श्रीचक्रे लेलिहानमुद्रया विधाय दशदिग्बन्धं कृत्वावगुण्ठ्य सकलीकृत्य परमीकृत्य, धेनुयोनिमुद्रे प्रदर्श्य वराभयपुस्तकाक्षमालाज्ञानाङ्कुशपाशचापबाणकपालकमलादिमुद्राः प्रदर्श्य, श्रीपात्रामृतेन सायुधां सवाहनां सपरिवारां सावरणां श्रीकामेश्वरभैरवसहितां श्रीबालात्रिपुरां तर्पयामि नमः इति त्रिः सन्तर्प्य, पुनरपि मूलेन श्रीबालात्रिपुराश्रीपादुकां तर्पयामि नमः इति त्रिः सन्तर्प्य, मूलमुच्चार्य, एतत्पाद्यं श्रीकामेश्वरसहितश्रीबालात्रिपुरायै नमः पादयोः पाद्यम्। एवमर्घ्यं स्वाहा शिरसि। आचमनीयं मधुपर्कं च सुधा मुखे। स्नानीयं नमः सर्वाङ्गे, इति सुस्नाप्य, शुद्धदुकूलेनाङ्गं प्रोञ्छ्य, विचित्रपटवस्त्रं कुङ्कुमकस्तूरीचन्दनसिन्दूरमुकुटकुण्डलहारादिनानालङ्कारान् दत्त्वा पुनराचमनीयं दद्यात्। ततो मध्यमानामाङ्गुष्ठैः गन्धो नमः इति गन्धं, अङ्गुष्ठतर्जनीभ्यां पुष्पाणि वौषट् इति पुष्पैः संपूज्य, धूपपात्रं फडिति संपूज्य पुरतः स्थापयित्वा वामतर्जन्या संस्पृशन् श्रीपात्रामृतेन धूपं निवेदयामि इति निवेद्य, 'जगद्ध्वनिमन्त्रमातः स्वाहा' इति घण्टां संपूज्य वामेन पाणिना तां वादयन्, मध्यानामाङ्गुष्ठैर्धूपं धृत्वा गायत्रीं मूलमन्त्रं च पठन्

वनस्पतिरसो दिव्यो गन्धाढ्यो गन्ध उत्तमः ।
आह्वानं सर्वदेवानां धूपोऽयं प्रतिगृह्यताम् ॥

इति त्रिधोत्तोल्य देवीं धूपयेत्। ततो दीपं संमुखे संस्थाप्य पूर्ववत् प्रोक्षणपूजने कृत्वा वाममध्यमया दीपपात्रं स्पृशन् दीपं निवेदयामि इति निवेद्य पूर्ववद् घण्टां वादयन्, मध्यानामामध्ये दीपपात्रमङ्गुष्ठेन धृत्वा दर्शयन्, गायत्रीं मूलं च पठन्

सुप्रकाशो महादीपः सर्वत्र तिमिरापहः ।
सबाह्याभ्यन्तरं ज्योतिर्दीपोऽयं प्रतिगृह्यताम् ॥

इति दीपयेत्।

श्रीचक्र पर पूर्ववत् पीठपूजा करके बाला का ध्यान करे। वायुबीज से वाम नासापुट से देवी को अपने हृदय से पुष्पाञ्जलि में लाकर श्रीचक्र में स्थापित करे और इस प्रकार यह कहे—

देवेशि भक्तिसुलभे परिवारसमन्विते।
यावत्त्वां पूजायिष्यामि तावद् देवि इहावह।।

तब 'ऐं क्लीं सौ: बालायै नम: श्रीकामेश्वरशिवसहिते बालात्रिपुरे इहागच्छ इहागच्छ, इह तिष्ठ इह तिष्ठ, इह सन्निधेहि इह सन्निधेहि, इह सन्निरुद्धा भव इह सन्निरुद्धा भव मम सर्वोपचारसहितां पूजां गृहाण गृहाण' से आवाहन मुद्रा से आवाहन करे। आवाहनी मुद्रा दिखाये। लेलिहान मुद्रा से श्रीचक्र में प्राणप्रतिष्ठा करे। दिग्बन्ध करे। अवगुण्ठन, सकलीकरण, परमीकरण करे। धेनु, योनिमुद्रा दिखाये। वर, अभय, पुस्तक, अक्षमाला, ज्ञान, अङ्कुश, चाप, बाण, कपाल, कमल आदि मुद्रा दिखाये।

श्रीपात्र के अमृत से यह कहकर तर्पण करे—सायुधां, सवाहनां, सावरणां, श्रीकामेश्वरभैरवसहितां श्रीबालात्रिपुरां तर्पयामि नम:। तीन बार तर्पण करे। पुन: 'ॐ ऐं क्लीं सौ: बालायै नम: श्रीबालात्रिपुराश्रीपादुकां तर्पयामि नम:' कहकर तीन बार तर्पण करके पूजन करे—ऐं क्लीं सौ: बालायै नम: एतत् पाद्यं श्रीकामेश्वरसहितश्रीबालात्रिपुरायै नम: पादयो: पाद्यम्। इसी प्रकार—अर्घ्यं स्वाहा शिरसि। आचमनीयं मधुपर्कं च सुधा मुखे। स्नानीय नम: सर्वांगे। इस प्रकार स्नान कराकर शुद्ध वस्त्र से अङ्गों को पोंछे। विचित्र पट्टवस्त्र, कुङ्कुम, कस्तूरी, चन्दन, सिन्दूर, मुकुट, कुण्डल, हारादि नाना अलङ्कार समर्पित करे। फिर आचमनीय प्रदान करे।

मध्यमा-अनामा-अँगुष्ठ के योग से 'गन्धो नम:' से गन्ध समर्पित करे। अँगुष्ठ एवं तर्जनी के योग से 'पुष्पाणि वौषट्' कहकर पुष्प से पूजन करे। 'फट्' मन्त्र से धूपपात्र का पूजन करके सामने स्थापित करे। वाम तर्जनी से धूपपात्र का स्पर्श करे। श्रीपात्र के अमृत से 'धूपं निवेदयामि' कहकर धूप समर्पित करे। 'जगद् ध्वनि मन्त्र मात: स्वाहा' से घंटा का पूजन करे। बाँयें हाथ से उसे बजाए। मध्यमा-अनामा-अँगुष्ठ से धूपदान को पकड़कर गायत्री और मूल मन्त्र पढ़े और यह श्लोक पढ़े—

वनस्पतिरसो दिव्यो गन्धाढ्यो गन्ध उत्तम:।
आह्वानं सर्वदेवानां धूपोऽयं प्रतिगृह्यताम्।।

इस प्रकार कहकर धूपपात्र को तीन बार घुमाकर धूप प्रदान करे। दीपक को अपने सामने रखकर पूर्ववत् प्रोक्षण, पूजन करके वाम मध्यमा से दीपदान का स्पर्श करे। 'दीपं

निवेदयामि' कहकर घण्टी बजाते हुए मध्यमा-अनामा-अँगूठा से दीपपात्र पकड़कर दीपक दिखाते हुए निम्न श्लोक का पाठ करे—

सुप्रकाशो महादीपः सर्वत्र तिमिरापहः।
सबाह्याभ्यन्तरं ज्योतिर्दीपोऽयं प्रतिगृह्यताम्।।

ततः सुवर्णादिपात्रे कुङ्कुमेन वसुपत्रं चन्द्ररूपं चरुं कृत्वा मध्ये दीपमेकमष्टपत्रेषु दीपाष्टकं संस्थाप्य 'श्रीं सौः ग्लूंस्लूंम्लूंप्लूंन्लूंसौः श्रीं रत्नेश्वर्यै नमः' इत्यभ्यर्च्य मूलेन चाभ्यर्च्य, स्थालकं मस्तकान्तमुद्धृत्य नववारं मूलं०

समस्तचक्रचक्रेशीयुते देवि नवात्मिके।
आरात्रिकमिदं देवि गृहाण मम सिद्धये॥

इति चक्रमुद्रया नीराजयेत्।

ततो नानानैवेद्यं सुवर्णादिपात्रे निःक्षिप्य हूमित्यवगुण्ठ्य धेनुमुद्रयामृतीकृत्य, मूलं सप्तधा जप्त्वा वामाङ्गुष्ठेन नैवेद्यपात्रं स्पृशन् मूलान्ते

हेमपात्रगतं दिव्यं परमान्नं सुसंस्कृतम्।
पञ्चधा षड्रसोपेतं गृहाण परमेश्वरि॥

नैवेद्यं निवेदयामीति दक्षानामाङ्गुष्ठाभ्यामुत्सृजेत्।

ततः पुनराचमनीयं दत्त्वा मूलान्ते कर्पूरादियुक्तताम्बूलं निवेदयामीति पूर्ववद् दद्यात्। सर्वेषामर्घ्यपात्रजलेनोत्सर्गः कार्यः। ततस्तत्त्वमुद्रया देवीं त्रिः सन्तर्प्य पूर्वोक्ताः मुद्राः प्रदर्श्य, योनिं हृदि, क्षोभिणीं मुखे, द्राविणीं भ्रूमध्ये, आकर्षिणीं ललाटे, वशिनीं ब्रह्मरन्ध्रे, आह्लादिनीं पञ्चमुद्रामयीं प्रदर्श्य, कृताञ्जलिः श्रीबालात्रिपुरे आवरणानि ते पूजयामीत्याज्ञां गृहीत्वावरणपूजामारभेत।

आरती—सोने आदि के पात्र में कुङ्कुम से अष्टदल बनाकर चरु को चन्द्ररूप का बनाकर आठो पात्रों में एक-एक करके आठ दीपक और मध्य में एक दीपक स्थापित कर इस मन्त्र का पाठ करते हुये आरती करे—श्रीं सौः ग्लूं स्लूं म्लूं प्लूं न्लूं सौः श्रीं रत्नेश्वर्यै नमः। इसी से अर्चन करे। मूलमन्त्र से आचमन करे। थाली को मस्तक तक घुमाकर नव बार दिखाये। फिर मूल मन्त्र पढ़ते हुये—

समस्तचक्रचक्रेशीयुते देवि नवात्मिके।
आरात्रिकमिदं देवि गृहाण मम सिद्धये।।

यह कहकर चक्रमुद्रा से नीराजन करे।

सोने आदि के पात्र में नाना प्रकार के नैवेद्यों को रखकर हूं से अवगुण्ठन करे। धेनुमुद्रा से अमृतीकरण करे। मूल मन्त्र को सात बार जप कर वामाङ्गुष्ठ से नैवेद्य पात्र का स्पर्श करे। तब मूल मन्त्र कहकर इस मन्त्र का पाठ करे—

हेमपात्रगतं दिव्यं परमान्नं सुसंस्कृतम्।
पञ्चधा षड्रसोपेतं गृहाण परमेश्वरि।।

'नैवेद्यं निवेदयामि' कहकर दक्ष अनामा-अँगुष्ठ से समर्पित करे। तब फिर आचमनीय देकर 'मूल मन्त्र कर्पूरादियुक्तताम्बूलं निवेदयामि' कहकर ताम्बूल अर्पित करे। अर्घ्य पात्र के जल से सभी का उत्सर्ग कार्य करे। तब तत्त्वमुद्रा से देवी का तीन बार तर्पण करे। पूर्वोक्त मुद्राओं को प्रदर्शित करे। योनि मुद्रा हृदय में, क्षोभिणी मुद्रा मुख में, द्राविणी भ्रूमध्य में, आकर्षिणी ललाट में, वशिनी ब्रह्मरन्ध्र में, आह्लादिनी पञ्च मुद्रामयी प्रदर्शित करे। हाथ जोड़कर बोले—श्रीबालात्रिपुरे आवरणानि ते पूजयामि। तब देवी से आज्ञा लेकर आवरण पूजा प्रारम्भ करे।

तत्रादौ प्राग्योनिमध्ययोन्योरन्तराले गुरुपात्रे(त्रेण) अमुकानन्दनाथश्रीपादुकां पूजयामि नमस्तर्पयामि नमः। एवं परमगुरुश्रीपादुकां पू०। परमाचार्यश्री०। परमेष्ठिगुरुश्री०। दिव्यौघगुरुश्री०। सिद्धौघगुरुश्री०। मानवौघगुरुश्री०। पुनः स्वगुरुश्री०। इति पूजयेत्तर्पयेच्च।

आग्नेये—हृदयश्रीपा०। ईशाने शिरःश्रीपा०। नैर्ऋते शिखाश्रीपा०। वायव्ये कवचश्रीपा०। मध्ये नेत्रश्रीपा०। दिक्षु चतुर्धा अस्त्रश्री०। इति पूजयेत्तर्पयेच्च।

ततस्त्रिकोणे—आग्नेये ऐं रं रतिश्रीपा०। ईशाने क्लीं प्रीं प्रीतिश्रीपा०। अग्रकोणे सौः मं मनोभवाश्रीपा०। इति पूजयेत्तर्पयेच्च।

तत्रस्त्रिंकोणस्यैवोत्तरे—द्रां क्षोभणबाणश्री०। द्रीं द्रावणबाणश्री०। क्लीं आकर्षणबाणश्री०। ब्लूं वशीकरणबाणश्री०। तदग्रे—सः उन्मादनबाणश्री०। इति संपूज्य सन्तर्प्य, तथैव तदुत्तरे—सौः कामश्री०। क्लीं मन्मथश्री०। तद्दक्षे—ऐं कन्दर्पश्री०। ब्लूं मकरध्वजश्री०। अग्रे—स्त्रीं मीनकेतुश्री०। इति पूजयेत्तर्पयेच्च।

उनमें प्रथमतः त्रिकोण-मध्य और अन्तराल में गुरुपात्र के जल से तर्पण करे—अमुकानन्दनाथश्रीपादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि नमः। परमगुरुश्रीपादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि नमः। परमाचार्यश्रीपादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि नमः। परमेष्ठिगुरुश्रीपादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि नमः। दिव्यौघगुरुश्रीपादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि नमः।

सिद्धौघगुरुश्रीपादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि नमः। मानवौघगुरुश्रीपादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि नमः। स्वगुरुश्रीपादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि नमः। इस प्रकार इनका पूजन-तर्पण करे।

त्रिकोण में बिन्दु के—आग्नेय में—हृदयश्रीपादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि नमः। ईशान में—शिरःश्रीपादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि नमः। नैर्ऋत्य में—शिखाश्रीपादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि नमः। वायव्य में—कवचश्रीपादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि नमः। मध्य में—नेत्रश्रीपादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि नमः। चारो दिशाओं में—अस्त्रश्रीपादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि नमः।

त्रिकोण के कोनों में—आग्नेय में—ऐं रं रतिश्रीपादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि नमः। ईशान में—क्लीं प्रीं प्रीतिश्रीपादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि नमः। अग्रकोण में—सौः मं मनोभवाश्रीपादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि नमः। पूजन-तर्पण करे।

त्रिकोण के उत्तर में—द्रां क्षोभणबाणश्रीपादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि नमः। द्रीं द्रावणबाणश्रीपादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि नमः। क्लीं आकर्षणबाणश्रीपादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि नमः। ब्लूं वशीकरणबाणश्रीपादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि नमः। उसके आगे—सः उन्मादनबाणश्रीपादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि नमः। पूजन-तर्पण करे।

इसी प्रकार उसके उत्तर में—सौः कामश्रीपादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि नमः। क्लीं मन्मथश्रीपादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि नमः। देवी के दक्ष में—ऐं कन्दर्पश्रीपादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि नमः। ब्लूं मकरध्वजश्रीपादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि नमः। आगे—स्त्री मीनकेतुश्रीपादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि नमः। पूजन-तर्पण करे।

ततोऽष्टयोनिषु पूर्वादितः—अनङ्गकुसुमाश्री०। अनङ्गमेखलाश्री०। अनङ्गमदनाश्री०। अनङ्गमदनातुराश्री०। सुभगाश्री०। भगाश्री०। भगसर्पिणीश्री०। भगमालाश्री०। इति पूजयेत्तर्पयेच्च।

ततोऽष्टपत्रेषु पूर्वादितः—अं असिताङ्गभैरवश्री०। आं ब्राह्मीश्री०। इं रुरुभैरवश्री०। ईं माहेश्वरीश्री०। उं चण्डभैरवश्री० ऊं कौमारीश्री०। ऋं क्रोधभैरवश्री०। ॠं वैष्णवीश्री०। ऌं उन्मत्तभैरवश्री०। ॡं वाराहीश्री०। एं कपालिभैरवश्री०। ऐं माहेन्द्रीश्री०। ओं भीषणभैरवश्रीं०। औं चामुण्डाश्री०। अं संहारभैरवश्री०। अः नारसिंहीश्रीपा०। इति पूजयेत्तर्पयेच्च।

अष्टकोण में पूर्वादि क्रम से—अनङ्गकुसुमाश्रीपादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि नमः। अनङ्गमेखलाश्रीपादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि नमः। अनङ्गमदनाश्रीपादुकां पूजयामि नमः

तर्पयामि नमः। अनङ्गमदनातुराश्री पादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि नमः। सुभगाश्रीपादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि नमः। भगाश्रीपादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि नमः। भगसर्पिणीश्रीपादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि नमः। भगमालाश्रीपादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि नमः से पूजन-तर्पण करे।

अष्टदल में पूर्वादि क्रम से—अं असिताङ्गभैरवश्रीपादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि नमः। आं ब्राह्मीभैरवश्रीपादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि नमः। इं रुरुभैरवश्रीपादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि नमः। ईं माहेश्वरीश्रीपादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि नमः। उं चण्डभैरवश्रीपादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि नमः। ऊं कौमारीश्रीपादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि नमः। ऋं क्रोधभैरवश्रीपादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि नमः। ॠं वैष्णवीश्रीपादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि नमः। ऌं उन्मत्तभैरवश्रीपादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि नमः। ॡं वाराहीश्रीपादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि नमः। एं कपालिभैरवश्रीपादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि नमः। ऐं माहेश्वन्द्रीश्रीपादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि नमः। ओं भीषणभैरवश्रीपादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि नमः। औं चामुण्डाश्रीपादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि नमः। अं संहारभैरवश्रीपादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि नमः। अः नारसिंहीश्रीपादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि नमः से पूजन-तर्पण करे—

ततो ग्रन्थिस्थानेषु पश्चिमादितः—कामरूपपीठश्री०। मलयगिरिपीठश्री०। कौलगिरिपीठश्री०। कुलान्तकपीठश्री०। चौहारपीठश्री०। जालन्धरपीठश्री०। उड्डीयानश्री०। देवकूटश्री०। इति पूजयेत्तर्पयेच्च।

ततो वृत्तमण्डले पश्चिमादित ऊर्ध्वमधश्च—हेरुकभैरवश्री०। वेतालभैरवश्री०। त्रिपुरान्तकभैरवश्री०। अग्निजिह्वभैरवश्री०। कालान्तकभैरवश्री०। कपालिभैरवश्री०। एकपादभैरवश्री०। भीमरूपभैरवश्री०। मलयभैरवश्री। हाकटेश्वरभैरवश्री०। इति पूजयेत्तर्पयेच्च।

ततश्चतुरस्रे पूर्वादितः—इन्द्रश्री०। अग्निश्री०। यमश्री०। निर्ऋतिश्री०। वरुणश्री०। वायुश्री। कुबेरश्री०। ईशानश्री०। इन्द्रेशानयोर्मध्ये ब्रह्मश्री०। वरुणराक्षसयोर्मध्ये विष्णुश्री०। इति पूजयेत्तर्पयेच्च।

ग्रन्थिस्थान में पश्चिम से प्रारम्भ करके—कामरूपपीठश्रीपादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि नमः। मलयगिरिपीठश्रीपादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि नमः। कौलगिरिपीठश्रीपादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि नमः। कुलान्तकपीठश्रीपादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि नमः। चौहारपीठश्रीपादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि नमः। जालन्धरपीठश्रीपादुकां पूजयामि नमः

तर्पयामि नमः। उड्डीयानपीठश्रीपादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि नमः। देवकूटपीठश्रीपादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि नमः से पूजन-तर्पण करे।

वृत्तमण्डल में पश्चिमादि क्रम से ऊपर और नीचे—हेरुकभैरवश्रीपादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि नमः। वेतालभैरवश्रीपादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि नमः। त्रिपुरान्तकभैरवश्रीपादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि नमः। अग्निजिह्वभैरवश्रीपादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि नमः। कालान्तकभैरवश्रीपादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि नमः। कपालिभैरवश्रीपादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि नमः। एकपादभैरवश्रीपादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि नमः। भीमरूपभैरवश्रीपादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि नमः। मलयभैरवश्रीपादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि नमः। हाटकेश्वरभैरवश्रीपादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि नमः से पूजन-तर्पण करे।

चतुरस्र में पूर्वादि क्रम से—इन्द्रश्रीपादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि नमः। अग्निश्रीपादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि नमः। यमश्रीपादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि नमः। निर्ऋतिश्रीपादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि नमः। वरुणश्रीपादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि नमः। वायुश्रीपादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि नमः। कुबेरश्रीपादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि नमः। ईशानश्रीपादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि नमः। ब्रह्मश्रीपादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि नमः—इन्द्र-ईशान मध्य में विष्णुश्रीपादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि नमः—वरुण-निर्ऋति मध्य में। पूजन-तर्पण करे।

ततस्तत्समीपे—वज्रश्री०। शक्तिश्री०। दण्डश्री०। खड्गश्री०। पाशश्री०। ध्वजश्री०। गदाश्री०। त्रिशूलश्रीपादुकां पूजयामि त०।

ततश्चतुरश्रे पश्चिमे वां वटुकाय नमो वटुकश्री०। उत्तरे यां योगिनीभ्यो नमो योगिनीश्री०। पूर्वे क्षां क्षेत्रपालाय नमः क्षेत्रपालश्री०। दक्षे गां गणपतये नमो गणपतिश्री० इति पूजयेत्तर्पयेच्च।

ततो वायव्ये अष्टवसुभ्यो नमः, ईशाने द्वादशादित्येभ्यो नमः, आग्नेये एकादशरुद्रेभ्यो नमः, नैर्ऋते सर्वेभ्यो भूतेभ्यो नमः, इति पूजयेत्तर्पयेच्च। ततो देवीसमीपे दक्षहस्ते अक्षमालाश्री०। वरश्री०। तद्वामे पुस्तकश्री०। अभयश्री०, इति पूजयेत्तर्पयेच्च।

पुनर्बिन्दौ मूलदेवीं पूर्ववत् संपूज्य सन्तर्प्य पुष्पाञ्जलित्रयेण सम्पूज्य नित्यहोममाचरेत्।

दिक्पालों को समीप में ही—वज्रश्रीपादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि नमः। शक्तिश्रीपादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि नमः। दण्डश्रीपादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि नमः। खड्गश्रीपादुकां

पूजयामि नमः तर्पयामि नमः। पाशश्रीपादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि नमः। ध्वजश्रीपादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि नमः। गदाश्रीपादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि नमः। त्रिशूलश्रीपादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि नमः। पद्मश्रीपादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि नमः। चक्रश्रीपादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि नमः से पूजन-तर्पण करे।

चतुरस्त्र के पश्चिम में—वां वटुकाय नमो वटुकश्रीपादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि नमः। उत्तर में—यां योगिनीभ्यो नमो योगिनीश्रीपादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि नमः। पूर्व में—क्षां क्षेत्रपालाय नमो क्षेत्रपालश्रीपादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि नमः। दक्षिण में—गां गणपतये नमो गणपतिश्रीपादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि नमः से पूजन-तर्पण करे।

वायव्य में—अष्टवसुभ्यो नमः अष्टवसुश्रीपादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि नमः। ईशान में—द्वादशादित्येभ्यो नमः द्वादशादित्यश्रीपादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि नमः। आग्नेय में—एकादशरुद्रेभ्यो नमः एकादशरुद्रश्रीपादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि नमः। नैर्ऋत्य में—सर्वेभ्यो भूतेभ्यो नमः सर्वभूतश्रीपादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि नमः से पूजन-तर्पण करे।

देवी के समीप दाँयें हाथ में—अक्षमालाश्रीपादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि नमः। देवी के दाँयें हाथ में—वरश्रीपादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि नमः। देवी के बाँयें हाथ में—पुस्तकश्रीपादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि नमः। देवी के बाँयें हाथ में—अभयश्रीपादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि नमः से पूजन-तर्पण करे।

फिर बिन्दु में मूल देवी का पूर्ववत् पूजन-तर्पण करके तीन पुष्पाञ्जलि प्रदान करे। इस प्रकार पूजन के बाद हवन करे।

तद्यथा—अग्नौ चक्रं विभाव्य विलिख्य जले वा, प्राणाय स्वाहा, अपानाय स्वाहा, व्यानाय स्वाहा, उदानाय स्वाहा, समानाय स्वाहा इति हुत्वा षडङ्गाहुतीः कुर्यात्। ततो मूलेन स्वदेव्यै हुत्वा, स्वहृदि विसृज्य ईशाने मण्डलं कृत्वा, वां वटुकाय नमः एह्येहि देवीपुत्रवटुकनाथ कपिलजटाभारभास्वर त्रिनेत्र ज्वालामुख सर्वान् विघ्नान् नाशय नाशय सर्वोपचारसहितं बलिं गृह्ण गृह्ण स्वाहा। आग्नेये—यां योगिनीभ्यो नमः।

ऊर्ध्वं ब्रह्माण्डतो वा दिवि गगनतले भूतले निष्कले वा
पाताले वा तले वा सलिलपवनयोर्यत्र कुत्र स्थिता वा।
ऊर्ध्वं पीठोपपीठादिषु च कृतपदा धूपदीपादिकेन
प्रीता देव्यः सदा नः शुभबलिविधिना पान्तु वीरेन्द्रवर्य्याः॥

यां योगिनीभ्यो फट् स्वाहा, इति योगिनीबलिः। नैर्ऋते क्षांक्षींक्षूंक्षैंक्षौंक्षः क्षेत्रपाल अलिबलिसहितं बलिं गृह्ण गृह्ण स्वाहा, इति क्षेत्रपालबलिः। वायव्ये गांगींगूं गणपतये वरवरद सर्वजनं मे वशमानय बलिं गृह्ण गृह्ण स्वाहा, इति गणपतिबलिः।

हवन—अग्नि में श्रीचक्र की कल्पना करके या जल में कल्पना करके पञ्च प्राणं का हवन करे—प्राणाय स्वाहा। अपानाय स्वाहा। व्यानाय स्वाहा। उदानाय स्वाहा समानाय स्वाहा।

यह हवन करके षडङ्गों की आहुति प्रदान करे। तब मूल मन्त्र से स्वदेवी का हव करे। देवी का अपने हृदय में विसर्जन करके ईशान में मण्डल बनाकर वटुक को इ प्रकार बलि प्रदान करे—वां वटुकाय नमः एह्येहि देवीपुत्रवटुकनाथ कपिलजटाभारभास्व त्रिनेत्र ज्वालामुख सर्वान् विघ्नान् नाशय नाशय सर्वोपचारसहितं बलि गृह्ण गृह्ण स्वाहा आग्नेय में—यां योगिनीभ्यो नमः।

ऊर्ध्वं ब्रह्माण्डतो वा दिवि गगनतले भूतले निष्कले वा
पाताले वा तले वा सलिलपवनयोर्यत्र कुत्र स्थिता वा।
ऊर्ध्वं पीठोपपीठादिषु च कृतपदा धूपदीपादिकेन
प्रीता देव्यः सदा नः शुभबलिविधिना पान्तु वीरेन्द्रवर्य्याः।।

यां योगिनीभ्यो फट् स्वाहा—कहकर बलि दे। नैर्ऋत्य में क्षेत्रपाल बलिं—'क्षां क्षूं क्षैं क्षौं क्षः क्षेत्रपाल अलिबलिसहितं बलि गृह्ण गृह्ण स्वाहा' कहकर क्षेत्रपाल को ब दे। वायव्य में—'गां गीं गूं गणपतये वरवरद सर्वजनं मे वशमानय बलिं गृह्ण गृह्ण स्वाह कहकर गणपति को बलि प्रदान करे।

इत्थं बलिं विरचय्य च्छागादिबलिमप्यागमोक्तविधिना दत्त्वा गुरुदेव्यौ ध्यायन् यथाशक्ति जपं विधाय, पुनरपि प्राणायामर्ष्यादिकराङ्गन्यासानन्तरं 'गुह्यातीति' तर्पणेन तेजोरूपं जपफलं देवीवामहस्ते समर्प्य, कवचसहस्रनामस्तवपाठं पठित्वा साष्टाङ्गं प्रणिपत्य प्रदक्षिणीकृत्य सामयिकैः सह पूर्वोक्तरूपेण पात्रवन्दनं विधा

नन्दन्तु साधकाः सर्वे विनश्यन्तु विदूषकाः।
अवस्था शाम्भवी मेऽस्तु प्रसन्नोऽस्तु गुरुः सदा॥

इत्यादि पूर्वोक्तं शान्तिस्तोत्रं पठित्वा, ईशाने 'निर्माल्यवासिन्यै नमः' इति निर्माल्यं त्यजेत्। ततः 'इतः पूर्वं जाग्रत्स्वप्नसुषुप्त्यवस्थासु मनसा वाचा

कर्मणा पद्भ्यामुदरेण शिश्ना प्राणदेहधर्माधिकारतो यदुक्तं यत्कृतं तत्सर्वं मदीयं श्रीबालात्रिपुरार्पणमस्तु। ताम्रादिपात्रेऽर्घ्यं धृत्वा 'ॐह्रांह्रींसः सूर्य एष तेऽर्घः स्वाहा' इत्यर्घ्यं सूर्याय दत्त्वा, अच्छिद्रमवधारयेत्। नैवेद्यादि बान्धवैः साकं भुक्त्वा स्वात्मानं कामकलारूपं भावयन् सुखं विहरेत्।

इस प्रकार बलि देकर छागादि की बलि भी उक्त विधि से दान करे। गुरुदेव का ध्यान करके यथाविधि यथाशक्ति जप करे। फिर प्राणायाम ऋष्यादिन्यास कर अङ्गन्यास करे। 'गुह्यातिगुह्य' कहकर तर्पण से तेजोरूप जपफल देवी के बाँयें हाथ में समर्पित करे। कवच, सहस्रनाम, स्तोत्रपाठ करके साष्टाङ्ग प्रणाम करे। प्रदक्षिणा करे। सामयिकों के साथ पूर्ववत् पात्रवन्दन करे और इस श्लोक का पाठ करे—

नन्दन्तु साधकाः सर्वे विनश्यन्तु विदूषकाः।
अवस्था शाम्भवी मेऽस्तु प्रसन्नोऽस्तु गुरुः सदा।।

इस शान्तिस्तोत्र के पाठ के बाद ईशान में निर्माल्य को 'निर्माल्यवासिन्यै नमः' कहकर विसर्जित करे। तब इस प्रकार कहे—इतः पूर्वं जाग्रत्-स्वप्न-सुषुप्त्यवस्थासु मनसा वाचा कर्मणा पद्भ्यामुदरेण शिश्ना प्राणदेहधर्माधिकारतो यदुक्तं यत्कृतं तत्सर्वं मदीयं श्रीबालात्रिपुरार्पणमस्तु। तदनन्तर ताम्बे के पात्र में अर्घ्य लेकर 'ॐ ह्रां ह्रीं सः सूर्य एष तेऽर्घ्यः स्वाहा' कहकर अर्घ्य प्रदान करे। अछिद्रावधारण करे। नैवेद्यादि का भक्षण बान्धवों के साथ करे और अपने को कामकलारूप समझकर सुखपूर्वक विहार करे।

श्रीबालात्रिपुरादेव्यास्त्रैलोक्यपतिना कृता।
पद्धतिः पूर्णतां प्राप्ता निजभक्तदयालुना ॥

इति श्रीरुद्रयामले तन्त्रे भैरव-भैरवीसंवादे
श्रीबालात्रिपुरापद्धतिः॥२॥

त्रैलोक्यपति द्वारा अपने भक्तों पर दयालुता के कारण श्रीबालात्रिपुरा देवी की निरूपित पद्धति पूर्णता को प्राप्त हुई।

इस प्रकार रुद्रयामल तन्त्रोक्त श्रीदेवीरहस्य की भाषा टीका में
श्रीबालात्रिपुरापद्धति पूर्ण हुई।

अथ श्रीबालात्रिपुरसुन्दरीकवचम्

पूर्वपीठिका

श्री भैरव्युवाच

देवदेव महादेव भक्तानां प्रीतिवर्धन।
सूचितं यन्मया(त्वया)देव्याः कवचं कथयस्व मे ॥१॥

आनुपूर्विका—श्रीदेवी ने कहा कि हे देवदेव महादेव! भक्तों की प्रीति बढ़ाने वाले! आपने पहले देवी के जिस कवच का जिक्र किया था, उसे मुझे सुनाइये।।१।।

श्रीभैरव उवाच

शृणु देवि प्रवक्ष्यामि कवचं देवदुर्लभम्।
अप्रकाश्यं परं गुह्यं साधकाभीष्टसिद्धिदम् ॥२॥
कवचस्य ऋषिर्देवि दक्षिणामूर्तिरव्ययः।
पङ्क्तिश्छन्दः समुद्दिष्टो देवी त्रिपुरसुन्दरी।
धर्मार्थकाममोक्षार्थे विनियोगस्तु साधने ॥३॥

श्री भैरव ने कहा—हे देवि! सुनो; अब मैं उस कवच को कहता हूँ, जो देवदुर्लभ, अप्रकाश्य, परम गुह्य और साधकों का अभीष्ट सिद्ध करने वाला है। हे देवि! इस कवच के ऋषि श्रीदक्षिणामूर्ति, छन्द पंक्ति एवं देवता त्रिपुरसुन्दरी कहे गये है। कवच की साधना में धर्म-अर्थ-काम एवं मोक्ष की प्राप्ति हेतु इसका विनियोग कहा गया है।।२-३।।

विनियोगः

अस्य श्रीबालात्रिपुरसुन्दरीकवचस्य श्रीदक्षिणामूर्तिर्ऋषिः पङ्क्तिश्छन्दः श्रीबालासुन्दरी देवता ऐं बीजं सौः शक्तिः क्लीं कीलकं चतुर्वर्गसाधने विनियोगः। दक्षिणामूर्तिऋषये नमः शिरसि, पङ्क्तिच्छन्दसे नमो मुखे, बालासुन्दरीदेवतायै नमो हृदि, ऐं बीजाय नमो गुह्ये, सौः शक्तये नमो नाभौ, क्लीं बीजाय नमः पादयोः, विनियोगाय नमः सर्वाङ्गेषु। ऐं अङ्गुष्ठाभ्यां नमः। क्लीं तर्जनीभ्यां नमः। सौः मध्यमाभ्यां नमः। ऐं अनामिकाभ्यां नमः। क्लीं कनिष्ठिकाभ्यां०। सौः करतलकरपृष्ठाभ्यां०। एवं हृदयादिन्यासः।

विनियोग—अस्य श्रीबालात्रिपुरसुन्दरीकवचस्य श्रीदक्षिणामूर्ति ऋषिः, पंक्तिश्छन्दः,

श्रीबालासुन्दरी देवता, ऐं बीजं, सौः शक्तिः, क्लीं कीलकं, चतुर्वर्गसाधने विनियोगः।

ऋष्यादि न्यास—दक्षिणामूर्तिऋषये नमः शिरसि। पंक्तिछन्दसे नमो मुखे। बालासुन्दरीदेवतायै नमः हृदि। ऐं बीजाय नमो गुह्ये। सौः शक्तये नमो नाभौ। क्लीं कीलकाय नमः पादयोः। विनियोगाय नमः सर्वांगेषु।

करन्यास—ऐं अंगुष्ठाभ्यां नमः। क्लीं तर्जनीभ्यां नमः। सौः मध्यमाभ्यां नमः। ऐं अनामिकाभ्यां नमः। क्लीं कनिष्ठाभ्यां नमः। सौः करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः।

हृदयादि न्यास—ऐं हृदयाय नमः। क्लीं शिरसे स्वाहा। सौः शिखायै वषट्। ऐं कवचाय हुं। क्लीं नेत्रत्रयाय वौषट्। सौ अस्त्राय फट्।

ध्यानम्

मुक्ताशेखरकुण्डलाङ्गदमणिग्रैवेयहारोर्मिका-
विद्योतद्वलयादिकङ्कणकटिसूत्रां स्फुरन्नूपुराम्।
माणिक्योदरबन्धकम्बुकवरीमिन्दोः कलां बिभ्रतीं
पाशं चाङ्कुशपुस्तकाक्षवलयं दक्षोर्ध्वबाह्वादितः ॥४॥

ध्यान—माथे पर मोती, कानों में कुण्डल, गले में हार की माला, हाथों में मणि का ग्रैवेयक, वलय, कङ्कन, कटि में सूत्र सुशोभित हैं। माणिक्यजटित कमरबन्द है तथा शङ्खों की माला है। वे चन्द्रमा की कला को धारणा किये हैं। उनके दाहिने ऊपरी हाथ से लेकर अन्य हाथों में क्रमश पाश, अङ्कुश, पुस्तक और अक्षमाला है।।४।।

कवचम्

ऐं वाग्भवं पातु शीर्षं क्लीं कामस्तु तथा हृदि।
सौः शक्तिबीजं च पातु नाभौ गुह्ये च पादयोः ॥५॥
ऐंक्लींसौः वदने पातु बाला मां सर्वसिद्धये।
हसकलह्रीं सौः पातु भैरवी कण्ठदेशतः ॥६॥
सुन्दरी नाभिदेशेऽव्याच्छीर्षिका सकला सदा।
भ्रूनासयोरन्तराले महात्रिपुरसुन्दरी ॥७॥
ललाटे सुभगा पातु भगा मां कण्ठदेशतः।
भगोदेवी तु हृदये उदरे भगसर्पिणी ॥८॥

कवच—ऐं वाग्भव शिर की और क्लीं काम हृदय की रक्षा करें। शक्तिबीज सौः नाभि, गुह्य और पैरों की रक्षा करें। ऐं क्लीं सौः बाला सभी सिद्धियों के लिये मेरे मुख

की रक्षा करें। हसकलह्रीं सौः भैरवी कण्ठदेश की रक्षा करें। सुन्दरी नाभिदेश की शीर्षिका सभी की हर समय रक्षा करें। महात्रिपुरसुन्दरी भ्रू और नासा के अन्तराल की रक्षा करें। सुभगा ललाट की और भगा कण्ठदेश की रक्षा करें। भगो देवी हृदय की और भगसर्पिणी उदर की रक्षा करे।।५-८।।

भगमाला नाभिदेशे लिङ्गे पातु मनोभवा।
गुह्ये पातु महादेवी राजराजेश्वरी शिवा।।९।।
चैतन्यरूपिणी पातु पादयोर्जगदम्बिका।
नारायणी सर्वरात्रे सर्वकार्ये शुभङ्करी।।१०।।
ब्रह्माणी पातु मां पूर्वे दक्षिणे वैष्णवी तथा।
पश्चिमे पातु वाराही उत्तरे तु महेश्वरी।।११।।

भगमाला नाभिदेश की और मनोभवा लिङ्गदेश की रक्षा करें। महादेवी राज- राजेश्वरी शिवा मेरे गुह्य की रक्षा करें। चैतन्यरूपिणी जगदम्बिका पैरों की रक्षा करें। नारायणी सभी रातों में और सभी कार्यों में शुभङ्करी मेरी रक्षा करें। ब्रह्माणी मेरी रक्षा पूर्व दिशा में और वैष्णवी दक्षिण दिशा में मेरी रक्षा करें। वाराही पश्चिम दिशा में और महेश्वरी उत्तर में मेरी रक्षा करें।।९-११।।

आग्नेय्यां पातु कौमारी महालक्ष्मीश्च नैर्ऋते।
वायव्यां पातु चामुण्डा इन्द्राणी पातु चेशके।।१२।।
जले पातु महामाया पृथिव्यां सर्वमङ्गला।
आकाशे पातु वरदा सर्वतो भुवनेश्वरी।।१३।।

आग्नेय में कौमारी और नैर्ऋत्य में महालक्ष्मी रक्षा करें। वायव्य में चामुण्डा और ईशान में इन्द्राणी रक्षा करें। महामाया जल में और सर्वमङ्गला पृथ्वी पर मेरी रक्षा करें। वरदा आकाश में और भुवनेश्वरी सब तरफ मेरी रक्षा करें।।१२-१३।।

फलश्रुतिः

इदं तु कवचं नाम देवानामपि दुर्लभम्।
पठेत् प्रातः समुत्थाय शुचिः प्रयतमानसः।।१४।।
नामयो व्याधयस्तस्य न भयं च क्वचिद्भवेत्।
न च मारीभयं तस्य पातकानां भयं तथा।।१५।।
न दारिद्र्यवशं गच्छेत्तिष्ठेन्मृत्युवशे न च।
गच्छेच्छिवपुरे देवि सत्यं सत्यं वदाम्यहम्।।१६।।

इदं कवचमज्ञात्वा श्रीविद्यां यो जपेच्छिवे ।
स नाप्नोति फलं तस्य प्राप्नुयाच्छक्रघातकम् ।।१७।।

इति श्रीरुद्रयामले तन्त्रे भैरवीभैरवसंवादे
श्री बालात्रिपुरसुन्दरीकवचम्।।३।।

फलश्रुति—यह कवच देवताओं को भी दुर्लभ है। सबेरे उठकर पवित्र होकर संयत मन से जो इसका पाठ करता है, उसे कोई रोग, व्याधि और भय कभी नहीं होता। न उसे मारी का भय होता है और न ही पापों का भय होता है। न उसे दरिद्रता के वश में होना पड़ता है और न ही उसे मृत्यु का भय होता है। हे देवि! मैं सत्य सत्य कहता हूँ कि अन्त में वह शिवलोक को प्राप्त करता है। इस कवच को जाने विना जो श्रीविद्या का जप करता है, उसे जप का फल तो प्राप्त नहीं ही होता; उल्टे शक्र का घात भी होता है।।१४-१७।।

इस प्रकार रुद्रयामल तन्त्रोक्त श्रीदेवीरहस्य की भाषा टीका में
श्रीबालात्रिपुरसुन्दरीकवच पूर्ण हुआ।

●

अथ श्रीबालासहस्रनामकम्

पूर्वपीठिका

समाध्युपरतं काले कदाचिद्विजने मुदा।
परमानन्दसन्दोहमुदितं प्राह पार्वती ॥१॥

श्रीदेव्युवाच

श्रीमन्नाथ तवानन्दकारणं ब्रूहि शङ्कर।
योगीन्द्रप्राप्यं देवेश प्रेमपूर्ण सुधानिधे।
कृपया यदि मे शम्भो सुगोप्यमपि कथ्यताम् ॥२॥

पूर्वपीठिका—समाधि के बाद परमानन्द सन्दोह शिव को प्रसन्न मुद्रा में एकान्त में देखकर प्रसन्न पार्वती ने कहा कि हे मेरे नाथ! आप अपने आनन्द का कारण कृपया मुझे बतलाइये। हे देवेश! आप योगेश्वर हैं, प्रेमपूर्ण अमृत के सागर हैं; यदि यह अत्यन्त गोपनीय भी हो तो भी कृपया मुझे बतलाइये।।१-२।।

श्रीभैरव उवाच

निर्भरानन्दसन्दोहः शक्तिभावेन जायते।
लावण्यसिन्धुस्तत्रास्ति बालाया रसकन्दरः ॥३॥
तामेवानुक्षणं देवीं चिन्तयामि ततः शिवाम्।
तस्या नामसहस्राणि कथयामि तव प्रिये ॥४॥
सुगोप्यान्यपि रम्भोरु गम्भीरस्नेहविभ्रमात्।
तामेव स्तुवतो देवि ध्यायतोऽनुक्षणं मम।
सुखसन्दोहसंभावो ज्ञानानन्दस्य कारणम् ॥५॥

श्री भैरव ने कहा कि यह आनन्दसमूह शक्तिभाव पर निर्भर होने से उत्पन्न होता है। बाला की रसकन्दरा में लावण्य का सागर है। प्रत्येक क्षण में मैं उसी शिवा देवी के चिन्तन में रत रहता हूँ। हे प्रिये! उस देवी के सहस्रनाम को मैं तुझे बतलाता हूँ। हे रम्भोरु! सुगोप्य होने पर भी तुम्हारे गम्भीर स्नेह से विवश हो मैं इसे प्रकट करता हूँ। मैं उसी देवी की स्तुति प्रत्येक क्षण में करता हूँ और उसी का ध्यान करता हूँ। उसी के ज्ञानानन्द के कारण सुखसन्दोह उत्पन होता है।।३-५।।

विनियोग:

अस्य श्रीबालात्रिपुरसुन्दरीसहस्रनामस्तोत्रस्य भार्गवऋषि:, अनुष्टुप् छन्द:, श्रीबालात्रिपुरा देवता ऐं बीजं, सौ: शक्ति:, क्लीं कीलकं, समस्तपुरुषार्थे समन्वयसामर्थ्ये पाठे विनियोग:। भार्गवऋषये नम: शिरसि। अनुष्टुप्छन्दसे नमो मुखे। श्रीबालादेवतायै नमो हृदि। ऐं बीजाय नमो गुह्ये। सौ: शक्तये नम: पादयो। क्लीं कीलकाय नमो नाभौ। विनियोगाय नम: सर्वाङ्गेषु। ऐं अङ्गुष्ठाभ्यां०। क्लीं तर्जनीभ्यां०। सौ: मध्यमाभ्यां०। ऐं अनामिकाभ्यां०। क्लीं कनिष्ठिकाभ्यां०। सौ: करतलकरपृष्ठाभ्यां०। एवं हृदयादिन्यास:।

विनियोग—अस्य श्रीबालात्रिपुरसुन्दरीसहस्रनामस्तोत्रस्य भार्गव ऋषि:, अनुष्टुप् छन्द:, श्रीबालात्रिपुरा देवता, ऐं बीजं, सौ: शक्ति:, क्लीं कीलकम्, समस्तपुरुषार्थे समन्वयसामर्थ्ये पाठे विनियोग:।

ऋष्यादि न्यास—भार्गवऋषये नम: शिरसि। अनुष्टुप्छन्दसे नमो मुखे। श्रीबाला-देवतायै नम: हृदि। ऐं बीजाय नमो गुह्ये। सौ: शक्तये नम: पादयो:। क्लीं कीलकाय नमो नाभौ। विनियोगाय नम: सर्वांगेषु।

करन्यास—ऐं अंगुष्ठाभ्यां नम:। क्लीं तर्जनीभ्यां नम:। सौ: मध्यमाभ्यां नम:। ऐं अनामिकाभ्यां नम:। क्लीं कनिष्ठाभ्यां नम:। सौ: करतलकरपृष्ठाभ्यां नम:।

हृदयादि न्यास—ऐं हृदयाय नम:। क्लीं शिरसे स्वाहा। सौ: शिखायै वषट्। ऐं कवचाय हुं। क्लीं नेत्रत्रयाय वौषट्। सौ: अस्त्राय फट्।

ध्यानम्

रक्ताम्बरां चद्रकलावतंसां समुद्यदादित्यनिभां त्रिनेत्राम्।
विद्याक्षमालाभयदानहस्तां ध्यायामि बालामरुणाम्बुजस्थाम्॥

ध्यान—श्री देवी के वस्त्र लाल हैं। चन्द्रकला का आभूषण है। उदीयमान सूर्य की आभा के समान शरीर की कान्ति है। तीन नेत्र हैं। हाथों में पुस्तक, अक्षमाला, अभय और वरमुद्रा है। लाल कमल पर विराजमान बाला का मैं ध्यान करता हूँ।

सहस्रनाम

आनन्दसिन्धुरानन्दाऽऽनन्दमूर्तिर्विनोदिनी।
त्रिपुरासुन्दरी प्रेमपाथोनिधिरनुत्तमा॥१॥
वामार्थगह्वरा भूतिर्विभूति: शाङ्करी शिवा।
शृङ्गारमूर्तिर्वरदा रसा च शुभगोचरा॥२॥

परमानन्दलहरी रती रङ्गवती गतिः ।
रङ्गमालानङ्गकला केली कैवल्यदा कला ॥३॥
रसकल्पा कल्पलता कुतूहलवती गतिः ।
विनोददिग्धा सुस्निग्धा मुग्धामूर्तिर्मनोरमा ॥४॥
बालार्ककोटिकिरणा चन्द्रकोटिसुशीतला ।
स्रवत्पीयूषदिग्धाङ्गी स्वर्गार्थपरिकल्पिता ॥५॥
कुरङ्गनयना कान्ता सुगतिः सुखसन्ततिः ।
राजराजेश्वरी राज्ञी महेन्द्रपरिवन्दिता ॥६॥
प्रपञ्चगतिरीशानी प्रपञ्चगतिरुत्तमा ।
दुर्वासा दुःसहाशक्तिः शिञ्जत्कनकनूपुरा ॥७॥
मेरुमन्दरवक्षोजा सृणिपाशवरायुधा ।
शरकोदण्डसंसक्तपाणिद्वयविराजिता ॥८॥
चन्द्रबिम्बानना चारुमुकुटोत्तंसचन्द्रिका ।
सिन्दूरतिलका चारुधम्मिल्लामलमालिका ॥९॥
मन्दारदाममुदिता रत्नमालाविभूषिता ।
सुवर्णाभरणप्रीता मुक्ताधाममनोरमा ॥१०॥
ताम्बूलपूर्णवदना मदनानन्दमानसा ।
सुखाराध्या तपःसारा कृपापारा निधीश्वरी ॥११॥
वक्षःस्थललसद्रत्नप्रभा मधुरसोन्मदा ।
बिन्दुनादात्मकोच्चाररहिता तुर्यरूपिणी ॥१२॥
कमनीयाकृतिर्धन्या शाङ्करी प्रीतिमञ्जरी ।
प्रपञ्चा पञ्चमी पूर्णा पूर्णपीठनिवासिनी ॥१३॥
राज्यलक्ष्मीश्च श्रीलक्ष्मीर्महालक्ष्मीः सुराजिका ।
सन्तोषसीमा संपत्तिः शातकौम्भी तथा द्युतिः ॥१४॥
परिपूर्णा जगद्धात्री विधात्री बलवर्धिनी ।
सार्वभौमनृपश्रीश्च साम्राज्यगतिरम्बिका ॥१५॥
सरोजाक्षी दीर्घदृष्टिः साचीक्षणविचक्षणा ।
रङ्गस्रवन्ती रसिका(१००)प्रधाना रसरूपिणी ॥१६॥

सहस्रनाम—आनन्दसिन्धु, आनन्दा, आनन्दमूर्तिविमोदिनी, त्रिपुरासुन्दरी, प्रेमपाथोनिधि, अनुत्तमा, वामार्थगह्वरा, भूति, विभूति, शाङ्करी, शिवा, शृङ्गारमूर्ति, वरदा, रसा, शुभगोचरा,

परमानन्दलहरी, रती, रङ्गवती, गति, रङ्गमाला, अनङ्गकला, केली, कैवल्यदा, कला, रसकल्पा, कल्पलता, कुतूहलवती, विनोददिग्धा, सुस्निग्धा, मुग्धामूर्ति, मनोरमा, वालार्ककोटिकिरणा, चन्द्रकोटिसुशीतला, स्रवत्पीयूषदिग्धाङ्गी, स्वर्गार्थपरिकल्पिता, कुरङ्गनयना, कान्ता, सुगति, सुखसन्तति, राजराजेश्वरी, राज्ञी, महेन्द्रपरिवन्दिता, प्रपञ्चगतिरीशानी, प्रपञ्चगतिरुत्तमा, दुर्वासा, दुःसहाशक्ति, शिञ्जत्कनकनूपुरा, मेरुमन्दारवक्षोजा, सृणिपाशवरायुधा, शरकोदण्डसंयुक्तपाणिद्वयविराजिता, चन्द्रविम्बानना, चारुमुकुटोत्तंसचन्द्रिका, सिन्दूरतिलका, चारुधम्मिलामलमालिका, मन्दारदाममुदिता, रत्नमालाविभूषिता, सुवर्णाभरणप्रीता, मुक्ताधाममनोरमा, ताम्बूलपूर्णवदना, मदनानन्दमानसा, सुखाराध्या, तपःसारा, कृपापारा, विधिश्वरी, वक्षःस्थललसद्रत्नप्रभा, मधुरसोन्मदाबिन्दुनादात्मकोच्चाररहिता, तुर्यरूपिणी, कमनीयाकृति, धन्या, शाङ्करी, प्रीतिमञ्जरी, प्रपञ्चा, पञ्चमी, पूर्णा, पूर्णपीठनिवासिनी, राज्यलक्ष्मी, श्रीलक्ष्मी, महालक्ष्मी, सुराजिका, सन्तोषसीमा, सम्पत्ति, शातकौम्भी, द्युति, परिपूर्णा, जगद्धात्री, विधात्री, बलवर्धिनी, सार्वभौमनृपश्री, साम्राज्यगति, अम्बिका, सरोजाक्षी, दीर्घदृष्टि, साचीक्षणविचक्षणा, रङ्गस्रवन्ती, रसिका, प्रधाना, रसरूपिणी।।१-१६।।

रससिन्धुः सुगात्री च धूसरी मैथुनोन्मुखा।
निरन्तरगुणासक्ता शक्तिर्निधुवनात्मिका ।।१७।।
कामाक्षा कमनीया च कामेशी भगमङ्गला।
सुभगा भोगिनी भोग्या भाग्यदा सुभगा भगा ।।१८।।
भगलिङ्गानन्दकला भगमध्यनिवासिनी।
भगरूपा भगमयी भगयन्त्रा भगोत्तमा ।।१९।।
योनिमुद्रा कामकला कुलामृतपरायणा।
कुलकुण्डालया सूक्ष्मा जीवात्मा लिङ्गरूपिणी ।।२०।।
मूलक्रिया मूलरूपा मूलाकृतिस्वरूपिणी।
सोत्सुका कमलानन्दा चिद्धावाऽऽत्मगतिः शिवा ।।२१।।
श्वेतारुणा बिन्दुरूपा वेदयोनिर्विचक्षणा।
घण्टाकोटिरवा रावा रविबिम्बोत्थिताऽद्भुता ।।२२।।
नादान्तलीना संपूर्णा पूर्णस्था बहुरूपिका।
भृङ्गारावा वंशगतिर्वादित्रा मुरजध्वनिः ।।२३।।
वर्णमाला सिद्धिकला षट्चक्रक्रमवासिनी।
मूलकेलीरता स्वाधिष्ठाना तुर्यनिवासिनी ।।२४।।
मणिपूरस्थितिः स्निग्धा कूर्मचक्रपरायणा।

अनाहतगतिर्दीपशिखा मणिमयाकृतिः ॥२५॥
विशुद्धा शब्दसंशुद्धा जीवबोधस्थली रवा।
आज्ञाचक्राब्जसंस्था च स्फुरन्ती निपुणा त्रिवृत् ॥२६॥
चन्द्रिका चन्द्रकोटिश्रीः सूर्यकोटिप्रभामयी।
पद्मरागारुणच्छाया नित्याऽऽह्लादमयी प्रभा ॥२७॥
पानश्रीश्च प्रियामात्या निश्चलाऽमृतनन्दिनी।
कान्ताङ्गसङ्गमुदिता सुधामाधुर्यसम्भृता ॥२८॥
महामञ्चस्थिताऽलिप्ता तृप्ता दृप्ता सुसम्भृतिः।
स्रवत्पीयूषसंसिक्ता रक्तार्णवविवर्धिनी ॥२९॥
सुरक्ता प्रियसंसिक्ता शश्वत्कुण्डालयाऽभया (२००)।

रससिन्धु, सुगात्री, धूसरी, मैथुनोन्मुखा, निरन्तरगुणासक्ता, शक्ति, निधुवनात्मिका, कामाक्षा, कमनीया, कामेशी, भगमङ्गला, सुभगा, भोगिनी, भोग्या, भाग्यदा, सुभगा, भगलिङ्गानन्दकला, भगमध्यनिवासिनी, भगरूपा, भगमयी, भगयन्त्रा, भगोत्तमा, योनिमुद्रा, कामकला, कुलामृतपरायणा, कुलकुण्डालया, सूक्ष्मा, जीवात्मालिङ्गरूपिणी, मूलक्रिया, मूलरूपा, मूलाकृतिस्वरूपिणी, सोत्सुका, कमलानन्दा, चिद्भावाऽऽत्मगति, शिवा, श्वेतारुणा, बिन्दुरूपा, वेदध्वनिविचक्षणा, घण्टाकोटिरवा, रावा, रविविम्बोत्थिताऽद्भुता, नादान्तलीना, सम्पूर्णा, पूर्णस्था, वहुरूपिका, भृङ्गारावा, वंशगति, वादित्रा, मुरजध्वनि, वर्णमाला, सिद्धिकला, षट्चक्रक्रमवासिनी, मुक्तकेलीरता, स्वाधिष्ठाना, तुर्यनिवासिनी, मणिपूरस्थिताः, स्निग्धा, कूर्मचक्रपरायणा, अनाहतगति, दीपशिखा, मणिमयाकृति, विशुद्धा, शव्दसंशुद्धा, जीववोधस्थली, रवा, आज्ञाचक्राब्जसंस्था, स्फुरन्ती, निपुणा, त्रिवृत्, चन्द्रिका, चन्द्रकोटिश्री, सूर्यकोटिप्रभामयी, पद्मरागा, अरुणच्छाया, नित्या, आह्लादमयी, प्रभा, पानश्री, प्रियामात्मा, निश्चला, अमृतनन्दिनी, कान्ताङ्गसङ्गमुदिता, सुधामाधुर्यसम्भृता, महामञ्चस्थिता, अलिप्ता, तृप्ता, दृप्ता, सुसम्भृति, स्रवत्पीयूषसंसिक्ता, रक्तार्णवविवर्धिनी, सुरक्ता, प्रियसंसिक्ता, शश्वत्कुण्डला, अभया।।१७-२९।।

श्रेयःश्रुतिश्च प्रत्येकानवकेशिफलावली ॥३०॥
प्रीता शिवा शिवप्रिया शाङ्करी शाम्भवी विभा।
स्वयम्भूः स्वप्रिया स्वीया स्वकीया जनमातृका ॥३१॥
स्वारामा स्वाश्रया साध्वी सुधाधाराऽधिकाधिका।
मङ्गलोज्जयिनी मान्या सर्वमङ्गलसङ्गिनी ॥३२॥
भद्रा भद्रावली कन्या कलितार्धेन्दुबिम्बभाक्।

कल्याणलतिका काम्या कुकर्मा कुमतिर्मनुः ॥३३॥
कुरङ्गाक्षी क्षीबनेत्रा क्षारा रसमदोन्मदा ।
वारुणीपानमुदिता मन्दिरारचिताश्रया ॥३४॥
कादम्बरीपानरुचिर्विपाशा पाशभीतिनुत् ।
मुदिता मुदितापाङ्गा दरदोलितदीर्घदृक् ॥३५॥
दैत्यकुलानलशिखा मनोरथसुधाद्युतिः ।
सुवासिनी पीनगात्री पीनश्रेणिपयोधरा ॥३६॥
सुचारुकवरी दन्तदीधितिदीप्रमौक्तिका ।
बिम्बाधरा द्युतिमुखा प्रवालोत्तमदीधितिः ॥३७॥
तिलप्रसूननासाग्रा हेमकक्कोलभालका ।
निष्कलङ्केन्दुवदना बालेन्दुमुकुटोज्ज्वला ॥३८॥
नृत्यत्खञ्जननेत्रश्रीर्विस्फुरत्कर्णशष्कुली ।
बालचन्द्रातपत्रार्धा मणिसूर्यकिरीटिनी ॥३९॥
हेममाणिक्यताटङ्का मणिकाञ्चनकुण्डला ।
सुचारुचिबुका कम्बुकण्ठी मणिमनोरमा ॥४०॥
गङ्गातरङ्गहारोर्मिर्मत्तकोकिलनिःस्वना ।
मृणालविलसद्बाहुः पाशाङ्कुशधनुर्धरा ॥४१॥
केयूरकटकाच्छन्ना नानारत्नमनोरमा ।
ताम्रपङ्कजपाणिश्रीर्नखरत्नप्रभावती ॥४२॥
अङ्गुलीयमणिश्रेणिचञ्चदङ्गुलिसन्ततिः ।
मन्दारद्वन्द्वसुकुचा रोमराजीभुजङ्गका ॥४३॥
गम्भीरनाभिस्त्रिवलीवलया च सुमध्यमा ।
रणत्काञ्चीगुणोन्नद्धा पट्टांशुकसुनीविका ॥४४॥
मेरुगुण्डीनितम्बाढ्या गजगण्डोरुयुग्मयुक् ।
सुजानुमन्दरासक्तलसज्जङ्घाद्वयान्विता ॥४५॥
गूढगुल्फा मञ्जुशिञ्जन्मणिनूपुरमण्डिता ।
योगिध्येयपदद्वन्द्वा सुधामाऽमृतसारिणी ॥४६॥
लावण्यसिन्धुः सिन्दूरतिलका कुटिलालका ।
साधुसिद्धा सुबुद्धा च बुधा वृन्दारकोदया ॥४७॥
बालार्ककिरणश्रेणीशोणा श्रीप्रेमकामधुक् ।
रसगम्भीरसरसीपद्मिनी (३००) रससारसा ॥४८॥

श्रेय:श्रुति, प्रत्येकानवकेशिफलावली, प्रीता, शिवा, शिवप्रिया, शाङ्करी, शाम्भरी, विभा, स्वयम्भू, स्वप्रिया, स्वीया, स्वकीया, जनमातृका, स्वारामा, स्वाश्रया, साध्वी, सुधाधारा, अधिकाधिका, मङ्गला, उज्जयिनी, मान्या, सर्वमङ्गलसङ्गिनी, भद्रा, भद्रावली, कन्या, कलितार्धेन्दुविन्दुभाक्, कल्याणलतिका, काम्या, कुकर्मा, कुमतिर्मनु, कुरङ्गाक्षी, क्षीवनेत्रा, क्षारा, रसमदोन्मदा, वारुणीपानमुदिता, मन्दिरारचिताश्रया, कादम्बरीपानरुचि, विपाशा, पापभीतिनुत्, मुदिता, मुदितापाङ्गा, दरदोलितदीर्घदृक्, दैत्यकुलानलशिखा, मनोरथसुधाद्युति, सुवासिनी, पीनगात्री, पीनश्रोणी, पयोधरा, सुचारुकवरी, दन्तदीधितिदीप्रमौक्तिका, विम्बाधरा, द्युतिमुखा, प्रवालोत्तमदीधिति, तिलप्रसूननासाग्रा, हेमकक्कोलभालका, निष्कलङ्केन्दुवदना, बालेन्दुमुकुटोज्ज्वला, नृत्यत्खञ्जननेत्रश्री, विस्फुरत्कर्णशष्कुली, वालचन्द्रातपत्रार्धा, मणिसूर्यकिरीटिनी, हेममाणिक्यताटंका, मणिकाञ्चनकुण्डला, सुचारुचिबुका, कम्बुकण्ठी, मणिमनोरमा, गङ्गातरङ्गहारोर्मि, मत्तकोकिलनि:स्वना, मृणालविलसद्बाहु, पाशाङ्कुशधनुर्धरा, केयूरकटकाच्छन्ना, नानारत्नमनोरमा, ताम्रपङ्कजपाणिश्री, नखरत्नप्रभावती, अङ्गुलीयमणिश्रेणि, चञ्चदङ्गुलिसन्तति, मन्दारद्वन्द्वसुकुचा, रोमराजिभुजङ्गका, गम्भीरनाभि, त्रिवलीवलया, सुमध्यमा, रणत्काञ्चीगुणोन्नद्धा, पट्टांशुकसुनीविका, मेरुगुण्डनितम्बाढ्या, गजगण्डोरुयुग्मयुक्, सुजानुमन्दरा, सक्तलसज्जङ्घाद्वयान्विता, गूढगुल्फा, मञ्जुशिज्जन्मणिनूपुरमण्डिता, योगिध्येयपदद्वन्द्वा, सुधामा, अमृतसुन्दरी, लावण्यसिन्धु, सिन्दूरतिलका, कुटिलालका, साधुसिद्धा, सुबुद्धा, बुधा, वृन्दारकोदया, बालार्ककिरणश्रेणीशोणा, श्रीप्रेमकामधुक्, रसगम्भीरसरसीपद्मिनी, रससारसा।।३१-४८।।

प्रसन्नाऽऽसन्नवरदा शारदा च शुभाग्यदा।
नटराजप्रिया विश्वनाट्या नर्तकनर्तकी ।।४९।।
विचित्रयन्त्रा चित्तन्त्रा विद्यावल्ली गतिः शुभा।
कूटारकूटा कूटस्था पञ्चकूटा च पञ्चमी ।।५०।।
चतुष्कूटा त्रिकूटाद्या षट्कूटा वेदपूजिता।
कूटषोडशसम्पन्ना तुरीया परमाकला ।।५१।।
षोडशी मन्त्रयन्त्राणामीश्वरी मेरुमण्डला।
षोडशार्णा त्रिवर्णा च बिन्दुनादस्वरूपिणी ।।५२।।
वर्णातीता वर्णमाता शब्दब्रह्ममहासुखा।
चैतन्यवल्ली कूटात्मा कामेशी स्वप्नदृश्यगा ।।५३।।
स्वप्नावती बोधकरी जागृतिर्जागराश्रया।
स्वप्नाश्रया सुषुप्तिञ्च तन्द्रामुक्ता च माधवी ।।५४।।

लोपामुद्रा कामराज्ञी मानवी वित्तपार्चिता ।
शाकम्भरी नन्दिविद्या भास्वद्विद्योतमालिनी ॥५५॥
माहेन्द्री स्वर्गसम्पत्तिर्दुर्वास:सेविता श्रुतिः ।
साधकेन्द्रगतिः साध्वी सुलभा सिद्धिकन्दरा ॥५६॥
पुरत्रयेशी पुरजिदर्चिता पुरदेवता ।
पुष्टिर्विघ्नहरी भूतिर्विगुणा पूज्यकामधुक् ॥५७॥
हिरण्यमाता गणपा गुहमाता नितम्बिनी ।
सर्वसीमन्तिनी मोक्षा दीक्षा दीक्षितमातृका ॥५८॥
साधकाम्बा सिद्धमाता साधकेन्द्रा मनोरमा ।
यौवनोन्मादिनी तुङ्गा सुश्रोणिर्मदमन्थरा ॥५९॥
पद्मरक्तोत्पलवती रक्तमाल्यानुलेपना ।
रक्तमालारुचिः शिखाशिखण्डिन्यतिसुन्दरी ॥६०॥
शिखण्डिनृत्तसन्तुष्टा सौरभेयी वसुन्धरा ।
सुरभी कामदा काम्या कमनीयार्थकामदा ॥६१॥
नन्दिनी लक्षणवती वसिष्ठालयदेवता ।
गोलोकदेवी(४००)लोकश्रीर्गोलोकपरिपालिका ॥६२॥

प्रसन्ना, आसन्नवरदा, शारदा, सुभाग्यदा, नटराजप्रिया, विश्वनाट्या, नर्तकनर्तकी, विचित्रयन्त्रा, चित्तन्त्रा, विद्यावल्ली, शुभा गति, कूटारकूटा, कूटस्था, पञ्चकूटा, पञ्चमी, चतुष्कूटा, त्रिकूटाद्या, षट्कूटा, वेदपूजिता, कूटषोड़शसम्पन्ना, तुरीया, परमाकला, षोड़शी, मन्त्रयन्त्राणामीश्वरी, मेरुमण्डला, षोड़शार्णा, त्रिवर्णा, बिन्दुनादस्वरूपिणी, वर्णातीता, वर्णमाता, शब्दब्रह्ममहासुखा, चैतन्यवल्ली, कूटात्मा, कामेशी, स्वप्नदृश्यगा, स्वप्नावती, बोधकरी, जागृति, जागराश्रया, स्वप्नाश्रया, सुषुप्ति, तन्द्रामुक्ता, माधवी, लोपामुद्रा, कामराज्ञी, मानवी, वित्तपार्चिता, शाकम्भरी, नन्दिविद्या, भास्वद्विद्योतमालिनी, माहेन्द्री, स्वर्गसम्पत्ति, दुर्वास:सेविता, श्रुति, साधकेन्द्रगति, साध्वी, सुलभा, सिद्धिकन्दरा, पुरत्रयेशी, पुरजिदर्चिता, पुरदेवता, पुष्टि, विघ्नहरी, भूति, विगुणा, पूज्यकामधुक्, हिरण्यमाता, गणपा, गुहमाता, नितम्बिनी, सर्वसीमन्तिनी, मोक्षा, दीक्षा, दीक्षितमातृका, साधकाम्बा, सिद्धमाता, साधकेन्द्रा, मनोरमा, यौवनोन्मादिनी, तुङ्गा, सुश्रोणी, मदमन्थरा, पद्मरक्तोत्पलवती, रक्तमाल्यानुलेपना, रक्तमालारुचि, शिखा, शिखण्डिनी, अतिसुन्दरी, शिखण्डिनृत्तसन्तुष्टा, सौरभेयी, वसुन्धरा, सुरभी, कामदा, काम्या, कमनीयार्थकामदा, नन्दिनी, लक्षणवती, वशिष्ठालयदेवता, गोलोकदेवी, लोकश्री, गोलोकपरिपालिका।।४९-६२।।

हविर्धानी देवमाता वृन्दारकवरानुयुक् ।
रुद्रपत्नी भद्रमाता सुधाधाराऽम्बुविक्षतिः ॥६३॥
दक्षिणा यज्ञसम्मूर्तिः सुबाला धीरनन्दिनी ।
क्षीरपूर्णार्णवगतिः सुधायोनिः सुलोचना ॥६४॥
रामानुगा सुसेव्या च सुगन्धालयवासगा ।
सुचरित्रा सुत्रिपुरा सुस्तनी स्तनवत्सला ॥६५॥
रजस्वला रजोयुक्ता रञ्जिका रङ्गमालिका ।
रक्तप्रिया सुरक्ता च रतिरङ्गस्वरूपिणी ॥६६॥
रजःशुक्राम्बिका निष्ठा रतिनिष्ठा रतिस्पृहा ।
हावभावा कामकेलिसर्वस्वा सुरजीविका ॥६७॥
स्वयम्भूकुसुमानन्दा स्वयम्भूकुसुमप्रिया ।
स्वयम्भूप्रीतिसन्तुष्टा स्वयम्भूनिन्दकान्तकृत् ॥६८॥
स्वयम्भूस्था शक्तिपुटी रतिसर्वस्वपीठिका ।
अत्यन्तसभिका दूती विदग्धा प्रीतिपूजिता ॥६९॥
कुल्लिका यन्त्रनिलया योगपीठाधिवासिनी ।
सुलक्षणा रसरूपा सर्वलक्षणलक्षिता ॥७०॥
नानालङ्कारसुभगा पञ्चबाणसमर्चिता ।
ऊर्ध्वत्रिकोणनिलया बाला कामेश्वरी तथा ॥७१॥
गणाध्यक्षा कुलाध्यक्षा लक्ष्मीश्चैव सरस्वती ।
वसन्तसमयप्रीता प्रीतिः कुचभरानता ॥७२॥
कलाधरमुखाऽमूर्धा पादवृद्धिः कलावती ।
पुष्पप्रिया धृतिश्चैव रतिकण्ठी मनोरमा ॥७३॥
मदनोन्मादिनी चैव मोहिनी पार्वणीकला ।
शोषिणी वशिनी राजिन्यत्यन्तसुभगा भगा ॥७४॥
पूषा वशा च सुमना रतिः प्रीतिर्धृतिस्तथा ।
ऋद्धिः सौम्या मरीच्यंशुमाला प्रत्यङ्गिरा तथा ॥७५॥
शशिनी चैव सुच्छाया सम्पूर्णमण्डलोदया ।
तुष्टा चामृतपूर्णा च भगयन्त्रनिवासिनी ॥७६॥
लिङ्गयन्त्रालया(५००)शम्भुरूपा संयोगयोगिनी ।

हविर्धानी, देवमाता, वृन्दारकवरानुयुक्, रुद्रपत्नी, भद्रमाता, सुधाधारा, अम्बुवि-

क्षति, दक्षिणंा, यज्ञसम्मूर्ति, सुबाला, धीरनन्दिनी, क्षीरपूर्णार्णवगति, सुधायोनि, सुलोचना, रामानुगा, सुसेव्या, सुगन्धालयवासगा, सुचरित्रा, सुत्रिपुरा, सुस्तनी, स्तनवत्सला, रजस्वला, रजोयुक्ता, रञ्जिका, रङ्गमालिका, रक्तप्रिया, सुरक्ता, रतिरङ्गस्वरूपिणी, रजःशुक्राम्बिका, निष्ठा, रतिनिष्ठा, रतिस्पृहा, हावभावा, कामकेलिसर्वस्वा, सुरजीविका, स्वयम्भूकुसुमानन्दा, स्वयम्भूकुसुमप्रिया, स्वयम्भूप्रीतिसन्तुष्टा, स्वयम्भूनिन्दकान्तकृत्, स्वयम्भूस्था, शक्तिपुटी, रतिसर्वस्वपीठिका, अत्यन्तसभिका, दूती, विदग्धा, प्रीतिपूजिता, कुल्लिका, यन्त्रनिलया, योगपीठाधिवासिनी, सुलक्षणा, रसरूपा, सर्वलक्षणलक्षिता, नानालङ्कारसुभगा, पञ्चबाणसमर्चिता, ऊर्ध्वत्रिकोणनिलया, बाला, कामेश्वरी, गणाध्यक्षा, कुलाध्यक्षा, लक्ष्मी, सरस्वती, वसन्तसमयप्रीता, प्रीति, कुचभारनता, कलाधरमुखा, अमूर्धा, पादवृद्धि, कलावती, पुष्पप्रिया, धृति, रतिकण्ठी, मनोरमा, मदनोन्मादिनी, मोहिनी, पार्वणीकला, शोषिणी, वशिनी, राजिनी, अत्यन्तसुभगा, भगा, पूषा, वशा, सुमना, रति, प्रीति, धृति, ऋद्धि, सौम्या, मरीच्यंशुमाला, प्रत्यङ्गिरा, शशिनी, सुच्छाया, सम्पूर्णमण्डलोदया, तुष्टा, अमृतपूर्णा, भगयन्त्रनिवासिनी, लिङ्गयन्त्रालया, शम्भुरूपा, संयोगयोगिनी॥६३-७६॥

द्राविणी बीजरूपा च अक्षुब्धा साधकप्रिया ॥७७॥
राजबीजमयी राज्यसुखदा वाञ्छितप्रदा ।
रजःसंवीर्यशक्तिश्च शुक्रविच्छिवरूपिणी ॥७८॥
सर्वसारा सारमया शिवशक्तिमयी प्रभा ।
संयोगानन्दनिलया संयोगप्रीतिमातृका ॥७९॥
संयोगकुसुमानन्दा संयोगा योगवर्धिनी ।
संयोगसुखदावस्था चिदानन्दैकसेविता ॥८०॥
अर्घ्यपूजकसम्पत्तिरर्घ्यद्रव्यस्वरूपिणी ।
सामरस्या परा प्रीता प्रियसङ्गमरूपिणी ॥८१॥
ज्ञानदूती ज्ञानगम्या ज्ञानयोनिः शिवालया ।
चित्कला ज्ञानसकला सकुला सकुलात्मिका ॥८२॥
कलाचतुष्टया पद्मिन्यतिसूक्ष्मा परात्मिका ।
हंसकेलिस्थली च्छाया हंसद्वयविकासिनी ॥८३॥
विरागता मोक्षकला परमात्मकलावती ।
विद्याकलान्तरात्मस्था चतुष्टयकलावती ॥८४॥
विद्यासन्तोषणा तृप्तिः परब्रह्मप्रकाशिका ।
परमात्मपरा वस्तुलीना शक्तिचतुष्टयी ॥८५॥

शान्तिर्बोधकलावाप्तिः परज्ञानात्मिकाकला ।
पश्यन्ती परमात्मस्था चान्तरात्मकलाऽकुला ॥८६॥
मध्यमा वैखरी चात्मकलानन्दा कलावती ।
तारिणी तरणी तारा शिवलिङ्गालयाऽऽत्मवित् ॥८७॥
परस्परशुभाचारा ब्रह्मानन्दविनोदिनी ।
रसालसा दूतरासा सार्था सार्थप्रिया ह्युमा ॥८८॥
जात्यादिरहिता योगियोगिन्यानन्दवर्धिनी ।
वीरभावप्रदा दिव्या वीरसूर्वीरभावदा ॥८९॥
पशुत्वाभिवीरगतिर्वीरसङ्गमहोदया ।
मूर्धाभिषिक्ता राजश्रीः क्षत्रियोत्तममातृका ॥९०॥
शस्त्रास्त्रकुशला शोभा रसस्था युद्धजीविका ।
विजया योगिनी यात्रा परसैन्यविमर्दिनी ॥९१॥

द्राविणी, बीजरूपा, अक्षुब्धा, साधकप्रिया, राजबीजमयी, राज्यसुखदा, वाञ्छितप्रदा, रजःसंवीर्यशक्ति, शुक्रविच्छिवरूपिणी, सर्वसारा, सारमया, शिवशक्तिमयी, प्रभा, संयोगानन्दनिलया, संयोगप्रीतिमातृका, संयोगकुसुमानन्दा, संयोगा, योगवर्धिनी, संयोगसुखदावस्था, चिदानन्दैकसेविता, अर्घ्यपूजकसम्पत्ति, अर्घ्यद्रव्यस्वरूपिणी, सामरस्या, परा, प्रीता, प्रियसङ्गमरूपिणी, ज्ञानदूती, ज्ञानगम्या, ज्ञानयोनि, शिवालया, चित्कला, ज्ञानसकला, सकुला, सकुलात्मिका, कलाचतुष्टया, पद्मिनी, अतिसूक्ष्मा, परात्मिका, हंसकेलिस्थली, छाया, हंसद्वयविकासिनी, विरागता, मोक्षकला, परमात्मकलावती, विद्याकलान्तरात्मस्था, चतुष्टयकलावती, विद्यासन्तोषणा, तृप्ति, परब्रह्मप्रकाशिका, परमात्मपरा, वस्तुलीना, शक्तिचतुष्टयी, शान्ति, बोधकलावती, परज्ञानात्मिकाकला, पश्यन्ती, परमात्मस्था, अन्तरात्मकलाऽकुला, मध्यमा, वैखरी, आत्मकलानन्दा, कलावती, तारिणी, तरणी, तारा, शिवलिङ्गालया, आत्मवित्, परस्परशुभाचारा, ब्रह्मानन्दविनोदिनी, रसालसा, दूतरासा, सार्था, सार्थप्रिया, उमा, जात्यादिरहिता, योगियोगिन्यानन्दवर्धिनी, वीरभावप्रदा, दिव्या, वीरसू, वीरभावदा, पशुत्वाभिवीरगति, वीरसङ्गमहोदया, मूर्धाभिषिक्ता, राजश्री, क्षत्रियोत्तममातृका, शस्त्रास्त्रकुशला, शोभा, रसस्था, युद्धजीविका, विजया, योगिनी, यात्रा, परसैन्यविमर्दिनी।।७७-९१।।

पूर्णा(६००)वित्तैषिणी वित्ता वित्तसञ्चयशालिनी ।
भाण्डागारस्थिता रत्ना रत्नश्रेण्यधिवासिनी ॥९२॥
महिषी राजभोग्या च गणिका गणभोगभृत् ।
करिणी वडवा योग्या मल्लसेना पदातिका ॥९३॥

सैन्यश्रेणी शौर्यरता पताका ध्वजवासिनी ।
सुच्छत्रा चाम्बिका चाम्बा प्रजापालनसद्गतिः ॥९४॥
सुरभिः पूजकाचारा राजकार्यपरायणा ।
ब्रह्मक्षत्रमयी सोमसूर्यान्तर्यामिनी स्थितिः ॥९५॥
पौरोहित्यप्रिया साध्वी ब्रह्माणी यज्ञसन्ततिः ।
सोमपानपरा प्रीता जनाढ्या तपना क्षमा ॥९६॥
प्रतिग्रहपरा दात्री सृष्टा जातिः सतांगतिः ।
गायत्री वेदलभ्या च दीक्षा सन्ध्यापरायणा ॥९७॥
रत्नसद्दीधितिर्विश्ववासना विश्वजीविका ।
कृषिवाणिज्यभूतिश्च वृद्धिर्धी च कुसीदिका ॥९८॥
कुलाधारा सुप्रसारा मनोन्मनी परायणा ।
शूद्रा विप्रगतिः कर्मकरी कौतुकपूजिका ॥९९॥
नानाविचारचतुरा बाला प्रौढा कलामयी ।
सुकर्णधारा नौः पारा सर्वाशा दुर्गमोचनी ॥१००॥
दुर्गा विन्ध्यवनस्था च कन्दर्पनयपूरणी ।
भूभारशमनी कृष्णा रक्षाराध्या रसोल्लसा ॥१०१॥
त्रिविधोत्पातशमनी समग्रसुखशेवधिः ।
पञ्चावयववाक्यश्रीः प्रपञ्चोद्यानचद्रिका ॥१०२॥
सिद्धसन्दोहसुखिता योगिनीवृन्दवन्दिता ।
नित्या षोडशरूपा च कामेशी भगमालिनी ॥१०३॥
नित्यक्लिन्ना च भीरुण्डा वह्निमण्डलवासिनी ।
महाविद्येश्वरीनित्या शिवदूतीति विश्रुता ॥१०४॥
त्वरिता प्रथिता ख्याता विख्याता कुलसुन्दरी ।
नित्या नीलपताका च विजया सर्वमङ्गला ॥१०५॥
ज्वालामाला(७००)विचित्रा च महात्रिपुरसुन्दरी ।

पूर्णा, वित्तैषिणी, वित्ता, वित्तसञ्चयशालिनी, भाण्डागारस्थिता, रत्ना, रत्नश्रेण्यधिवासिनी, महिषी, राजभोग्या, गणिका, गणभोगभृत्, करिणी, वड़वा, योग्या, मल्लसेना, पदातिका, सैन्यश्रेणी, शौर्यरता, पताका, ध्वजवासिनी, सुच्छत्रा, अम्बिका, अम्बा, प्रजापालनसद्गति, सुरभि, पूजकाचारा, राजकार्यपरायणा, ब्रह्मक्षत्रमयी, सोमसूर्यान्तर्यामिनी, स्थिति, पौरोहित्यप्रिया, साध्वी, ब्रह्माणी, यज्ञसन्तति, सोमपानपरा, प्रीता, जनाढ्या, तपना, क्षमा, प्रतिग्रहपरा,

दात्री, सृष्टा, जाति, सताङ्गति, गायत्री, वेदलभ्या, दीक्षा, सन्ध्यापरायणा, रत्नसद्दीधिति, विश्ववासना, विश्वजींविका, कृषिवाणिज्यभूति, वृद्धि, धी, कुर्सीदिका, कुलाधारा, सुप्रसारा, मनोन्मनी, परायणा, शूद्रा, विप्रगति, कर्मकरी, कौतुकपूजिका, नानाविचारचतुरा, बाला, प्रौढा, कलामयी, सुकर्णधारा, नौः, पारा, सर्वाशा, दुर्गमोचनी, दुर्गा, विन्ध्यवनस्था, कन्दर्पनयपूरिणी, भूभारशमनी, कृष्णा, रक्षाराध्या, रसोल्लसा, त्रिविधोत्पातशमनी, समग्रसुखशेवधि, पञ्चावयववाक्यश्री, प्रपञ्चोद्यानचन्द्रिका, सिद्धसन्दोहसुखिता, योगिनीवृन्दवन्दिता, नित्याषोडशरूपा, कामेशी, भगमालिनी, नित्यक्लिन्ना, भीरुण्डा, वह्निमण्डलवासिनी, महाविद्येश्वरी नित्या, शिवदूती, त्वरिता, प्रथिता, ख्याता, विख्याता, कुलसन्दरी, नित्या, नीलपताका, विजया, सर्वमङ्गला, ज्वालामाला, विचित्रा, महात्रिपुरसुन्दरी।।९१-१०५।।

गुरुवृन्दा परगुरुः प्रकाशानन्दनाथिनी ॥१०६॥
शिवानन्दानाथरूपा शक्त्यानन्दस्वरूपिणी ।
देव्यानन्दानाथमयी कौलेशानन्दनाथिनी ॥१०७॥
दिव्यौघगुरुरूपा च समयानन्दनाथिनी ।
शुक्लदेव्यानन्दनाथा कुलेशानन्दनाथिनी ॥१०८॥
क्लिन्नाङ्गानन्दरूपा च समयानन्दनाथिनी ।
वेदानन्दनाथमयी सहजानन्दनाथिनी ॥१०९॥
सिद्धौघगुरुरूपा च अपरागुरुरूपिणी ।
गगनानन्दनाथा च विश्वानन्दस्वनाथिनी ॥११०॥
विमलानन्दनाथा च मदनानन्दनाथिनी ।
भुवनाद्या च लीलाया नन्दनानन्दनाथिनी ॥१११॥
स्वात्मानन्दानन्दरूपा प्रियाद्यानन्दनाथिनी ।
मानवौघगुरुश्रेष्ठा परमेष्ठिगुरुप्रभा ॥११२॥
परगुह्या गुरुशक्तिः स्वगुरुकीर्तनप्रिया ।
त्रैलोक्यमोहनख्याता सर्वाशापरिपूरका ॥११३॥
सर्वसंक्षोभिणी पूर्वाम्नायप्रथितवैभवा ।
शिवाशक्तिः शिवशक्तिः शिवचक्रत्रयालया ॥११४॥
सर्वसौभाग्यदाख्या च सर्वार्थसाधिकाह्वया ।
सर्वरक्षाकराख्या च दक्षिणाम्नायदेवता ॥११५॥
मध्यार्कचक्रनिलया पश्चिमाम्नायदेवता ।

नवचक्रकृतावासा कौबेराम्नायदेवता ॥११६॥
कुबेरपूज्या कुलजा कुलाम्नायप्रवर्तिनी ।
बिन्दुचक्रकृतावासा मध्यसिंहासनेश्वरी ॥११७॥
श्रीविद्या च महालक्ष्मीः लक्ष्मीः शक्तित्रयात्मिका ।
सर्वसाम्राज्यलक्ष्मीश्च पञ्चलक्ष्मीति विश्रुता ॥११८॥
श्रीविद्या च परज्योतिः परनिष्कलशाम्भवी ।
मातृका पञ्चकोशी च श्रीविद्या त्वरिता तथा ॥११९॥
पारिजातेश्वरी चैव त्रिकूटा पञ्चबाणगा ।
पञ्चकल्पलता पञ्चविद्या चामृतपीठिका ॥१२०॥
सुधासू रमणेशाना चान्नपूर्णा च कामधुक् ।
श्रीविद्या सिद्धलक्ष्मीश्च मातङ्गी भुवनेश्वरी ॥१२१॥
वाराही पञ्चरत्नानामीश्वरी मातृवर्णगा ।
पराज्योतिः कोशरूपा ऐन्दवी कलया युता ॥१२२॥
परितः स्वामिनी शक्तिदर्शना रविबिन्दुयुक् ।
ब्रह्मदर्शनरूपा च शिवदर्शनरूपिणी ॥१२३॥
विष्णुदर्शनरूपा च सृष्टिचक्रनिवासिनी ।
सौरदर्शनरूपा च स्थितिचक्रकृतालया ॥१२४॥
बौधदर्शनरूपा च महात्रिपुरसुन्दरी ।
तत्त्वमुद्राम्बरूपा च प्रसन्ना(८००)ज्ञानमुद्रिका ॥१२५॥

गुरुवृन्दा, परगुरु, प्रकाशानन्दनाथिनी, शिवानन्दानाथरूपा, शक्त्यानन्दस्वरूपिणी, देव्यानन्दानाथमयी, कौलेशानन्दनाथिनी, दिव्यौघगुरुरूपा, समयानन्दनाथिनी, शुक्लदेव्यानन्दनाथा, कुलेशानन्दनाथिनी, क्लिन्नाङ्गानन्दरूपा, वेदानन्दनाथमयी, सहजानन्दनाथिनी, सिद्धौघगुरुरूपा, अपरागुरुरूपिणी, गगनानन्दनाथा, विश्वानन्दस्वनाथिनी, विमलानन्दनाथा, मदनानन्दनाथिनी, भुवनाद्या, लीलाद्या, नन्दनानन्दनाथिनी, स्वात्मानन्दानन्दरूपा, प्रियाद्यानन्दनाथिनी, मानवौघगुरुश्रेष्ठा, परमेष्ठिगुरुप्रभा, परगुह्या, गुरुशक्ति, स्वगुरुकीर्तनप्रिया, त्रैलोक्यमोहनख्याता, सर्वाशापरिपूरका, सर्वसंक्षोभिणी, पूर्वाम्नायप्रथितवैभवा, शिवाशक्ति, शिवशक्ति, शिवचक्रत्रयालया, सर्वसौभाग्यदाख्या, सर्वार्थसाधिकाह्वया, सर्वरक्षाकराख्या, दक्षिणाम्नायादेवता, मध्यार्कचक्रनिलया, पश्चिमाम्नायदेवता, नवचक्रकृतावासा, कौबेराम्नायदेवता, कुबेरपूज्या, कुलजा, कुलाम्नायप्रवर्तिनी, बिन्दुचक्रकृतावासा, मध्यसिंहासनेश्वरी, श्रीविद्यामहालक्ष्मी, लक्ष्मी, शक्तित्रयात्मिका, सर्वसाम्राज्यलक्ष्मी, पञ्चलक्ष्मी, श्रीविद्या-

परज्योति, परनिष्कलशाम्भवी, मातृका, पञ्चकोशी, श्रीवेद्यात्वरिता, पारिजातेश्वरी, त्रिकूटा, पञ्चबाणगा, पञ्चकल्पलता, पञ्चविद्या, अमृतपीठिका, सुधासू, रमणेशाना, अन्नपूर्णा, कामधुक्, श्रीविद्यासिद्धलक्ष्मी, मातङ्गी, भुवनेश्वरी, वाराही, पञ्चरत्नेश्वरी, मातृवर्णगा, पराज्योति, कोशरूपा, ऐन्दवी, परित: स्वामिनी, शक्तिदर्शना, रविबिन्दुयुक्, ब्रह्मदर्शनरूपा, शिवदर्शनरूपिणी, विष्णुदर्शनरूपा, सृष्टिचक्रनिवासिनी, सौरदर्शनरूपा, स्थितिचक्रकृतालया, बौधदर्शनरूपा, महात्रिपुरसुन्दरी, तत्त्वमुद्रास्वरूपा, प्रसन्ना, ज्ञानमुद्रिका।।१०६-१२५।।

सर्वोपचारसन्तुष्टा हृन्मयी शीर्षदेवता।
शिखास्थिता ब्रह्ममयी नेत्रत्रयविलासिनी ॥१२६॥
अस्त्रस्था चतुरस्त्रा च द्वारका द्वारवासिनी।
अणिमा पश्चिमस्था च लघिमोत्तरदेवता ॥१२७॥
पूर्वस्था महिमेशित्वा दक्षिणद्वारदेवता।
वशित्वा वायुकोणस्था प्राकाम्येशानदेवता ॥१२८॥
अग्निकोणस्थिता भुक्तिरिच्छा नैर्ऋतवासिनी।
प्राप्तिसिद्धिरवस्था च प्राकाम्यार्धविलासिनी ॥१२९॥
ब्राह्मी माहेश्वरी चैव कौमारी वैष्णवी तथा।
वाराह्यैन्द्री च चामुण्डा महालक्ष्मीर्दिशांगतिः ॥१३०॥
क्षोभिणी द्राविणीमुद्राऽऽकर्षोन्मादनकारिणी।
महाङ्कुशा खेचरी च बीजाख्या योनिमुद्रिका ॥१३१॥
सर्वाशापूरचक्रस्था कार्यसिद्धिकरी तथा।
कामाकर्षिणिकाशक्तिर्बुद्ध्याकर्षणरूपिणी ॥१३२॥
अहङ्काराकर्षिणी च शब्दाकर्षणरूपिणी।
स्पर्शाकर्षणरूपा च रूपाकर्षणरूपिणी ॥१३३॥
रसाकर्षणरूपा च गन्धाकर्षणरूपिणी।
चित्ताकर्षणरूपा च धैर्याकर्षणरूपिणी ॥१३४॥
स्मृत्याकर्षणरूपा च बीजाकर्षणरूपिणी।
अमृताकर्षिणी चैव नामाकर्षणरूपिणी ॥१३५॥
शरीराकर्षिणीदेवी आत्माकर्षणरूपिणी।
षोडशस्वररूपा च स्रवत्पीयूषमन्दिरा ॥१३६॥
त्रिपुरेशी सिद्धरूपा कलादलनिवासिनी।
सर्वसंक्षोभचक्रेशी शक्तिर्गुप्ततराभिधा ॥१३७॥

अनङ्गकुसुमाशक्तिरनङ्गकटिमेखला ।
अनङ्गमदनाऽनङ्गमदनातुररूपिणी ॥१३८॥
अनङ्गरेखा चानङ्गवेगानङ्गाङ्कुशाभिधा ।
अनङ्गमालिनी शक्तिरष्टवर्गदिगन्विता ॥१३९॥
वसुपत्रकृतावासा श्रीमत्त्रिपुरसुन्दरी ।
सर्वसाम्राज्यसुखदा सर्वसौभाग्यदेश्वरी ॥१४०॥
सम्प्रदायेश्वरी सर्वसंक्षोभणकरी तथा ।
सर्वविद्राविणी सर्वाकर्षणोपप्रकारिणी ॥१४१॥
सर्वाह्लादनशक्तिश्च सर्वजृम्भणकारिणी ।
सर्वस्तम्भनशक्तिश्च सर्वसंमोहिनी तथा ॥१४२॥
सर्ववश्यकरीशक्तिः सर्वसर्वानुरञ्जिनी ।
सर्वोन्मादनशक्तिश्च सर्वार्थसाधकारिणी ॥१४३॥
सर्वसम्पत्तिदाशक्तिः सर्वमन्त्रमयी तथा ।
सर्वद्वन्द्वक्षयकरी(९००)सिद्धिस्त्रिपुरवासिनी ॥१४४॥

सर्वोपचारसन्तुष्टा, हृन्मयी, शीर्षदेवता, शिखास्थिता, ब्रह्ममयी, नेत्रत्रयविलासिनी, अस्त्रस्था, चतुरस्रा, द्वारका, द्वारवासिनी, अणिमा, पश्चिमस्था, लघिमा, उत्तरदेवता, पूर्वस्था, महिमा, ईशित्वा, दक्षिणद्वारदेवता, वशित्वा, वायुकोणस्था, प्राकाम्या, ईशानदेवता, अग्निकोणस्थिता, भुक्ति, इच्छा, नैर्ऋतवासिनी, प्राप्तिसिद्धिरवस्था, प्राकाम्यार्धविलासिनी, ब्राह्मी, माहेश्वरी, कौमारी, वैष्णवी, वाराही, ऐन्द्री, चामुण्डा, महालक्ष्मी, दिशाङ्गति, क्षोभिणी, द्राविणी, आकर्षिणी, उन्मादनकारिणी, महाङ्कुशा, खेचरी, बीजा, योनिमुद्रिका, सर्वाशापरिपूरकचक्रस्था, कार्यसिद्धिकरी, कामाकर्षिणीकाशक्ति, बुद्ध्याकर्षणरूपिणी, अहङ्काराकर्षिणी, शब्दाकर्षणरूपिणी, स्पर्शाकर्षणरूपा, रूपाकर्षणरूपिणी, रसाकर्षणरूपा, गन्धाकर्षणरूपिणी, चित्ताकर्षणरूपा, धैर्याकर्षणरूपिणी, स्मृत्याकर्षणरूपा, बीजाकर्षणरूपिणी, अमृताकर्षिणी, नामाकर्षणरूपिणी, शरीराकर्षिणी देवी, आत्माकर्षणरूपिणी, षोड़शस्वररूपा, स्रवत्पीयूषमन्दिरा, त्रिपुरेशी, सिद्धरूपा, कलादलनिवासिनी, सर्वसंक्षोभचक्रेशी, शक्तिगुप्ततरा, अनङ्गकुसुमाशक्ति, अनङ्गकटिमेखला, अनङ्गमदना, अनङ्गमदनातुररूपिणी, अनङ्गरेखा, अनङ्गवेगा, अनङ्गाङ्कुशा, अनङ्गमालिनी, शक्तिरष्टवर्गदिगन्विता, वसुपत्रकृतावासा, श्रीमत्त्रिपुरसुन्दरी, सर्वसाम्राज्यसुखदा, सर्वसौभाग्यदेश्वरी, सम्प्रदायेश्वरी, सर्वसंक्षोभणकरी, सर्वविद्राविणी, सर्वाकर्षणोपप्रकारिणी, सर्वाह्लादनशक्ति, सर्वजृम्भणकारिणी, सर्वस्तम्भनशक्ति, सर्वसम्मोहिनी, सर्ववश्यकरीशक्ति, सर्वसर्वानुरञ्जिनी, सर्वोन्मादनशक्ति,

सर्वार्थसाधकारिणी, सर्वसम्पत्तिदाशक्ति, सर्वमन्त्रमयी, सर्वद्वन्द्वक्षयकरी, सिद्धि, त्रिपुरवासिनी।।१२६-१४४।।

सर्वार्थसाधकेशी च सर्वकार्यार्थसिद्धिदा ।
चतुर्दशारचक्रेशी कलायागसमन्विता ॥१४५॥
सर्वसिद्धिप्रदादेवी सर्वसम्पत्प्रदा तथा ।
सर्वप्रियङ्करीशक्तिः सर्वमङ्गलकारिणी ॥१४६॥
सर्वकामप्रपूर्णा च सर्वदुःखप्रमोचिनी ।
सर्वमृत्युप्रशमनी सर्वविघ्नविनाशिनी ॥१४७॥
सर्वाङ्गसुन्दरीदेवी सर्वसौभाग्यदायिनी ।
त्रिपुरेशी सर्वसिद्धिप्रदा च दशकोणगा ॥१४८॥
सर्वरक्षाकरेशी च निगर्भायोगिनी तथा ।
सर्वज्ञा सर्वशक्तिश्च सर्वैश्वर्यप्रदा तथा ॥१४९॥
सर्वज्ञानमयीदेवी सर्वव्याधिविनाशिनी ।
सर्वाधारस्वरूपा च सर्वपापहरा तथा ॥१५०॥
सर्वानन्दमयीदेवी सर्वरक्षास्वरूपिणी ।
महिमाशक्तिदेवी च देवीसर्वसमृद्धिदा ॥१५१॥
अन्तर्दशारचक्रेशी देवीत्रिपुरमालिनी ।
सर्वरोगहरेशी च रहस्यायोगिनी तथा ॥१५२॥
वाग्देवी वशिनी चैव देवीकामेश्वरी तथा ।
मोदिनी विमला चैव अरुणा जयिनी तथा ॥१५३॥
सर्वेश्वरी कौलिनी च ह्यष्टारसर्वसिद्धिदा ।
सर्वकामप्रदेशी च परापररहस्यवित् ॥१५४॥
त्रिकोणचतुरस्था च सर्वैश्वर्याऽऽयुधात्मिका ।
कामेश्वरी बाणरूपा कामेशी चापरूपिणी ॥१५५॥
कामेशी पाशरूपा च कामेश्यङ्कुशरूपिणी ।
कामेश्वरीन्द्रशक्तिश्च अग्निचक्रकृतालया ॥१५६॥
कामगिर्यधिदेवी च त्रिकोणस्थाऽग्रकोणगा ।
दक्षकोणेश्वरी विष्णुशक्तिर्जालन्धराश्रया ॥१५७॥
सूर्यचक्रालया रुद्रशक्तिर्वामाङ्गकोणगा ।
सोमचक्रब्रह्मशक्तिः पूर्णगिर्यनुरागिणी ॥१५८॥

श्रीमत्त्रिकोणभुवना त्रिपुरात्ममहेश्वरी ।
सर्वानन्दमयेशी च बिन्दुगतिरहस्यभृत् ।।१५९।।
परब्रह्मस्वरूपा च महात्रिपुरसुन्दरी ।
सर्वचक्रान्तरस्था च समस्तचक्रनायिका ।।१६०।।
सर्वचक्रेश्वरी सर्वमन्त्राणामीश्वरी तथा ।
सर्वविद्येश्वरी चैव सर्ववागीश्वरी तथा ।।१६१।।
सर्वयोगीश्वरी चैव पीठेश्वर्य्यखिलेश्वरी ।
सर्वकामेश्वरी सर्वतत्त्वैश्वर्यागमेश्वरी ।।१६२।।
शक्तिः शक्तिदृगुल्लासा निर्द्वन्द्वा द्वैतगर्भिणी ।
निष्प्रपञ्चा महामाया सप्रपञ्चा स्ववासिनी ।।१६३।।
सर्वविश्वोत्पत्तिधात्री परमानन्दसुन्दरी(१०००) ।

सर्वार्थसाधकेशी, सर्वकार्यार्थसिद्धिदा, चतुर्दशारचक्रेशी, कलायागसमन्विता, सर्वसिद्धिप्रदादेवी, सर्वसम्पत्प्रदा, सर्वप्रियङ्करी, सर्वमण्डलकारिणी, सर्वकामप्रपूर्णा, सर्वदु:खप्रमोचिनी, सर्वमृत्युप्रशमनी, सर्वविघ्नविनाशिनी, सर्वांगसुन्दरीदेवी, सर्वसौभाग्यदायिनी, त्रिपुरेशी, सर्वसिद्धिप्रदा, दशकोणगा, सर्वरक्षाकरेशी, निगर्भायोगिनी, सर्वज्ञा, सर्वशक्ति, सर्वैश्वर्यप्रदा, सर्वज्ञानमयीदेवी, सर्वव्याधिविनाशिनी, सर्वाधारस्वरूपा, सर्वपापहरा, सर्वानन्दमयीदेवी, सर्वरक्षास्वरूपिणी, महिमाशक्तिदेवी, सर्वसमृद्धिदादेवी, अन्तर्दशारचक्रेशी, त्रिपुरमालिनीदेवी, सर्वरोगहरेशी, रहस्यायोगिनी, वाग्देवी, वशिनी, कामेश्वरी, मोदिनी, विमला, अरुणा, जयिनी, सर्वेश्वरी, कौलिनी, अष्टारसर्वसिद्धिदा, सर्वकामप्रदेशा, परापररहस्यवित्, त्रिकोणचतुरस्रा, सर्वैश्वर्या, आयुधात्मिका, कामेश्वरी, वाणरूपा, कामेशी, चापरूपिणी, कामेशी पाशरूपा, कामेशी अङ्कुशरूपिणी, कामेश्वरी इन्द्रशक्ति, अग्निचक्रकृतालया, कामगिरि अधिदेवी, त्रिकोणस्था, अग्रकोणगा, दक्षकोणेश्वरी, विष्णुशक्ति, जलन्धराश्रया, सूर्यचक्रालया, रुद्रशक्ति, वामाङ्गकोणगा, सोमचक्रब्रह्मशक्ति, पूर्णगिर्यनुरागिणी, श्रीमत्त्रिकोणभुवना, त्रिपुरात्ममहेश्वरी, सर्वानन्दमयेशी, बिन्दुगतिरहस्यभृत्, परब्रह्मस्वरूपा, महात्रिपुरसुन्दरी, सर्वचक्रान्तरस्था, समस्तचक्रनायिका, सर्वचक्रेश्वरी, सर्वमन्त्रेश्वरी, सर्वविद्येश्वरी, सर्ववागीश्वरी, सर्वयोगीश्वरी, पीठेश्वरी, अखिलेश्वरी, सर्वकामेश्वरी, सर्वतत्त्वैश्वर्यागमेश्वरी, शक्ति, शक्तिदृगुल्लासा, निर्द्वन्द्वा, द्वैतगर्भिणी, निष्प्रपञ्चा, महामाया, सप्रपञ्चा, स्ववासिनी, सर्वविश्वोत्पत्तिधात्री, परमानन्दसुन्दरी।।१४५-१६३।।

फलश्रुतिः

इत्येतत्कथितं दिव्यं परमानन्दकारणम् ।।१६४।।
लावण्यसिन्धुलहरीबालायास्तोषमन्दिरम् ।

सहस्रनाम तन्त्राणां सारमाकृष्य पार्वति ॥१६५॥
अनेन स्तुवतो नित्यमर्धरात्रे निशामुखे।
प्रातःकाले च पूजायां सर्वकालमतः प्रिये ॥१६६॥
सर्वसाम्राज्यसुखदा बाला च परितुष्यति।
रत्नानि विविधान्यस्य वित्तानि प्रचुराणि च ॥१६७॥
मनोरथपथस्थानि ददाति परमेश्वरी।
पुत्राः पौत्राश्च वर्धन्ते सन्ततिः सर्वकालिकी ॥१६८॥

फलश्रुति—हे पार्वति! परमानन्द के कारणस्वरूप, लावण्यरूपी समुद्र के तरङ्गस्वरूप बाला को सन्तुष्ट करने हेतु मन्दिरस्वरूप यह दिव्य सहस्रनाम समस्त तन्त्रों के सारतत्त्व को एकत्रित कर मैंने कहा है। हे प्रिये! इस सहस्रनाम स्तोत्र से नित्य सायंकाल अथवा आधी रात में देवी की स्तुति करने से एवं प्रातःकाल पूजा के सभी अवसरों पर पाठ करने से समस्त साम्राज्यसुख देने वाली बाला सन्तुष्ट होती है और वह परमेश्वरी विविध रत्न, धान्य, प्रचुर धन एवं जो भी अभीष्ट हो देती हैं। पुत्र-पौत्र-सन्तति की वृद्धि सार्वकालिकी होती है।।१६४-१६८।।

शत्रवस्तस्य नश्यन्ति वर्धन्तेऽस्य बलानि च।
व्याधयस्तस्य दूरस्थाः सकलान्यौषधानि च ॥१६९॥
मन्दिराणि विचित्राणि राजन्ते तस्य सर्वदा।
कृषिः फलवती तस्य भूमिः कामदुघाव्यया ॥१७०॥

उस साधक के शत्रु नष्ट होते हैं। बल बढ़ता है, व्याधियाँ उससे दूर भाग जाती हैं एवं सभी औषधियाँ भी उससे दूर हो जाती हैं। उसके विचित्र घर सर्वदा सुशोभित रहते हैं। उसकी कृषि में फसल अच्छी होती है एवं निरन्तर कामधेनु की तरह अविनाशिनी उसकी भूमि होती है।।१६९-१७०।।

स्फीतो जनपदस्तस्य राज्यं तस्य निरीतिकम्।
मातङ्गाः पक्षिणस्तुङ्गाः सिञ्चन्तो मदवारिभिः ॥१७१॥
द्वारे तस्य विराजन्ते हृष्टा नागतुरङ्गमाः।
प्रजास्तस्य विराजन्ते निर्विवादाश्च मन्त्रिणः ॥१७२॥
ज्ञातयस्तस्य तुष्यन्ति शीलं तस्यातिसुन्दरम्।
लक्ष्मीस्तस्य वशे नित्यं स्वासना च मनोरमा ॥१७३॥

उनके जनपदों और राज्य की वृद्धि होती है। हाथी सूँड उठाकर मदजल से उसके भवनों को सिञ्चित करते हैं। उसके दरवाजे पर हृष्ट-पुष्ट हाथी और घोड़े रहते हैं। प्रजा

सुखी होती है। मन्त्रियों में विवाद नहीं होते। उसके बन्धु-बान्धव द्वारा सन्तुष्ट रहते हैं। उसका शील अति सुन्दर होता है। लक्ष्मी नित्य उसके वश में रहती है तथा उसकी पत्नी अत्यन्त मनोरमा होती है।।१७१-१७३।।

गद्यपद्यमयी वाणी तस्य गङ्गातरङ्गवत्।
नानापदपदार्थानां वादचातुर्यसम्भृता ॥१७४॥
समग्ररससम्पत्तिशालिनी लास्यमालिनी।
अदृष्टान्यपि शास्त्राणि प्रकाश्यन्ते निरन्तरम् ॥१७५॥
निग्रहः परवाक्यानां सभायां तस्य जायते।
स्तुवन्ति वन्दिनस्तं वै राजानो दासवत्तथा ॥१७६॥

उसके मुख से गद्य-पद्यमयी वाणी गङ्गा की तरङ्गों के समान निरन्तर निकलती रहती है। उसकी वाणी नाना पद-पदार्थ एवं वादचातुर्थ से पूर्ण रहती है तथा समग्र रससम्पत्ति से युक्त लास्यमालिनी होती है। अदृष्ट शास्त्र भी उसे निरन्तर प्रकाशित होते रहते हैं। वह सभा में दूसरों के वचनों का निग्रह करने वाला होता है। वन्दीजन अहर्निश उसकी स्तुति करते हैं एवं राजा लोग उसके दास के समान होते हैं।।१७४-१७६।।

शस्त्राण्यस्त्राणि तदङ्गे जनयन्ति रुजां न हि।
महिलास्तस्य वशगाः सर्वावस्था भवन्ति वै ॥१७७॥
विषं निर्विषतां याति पानीयममृतं भवेत्।
परपक्षस्तम्भनं च प्रतिपक्षस्य जृम्भणम् ॥१७८॥
नवरात्रेण जायेत स तदभ्यासयोगवित्।
अहोरात्रं पठेद्यस्तु निस्तन्द्रः शान्तमानसः ॥१७९॥
वशे तस्य प्रजा याति सर्वे लोकाः सुनिश्चितम्।
षण्मासाभ्यासयोगेन योगमायाति निश्चितम् ॥१८०॥

उसके अङ्गों से अस्त्र-शस्त्र निकलते हैं; रोग नहीं। सभी अवस्थाओं की महिलायें उसके वश में होती हैं। उसके लिये विष विषरहित हो जाता है, पानी अमृत हो जाता है, वैरी पक्ष का स्तम्भन हो जाता है और प्रतिपक्ष को जम्भाई आने लगती है। निरन्तर नौ रात्रि तक इसके अभ्यास से ही ऊपर वर्णित सभी क्षमतायें उसमें आ जाती हैं। जो निरालस, शान्त मन से दिन-रात निरन्तर इसका पाठ करता है, उसके वश में सभी लोक और प्रजायें होतीं हैं। छः मास तक इसके अभ्यास से निश्चित रूप से उसे योगसिद्धि प्राप्त होती है।।१७७-१८०।।

नित्यं कामकलां ध्यायन् यः पठेत् स्तोत्रमुत्तमम्।
मदनोन्मादकलिताः पुरन्ध्र्यस्तद्वशानुगाः ॥१८१॥
लावण्यमदनाः साक्षाद्वैदग्ध्यमुदितेक्षणाः।
प्रेमपूर्णामपि वशे ह्युर्वशीं स हि विन्दति ॥१८२॥

प्रतिदिन कामकला के ध्यानसहित जो इस उत्तम स्तोत्र का पाठ करता है, उसके वश में मदनोन्माद से उल्लसित पुरन्ध्री हो जाती है। लावण्यवती, काम से विह्वल, मुस्कुराती प्रसन्न दृष्टि से देखने वाली उर्वशी भी प्रेमपूर्वक उसके साथ रमण करने लगती हैं।।१८१-१८२।।

भूर्जपत्रे रोचनया कुङ्कुमेन शुभे दिने।
लाक्षारसद्रवेणापि यावकैर्वा विशेषतः ॥१८३॥
धातुरागेण वा देवि लिखितं यन्त्रमञ्चितम्।
सुवर्णरौप्यगर्भस्थं सुसम्पूतं सुसाधितम् ॥१८४॥
बालाबुद्ध्या पूजितं च प्रतिष्ठितसमीरणम्।
धारयेन्मस्तके कण्ठे बाहुमूले तथा हृदि ॥१८५॥
नाभौ वापि धृतं धन्यं जयदं सर्वकामदम्।
रक्षणं नापरं किञ्चिद्विद्यते भुवनत्रये ॥१८६॥

धारण-विधि—भोजपत्र पर गोरोचन-कुङ्कुम से या लाक्षारस से या महावर से या धातुराग से शुभ दिन में लिखकर सोने या चाँदी के मन्त्रित तावीज में भरकर पवित्र साधित करके उसे बालात्रिपुरा समझकर बालाविधि से प्राणप्रतिष्ठा करके पूजन करे। तब उसे मस्तक में, कण्ठ में, बाहुमूल में या वक्ष में या नाभि में धारण करे तो धारक के लिये यह धन्य, जयप्रद, सर्वकामद, रक्षाकारक होने के साथ-साथ तीनों लोक में ऐसा कुछ नही बचता, जो साधक को प्राप्त न हो सके।।१८३-१८६।।

ग्रहरोगादिभयहृत् सुखकृत्यविवर्धनम्।
बलवीर्यकरं क्रूरभूतशत्रुविनाशनम् ॥१८७॥
पुत्रपौत्रान् गुणगणैर्वर्धनं धनधान्यकृत्।
धरण्यां सा पुरी धन्या यत्रायं साधकोत्तमः ॥१८८॥
यद्गृहे लिखितं तिष्ठेत् स्तोत्रमेतद्वरानने।
तत्र चाहं शिवे नित्यं हरिश्च कमला तथा ॥१८९॥
वसामः सर्वतीर्थानामुत्पत्तिस्तत्र जायते।
यो वापि पाठयेद् भक्त्या पठेद्वै साधकोत्तमः ॥१९०॥

ज्ञानानन्दकलायोगादैक्यवृत्तिं स विन्दति ।
स्तोत्रेणानेन देवेशि तव पूजाफलं लभेत् ॥१९१॥

इसके धारण से ग्रह-रोगादि भय का नाश होता है, सुख की वृद्धि होती है। बल-वीर्य बढ़ता है, क्रूर भूत और शत्रुओं का नाश होता है। पुत्र-पौत्र के साथ-साथ गुणों की भी वृद्धि होती है, धन-धान्य प्राप्त होता है। वह नगर या धरती धन्य है, जहाँ ऐसा साधक निवास करता है। हे शिवे! जिस घर में यह स्तोत्र लिखकर रखा रहता है, वहाँ मैं, विष्णु और कमला नित्य निवास करते हैं। सभी तीर्थों की उत्पत्ति वहीं पर होती है। जो साधक इसका पाठ करवाता है या स्वयं पाठ करता है, वह ज्ञानानन्द कला के योग से देवी के साथ ऐक्य भाव को प्राप्त करता है। हे देवि! इस सहस्रनाम स्तोत्र के पाठ से साधक तुम्हारी पूजा का फल प्राप्त करता है।।१८७-१९१।।

षोढान्यासतनुर्भूत्वा पठितव्यं प्रयत्नतः ।
उत्तमा सर्वतन्त्राणां बालायाः पूजनसृतिः ॥१९२॥
तत्रोत्तमा षोडशार्णा तत्रेदं स्तोत्रमुत्तमम् ।
नाशिष्याय प्रदातव्यमशुद्धाय शठाय च ॥१९३॥
अलसायाप्रयत्नायाशिवाभक्ताय सुन्दरि ।
भक्तिहीनाय मलिने गुरुनिन्दापराय च ॥१९४॥
विष्णुभक्तिविहीनाय विकल्पावृतबुद्धये ।

शरीर में षोढ़ा न्यास करके यत्नपूर्वक इस सहस्रनाम का पाठ करना सभी तन्त्रों में बाला की उत्तम पूजा मानी गई है। बाला-पूजा में उत्तम षोडशार्णा विद्या है। उस षोडशार्णा से भी उत्तम इस सहस्रनाम का पाठ है। इसे अशिष्य को, अशुद्ध को या मूर्ख को नहीं बतलाना चाहिये अथवा हे सुन्दरि! जो आलस्ययुक्त हो, देवी का भक्त न हो, भक्तिहीन हो, मलिन हो, गुरुनिन्दक हो, विष्णुभक्ति से हीन हो, वैकल्पिक बुद्धि वाला हो, प्रयत्नरहित हो—ऐसे लोगों को यह सहस्रनाम किसी भी स्थिति में नहीं देना चाहिये।।१९२-१९४।।

देयं भक्तवरे मुक्तेः कारणं भक्तिवर्धनम् ॥१९५॥
लतायोगे पठेद्यस्तु स्तोत्रमेतद्वरानने ।
सैव कल्पलता तस्य वाञ्छाफलकरी तथा ॥१९६॥
पुष्पिताया लतायोगे कुरङ्गमुखि साधकः ।
अक्षुब्धः सन् पठेद्यस्तु शतयज्ञस्य पुण्यभाक् ॥१९७॥
ब्रह्मादयोऽपि देवेशि प्रार्थयन्ति पदद्वयम् ।
स्वयं शिवः स विज्ञेयो यो बालाभावलम्पटः ॥१९८॥

ब्रह्मानन्दमयी ज्योत्स्ना सदाशिवविधूदिता ।
आनन्दो योऽपि यं वेदा वदन्त्यस्या वशे स्थिता: ॥१९९॥
आह्लादनं बालाध्यानाद्बालाया नामकीर्तनात् ।
सदानन्दाभ्यासयोगात् सदानन्द: प्रजायते ॥२००॥

इति श्रीरुद्रयामले तन्त्रे भैरव-भैरवीसंवादे
श्रीबालात्रिपुरसुन्दरीसहस्रनामकम्॥४॥

यह सहस्रनाम श्रेष्ठ भक्त को देने से उसकी मुक्ति का कारण एवं भक्तिवर्धक होता है। हे वरानने! लताओं के पास से जो इसका पाठ करता है, उसके लिये वह लता ही कल्पलता हो जाती है और वाञ्छित फल देती है। हे कुरङ्गमुखि! पुष्पित लता के पास जो साधक बिना किसी क्षोभ के इसका पाठ करता है, वह सौ यज्ञों के पुण्य फल का भागी होता है। उसके दोनों पैरों की ब्रह्मादि देवता भी वन्दना करते हैं। वह स्वयं शिवस्वरूप माना जाता है। बालाभाव में लम्पट वह ब्रह्मानन्दमयी ज्योत्स्नायुक्त सदाशिव का प्रिय होता है। वेद में जिन आनन्दों का वर्णन किया गया है, वे सभी उसके वश में होते हैं। बाला का ध्यान और बाला का नामकीर्तन आह्लाददायक है। आनन्दपूर्वक सदा इसके अभ्यास से असीम आनन्द प्राप्त होता है।।१९५-२००।।

इस प्रकार रुद्रयामल तन्त्रोक्त श्रीदेवीरहस्य की भाषा टीका में
श्रीबालात्रिपुरसुन्दरीसहस्रनाम पूर्ण हुआ।

◆

अथ श्रीबालास्तोत्रम्

श्रीभैरव उवाच

अधुना देवि बालायाः स्तोत्रं वक्ष्यामि पार्वति ।
पञ्चमाङ्गं रहस्यं मे श्रुत्वा गोप्यं प्रयत्नतः ॥१॥

श्री भैरव ने कहा—हे पार्वति! अब मैं देवी बाला के पञ्चाङ्ग के रहस्यस्वरूप उनके स्तोत्र का वर्णन करता हूँ। इसे सुनकर यत्नपूर्वक गुप्त रखना चाहिये।।१।।

स्तोत्रविनियोगादिः

अस्य श्रीबालात्रिपुरसुन्दरीस्तोत्रमन्त्रस्य दक्षिणामूर्ति ऋषिः, पङ्क्तिश्छन्दः, श्रीबालात्रिपुरसुन्दरी देवता, ऐं बीजं, सौः शक्तिः, क्लीं कीलकं, श्रीबालाप्रीतये पाठे विनियोगः।

दक्षिणामूर्तिऋषये नमः शिरसि , पङ्क्तिश्छन्दसे नमो मुखे , श्रीबालादेवतायै नमो हृदि, ऐं बीजाय नमो नाभौ, सौः शक्तये नमो गुह्ये, क्लीं कीलकाय नमः पादयोः, पाठे विनियोगाय नमः सर्वाङ्गेषु।

ऐं हृदयाय०, क्लीं शिरसे०, सौः शिखायै०, ऐं कवचाय०, क्लीं नेत्राभ्यां०, सौः अस्त्राय फट्। ऐं अङ्गुष्ठाभ्यां०, क्लीं तर्जनीभ्यां०, सौः मध्यमाभ्यां०, ऐं अनामिकाभ्यां०, क्लीं कनिष्ठिकाभ्यां०, सौः करतलकरपृष्ठाभ्यां० नमः।

विनियोग—अस्य श्रीबालात्रिपुरसुन्दरीस्तोत्रमन्त्रस्य दक्षिणामूर्ति ऋषिः, पंक्तिश्छन्दः, श्रीबालात्रिपुरसुन्दरी देवता, ऐं बीजं, सौः शक्तिः, क्लीं कीलकं, श्रीबालाप्रीतये पाठे विनियोगः।

ऋष्यादि न्यास—दक्षिणामूर्तिऋषये नमः शिरसिः। पंक्तिच्छन्दसे नमो मुखे। श्रीबालादेवतायै नमो हृदि। ऐं बीजाय नमो नाभौ। सौः शक्तये नमो गुह्ये। क्लीं कीलकाय नमो पादयोः। विनियोगाय नमः सर्वाङ्गेषु।

षडङ्ग न्यास—ऐं हृदयाय नमः। क्लीं शिरसे स्वाहा। सौः शिखायै वषट्। ऐं कवचाय हुम्। क्लीं नेत्रत्रयाय वौषट्। सौः अस्त्राय फट्।

करन्यास—ऐं अंगुष्ठाभ्यां नमः। क्लीं तर्जनीभ्यां नमः। सौः मध्यमाभ्यां नमः। ऐं अनामिकाभ्यां नमः। क्लीं कनिष्ठाभ्यां नमः। सौः करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः।

ध्यानम्

अरुणकिरणजालै रञ्जिताशावकाशा
विधृतजपवटीका पुस्तकाभीतिहस्ता।
इतरकरवराढ्या फुल्लकह्लारसंस्था
निवसतु हृदि बाला नित्यकल्याणरूपा ॥२॥

समस्त दिशाओं के अवकाश को लाल किरणों से रञ्जित करने वाली, जपवटी एवं पुस्तक तथा अभय को धारण की हुई, साथ ही कह्लारपुष्प से अलंकृत हाथ में वरमुद्रा धारण की हुई नित्य कल्याणस्वरूपा बाला मेरे हृदय में निवास करें।।२।।

स्तोत्रम्

वाणीं जपेद् यस्त्रिपुरे भवान्या
बीजं निशीथे जडभावलीनः।
भवेत् स गीर्वाणगुरोर्गरीयान्
गिरीशपत्नि प्रभुतादि तस्य ॥३॥
कामेश्वरि त्र्यक्षरीकामराजं
जपेद् दिनान्ते तव मन्त्रराजम्।
रम्भापि जृम्भारिसभां विहाय
भूमौ भजेत् तं कुलदीक्षितं च ॥४॥
तार्तीयकं बीजमिदं जपेद् य-
स्त्रैलोक्यमातस्त्रिपुरे पुरस्तात्।
विधाय लीलां भुवने तथान्ते
निरामयं ब्रह्मपदं प्रयाति ॥५॥
धरासद्मत्रिवृत्ताष्टपत्रषट्कोणनागरे।
बिन्दुपीठेऽर्चयेद्बालां योऽसौ प्रान्ते शिवो भवेत् ॥६॥

जड़ता भाव से ग्रस्त मनुष्य यदि निशीथ में भवानी त्रिपुरा के 'ऐं' बीज का जप करता हैं तो वह देवगुरु वृहस्पति के समान ज्ञानी हो जाता है। उससे गिरीशपत्नी भी भयभीत होती है। हे देवि! तुम्हारे त्र्यक्षरी मन्त्रराज के 'क्लीं' बीज का जप साधक मैथुन के अन्त में यदि करता है तो रम्भा भी इन्द्र की सभा छोड़कर पृथ्वी पर उसके पास आकर उस कुलदीक्षित का भजन करती है। हे त्रैलोक्यमाते त्रिपुरे! तुम्हारे आगे जो तुम्हारे तीसरे बीज 'सौः' का जप करता हैं, वह इस पृथ्वी पर अपनी लीला समाप्त करके निरामय ब्रह्मपद को प्राप्त करता है। जो भूपुर, त्रिवृत्त, अष्टपत्र, अष्टकोण, त्रिकोण, बिन्दुयुक्त यन्त्रपीठ

में बाला का अर्चन करता है, वह शिवलोक को प्राप्त कर स्वयं शिवसदृश हो जाता है।।३-६।।

फलश्रुतिः

इति मन्त्रमयं स्तवं पठेद् य-
स्त्रिपुराया निशि वा निशावसाने।
स भवेद् भुवि सार्वभौममौलि-
स्त्रिदिवे शक्रसमानशौर्यलक्ष्मीः ।।७।।
इतीदं देवि बालायास्तोत्रं मन्त्रमयं परम्।
अदातव्यमभक्तेभ्यो गोपनीयं स्वयोनिवत् ।।८।।

इति श्रीरुद्रयामले तन्त्रे भैरवभैरवीसंवादे
श्रीबालात्रिपुरसुन्दरीस्तोत्रम्।।५।।

फलश्रुति—त्रिपुरा के इस मन्त्रमय स्तोत्र का पाठ जो साधक रात या रात के अवसान काल में करता है, वह पृथ्वी पर सार्वभौम राजा होता है एवं स्वर्ग में इन्द्र के समान उसे शौर्यलक्ष्मी की प्राप्ति होती है। बाला का मन्त्रमय यह श्रेष्ठ स्तोत्र सर्वोत्तम है। इसे अभक्तों को कभी नहीं देना चाहिये और अपनी योनि के समान ही गुप्त रखना चाहिये।।७-८।।

इस प्रकार रुद्रयामल तन्त्रोक्त श्रीदेवीरहस्य की भाषा टीका में
श्रीबालात्रिपुरसुन्दरीस्तोत्र पूर्ण हुआ।

◆

समाप्तमिदं बालात्रिपुरापञ्चाङ्गम्

अथोद्धारकोशः

प्रथमः कल्पः

दशविद्यामन्त्रोद्धारकोशाख्यानम्

उद्धारकोशावतारप्रस्तावः

एकदा स्फाटिकोर्वीभृत्सानौ वनसमाकुले ।
संस्थितौ पार्वतीशम्भू लोकरक्षणतत्परौ ॥१॥
पार्वती परमेशानं प्रोवाच परमं हितम् ।
देवदेव सुरश्रेष्ठ दयात्रैगुण्यमानस ॥२॥
देवी भगवती देव महात्रिपुरसुन्दरी ।
अस्मिंश्चराचरे व्यक्ते क्रूरे केन प्रकाशिता ॥३॥

दशविद्या-मन्त्रोद्धार कोशाख्यान—एक समय स्फटिक की शिलाओं से परिपूर्ण वन में लोकरक्षा में तत्पर पार्वती एवं शङ्कर बैठे हुए थे। पार्वती ने परम हितकारी शङ्कर से कहा—हे देवदेव! सुरश्रेष्ठ!! दयात्रैगुण्यमानस!!! देवी भगवती महात्रिपुरसुन्दरी इस क्रूर चराचर सृष्टि में किसके द्वारा प्रकाशित की गईं।।१-३।।

दक्षिणामूर्तये त्रिपुराया मन्त्र शिक्षा

श्रीश्वर उवाच

शृणु देवि प्रवक्ष्यामि गोप्यं तव कुतूहलात् ।
रेवातटे महापुण्ये श्रीगर्भा नाम सत्पुरी ॥४॥
अस्ति त्रैलोक्यविख्याता सर्वभूतलशेखरा ।
तस्यां बभूव विप्रेन्द्रदेवगन्धर्वसेवितम् ॥५॥
पुण्यं तपोवनपदं नानावृक्षसमाकुलम् ।
तस्मिंस्तपोवने पुण्ये सेवितेऽपि सुरेश्वरैः ॥६॥
ऋषिस्तु दक्षिणामूर्तिस्तदाराधनतत्परः ।
नानाशास्त्राब्धिपोतोऽपि सर्वागमनिधिरभूत् ॥७॥
एकदा स्नातुमायातो रेवां पुण्यजलान्विताम् ।
प्राक्पुण्यकर्मणा तस्मै तुष्टा त्रिपुरसुन्दरी ॥८॥

जलमध्ये स्थिता गोप्त्री महात्रिपुरसुन्दरी।
मूलं च शिक्षितो देव्याः शुद्धममृतरूपणम्॥९॥

श्री ईश्वर ने कहा—तुम्हारे कौतूहल के कारण अत्यन्त गुप्त इस प्रसङ्ग को मैं तुमसे कहता हूँ, सुनो; रेवा नदी के पवित्र तट पर श्रीगर्भा नाम की एक सुन्दरी पुरी है, जो कि तीनों लोकों में विख्यात है एवं समस्त भूमण्डल के मुकुटस्वरूप है। उसी पुरी में श्रेष्ठ ब्राह्मणों, देवताओं एवं गन्धर्वों से सेवित अनेक प्रकार के वृक्षों से घिरा एक पवित्र तपोवन था। सुरेश्वरों द्वारा सेवित उसी पवित्र तपोवन में आराधना में तत्पर अनेक शास्त्ररूपी समुद्र को पार करने के लिये नौका के समान एवं समस्त आगमों के निधिस्वरूप ऋषि दक्षिणामूर्ति के ऊपर उनके पूर्व जन्मार्जित पुण्यों के कारण देवी त्रिपुरसुन्दरी प्रसन्न हो गईं। जल मध्य में गुप्त रूप से अवस्थित उस महात्रिपुरसुन्दरी ने शुद्ध अमृतस्वरूप अपने मूल मन्त्र द्वारा उन ऋषि को शिक्षित किया।।४-९।।

सत्त्वरं फलदं गोप्यं स मुनीन्द्रशिरोमणिः।
तदा प्रभृति तन्मन्त्रं ध्यायन् स्तोत्रं जपन् हृदि॥१०॥
तत्प्रभावान्महादेवि ग्रन्थं कर्तुमियेष सः।
तदनुग्रहमात्रेण स मुनीश्वरपूजितः॥११॥

त्रिपुरसुन्दरी का वह मूल मन्त्र सद्यः फल प्रदान करने वाला है, अतएव अत्यन्त गुप्त रखने लायक है। उक्त मूल मन्त्र का उसी समय से सदा ध्यान करते हुये एवं उनके स्तोत्र का हृदय में जप करते हुये उसी के प्रभाव से वे श्रेष्ठ मुनि इस ग्रन्थ को बनाने में प्रवृत्त हुये। हे महादेवि! उन देवी महात्रिपुरसुन्दरी के अनुग्रहमात्र से वे ऋषि दक्षिणामूर्ति श्रेष्ठ मुनियों द्वारा पूजित हुये।।१०-११।।

ग्रन्थमुद्धारकोशाख्यं चकार मन्त्रसागरम्।
अन्यान् नानाविधान् ग्रन्थान् प्रेक्ष्य त्रैलोक्यपूजिते॥१२॥
तदा प्रभृति देवेशि प्रसिद्धं भूमिमण्डले।
ग्रन्थमुद्धारकोशाख्यं सर्वागमविनिश्चितम्॥१३॥

हे त्रैलोक्यपूजिते! अन्य अनेक प्रकार के ग्रन्थों का अवलोकन कर उन मुनि ने मन्त्रों के सागरस्वरूप इस उद्धारकोश नामक ग्रन्थ की रचना की। हे देवेशि! उसी समय से इस भूमण्डल पर समस्त आगमों द्वारा प्रमाणित उद्धारकोश नामक यह ग्रन्थ प्रसिद्धि को प्राप्त हुआ है।।१२-१३।।

श्रीदेव्युवाच

देवदेव जगन्नाथ भक्तानुग्रहकारक ।
श्रोतुमुद्धारकोशाख्यं नानागमविनिश्चितम् ॥१४॥
इच्छामि परया प्रीत्या वक्तुमर्हसि धूर्जटे ।

श्री देवी ने कहा—देव-देव! जगन्नाथ! भक्तवत्सल! मैं नाना आगम-विनिश्चित उस 'उद्धारकोश' नामक ग्रन्थ को सुनना चाहती हूँ, हे धूर्जटे! मेरी प्रीति के कारण आप उसे सुनाइये।।१४।।

श्रीश्वर उवाच

शृणु देवि प्रवक्ष्यामि ह्युद्धारं त्रिपुरादितः ।
देवीनां दशविद्यानां मन्त्रोद्धारमनुत्तमम् ॥१५॥
ग्रन्थमुद्धारकोशाख्यं सर्वागमविनिश्चितम् ।
सर्वग्रन्थाद्यपूज्यं च तच्छृणुष्व ब्रवीम्यहम् ॥१६॥

श्री ईश्वर ने कहा—हे देवि! सुनो; मैं त्रिपुरा से प्रारम्भ करके दश विद्याओं के उत्तम मन्त्रों के उद्धार का वर्णन करता हूँ। यह उद्धारकोश नामक ग्रन्थ सर्वागमविनिश्चित हैं। सभी ग्रन्थों का आद्य है, पूज्य है। उसी को मैं कहता हूँ, तुम श्रवण करो।।१५-१६।।

अक्षोभ्यशिष्यमन्त्रोद्धारकथनम्

तदनुग्रहमात्रेण सर्वानुद्धारसञ्चयान् ।
अब्रवीद् दक्षिणामूर्तिः शिष्यमक्षोभ्यनामकम् ॥१७॥
शृणु छात्र महाभाग देवीभक्तिसमन्वित ।
रहस्यं सर्वलोकानां देवानामपि दुर्लभम् ॥१८॥
देवि तस्मिन्नवसरे शिष्याय प्रियवादिने ।
मुनीन्द्रो दक्षिणामूर्तिरब्रवीद् ग्रन्थमुत्तमम् ॥१९॥
भाषितं यत्पुरा तेन तत्प्रभावान्महेश्वरि ।
देवानां देवतानां च तच्छृणुष्व ब्रवीम्यहम् ॥२०॥

इसी देवी त्रिपुरा के अनुग्रहमात्र से दक्षिणामूर्ति ने अपने अक्षोभ्य नामक शिष्य से कहा कि हे देवीभक्ति से ओतप्रोत छात्र! समस्त लोकों के रहस्यभूत एवं देवताओं के लिये भी दुर्लभ समस्त मन्त्रों के उद्धार को सुनो। हे पार्वति! उस अवसर पर अपने प्रियवादी शिष्य को मुनीन्द्र दक्षिणामूर्ति ने इस उत्तम ग्रन्थश्रेष्ठ को बतलाया। हे महेश्वरि! दक्षिणामूर्ति ने जो सर्वप्रथम वर्णन किया था, उसका प्रभाव देवों एवं देवताओं पर जिस प्रकार हुआ, उसे मैं कहता हूँ।।१७-२०।।

त्रिपुरामन्त्रोद्धारः

तत्रादौ त्रिपुरामन्त्रोद्धारः। तदुक्तं वामकेश्वरतन्त्रे—

लक्ष्मीः परा मदनवाग्भवशक्तियुक्ता
तारं च भूतिकमला कथितापि विद्या।
शक्त्यादिकं तु विपरीततया च प्रोक्तं
श्रीषोडशाक्षरविधिः शुभदोऽस्तु पूर्णः ॥१॥ इति।

त्रिपुरा मन्त्रोद्धार—सर्वप्रथम त्रिपुरा का मन्त्रोद्धार कहा जा रहा है; जैसा कि वामकेश्वरतन्त्र में कहा गया है—लक्ष्मी, परा, मदन, वाग्भव, शक्ति, तार, भूति, कमला के बाद विद्या, तब शक्ति, वाग्भव, मदन, परा लक्ष्मी के योग से पूर्ण शुभदायक षोड़शाक्षरी मन्त्र बनता है।।१।।

उड्डामरे च—

क्षीरोदसम्भवा भूतिः कामं वाग्भवमेव च।
शक्तिः प्रणवलज्जे तु लक्ष्मीः शक्त्यादिकं ततः ॥१॥
विपरीततया प्रोक्ता विद्या श्रीषोडशाक्षरी।
त्रिकूटा सकला भद्रे विद्येयं षोडशाक्षरी ॥२॥ इति।

उड्डामर तन्त्र के अनुसार—क्षीरोदसम्भवा, भूति, काम, वाग्भव, शक्ति, प्रणव, लज्जा, लक्ष्मी के बाद श्रीविद्या तब शक्ति, वाग्भव, काम, भूति, क्षीरोदसम्भवा के योग से षोडशाक्षरी श्रीविद्या बनती है। यह श्रीविद्या त्रिकूटा है।।१-२।।

रुद्रयामलेऽपि—

हरिणाक्षी तथा माया कामराजश्च वासना।
शरत् त्र्यक्षं तथा क्षामा लक्ष्मीः शक्त्यादिकं तथा ॥१॥
विपरीततया प्रोक्ता विद्या श्रीषोडशाक्षरी।

रुद्रयामल के अनुसार—हरिणाक्षी, माया, कामराज, वासना, शरत, त्र्यक्ष, क्षामा, लक्ष्मी, श्रीविद्या, शरत्, वासना, कामराज, माया, हरिणाक्षी के योग से श्रीविद्या षोडशाक्षरी बनती है।।१।।

लक्ष्मीबीजनामानि

तत्रं लक्ष्मीबीजनामानि, उक्तं च च्छिन्नारहस्ये—

लक्ष्मीः पद्मा हरिणाक्षी सरोरुहनिवासिनी।
कमला रुक्मिणी चैव नारायणप्रिया प्रिये।

लक्ष्मीबीजानि सप्तैव कृत्रिमाण्यपराणि तु ॥१॥
वान्तं वह्निसमायुक्तं रतिबिन्दुविभूषितम् ।
लक्ष्मीबीजमिति प्रोक्तं सर्वकामार्थसिद्धिदम् ॥२॥

छिन्नारहस्यतन्त्र के अनुसार लक्ष्मीबीज 'श्रीं' के नाम इस प्रकार हैं—लक्ष्मी, पद्मा, हरिणाक्षी, सरोरुहनिवासिनी, कमला, रुक्मिणी, नारायणप्रिया। ये सात नाम लक्ष्मीबीज के हैं। इसके अतिरिक्त दो नाम और हैं—वह्निसमायुक्त वान्त एवं रतिविन्दुविभूषित। यह लक्ष्मीबीज सर्वकामार्थ-सिद्धिप्रदायक है।।१-२।।

अपरं च त्रिपुरातिलके—

इमे द्वे कमला पद्मा हरिकान्ता तथैव च ।
श्रियो बीजानि पञ्चैवमनृतान्यपराणि तु ॥१॥

श्रीं-इति लक्ष्मीबीजम्।

त्रिपुरातिलक के अनुसार पाँच नामों के अतिरिक्त कमला, पद्मा, हरिकान्ता, भी श्रीबीज के नाम हैं। लक्ष्मीबीज 'श्रीं' है।।१।।

पराबीजनामानि

अथ पराबीजनामानि उक्तं चागमालङ्कारे—

परा भूतिस्तथा लज्जा मायापि सकला कृशा ।
समस्तापि तथा क्षामा देवीप्रणववीरकौ ॥१॥
वारणार्णं सुधाबीजं कृत्रिमाण्यपराणि तु ।
वामाक्षिवह्निसंयुक्तं बिन्दुनादविभूषितम् ।
शिवबीजं महेशानि लज्जाबीजमुदाहृतम् ॥२॥
ईशानमुद्धृत्य पुरारिबीजं सबिन्दुकं नादविभूषितं च ।
सवामकर्णं परितः प्रकल्प्य मायां वदन्तीह मनीषिणस्ताम् ॥३॥

ह्रीं-इति पराबीजम्।

परा बीज 'ह्रीं' के नाम आगम अलङ्कार के अनुसार इस प्रकार कहे गये हैं—परा, भूति, लज्जा, माया, सकला, कृशा, क्षामा, वारणार्ण, सुधाबीज—ये सभी देवी प्रणव के नाम हैं। इनके अतिरिक्त अन्य नाम कृत्रिम हैं। वामाक्षी वह्निसंयुक्त, विन्दुनादविभूषित शिवबीज से लज्जाबीज 'श्रीं' बनता है। ईशान, पुरारिबीज, बिन्दु-नादविभूषित, वामकर्ण, वामतः प्रकल्पित करने से मायाबीज 'ह्रीं' बनता है। ऐसा मनीषियों का कथन है।।१-३।।

त्रिपुरासारसर्वस्व के अनुसार वाग्भवबीज 'ऐं' के नाम इस प्रकार हैं—वाग्भव, ऊर्ध्वबीज, चारण, चण्डकेश्वर, चन्द्र, चर्मवसन, चार्वंगी, वासना, चर्माण। अन्य नाम हैं।

मदनबीजनामानि

ततो मदनबीजनामानि उक्तं च भैरवतन्त्रे—

कामः पञ्चेषुरेवं च मदनो मन्मथस्तथा।
मारः प्रद्युम्नकन्दर्पावनृतान्यपराणि तु ॥१॥

क्लीं-इति मदनबीजम्।

भैरवतन्त्र के अनुसार मदनबीज 'क्लीं' के नाम इस प्रकार हैं—काम, पञ्चेषु, मदन, मन्मथ, मार, प्रद्युम्न, कन्दर्प अन्य नाम कृत्रिम हैं।।१।।

वाग्भवबीजनामानि

ततो वाग्भवबीजनामानि; उक्तं च त्रिपुरासारसर्वस्वे—

वाग्भवमूर्ध्वबीजं च चारणं चण्डकेश्वरः।
चन्द्रोऽपि चर्मवसनं वासनापि तथैव च ॥१॥
चार्वङ्ग्यपि च चर्माणमसत्यान्यपराणि तु।
द्वादशस्वरवर्णं स्यान्नादबिन्दुविभूषितम्।
वाग्भवं बीजमित्युक्तं सर्ववाक्यविशुद्धये ॥२॥

ऐं-इति वाग्भवबीजम्। चार्वङ्गीबीजौ द्वौ , ऐं च्छीं च।

नाद-बिन्दुविभूषित बारह स्वरवर्ण भी वाग्भव बीज माने जाते हैं। सभी वाक्यों की विशुद्धि इनसे होती है। चार्वङ्गीबीज दो हैं—ऐं एवं च्छीं।।१-२।।

शक्तिबीजनामानि

अथ शक्ति—बीजनामानि उक्तं च च्छिन्नाशिरोमणौ—

शक्तिः शर्मापि विज्ञेये शरच्छङ्के तथैव च।
शक्तिबीजानि चत्वारि कृत्रिमाण्यपराणि तु ॥१॥

सौः-इति शक्तिबीजम्। शर्मबीजौ द्वौ , सौः शां च।

शक्तिबीज 'सौः' के नाम छिन्नाशिरोमणि तन्त्र के अनुसार चार हैं—शक्ति, शर्म, शरत् एवं शर्म शर्मबीज दो हैं—सौः एवं शां।।१।।

तारबीजनामानि

ततस्तारबीजनामानि तत्रैव—

प्रणवं च धनुस्तारं त्र्यक्षं तोमापि त्र्यम्बकः।

त्रासस्तारक एतानि बीजानि प्रणवस्य च ॥१॥
अपराणि ह्यसत्यानि मया प्रोक्तानि पार्वति ।
विपरीततया प्रोक्ता विद्या श्रीषोडशाक्षरी ॥२॥

ॐ - इति तारबीजम्। प्रकाशम्—श्रीं ह्रीं क्लीं ऐं सौः ॐ ह्रीं श्रीं कएईलह्रीं, हसकहलह्रीं , सकलह्रीं, सौः ऐं क्लीं ह्रीं श्रीं—इति श्रीत्रिपुरामन्त्रोद्धारः।

तारबीज 'ॐ' के नाम छिन्नाशिरोमणि में ही इस प्रकार बताये गये हैं—प्रणव, धनुष, तार, त्र्यक्ष, तोम, त्र्यम्बक, त्रास एवं तारक। हे पार्वति! इनके अतिरिक्त और भी नाम मेरे द्वारा बतलाये गये हैं। श्रीविद्या षोड़शाक्षरी इनके क्रमवैपरीत्य से बनती है। महात्रिपुरसुन्दरी षोड़शी श्रीविद्या का मन्त्र है—श्रीं ह्रीं क्लीं ऐं सौः ॐ ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं, हसकहलह्रीं, सकलह्रीं सौः ऐं क्लीं ह्रीं श्रीं।

महात्रिपुरसुन्दरी का मन्त्रोद्धार पूरा हुआ।

दशविद्यानामनिरूपणम्

अथ दश विद्याः। उक्तं चागमलहर्याम्—

त्रिपुरा श्रीश्च वाग्देवी तारापि भुवनेश्वरी ।
मातङ्गी शारिका राज्ञी भीडा ज्वालामुखी तथा ॥१॥
दश विद्याः स्वयं चैता भाषिताः कृत्तिवाससा ।
एता दशैव षडन्या योजिता षोडशाक्षरी ॥२॥
दशविद्या भद्रकाली तुरी च च्छिन्नमस्तका ।
दक्षिणाकालिका श्यामा कालरात्र्यपि सुन्दरी ॥३॥
एतासां मूलमन्त्रेण योजितैकाक्षरेण च ।
ब्रह्मादिदेवतैः पूज्या विद्या श्रीषोडशाक्षरी ॥४॥

वामकेश्वरे षोडशाक्षरी विद्या इति।

दशमहाविद्या—'आगमलहरी' के अनुसार त्रिपुरा, श्री, वाग्देवी, तारा, भुवनेश्वरी, मातङ्गी, शारिका, राज्ञी, भीड़ा और ज्वालामुखी—ये दश विद्यायें हैं। भगवान् शङ्कर ने स्वयं इन दश विद्याओं को कहा है। इन दश में अन्य छः जोड़ने से षोड़शाक्षरी विद्या बनती है। ये छः भद्रकाली, तुरी, छिन्नमस्तिका, दक्षिणाकालिका, श्यामा और कालरात्रि हैं। इन सोलह विद्या के मन्त्र के एक-एक अक्षर को मिलाने से ब्रह्मादि देवताओं के द्वारा पूज्य श्रीविद्या षोड़शाक्षरी बनती है। वामकेश्वर तन्त्र का मत भी यही है।

लक्ष्मीमन्त्रोद्धारः

ततो लक्ष्मीमन्त्रोद्धारः। उक्तं च रुद्रयामले—

हरिणाक्षी परा त्र्यक्षं लक्ष्मीबीजत्रयं त्विदम्।
विपरीततया प्रोक्तं सत्वरं फलदायकम्॥१॥
क्षामा शङ्कापि नीरं तदन्ते प्रोक्तं शिष्योत्तम।

लक्ष्मी-मन्त्रोद्धार—'रुद्रयामल' के अनुसार लक्ष्मी बीजत्रय श्रीं ह्रीं ॐ हैं। इनका विपरीत क्रम ॐ ह्रीं श्रीं शीघ्र फलदायक होता है। इसके बाद लक्ष्मीमन्त्र और अन्त में क्षामा शंका नीर अर्थात् ह्रीं सः स्वाहा जोड़कर शिष्योत्तम को मन्त्र देना चाहिये।।१।।

नीरबीजनामानि

तत्र नीरबीजनामानि यदुक्तमुड्डामरे—

आपो वनं तथा नीरं ठद्वयं च पयस्तथा।
जलबीजानि प्रोक्तानि ह्यसत्यानि पराणि तु॥१॥

स्वाहा-इति नीरबीजम्। ॐ ह्रीं श्रीं लक्ष्मि महालक्ष्मि सर्वकामप्रदे सर्वसौभाग्यदायिनि अभिमतं प्रयच्छ सर्वे सर्वगते सर्वस्वरूपे सर्वदुर्जयविमोचिनि ह्रींसौः स्वाहा इति मूलम्।

उड्डामरतन्त्र के अनुसार नीर-बीज के नाम इस प्रकार हैं—आप, वनं, नीर, द्रय, पय। यही जलबीज कहे गये हैं।।१।।

'स्वाहा' यही नीरबीज है। लक्ष्मीमन्त्र होता है—ॐ ह्रीं श्रीं लक्ष्मि महालक्ष्मि सर्वकामप्रदे, सर्वसौभाग्यदायिनि अभिमतं प्रयच्छ सर्वे सर्वगते सर्वस्वरूपे सर्वदुर्जयविमोचिनि ह्रीं सौः स्वाहा। मूल मन्त्र यही है।

शारदायाम्—

वाग्भवं शम्भुवनिता रमा मकरकेतनः।
तार्तीयं च जगत्पार्श्वो वह्निबीजसमुज्ज्वलः॥१॥
उ-दीर्घाढ्यो भृगुस्त्यै हृन्मन्त्रोऽयं द्वादशाक्षरः।
ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं सौः जगत्प्रसूत्यै नमः इति।

शारदातिलक के अनुसार वाग्भव = ऐं, शम्भुवनिता = ह्रीं, रमा = श्रीं, मकरकेतन = क्लीं, तार्तीय = सौः, जगत्, वह्निबीज = प्रस, दीर्घाढ्य = ऊ, भृगु = स्त्यै और हृन्मन्त्र = नमः के योग से बारह अक्षरों का लक्ष्मीमन्त्र बनता है। मन्त्र है—ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं सौः जगत्प्रसूत्यै नमः।

सरस्वतीमन्त्रोद्धार:

तत: सरस्वतीमन्त्रोद्धार:, यदुक्तं शारदापटले—

तारं लज्जा वाग्भवं च परा प्रणवमेव च।
बीजं पञ्चशिरो ज्ञेयमन्ते प्रोक्तं नम इति॥१॥

प्रकाशम्—ॐ ह्रीं ऐं ह्रीं ॐ वाग्देव्यै नम:।

सरस्वती-मन्त्र—शारदापटल के अनुसार—तार = ॐ, लज्जा = ह्रीं, वाग्भव = ऐं, परा = ह्रीं, प्रणव = ॐ—इन पञ्च शिरोबीज के बाद 'वाग्देव्यै नम:' लगाने से सरस्वती का यह मन्त्र बनता है—ॐ ह्रीं ऐं ह्रीं ॐ वाग्देव्यै नम:।।१।।

शारदायाम्—

तारं पराऽधरो बिन्दु: शक्तिस्तारं सरस्वती।
ङेन्ता नत्यन्तिको मन्त्र: प्रोक्त एकादशाक्षर:॥१॥

प्रकाशम्—ॐ ह्रीं ऐं ह्रीं ॐ सरस्वत्यै नम:।

शारदातिलक के अनुसार—तार = ॐ, परा = ह्रीं, अधर = ऐं, बिन्दु = ह्रीं, तार = ॐ, सरस्वती ङेन्त = सरस्वत्यै, नत्यन्तिक = नम: के योग से सरस्वती का एकादशाक्षर मन्त्र बनता है—ॐ ह्रीं ऐं ह्रीं ॐ सरस्वत्यै नम:।।१।।

नमोबीजनामानि

नमोबीजनामानि , उक्तं चागमालङ्कारे—

नमो विश्वं तथा स्तम्भमौश्मकं चाश्मरी तथा।
अन्यानि कृत्रिमाण्येव सुरासुरनमस्कृते॥१॥ इति।

आगमालङ्कार के अनुसार नम: के नाम—विश्व, स्तम्भ, औश्मक और अश्मरी। अन्य सभी नाम कृत्रिम कहे गये हैं।।१।।

तारामन्त्रोद्धार:

ततस्तारामन्त्रोद्धार:। उक्तं च भैरवसर्वस्वे—

तारं व्योषं तथा कान्ता माया वाग्भवमेव च।
कूर्चं चैव महेशानि ह्यन्ते फट् ठद्वयं तथा॥१॥

तारामन्त्रोद्धार—'भैरवसर्वस्व' के अनुसार तार = ॐ, व्योष = ह्रां, कान्ता = स्त्रीं, माया = ह्रीं, वाग्भव = ऐं, कूर्च = हूं, उग्रतारे, फट्, ठद्वय = स्वाहा के योग से तारा का मन्त्र बनता है, मन्त्र है—ॐ ह्रां स्त्रीं ह्रीं ऐं हूं उग्रतारे फट् स्वाहा।।१।।

व्योषबीजनामानि

तत्र व्योषबीजनामानि उक्तं चागमसिन्धौ—

स्कन्दं व्योषं च डिम्बं च संयोज्य हरमित्यतः ।
ह्रां-बीजोद्धारमेतद्धि चान्यदनृतमावदेत् ॥१॥

ह्रां-इति व्योषबीजम्।

आगमसिन्धु के अनुसार व्योषबीज 'ह्रां' के नाम स्कन्द, व्योष, डिम्ब एवं हर है। ह्रां बीज का उद्धार यही है। अन्य प्रकार के वर्णन असत्य हैं।।१।।

कान्ताबीजनामानि

ततः कान्ताबीजनामानि, उक्तं च वामकेश्वरे—

कान्ता च कमलाक्षी च प्रियापि परमापि च ।
लम्भापि ललना लज्जा ह्यसत्यन्यपराणि तु ॥१॥

वामकेश्वरतन्त्र के अनुसार कान्ताबीज 'स्त्रीं' के नाम हैं—कान्ता, कमलाक्षी, प्रिया, परमा, लम्भा, ललना, लज्जा। अन्य सभी नाम असत्य हैं।।१।।

षोडशव्यञ्जनं वह्निवामाक्षिबिन्दुसंयुतम् ।
चन्द्रबीजे समारूढं वधूबीजमिदं स्मृतम् ॥२॥

स्त्रीं-इति कान्ताबीजम्। एकाक्षीबीजञ्च।

वह्नि वामाक्षिबिन्दुसंयुत चन्द्रबीज 'स' वधूबीज 'स्त्री' होता है। इसे कान्ताबीज या एकाक्षीबीज भी कहते हैं।।२।।

कूर्चबीजनामानि

ततः कूर्चबीजनामानि, उक्तं च च्छिन्नारहस्ये—

कूर्चं कूलं तटं तीरमसत्यान्यपराणि तु ।

हूं-इति कूर्चबीजम्।

छिन्नारहस्य के अनुसार कूर्चबीज = हूं के नाम कूर्च, कूल, तट एवं तीर हैं। अन्य नाम सत्य नहीं हैं।

फड्बीजनामानि

ततः फट्बीजनामानि, च्छिन्नारहस्ये—

हरं फट् तुरगं चान्यदसत्यं तु महेश्वरि ।

ॐ ह्री स्त्रीं ह्रीं ऐं हूं उग्रतारे फट् स्वाहा इति।

छिन्नारहस्य के अनुसार 'फट्' बीज के नाम हर, फट्, तुरग हैं। अन्य नाम असत्य हैं।

भुवनेश्वरीमन्त्रोद्धारः

अथ भुवनेश्वरीमन्त्रोद्धारः। उक्तं च कुब्जिकासर्वस्वे—

प्रणवं तु तथा माया कमला मन्मथस्तथा।
अन्ते विश्वं नाम मध्ये प्रोक्तं वै तु सुरेश्वरि ॥१॥
प्रोक्तोऽयं भुवनेश्वर्या मनुस्तुर्याक्षराभिधः।

५. भुवनेश्वरी-मन्त्रोद्धार—कुब्जिकासर्वस्व के अनुसार प्रणव = ॐ, माया = ह्रीं, कमला = श्रीं, मन्मथ = 'क्लीं', मध्य के नाम 'भुवनेश्वर्यै' के बाद विश्व = नमः लगाने से भुवनेश्वरी का मन्त्र बनता है, मन्त्र है—ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं भुवनेश्वर्यै नमः।।१।।

मनु (मन्त्र) नामानि

तत्र मनुबीजनामानि, उक्तं च स्वतन्त्रे त्रिपुराटीकायाम्—

मन्त्रो मनुर्हरश्चैव हनुर्बालं विदुर्बुधाः।
बीजान्येतानि मन्त्रस्य कृत्रिमान्यपराणि तु ॥१॥

हरबीजौ द्वौ, मन्त्रः फट् च। प्रकाशं—ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं भुवनेश्वर्यै नमः इति।

'वतन्त्र त्रिपुराटीका के अनुसार मन्त्रबीज के नाम हैं—मनु, हर, हनु एवं बाल। अन्य नाम कृत्रिम हैं। हरबीज दो हैं—मन्त्र एवं फट्।

मातङ्गीमन्त्रोद्धारः

ततो मातङ्गीमन्त्रोद्धारः। उक्तं हि कुलसिद्धासन्ताने—

तोमा काली तथा लक्ष्मीर्वागुराद्वयमेव च।
चारुकं रसबीजानि ह्यादौ प्रोक्तानि शम्भुना ॥१॥
अन्ते जिह्वा तथा पद्मं लज्जा नीरजमेव च।
वासना पङ्कजं चैव वनं प्रोक्तं च शूलिना ॥२॥ इति।

मातङ्गी-मन्त्रोद्धार—'कुलसिद्धासन्तान' के अनुसार तोमा = ॐ, काली = क्रीं, लक्ष्मी = श्रीं, वागुराद्वय = प्रीं प्रीं, चारुकं = च्छ्रीं—इन छः बीजों को शिव ने बतलाया है। इनके बाद मातङ्गी मन्त्र और तब जिह्वा तथा पद्म = क्रीं ठः, लज्जा, नीरज = ह्रींठः, वासना पङ्कज = ऐं ठः, तब वन = स्वाहा के योग से मातङ्गी मन्त्र बनता है। मन्त्र है—ॐ क्रीं श्रीं प्रीं प्रीं च्छ्रीं उच्छिष्टचण्डालिनि देवि महापिशाचिनि मातङ्गीदेवि क्रीं ठः ह्रींठः ऐंठः स्वाहा।।१-२।।

जिह्वाबीजनामानि

तत्र जिह्वाबीजनामानि, कालीबीजोद्धाराणि च कुलचूडामणौ—

काली कुन्ती रसज्ञापि जिह्वापि रसना तथा।
क्रीं-बीजानि च ह्येतानि कृत्रिमाण्यपराणि च ॥१॥

क्रीं-इति जिह्वाबीजम्।

कुलचूड़ामणि के अनुसार जिह्वाबीज और कालीबीज का उद्धार इस प्रकार किया गया है। जिह्वा बीज = क्रीं के नाम काली, कुन्ती, रसज्ञा, जिह्वा, रसना हैं। अन्य नाम कृत्रिम हैं।।१।।

वागुराबीजनामानि

अथ वागुराबीजनामानि—

वागुरा वायुपूज्यापि वातुदास्य त्रिबीजकम्।
प्रीं-बीजानि तु प्रोक्तानि ह्यसत्यान्यपराणि तु ॥१॥

प्रीं-इति वागुराबीजम्।

वागुराबीज 'प्रीं' के नाम वागुरा, वायुपूज्या, वातुदास्य हैं। अन्य नाम असत्य हैं।।१।।

चारुकबीजनामानि

अथ चारुकबीजनामानि, मुण्डमालातन्त्रे—

चारुकं चैव चार्वङ्गी चारुतोच्छूनबीजकम्।
चतुष्टयं च च्छ्रीं-बीजे असत्यान्यपराणि च ॥१॥

चार्वङ्गीबीजौ द्वौ च्छ्रीं ऐं च।

'च्छ्रीं' चारुकबीज के मुण्डमाला तन्त्र के अनुसार चारुक, चार्वंगी, चारुत, च्छून बीज—ये चार नाम हैं। अन्य नाम असत्य हैं। चार्वङ्गीबीज दो कहे गये हैं—च्छ्रीं एवं ऐं।।१।।

पद्मबीजनामानि

ततः पद्मबीजनामानि, उक्तं च वामकेश्वरे—

पद्मं पङ्कजपयोजे नीरजमम्बुजं तथा।
पञ्च ठकारबीजानि ह्यसत्यान्तपराणि च ॥ १ ॥

ठः इति पद्मबीजम्। प्रकाशम्—ॐक्रींश्रींप्रींप्रींच्छ्रीं उच्छिष्ठचण्डालिनि देवि महापिशाचिनि मातङ्गीदेवि क्रींठः ह्रींठः ऐंठः स्वाहा। इति मातङ्गीमूलम्।

पद्मबीज 'ठ:' के वामकेश्वर तन्त्र के अनुसार पाँच नाम हैं—पद्म, पङ्कज, पयोज, नीरज, अम्बुज। अन्य नाम असत्य हैं।

शारिकामन्त्रोद्धार:

अथ शारिकामन्त्रोद्धार:, उक्तं स्वकृतौ त्रिपुराशिरोमणौ—

तारं मायां श्रियं कूर्चं सिन्धुरं शून्यमेव च।
कल्याणं शरिकादेव्या बीजं सप्ताक्षरं स्मृतम्॥१॥
अन्ते स्तम्भं च विज्ञेयं शारिकामन्त्रमुत्तमम्।

शारिका-मन्त्रोद्धार—त्रिपुराशिरोमणि के अनुसार तार = ॐ, माया = ह्रीं, श्रियं = श्रीं, कूर्च = हूं, सिन्धूर = फ्रां, शून्य = आं, कल्याण = शां—ये सात बीज शारिका देवी के हैं। इनके योग से मन्त्र होता है—ॐ ह्रीं श्रीं हूं फ्रा आं शां शारिकायै नम:।।१।।

सिन्धुरबीजनामानि

तत्र सिन्धुरबीजनामानि, उक्तं च वामकेश्वरे—

सिन्धुरं च गणं घोणाहस्तिनं द्विरदं तथा।
फ्रांबीजानि च चत्वारि कृत्रिमाण्यपराणि च॥१॥

फ्रां-इति सिन्धुरबीजम्।

सिन्धूरबीज 'फ्रां' के नाम वामकेश्वरतन्त्र के अनुसार सिन्धुर, गण, घोणाहस्त एवं द्विरद—ये चार हैं। अन्य नाम कृत्रिम हैं।।१।।

शून्यबीजनामानि

तत: शून्यबीजनामानि, उक्तं च भैरवतन्त्रे—

शून्यं खमम्बरं व्योम आंबीजे च चतुष्टयम्।
हकारं चापि विज्ञेयमुक्तं तद्रुद्रयामले॥१॥
असत्यमपरं ज्ञेयं ताराभक्तिसमन्विते।

आमिति (हं च) शून्यबीजम्।

शून्यबीज 'आं' के भैरवतन्त्र के अनुसार चार नाम हैं—शून्य, खं, अम्बर एवं व्योम। रुद्रयामल के अनुसार 'ह' भी शून्यबीज है। तारा के भक्तों के लिये अन्य नाम असत्य हैं। आं एवं हं—यह शून्यबीज है।।१।।

कल्याणबीजनामानि

तत: कल्याणबीजनामानि तत्रैव—

कल्याणं चापि शर्मापि शं शुभं च चतुष्टयम्।
अपरमनृतं ज्ञेयं पर्वतेश्वरनन्दिनि॥१॥

शर्मबीजे द्वे सौः श च। प्रकाशं—ॐ ह्रीं श्रीं ह्रूं फ्रां आं शां शारिकायै नमः इति।

सौः श—कल्याणबीज के नाम रुद्रयामल के अनुसार चार हैं—कल्याण, शर्म, शं, शुभ। हे पर्वतेश्वरनन्दिनि! अन्य नाम असत्य हैं।

महाराज्ञीमन्त्रोद्धारः

ततो राज्ञीमन्त्रोद्धारः, श्यामातन्त्रे—

तारं लज्जा श्रियमग्निः कामः शक्तिः षडक्षरः ।
बीजं च षट्शिरो ज्ञेयं ततः पल्लवमुद्धरेत् ॥१॥
भगवत्यै तथा राज्ञ्यै ह्यन्ते माया च ठद्वयम् ।
एभिः सह मनुः प्रोक्तो राज्ञ्याः पञ्चदशाक्षरः ॥२॥ इति।

राज्ञी-मन्त्रोद्धार—श्यामातन्त्र के अनुसार तार = ॐ, लज्जा = ह्रीं, श्रियं = श्रीं, अग्नि = रां, काम = क्लीं, शक्ति = सौः—ये छः बीज राज्ञी के हैं। इन्हें छः शिर मानकर पल्लव लगावे। ये भगवत्यै राज्ञै, माया = ह्रीं और ठद्वय = स्वाहा हैं। इनके योग से राज्ञी का पञ्चदशाक्षर मन्त्र बनता है—ॐ ह्रीं श्रीं रां क्लीं सौः भगवत्यै राज्ञै ह्रीं स्वाहा।।१-२।।

अग्निबीजनामानि

तत्र अग्निबीजनामानि, श्यामातन्त्रे—

अग्नी रेफश्च वह्निश्च हुतभुग् हव्यवाहनः ।
रं-बीजोद्धारमेतद्धि कृत्रिममपरं स्मृतम् ॥१॥

रं-इत्यग्निबीजम्। प्रकाशम्—ॐ ह्रीं श्रीं रां क्लीं सौः भगवत्यै राज्ञ्यै ह्रीं स्वाहा। इति।

अग्निबीज 'रां' के नाम श्यामातन्त्र के अनुसार—अग्नि, रेफ, वह्नि, हुतभुक्, हव्यवाहन हैं। अन्य नाम कृत्रिम हैं।।१।।

भीडामन्त्रोद्धारः

अथ भीडामन्त्रोद्धारः कुलचूडामणौ—

प्रणवं च विभूतिश्च हरिकान्ता तथैव च ।
वियच्छक्त्यग्निबीजानि संयोज्य वाग्भवं तथा ॥१॥
मदनं च तथा शङ्खाबीजं सप्ताक्षरं वदेत् ।
ठद्वयेन समायुक्तः प्रोक्तो विंशाक्षरो मनुः ॥२॥

तारं परा रमा वेदी चन्द्रमन्मथशक्तय: ।
भीडाभगवतीत्येवं हंसरूपिणि ठद्वयम् ॥३॥

प्रकाशम्—ॐ ह्रीं श्रीं ह्स्रां ऐं क्लीं सौ: भीडाभगवति हंसरूपिणि स्वाहा। इति।

भीड़ा-मन्त्रोद्धार—कुलचूड़ामणि के अनुसार भीड़ा देवी के मन्त्र में सात बीज—प्रणव = ॐ, विभूति = ह्रीं, हरिकान्ता = श्रीं, वियत् अग्निबीजसंयुक्त = ह्स्रां, वाग्भव = ऐं, मदन = क्लीं, शङ्खबीज = सौ: हैं। इसके बाद 'भीड़ा भगवति हंसरूपिणि' ठद्वय = स्वाहा जोड़ने से विंशाक्षर मन्त्र बनता है—ॐ ह्रीं श्रीं ह्स्रां ऐं क्लीं सौ: भीड़ा भगवति हंसरूपिणि स्वाहा।।१-२।।

तृतीय श्लोक के अनुसार तार = ॐ, परा = ह्रीं, रमा = श्रीं, वेदी = ह्स्रां, चन्द्र = ऐं, मन्मथ = क्लीं, शक्ति = श्रीं, भीड़ा भगवति, हंसरूपिणि ठद्वय = स्वाहा को मिलान से भी यह मन्त्र बनता है।।३।।

ज्वालामुखीमन्त्रोद्धार:

अथ ज्वालामुखीमन्त्रोद्धार: शारदातिलकटीकायां—

तारं लज्जां श्रियं चैवमन्ते कूर्चं हरं पय: ।
बीजं च त्र्यक्षरं देव्या ज्वालामुख्या: सुरेश्वरि ॥१॥
तारं लज्जां श्रियं चैव ज्वालामुखि ममेति च ।
सर्वशत्रून् भक्षय-द्विरन्ते कूर्चं हरं पय: ॥२॥

प्रकाशम्—ॐ ह्रीं श्रीं ज्वालामुखि मम सर्वशत्रून् भक्षय भक्षय हूं फट् स्वाहा। इति।

ज्वालामुखी-मन्त्रोद्धार—शारदातिलक की टीका के अनुसार तार = ॐ, लज्जा = ह्रीं, श्रियं = श्रीं प्रारम्भ में और अन्त में कूर्च = हुं, हरं = फट्, पय: = स्वाहा—ये कुल छ: बीज हैं। दूसरे श्लोक के अनुसार तार = ॐ, लज्जा = ह्रीं, श्रियं = श्रीं, ज्वालामुखि मम सर्वशत्रून् भक्षय भक्षय, कूर्च = हूं, हर = फट्, पय: = स्वाहा के योग से यह मन्त्र बनता है—ॐ ह्रीं श्रीं ज्वालामुखि मम सर्वशत्रून् भक्षय भक्षय हूं फट् स्वाहा।।१-२।।

दशविद्या मयाख्याता यथागमविनिश्चिता: ।
साधकेष्टप्रदा देव्यो नानारत्नविभूषिता: ॥१॥
एतासां दशविद्यानां गुणान् वक्ष्यामि त्वं शृणु ।

तत्तत् आगम के अनुसार विनिश्चित दश विद्याओं का वर्णन मैंने किया। ये सभी विद्यायें नाना रत्नविभूषित है एवं साधकों के लिये इष्ट फल को देने वाली हैं। इन दश विद्याओं के गुणों का वर्णन मैं करता हूँ; तुम सुनो।।१।।

दशविद्योपासनाफलम्

दक्षिणामूर्तिरुवाच

मुक्तिं ददाति त्रिपुरा लक्ष्मीं लक्ष्मीर्ददाति च।
विद्यां ददाति वाग्देवी प्रत्येकं जन्मनिश्चलाम् ।।२।।
तारा ज्ञानं तथा मोक्षं ह्यैश्वर्यं भुवनेश्वरी।
मातङ्गी राक्षसीशत्रुभीतिं हरति नित्यशः ।।३।।
शारिका शं ददात्येव राज्ञी राज्यं प्रयच्छति।
भीडादेवी ददात्येव सन्ततिं विश्वव्यापिनीम् ।।४।।
धनं ज्वालामुखी देवी भक्तेभ्यः सम्प्रयच्छति।
दशविद्या यथा एता भक्तेभ्यः फलमिष्टदम्।
प्रयच्छन्ति महादेव्यः पूजाहोमजपादिभिः ।।५।।

इति श्रीदक्षिणामूर्तिमुनिविरचिते उद्धारकोशे सर्वागमसारे
दशविद्यामन्त्रोद्धारकोशाख्यानं प्रथमः कल्पः।।१।।

दक्षिणामूर्ति ने कहा कि त्रिपुरा मुक्ति देती है, लक्ष्मी धन देती है, वाग्देवी विद्या देती है। यह विद्या प्रत्येक जन्म में निश्चल रहती है। तारा ज्ञान तथा मोक्ष देती है। भुवनेश्वरी ऐश्वर्य देती है। मातङ्गी राक्षसी एवं शत्रुभय का निरन्तर हरण करती है। शारिका शान्ति देती है और राज्ञी राज्य देती है। भीड़ा देवी सन्तान देती है, जो विश्वव्यापिनी होती है। ज्वालामुखी देवी भक्तों को धन देती है। ये दश देवियाँ भक्तों को पूजा, हवन, जपादि करने से उनकी इच्छानुसार फल देती हैं।।२-५।।

इस प्रकार रुद्रयामल तन्त्रोक्त श्रीदेवीरहस्य की भाषा टीका में सर्वागमसार में दश विद्यामन्त्रोद्धारकोशाख्यान नामक प्रथम कल्प पूर्ण हुआ।

अथ द्वितीयः कल्पः

षड्देवीमन्त्रोद्धारकोशभेदः

श्रीश्वर उवाच

शृणु देवि प्रवक्ष्यामि त्रिपुरां परिवारिताम् ।
षट्सखीभिरहं तासां मन्त्रोद्धारं ब्रवीमि ते ॥१॥

षड् देवी मन्त्रोद्धारकोश—श्री ईश्वर ने कहा—हे देवि! सुनो; मैं त्रिपुरा के परिवारगत उनकी छः सखियों के मन्त्रोद्धार का निरूपण करता हूँ।।१।।

अक्षोभ्य उवाच

गुरो विधातृसम्भूत नानाशास्त्रविशारद ।
श्रोतुमिच्छाम्यहं मन्त्रान् सर्वान् सम्मुक्तिहेतवे ॥२॥

अक्षोभ्य ने कहा—हे गुरो! आप ब्रह्मा द्वारा उद्भूत नाना शास्त्र के विशारद हैं। सम्मुक्ति के हेतु मैं उनके समस्त मन्त्रों को सुनना चाहता हूँ।।२।।

त्रिपुराषट्सखीनिरूपणम्

दक्षिणामूर्ति रुवाच

शृण्वक्षोभ्य महाभाग सर्वं वक्ष्यामि तत्त्वतः ।
दशविद्या भद्रकाली तुरी च च्छिन्नमस्तका ॥३॥
दक्षिणाकालिका श्यामा कालरात्रीति सुन्दर ।
षट्सखीनामहं तासां मन्त्रोद्धारं ब्रवीमि ते ॥४॥

दक्षिणामूर्ति ने कहा—हे महाभाग अक्षोभ्य! मैं सबों का तत्त्वतः वर्णन करता हूँ, सुनो। दश विद्याओं की सखी भद्रकाली, तुरी, छिन्नमस्तिका, दक्षिणाकालिका, श्यामा और कालरात्रि हैं। हे सुभग! अव उन छः सखियों के मन्त्रों का उद्धार निरूपण मैं करता हूँ।।३-४।।

भद्रकालीमन्त्रोद्धारः

तत्रादौ भद्रकालीमन्त्रोद्धारः। श्यामातन्त्रे—

कालीत्रयं कूर्चयुगं लज्जायुग्मं च भद्रिका ।
भद्रकालिपदं ब्रूयाद् बीजानि प्रतिलोमतः ॥१॥
ठद्वयेन समायुक्तो भद्रकाल्या महामनुः ।

भद्रकाली मन्त्रोद्धार—श्यामातन्त्र के अनुसार कालीत्रय = क्रीं क्रीं क्रीं, कूर्चयुग्म = हूं हूं, लज्जायुग्म = ह्रीं ह्रीं, भद्रिका = भैं, भद्रकाली के बाद बीजों को प्रतिलोमक्रम से जोड़कर अन्त में ठद्वय जोड़ने से भद्रकाली का महामन्त्र बनता है। मन्त्र है—क्रीं क्रीं क्रीं हूं हूं ह्रीं ह्रीं भैं भद्रकालि भैं ह्रीं ह्रीं हूं हूं क्रीं क्रीं क्रीं स्वाहा।।१।।

भद्रिकाबीजनामानि

तत्र भद्रिकाबीजनामानि मुण्डमालातन्त्रे—

भद्रिका भास्वती भीमा भैंबीजे त्रितयं स्मृतम्।
अनृतमपरं ज्ञेयं ब्रह्मान्वयसमुद्भव ॥१॥

प्रकाशम्—क्रीं क्रीं क्रीं हूं हूं भैं भद्रकालि भैं ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं क्रीं क्रीं क्रीं स्वाहा। इति।

मुण्डमाला तन्त्र के अनुसार भद्रिका बीज के नाम भद्रिका भास्वती, भीमा, ये तीन हैं। हे ब्रह्मकुलोत्पन्न! इनके अतिरिक्त सभी को असत्य माना जाता है।।१।।

तुरीमन्त्रोद्धारः

अथ तुरीमन्त्रोद्धारः स्वतन्त्रे—

प्रणवं तारका ज्योतिस्तारा ह्यन्ते नम इति।
तुर्या मूलमिदं प्रोक्तं स्वतन्त्रे शम्भुना स्वयम् ॥१॥

तुरी मन्त्रोद्धार—स्वतन्त्रतन्त्र के अनुसार प्रणव = ॐ, तारका = त्रुं, ज्योति = त्रौं, तारा = त्रों, नमः। तुर्या का यह मूल मन्त्र स्वयं शम्भु के द्वारा कथित है। मन्त्र है—ॐ त्रुं त्रौं त्रों महातुर्यै नमः।।१।।

तारकाज्योतिस्ताराबीजोद्धाराणि

अथ तारकाज्योतिस्ताराबीजोद्धाराणि कामेश्वरे तन्त्रे—

ऋक्षं भं तारका ज्योतिस्तारा बीजानि पञ्च च।

ॐ त्रुं त्रौं त्रों महातुर्यै नमः इति प्रकाशम्।

कामेश्वरतन्त्र के अनुसार तारका, ज्योति एवं तारा का प्रयोग ऋं, क्षं, भं के लिये क्रमशः होता है।

छिन्नमस्तामन्त्रोद्धारः

अथ च्छिन्नमस्तामन्त्रोद्धारः छिन्नाशिरोमणौ—

त्र्यम्बकः सकला पद्मा चारुकं च सुरेश्वरि।
अन्ते उच्छूनबीजं फट् ठद्वयेन समायुतम् ॥१॥

प्रकाशम्—ॐ ह्रीं श्रीं च्छ्रीं छिन्नमस्तके च्छ्रीं फट् स्वाहा। इति।

छिन्नमस्ता मन्त्रोद्धार—छिन्नाशिरोमणि के अनुसार त्र्यम्बक = ॐ, सकला = ह्रीं, पद्मा = श्रीं, चारुक = छ्रीं, सुरेश्वरि = छिन्नमस्तके, उच्छूनबीज = 'छ्रीं' फट् एवं ठद्वय के मिलने से यह मन्त्र बनता है। ॐ ह्रीं श्रीं च्छ्रीं छिन्नमस्तके च्छ्रीं फट् स्वाहा।।१।।

द्वितीयो भेदः आगमलहर्याम्—

लक्ष्मी लज्जां तथा मायां मात्रां द्वादशिकामथ।
वज्रवैरोचनीये द्वे माये फट्स्वाहया युते ॥१॥

प्रकाशम्—श्रीं ह्रीं ह्रीं ऐं वज्रवैरोचनीये ह्रीं ह्रीं फट् स्वाहा। इति।

छिन्ना का दूसरा मन्त्र आगमलहरी के अनुसार इस प्रकार है—लक्ष्मी = श्रीं, लज्जा = ह्रीं, माया = ह्रीं, मात्रा द्वादशिका = ऐं, वज्रवैरोचनीये, द्वे माये = ह्रीं ह्रीं, फट् स्वाहा। मन्त्र बनता है—श्रीं ह्रीं ह्रीं ऐं वज्रवैरोचनीये ह्रीं ह्रीं फट् स्वाहा।।१।।

दक्षिणाकालिकामन्त्रोद्धारः

अथ दक्षिणाकालीमन्त्रोद्धारः श्यामारहस्ये—

कुन्तीत्रयं तीरयुग्मं क्षामायुग्मं ततोऽभिधाम्।
दक्षिणे-कालिकेत्येवमन्ते कालीत्रयं पुनः ॥१॥
कूर्चयुग्मं परायुग्मं पयश्चैव सुरेश्वरि।
दक्षिणायाः कालिकाया मनुर्द्वाविंशदक्षरः ॥२॥

प्रकाशम्—क्रीं क्रीं क्रीं हूं हूं ह्रीं ह्रीं दक्षिणे कालिके क्रीं क्रीं क्रीं हूं हूं ह्रीं ह्रीं स्वाहा इति।

दक्षिणाकालिका मन्त्रोद्धार—श्यामारहस्य के अनुसार कुन्तीत्रय = क्रीं क्रीं क्रीं, तीरयुग्म = हूं हूं, क्षामायुग्म = ह्रीं ह्रीं, दक्षिणे कालिके, कालीत्रयं = क्रीं क्रीं क्रीं, कूर्चयुग्म = हूं हूं, परायुग्म = ह्रीं ह्रीं, पय = स्वाहा के संयोजन से दक्षिणा कालिका का द्वाविंशाक्षर मन्त्र बनता है। मन्त्र है—क्रीं क्रीं क्रीं हूं हूं ह्रीं ह्रीं दक्षिणे कालिके क्रीं क्रीं क्रीं हूं हूं ह्रीं ह्रीं स्वाहा।।१-२।।

श्यामामन्त्रोद्धारः

अथ श्यामामन्त्रोद्धारः। तत्र श्यामातन्त्रे—

हरिणाक्षी तथा लज्जा काली जिह्वाचतुष्टयम्।
ततः सुधारसे श्यामे कृष्णशापं विमोचय ॥१॥
अमृतं स्रावय स्वाहा श्याममन्त्रमुदाहृतम्।

प्रकाशम्—श्रीं ह्रीं क्रीं क्रीं क्रीं क्रीं क्रीं सुधारसे श्यामे कृष्णशापं विमोचय अमृतं स्रावय स्वाहा इति।

श्यामा मन्त्रोद्धार—श्यामातन्त्र के अनुसार हरिणाक्षि = श्रीं, लज्जा = ह्रीं, कालीजिह्वाचतुष्टये = क्रीं क्रीं क्रीं क्रीं, सुधारसे, श्यामे कृष्णशापं विमोचय अमृतं स्रावय स्वाहा के योग से यह मन्त्र बनता है। मन्त्र है—श्रीं ह्रीं क्रीं क्रीं क्रीं क्रीं सुधारसे श्यामे कृष्णशापं विमोचय अमृतं स्रावय स्वाहा।

कालरात्रिमन्त्रोद्धारः

अथ कालरात्रिमन्त्रोद्धारः। उक्तं च कालरात्रीकल्पे—

प्रणवं वासना माया मन्मथः कमलोद्भवम्।
बीजं पञ्चशिरो ज्ञेयं ततः पल्लवमुद्धरेत् ॥१॥
ततो मध्येऽभिधां त्यक्त्वा ह्यन्ते सर्वं वशं कुरु।
नीरो देहि-युगं मध्ये त्यक्त्वाभिधां च कामिनि ॥२॥
गणेश्वर्यै तथा चान्ते विश्वं च समुदाहृतम्।

प्रकाशम्—ॐ ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं काह्लेश्वरि सर्वजनमनोहरि सर्वमुखस्तम्भिनि सर्वराजवशङ्करि सर्वदुष्टनिर्दलिनि सर्वस्त्रीपुरुषकर्षिणि बन्दी शृङ्खलांस्त्रोटय त्रोटय सर्वशत्रून् भञ्जय भञ्जय द्वेष्यान् निर्दलय निर्दलय सर्वांस्तम्भय स्तम्भय मोहनास्त्रेण द्वेषिणमुच्चाटय उच्चाटय सर्वं वशं कुरु स्वाहा देहि देहि सर्वकालरात्रि कामिनि गणेश्वर्यै नमः।

कालरात्री मन्त्रोद्धार—कालरात्रीकल्प के अनुसार प्रणव = ॐ, वासना = ऐं, माया = ह्रीं, मन्मथ = क्लीं, कमला = श्रीं—ये पाँच बीज हैं। इसके बाद पल्लव लगाये। मध्य में अभिधा और अन्त में सर्ववशं कुरु, नीरं = स्वाहा, देहियुगं = देहि देहि, अभिधा सर्वकालरात्रि कामिनि गणेश्वर्यै विश्वं = नमः के योग से कालरात्री का मन्त्र बनता है। मन्त्र है—ॐ ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं काह्लेश्वरि सर्वजनमनोहरि सर्वमुखस्तम्भिनि सर्वराजवशंकरि, सर्वदुष्टनिर्दलिनि, सर्वस्त्रीपुरुषकर्षिणि बन्दीशृंखलां त्रोटय त्रोटय सर्वशत्रून् भञ्जय भञ्जय द्वेष्यान् निर्दलय निर्दलय सर्वांस्तम्भय स्तम्भय, मोहनास्त्रेण द्वेषिणमुच्चाटय उच्चाटय, सर्वं वशं कुरु स्वाहा देहि देहि सर्वकालरात्रि कामिनि गणेश्वर्यै नमः।

देवीभेदाः

बालाभेदाः

अथ भेदाः—

देवेशि त्रिपुराबालं विज्ञेयं द्वादशात्मकम् ॥३॥

उक्तं च मुण्डमालातन्त्रे—

द्वादशात्मकं विज्ञेयं देवि तत्त्रिपुराहनुम्।
केवलं मुक्तये देवि यत्प्रोक्तं तच्छुभं स्मृतम्॥१॥

बालाभेद—हे देवेशि! बाला त्रिपुरा द्वादशात्मक हैं—यह जानना चाहिये। मुण्डमाला तन्त्र में कहा भी गया है कि हे देवि! उस त्रिपुरामन्त्र को बारह प्रकार का जानना चाहिये। हे देवि! केवल मुक्ति के लिये जो भी कहा गया है, वह सभी कल्याणकारक है।

उड्डामरे—

अष्टात्मिका च विज्ञेया विद्या श्रीषोडशाक्षरी।
परं यत् सूचितं देवि सद्यो मुक्तिप्रदं स्मृतम्॥१॥

उड्डामर तन्त्र के अनुसार श्री षोडशाक्षरी मन्त्र के आठ भेद हैं। उनमें से पहले जिसको सूचित किया गया है, वह सद्यः मुक्तिप्रद है।।१।।

तथा स्वकृतौ त्रिपुराशिरोमणौ—

अष्टात्मकमिदं बीजं त्रिपुरायाः स्मृतं तथा।
अष्टभिर्वत्सरैर्वापि मासैरष्टभिरेव च॥१॥
अष्टभिर्दिवसैर्वापि जानीयान्मुक्तिलक्षणम्।

त्रिपुराशिरोमणि के अनुसार त्रिपुराबीज आठ प्रकार का है। इससे मुक्ति के लक्षण की जानकारी आठ वर्ष में या आठ मास में या आठ दिन में होती है।।१।।

लक्ष्मीभेदौ

लक्ष्मीभेदद्वयं ज्ञेयं भाषितं कृत्तिवाससा॥२॥
लक्ष्मी च रुक्मिणी चैव त्रिभिर्वर्षैः फलं लभेत्।

लक्ष्मीभेद—कृत्तिवास के कथनानुसार लक्ष्मी के दो भेद हैं—लक्ष्मी और रुक्मिणी। इनका फल तीन वर्षों में फल प्राप्त होता है।।२।।

सरस्वतीभेदाः

अथ सरस्वतीभेदाः कामिनीकल्पे—

वाग्देवी च तथा वाणी सरस्वत्यनलप्रिया।
भेदास्त्वेते तु विख्याताः फलं वर्षचतुष्टये॥१॥

सरस्वती-भेद—कामिनीकल्प के अनुसार वाग्देवी, वाणी, सरस्वती, अनलप्रिया—ये चार भेद सरस्वती के हैं, जिनका फल चार वर्षों में प्राप्त होता है।।१।।

ताराभेदाः

ततस्ताराभेदाः भैरवतन्त्रे—

तारापि तारिणी चैवमेकजटा तथैव च।
नीलसरस्वती चैवमुग्रतारा प्रकीर्तिता ॥१॥
ताराभेदास्तु पञ्चैवमक्षोभ्येण प्रकाशिताः।

ताराभेद—भैरवतन्त्र में अक्षोभ्य द्वारा कथित तारा के पाँच भेद हैं—तारा, तारिणी, एकजटा, नीलसरस्वती और उग्रतारा।

भुवनेश्वरीभेदाः

अथ भुवनेश्वरीभेदाः भैरवतन्त्रे—

भैरवी भीमरूपा च भीमापि भुवनेश्वरी।
भक्त्या फलप्रदा देवी नित्यं वर्षचतुष्टये ॥१॥

भुवनेश्वरीभेद—भैरवतन्त्र के अनुसार भुवनेश्वरी के चार भेद भैरवी, भीमरूपा, भीमा और भुवनेश्वरी हैं। नित्य भक्तिपूर्वक साधना करने से चार वर्षों में इनका फल प्राप्त होता है।।१।।

मातङ्गीभेदाः

अथ मातङ्गीभेदाः रुद्रयामले—

मातङ्गीसुमुख्योरैक्यं मतङ्गमुनिना स्मृतम्।
मातङ्गी चक्रिणी देवी कुब्जिका शाम्बरी तथा ॥१॥
देव्या भेदानि चत्वारि फलं वर्षचतुष्टये।

मातङ्गीभेद—रुद्रयामल के अनुसार मातङ्गी के चार भेद हैं। मातङ्गी मुनि के मत से मातङ्गी और सुमुखी एक ही हैं। मातङ्गी के चार भेद मातङ्गी, चक्रिणी, कुब्जिका और शाम्बरी हैं। इनकी साधना का फल चार वर्षों में मिलता है।।१।।

शारिकाभेदौ

अथ शारिकाभेदद्वयम्—

शारिकापि तथाऽपर्णा फलदापि द्विवर्षिके।

शारिकाभेद—शारिका के दो भेद शारिका और अपर्णा हैं। दो वर्ष में इनकी साधना का फल प्राप्त होता है।

राज्ञीभेदाः

अथ राज्ञीभेदाः—

राज्ञीभेदद्वयं प्रोक्तं राज्ञी च खगगामिनी।
द्विवर्षमध्ये भक्त्या च राज्ञी राज्यं प्रयच्छति॥१॥

राज्ञीभेद—राज्ञी के दो भेद राज्ञी और खगगामिनी हैं। दो वर्षों तक भक्तिपूर्वक आराधना करने पर राज्ञी राज्य देती है।

भीडायाः भेदाभावत्वम्

कुलिकार्णवे—

भीडा भेदविहीना च प्रजाभाग्यविवर्धिनी।

भीड़ाभेद—कुलिकार्णव के अनुसार भीड़ा भेदविहीन है। यह प्रजा के भाग्य की वृद्धि करती है।

ज्वालामुखीभेदाः

अथ ज्वालामुख्याः ज्वालाशिरोमणौ—

ततो ज्वालामुखी चैवमम्बिका भगरूपिणी।
यथेष्टफलदं प्रोक्तं ज्वालाभेदत्रयमिदम्॥१॥

ज्वालामुखी-भेद—ज्वालाशिरोमणि के अनुसार ज्वालामुखी के तीन भेद ज्वालामुखी, अम्बिका और भगरूपिणी हैं। ज्वाला के भेदत्रय यथेष्ट फल प्रदान करने वाले हैं।

दशमहाविद्याभेदाः

एतासां दशविद्यानां नानाभेदमुदाहृतम्।

इन दश विद्याओं के नाना भेदों का वर्णन किया गया। अब विद्याओं के भेदों का वर्णन किया जाता है।

त्रिपुराभेदास्तमन्त्रांश्च

तत्रादौ त्रिपुराभेदाः त्रिपुरातिलके मुण्डमालातन्त्रे च—

त्रिपुरा भैरवीविद्या हिङ्गुला चण्डिका तथा।
चामुण्डा नारसिंही च ह्यैन्द्री हैमवतीश्वरी॥१॥
मृडानी वारुणी दुर्गा महात्रिपुरसुन्दरी।
देव्या द्वादशभेदास्तु प्रोक्ता ह्येते त्रिशूलिना॥२॥
श्रीं ह्रीं सौः त्रिपुरेऽपि चन्द्रवसने कामः शरद्धैरवि

ॐ ह्रीं श्रीं हिङ्गुले तथैव कमला क्षामः त्र्यक्षं चण्डिके ।
चामुण्डे हसकलह्रीं च सकलह्रीं श्रीनारसिंहि तथा
ह्रैन्द्रि चारणमेव ह्रीं च मदनः कामं परा रुक्मिणी ॥३॥
देवी हैमवतीश्वर्यपि कमला लज्जा तथा मन्मथ-
श्चन्द्रो वारुणि वा कएईलपरा दुर्गे स्मृता शम्भुना ।
श्रीं ह्रीं क्लीं चारणं शरदपि तथा त्र्यक्षं परा रुक्मिणी
विद्याश्रीर्विपरीतभावसहिता स्यात् षोडशात्माविधिः ॥४॥

इति षोडशाक्षरीभेदाः।

प्रकाशम्—श्रीं ह्रीं सौः त्रिपुरे। ऐं क्लीं सौः भैरवि। ॐ ह्रीं सौः हिङ्गुले। श्रीं ह्रीं ॐ चण्डिके। हसकलह्रीं चामुण्डे। सकलह्रीं श्री नारसिंहि। ॐ ह्रीं क्लीं ऐन्द्रि। क्लीं ह्रीं श्रीं देवि हैमवतीश्वरि। श्रीं ह्रीं क्लीं मृडानि। ऐं वारुणि। कएईलह्रीं दुर्गे। श्रीं ह्रीं क्लीं ऐं सौः ॐ ह्रीं श्रीं, कएईलह्रीं, हसकहलह्रीं, सकलह्रीं, सौः ऐं क्लीं ह्रीं श्रीं महात्रिपुरसुन्दरि—इति।

त्रिपुरा—त्रिपुरातिलक और मुण्डमालातन्त्र के अनुसार त्रिशूली के द्वारा त्रिपुरा के बारह भेदों का कथन किया गया है। इसके अनुसार ये बारह भेद हैं— त्रिपुरा, भैरवी, हिङ्गुला, चण्डिका, चामुण्डा, नारसिंही, ऐन्द्री, हैमवती, मृडानी, वारुणी, दुर्गा और महात्रिपुरसुन्दरी। इनके मन्त्र इस प्रकार के हैं—

१. त्रिपुरा—ॐ ह्रीं ह्रीं सौः त्रिपुरे।

२. भैरवी—चन्द्र = ऐं, काम = क्लीं, शरत् = सौः अर्थात् ऐं क्लीं सौः।

३. हिङ्गुला—ॐ ह्रीं श्री हिङ्गुले।

४. चण्डिका—कमला = श्रीं, क्षाम = ह्रीं, त्र्यक्ष = ॐ के माथ चण्डिके लगाने से मन्त्र स्पष्ट है—श्रीं ह्रीं ॐ चण्डिके।

५. चामुण्डा—हसकलह्रीं चामुण्डे।

६. नारसिंही—सकलह्रीं श्रीं नारसिंहि।

७. ऐन्द्री—चारण = ॐ, ह्रीं, मदन = क्लीं के योग से ऐन्द्री मन्त्र है—ॐ ह्रीं क्लीं ऐन्द्रि।

८. हैमवतीश्वरी—काम = क्लीं, परा = ह्रीं, रुक्मिणी = श्रीं के योग से मन्त्र बनता है—क्लीं ह्रीं श्रीं देवी हैमवतीश्वरि।

९. मृडानी—कमला = श्रीं, लज्जा = ह्रीं, मन्मथ = क्लीं के योग से मन्त्र बनता है—श्रीं ह्रीं क्लीं मृडानि।

१०. वारुणी—ऐं वारुणि।

११. दुर्गा—कएईलह्रीं दुर्गे।

१२. महात्रिपुरसुन्दरी—श्रीं ह्रीं क्लीं, चारण = ऐं, शरत् = सौ:, त्र्यक्ष = ॐ, परा = ह्रीं, रुक्मिणी = श्रीं, विद्या = श्रीं के बाद विपरीतक्रम से बीजों के योग से षोड़शी मन्त्र बनता है—श्रीं ह्रीं क्लीं ऐं सौ: ॐ ह्रीं श्रीं कएईलह्रीं हलकहलह्रीं सकलह्रीं सौ: ऐं क्लीं ह्रीं श्रीं महात्रिपुरसुन्दरि।

श्रीदेव्युवाच

महेश्वर त्रिकालज्ञ शरणागतवत्सल।
भेदैर्युतानां देवीनां मन्त्रं त्वं वक्तुमर्हसि ॥१॥

श्री देवी ने कहा कि त्रिकालज्ञ महेश्वर! शरणागतवत्सल!! देवियों के मन्त्र का उनके भेदों सहित वर्णन कीजिये।

ईश्वर उवाच

दयया तव देवेशि तद्वक्ष्यामि समासत:।

ईश्वर ने कहा—हे देवेशि! दया से तुम्हारे ऊपर विवश होकर मैं उनका क्रमश: वर्णन करता हूँ।

लक्ष्मीमन्त्रोद्धार:

अथ श्रिया मन्त्रोद्धार: यदुक्तं भैरवतन्त्रे—

ॐ ह्रीं श्रीं हरिणाक्षीबीजद्वयं फलप्रदं सद्य:।
त्र्यक्षं ह्रीं शक्तिनीरमन्ते प्रोक्तमथापि धूर्जटिना ॥१॥

प्रकाशम्—ॐ ह्रीं श्रीं लक्ष्मि ॐ ह्रीं स: स्वाहा।

लक्ष्मीमन्त्रोद्धार—भैरवतन्त्र के अनुसार लक्ष्मीमन्त्र दो प्रकार के हैं। 'ॐ ह्रीं श्रीं' तत्काल फलदायी हैं। 'ॐ ह्रीं स: स्वाहा' धूर्जटि द्वारा कथित है। पहला लक्ष्मीमन्त्र है—ॐ ह्रीं श्रीं लक्ष्मि ॐ ह्रीं स: स्वाहा।

रुक्मिणीमन्त्रोद्धार:

अथ रुक्मिण्या मन्त्रोद्धार:—

ॐ ह्रीं चैवं तु रुक्मिण्यास्तारं लक्ष्मीरपस्तथा।
अन्ते प्रोक्तं महेशानि लक्ष्मीभेदं द्वयं त्विदम् ॥१॥

ॐ ह्रीं रुक्मिणि ॐ ह्रीं स्वाहा।

रुक्मिणी-मन्त्रोद्धार—ॐ ह्रीं रुक्मिणि, तार = ॐ, लक्ष्मी = श्रीं, अप = स्वाहा के योग से दूसरा मन्त्र बनता है। मन्त्र है—ॐ ह्रीं रुक्मिणि ॐ श्रीं स्वाहा।

वाग्देवतामन्त्रोद्धारः

अथ सरस्वतीभेदाः—

तोमा परा वाग्भवमेव क्षामा तारं च प्रोक्तं परमेश्वरेण।
वाग्देवतायाः फलदं हि बालं नृणां परो मुक्तिपरायणानाम् ॥४॥

प्रकाशम्—ॐह्रींऐंह्रींॐ वाग्देवतायै नमः।

वाग्भव मन्त्र—तोमा = ॐ, परा = ह्रीं, वाग्भव = ऐं, क्षामा = ह्रीं, तार = ॐ के बाद वाग्देवतायै नमः के योग से मन्त्र स्पष्ट है—ॐ ह्री ऐं ह्रीं ॐ वाग्देवतायै नमः। यह मन्त्र बालकों तथा मुक्तिकामी मनुष्यों के लिये फलप्रद है।

वाणीमन्त्रोद्धारः

अथ वाणीभगवत्या मन्त्रः—

तारं लज्जोर्ध्वबीजं च ह्यन्ते स्तम्भमुदाहृतम्।

प्रकाशम्—ॐह्रींऐं वाणीभगवत्यै नमः।

वाणी भगवती मन्त्र—तार = ॐ, लज्जा = ह्रीं, ऊर्ध्वबीज = ऐं, अन्त में नाम के योग से मन्त्र बनता है—ॐ ह्रीं ऐं वाणीभगवती नमः।

सरस्वतीमन्त्रोद्धारः

अथ सरस्वतीमन्त्रः—

चार्वङ्ग्यपि विभूतिश्च त्र्यक्षं सरस्वत्यै ततः।
नमोऽन्ते परमेशानि मया प्रोक्तं नगात्मजे ॥५॥

प्रकाशम्—ऐं ह्रीं ॐ सरस्वत्यै नमः।

सरस्वती मन्त्र—चार्वंगी = ऐं, विभूति = ह्रीं, त्र्यक्ष = ॐ, सरस्वत्यै नमः के योग से मन्त्र स्पष्ट होता है—ऐं ह्रीं ॐ सरस्वत्यै नमः।

अनलप्रियामन्त्रोद्धारः

अथानलप्रियामन्त्रः—

तारं लज्जा वाग्भवं च मध्येऽनलप्रिये ततः।
त्र्यक्षं विश्वं तथान्ते च पर्वतेश्वरनन्दिनि ॥६
देव्याश्चत्वारि भेदानि सरस्वत्या वरानने।

प्रकाशम्—ॐ ह्रीं ऐं अलनप्रिये ॐ नमः।

अनलप्रिया मन्त्र—तार = ॐ, लज्जा = ह्रीं, वाग्भव = ऐं, अनलप्रिये, त्र्यक्ष = ॐ, विश्व नम: के योग से मन्त्र स्पष्ट होता है—ॐ ह्रीं ऐं अनलप्रिये ॐ नम:।

हे वरानने! सरस्वती देवी के चारो भेदों के यही चार प्रकार के मन्त्र हैं।

तारामन्त्रभेदा:

अथ ताराभेदा:, प्रकाशम्—ॐऐंहूंह्रींऐंहूं तारे फट् स्वाहा। ह्रींह्रींऐंहूं उग्रतारे फट् स्वाहा। ॐस्त्रींऐंहूं एकजटे फट् स्वाहा। ॐह्रींऐंहूं नीलसरस्वति फट् स्वाहा। ॐह्रांस्त्रींह्रींऐंहूं उग्रतारे फट् स्वाहा। इति ताराभेदा:।

तारामन्त्रभेद—तारा के पाँच भेद पूर्व में निर्दिष्ट हैं, उनके मन्त्र इस प्रकार हैं—

१. ॐ ऐं हूं ह्रीं ऐं हूं तारे फट् स्वाहा—तारा।
२. ॐ ह्रीं ऐं हूं तारिणि फट् स्वाहा—तारिणी।
३. ॐ स्त्रीं ऐं हूं एकजटे फट् स्वाहा—एकजटा।
४. ॐ ह्रीं ऐ हूं नीलसरस्वति फट् स्वाहा—नीलसरस्वती।
५. ॐ ह्रां स्त्रीं ह्रीं ऐं हूं उग्रतारे फट स्वाहा—उग्रतारा।

भुवनेश्वरीमन्त्रभेद:

अथ भुवनेश्वर्या भेदा:—ॐ भैरव्यै नम:। ॐ ह्रीं भीमरूपायै नम:। ॐह्रींश्रीं भीमायै नम:। ॐह्रींश्रींक्लीं भुवनेश्वर्यै नम:। इति।

भुवनेश्वरी-भेद—पूर्ववर्णित चार प्रकार की भुवनेश्वरी के मन्त्र इस प्रकार हैं—

१. ॐ भैरव्यै नम:—भैरवी।
२. ॐ ह्रीं भीमरूपायै नम:—भीमरूपा।
३. ॐ ह्रीं श्रीं भीमायै नम:—भीमा।
४. ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं भुवनेश्वर्यै नम: भुवनेश्वरी।

मातङ्गीमन्त्रभेदा:

अथ मातङ्गीभेदा:; प्रकाशम्—ॐक्रींरींप्रींप्रींच्छ्रीं उच्छिष्टचण्डालिनि देवि महापिशाचिनि मातङ्गि देवि क्रींठ: ह्रींठ: ऐंठ: स्वाहा।

द्वाविंशाक्षरो मन्त्र: सुमुख्या: स्वाहान्तो वा। ॐ उच्छिष्टचण्डालिनि सुमुखि देवि महापिशाचिनि ह्रींठ: ठ: (२२)।

मातङ्गीभेद—चतुर्विध मातङ्गी के मन्त्र इस प्रकार हैं—

ॐ क्रीं श्रीं प्रीं प्रीं च्छ्रीं उच्छिष्टचण्डालिनि देवि महापिशाचिनि मातङ्गि देवि क्रींठ:, ह्रींठ:, ऐंठ: स्वाहा। इस द्वाविंशाक्षर मन्त्र में मातङ्गी देवी के स्थान पर सुमुखी देवी और

अन्त में स्वाहा लगाने से सुमुखी-मन्त्र बनता है। तीसरा मन्त्र है—ॐ उच्छिष्टचण्डालिनि सुमुखि देवि महापिशाचिनि ह्रीं ठः ठः। इसमें भी २२ अक्षर हैं।

चक्रिणीमन्त्रः

अथ चक्रिण्याः—ॐक्रींह्रीं महाचक्रिणि ऐंठः स्वाहा।

चक्रिणी-मन्त्र—ॐ क्रीं च्छ्रीं महाचक्रिणि ऐं ठः स्वाहा।

कुब्जिकामन्त्रः

अथ कुब्जिकायाः—ॐश्रींप्रीं कुब्जिके देवि ह्रींठः स्वाहा।

कुब्जिका-मन्त्र—ॐ श्रीं प्रीं कुब्जिके देवि ह्रीं ठः स्वाहा।

शाम्बरीमन्त्रः

अथ शाम्बर्याः—ॐप्रीं देवि शाम्बरि क्रींठः स्वाहा।

शाम्बरी-मन्त्र—ॐ प्रीं देवि शाम्बरि देवी क्रीं ठः स्वाहा।

शारिकामन्त्रभेदाः

अथ शारिकाभेदद्वयम्—तत्राऽपर्णामूलम्; ॐहूंच्छ्रीं आंशां देव्यै अपर्णायै नमः। (अथ हैमवतीश्वरीमूलम्—ॐह्रींश्रीहैमवतीश्वरि ह्रीं स्वाहा)।

भीडा भेदविहीना इत्यलम्।

शारिका-भेद—द्विविध शारिका के मन्त्र भी दो प्रकार के हैं—

१. अपर्णा—ॐ हूं च्छ्रीं आं शां देव्यै अपर्णायै नमः।

२. हैमवतीश्वरी—ॐ ह्रीं श्रीं हैमवतीश्वरि ह्रीं स्वाहा।

भीडादेवी का मन्त्र भेदविहीन है, एक ही है।

ज्वालामुखीमन्त्रभेदाः

ज्वालामुखीभेदाः, तत्राम्बिकामूलम्—ॐह्रीं मातरम्बिके हूं फट् स्वाहा।

अथ भगरूपिण्याः—ॐश्रीं देवि भगरूपिणि हूं फट् स्वाहा।

ज्वालामुखी-भेद—

१. अम्बिका—ॐ ह्रीं मातरम्बिके हूं फट् स्वाहा।

२. भगरूपिणी—ॐ ह्रीं देवि भगरूपिणि हूं फट् स्वाहा।

एतानि भेदमन्त्राणि मया प्रोक्तानि पार्वति।
एतासां दशविद्यानामन्यासां शृणु वच्म्यहम् ॥७॥

हे पार्वति इतने मन्त्रभेदों का कथन मैंने किया। इन दशविद्याओं के अतिरिक्त देवियों का अब मैं वर्णन करता हूँ, सुनो।।७।।

भद्रकाली-दक्षिणकालीमन्त्रः

भद्रकाली यथा देवी दक्षिणा कालिका तथा।
तुरी भेदविहीनास्ति यथेष्टफलदायिनि ॥८॥

प्रकाशम्—क्रीं क्रीं क्रीं हूं हूं ह्रीं ह्रीं भैं भद्रकालि भैं ह्रीं ह्रीं हूं हूं क्रीं क्रीं क्रीं स्वाहा।

क्रीं क्रीं क्रीं हूं हूं ह्रीं ह्रीं दक्षिणे कालिके क्रीं क्रीं क्रीं हूं हूं ह्रीं ह्रीं स्वाहा (२२)।

जैसी भद्रकाली हैं वैसी ही दक्षिणा कालिका भी हैं। ये दोनों की भेदविहीन हैं और यथेष्ट फलदायिनी हैं। इनका मन्त्र इस प्रकार है—

भद्रकाली—क्रीं क्रीं क्रीं हूं हूं ह्रीं ह्रीं भैं भद्रकालि भैं ह्रीं ह्रीं हूं हूं क्रीं क्रीं क्रीं स्वाहा।

दक्षिणां कालिका—क्रीं क्रीं क्रीं हूं हूं ह्रीं ह्रीं दक्षिणे कालिके क्रीं क्रीं क्रीं हूं हूं ह्रीं ह्रीं स्वाहा।

दोनों ही मन्त्रों में बाईस अक्षर हैं।।८।।

छिन्नमस्तामन्त्रभेदौ

अथ च्छिन्नमस्ता द्विविधा—ॐह्रींश्रींछ्रींछ्रीं छिन्नमस्तके छ्रीं फट् स्वाहा।

द्वितीया—ॐह्रींश्रींऐं वज्रवैरोचनि ह्रीं ह्रीं फट् स्वाहा।

द्विविध छिन्नमस्ता के मन्त्र भी दो प्रकार के हैं—

१. ॐ ह्रीं श्रीं छ्रीं छ्रीं छिन्नमस्तके छ्रीं फट् स्वाहा।
२. ॐ ह्रीं श्रीं ऐं वज्रवैरोचनि ह्रीं ह्रीं फट् स्वाहा।

दक्षिणा कालिका श्यामा कालरात्री सुरेश्वरि।
एता भेदविहीनाश्च यथाकामफलप्रदाः ॥९॥

इति श्रीदक्षिणामूर्तिमुनिविरचिते उद्धारकोशे सर्वागमसारे षड्देवीमन्त्रोद्धारकोशभेदससूचको द्वितीयः कल्पः॥२॥

हे सुरेश्वरि! दक्षिणा कालिक, श्यामा एवं कालरात्रि—ये भेदविहीन हैं और यथेच्छ फल प्रदान करने वाली हैं।।९।।

इस प्रकार रुद्रयामल तन्त्रोक्त श्रीदेवीरहस्य की भाषा टीका में षड्देवी मन्त्रोद्धारकोशभेदसूचक नामक द्वितीय कल्प पूर्ण हुआ।

●

अथ तृतीयः कल्पः

सप्तदेवी-सप्तकुमारकोशाख्यानम्

अक्षोभ्यशिष्याय षोडशीविद्यानिरूपणानन्तरं
मन्त्राकांक्षिनामन्यमुनीनामाश्रमागमनम्

ईश्वर उवाच

अथो देवि प्रवक्ष्यामि देवीनां मन्त्रमुत्तमम्।
शृणुष्वैकाग्रमनसा ब्रवीमि त्वत्कुतूहलात् ॥१॥
दक्षिणामूर्तिना तस्मिन् कालेऽन्तेवासिने तथा।
भाषिता षोडशीविद्या ननन्दाक्षोभ्यको मुनिः ॥२॥
तस्मिन् काले मुनेस्तस्य चाश्रमं मुनिसेवितम्।
आययुर्मुनयः सर्वे सोत्सुका मन्त्रकाङ्क्षिणः ॥३॥
लोहितोद्दालकौ शङ्खमातङ्गौ पुण्डरीकजौ।
शाण्डिल्यगालवौ चैवमेते तस्याश्रमं ययुः ॥४॥
सर्वे मिलित्वा मुनिपुङ्गवं ते श्रीदक्षिणामूर्तिमिदं तमूचुः।
परस्परं वै स्वकुलेष्टदेवीमन्त्रांश्च वन्द्यान् शुभदान् पप्रच्छुः ॥५॥

सप्त देवी एवं सप्त कुमार-कोशाख्यान—ईश्वर ने कहा—हे देवि! अब मैं तुम्हारे कुतूहल के कारण देवियों के उत्तम मन्त्र को कहता हूँ, एकाग्र मन से सुनो। जिस समय अपने शिष्य ननन्द एवं अक्षोभ्य को दक्षिणामूर्ति ने षोडशी विद्या का उपदेश किया था, उस समय उनके आश्रम में रहने वाले बहुत से मुनियों को इसे सुनने की उत्सुकता थी। अतः उनके आश्रम में लोहित, उद्दालक, शङ्ख, मातङ्ग, पुण्डरीक, शाण्डिल्य और गालव मुनि भी आ गये। सबों ने मिलकर मुनिपुङ्गव दक्षिणामूर्ति से अपने-अपने कुल की इष्टदेवी, मन्त्र और शुभद स्तोत्र के बारे में जानने की जिज्ञासा प्रकट की।।१-५।।

श्रीदक्षिणामूर्तिरुवाच

शृणुध्वं मुनयः सर्वे वक्ष्याम्याश्चर्यमुत्तमम्।
चराचरेऽस्मिञ्जगति देवी त्रिपुरसुन्दरी ॥६॥
नैव तादृक् कचिदस्ति देवीसीमन्तशेखरा।
तस्याश्च वदनाम्भोजात् सप्त देव्यः श्रुता मया ॥७॥

यथेष्टफलदायिन्यः सर्वरोगभयापहाः ।
अचिरेणैव कालेन फलदास्तन्मुखाच्छुताः ॥८॥

श्री दक्षिणामूर्ति ने कहा—हे मुनिगण! आप सब सुनो; मैं उत्तम आश्चर्य का वर्णन करता हूँ। इस चराचर संसार में केवल त्रिपुरसुन्दरी ही देवी हैं। इनके समान दूसरा कुछ भी नहीं है। यह देवी सीमन्तशेखरा हैं। उनके मुखकमल से मैंने सात देवियों के बारे में सुना है। ये सातों देवियाँ इच्छानुसार फल देने वाली हैं। सभी रोगों और भयों का विनाश करने वाली हैं। उस देवी के मुख से मैंने सुना है कि थोड़े समय की आराधना से ही ये देवियाँ इच्छित फल देती हैं।।६-८।।

मुनीनां प्रार्थना

ऋषय ऊचुः

का देव्यः कानि नामानि कीदृशानि मनूनि हि ।
प्रसादं कुरु विप्रर्षे चेदस्मासु दया तव ॥९॥

ऋषियों ने कहा कि वे देवियाँ कौन हैं? उनके नाम क्या हैं? उनके मन्त्र कैसे हैं? हे विप्रर्षे! हम पर दया करके उनके बारे में हमें बतलाइये?।।९।।

मुनिरुवाच

देवीनां परया प्रीत्या मन्त्रान् शृणुध्वमग्रतः ।
येन श्रवणमात्रेण हयमेधफलं लभेत् ॥१०॥

दक्षिणामूर्ति मुनि ने कहा कि पहले परम भक्ति से देवियों के मन्त्रों को सुनिये; जिनके श्रवणमात्र से ही अश्वमेध यज्ञ का फल प्राप्त होता है।।१०।।

ईश्वर उवाच

मुनीश्वरान् पुनर्देवो दक्षिणामूर्तिरब्रवीत् ।
सप्त विद्याः पुरा प्रोक्ता वज्रयोगिन्यादिदेवताः ॥११॥

ईश्वर ने कहा कि दक्षिणामूर्ति ने मुनीश्वरों को मन्त्रों को बतलाया। पूर्वोक्त वज्रयोगिनी आदि सात विद्याओं को कहा।।११।।

दक्षिणामूर्तिमुखात्सप्तदेवीकथनम्

तासां वक्ष्यामि नामानि पर्वतेश्वरनन्दिनि ।
दक्षिणामूर्तिना तेषां प्रकाशितानि तत्त्वतः ॥१२॥
श्रीवज्रयोगिनी-देवी वाराही शारदा तथा ।
कामेश्वरी तथा गौरी ह्यन्नपूर्णा तथैव च ॥१३॥

कुलवागीश्वरी ह्येताः सप्त देव्यः श्रुता मया।
दक्षिणामूर्तिना तेषां सप्त विद्याः प्रकीर्तिताः ॥१४॥
एतासां बलमाश्रित्य देवी त्रिपुरसुन्दरी।
ससृजे जगदेतच्च पाल्यते च सुरेश्वरि ॥१५॥
हरतेऽपि तथा विश्वं चराचरसमन्वितम्।

हे पर्वतेश्वरनन्दिनि! दक्षिणामूर्ति द्वारा बतलाये गये देवियों के नाम मैं बतलाता हूँ। ये देवियाँ हैं—श्रीवज्रयोगिनी, वाराही, शारदा, कामेश्वरी, गौरी, अन्नपूर्णा एवं कुलवागीश्वरी। हे सुरेश्वरि! इन्हीं के बल पर देवी त्रिपुरसुन्दरी इस जगत् की सृष्टि करती हैं, पालन करती हैं और चराचर-समन्वित विश्व का संहार भी करती हैं।।१२-१५।।

ऋषिरुवाच

एतद्वाक्यामृतं तस्या मुखाम्भोजाच्छ्रुतं मया।
तासां वक्ष्यामि मन्त्राणि शृणुध्वं मुनिपुङ्गवाः ॥१६॥

दक्षिणामूर्ति ऋषि ने कहा—हे मुनिपुङ्गवों! देवी के मुखकमल से जो अमृतवाणी मैंने सुनी है, उन मन्त्रों को कहता हूँ, आप सब सुनें।।१६।।

वज्रयोगिनीमन्त्रोद्धारः

अथ मन्त्रोद्धाराः, तत्रादौ वज्रयोगिनीमन्त्रोद्धारः, उक्तं च स्वतन्त्रे—

प्रणवं सकला चैव बीजौ द्वौ फलदायकौ।
मध्येऽपि वज्रयोगिन्यै ह्यन्ते नीरमुदाहृतम् ॥१॥

प्रकाशम्—ॐ ह्रीं वज्रयोगिन्यै स्वाहा।

वज्रयोगिनी-मन्त्रोद्धार—स्वतन्त्रतन्त्र के अनुसार प्रणव = ॐ, सकला = ह्रीं, वज्रयोगिन्यै, अन्त में नीर = स्वाहा के योग से फलदायक दो बीजों से समन्वित वज्रयोगिनी का मन्त्र बनता है। मन्त्र है—ॐ ह्रीं वज्रयोगिन्यै स्वाहा।

वज्रयोगिनीमन्त्रोपासनाफलम्

अस्या मन्त्रं समुच्चार्य यः संग्रामं प्रविशति।
स निर्जित्य रिपून् सर्वान् कल्याणी गृहमाविशेत् ॥१७॥
अस्या बीजद्वयं देवि जपते यदि मानवः।
द्वादशदिवसं तावत्सिद्धिर्भवति वाञ्छिता ॥१८॥

वज्रयोगिनी-मन्त्रोपासना का फल—इस मन्त्र का उच्चारण करके जो युद्ध में प्रवेश करता है, वह सभी शत्रुओं को जीतकर सुखपूर्वक अपने घर लौट आता है। हे

देवि! जो मनुष्य इसके दोनों बीजों—ॐ ह्रीं का जप बारह दिनों तक करता है, उसे इच्छानुसार सिद्धि प्राप्त होती है।।१७-१८।।

अस्या बीजावुपादिश्य ह्येकान्ते प्रजपेन्नरः।
ऋतुस्नाताया भार्याया मैथुनं कुरुते नरः ॥१९॥
शुक्रेण सह देवेशि सप्तभिरौषधैर्लिखेत्।
लिखित्वा स भवेद्राजा अस्या यन्त्रं समन्त्रकम् ॥२०॥
लिखित्वा धारयेन्मूर्ध्नि त्रैलोक्यविजयी भवेत्।
अस्याः सम्भोगकाले तु मन्त्रं जपेत् सुरेश्वरि ॥२१॥
कान्ताया मैथुनं कुर्याद् बहुपुत्रयुतो भवेत्।
अस्या यन्त्रं समन्त्रं च बाहौ यो धारयेन्नरः ॥२२॥
यावज्जन्म भवेत्तस्य तावच्छत्रुर्न जीवति।
अस्या यन्त्रं समन्त्रं च हृदि यो धारयेन्नरः ॥२३॥
यावज्जन्म भवेत्तस्य तावल्लक्ष्मीर्भविष्यति।
अस्या यन्त्रं समन्त्रं च कुक्षौ यो धारयेन्नरः ॥२४॥
अनुवादे स शत्रूणां वाक्यज्ञः सहसा भवेत्।
तस्यास्त्रिपुरसुन्दर्या मुखाम्भोजान्मया श्रुतम् ॥२५॥
फलमेतन्महाश्चर्यकारकं मुनिपुङ्गवाः।

इति वज्रयोगिनी।

जो साधक एकान्त में उपासनारत रहकर इन दो बीजों का जप करता है और ऋतुस्नाता अपनी पत्नी से मैथुन करता है और सात औषधियों में अपना वीर्य मिलाकर मन्त्रसहित इसके यन्त्र को लिखता है और मूर्धा में धारण करता है, वह त्रैलोक्यविजयी राजा होता है। सम्भोग काल में जो इस मन्त्र का जप करते हुए अपनी कान्ता से मैथुन करता है, उसे बहुत पुत्र होते हैं। मन्त्रसहित इस यन्त्र को जो बाँह में जीवन भर धारण करता है, उसका कोई शत्रु जीवित नहीं रहता। मन्त्रसहित इस यन्त्र को जो हृदय पर धारण करता है, जीवन भर लक्ष्मी उसके घर में वास करती है। मन्त्रसहित इस यन्त्र को जो कुक्षि में धारण करता है, वह शास्त्रार्थ में सहसा वाग्मी हो जाता है। यह सब मैंने त्रिपुरसुन्दरी के मुखकमल से सुना है। हे मुनिश्रेष्ठों! इनके फल महान् आश्चर्यकारक हैं।।१९-२५।।

वाराहीमन्त्रोद्धारः

अथ वाराहीमन्त्रोद्धारः, उक्तं च स्वकृतौ त्रिपुरातिलके—

वासना चैव वाल्हीकं तमोबीजसमन्वितम् ।
वाग्भवं सौश्मकं चैव ततः पल्लवमुद्धरेत् ॥१॥
भगवति च वार्तालि तथा वाराहि देवते ।
वराहमुखि चैवं तु वासना च मठं तथा ॥२॥
ततः पङ्कजपयोजौ हरं नीरं महेश्वरि ।
भगवत्यास्तु वाराह्या एकत्रिंशाक्षरो मनुः ॥३॥

वाराही मन्त्रोद्धार—त्रिपुरातिलक के अनुसार वासना ऐं, वाल्हीक = ग्लौं, तमोबीज = लं, वाग्भव = ऐं, औश्मक = नमः, पल्लव = भगवति वार्तालि वाराहि देवते वराहमुखि, वासना = ऐं, मठ = ग्लौं, पंकजपयोज = ठः ठः, हर = फट्, नीर = स्वाहा के योग से इकतीस अक्षरों का जो मन्त्र बनता है, वही वाराही मन्त्र है।

वाह्लीकबीजनामानि

तत्र वाल्हीकबीजनामानि मुण्डमालातन्त्रे—

वाल्हीकं मठसंज्ञं च हिङ्गुबीजं मुनीश्वराः ।
ग्लौं-बीजोद्धारमेतद्धि चान्यदनृतमावदेत् ॥१॥

वाल्हीक बीज 'ग्लौं' के नाम मुण्डमालातन्त्रानुसार वाल्हीक, मठ, हिंगु हैं। अन्य सत्य नहीं है।

तमोबीजनामानि

अथ तमोबीजनामानि स्वतन्त्रे—

तमोबीजं तथा ध्वान्तं मोहं तिमिरमेव च ।
लं-बीजोद्धाराण्येतानि कृत्रिमाण्यपराणि तु ॥१॥

प्रकाशम्—ऐंग्लौंलंऐं नमो भगवति वार्तालि वाराहि देवते वराहमुखि ऐंग्लौंठःठः फट् स्वाहा , इति वाराही।

तमोबीज के नाम स्वतन्त्रतन्त्रानुसार तमोबीज, ध्वान्त, मोह और तिमिर हैं। तमोबीज 'लं' बीज है। अन्य नाम सत्य नहीं हैं।

इन सबके योग से जो वाराही मन्त्र प्रकाशित होता है, वह है—ऐं ग्लौं लं ऐं नमो भगवति वार्तालि वाराहि देवते वराहमुखि ऐं ग्लौं ठः ठः फट् स्वाहा।

शारदामन्त्रोद्धारः

अथ शारदामन्त्रोद्धारः, उक्तं च शारदापटले—

तारं माया च मदनं शरद्विज्ञेयमौश्मकम् ।

मन्त्रं च पट्-शिरो ज्ञेयं ततः पल्लवमुद्धरेत् ॥१॥
भगवत्यै-शारदायै चान्ते लज्जा च ठद्वयम् ।

प्रकाशम्—ॐह्रींक्लींसौः नमो भगवत्यै शारदायै ह्रीं स्वाहा।

शारदा मन्त्रोद्धार—शारदापटल के अनुसार शारदामन्त्र तार = ॐ, माया = ह्रीं, मदन = क्लीं, शरत् = सौः, औशमक = नमः—ये कुल छः बीज, इसके बाद पल्लव = भगवत्यै शारदायै, लज्जा = ह्रीं, ठद्वय = स्वाहा के योग से बनता है। मन्त्र स्पष्ट है—ॐ ह्रीं क्लीं सौः नमो भगवत्यै शारदायै ह्रीं स्वाहा।

कामेश्वरीमन्त्रोद्धारः

अथ कामेश्वरीमन्त्रोद्धारः भैरवपटले—

माया च हरिणाक्षी च चन्द्रः शीतांशुरेव च ।
मदनमूर्मिध्वान्तौ द्वौ संयोज्य स्तनबीजकम् ॥१॥
मनुः सप्तशिरो ज्ञेयस्ततः पल्लवमुद्धरेत् ।
जृम्भणाख्ये ततो देवि कामेश्वरि तथैव च ॥२॥
ततो बाणदेवतेऽपि ह्यन्ते नीरमुदाहृतम् ।
कामेश्वर्या महादेव्या द्वाविंशदक्षरो मनुः ॥३॥

कामेश्वरी मन्त्रोद्धार—भैरवपटल के अनुसार माया = ह्रीं, हरिणाक्षी = श्रीं, चन्द्र = द्रां, शीतांशु = द्रीं, मदन = क्लीं, ऊर्मीध्वान्त = ब्लूं, स्तनबीज = जं— ये मन्त्र के सात बीज हैं। तब पल्लव = जृम्भणाख्ये, कामेश्वरि बाणदेवते, नीर = स्वाहा के योग से कामेश्वरी का मन्त्र स्पष्ट होता है। इसमें बाईस अक्षर हैं।

चन्द्रबीजनामानि

तत्र चन्द्रबीजनामानि कालीसर्वस्वे—

चन्द्रः शीतांशुरिन्दुश्च शर्वरीपतिरेव च ।
ताराधिपः सुधारश्मिः कृत्रिमाण्यपराणि च ॥१॥

चन्द्रबीजौ द्वौ ऐं द्रां च ।

चन्द्रबीज दो हैं—ऐं एवं द्रां। कालीसर्वस्व के अनुसार इनके नाम हैं—चन्द्र, शीतांशु, इन्दु, शर्वरीवति, ताराधिप एवं सुधारश्मि। अन्य नाम कृत्रिम हैं।

ऊर्मिबीजनामानि

अथोर्मिबीजनामानि तत्रैव—

ऊर्मिर्वीचिस्तथा चैव तरङ्गस्त्रितयं स्मृतम् ।
ब्लूं-बीजोद्धारनामानि कृत्रिमाण्यपराणि च ॥२॥

'ब्लू' उर्मीबीज के नाम आगमालङ्कार' के अनुसार उर्मि, वीचि, तरङ्ग—कुल मिलाकर तीन हैं। अन्य नाम कृत्रिम हैं।

स्तनबीजनामानि

अथ स्तनबीजनामानि उक्तं चागमालङ्कारे—

स्तनबीजं कुचं चैवमुरोजो हृज्जमेव च।
जं-बीजनामान्येतानि कृत्रिमाण्यपराणि च ॥१॥

प्रकाशम्—ह्रींश्रींद्रांद्रींक्लींब्लूंजं जृम्भणाख्ये कामेश्वरि बाणदेवते स्वाहा। इति भैरवपटलोक्तम्।

जं स्तनबीज के नाम आङ्गमालङ्कार के अनुसार स्तनबीज, कुच, उरोज एवं हृज्ज हैं। अन्य नाम कृत्रिम हैं।

इस प्रकार कामेश्वरी का मन्त्र स्पष्ट होता है—ह्रीं श्रीं द्रां द्रीं क्लीं ब्लूं जं जृम्भणाख्ये कामेश्वरि बाणदेवते स्वाहा।

गौरीमन्त्रोद्धारः

अथ गौरीमन्त्रोद्धारः त्रिपुराशिरोमणौ—

प्रणवं कमला चैव माया वाल्हीकमेव च।
शिवबीजं तथा देवि गौरि शर्वश्च ठद्वयम् ॥१॥
भगवत्या महागौर्या बालस्तु द्वादशाक्षरः। इति।

गौरीमन्त्रोद्धार—त्रिपुराशिरोमणि के अनुसार गौरीमन्त्र प्रणव = ॐ, कमला = श्रीं, माया = ह्रीं, वाल्हीक = ग्लौं, शिवबीज = गं, देवि गौरि, शर्व = गीं, ठद्वय = स्वाहा के योग से बनता है। भगवती महागौरी के मन्त्र में बारह अक्षर होते हैं।

शिवबीजनामानि

तत्र शिवबीजनामानि, उक्तं च कुलचूडामणौ—

शिवबीजं च शम्भुश्च शर्वः शङ्कर एव च।
गं-बीजानि च चत्वारि कृत्रिमाण्यपराणि च ॥१॥

प्रकाशम्—ॐश्रींह्रींग्लौंगं देवि गौरि गीं स्वाहा (१२)।

'गं' शिवबीज के नाम कुलचूड़ामणि के अनुसार शिवबीज, शम्भु, शर्व एवं शंकर हैं। ये चार नाम ही सत्य हैं, अन्य नाम कृत्रिम हैं।

इस प्रकार कामेश्वरी का मन्त्र स्पष्ट होता है—ॐ श्रीं ह्रीं ग्लौं गं देवि गौरि गीं स्वाहा।

अन्नपूर्णामन्त्रोद्धारः

अथान्नपूर्णामन्त्रोद्धारः कामेश्वरीतन्त्रे—

तारं परापि कमला मीनकेतन एव च।
विश्वं ततो भगवति माहेश्वरि ततः पुनः ॥१॥
अन्नपूर्णे ठयुगलं मनुर्विंशाक्षरः स्मृतः।

मीनकेतन इति दोषः। उक्तं च स्वकृतौ त्रिपुरसुन्दरीसर्वस्वे—

त्र्यक्षं मायापि पद्मा च कामं विश्वमुदाहृतम्।
बीजं तु षट्शिरो ज्ञेयं विश्वेन सह भामिनि ॥१॥

इत्युद्धारः। प्रकाशम्—ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं नमो भगवति माहेश्वरि अन्नपूर्णे स्वाहा।

अन्नपूर्णामन्त्रोद्धार—कामेश्वरीतन्त्र के अनुसार अन्नपूर्णा मन्त्र तार = ॐ, परा = ह्रीं, कमला = श्रीं, मीनकेतन = क्लीं, विश्व = नमः, भगवति माहेश्वरि अन्नपूर्णे, ठयुगल = स्वाहा के योग से बनता है। इसमें बीस अक्षर होते हैं।

क्लीं मीनकेतन सदोष है। त्रिपुरसुन्दरीसर्वस्व के अनुसार स्वीकृत बीज हैं—त्र्यक्ष, माया, पद्मा, काम, विश्व अर्थात् ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं नमः। इनमें संख्या में कुल छः अक्षर हैं। इस प्रकार अन्नपूर्णा का मन्त्र स्पष्ट होता है—ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं नमो भगवति माहेश्वरि अन्नपूर्णे स्वाहा।

कुलवागीश्वरीमन्त्रोद्धारः

अथ कुलवागीश्वरीमन्त्रोद्धारः उक्तं च मुण्डमालातन्त्रे—

प्रणवं मदनं चैव स्कन्दं नारायणप्रियाम्।
तटं तथेच्छाबीजं च ततः पल्लवमुद्धरेत् ॥१॥
झषहस्ते ततः पश्चात् कुलवागीश्वरि तथा।
अन्ते च वासनाबीजं पद्मं काङ्क्षापि नीरजम् ॥२॥
नर्तकीबीजसम्भोजं पयश्चैव सुरेश्वरि।
कुलवागीश्वरीदेव्यास्तुर्यविंशाक्षरो मनुः ॥३॥

कुलवागीश्वरी मन्त्रोद्धार—मुण्डमालातन्त्र के अनुसार कुलवागीश्वरी मन्त्र प्रणव = ॐ मदन = क्लीं, स्कन्द = हां, नारायणप्रिया = श्रीं, तट = हूं, इच्छाबीज = झं, झषहस्ते कुलवागीश्वरि, वासनाबीज = ऐं, पद्म = ठः, कांक्षा-नीरज = झ ठः, नर्तकीबीज-अम्भोज = फ्रीं ठः, पय = स्वाहा के योग से बनता है। यह चौबीस अक्षर का मन्त्र है।

इच्छाबीजनामानि

तत्रेच्छाबीजनामानि वामकेश्वरे—

इच्छाबीजं स्पृहा काङ्क्षा लिप्सा बीजचतुष्टयम् ।
झं-बीजस्यैव नामानि कृत्रिमाण्यपराणि च ॥१॥

'झं' इच्छा बीज के नाम वामकेश्वरतन्त्र के अनुसार इच्छाबीज, स्पृहा, कांक्षा और लिप्सा—ये चार हैं। अन्य नाम कृत्रिम हैं।

नर्तकीबीजनामानि

अथ नर्तकीबीजनामानि च्छिन्नारहस्ये—

नर्तकीबीजमत्युग्रं वेश्यापि गणिका तथा ।
पण्यस्त्री पञ्च नामानि फ्रीं-बीजस्यानृतं परम् ॥१॥

अम्बुजाम्भोजयोरैक्यमिति दोषः। प्रकाशम्—ॐ क्लीं ह्लां श्रीं हूं झं झषहस्ते कुलवागीश्वरि ऐंठः झंठः फ्रींठः स्वाहा (२४)।

नर्तकीबीज 'फ्रीं' के नाम छिन्नारहस्य के अनुसार नर्तकीबीज, अत्युग्र, वेश्या, गणिका एवं पण्यस्त्री—कुल पाँच हैं। शेष नाम सत्य नहीं हैं।

इस प्रकार कुलवागीश्वरी का मन्त्र स्पष्ट होता है—ॐ क्लीं ह्लां श्रीं हूं झं झषहस्ते कुलवागीश्वरि ऐं ठः झंढः फ्रींठः स्वाहा।

एता मया महेशानि सप्त विद्याः प्रकीर्तिताः ।
अद्याहं तव भक्त्या ते हृदि यद्रोचते प्रियम् ॥२६॥
वद मे सत्वरं देवि तद्वक्ष्यामि सुविस्तरम् ।

हे महेशानि! इस प्रकार सात विद्याओं का वर्णन मेरे द्वारा किया गया। आज मैं तुम्हारी भक्ति के कारण तुम पर अतिशय प्रसन्न हूँ; अतः तुम्हारे हृदय में जो अच्छा लगे या जो तुम्हें प्रिय हो, उसे मुझसे शीघ्र कहो, मैं विस्तारपूर्वक उसका विवेचन करूँगा।।२६।।

पञ्चकुमारमन्त्रनिरूपणप्रस्तावः

श्रीदेव्युवाच

पञ्चानां बालकाख्यानां कीदृशास्ते मनूत्तमाः ।
कृपयापि पुरा मह्यं सूचिता न प्रकाशिताः ॥२७॥

देवी ने कहा कि पहले आपने पाँच मनुकुमारों के बारे में मुझे सूचित किया था। लेकिन बतलाया नहीं था। अब कृपा कर उनके उत्तम मन्त्रों को बतलाइये कि वे किस प्रकार के हैं।।२७।।

मुनय ऊचुः

ब्रह्मर्षे सर्वशास्त्रज्ञ त्वन्मुखात्सकलं श्रुतम् ।
मनून् पञ्चकुमाराणामस्माकं वक्तुमर्हसि ॥२८॥

दक्षिणामूर्तिर्मुनीन् प्रति , ईश्वरः पार्वतीं प्रति ब्रवीति।

मुनियों ने कहा—हे सर्वशास्त्रज्ञ ब्रह्मर्षे! आपके मुख से सब कुछ सुना। अब पञ्च कुमारों के मन्त्रों को बतलाने की कृपा करें।।२८।।

पञ्चकुमारनामनिर्देशः

श्रीश्वर उवाच

शृणु पार्वति देवेशि महर्षीणां पुरा शिवे ।
दक्षिणामूर्तिनोक्तं यत् तत्ते वक्ष्यामि तत्त्वतः ॥२९॥
हेरम्बशरजन्मानौ कार्तवीर्यार्जुनस्तथा ।
हनुमद्भैरवावेते भाषिताः पञ्च बालकाः ॥३०॥ इति।

श्री ईश्वर ने कहा कि हे पार्वति! सुनो, पहले दक्षिणामूर्ति ने महर्षियों को जो बतलाया था, उसे तत्त्वतः सुनाता हूँ। उनके अनुसार हेरम्ब, कुमार, कार्तवीर्यार्जुन, हनुमान और वटुकभैरव—ये ही पञ्च कुमार हैं।।२९-३०।।

भैरवीतन्त्रे वामकेश्वरे च—

हेरम्बशरजन्मानौ महामृत्युञ्जयस्तथा ।
कार्तवीर्याजुनश्चैव हनुमद्भैरवौ तथा ॥१॥
स्वयं मया च तन्त्रोक्ता भाषिताः षट् कुमारकाः ।

भैरवीतन्त्र और वामकेश्वरतन्त्र के अनुसार हेरम्ब, कार्तिकेय, महामृत्युञ्जय, कार्तवीर्यार्जुन, हनुमान और भैरव—ये छः कुमार हैं। तन्त्रों में स्वयं मैंने भी ऐसा ही कहा है।

रुद्रयामलेऽपि—

गणेशो वटुकश्चैव स्कन्दो मृत्युञ्जयस्तथा ।
कार्तवीर्यार्जुनोऽप्येवं सुग्रीवो हनुमांस्तथा ॥१॥
यामले रुद्रशब्दादौ भाषिताः सप्त बालकाः ।

रुद्रयामल के अनुसार गणेश, वटुक, स्कन्द, मृत्युञ्जय, कार्तवीर्यार्जुन, सुग्रीव एवं हनुमान—ये सात कुमार हैं।

गणेशमन्त्रोद्धारः

तत्रादौ गणेशमन्त्रोद्धारः रुद्रयामले—

प्रणवं कमलां लज्जां कन्दर्पं मठबीजकम्।
शङ्करं षट्-शिरोमन्त्रं ततः पल्लवमुद्धरेत्॥१॥
गणपतये नमः पश्चाद् वर-वरद एव च।
सर्वजनं ततः पश्चान्मे वशमानयेति च॥२॥
अन्तेऽपि ठद्वयं ज्ञेयमष्टाविंशाक्षरो मनुः।

प्रकाशम्—ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा। इति।

गणेशमन्त्रोद्धार—रुद्रयामल के अनुसार गणेशमन्त्र प्रणव = ॐ, कमला = श्रीं, लज्जा = ह्रीं, कन्दर्प = क्लीं, मठ = ग्लौं, शङ्कर = गं—इन छः बीजों के बाद पल्लव = गणपतये नमः वरवरद सर्वजनं मे वशमानय, ठद्वय = स्वाहा के योग से बनता है। इस प्रकार मन्त्रस्पष्ट होता है—ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये नमः वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा। इस मन्त्र में कुल अट्ठाईस अक्षर होते हैं।

कुमारमन्त्रोद्धारः

अथ कुमारस्य मन्त्रोद्धारः कुलचूडामणौ—

प्रणवं छविबीजं च मन्त्रं तु द्विशिरः स्मृतम्।
मध्ये कुमाराय नमो ह्यन्ते नीरमुदाहृतम्॥१॥

कुमारमन्त्रोद्धार—कुलचूड़ामणि के अनुसार कुमारमन्त्र प्रणव = ॐ, छविबीज = ह्रां—ये दो बीज, तब कुमाराय नमः, नीर = स्वाहा के संयोजन से बनता है।

छविबीजनामानि

तत्र च्छविबीजनामानि सिद्धसारस्वते—

छविबीजं कान्तिबीजं शोभाऽपि सुषमा तथा।
ह्रां-बीजानि च चत्वारि कृत्रिमाण्यपराणि च॥१॥

प्रकाशम्—ॐ ह्रां कुमाराय नमः स्वाहा। इति।

छविबीज 'ह्रां' के छविबीज, कान्तिबीज, शोभा एवं सुषमा—ये चार नाम हैं। अन्य नाम कृत्रिम हैं। इस प्रकार कुमार का मन्त्र स्पष्ट होता है—ॐ ह्रां कुमाराय नमः स्वाहा।

कार्तवीर्यार्जुनमन्त्रोद्धारः

अथ कार्तवीर्यार्जुनमन्त्रोद्धारः उक्तं चोड्डामरतन्त्रे—

प्रणवं वायुपूज्यापि चारुकं मन्मथस्तथा।
शुक्रबीजं तथा शून्यं कमला रसना तथा॥१॥

चन्द्रं डिम्बं च कूर्चं च तुरगं च सुरेश्वरि।
मध्ये तन्नाम विज्ञेयं कार्तवीर्यार्जुनाय च ॥२॥
अन्ते पयो मनुः प्रोक्तं एकविंशाक्षरः शिवे।

कार्तवीर्यार्जुन-मन्त्रोद्धार—उड्डामरतन्त्र के अनुसार कार्तवीर्यार्जुन मन्त्र प्रणव = ॐ, वायुपूज्या = प्रीं, चारुक = च्छ्रीं, मन्मथ = क्लीं, शुक्रबीज = ब्रौं, शून्य = आं, कमला = श्रीं, रसना = क्रीं, चन्द्रडिम्ब = ऐं हौं, कूर्च = हूं, तुरग = फट्, कार्तवीर्यार्जुनाय, पय = स्वाहा के संयोजन से बनता है। इसमें इक्कीस अक्षर होते हैं।

शुक्रबीजनामानि

तत्र शुक्रबीजनामानि च्छिन्नाशिरोमणौ—

शुक्रबीजं तथा काव्यो भार्गवः कविबीजकम्।
दैत्यमान्यो महेशानि सुरासुरनमस्कृते ॥१॥
ब्रौं-बीजानि च पञ्चैव कृत्रिमाण्यपराणि च।

शुक्रबीजौ द्वौ , ब्रौं लृं च।

प्रकाशम्—ॐ प्रीं च्छ्रीं क्लीं ब्रौं आं श्रीं क्रीं ऐं ह्रौं हूं फट् कार्तवीर्यार्जुनाय स्वाहा।

'ब्रौं' शुक्रबीज के नाम छिन्नाशिरोमणि के अनुसार शुक्रबीज, काव्य, भार्गव, कवि, बीज एवं दैत्यमान्य—ये कुल पाँच हैं। अन्य नाम बनावटी हैं। शुक्र बीज दो हैं—ब्रौं एवं लृं। इस प्रकार कार्तवीर्यार्जुन का मन्त्र स्पष्ट होता है—ॐ प्रीं च्छ्रीं क्लीं ब्रौं आं श्रीं क्लीं ऐं ह्रौं हूं फट् कार्तवीर्यार्जुनाय स्वाहा।

हनुमन्मन्त्रोद्धारः

अथ हनुमतो मन्त्रोद्धारः कुलचूडामणौ—

प्रणवमूर्ध्वबीजं च विभूतिस्तदनन्तरम्।
हनुमते ततः पश्चाद्रामदूताय वै पुनः ॥१॥
लङ्काविध्वंसनायैवमञ्जनीगर्भसं ततः।
भूताय शाकिनी चैव डाकिनी तदनन्तरम् ॥२॥
विध्वंसनाय किलि-द्वौ बुबुकारेण वै पुनः।
विभीषणाय हनुमद्देवाय तदनन्तरम् ॥३॥
त्र्यक्षं माया हरिणाक्षी व्योषं स्कन्दं तथैव च।
हरमापस्तथान्तेऽपि सप्तषष्ट्यक्षरो मनुः ॥४॥

प्रकाशम्—ॐ ऐं ह्रीं हनुमते रामदूताय लङ्काविध्वंसनाय अञ्जनीगर्भसम्भूताय शाकिनीडाकिनीविध्वंसनाय किलि किलि बुबुकारेण विभीषणाय हनुमद्देवाय ॐ ह्रीं श्रीं ह्रौं ह्रां फट् स्वाहा इति।

हनुमान-मन्त्रोद्धार—कुलचूड़ामणि तन्त्र के अनुसार हनुमत् मन्त्र, प्रणव = ॐ, ऊर्ध्वबीज = ऐं, विभूति = ह्रीं, तब हनुमते, तब रामदूताय लंकाविध्वंसनाय अञ्जनीगर्भसम्भूताय शाकिनी-डाकिनीविध्वंसनाय किलि किलि बुबुकारेण विभीषणाय हनुमद् देवाय, त्र्यक्ष = ॐ, माया = ह्रीं, हरिणाक्षी = श्रीं, व्योष = ह्रौं, स्कन्द = ह्रां, हर = फट्, आप = स्वाहा के संयोजन से बनता है। इस मन्त्र में कुल सड़सठ अक्षर होते हैं। इस प्रकार हनुमत् मन्त्र स्पष्ट होता है—ॐ ऐं ह्रीं हनुमते रामदूताय लंकाविध्वंसनाय अञ्जनीगर्भसम्भूताय शाकिनी-डाकिनीविध्वंसनाय किलि किलि बुबुकारेण विभीषणाय हनुमद् देवाय ॐ ह्रीं श्रीं ह्रौं ह्रां फट् स्वाहा।

वटुकभैरवमन्त्रोद्धारः

अथ वटुकभैरवस्य मन्त्रोद्धारः रुद्रयामले—

प्रणवं मन्मथं चैवमभ्रबीजसमन्वितम्।
अब्धिबीजं कल्पबीजं शतघ्नीबीजसंयुतम्॥१॥
मया मध्येऽपि वटुक-भैरवायाश्मरी तथा।
अन्तेऽपो भैरवस्यायं मनुरष्टादशाक्षरः॥२॥

वटुकभैरवमन्त्रोद्धार—रुद्रयामल के अनुसार वटुकभैरव मन्त्र प्रणव = ॐ, मन्मथ = क्लीं, अभ्रबीज = वीं, अब्धिबीज = रुं, कल्पबीज = ध्रुं, शतघ्नी-बीज = घ्नीं, माया = ह्रीं, तब वटुकभैरवाय, अश्मरी = नमः, आप = स्वाहा के संयोजन से बनता है। इसमें अठारह अक्षर होते हैं।

अभ्रबीजनामानि

तत्राभ्रबीजनामानि वामकेश्वरे—

अभ्रबीजं च जीमूतमम्बुदं जलदं घनम्।
वीं-बीजानि च पञ्चैवमनृतानि पराणि च॥१॥

अभ्रबीज 'वीं' के नाम वामकेश्वर तन्त्र के अनुसार—अभ्रबीज, जीमूत, अम्बुद, जलद एवं घन—ये कुल पाँच हैं।

अब्धिबीजनामानि

अथाब्धिबीजनामानि त्रिपुरातिलके—

अब्धिबीजं तथा सिन्धुः साम्बरं सागरस्तथा ।
रुं-बीजानि च चत्वारि (कृत्रिमाण्यपराणि च) ॥११॥

रंकार-रुंकारयोर्भेदे रमग्निबीजं रुमित्यब्धिबीजम्। अग्न्यब्ध्योरन्तरादन्तरमिति निर्दोषः।

अब्धिबीज 'रं' के नाम त्रिपुरातिलक के अनुसार अब्धिबीज, सिन्धु, सांबर एवं सागर—ये चार हैं। अन्य नाम बनावटी हैं।

रंकार रुंकार में भेद होने से 'रं' अग्निबीज एवं 'रुं' अब्धिबीज है।

कल्पबीजनामानि

अथ कल्पबीजनामानि आगमालङ्कारे—

कल्पबीजं च संवर्तं प्रलयं क्षयबीजकम् ।
क्षामिकं क्षुरकं क्षौद्रं तथा कल्पान्तबीजकम् ॥१॥
ध्रुं-बीजान्येवमष्टौ च कृत्रिमाण्यपराणि च ।

कल्पबीज 'ध्रुं' के नाम आगमालङ्कार के अनुसार कल्पबीज, संवर्त, प्रलय, क्षयबीज, क्षामिक, क्षुरक, क्षौद्र एवं कल्पान्तबीज—ये कुल आठ हैं। अन्य बनावटी हैं।

शतघ्नीबीजनामानि

अथ शतघ्नीबीजनामानि आगमलहर्याम्—

शतघ्नी श्यालिका श्यामा शाद्वला शुष्कला तथा ।
घ्नीं-बीजानि तु पञ्चैवमसत्यान्यपराणि च ॥१॥

प्रकाशम्—ॐ क्लीं वीं रुं ध्रुं घ्नीं ह्रीं वटुकभैरवाय नमः स्वाहा।

शतघ्नीबीज 'घ्नीं' के नाम आगमलगरी के अनुसार शतघ्नी, श्यालिका, श्यामा, शाद्वला एवं शुष्कला—ये पाँच हैं। अन्य असत्य हैं।

इस प्रकार वटुकभैरव का मन्त्र स्पष्ट होता है—ॐ क्लीं वीं रुं ध्रुं घ्नीं ह्रीं वटुकभैरवाय नमः स्वाहा।

मृत्युञ्जयमन्त्रोद्धारः

अथ महामृत्युञ्जयस्य मन्त्रोद्धारः आगमलहर्याम्—

त्र्यक्षं हृज्जं शक्तिशोभेऽपि शङ्का
मां तस्माद्वै पालय-द्वौ तथैव ।
तस्माच्छक्तिः खं शरद् हृज्जतारौ
मन्त्रोद्धारो देवि मृत्युञ्जयस्य ॥१॥

प्रकाशम्—ॐ जुंसः हंसः मां पालय पालय सोहंसः जुं ॐ।

महामृत्युंजयमन्त्रोद्धार—आगमलहरी के अनुसार महामृत्युञ्जय मन्त्र त्र्यक्ष = ॐ, हज्ज = जुं, शक्ति = सः, शोभा = हं, शङ्खा = सः, मां पालय पालय, शक्ति = सः खं = हं, शरद् = सः, हज्ज = जुं, तार = ॐ के संयोजन से बनता है। इस प्रकार महामृत्युञ्जय का मन्त्र स्पष्ट होता है—ॐ जुं सः हंसः मां पालय पालय सोहंसः जुं ॐ।

सुग्रीवमन्त्रोद्धारः

अथ सुग्रीवस्य मन्त्रोद्धारः आगमशिरोमणौ—

तारं माया वाग्भवं मन्मथं च
शक्तिर्मध्ये नाम त्यक्त्वा तथान्ते।
कालीपद्मौ कूर्चपद्मौ समस्ता-
पद्मौ नीरमेष सुग्रीवमन्त्रः ॥१॥

प्रकाशम्—ॐ ह्लीं ऐं क्लीं सः सुग्रीवाय क्रींठः हूंठः ह्लींठः स्वाहा।

सुग्रीवमन्त्रोद्धार—आगमशिरोमणि के अनुसार सुग्रीवमन्त्र तार = ॐ, माया = ह्लीं, वाग्भव = ऐं, मन्मथ = क्लीं, शक्ति = सः, सुग्रीवाय, कालीपद्म = क्रींठः, कूर्चपद्म = हूं ठः, समस्तापद्म = ह्लीं ठः, नीर = स्वाहा के संयोजन से बनता है। इस प्रकार सुग्रीव का मन्त्र का स्पष्ट होता है—ॐ ह्लीं ऐं क्लीं सः सुग्रीवाय क्रीं ठः हूं ठः ह्लीं ठः स्वाहा।

मयाख्याता महेशानि ह्येते वै सप्त बालकाः।

हे महेशानि! ये ही वे सात कुमार हैं, जिनका वर्णन मैंने किया है।

दक्षिणामूर्तिरुवाच

शृणुध्वमृषयः किञ्चिद्युष्माकमस्ति यद्धृदि।
ब्रवीमि भवतां प्रीत्या आज्ञापयितुमर्हथ ॥३१॥

इति श्रीदक्षिणामूर्तिमुनिविरचिते उद्धारकोशे सर्वागमसारे
सप्तदेवीसप्तकुमारकोशाख्यानं तृतीयः कल्पः॥३॥

दक्षिणामूर्ति ने कहा—हे ऋषियों! सुनो, यदि तुम्हारे हृदयों में कुछ और सुनने की इच्छा हो तो कहो; मैं तुम्हारी प्रीति के कारण उसको बतलाऊँगा।

इस प्रकार रुद्रयामल तन्त्रोक्त श्रीदेवीरहस्य की भाषा टीका में सप्तदेवी-सप्तकुमार कोशाख्यान नामक तृतीय कल्प पूर्ण हुआ।

◆

अथ चतुर्थः कल्पः

नवग्रहमन्त्रोद्धारकोशाख्यानम्

नवग्रहमन्त्रकथनावतारः

ऋषय ऊचुः

ब्रह्मर्षे सर्वतत्त्वज्ञ शास्त्राम्भोनिधिपारग ।
नवग्रहाणामस्माकं मन्त्रांस्त्वं वक्तुमर्हसि ॥१॥

नवग्रहमन्त्र-कथन—ऋषियों ने कहा कि हे सर्वतत्त्वज्ञ ब्रह्मर्षे! शास्त्रसागरपारग!! अब आप हमें नवग्रहों के मन्त्रों के बारे में बतलाइये।।१।।

ईश्वर उवाच

तस्मिन् काले महर्षीणां यदुक्तं धातृसूनुना ।
नवग्रहाणां मन्त्रांश्च तान् वक्ष्यामि समासतः ॥२॥
आदित्येन्दुजशुक्राश्च गुर्विन्दू परमेश्वरि ।
एते पञ्च महेशानि पञ्चेषोर्बाणदेवताः ॥३॥
भौमार्किराहवश्चैव त्रय एते मुनीश्वराः ।
देवस्य खण्डपरशोर्लोचनत्रयदेवताः ॥४॥
केतुश्च परमेशानि भूमेर्देवः प्रकीर्तितः ।
एते नव ग्रहाः प्रोक्ताः शम्भुना रुद्रमायले ॥५॥

ईश्वर ने कहा—उस समय ब्रह्मापुत्र दक्षिणामूर्ति ने महर्षियों को नवग्रहों के जिन मन्त्रों के बारे में कहा, उन मन्त्रों को मैं बतलाता हूँ। हे परमेश्वरि! सूर्य, चन्द्र, बुध, शुक्र, गुरु—ये पाँच बाणदेवता के पाँच बाण हैं। मङ्गल, शनि, राहु—ये तीन खण्डपरशु के तीनों नेत्रों के देवता हैं। केतु भूदेव है। संसार में इन सबों को देवता कहा जाता हैं। रुद्रयामल में शम्भु ने इन्हीं नव ग्रहों को बतलाया है।

आदित्यमन्त्रोद्धारः

अथादौ पञ्चग्रहमन्त्रोद्धारः। तत्रादावादित्यस्य मन्त्रोद्धारः विश्वनाथसारोद्धारे—

प्रणवं चाम्बरं लक्ष्मीर्व्योषबीजं तथैव च ।
बीजं तुर्यशिरो ज्ञेयं ततः पल्लवमुद्धरेत् ॥१॥

ग्रहाधिराजाय तत आदित्याय तथैव च।
अन्ते पयस्तु विज्ञेयं मनुर्द्व्यष्टाक्षरः स्मृतः ॥२॥

आदित्यमन्त्रोद्धार—पहले पाँच ग्रहों के मन्त्रों को स्पष्टतः कहता हूँ। उनमें सर्वप्रथम आदित्य का मन्त्रोद्धार बतलाता हूँ। विश्वनाथसारोद्धार के अनुसार सूर्यमन्त्र प्रणव = ॐ, अम्बर = ह्सौः, लक्ष्मी = श्रीं, व्योमबीज = आं—ये चार बीज, पल्लव = ग्रहाधिराजाय आदित्याय, पय = स्वाहा के संयोजन से षोडशाक्षरात्मक बनता है।

अम्बरबीजनामानि

तत्राम्बरबीजनामानि भैरवतन्त्रे—

अम्बरं वस्त्रबीजं च शून्यं शक्तिरिति द्वयम्।
हरितं हरिणीबीजं हरिद्राबीजमेव च ॥१॥
ह्सौः-बीजानि सप्तैव कृत्रिमाण्यपराणि च।

अम्बरबीजौ द्वौ—ह्सौः आं च।

प्रकाशम्—ॐ ह्सौः श्रीं आं ग्रहाधिराजाय आदित्याय स्वाहा।

भैरवतन्त्र के अनुसार अम्बरबीज 'ह्सौ' के नाम अम्बर, वस्त्रबीज, शून्य, शक्ति, हरित, हरिणीबीज, हरिद्राबीज—कुल सात हैं। अन्य नाम बनावटी हैं। अम्बरबीज 'ह्सौः' और 'आं' दो हैं। इस प्रकार आदित्य का मन्त्र का स्पष्ट होता है—ॐ ह्सौः श्रीं आं ग्रहाधिराजाय आदित्याय स्वाहा।

बुधमन्त्रोद्धारः

अथ बुधस्य मन्त्रोद्धारः स्वतन्त्रे—

प्रणवं च तथा स्कन्दं रसज्ञा च षडाननः।
मध्येऽपि ग्रहनाथाय बुधायान्ते च ठद्वयम् ॥१॥
बुधस्य ग्रहनाथस्य मनुश्चतुर्दशाक्षरः।

बुधमन्त्रोद्धार—स्वतन्त्रतन्त्र के अनुसार प्रणव = ॐ, स्कद = ह्वां, रसज्ञा = क्रीं, षडानन = टं, ग्रहनाथाय बुधाय, ठद्वय = स्वाहा के योग से बुध के चौदह अक्षरों का मन्त्र बनता है।

षडाननबीजनामानि

तत्र षडाननबीजनामानि कुब्जिकासर्वस्वे—

षडाननः शरजन्मा स्कन्दः कुमारबीजकम्।
शाम्भवः शालिनीबीजं तथा षण्मुखबीजकम् ॥१॥

टं-बीजानि च सप्तैवमनृतान्यपराणि च।

प्रकाशम्—ॐ ह्रां क्रीं टं ग्रहनाथाय बुधाय स्वाहा।

कुब्जिकासर्वस्व के अनुसार षडाननबीज 'टं' के नाम षड़ानन, शरजन्मा, स्कन्द, कुमारबीज, शाम्भव, शालिनीबीज, षण्मुखी बीज—ये सात हैं। अन्य कृत्रिम हैं। इस प्रकार बुध का मन्त्र स्पष्ट होता है—ॐ ह्रां क्रीं टं ग्रहनाथाय बुधाय स्वाहा।

शुक्रमन्त्रोद्धारः

अथ शुक्रस्य मन्त्रोद्धारः आगमशिरोमणौ—

प्रणवमूर्ध्वबीजं च स्तनबीजसमन्वितम्।
शिवबीजं ततो मध्ये ग्रहेश्वराय वै पुनः ॥१॥
शुक्रायान्तेऽश्मरी चैव बालश्चतुर्दशाक्षरः।

प्रकाशम्—ॐ ऐं जं गं ग्रहेश्वराय शुक्राय नमः।

शुक्रमन्त्रोद्धार—आगमशिरोमणि के अनुसार प्रणव = ॐ, ऊर्ध्वबीज = ऐं, स्तनबीज = जं, शिवबीज = गं, महेश्वराय शुक्राय, अश्मरी = नमः के संयोजन से चौदह अक्षरों का शुक्रमन्त्र बनता है। इस प्रकार शुक्र मन्त्र है—ॐ ऐं जं गं महेश्वराय शुक्राय नमः।

बृहस्पतिमन्त्रोद्धारः

अथ बृहस्पतेर्मन्त्रोद्धारः त्रिपुरातिलके—

त्र्यक्षं मायापि सौभाग्या सुरासुरनमस्कृते।
तरङ्गवेश्ये संयोज्य चार्वङ्गी हिङ्गुबीजकम् ॥१॥
ऊर्ध्वं च षट्शिरोबीजं ततः पल्लवमुद्धरेत्।
ततो ग्रहाधिपतये बृहस्पतय एव च ॥२॥
पुनर्वारिवहं चैव पद्मं लक्ष्मीस्तु नीरजम्।
वासना पङ्कजं चैवमन्ते प्रोक्तं वनं शिवे ॥३॥

इत्युद्धारः। सौभाग्येति दोषः। दक्षिणामूर्तिस्तु—

तस्य धिगस्तु मुनयः स्वयं यस्य न धीर्भवेत्।
क्व रुक्मिणी क्व सौभाग्यं द्योर्भुवोरन्तरं महत् ॥१॥

इति दोषः। उक्तं च स्वकृतौ सुन्दरीसर्वस्वे—

प्रणवं सकला चैव देवेशि रुक्मिणी तथा।

ततो वारिवहमिति दोषः। वामकेश्वरे—

प्रणवं च परा लक्ष्मीर्वीचिवेश्येऽपि योजयेत्।
चन्द्रो मठं ततः पश्चाद् ग्रहाधिपतये नमः ॥१॥
ततो बृहस्पतयेऽपि ततो जीमूतबीजकम्।
पद्मं लक्ष्मीर्नीरजं च वासना पङ्कजं तथा।
अन्ते नीरं समाख्यातं पञ्चविंशाक्षरो मनुः।

प्रकाशम्—ॐ ह्रीं श्रीं ख्रीं ऐं ग्लौं ग्रहाधिपतये बृहस्पतये ब्रीं ठः ऐं ठः श्रीं ठः स्वाहा।

बृहस्पतिमन्त्रोद्धार—वामकेश्वरतन्त्र और त्रिपुरातिलक के अनुसार त्र्यक्ष = ॐ, माया = ह्रीं, सौभाग्य = श्रीं, वेश्या = ख्रीं, चन्द्र = ऐं, मठ = ग्लौं, ग्रहाधिपतये बृहस्पतये जीमूतबीज, पद्म = ब्रीं ठः, वासना-पंकज = ऐं ठः, लक्ष्मी-नीरज = श्रीं ठः, नीर = स्वाहा के संयोजन से पच्चीस अक्षरों का वृहस्पति मन्त्र मनता है।

त्रिपुरातिलक और वामकेश्वरतन्त्र में बीजों के सांकेतिक नामों के बारे में मतभेद हैं। सांकेतिक नाम 'वारिवह' और सौभाग्या' का प्रयोग दोषयुक्त है।

दोषमुक्त वृहस्पति मन्त्र स्पष्ट होता है—ॐ ह्रीं श्रीं ख्रीं ऐं ग्लौं ग्रहाधिपतये बृहस्पतये ब्रीं ठः ऐं ठः श्रीं ठः स्वाहा।

चन्द्रमन्त्रोद्धारः

अथ चन्द्रस्य मन्त्रोद्धारः कालीपटले—

त्र्यक्षं च हरिणाक्षी च कुन्तीबीजसमन्वितम्।
हरेतिशब्दं संयोज्य शून्यानुस्वारसंयुतम् ॥१॥
नाट्यबीजं ततो मध्ये चन्द्रायान्तेऽश्मरी स्मृता।

चन्द्रमन्त्रोद्धार—कालीपटल के अनुसार त्र्यक्ष = ॐ, हरिणाक्षी = श्रीं, कुन्तीबीज = क्रीं, हर = ह्रां, नाट्यबीज = चं, चन्द्राय, अश्मरी = नमः के संयोजन से चन्द्रमन्त्र बनता है।

नाट्यबीजनामानि

तत्र नाट्यबीजनामानि भैरवतन्त्रे —

नाट्यबीजं च नटनं ताण्डवं नृत्तबीजकम्।
चं-बीजानि च चत्वारि कृत्रिमाण्यपराणि च ॥१॥

प्रकाशम्—ॐ श्रीं क्रीं ह्रां चं चन्द्राय नमः।

भैरवतन्त्र के अनुसार नाट्यबीज 'चं' के नाम नाट्यबीज, नटन, ताण्डव एवं

नृत्तबीज—कुल चार हैं। अन्य कृत्रिम हैं। इस प्रकार चन्द्रमन्त्र स्पष्ट होता है—ॐ श्रीं क्रों ह्रां चं चन्द्राय नमः। इसमें कुल दश अक्षर होते हैं।

एते वै पञ्चबाणानां ग्रहाः पञ्च प्रकीर्तिताः ।

ये ही पाँच बाणों के पाँच ग्रह कहे गये हैं।

भौममन्त्रोद्धारः

अथ त्रिग्रहमन्त्रोद्धारः। तत्रादौ भौमस्य मन्त्रोद्धारः शारदाटीकायाम्—

चारणं हरिणीबीजं रुक्मिणी शर्वरीपतिः ।
वेधोबीजं ततो मध्ये ग्रहाधिपतये ततः ॥१॥
भौमायान्ते पयः प्रोक्तो मनुः पञ्चदशाक्षरः ।

मङ्गलमन्त्रोद्धार—अब तीन ग्रहों का मन्त्रोद्धार प्रदर्शित किया जा रहा है; उसमें भी सर्वप्रथम भौम ग्रह का मन्त्रोद्धार बताया जा रहा है। शारदाटीका के अनुसार भौममन्त्र चारण = ऐं, हरिणीबीज = ह्सौः, रुक्मिणी = श्रीं, शर्वरीपति = द्रां, वेधोबीज = कं, ग्रहाधिपतये भौमाय, पय = स्वाहा के संयोजन से बनता है। इसमें पन्द्रह अक्षर होते हैं।

वेधोबीजनामानि

तत्र वेधोबीजनामानि च्छिन्नारहस्ये—

वेधोबीजं विधिर्ब्रह्मा स्वयम्भूयबीजमेव च ।
कं-बीजान्यपि चत्वारि कृत्रिमाण्यपराणि च ॥१॥

प्रकाशम्—ऐं ह्सौः श्रीं द्रां कं ग्रहाधिपतये भौमाय स्वाहा।

वेधोबीज 'कं' के नाम छिन्नारहस्य के अनुसार वेधोबीज, विधि, ब्रह्मा, स्वयम्भूबीज—ये चार हैं। अन्य नाम कृत्रिम हैं। इस प्रकार भौम का मन्त्र स्पष्ट होता है—ऐं ह्सौः श्रीं द्रां कं ग्रहाधिपतये भौमाय स्वाहा।

शनिमन्त्रोद्धारः

अथ शनैश्चरस्य मन्त्रोद्धारः आगमलहर्याम्—

तारं लज्जां श्रियं चैव बीजं त्रिशिर ऊर्ध्वगः ।
ग्रहचक्रवर्तिनेऽपि शनैश्चराय वै ततः ॥१॥
मदनं वासना शक्तिरन्ते नीरमुदाहृदम् ।
शनैश्चरस्य देवस्य मनुर्विंशाक्षरः स्मृतः ॥२॥

प्रकाशम्—ॐ ह्रीं श्रीं ग्रहचक्रवर्तिने शनैश्चराय क्लीं ऐंसः स्वाहा।

शनैश्चरमन्त्रोद्धार—आगमलहरी के अनुसार शनैश्चर मन्त्र तार = ॐ, लज्जा =

ह्रीं, श्रियं = श्रीं—ये तीन बीज, ग्रहचक्रवर्तिने शनैश्चराय, मदन = क्लीं, वासना = ऐं, शक्ति = सः, नीर = स्वाहा के संयोजन से बनता है। इसमें बीस अक्षर होते हैं। इस प्रकार शनैश्चर का मन्त्र स्पष्ट होता है—ॐ ह्रीं श्रीं ग्रहचक्रवर्तिने शनैश्चराय क्लीं ऐं सः स्वाहा।

राहुमन्त्रोद्धारः

अथ राहोर्मन्त्रोद्धारः तत्रैव—

प्रणवं रसनायुग्मं तटयुग्मं च गर्जितम्।
ततष्टङ्कधारिणे च राहवे हव्यवाहनः ॥१॥
लज्जा लक्ष्मीस्तथा भीमा ह्यन्ते वनमुदाहृतम्।
राहोर्विंशाक्षरो बालो यथाभीष्टफलप्रदः ॥२॥

राहुमन्त्रोद्धार—आगमलहरी के अनुसार ही राहु का मन्त्र प्रणव = ॐ, रसनायुग्म = क्रीं क्रीं, तटयुग्म = हूं हूं, गर्जित = टं, टंकधारिणे राहवे, हव्यवाहन = रं, लज्जा = ह्रीं, लक्ष्मी = श्रीं, भीमा = भैं, वन = स्वाहा के संयोजन से बनता है। बीस अक्षरों का यह राहुमन्त्र इच्छानुसार फल देने वाला होता है।

गर्जितबीजनामानि

तत्र गर्जितबीजनामानि स्वतन्त्रे—

गर्जितं स्वनबीजं च स्तनितं रसितं तथा।
टं-बीजानि च चत्वारि कृत्रिमाण्यपराणि च ॥१॥

प्रकाशम्—ॐ क्रीं क्रीं हूं हूं टं टङ्कधारिणे राहवे रं ह्रीं श्रीं भैं स्वाहा। इति।

स्वतन्त्रतन्त्र के अनुसार गर्जितबीज 'टं' के नाम—गर्जित, स्वनबीज, स्तनित एवं रसित—ये चार हैं। अन्य नाम कृत्रिम हैं। इस प्रकार राहु का मन्त्र स्पष्ट होता है—ॐ क्रीं क्रीं हूं हूं टं टंकधारिणे, राहवे रं ह्रीं श्रीं भैं स्वाहा।

शम्भोर्नेत्रत्रयाणां च देवता भाषिता मया।
सुदिने साधको मन्त्रान् ग्रहाणां साधयेच्छिवे ॥१॥

हे देवि! इस प्राकार शम्भु के तीन नेत्रों के तीन देवताओं को मैंने कहा। शुभ दिन में साधक को इन ग्रहों के मन्त्रों की साधना करनी चाहिये।

केतुमन्त्रोद्धारः

अथ केतुमन्त्रोद्धारः मन्त्रमुक्तावल्याम्—

प्रणवं सकला वृष्टिस्ततोऽपि क्रूररूपिणे।
केतवेऽपि ततः पश्चाच्चन्द्रः शङ्का पयस्तथा ॥१॥
केतोरयं मनुः प्रोक्तो देवि पञ्चदशाक्षरः।

केतुमन्त्रोद्धार—मन्त्रमुक्तावली के अनुसार केतुमन्त्र प्रणव = ॐ, सकला = ह्रीं, वृष्टिबीज = क्रूं, क्रूररूपिणे केतवे, चन्द्र = ऐं, शंका = सौः, पय = स्वाहा के संयोजन से पन्द्रह अक्षरों का बनता है।

वृष्टिबीजनामानि

तत्र वृष्टिबीजनामानि मुण्डमालातन्त्रे—

वृष्टिबीजं च करकं वर्षोपलस्तु वार्षिकः।
क्रूं-बीजानि च चत्वारि कृत्रिमाण्यपराणि तु ॥१॥

प्रकाशम्—ॐ ह्रीं क्रूंररूपिणे केतवे ऐं सौः स्वाहा। इति।

'क्रूं' वृष्टिबीज के मुण्डमाला तन्त्र के अनुसार वृष्टिबीज, करक, वर्षोपल एवं वार्षिक—ये चार नाम है। अन्य नाम कृत्रिम हैं। इस प्रकार केतु का मन्त्र स्पष्ट होता है—ॐ ह्रीं क्रूं क्रूररूपिणे केतवे ऐं सौः स्वाहा।

एतेषां नवग्रहाणां मनवो भाषिता मया।
अथाहं तव देवेशि वर्णानां वच्मि वै मनून् ॥१॥
कोशं लोकोपकारार्थं गोप्याद्गोप्यतमं कुरु।
येन विज्ञानमात्रेण मान्त्रिकः साधको भवेत् ॥२॥

इति श्रीदक्षिणामूर्तिमुनिविरचिते उद्धारकोशे सर्वागमसारे
नवग्रहमन्त्रोद्धारकोशाख्यानं चतुर्थः कल्पः॥४॥

इस प्रकार नव ग्रहों के मन्त्रों का वर्णन मेरे द्वारा किया गया। हे देवेशि! अब मैं वर्णों के मन्त्रों का वर्णन तुमसे करता हूँ। लोकोपकार के लिये इस कोश का वर्णन मैंने किया। इसे गोप्य से भी अधिक गोप्यतम रखना चाहिये। इसके ज्ञानमात्र से मान्त्रिक साधक हो जाता है।

इस प्रकार रुद्रयामल तन्त्रोक्त श्रीदेवीरहस्य की भाषा टीका में नवग्रह
मन्त्रोद्धार कोशाख्यान नामक चतुर्थ कल्प पूर्ण हुआ।

●

अथ पञ्चमः कल्पः

सर्ववर्णकोशाख्यानम्

मातृकाकोशनिरूपणावतारः

ऋषय ऊचुः

ब्रह्मर्षे ब्रह्मपुत्रस्त्वमागमार्णवपारग ।
प्रसन्नोऽसि महाभागिन्नस्मासु कृपया प्रभो ॥१॥
नानाशास्त्राणि ह्यस्माभिः श्रुतानि त्वन्मुखाम्बुजात् ।
वर्णानां श्रोतुमिच्छामो मन्त्रकोशानि च वयम् ॥२॥

सर्ववर्णकोशाख्यान—ऋषियों ने कहा—हे ब्रह्मर्षे! आप ब्रह्मपुत्र हैं। आगमसागर के पारगामी हैं। हे प्रभो! हम भाग्यवानों पर आप प्रसन्न हों। हमने आपके मुखारविन्द से नाना शास्त्रों का श्रवण किया है। अब हम सब वर्णों के मन्त्रकोश के बारे में सुनना चाहते हैं।।१-२।।

श्रीदक्षिणामूर्ति रुवाच

शृणु देवि प्रवक्ष्यामि मत्तो यूयं यथाविधि ।
वर्णानां मन्त्रकोशं च निःसृतं त्रिपुरामुखात् ॥३॥
शृणुध्वमृषयः सर्वे मन्त्रकोशं सुविस्तरम् ।
मुनीनां सूचितं यच्च दक्षिणामूर्तिना पुरा ॥४॥

श्री दक्षिणामूर्ति ने कहा कि जैसा मैंने त्रिपुरा के मुख से सुना था, उस मन्त्रकोश को विस्तारसहित कहता हूँ, ऋषियों! आप सब सुनिये। दक्षिणामूर्ति ने जैसा मुनियों से कहा; वैसा ही मैं कहता हूँ; हे देवि! आप सुनिये।

स्वरवर्णनामानि

त्रिपुरांतिलके—

अ–आत्मबीजमकारं च स्वान्तं हृद्बीजमेव च ।
मानसं च मनोबीजं पैतामहमिति स्मृतम् ॥५॥
अपरमनृतं ज्ञेयमकारस्य सुरेश्वरि ।

त्रिपुरातिलक के अनुसार वर्णों का कोश इस प्रकार बताया गया है—

'अ' का नाम आत्मबीज, अकार, स्वान्त, हृद्बीज, मानस, मनोबीज एवं पैतामह है। इसके अतिरिक्त अकार के अन्य नाम असत्य हैं।।५।।

आ–शून्यं खमम्बरं व्योम वैष्णवं चेति भाषितम् ।।६।।
आकारस्यानृतमन्यदुक्तं भैरवतन्त्रके ।

'आ' का नाम शून्य, ख, अम्बर, व्योम, वैष्णव—ये चार हैं। भैरवतन्त्र के अनुसार आकार के अन्य नाम असत्य हैं।।६।।

इ–इन्द्रबीजं तथा जिष्णुर्मरुत्वान् मघमा हरिः ।।७।।
शैवमिकारवर्णस्य कृत्रिममपरं वदेत् ।
मया प्रोक्तं सुरेशानि ग्रन्थे भैरवतन्त्रके ।।८।।

'इ' अक्षर को इन्द्रबीज, जिष्णु, मरुत्वान्, मघमा, हरि एवं शिव कहते हैं। अन्य नाम कृत्रिम हैं। हे महेशानि! भैरवतन्त्र में यह मेरे द्वारा कहा गया है।।७-८।।

ई–बुद्धिबीजं तथा मेधा धीबीजं च मतिस्तथा ।
ऐन्द्रं तथैव विज्ञेयमीकारस्यानृतं परम् ।।९।।
मया प्रोक्तं सुरेशानि त्रिपुरातिलके शिवे ।

इन्द्रबीजौ द्वौ—इं ईं च।

'ई' को बुद्धिबीज, मेधा, धीबीज, मति एवं ऐन्द्र कहते हैं। अन्य नाम अनृत हैं। त्रिपुरातिलक में मैंने ऐसा कहा हैं। इन्द्रबीज इं और ईं—दोनों है।।९।।

उ–रुतिबीजं तथा नन्दा वामनं वातुबीजकम् ।।१०।।
सौर्यमुकारबीजानि कृत्रिमाण्यपराणि च ।
मयाख्यातानि सर्वस्वे कुब्जिकायाः सुरेश्वरि ।।११।।

'उ' अक्षर को रुतिबीज, नन्दा, वामन, वातुबीज एवं सौर्य कहते हैं। अन्य नाम ठीक नहीं है। ऐसा मैंने कुब्जिकासर्वस्व में कहा है।।१०-११।।

ऊ–कचबीजं तथा केशं शिरोरुहं च मूर्धजम् ।
ऐन्दवमनृतमन्यदूकारस्य सुरेश्वरि ।।१२।।
शिरोमणौ मया प्रोक्ताः सुन्दर्याः परमेश्वरि ।

'ऊ' वर्ण को कचबीज, केश, शिरोरुह, मूर्धज, ऐन्दव कहते हैं। अन्य नाम कृत्रिम है। हे परमेश्वरि! ऐसा त्रिपुराशिरोमणि में मैंने कहा है।।१२।।

ऋ–पाप्मबीजं तथा पापं किल्विषं कल्मषं तथा ।।१३।।
किङ्करीबीजमेवं च मङ्गलमनृतं परम् ।
ऋकारस्य रहस्येऽस्मिन् काल्याः प्रोक्तं मया शिवे ।।१४।।

ऋवर्ण को पाप्मबीज, पाप, किल्विष, कल्मष, किङ्करीबीज एवं मंगल कहा जाता है। अन्य नाम असत्य हैं। हे शिवे! 'ऋ' के इस रहस्य को मैंने काली को बतलाया था।।१३-१४।।

ॠ–कृपाबीजं दयाबीजं करुणा कार्षिकं तथा ।
ॠकारस्यानृतमन्यद् भाषितं विष्णुयामले ।।१५।।

ॠवर्ण को कृपाबीज, दयाबीज, करुणा, कार्षिक कहते हैं! विष्णुयामल में मैंने ऐसा कहा है। अन्य नाम अनृत हैं।।१५।।

लृ–विश्वबीजद्वयं ज्ञेयं लृकारं च नम इति ।
व्यक्तबीजं जगद्बीजं गौर्वं प्रोक्तं मया शिवे ।।१६।।
लृकारस्यानृतमन्यदुक्तं च रुद्रयामले ।

लृवर्ण को दो विश्व बीज ल और नमः व्यक्तबीज, जगद् बीज, गौर्व मेरे द्वारा रुद्रयामल में कहा गया है। अन्य नाम ठीक नहीं हैं।

लॄ–गङ्गाबीजं सुर्नदी च नाकवापी च स्वर्धुनी ।।१७।।
शाक्रमन्यदनृतं च लॄकारस्य मया स्मृतम् ।
ग्रन्थे च स्वकृतौ देवि मन्त्रसागरतन्त्रके ।।१८।।

लॄ को मन्त्रसागर तन्त्र के अनुसार गंगाबीज, सुरनदी, नाकवापी, स्वर्धुनी, शाक्र कहा जाता है। यह सर्वमान्य है। अन्य नाम सही नहीं हैं।

ए–एकादशी मात्रिका च लताबीजं तथैव च ।
वल्लीबीजं च वाराकी चान्यदनृतमावदेत् ।।१९।।
अपरं च मयाख्यातमेकारस्य सुरेश्वरि ।
कुलचूडामणौ ग्रन्थे रचिते मान्त्रिकोत्तमैः ।।२०।।

'ए' वर्ण को मान्त्रिकोत्तमरचित कूलचूड़ामणि तन्त्र के अनुसार एकादशी मात्रिका, लताबीज, वल्लीबीज, वाराकी मेरे द्वारा कहा गया है। अन्य नाम ठीक नहीं हैं।

ऐ–वाग्भवमूर्ध्वबीजं च चारणं चण्डिकेश्वरः ।
चण्डोऽपि चर्म वसनं वासना च तथैव च ।।२१।।

चार्वङ्ग्यपि च चर्माणं मात्रां द्वादशिकामथ।
राहु ख्यातं मया देवि ऐकारस्यानृतं परम्॥२२॥
त्रिपुरासारसर्वस्वे दक्षिणामूर्तिना कृते।

'ऐ' वर्ण को दक्षिणामूर्तिरचित त्रिपुरासारसर्वस्व में वाग्भव, ऊर्ध्वबीज, चारण, चण्डिकेश्वर, चन्द्र, चर्म, वसन, वासना, चार्वङ्गी, द्वादशमात्रा कहा गया है। शेष नाम सत्य नहीं हैं।

ओ–प्रणवं च ततस्तारं त्र्यक्षं तोमापि त्र्यम्बकः॥२३॥
त्रासस्तारं च देवेशि कैतवं च मया स्मृतम्।
छिन्नाशिरोमणौ ग्रन्थे रचिते वै मया स्वयम्॥२४॥

शिवजी द्वारा रचित छिन्नाशिरोमणि ग्रन्थ के अनुसार 'ओ' के सांकेतिक नाम प्रणव, तार, त्र्यक्ष, तोम, त्र्यम्बक, त्रास, तारक, कैतव हैं।

औ–मोक्षबीजं तथा मुक्तिर्ज्ञानं निवार्णबीजकम्।
आगस्त्यं च मया ख्यातं ग्रन्थे भैरवतन्त्रके॥२५॥

भैरवतन्त्र में अगस्त्य और शिव के द्वारा कथित वचनानुसार 'औ' को मोक्षबीज, मुक्ति, ज्ञान, निर्वाणबीज कहा जाता है।

अं–अंबीजं वृक्षबीजं च पादपं धरणीरुहम्।
भूरुहं च मयाख्यातमनृतमपरं वदेत्॥२६॥
सिद्धसारस्वते ग्रन्थे ब्रह्मणैव प्रकाशितम्।

ब्रह्मा द्वारा प्रकाशित सिद्धसारस्वत के अनुसार 'अं' को शिव के द्वारा अंबीज, वृक्षबीज, पादप, धरणीरुह, भूरुह कहा गया है।

अः–नागबीजं भूधरं च भार्ग्यबीजं च भानवम्॥२७॥
ध्रौवं ख्यातं मया देवि अःशब्दस्यानृतं परम्।
ग्रन्थे त्रिपुरसुन्दर्याः सर्वस्वे विश्वदुर्लभे॥२८॥

विश्वदुर्लभ त्रिपुरासर्वस्वम् ग्रन्थ में शिव जी के वचनानुसार 'अः' को नागबीज, भूधर, भार्ग्यबीज, भानव एवं ध्रौव कहा गया है।

व्यञ्जनवर्णनामानि

क–ककारं च शिरोबीजं मूर्धबीजं च चारुणम्।
वेधोबीजं विधिर्ब्रह्मा स्वयम्भूबीजमेव च॥२९॥

ककारस्य मया ख्यातमनृतमपरं वदेत्।
ग्रन्थे छिन्नारहस्येऽस्मिन् पर्वतेश्वरनन्दिनि ॥३०॥

हे पर्वतेश्वरनन्दिनि! छिन्नारहस्य ग्रन्थ में मुझ शिव के द्वारा कवर्ण को ककार, शिरोबीज, मूर्धबीज, चारुण वेधोबीज, विधि, ब्रह्मा एवं स्वयम्भू बीज कहा गया है। इसके अतिरिक्त ककार के अन्य नाम सही नहीं हैं।

ख—नभोबीजं पुष्करं च द्यौबीजं चक्रवालकम्।
वैष्टरश्रवबीजं च प्रोक्तं त्रिपुरया स्वयम् ॥३१॥
आगमामृतमञ्जर्यां दुर्लभायां मयापि च।

मुझ शिव के लिये भी दुर्लभ आगमामृतमञ्जरी में स्वयं त्रिपुरा के द्वारा 'ख' को नभोबीज, पुष्कर, द्यौबीज, चक्रवालक, वैष्टरश्रवबीज कहा गया है।

ग—शिवबीजं च शम्भुश्च शर्वः शङ्कर एव च ॥३२॥
गकारस्यानृतमन्यद् भाषितं च मया शिवे।
कुलचूडामणौ ग्रन्थे दुर्लभे त्रिदिवे प्रिये ॥३३॥

देवदुर्लभ कुलचूडामणि ग्रन्थ में मुझ शिव के द्वारा 'ग' शिवबीज, शम्भु, शर्व एवं शङ्कर कहा गया है।

घ—जिनबीजं षडभिज्ञं मारजिद्बीजमेव च।
मायात्मजोऽर्कबन्धुश्च गौतममनृतं परम् ॥३४॥
घकारस्य मयाख्यातं ग्रन्थे वै रुद्रयामले।

रुद्रयामल तन्त्र में मुझ शिव के द्वारा 'घ' वर्ण को जिनबीज, षडभिज्ञ, मारजित्, मायात्मज, अर्कबन्धु और गौतम कहा गया है। दूसरे नाम सही नहीं हैं।

ङ—षडाननः शरजन्मा स्कन्दः कुमारबीजकम् ॥३५॥
शाम्भवः शालिनीबीजमनृतमपरं स्मृतम्।
कुब्जिकासर्वस्वे ख्यातं मया त्रैलोक्यपूजिते ॥३६॥

हे त्रैलोक्यपूजिते देवि! मुझ शिव के द्वारा कुब्जिकासर्वस्व में 'ङ' को षडानन, शरजन्मा, स्कन्द, कुमारबीज, शाम्भव एवं शालिनीबीज कहा गया है। दूसरे नाम सही नहीं हैं।

च—नाट्यबीजं च नटनं ताण्डवं नृत्तबीजकम्।
चकारस्य मया ख्यातं ग्रन्थे भैरवतन्त्रके ॥३७॥

भैरवतन्त्र में मेरे द्वारा चकार को नाट्यबीज, नटन, ताण्डव एवं नृत्तबीज कहा गया है।

छ–शनिबीजमर्कजं च पङ्गुबीजं तथैव च।
कालं च सौरबीजं च सूतिः सुन्दरबीजकम् ॥३८॥
छकारस्य मया प्रोक्तं ग्रन्थे कामेश्वरे शिवे।
शनिबीजौ द्वौ छं ञं च।

कामेश्वर ग्रन्थ में मेरे द्वारा ही छकार शनिबीज, अर्कज, पंगुबीज, काल, सौरबीज, सूति एवं सुन्दरबीज कहा है। शनिबीज दो हैं—छं एवं ञं।

ज–स्तनबीजं कुचं चैवमुरोजो हृज्जमेव च ॥३९॥
जकारस्य मयाख्यातमन्यदनृतमावदेत्।
आगमालङ्कारजे च ग्रन्थे भैरवनिर्मिते ॥४०॥

भैरवनिर्मित आगमालंकार ग्रन्थ में मेरे द्वारा जकार को स्तनबीज, कुच, उरोज, हृज्ज कहा गया है। जकार के अन्य समीचीन नहीं हैं।

झ–इच्छाबीजं स्पृहा काङ्क्षा लिप्साबीजं चतुष्टयम्।
झकारस्य मयाख्यातमसत्यमपरं स्मृतम् ॥४१॥
त्रैलोक्यप्रथिते ग्रन्थे देवि वै वामकेश्वरे।

त्रैलोक्यप्रसिद्ध वामकेश्वर ग्रन्थ में मैंने 'झ' को इच्छाबीज, स्पृहा, कांक्षा, लिप्साबीज के नाम से बतलाया है। अन्य नाम सत्य नहीं हैं।

ञ–यमबीजं कालबीजं कृतान्तसमवर्तिनौ ॥४२॥
कीनाशं मृत्युबीजं च ञकारस्य मया स्मृतम्।
त्रिपुरासर्वस्वे ग्रन्थे त्रिजगद्दुर्लभे प्रिये ॥४३॥
कालबीजौ द्वौ ञं छं च।

जगत्त्रय में दुर्लभ त्रिपुरासर्वस्व ग्रन्थ में मैंने 'ञ' को यमबीज, कालबीज, कृतान्तसमवर्ती, कीनाश एवं मृत्युबीज कहा है। ञं और छं—ये दोनों कालबीज हैं।

ट–गर्जितं स्वनबीजं च स्तनितं रसितं तथा।
टकारस्य मया ख्यातं स्वतन्त्रे देववन्दिते ॥४४॥

हे देववन्दिते! स्वतन्त्र ग्रन्थ में 'ट' को मैंने गर्जित, स्वनबीज, स्तनित एवं रसित कहा है।

ठ–पद्मं पङ्कजपयोजौ नीरजमम्बुजं तथा।
पञ्च ठकारबीजानि कृत्रिमाण्यपराणि च ॥४५॥
मया ख्यातानि देवेशि तन्त्रे वै वामकेश्वरे।

हे देवेशि! वामकेश्वर तन्त्र में मैंने ठकार को पद्म, पङ्कज, पयोज, नीरज और अम्बुज—कुल पाँच नाम दिया है।

ड–सिंहिका सरसीबीजं रेणुकाबीजमेव च ॥४६॥
अञ्जनीबीजकं ख्यातमनृतमपरं स्मृतम्।
डकारस्य मया देवि ग्रन्थे वै रुद्रयामले ॥४७॥

हे देवि! रुद्रयामल ग्रन्थ में मैंने 'ड' को सिंहिका, सरसीबीज, रेणुकाबीज एवं अञ्जनीबीज कहा है। इनके अतिरिक्त अन्य नाम सत्य नहीं हैं।

ढ–वायुबीजं चानिलं च समीरणं मरुत्तथा।
समीरं चाशुगं ज्ञेयं वातं श्वसनबीजकम् ॥ ४८॥
ढकारस्य मया ख्यातमन्यदनृतमावदेत्।

वायुबीजौ द्वौ ढं यं च।

'ढ' को मैंने वायुबीज, अनिल, समीरण, मरुत्, समीर, आशुग, वात एवं श्वसनबीज कहा है। अन्य नाम सहीं नहीं हैं। वायुबीज दो हैं—ढं एवं यं।

ण–वाणबीजं मार्गणं च पत्रिणमाशुगं तथा ॥४९॥
णकारस्यानृतमन्यद् ग्रन्थे भैरवन्त्रके।

आशुगबीजौ द्वौ ढं णं च।

भैरवतन्त्र में 'ण' को मैंने बाणबीज, मार्गण, पत्रिण एवं आशुग कहा है। अन्य नाम कृत्रिम हैं। आशुग बीज ढं एवं णं—दोनों हैं।

त–रात्रिबीजं तमोबीजं तामसीबीजमेव च ॥५०॥
क्षपा च क्षणदाबीजमन्यदनृतमावदेत्।
कुब्जिकासर्वस्वे ग्रन्थे तंबीजं च मया स्मृतम् ॥५१॥

कुब्जिकासर्वस्व में मैंने 'त' को रात्रिबीज, तमोबीज, तामसीबीज, क्षपा एवं क्षणदाबीज कहा है। अन्य नाम अनृत हैं।

थ–बिलबीजं च विवरं सुषिरं च नागलोककम्।
थकारस्य मया ख्यातं तन्त्रे वै कुलिकार्णवे ॥५२॥

कुलार्णवतन्त्र में 'थ' को मेरे द्वारा बिलबीज, विवर, सुषिर एवं नागलोक कहा गया है।

द–चक्रिबीजं व्यालबीजं सर्पः काकोदरोरगौ।
भोगिबीजं भुजङ्गं च भुजङ्गममिति स्मृतम्॥५३॥
दकारस्य मया ख्यातमनृतमपरं स्मृतम्।
स्वतन्त्रे देवदेवेशि दक्षिणामूर्तिना कृते॥५४॥

दक्षिणामूर्ति द्वारा रचित स्वतन्त्रतन्त्र में 'द' को मैंने चक्रिवीज, व्यालबीज, सर्प, काकोदर, उरग, भोगिबीज, भुजङ्ग, भुजङ्गम कहा है। अन्य नाम अनृत हैं।

ध–पुष्पबीजं प्रसूनं च प्रसूतिः सुप्रजास्तथा।
धकारस्यानृतमन्यत् त्रिपुरातिलके स्मृतम्॥५५॥

त्रिपुरातिलक में 'ध' को पुष्पवीज, प्रसून, प्रसूति एवं सुप्रजा कहा गया है।

न–क्षारबीजं च लवणं सैन्धवं सूकरं वृकम्।
वाराहमनृतमन्यन्मया ख्यातं सुरेश्वरि॥५६॥
त्रैलोक्यप्रथिते ग्रन्थे त्रिपुरायाः शिरोमणौ।

त्रैलोक्यविश्रुत त्रिपुराशिरोमणि ग्रन्थ में मैंने नकार को क्षारबीज, लवण, सैन्धव, सूकर, वृक एवं वाराह कहा है।

प–कूर्ममीनपदव्याप्तौ बीजार्णं सदृशं प्रिये॥५७॥
फकारस्य पकारस्य भेदो नास्ति परस्परम्।
भाषणोद्धारविषये लिखने प्रकृतिः पृथक्॥५८॥
मत्स्यं च मीनबीजं च शफरीबीजमेव च।
झषबीजं मयाख्यातं ग्रन्थे छिन्नाशिरोमणौ॥५९॥

हे प्रिये! प और फ में परस्पर भेद नहीं है। ये कछुआ और मछली के पाँवों के समान हैं। उद्धार बतलाने में एवं लिखने में इनकी प्रकृति अलग-अलग है। छिन्नाशिरोमणि ग्रन्थ में पकार को मैंने मत्स्य, मीनबीज, शफरीबीज एवं झषबीज कहा है।

फ–कूर्मबीजं च कमठं कर्कटोऽपि कुलीरकम्।
कच्छपमनृतमन्यन्मयाख्यातं च भामिनि॥६०॥
शारदापटले ग्रन्थे त्रैलोक्यप्रथिते शिवे।

हे शिवे! त्रैलोक्यप्रसिद्ध शारदापटल ग्रन्थ में मैंने 'फ' को कूर्मबीज, कमठ, कर्कट, कुलीरक एवं कच्छप के नाम से कहा है। इसके अन्य नाम अनृत हैं।

ब–ऊर्मिर्वीचिस्तथा चैवं तरङ्गस्त्रितयं स्मृतम् ॥६१॥
असत्यमपरं ज्ञेयं मयाख्यातं सुरेश्वरि।
कालिकाकुलसर्वस्वे ब्रह्मणैव प्रकाशिते ॥६२॥

हे सुरेश्वरि! ब्रह्मा द्वारा प्रकाशित कालिकाकुलसर्वस्व में मैंने 'ब' को उर्मि, वीचि एवं तरङ्ग—इन तीन नामों से बताया है। अपर नाम असत्य हैं।

भ–भद्रिका भास्वती भीमा भकारस्यानृतं परम्।
तन्त्रे वै मुण्डमालायां मयाख्यातं सुरेश्वरि ॥६३॥

हे सुरेश्वरि! मुण्डमालातन्त्र में 'भ' को मैंने भद्रिका, भास्वती एवं भीमा कहा है। दूसरे नाम कृत्रिम हैं।

म–डुलिबीजं शिलीबीजं मण्डूकं दुर्दुरं तथा।
भेकीबीजं मयाख्यातमसत्यमपरं स्मृतम् ॥६४॥
आगमामृतमञ्जर्यां पर्वतेश्वरनन्दिनि।

हे पर्वतेश्वरनन्दिनि! आगमामृतमञ्जरी ग्रन्थ में मैंने 'म' को डुलिबीज, शिलीबीज, मण्डूक, दर्दुर एवं भेकीबीज कहा है। दूसरे नाम असत्य हैं।

य–वायुबीजं तथा वाग्मि वाचालं वश्यबीजकम् ॥६५॥
वीराशार्णं तथा वापी मयाख्यातं स्वतन्त्रके।

स्वतन्त्रतन्त्र में मैंने 'य' को वायुबीज, वाग्मि, वाचाल, वश्यबीज, वीरबीज तथा वापी कहा है।

र–अग्नी रेफश्च वह्निश्च हुतभुग् हव्यवाहनः ॥६६॥
रकारस्य मयाख्यातं श्यामातन्त्रे सुरेश्वरि।

हे सुरेश्वरि! श्यामातन्त्र में 'र' को मैंने अग्नि, रेफ, वह्नि, हुतभुक और हव्यवाहन कहा है।

ल–तमोबीजं तथा ध्वान्तं मोहं तिमिरमेव च ॥६७॥
लकारस्य मयाख्यातं स्वतन्त्रे मुनिवन्दिते।
भूबीजं धरणीबीजं लकारं भाषितं मया ॥६८॥

हे मुनिवन्दिते! स्वतन्त्रतन्त्र में मैंने लकार को तमोबीज, ध्वान्त, मोह, तिमिर, भूबीज धरणी एवं बीज कहा है।

व–अभ्रं मेघं च जीमूतमम्बुभृदम्बुदं घनम्।
वकारस्य मयाख्यातं तन्त्रे वै वाकमेश्वरे ॥६९॥

वामकेश्वरतन्त्र में मेरे द्वारा 'व' को अभ्र, मेघ, जीमूत, अम्बुभृत्, अम्बुद एवं घन नाम से कहा गया हैं।

श–कल्याणं चैव शर्मापि शं शुभं च चतुष्टयम्।
शकारस्य मयाख्यातं ग्रन्थे भैरवतन्त्रके ॥७०॥

भैरवतन्त्र में शकार को मैंने कल्याण, शर्म, शं एवं शुभ नाम से कहा है।

ष–शम्पाबीजं तडिद्बीजं विद्युच्छतह्रदा तथा।
ह्लादिनीबीजकं चैवमसत्यमपरं स्मृतम् ॥७१॥
मयाख्यातं सुरेशानि ग्रन्थे वै रुद्रयामले।

हे सुरेश्वनि! रुद्रयामल ग्रन्थ में 'ष' को मेरे द्वारा शम्पाबीज, तड़ित् बीज, विद्युत्, शतह्रदा एवं ह्लादिनीबीज कहा गया है। दूसरे नाम असत्य हैं।

स–शक्तिः शर्मापि विज्ञेये शरच्छङ्के तथैव च ॥७२॥
सकारस्य मयाख्यातं ग्रन्थे छिन्नाशिरोमणौ।

छिन्नाशिरोमणि ग्रन्थ में मेरे द्वारा 'स' को शक्ति, शर्म, शरत् एवं अंक नाम से कहा गया हैं।

ह–छविबीजं कान्तिबीजं शोभा भा सुषमा तथा ॥७३॥
आकाशं च हकारस्यानृतमन्यन्मयोदितम्।
सिद्धसारस्वते ग्रन्थे नित्यं मान्त्रिकपूजिते ॥७४॥

हे मान्त्रिकपूजिते! सिद्धसारस्वत ग्रन्थ में मैंने 'ह' को छविबीज, कान्तिबीज, शोभा, भा, सुषमा एवं आकाश कहा है। दूसरे नाम अनृत हैं।

क्ष–देवबीजं निर्जरं च त्रिदशं त्रिदिवेशकम्।
सुरबीजं च गीर्वाणं लेखममरबीजकम् ॥७५॥
क्षकारस्य मया प्रोक्तं कुलचूडामणौ प्रिये।

हे प्रिये! कुलचूड़ामणि ग्रन्थ में 'क्ष' को मैंने देवबीज, निर्जर, त्रिदश, त्रिदिवेश, सुरबीज, गीर्वाण, लेख एवं अमरबीज कहा है।

वर्णानां देवदेवेशि कोशं प्रोक्तं मया शिवे।
नानामन्त्रयुतं देवि सर्वागमविनिश्चितम् ।।७६।।

इति श्रीदक्षिणामूर्तिमुनिविरचिते उद्धारकोशे सर्वागमसारे
सर्ववर्णकोशाख्यानं पञ्चमः कल्पः।।५।।

हे देवि शिवे! इस प्रकार वर्णों के कोश का वर्णन मैंने किया। हे देवदेवेशि! यह विविध मन्त्रों से युक्त एवं सभी आगमों द्वारा सुनिश्चित है।।७६।।

इस प्रकार रुद्रयामल तन्त्रोक्त श्रीदेवीरहस्य की भाषा टीका में
सर्ववर्णकोशाख्यान नामक पञ्चम कल्प पूर्ण हुआ।

●

अथ षष्ठः कल्पः

त्रिदेवी-खेचरीकोशाख्यानम्

भुवनदेवताकथनम्

श्रीश्वर उवाच

द्व्यक्षराणां पृथङ्नाम क्रींप्रींश्रींह्लींह्स्त्रौः तथा।
पृथङ्नाम सुरेशानि सकलागमनिश्चितम्॥१॥
अद्य वक्ष्यामि ते देवि तिस्त्रो भुवनदेवताः।
दक्षिणामूर्तिना पूर्वमृषीणां भाषिताः स्वयम्॥२॥

तीन देवियों और खेचरी-कोशाख्यान—श्री ईश्वर ने कहा—हे सुरेशानि! तीन भुवन देवता एवं देवियों के दो-दो अक्षर के नाम क्रीं, प्रीं, श्रीं ह्लीं, ह्स्त्रौः और उनके अलग-अलग नाम सभी आगमों द्वारा विनिश्चित हैं। हे देवि! आज तुमसे उन तीन भुवनदेवताओं को कहता हूँ; जिन्हें पूर्व में ऋषियों के समझ स्वयं दक्षिणामूर्ति ने कहा था।।१-२।।

भवानी देवदेवेशि द्वितीया बगलामुखी।
इन्द्राक्षी सा तृतीया च तिस्त्रो भुवनदेवताः॥३॥
आसामहं ते मन्त्राणि वक्ष्यामि शृणु पार्वति।
यस्य कस्य न वक्तव्यं न वक्तव्यं वरानने॥४॥

हे देवदेवेशि! भवानी, बगलामुखी और इन्द्राक्षी—ये तीनों भुवनदेवता हैं। हे पार्वति! सुनो, अब मैं उनके मन्त्रों को बतलाता हूँ और यह भी बतलाता हूँ कि इन मन्त्रों को जिस-किसी को न तो देना चाहिये और न ही बतलाना चाहिये।।३-४।।

भवानीमन्त्रोद्धारः

तत्रादौ भवानीमन्त्रोद्धारः मुण्डमालातन्त्रे—

प्रणवं चैव द्वे पद्मे त्र्यक्षयुग्मं परा पुनः।
हरिणाक्षी-द्वयं कूर्चं हरं ठद्वयसंयुतम्॥१॥

प्रकाशम्—ॐ श्रीं श्रीं ॐ ॐ ह्लीं श्रीं श्रीं हूं फट् स्वाहा इति।

भवानी-मन्त्रोद्धार—मुण्डमालातन्त्र के अनुसार भवानी-मन्त्र प्रणव = ॐ, द्वे

पद्मे = श्रीं श्रीं, त्र्यक्षयुग्म = ॐ ॐ, परा = ह्रीं, हरिणाक्षीद्वय = श्रीं श्रीं, कूर्च = हूं, हर = फट्, ठद्वय = स्वाहा के योग से बनता है। मन्त्र स्पष्ट होता है—ॐ श्रीं श्रीं ॐ ॐ ह्रीं श्रीं श्रीं हूं फट् स्वाहा।

बगलामुखीमन्त्रोद्धारः

अथ बगलामुख्या मन्त्रोद्धारः आगमलहर्याम्—

तारकं चैव मृद्बीजं द्व्यक्षरं समुदाहृतम्।
मन्त्रं च द्वि-शिरो ज्ञेयं ततः पल्लवमुद्धरेत्॥१॥
भगवति बगला च मुखि देवि ततः पुनः।
ततोऽपि सर्वदुष्टानां वाचं मुखं पदं तथा॥२॥
स्तम्भय द्विस्तथा जिह्वां कीलय द्विर्बुद्धिं तथा।
विनाशय द्विवारं च मृत्तिकाबीजकं तथा॥३॥
त्र्यक्षमन्ते पयो ज्ञेयं द्विपञ्चाशाक्षरो मनुः।

बगलामुखी मन्त्रोद्धार—आगमलहरी के अनुसार तारा = ॐ, एवं मृद्बीज = ह्लीं—ये दो अक्षर मन्त्र के दो शिर हैं। तब पल्लव लगावे। भगवति बगलामुखि देवि सर्वदुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय स्तम्भय जिह्वां कीलय कीलय बुद्धि विनाशय-विनाशय, मृत्तिका- बीज = ह्लीं, त्र्यक्ष = ॐ, पय = स्वाहा के योग से बावन अक्षरों का बगलामुखी का मन्त्र बनता है।

मृद्बीजनामानि

तत्र मृद्बीजनामानि भैरवतन्त्रे—

मृद्बीजं मृत्तिकाबीजं मृत्स्नाबीजं प्रशस्तिका।
मृत्साऽनृतं परं ज्ञेयं पर्वतेश्वरनन्दिनि॥१॥

ह्लीं इति मृद्बीजम्।

प्रकाशम्—ॐ ह्लीं भगवति बगलामुखि देवि सर्वदुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय स्वम्भय जिह्वां कीलय कीलय बुद्धिं विनाशय विनाशय ह्लीं ॐ स्वाहा (५२) इति।

हे पर्वतेश्वरनन्दिनि! भैरवतन्त्र के अनुसार मृद्बीज के चार नाम होते हैं—मृद्बीज, मृत्तिकाबीज, मृत्स्नावीज एवं प्रशस्तिका मृत्सा है।

इस प्रकार बगलामुखी मन्त्र स्पष्ट होता है—ॐ ह्लीं बगलामुखि देवि सर्वदुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय स्तम्भय जिह्वां कीलय कीलय बुद्धिं विनाशय विनाशय ह्लीं ॐ स्वाहा।

इन्द्राक्षीमन्त्रोद्धारः

अथेन्द्राक्ष्या मन्त्रोद्धारः रुद्रयामले—

त्र्यक्षं कुन्तीद्वयं देवि कूर्चयुग्मं तथैव च ।
प्रस्थबीजं परां पद्मां चर्माणं च ततोऽभिधाम् ॥१॥
इन्द्राक्षि वज्रहस्तेऽन्ते लक्ष्मीं लज्जां च पुष्करम् ।
तीरयुग्मं रसने द्वे त्रासश्चन्द्रो हरं वनम् ॥ २ ॥
इन्द्राक्ष्या देवदेव्याश्च ह्यष्टाविंशाक्षरो मनुः ।

इन्द्राक्षी-मन्त्रोद्धार—रुद्रयामल ग्रन्थ के अनुसार इन्द्राक्षी-मन्त्र त्र्यक्ष = ॐ, कुन्तीद्वय = क्रीं क्रीं, कूर्चयुग्म = हूं हूं, प्रस्थवीज = म्लौं, परा = ह्रीं, पद्मा = श्रीं, चर्मण = ऐं, इन्द्राक्षि वज्रहस्ते, लक्ष्मी = श्रीं, लज्जा = ह्रीं, पुष्कर = म्लौं, तीरयुग्म = हूं हूं, रसने द्वे = क्रीं क्रीं, त्रास = ॐ, चन्द्र = ऐं, हर = फट्, वनम् = स्वाहा के योग से बनता है।

प्रस्थबीजनामानि

तत्र प्रस्थबीजनामानि शारदापटले—

प्रस्थबीजं सानुबीजं शिखरं पुष्करं तथा ।
म्लौं-बीजोद्धारमेतद्धि चान्यदनृतमावदेत् ॥१॥

प्रकाशम्—ॐ क्रीं क्रीं हूं हूं म्लौं ह्रीं श्रीं ऐं इन्द्राक्षि वज्रहस्ते श्रीं ह्रीं म्लौं हूं हूं क्रीं क्रीं ॐ ऐं फट् स्वाहा (२८) इति।

'म्लौं' प्रस्थबीज का नाम शारदापटल के अनुसार प्रस्थबीज, सानुवीज, शिखर एवं पुष्कर है। दूसरे नाम कृत्रिम हैं।

इस प्रकार इन्द्राक्षी का मन्त्र स्पष्ट होता है—ॐ क्रीं क्रीं हूं हूं म्लौं ह्रीं श्रीं ऐं इन्द्राक्षि वज्रहस्ते श्रीं ह्रीं म्लौं हूं हूं क्रीं क्रीं ॐ ऐं फट् स्वाहा।

खेचरीकोशाख्यानम्

श्रीश्वर उवाच

तिस्र एता मया ख्याता देवि भुवनदेवताः ।
दक्षिणामूर्तिना भक्त्या संसारेऽस्मिन् प्रकाशिताः ॥१॥
अथाहं देवदेवेशि खेचर्या वच्मि वै मनुम् ।
यामाश्रित्य लभेद्योगी खेचरीं सिद्धिदां कलाम् ॥२॥

श्री ईश्वर ने कहा कि हे देवि! इन तीन भुवनदेवता का वर्णन इस प्रकार मेरे द्वारा

किया गया। दक्षिणामूर्ति ने भक्तों के लिये संसार में इनका प्रकाशन किया है। हे देव-देवेशि! अब मैं खेचरी के मन्त्र को बतलाता हूँ, जिसका आश्रयण करके योगी खेचरी अर्थात् आकाश मे गमन करने की कला की सिद्धि प्राप्त करता है।।१-२।।

खेचरीमन्त्रोद्धारः

विश्वयामले खेचरीमन्त्रोद्धारः—

गीर्बाणदशमं वर्णं चोद्धरेत् प्रतिलोमतः।
तमोबीजं ततो दद्यान्मायाबीजं ततः परम् ॥१॥
ततो दद्याच्छरद्बीजं कूटोऽयं परिकीर्तितः।
मन्त्रं(बीजं)तुर्यशिरो ज्ञेयं योगी दद्यात्ततोऽभिधाम् ॥२॥
खेचर्यै च ततो दद्यादन्ते ह्यौश्मकमेव च।

प्रकाशम्—म्ल्ह्रींसौः खेचर्यै नमः इति।

इति श्रीदक्षिणामूर्तिमुनिविरचिते उद्धारकोशे सर्वागमसारे
त्रिदेवीनां खेचर्याश्च कोशाख्यानं षष्ठः कल्पः॥६॥

खेचरीमन्त्रोद्धार—विश्वयामल तन्त्र के अनुसार खेचरी-मन्त्र प्रतिलोमक्रम में गीवर्णादशम वर्ण = मूं, तमोबीज = लूं, मायाबीज = ह्रीं, शरद्बीज = सौः—ये चार बीज, खेचर्यै, औंश्मक = नमः के योग से बनता है। मन्त्र स्पष्ट होता है—मूं लूं ह्रीं सौः खेचर्यै नमः।

इस प्रकार रुद्रयामल तन्त्रोक्त श्रीदेवीरहस्य की भाषा टीका में त्रिदेवियों
एवं खेचरियों का कोशाख्यान नामक षष्ठ कल्प पूर्ण हुआ।

●

अथ सप्तमः कल्पः

षोडशदेवी-सप्तदेवी-सप्तकुमार-नवग्रह-त्रिदेवी-खेचरीध्यानकोशाख्यानम्

दशविद्याध्यानानि

श्रीश्वर उवाच

अथ वक्ष्यामि ते देवि ध्यानानागमनिश्चितान्।
एतासां देवतानां त्वं शृणु पार्वति तत्त्वतः ॥१॥
तत्रादौ दशविद्यानां ध्यानं वक्ष्यामि त्वं शृणु।
वामकेश्वर-तन्त्रोक्तं त्रिपुरायाः सुरेश्वरि ॥२॥

षोडशदेवी-सप्तदेवी-सप्तकुमार-नवग्रह-त्रिदेवी-खेचरी-ध्यान—श्री ईश्वर ने कहा कि हे देवि पार्वति! सुनो, अब मैं आगम-विनिश्चित इन देवताओं का ध्यान बतलाता हूँ। हे सुरेश्वरि! सबसे पहले मैं दस विद्याओं में से त्रिपुरा का ध्यान वामकेश्वरतन्त्र के अनुसार बतलाता हूँ।।१-२।।

त्रिपुराध्यानम्

दिव्याम्बराङ्कितनुं मिहिराग्निचन्द्र-
नेत्रां सुधांशुमुकुटां हिमसन्निभाभाम्।
सिंहासनां परशुखड्गधरां भुजाभ्यां
ब्रह्मेन्द्रविष्णुनमितां त्रिपुरां भजेऽहम् ॥३॥

१. त्रिपुरा-ध्यान—ब्रह्मा, इन्द्र, विष्णु से नमस्कृत त्रिपुरा का हम ध्यान करते हैं। देवी का शरीर दिव्य वस्त्रों से सुशोभित है। सूर्य, चन्द्र एवं अग्नि—उनके तीन नेत्र हैं। मुकुट में चन्द्रकला है। उनकी आभा वर्फ के समान श्वेत है। सिंहासन पर आरूढ़ हैं। हाथों में फरसा और तलवार है।।३।।

श्रीध्यानम्

अथ वक्ष्ये श्रियो ध्यानं भाषितं रुद्रयामले।
मुनिसाधकगीर्वाण-विघ्नवर्गैः सुपूजितम् ॥४॥
लक्ष्मीं पद्मासनगतकटिं सूर्यशीतांशुनेत्रा-

मुद्यद्भास्वत्कनकरुचिभिः पद्मशङ्खासिपाणिम्।
नानामुक्तामणिसुकलशां भूषिताङ्गीं द्विबाहुं
नित्यं लोकत्रितयफलदां नौम्यहं भक्तिपूर्वम् ॥५॥

लक्ष्मी-ध्यान—अब मैं रुद्रयामल के अनुसार उन लक्ष्मी का ध्यान बतलाता हूँ, जो मुनि, साधक, देवता और विप्रवर्ग से सुपूजित हैं।

भक्तिसहित हम उन लक्ष्मी को नमस्कार करते हैं, जो तीनों लोकों को नित्य फल देती हैं। वे पद्मासन के ऊपर विराजमान हैं। सूर्य, चन्द्र उनके दो नेत्र हैं। नवोदित सूर्य की स्वर्णिम आभा के समान उनकी कान्ति है। उनके हाथों में कमल, तलवार, शङ्ख और नाना मणि-मुक्ताजटित कलश हैं। वे आभूषणों एवं वस्त्रों से सुशोभित हैं।।५।।

वाग्देवीध्यानम्

अथ वक्ष्यामि वाग्देव्या ध्यानं विद्याप्रदं शिवे।
तन्त्रमुक्तावलौ ग्रन्थे दुर्लभे त्रिदिवेऽपि च ॥६॥
वाणीं पूर्णनिशाकरोज्ज्वलमुखीं कर्पूरकुन्दप्रभां
चन्द्रार्धाङ्कितमस्तकां निजकरैः संबिभ्रतीमादरात्।
वीणामक्षगुणं सुधाढ्यकलशं विद्यां च तुङ्गस्तनीं
दिव्यैराभरणैर्विभूषिततनुं सिंहाधिरूढां भजे ॥७॥

वाग्देवता-ध्यान—हे शिवे! अब मैं वाग्देवी के देवदुर्लभ विद्याप्रद ध्यान का वर्णन तन्त्रमुक्तावली ग्रन्थ के अनुसार करता हूँ।

वाणी देवी का मुख पूर्णिमा के चाँद के समान उज्ज्वल है। प्रभा कुन्दपुष्प और कपूर जैसी है। मस्तक पर अर्धचन्द्र है। उनके हाथों में वीणा, अक्षमाला, अमृतपूर्ण कलश और पुस्तक सुशोभित हैं। उनके स्तन उठे हुए हैं। शरीर दिव्य आभरणों से विभूषित है। सिंह पर सवार देवी के इस रूप का हम भजन करते हैं।।६-७।।

ताराध्यानम्

अथ वक्ष्यामि तारायाः ध्यानं भैरवतन्त्रके।
देव्या भेदविहीनाया मुनिसाधकपूजिते ॥८॥
देवीं पन्नगभूषितां हिमरुचिं शीतांशुशङ्खप्रभां
मुक्तारत्नपरीतकण्ठवलयां रक्ताम्बरं बिभ्रतीम्।
शूलाब्जासिगदाधरां सुरगणैर्वैकुण्ठमुख्यैः स्तुतां
नित्यं लोकत्रयैकरक्षणपरां तारां त्रिनेत्रां भजे ॥९॥

तारा-ध्यान—अब मैं भैरवतन्त्र के अनुसार तारा के ध्यान का वर्णन करता हूँ। ये देवी भेदविहीन हैं एवं मुनियों और साधकों से पूजित हैं।

तारा देवी सर्पों से विभूषित हैं। इनकी प्रभा बर्फ, चन्द्र और शङ्ख के समान धवल है। कण्ठ का वलय मुक्ता रत्नजटित है। सुशोभित लाल वस्त्र हैं। हाथों में त्रिशूल, कमल, तलवार और गदा हैं। सुरगणों सहित वैकुण्ठाधीश विष्णु द्वारा वन्दित हैं। तीनों लोकों की रक्षा में नित्य तत्पर रहती हैं। इनके तीन नेत्र हैं। इस प्रकार के रूप वाली तारा देवी का हम भजन करते हैं।।८-९।।

भुवनेश्वरीध्यानम्

अथाहं भुवनेश्वर्या ध्यानं वक्ष्यामि तच्छृणु।
साधकेष्टप्रदे ग्रन्थे निःसृतं रुद्रयामले ॥१०॥
उद्यद्भानुसहस्रसन्निभमुखीं पीनस्तनीं पद्मगां
दोर्भिरङ्कुशपाशपुस्तकजपान् संबिभ्रतीं सादरम्।
ब्रह्मोपेन्द्रमहेश्वरेन्द्रमुनिभिर्नित्यं स्तुतां वन्दनैः
स्तोत्राद्यैर्भुवनेश्वरीं त्रिनयनां हृत्पङ्कजेऽहं भजे ॥११॥

भुवनेश्वरी-ध्यान—अब मैं रुद्रयामल में कथित भुवनेश्वरी-ध्यान का वर्णन करता हूँ, जो साधकों के लिये इष्टप्रदायक है।

देवी भुवनेश्वरी का आलोकित मुख नवोदित हजार सूर्यों के समान है। उनके स्तन स्थूल हैं। कमल का आसन है। उनके दो हाथों में अंकुश एवं पाश और दो हाथों में पुस्तक और माला है। ब्रह्मा, विष्णु, महेश, इन्द्र, मुनिजन नित्य स्तोत्रों से इनकी स्तुति और वन्दना करते रहते हैं। तीन नेत्रों वाली भुवनेश्वरी का भजन हम अपने हृदयकमल में करते हैं।।१०-११।।

मातङ्गीध्यानम्

अथ वक्ष्यामि मातङ्ग्या ध्यानं पर्वतनन्दिनि।
कुब्जिकासर्वस्वे ग्रन्थे ममाप्यत्यन्तदुर्लभे ॥१२॥
चन्द्रार्धाङ्कितशेखरां त्रिनयनां कोटीन्दुसूर्यप्रभां
नानारत्नसहस्रबद्धरशनां प्रेतासने संस्थिताम्।
शङ्खं तोमरपट्टिसाब्जयुगलान् दोर्भिर्वहन्तीं मुदा
ध्यायेऽहं हृदये सदा भगवतीं मातङ्गिनीं हारिणीम् ॥१३॥

मातङ्गी-ध्यान—हे पर्वतनन्दिनि! मेरे लिये भी अत्यन्त दुर्लभ मातङ्गी के ध्यान का वर्णन मैं कुब्जिकासर्वस्व ग्रन्थ के अनुसार करता हूँ।

देवी मातङ्गी के मस्तक पर अर्द्धचन्द्र है। तीन नेत्र हैं। करोड़ सूर्य-चन्द्र के समान उनकी प्रभा है। उनके कमर की डोरी में विविध प्रकार के हजारों रत्न सुशोभित हैं। प्रेतासन पर विराजमान हैं। दो हाथों में शङ्ख, तोमर और दो हाथों में पट्टिस एवं कमल हैं। देवी प्रसन्न हैं, हार धारण करने वाली भगवती मातङ्गिनी का हम अपने हृदय में सदैव ध्यान करते हैं।।१२-१३।।

शारिकाध्यानम्

अथ वक्ष्ये महेशानि शारिकाध्यानमुत्तमम्।
आगमामृतमञ्जर्यां निःसृतं दुर्लभं जनैः ॥१४॥
श्रीशङ्खचक्रमुसलाम्बुजयुग्महस्तां नागेन्द्रहारवलयाङ्कितकण्ठमालाम्।
सिन्दूरकुङ्कुमसहस्रमरीचिदीप्तिं श्रीशारिकां त्रिनयनां हृदये स्मरामि ॥१५॥

शारिका-ध्यान—हे महेशानि! अब मैं शारिका के उत्तम ध्यान को कहता हूँ। लोगों के लिये दुर्लभ यह ध्यान आगमामृतमञ्जरी में कहा गया है।

श्रीदेवी के दो हाथों में शङ्ख एवं चक्र और दो में मुसल और कमल है। नागों का हार वलयांकित कण्ठमाला है। इनकी आभा सिन्दूर, कुङ्कुम और नवोदित सूर्य की किरणों के समान लाल है। तीन नयनों वाली शारिका का हम अपने हृदय में स्मरण करते हैं।।१४-१५।।

महाराज्ञीध्यानम्

अथ वक्ष्यामि देवेशि राज्ञीध्यानमनुत्तमम्।
वामकेश्वरतन्त्रोक्तं पर्वतेश्वरनन्दिनि ॥१६॥
शीतांशुबालार्ककृशानुनेत्रां चतुर्भुजामेणत्वगासनस्थाम्।
शङ्खाब्जशूलासिधरां महेशीं राज्ञीं भजेऽहं तुहिनाद्रिरूपाम् ॥१७॥

राज्ञी-ध्यान—हे देवेशि! अब मैं वामकेश्वर तन्त्रोक्त राज्ञी के अत्यन्त उत्तम ध्यान का वर्णन करता हूँ।

सूर्य, चन्द्र एवं अग्नि इनके नेत्र हैं। चार हाथ है। मृग के चर्मासन पर स्थित हैं। हाथों में शङ्ख, कमल, शूल और तलवार हैं। हिमाचलरूपा महेशी राज्ञी का हम ध्यान करते हैं।।१६-१७।।

भीडाध्यानम्

अथ वक्ष्यामि भीडाया ध्यानमिच्छाफलप्रदम्।
निःसृतमागमोद्द्योते मया विरचिते स्वयम् ॥१८॥

उद्यच्छीतांशुरश्मिद्युतिचयसदृशीं फुल्लपद्मोपविष्टां
वीणानागेन्द्रशङ्खायुधपरशुधरां दोर्भिरीड्यैश्चतुर्भिः ।
मुक्ताहारांशुनानामणियुतहृदयां शीधुपात्रं वहन्तीं
वन्दे भीडां भवानीं प्रहसितवदनां साधकेष्टप्रदात्रीम् ॥१९॥

भीड़ा-ध्यान—स्वयं मेरे द्वारा लिखित आगमोद्योत से उल्लिखित इच्छा- फलप्रद भीड़ा देवी के ध्यान का मैं वर्णन करता हूँ।

देवी की आभा उदित चन्द्रकिरणों के समूह-जैसा है। प्रफुल्ल कमल का आसन है। उनके चार हाथों में से दो में वीणा और नागेन्द्र तथा दो में शङ्ख और फरसा आयुध है। नाना मणिकिरणों से झलमल मुक्ताहार उनके हृदय पर सुशोभित है। शीधु पात्र को धारण की हुई हैं। साधकों को इच्छानुसार फल देने वाली मुस्कुराती भीड़ा भवानी की हम वन्दना करते हैं।।१८-१९।।

ज्वालामुखीध्यानम्

अथ वक्ष्यामि देवेशि ज्वालामुख्या अनुत्तमम् ।
ध्यानं मया विरचिते ग्रन्थे ज्वालाशिरोमणौ ॥२०॥
ज्वालापरीतास्यशिरोरुहां तां सरोजशङ्खासिगदाधरां च ।
सिंहासनस्थापितपादयुग्मां ज्वालामुखीं सद्धृदये स्मरामि ॥२१॥

ज्वालामुखी-ध्यान—हे देवेशि! स्वयं अपने द्वारा विरचित ज्वालाशिरोमणि ग्रन्थ से मैं ज्वालामुखी देवी के उत्तम ध्यान का वर्णन करता हूँ।

देवी के केश ज्वाला से घिरे हैं। हाथों में कमल, शङ्ख, तलवार और गदा हैं। उनके दोनों पैर सिंहासन पर स्थापित हैं। अपने पवित्र हृदय में मैं ज्वालामुखी का स्मरण करता हूँ।।२०-२१।।

भद्रकालीध्यानम्

अथाहं भद्रकाल्याश्च ध्यानं वक्ष्यामि निःसृतम् ।
स्वयं मया विरचिते तन्त्रे वै वामकेश्वरे ॥२२॥
मुण्डं विश्वस्य कर्तुः करकमलतले धारयन्तीं हसन्तीं
नाहं तृप्ता वदन्तीं सकलजनमिदं भक्षयन्तीं सदैव ।
श्यामां विष्णुं गिरीशं भुजनिवहबलाच्छूलप्रोतं वहन्तीं
ध्यायेऽहं भद्रकालीं नवजलदनिभां प्रेतमध्यासनस्थाम् ॥२३॥

भद्रकाली-ध्यान—स्वयं अपने द्वारा विरचित वामकेश्वर तन्त्र के अनुसार मैं अब भद्रकाली के ध्यान का वर्णन करता हूँ।

करतल में विश्व के कर्ता के मुण्ड को धारण करके हँसती रहती हैं। सदैव सबों का भक्षण करने पर भी कहती हैं कि मैं तृप्त नहीं हूँ। श्यामा, विष्णु, गिरीश के भुजबल से युक्त हाथ में त्रिशूल धारण करती हैं। प्रेत के आसन पर स्थित नव जलद के समान वर्ण वाली भद्रकाली का ध्यान हम करते हैं।।२२-२३।।

तुरीध्यानम्

तुरीध्यानमहं वक्ष्ये निःसृतमागमामृते ।
अस्मिंश्चराचरे ख्याते ब्रह्मणैव प्रकाशिते ।।२४।।
नानारत्ननिबद्धचन्द्रशकलां मौलौ जटाभिर्वृते
पाशाम्भोजधरां हिमांशुधवलां दोर्भ्यां द्विबाहुं शिवाम् ।
सूर्येन्द्वग्निविलोचनां स्मितमुखीं प्रेतासने संस्थितां
ब्रह्मोपेन्द्रमहेश्वरैश्च नमितां देवीं भजेऽहं तुरीम् ।।२५।।

तुरी देवी-ध्यान—ब्रह्मा के द्वारा प्रकाशित आगमामृत के अनुसार अब मैं इस चराचर जगत् में विख्यात तुरी देवी के ध्यान का वर्णन करता हूँ।

तुरी देवी नाना रत्नजटित चन्द्रशकल उनकी जटामौलि से निबद्ध है। दो भुजाओं वाली शिवा के हाथों में पाश और कमल है। उनका वर्ण चन्द्रमा के समान धवल है। सूर्य चन्द्र, अग्नि उनके तीन नेत्र हैं। मुख मुस्कानयुत है। प्रेतासन पर विराजमान हैं। ब्रह्मा, विष्णु, महेश द्वारा नमस्कृत हैं। इस रूप की देवी तुरी का हम भजन करते हैं।।२४-२५।।

छिन्नमस्तिकाध्यानम्

अथाहं छिन्नमस्ताया ध्यानं वक्ष्यामि निःसृतम् ।
स्वकृते त्रिपुरायाश्च ग्रन्थे देवि शिरोमणौ ।।२६।।
एणाङ्कांशुपरीतभालफलकां बालार्ककोटिप्रभां
ज्वालाबद्धमहार्घरत्ननिचयां कन्दर्पदर्पोज्ज्वलाम् ।
शूलास्यङ्कुशपाशवेणुमुसलाम्भोजाभयान् बिभ्रतीं
भक्तेष्टां छिन्नमस्तकां भगवतीं ध्याये हृदब्जे सदा ।।२७।।

छिन्नमस्ता-ध्यान—हे देवि! स्वरचित त्रिपुराशिरोमणि ग्रन्थ के अनुसार अब मैं छिन्नमस्ता के ध्यान का वर्णन करता हूँ।

भालफलक में कस्तूरी का लेप है। नवोदित करोड़ सूर्य के समान प्रभा है। बहुमूल्य रत्नसमूह के प्रकाश से प्रकाशित हैं। कामदेव के दर्प को चूर कर रही हैं। उनके

हाथों में शूल, अंकुश, पाश, मुरली, मुसल, कमल और अभयमुद्रा सुशोभित हैं। इस प्रकार की भक्तों को अभीष्ट प्रदान करने वाली भगवती छिन्नमस्ता का ध्यान हम सदा अपने हृदय में करते हैं।।२६-२७।।

दक्षिणकालिकाध्यानम्

दक्षिणाकालिकायाश्च ध्यानं वक्ष्यामि निःसृतम्।
ग्रन्थे कालीरहस्येऽस्मिन् पर्वतेश्वरनन्दिनि ॥२८॥
ब्रह्मोपेन्द्रशिवास्थिमुण्डरशनां ताम्बूलरक्ताधरां
वर्षामेघनिभां त्रिशूलमुसले पद्मासिपाशाङ्कुशान्।
शङ्खं साहियुगं वरं दशभुजैः संबिभ्रतीं प्रेतगां
देवीं दक्षिणकालिकां भगवतीं रक्ताम्बरां तां स्मरे ॥२९॥

दक्षिणा कालिका-ध्यान—हे पर्वतेश्वरनन्दिनि! कालीरहस्य ग्रन्थ के अनुसार अब मैं दक्षिणा कालिका के ध्यान का वर्णन करता हूँ।

ब्रह्मा, विष्णु, महेश की अस्थिमुण्ड का कमरबन्द है। ताम्बूल के समान लाल अधर हैं। वर्षा के मेघ के समान वर्ण है। दश हाथों में त्रिशूल, मुसल, कमल, तलवार, पाश, अङ्कुश, शङ्ख, साहियुग और वर है। प्रेत पर सवार हैं। लाल वस्त्रों वाली देवी भगवती दक्षिणा कालिका का हम स्मरण करते हैं।।२८-२९।।

श्यामा(काली)ध्यानम्

अथ वक्ष्यामि श्यामाया ध्यानं पर्वतनन्दिनि।
श्यामातन्त्रे मयाख्यातं सकलागमसागरे ॥३०॥
त्रैलोक्यपूजितपदाम्बुरुहद्वयां तां कृष्णाम्बुभृत्सदृशरूपधरां त्रिनेत्राम्।
शूलासिशङ्खमहतींश्च भुजैर्वहन्तीं श्यामां भजे शवशरीरकृतासनस्थाम् ॥३१॥

श्यामा-ध्यान—हे पर्वतनन्दिनि! अब मैं सभी आगमों के सागरसदृश स्वरचित श्यामातन्त्र के अनुसार श्यामा के ध्यान का वर्णन करता हूँ।

देवी के दोनों पदकमल त्रैलोक्यपूजित हैं। काले बादलों के समान रूप है। तीन नेत्र हैं। हाथों में त्रिशूल, तलवार, शङ्ख और महती है। शव के शरीर पर आसीन श्यामा का हम भजन करते हैं।।३०-३१।।

कालरात्रिध्यानम्

अथाहं कालरात्र्यास्ते ध्यानं वक्ष्यामि निःसृतम्।
मया विरचिते देवि तन्त्रे वै वामकेश्वरे ॥३२॥

शूलाब्जपाशाङ्कुशपद्महस्तां चतुर्भुजां धूम्रनिभां त्रिनेत्राम्।
सिंहासनस्थां धृतपीतवस्त्रां ध्याये महेशीं हृदि कालरात्रीम्॥३३॥

कालरात्रि-ध्यान—हे देवि! स्वविरचित वामकेश्वरतन्त्र के अनुसार अब मैं कालरात्रि के ध्यान का वर्णन करता हूँ।

श्रीदेवी के चार हाथों में त्रिशूल, कमल, पाश और अङ्कुश हैं। वे धूम्र वर्ण सी हैं। उनके तीन नेत्र हैं। वस्त्र पीला है। सिंहासन पर बैठी हैं। इस रूप की महेशी कालरात्रि का ध्यान हम अपने हृदय में करते हैं।।३२-३३।।

वज्रयोगिनीध्यानम्

नानाभरणसंयुक्ते देवि वक्ष्यामि त्वं शृणु।
श्रीवज्रयोगिनीध्यानं निःसृतं कुलिकार्णवे॥३४॥
इन्द्वग्निसूर्यनयनां पाशाङ्कुशधरां शिवाम्।
द्विभुजां सिंहमध्यस्थां भजेऽहं वज्रयोगिनीम्॥३५॥

वज्रयोगिनी-ध्यान—हे देवि! सुनिये, अब मैं कुलार्णवतन्त्र के अनुसार नाना आभूषणों से संयुक्त श्रीवज्रयोगिनी के ध्यान का वर्णन करता हूँ!

श्रीदेवी के नेत्र सूर्य, चन्द्र एवं अग्नि हैं। हाथों में पाश और अङ्कुश है। दो भुजायें हैं। शेर पर सवार हैं। इस रूप वाली वज्रयोगिनी का हम भजन करते हैं।।३४-३५।।

वाराहीध्यानम्

अथ वक्ष्यामि वाराह्या ध्यानं तन्त्रविनिश्चितम्।
यथाभीष्टप्रदं देवि कुलचूडामणौ प्रिये॥३६॥
चन्द्रार्धचूडां द्विभुजां भुजाभ्यां शूलाङ्कुशौ श्याममुखीं वहन्तीम्।
सूर्याग्निचन्द्रीकृतनेत्रपद्मां ध्याये हृदब्जे विमलां वराहीम्॥३७॥

वाराही-ध्यान—हे देवि! अब मैं कुलचूड़ामणि तन्त्र के अनुसार तन्त्रविनिश्चित यथाभीष्टप्रद वाराही के ध्यान का वर्णन करता हूँ।

श्री देवी के चूड़ा में अर्धचन्द्र है, उनकी दो भुजायें हैं। भुजाओं में त्रिशूल और अङ्कुश हैं। वर्ण श्यामल हैं। सूर्य, चन्द्र एवं अग्नि उनके तीन नेत्र हैं। अपने हृदयकमल में विमला वाराही का हम ध्यान करते हैं।।३६-३७।।

शारदाध्यानम्

अथ वक्ष्यामि देवेशि शारदाध्यानमुत्तमम्।
शारदापटले ग्रन्थे रचितेऽपि मया स्वयम्॥३८॥

षड्भुजां त्रिनयनां स्मिताननां शाण्डिल्यर्षिनुतपादपङ्कजाम्।
पर्वतस्थितवतीं धृतशूलां शारदां भगवतीं हृदि ध्याये॥३९॥

शारदा-ध्यान—हे देवेशि! स्वरचित शारदापटल ग्रन्थ के अनुसार अब मैं शारदा के उत्तम ध्यान का वर्णन करता हूँ।

श्री शारदा के छः हाथ हैं। तीन नेत्र हैं। मुख पर मुस्कान है। शण्डिल्य ऋषि से नमस्कृत उनके पादपङ्कज हैं। पर्वतवासिनी हैं, हाथ में शूल धारण किये हैं। इस रूप की भगवती शारदा का हम ध्यान करते हैं।।३८-३९।।

कामेश्वरीध्यानम्

अथ वक्ष्यामि देवेशि त्वं शृणु ध्यानमुत्तमम्।
कामेश्वर्यास्त्रिपुरायाः सर्वस्वे तन्त्रकोत्तमे॥४०॥
त्रिलोचनां सूर्यसहस्रशोभां सिंहासनस्थां द्विभुजां धृतासिम्।
पीताम्बरां विष्णुमहेशसेव्यां कामेश्वरीं तां हृदये स्मरामि॥४१॥

कामेश्वरी-ध्यान—हे देवेशि! तन्त्रोत्तम त्रिपुरासर्वस्व के अनुसार कामेश्वरी के ध्यान का अब मैं वर्णन करता हूँ, श्रवण करो।

कामेश्वरी के तीन नेत्र हैं। हजार सूर्य के समान सुशोभित हैं। सिंहासन पर स्थित हैं। दो हाथ हैं। हाथ में तलवार है। वस्त्र पीले हैं। विष्णु एवं महेश द्वारा सेवित हैं। इस रूप वाली कामेश्वरी देवी को हम हृदय में स्मरण करते हैं।।४०-४१।।

गौरीध्यानम्

अथ वक्ष्यामि गौर्यास्ते ध्यानं भैरवतन्त्रके।
ग्रन्थे मया विरचिते पर्वतेश्वरनन्दिनि॥४२॥
गौराङ्गीं धृतपङ्कजां त्रिनयनां श्वेताम्बरां सिंहगां
चन्द्रोद्भासितशेखरां स्मितमुखीं दोर्भ्यां वहन्तीं गदाम्।
विष्ण्विन्द्राम्बुजयोनिशम्भुत्रिदशैः सम्पूजिताङ्घ्रिद्वयां
गौरीं मानसपङ्कजे भगवतीं भक्तेष्टदां तां भजे॥४३॥

गौरी-ध्यान—हे पर्वतेश्वरनन्दिनि! अब मैं स्वविरचित ग्रन्थ भैरवतन्त्र के अनुसार गौरी के ध्यान का वर्णन करता हूँ।

श्री गौरी गौर वर्ण की हैं। उनके हाथ में कमल है। तीन नेत्र हैं। उनका वस्त्र श्वेत है। वे सिंह पर सवार हैं। उनके मस्तक पर चन्द्र का प्रकाश है। अधरों पर मुस्कान है। हाथ में गदा है। विष्णु, इन्द्र, ब्रह्मा, शम्भु आदि देवताओं द्वारा उनके दोनों पैर मानसिक

पङ्कज से पूजित हैं। भक्तों को वाञ्छित फल देने वाली भगवती गौरी का हम भजन करते हैं।।४२-४३।।

अन्नपूर्णाध्यानम्

अथाहमन्नपूर्णाया ध्यानं वक्ष्यामि त्वं शृणु।
निःसृतं भैरवीतन्त्रे मया देवि प्रकाशिते।।४४।।
चन्द्रार्धमौलिं द्विभुजां त्रिनेत्रां शूलाक्षमाले द्विभुजे वहन्तीम्।
एणासनस्थां भुजगोपवीतां तामन्नपूर्णां हृदये स्मरामि।।४५।।

अन्नपूर्णा-ध्यान—स्वप्रकाशित ग्रन्थ भैरवीतन्त्र में उल्लिखित अन्नपूर्णा के ध्यान का वर्णन अब मैं करता हूँ, हे देवि! सुनो।

देवी की मौलि में अर्धचन्द्र है। दो हाथ हैं। तीन नेत्र हैं। एक हाथ में त्रिशूल है। दूसरे हाथ में अक्षमाला है। काले हिरण के चर्मासन पर बैठी हैं। साँप का जनेऊ है। इस रूप की अन्नपूर्णा का हम अपने हृदय में स्मरण करते हैं।।४४-४५।।

कुलवागीश्वरीध्यानम्

कुलवागीश्वरीध्यानं वक्ष्यामि त्वं शृणु प्रिये।
आगमामृतमञ्जर्यां दुर्लभायां ममापि च।।४६।।
त्रिशूलासिधरां दोर्भ्यां रक्तास्यां वह्निसन्निभाम्।
त्र्यक्षां सिंहासनगतां कुलवागीश्वरीं भजे।।४७।।

कुलवागीश्वरी-ध्यान—हे प्रिये! सुनो, अब मैं दुर्लभ आगमामृतमञ्जरी के अनुसार कुलवागीश्वरी के ध्यान का वर्णन करता हूँ।

श्री देवी के एक हाथ में त्रिशूल और दूसरे में तलवार है। अग्नि के समान लाल उनका वर्ण है। तीन नेत्र हैं। सिंह पर सवार हैं। इस रूप की कुलवागीश्वरी का हम भजन करते हैं।।४६-४७।।

गणेशध्यानम्

अथ वक्ष्ये गणेशस्य ध्यानं गीर्वाणपूजिते।
आगमामृतपीयूषे दुर्लभे भुवनेऽम्बिके।।४८।।
द्विचतुर्दशवर्णभूषिताङ्गं मुसलाम्भोजधरोरगोपवीतम्।
द्विमृगाधिपगामिनं त्रिनेत्रं शिवपुत्रं द्विरदाननं भजेऽहम्।।४९।।

गणेश-ध्यान—हे अम्बिके! भुवनों में दुर्लभ आगमामृतार्णव के अनुसार सरस्वती द्वारा सेवित गणेश के ध्यान का अब मैं वर्णन करता हूँ।

अट्ठाईस वर्णों के मन्त्र से भूषित उनके अङ्ग हैं। हाथों में मुसल और कमल हैं। नाग का जनेऊ है। मूषक पर सवार हैं। तीन नेत्र हैं। गजमुख शिवपुत्र का हम भजन करते हैं।।४८-४९।।

कुमारध्यानम्

अथ ध्यानं कुमारस्य वक्ष्यामि शृणु पार्वति।
निःसृतमागमोद्द्योते मया विरचिते स्वयम् ।।५०।।
हिमाद्रिगौरं द्विभुजं भुजङ्गैः परीतगात्रं शिखिविष्टरस्थम्।
नगेन्द्रकन्याप्रियपुत्रमाद्यं हृदि स्मरेऽभीष्टप्रदं कुमारम् ।।५१।।

कार्तिकेय-ध्यान—हे पार्वति! सुनो; अव मैं स्वरचित आगमोद्योत नामक ग्रन्थ से उद्धृत कुमार के ध्यान का वर्णन करता हूँ।

कुमार का वर्ण हिमाचल के समान श्वेत है। उनके दो हाथ हैं। शरीर में सर्प लपेटे हुए हैं। मोर पर सवार हैं। पार्वती के ज्येष्ठ पुत्र हैं। अभीष्टप्रद कुमार का ध्यान हम अपने हृदय में करते हैं।।५०-५१।।

कार्तवीर्य(सहस्रार्जुन)ध्यानम्

हैहयस्य ब्रवीम्येवं ध्यानं तव कुतूहलात्।
यथाभीष्टप्रदं नृणामुड्डामरविनिश्चितम् ।।५२।।
सहस्रभुजमण्डलीजिततमीचरेशाधिपं
हिमांशुसदृशाननं धृतसहस्रतूणीरकम्।
सिताम्बरधरं सदा तुरगराजमध्यस्थितं
स्मरामि भुवनाधिपं हृदि तु कार्तवीर्यार्जुनम् ।।५३।।

सहस्रार्जुन-ध्यान—हे देवि! तुम्हारे कुतूहल के कारण मैं उड्डामरतन्त्र के अनुसार मनुष्यों के अभीष्ट-प्रदायक हैहय के ध्यान का वर्णन करता हूँ।

अपने हजार हाथों द्वारा राक्षसों को जीतने वाले, चन्द्रमा के समान मुख वाले, एक हजार तूणीर धारण करने वाले, श्वेत वस्त्रधारी, सदैव घोड़े पर सवार भुवनाधिप कार्तवीर्यार्जुन का ध्यान हम अपने हृदय में ध्यान करते हैं।।५२-५३।।

मृत्युञ्जयध्यानम्

अथ वक्ष्यामि देवेशि ध्यानं तस्य विनिःसृतम्।
मृत्युञ्जयस्य देवस्य ग्रन्थे कुब्जाशिरोमणौ ।।५४।।

चन्द्रोद्भासितमूर्धजं सुरपतिं पीयूषपात्रं बृहद्
हस्ताब्जेन सुधांशुकोटिविमलं हस्तस्थपङ्केरुहम्।
सूर्याग्नीन्दुविलोचनं करतलैः पाशाक्षसूत्राङ्कुशा-
म्भोजान्बिभ्रतमक्षयं पशुपतिं मृत्युञ्जयं तं स्मरे ॥५५॥

मृत्युञ्जय-ध्यान—कुब्जाशिरोमणि ग्रन्थ के अनुसार अब मैं मृत्युञ्जय देव के ध्यान का वर्णन करता हूँ।

देव का मूर्धा चन्द्रकिरणों से प्रकाशित है। वे देवताओं के स्वामी हैं। करकमल में अमृतपात्र है। हजार चन्द्रों जैसा विमल कमल हाथ में है। सूर्य-चन्द्र-अग्नि उनके तीन नेत्र हैं। हाथों में पाश, अक्षसूत्र, अङ्कुश एवं अम्लान कमल है। पशुपति मृत्युञ्जय का स्मरण हम करते हैं।।५४-५५।।

सुग्रीवध्यानम्

सुग्रीवस्याथ वक्ष्येऽहं ध्यानं पर्वतनन्दिनि।
कुलचूडामणौ ग्रन्थे निर्मिते मन्त्रसागरे ॥५६॥
बालं षोडशहायनं कपिपतिं वह्निप्रभाभास्वरं
दोर्भिर्वृक्षगदाधनुःशरचयान् संबिभ्रतं चादरात्।
सीतामार्गणसक्तवानरबलैराराध्यमानं भजे
काकुत्स्थं भजमानमर्कतनयं सुग्रीवदेवं हृदि ॥५७॥

सुग्रीव-ध्यान—हे पर्वतनन्दिनि! मन्त्रसागर-स्वरूप कुलचूड़ामणि ग्रन्थ के अनुसार अब मैं सुग्रीव के ध्यान का वर्णन करता हूँ।

सुग्रीव सोलह वर्ष के कुमार हैं। कपियों के राजा हैं। अग्निज्योति के समान प्रकाशमान हैं। हाथों में वृक्ष, गदा, धनुष-बाणपूर्ण तरकश सादर सुशोभित हैं। सीता की खोज में आसक्त वानर बलसहित काकुत्स्थ राम के ध्यान में निरत सूर्यपुत्र सुग्रीव देव का हम अपने हृदय में भजन करते हैं।।५६-५७।।

हनुमद्ध्यानम्

अथाहं ते हनुमतो ध्यानं वक्ष्यामि निःसृतम्।
कूलचूडामणौ ग्रन्थे पर्वतेश्वरनन्दिनि ॥५८॥
रामेष्टमित्रं जगदेकवीरं प्लवङ्गराजेन्द्रकृतप्रणामम्।
सुमेरुशृङ्गाभमचिन्त्यमाद्यं हृदि स्मरेऽहं हनुमन्तमीड्यम् ॥५९॥

हनुमान-ध्यान—हे पर्वतेश्वरनन्दिनि! कुलचूड़ामणि ग्रन्थ के अनुसार अब मैं हनुमान के ध्यान का वर्णन करता हूँ।

राम के इष्टमित्र, संसार के एकमात्र वीर, प्लवंग राजेन्द्र से नमस्कृत, सुमेरु पर्वतशृङ्ग के समान आभा वाले अचिन्त्य आदिदेव हनुमान का स्मरण हम अपने हृदय में करते हैं।।५८-५९।।

भैरवध्यानम्

अथ ते भैरवस्याहं ध्यानं वक्ष्यामि पार्वति।
निःसृतं भैरवे तन्त्रे यथाभीष्टफलप्रदम् ॥६०॥
कपालहस्तं भुजगोपवीतं कृष्णाच्छविं दण्डधरं त्रिनेत्रम्।
अचिन्त्यमाद्यं मधुपानसक्तं हृदि स्मरे भैरवमिष्टदं तम् ॥६१॥

भैरव-ध्यान—हे पार्वति! अब मैं भैरवतन्त्र के अनुसार यथाभीष्ट फलप्रद भैरव के ध्यान का वर्णन करता हूँ।

श्री भैरव के हाथ में नरकपाल हैं। सर्प का जनेऊ है। शरीर का रङ्ग काला है। हाथ में लाठी है। तीन नेत्र हैं। ये आद्य और अचिन्त्य हैं। मद्यपान में आसक्त हैं। ऐसे इष्ट-प्रदायक भैरव का ध्यान हम हृदय में करते हैं।।६०-६१।।

सूर्यध्यानम्

अथ वक्ष्यामि सूर्यस्य ध्यानं तन्त्रविनिश्चितम्।
त्रिपुरासर्वस्वे ग्रन्थे दक्षिणामूर्तिना कृते ॥६२॥
प्रत्यक्षदेवं विशदं सहस्रमरीचिभिः शोभितभूमिदेशम्।
सप्ताश्वगं सद्ध्वजहस्तमाद्यं देवं भजेऽहं मिहिरं हृदब्जे ॥६३॥

सूर्य-ध्यान—दक्षिणामूर्तिकृत ग्रन्थ त्रिपुरासर्वस्व के अनुसार मैं तन्त्रविनिश्चित सूर्य के ध्यान का वर्णन करता हूँ।

सूर्य प्रत्यक्ष देव हैं। सहस्र किरणों से युक्त हैं। भूमिदेश को सुशोभित करते हैं। सात घोड़ों का उनका रथ है। हाथ में सुन्दर ध्वज है। आदिदेव सूर्य का भजन हम अपने हृदयकमल में करते हैं।।६२-६३।।

बुधध्यानम्

अथ वक्ष्यामि सौम्यस्य ध्यानं भैरवतन्त्रके।
यथाभीष्टप्रदं सत्यं सुरासुरनमस्कृते ॥६४॥
सोमात्मजं हंसगतं द्विबाहुं शङ्खेन्दुरूपं ह्यसिपाशहस्तम्।
दयानिधिं भूषणभूषिताङ्गं बुधं स्मरे मानसपङ्कजेऽहम् ॥६५॥

बुध-ध्यान—सुरासुर-नमस्कृत यथेष्ट फलप्रदायक बुध के ध्यान का वर्णन करता हूँ। यह ध्यान भैरवतन्त्र में वर्णित है।

बुध चन्द्रमा के पुत्र हैं। हंस पर वे सवार हैं। उनके दो हाथ हैं। शङ्ख और चन्द्रमा के समान उनका धवल वर्ण है। हाथों में तलवार और पाश है। दया के सागर हैं। उनके अङ्गों में भूषण सुशोभित हैं। इस रूप के बुध का स्मरण हम अपने मानस अम्बुज में करते हैं।।६४-६५।।

शुक्रध्यानम्

अथ वक्ष्यामि शुक्रस्य ध्यानं तन्त्रविनिश्चितम् ।
कुब्जिकासर्वस्वे ग्रन्थे ब्रह्मणैव प्रकाशिते ।।६६।।
सन्तप्तकाञ्चननिभं द्विभुजं दयालुं पीताम्बरं धृतसरोरुहद्वन्द्वशूलम् ।
क्रौञ्चासनं ह्यसुरसेवितपादपद्मं शुक्रं स्मरे द्विनयनं हृदि पङ्कजेऽहम् ।।६७।।

शुक्र-ध्यान—ब्रह्मा के द्वारा प्रकाशित कुब्जिकासर्वस्व ग्रन्थ के अनुसार शुक्र के तन्त्र-विनिश्चित ध्यान का वर्णन मैं करता हूँ।

श्री शुक्र देव का वर्ण तप्त स्वर्ण के समान है। दो हाथ हैं। दयालु हैं। वस्त्र पीले हैं। एक हाथ में कमल और दूसरे हाथ में त्रिशूल है। क्रौंच पक्षी पर सवार हैं। असुरों से सेवित उनके पदकमल हैं। दो नयनों वाले शुक्र का स्मरण हम अपने हृदयकमल में करते हैं।।६६-६७।।

बृहस्पतिध्यानम्

अथ वक्ष्यामि जीवस्य शृणु पार्वति तत्त्वतः ।
ध्यानं भैरवतन्त्रोक्तं सकलार्थप्रदं नृणाम् ।।६८।।
तेजोमयं शक्तित्रिशूलहस्तं सुरेन्द्रज्येष्ठैः स्तुतपादपद्मम् ।
मेधानिधिं हस्तिगतं द्विबाहुं गुरुं स्मरे मानसपङ्कजेऽहम् ।।६९।।

बृहस्पति-ध्यान—हे पार्वति! सुनो; अब मैं भैरवतन्त्रोक्त मनुष्यों को सभी अर्थदायक वृहस्पति के ध्यान का वर्णन करता हूँ।

बृहस्पति तेजोमय हैं। उनके हाथों में शक्ति और त्रिशूल है। इन्द्र और देवता इनके पाद-पद्मों की स्तुति करते हैं। ये मेधा के सागर हैं। हाथी पर सवार हैं। इनके दो हाथ हैं। इस रूप के गुरु का स्मरण हम अपने मानस कमल में करते हैं।।६८-६९।।

चन्द्रध्यानम्

अथ वक्ष्यामि चन्द्रस्य ध्यानं देवि शृणु प्रिये।
निःसृतमागमोद्द्योते नानाध्यानसरित्पतौ ॥७०॥
शङ्खप्रभमेणप्रियं शशाङ्कमीशानमौलिस्थितमीड्यवृत्तम्।
तमोपतिं नीरजयुग्महस्तं ध्याये हृदब्जे शशिनं ग्रहेशम् ॥७१॥

चन्द्रमा-ध्यान—हे प्रिये देवि! सुनो; अब मैं चन्द्रमा के ध्यान का वर्णन आगमोद्योत ग्रन्थ के अनुसार करता हूँ। सरित्पति के नाना ध्यानों में से यह एक ध्यान है।

चन्द्रमा की आभा शङ्ख के समान श्वेत है। ये मृगप्रिय हैं। शशाङ्क ईशान मौलि ईड्य रूप में स्थित हैं। तमोपति के दोनों हाथों में कमल है। ग्रहेश चन्द्र का ध्यान हम अपने हृदयकमल में करते हैं।।७०-७१।।

भौमध्यानम्

अथ वक्ष्यामि भौमस्य ध्यानं तन्त्रविनिश्चितम्।
आगमामृतमञ्जर्यां शृणुष्वैकमनाः प्रिये ॥७२॥
प्रतप्तगाङ्गेयनिभं ग्रहेशं सिंहासनस्थं कमलासिहस्तम्।
सुरासुरैः पूजितपादपद्मं भौमं दयालुं हृदये स्मरामि ॥७३॥

मङ्गल-ध्यान—हे प्रिये! एकाग्र चित्त से सुनो; आगमामृतमञ्जरी में वर्णित तन्त्रविनिश्चित मङ्गल के ध्यान का मैं वर्णन करता हूँ।

प्रतप्त गाङ्गेय के समान मंगल की आभा है। ग्रहों के स्वामी हैं। सिंहासनस्थ हैं। उनके एक हाथ में कमल और दूसरे में तलवार है। देव-दैत्यों से पूजित उनके पदकमल हैं। दयालु मङ्गल का स्मरण हम अपने हृदय में करते हैं।।७२-७३।।

शनिध्यानम्

अथ वक्ष्ये शनेर्ध्यानं यथाभीष्टफलप्रदम्।
निःसृतं च महेशानि शुभदमागमामृते ॥७४॥
नीलाञ्जनाभं मिहिरेष्टपुत्रं ग्रहेश्वरं पाशभुजङ्गपाणिम्।
सुरासुराणां भयदं द्विबाहुं शनिं स्मरे मानसपङ्कजेऽहम् ॥७५॥

शनैश्चर-ध्यान—हे महेशानि! अब मैं आगममामृत ग्रन्थ में वर्णित शुभद यथाभीष्टफलप्रद शनैश्चर के ध्यान का मैं वर्णन करता हूँ।

शनि के शरीर की आभा नीलाञ्जन के समान है। वे सूर्य के इष्टपुत्र हैं। ग्रहेश्वर शनि

के एक हाथ में पाश और दूसरे में सर्प है। देव-दैत्यों के लिये भयप्रदायक, द्विबाहु शनि का स्मरण हम अपने मानस पङ्कज में करते हैं।।७४-७५।।

राहुध्यानम्

अथाहं सैंहिकेयस्य ध्यानं वक्ष्यामि त्वं शृणु।
निःसृतं फलदं नृणां तन्त्रे वै वामकेश्वरे ।।७६।।
शीतांशुमित्रान्तकमीड्यरूपं घोरं च वैडूर्यनिभं विबाहुम्।
त्रैलोक्यरक्षापरमिष्टदं च राहुं ग्रहेन्द्रं हृदये स्मरामि ।।७७।।

राहु-ध्यान—वामकेश्वरतन्त्र में वर्णित मनुष्यों को फलप्रदायक राहु के ध्यान का वर्णन हम करते हैं, श्रवण करो।

चन्द्रमारूपी मित्र को ग्रसित करने वाला उनका रूप है, भयानक हैं, वैडूर्य के समान आभा है, बिना हाथों के हैं, त्रैलोक्य की रक्षा करने वाले हैं, इच्छा पूरी करने वाले हैं; ऐसे ग्रहों के स्वामी राहु का स्मरण हम अपने हृदय में करते हैं।।७६-७७।।

केतुध्यानम्

अथ वक्ष्यामि केतोश्च ध्यानमागमनिश्चितम्।
निःसृतमागमोद्द्योते ग्रन्थे वै तन्त्रसागरे ।।७८।।
लाङ्गूलयुक्तं भयदं जनानां कृष्णाम्बुभृत्सन्निभमेकवीरम्।
कृष्णाम्बरं शक्तित्रिशूलहस्तं केतुं भजे मानसपङ्कजेऽहम् ।।७९।।

केतु-ध्यान—मन्त्रों के सागरस्वरूप आगमोद्योत ग्रन्थ के अनुसार आगमविनिश्चित केतु के ध्यान का वर्णन करता हूँ।

लाङ्गूलयुक्त, लोगों के लिये भयप्रद, काले मेघ के समान वर्ण वाले, काले वस्त्र से विभूषित, हाथों में शक्ति और त्रिशूल धारण करने वाले केतु का स्मरण हम अपने मानस पङ्कज में करते हैं।।७८-७९।।

भवानीध्यानम्

अथ वक्ष्यामि देवेशि भवानीध्यानमुत्तमम्।
कुलचूडामणौ ग्रन्थे निःसृतं भुवनेश्वरि ।।८०।।
अरिशङ्खकृपाणखेटबाणान् सुधनुःशूलकतर्जनीर्दधानाम्।
भयदां महिषोत्तमाङ्गसंस्थां नवदूर्वासदृशीं भजे भवानीम् ।।८१।।

भवानी-ध्यान—हे देवेशि भुवनेश्वरि! कुलचूड़ामणि ग्रन्थ में वर्णित भवानी के उत्तम ध्यान का अब मैं वर्णन करता हूँ।

देवी के आठ हाथों में चक्र, शङ्ख, कृपाण, खेट, वाण, धनुष, शूल, तर्जनी सुशोभित हैं। भयप्रद हैं, महिष के उत्तम अङ्ग पर स्थित हैं। नव दूर्वा के समान इनका वर्ण है। इस रूप की भवानी का हम स्मरण करते हैं।।८०-८१।।

बगलामुखीध्यानम्

अथाहं बगलामुख्या ध्यानं वक्ष्यामि निःसृतम्।
आगमामृतमञ्जर्यां सुरासुरनमस्कृते ।।८२।।
नानारत्ननिबद्धरम्यमुकुटां पीताम्बरां भोग्यदां
घर्मांश्वग्निशशाङ्करश्मिनयनां सिंहासनस्थां शिवाम्।
सच्चण्डीशरतां महार्घमणिभिरुद्भासिताङ्गीं सदा
देवीं श्रीबगलामुखीं हृदि भजे भक्तेष्टदां मुक्तिदाम् ।।८३।।

बगलामुखी-ध्यान—हे सुरासुरनमस्कृते! आगमामृतमञ्जरी ग्रन्थ में वर्णित बगलामुखी के ध्यान का वर्णन मैं करता हूँ।

देवी का मुकुट नाना रत्नजटित सुन्दर है। वस्त्र पीले हैं। भोग्य प्रदान करने वाली हैं। सूर्य, चंन्द्र एवं अग्नि तीन नयन हैं। शिवा के सिंहासन पर स्थित हैं। भगवान् शंकर में रत हैं। वहुमूल्य मणियों से उद्भासित उनके अङ्ग हैं। भक्तों को उनके यथेष्ट प्रदान करने वाली एवं मुक्ति प्रदान करने वाली देवी बगलामुखी का सर्वदा हम अपने हृदय में भजन करते हैं।।८२-८३।।

इन्द्राक्षीध्यानम्

अथ वक्ष्ये शृणोषि त्वमिन्द्राक्षीध्यानमुत्तमम्।
निःसृतं जगदीशानि ग्रन्थे वै रुद्रयामले ।।८४।।
मालास्यङ्कुशपद्मयुग्मकधरां चक्षुःसहस्राङ्कितां
मत्तैरावणपृष्ठगां शशिमुखीं त्रैलोक्यरक्षापराम्।
दोर्भिर्गानरतां स्फुटाम्बुजनिभां ब्रह्मादिदेवैः स्तुता-
मिन्द्राक्षीं जनमातरं हृदि भजे कारुण्यरूपां पराम् ।।८५।।

इन्द्राक्षी-ध्यान—हे जगदीशानि! सुनो; अब मैं रुद्रयामल में वर्णित इन्द्राणी के उत्तम ध्यान का वर्णन करता हूँ।

देवी के हाथों गें माला, अङ्कुश एवं दो कमल हैं। उनके एक हजार नयन हैं। मत्त ऐरावत के पीठ पर बैठी हैं। उनका मुख चन्द्रमा के समान है। त्रैलोक्य की रक्षा में सदा लगी रहती हैं। गायन में निरत रहती हैं। विकसित कमल के समान उनकी आभा है।

ब्रह्मादि देवों से स्तुत जगन्माता कारुण्यरूपा परा इन्द्राक्षी का हम अपने हृदय में भजन करते हैं।।८४-८५।।

खेचरीध्यानम्

अथ वक्ष्ये महेशानि खेचरीध्यानमुत्तमम् ।
यां ध्यात्वा खेचरीं योगी जीवन्मुक्तो भवेत् कलौ ।
ग्रन्थे भैरवतन्त्राख्ये निःसृतं त्रिदशार्चिते ।।८६।।
विनिन्द्रकमलोत्पलैर्मुनिभिरर्चिताङ्घ्रिद्वयां
सितां सितकराम्बुजां सितकरोज्ज्वलच्छेखराम् ।
रवीन्दुशिखिलोचनामभयपुस्तकौ बिभ्रतीं
स्मरामि हृदि खेचरीं भुवनमातरं सिद्धिदाम् ।।८७।।

खेचरी-ध्यान—हे महेशनि! अब मैं खेचरी के उत्तम ध्यान का वर्णन करता हूँ, कलियुग में इस खेचरी के ध्यान से योगी जीवन्मुक्त हो जाता है। देवताओं द्वारा अर्चित भैरवतन्त्र नामक ग्रन्थ में यह ध्यान वर्णित है।

देवी के दोनों पदकमलों का अर्चन कमल उत्पल से मुनिजन करते हैं। देवी का वर्ण श्वेत है। करकमल में श्वेत कमल है। चूड़ा में उज्ज्वल चन्द्र है। सूर्य-चन्द्र-अग्नि उनके तीन नेत्र हैं। हाथों में अभयमुद्रा और पुस्तक है। सिद्धि प्रदान करने वाली भुवनमाता खेचरी का स्मरण हम अपने हृदय में करते हैं।।८६-८७।।

एतासां देवदेवेशि मन्त्रध्यानचयं स्मृतम् ।
यस्य कस्य न दातव्यं ग्रन्थमुद्धारकोशकम् ।।८८।।

हे देवदेवेशि! इन सबके मन्त्रों और ध्यानों के समूह का वर्णन किया गया। जिस-किसी को यह उद्धारकोश ग्रन्थ नहीं देना चाहिये।।८८।।

ऋषय ऊचुः

धन्यः स यस्य पुत्रस्त्वं सकलागमपारगः ।
जय त्वं स्वगृहं गन्तुमाज्ञापयितुमर्हसि ।।८९।।

ऋषियों ने कहा कि वे धन्य हैं, जिनके सकल आगम-पारग आप पुत्र हैं, आपकी जय हो। अब हमें अपने घर जाने की आज्ञा दीजिये।।८९।।

ऋषीणां स्वस्थानगमनाज्ञा

दक्षिणामूर्तिरुवाच

गच्छध्वं मुनयः सर्वे क्षमध्वं कृपया मम ।
इत्युक्त्वा मुनयो जग्मुः स्वगृहं मन्त्रलालसाः ।।९०।।

दक्षिणामूर्ति ने कहा कि हे मुनियों! कृपा करके मुझे क्षमा कीजिये और अपने-अपने घर जाइये। इतना कहने पर मन्त्रों की लालसा रखने वाले वे समस्त मुनिगण अपने-अपने घर चले गये।।९०।।

श्रीश्वर उवाच

दक्षिणामूर्तिना तेन दृष्ट्वा तन्त्रान्मनोरमान्।
कृतमुद्धारकोशाख्यं ग्रन्थं गोप्यतमं कुरु ॥९१॥

श्री ईश्वर ने कहा कि दक्षिणामूर्ति ने उन मनोरम तन्त्रों का अवलोकन कर इस उद्धारकोश नामक ग्रन्थ को बनाया है। इसे अत्यन्त गुप्त रखना चाहिये।।९१।।

देवीप्रार्थनानन्तरं शिवपार्वतीकैलाशगमनम्

श्रीदेव्युवाच

क्रीतास्मि भवतानेन ग्रन्थेनाहं सुरेश्वर।
इत्युक्त्वा सुमहाकुञ्जं कैलासाद्रेश्च जग्मतुः।
उभौ तावम्बिका देवी देवश्च चन्द्रशेखरः ॥९२॥

इति श्रीदक्षिणामूर्तिमुनिविरचिते उद्धारकोशे सर्वागमसारे षोडशदेवी-
सप्तदेवी-सप्तकुमार-नवग्रह-त्रिदेवी- खेचरीध्यानकोश-
निरूपणं नाम सप्तमः कल्पः॥७॥

श्री देवी ने कहा कि हे सुरेश्वर! इस ग्रन्थ का वर्णन करके आपने मुझे खरीद लिया। ऐसा कहकर देवी अम्बिका और देव चन्द्रशेखर कैलाशशिखर के सुन्दर महाकुञ्ज में चले गये।।९२।।

इस प्रकार रुद्रयामल तन्त्रोक्त श्रीदेवीरहस्य की भाषा टीका में
षोडशदेवी-सप्तदेवी-सप्तकुमार-नवग्रह-त्रिदेवी-खेचरी-
ध्यानकोशनिरूपणनामक सप्तम कल्प पूर्ण हुआ।

●

समाप्तश्चायमुद्धारकोशः

◆

तन्त्रशास्त्र के महत्वपूर्ण ग्रन्थ - मूल संस्कृत एवं हिन्दी टीका सहित

- **तन्त्रसार :** परमहंस मिश्र (1-2 भाग)
- **कुलार्णवतन्त्रम् :** परमहंस मिश्र
- **नित्योत्सव :** (श्रीविद्याविमर्शकसद्ग्रन्थ) परमहंस मिश्र
- **त्रिपुरारहस्यम् :** (ज्ञान एवं महात्म्य खण्ड) जगदीशचन्द्र मिश्र (1-2 भाग)
- **तन्त्रालोक :** राधेश्याम चतुर्वेदी (1-5 भाग)
- **स्वच्छन्दतन्त्रं :** राधेश्याम चतुर्वेदी (1-2 भाग)
- **नेत्रतन्त्रम् :** राधेश्याम चतुर्वेदी
- **कामाख्यातन्त्रम् :** राधेश्याम चतुर्वेदी
- **महाकालसंहिता :** (कामकला-कालीखण्ड) राधेश्याम चतुर्वेदी
- **महाकालसंहिता :** (गुह्यकाली-खण्ड) राधेश्याम चतुर्वेदी (1-5 भाग)
- **रुद्रयामलम् :** सुधाकर मालवीय (1-2 भाग)
- **शारदातिलकम्-**सुधाकर मालवीय (1-2 भाग)
- **मन्त्रमहोदधि :** सुधाकर मालवीय
- **लक्ष्मीतन्त्रम् :** कपिलदेवनारायण (1-2 भाग)
- **तन्त्रराजतन्त्रम्-**कपिलदेवनारायण (1-2 भाग)
- **महानिर्वाणतन्त्रम् :** कपिलदेवनारायण
- **कामकलाविलास :** श्यामाकान्त द्विवेदी
- **वरिवस्यारहस्यम् :** श्यामाकान्त द्विवेदी
- **स्पन्दकारिका :** श्यामाकान्त द्विवेदी
- **सर्वोल्लासतन्त्रम् :** एस. खण्डेलवाल
- **नीलसरस्वतीतन्त्रम् :** एस. खण्डेलवाल
- **भूतडामरतन्त्रम् :** एस. खण्डेलवाल
- **सिद्धनागार्जुनतन्त्रम् :** एस. खण्डेलवाल
- **अन्नदाकल्पतन्त्रम् :** एस. खण्डेलवाल
- **त्रिपुरार्णवतन्त्रम् :** एस. खण्डेलवाल
- **विज्ञानभैरव :** बापूलाल अँजना
- **अहिर्बुध्न्यसंहिता :** सुधाकर मालवीय (श्रीपाञ्चरात्रागमान्तर्गता) (1-2 भाग)
- **ललितासहस्रनाम।** भारतभूषण भास्कररायप्रणीत सौभाग्यभास्करभाष्य सहित
- **बृहत्तन्त्रसार :** कपिलदेवनारायण (1-2 भाग)
- **सौन्दर्यलहरी :** लक्ष्मीधरी टीका सहित सुधाकर मालवीय
- **सिद्धसिद्धान्तपद्धति :** द्वारकादास शास्त्री

◆◆◆

डॉ. श्यामाकान्त द्विवेदी द्वारा हिन्दी में लिखित

तंत्र विषयक महत्त्वपूर्ण शास्त्रीय ग्रन्थ

- **श्रीविद्या-साधना :** (श्रीविद्या-उपासना का साङ्गोपाङ्ग शास्त्रीय विवेचन)
- **भारतीय शक्ति-साधना :** (शक्ति-विज्ञानः स्वरूप एवं सिद्धान्त का शास्त्रीय विवेचन)
- **ब्रह्मास्त्रविद्या एवं बगलामुखी-साधना :** (महाविद्याबगला-उपासना का शास्त्रीय विवेचन)
- **काश्मीर शैवदर्शन एवं स्पन्दशास्त्र :** (शिवसुत्र, शक्तिसुत्र एवं स्पन्दसुत्र के सन्दर्भ में शास्त्रीय विवेचन)
- **मुद्राविज्ञान एवं साधना :** (नित्यकर्मीय एवं तान्त्रिक मुद्राओं का सर्वाङ्गपूर्ण, सचित्र एवं शास्त्रीय विवेचन)

श्रीदक्षिणकालिका सपर्या पद्धति

रामप्रिय पाण्डेय

प्राप्ति स्थान

चौखाम्बा पब्लिशिंग हाऊस
4697/2, 21-ए, अंसारी रोड़,
दरियागंज नई दिल्ली - 110002
फोन न. 011-23286537, 32996391

चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन
के - 37/117 गोपाल मंदिर लेन
वाराणसी-221001
फोन न. 0542-2335263, 2335264